निघण्टरत्नाकर भाषा

प्रथम खण्ड

जिसमें

ज्वर, अतीसार, संग्रहणी, बवासीर, अजीर्ण, कृमि, पाण्डु कामला, हलीमक, रक्तपित्त, क्षयी, कास, हिचकी, श्वास स्वरभेद, अरुचि, छर्दि, तृषा, मूर्च्छा, दाह, उन्माद, अपस्मार वातव्याधि, वातरक्त, उरुस्तम्भ, आमवात, अजीर्ण, शूल आनाह, उदावर्त्त, गुल्म, हृद्रोग, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात पथरी, प्रमेह, मेह, उदरकर्मविपाक आदिके प्रकरणों में सबलक्षणों संयुक्त औषधें वर्णित हैं ॥

जिसको

भार्गव वंशावतंस श्रीमुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) की आज्ञानुसार ज़िलारोहतक मौज़े बेरीनिवासी वैद्यरविदत्त जीने संस्कृतनिघण्टरत्नाकरका भाषामें उल्थाकियाहै ॥

वाजपेयि पण्डित रामरत्न के प्रबन्ध से ॥

दूसरीबार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेख़ाने में छपी

नवम्बर सन् १८९२ ई० ॥

१३ जुज़ ४ रुक़्क़

विज्ञापन ॥

प्रकटहो कि यहवैद्यकविद्याका अपूर्वग्रंथ निघण्टरत्नाकरनामक जो कि प्रथमसंस्कृतमेंथाइसकारण उसकोकेवल संस्कृतहीकेपठनपाठन कर्त्ता पुरुष पढ़सक्तेथे और उसके याथतथ्य मतलबको समझसक्ते थे परन्तु भाषाके पठनपाठनकर्त्तापुरुषों को उसको अवलोकन कर उससे अपना तथा दूसरोंका हितकरना अत्यंतकठिन था इसकारण सर्व्व साधारणके उपकारार्थ यन्त्रालयाध्यक्ष श्रीमान् मुंशी नवल किशोर (सी,आई,ई) ने रोहतक प्रदेशान्तग्गर्त बेरीग्राम निवासि पण्डित रविदत्त वैद्यसे श्लोक२ का पूराउल्था संस्कृतसे देशभाषा में कराय स्वयन्त्रालयमें मुद्रित कराय प्रकाशित किया इसपुस्तक में नाड़ी परीक्षा से लेकर रोगी परीक्षा औषध परीक्षा औषधगुण रोग निदानादि वैद्यकसंबंधी यावत् युक्तियां हैं वे सब बिस्तारसहित कहीगईहैं-हमयह कहसक्तेहैं कि वैद्यकी सीखनेके लियेतो यह पुस्तक अद्वितीयहै ऐसीवात कोईनहीं है जोइसमें न हो केवलइसी पुस्तकके देखनेसे मनुष्य वैद्यकी में कुशल होसक्ताहै आशाहै कि जो पुरुष इसका अवलोकन करेंगे प्रसन्नतासे ग्रहण करेंगे इसके सिवाय इस यन्त्रालयाधिपने अपनेही व्यय और परिश्रमसे और भी बहुतसी वैद्यक व पुराण स्मृति उपनिषद् और चित्र विचित्र काव्य की पुस्तकें उल्था कराकर स्वयंत्रालय में छपवाई हैं और नवीन २ उल्थाहोकर छपतीजाती हैं वह प्रत्येक महाशयोंके दृष्टिगोचरहोंगी ॥

मैनेजर अवध समाचार
संपादक लखनऊ हज़रतगंज

निघण्टरत्नाकर भाषा के प्रथमखण्ड के प्रकरणों का सूचीपत्र ॥

इति निघण्टरत्नाकर भाषा प्रथमखण्ड के प्रकरणों का सूचीपत्र समाप्त हुआ ॥

निघण्टरत्नाकर भाषा के प्रथमखण्ड का सूचीपत्र ॥

इति निघण्टरत्नाकर भाषा के प्रथमखण्डका सूचीपत्र समाप्तहुआ ॥

अथ निघण्टरत्नाकर भाषा प्रारभ्यते ॥

दूतपरीक्षा ॥ दूतकीचेष्टासे साध्य व असाध्य रोगीको वैद्यजन जानसक्ते हैं दृष्टान्त जैसे दूरसे धूमको देखकर अग्निका अनुमान करते हैं तैसे १ ॥ दूतलक्षण ॥ रोगीकीजातिका । सफ़ेदवस्त्र पहने हुये । कलुकद्रव्य हाथमेंलिये । अथवा ब्राह्मण या क्षत्रियजातिहो । पानखाताहुआ । शीलस्वभाववाला । शुभवचन मुखसेबोलताहुआ ऐसादूत वैद्य बुलावनजाय तो श्रेष्ठहै २ ॥ दूसरे दूतलक्षण ॥ जो वैद्यके बुलानेको जाय तिस दूतके लक्षण कहते हैं । रोगीकीजाति हो । काणा, अन्धा, लूला, लँगड़ा नहींहोय । चतुरहोय । सफ़ेदकपड़े पहनेहुये घोड़ा या रथकी सवारीपर सवारहो । फलादिकहाथ मेंलिये ऐसा दूत श्रेष्ठ है ३ ॥ अयोग्यदूत ॥ जो दूत वैद्य बुलावन को जाय काले व लाल कपड़े पहनेहुये। हाथमें लकड़ीलिये । जटा वालोंकी शिरपर धारणकरे । अथवा मूँड़ मुड़ायेहुये । तेलमें भीजे कपड़े पहनेहुये । भयकारी वचन कहताहुआ । दरिद्री । रोवताहुआ। राख, कोइला, अँगारा, खोपरी, फांसी, मुशलहाथमें लियेहुये । सूर्य अस्तसमय जाय । चुपहोकर वैद्यकेपास बैठजाय । ऐसादूत यमरूप है ४ वैद्य बुलावनको स्त्री श्रेष्ठनहीं । दो २ मनुष्य वैद्य बुलावनको श्रेष्ठनहीं । अँगहीन व रोगी श्रेष्ठनहीं । शोकवाला व रोवताहुआ । अशुद्ध अमंगलबचन कहताहुआ । ऐसादूतश्रेष्ठनहीं । जोदूत वैद्य से दक्षिणदिशामें अंजलिबांधकर बैठजाय । व एकपैरसे खड़ारहै ।

ऐसादूत श्रेष्ठनहीं ७ ॥ दूतशकुन ॥ शकुन शुभाशुभ साध्य व असाध्यरोगी को जनायदेता है ८ वैद्यबुलावन को दूतके चलतेहुये सौम्यशकुन बाजादिक अच्छेनहीं अंगारादिक प्रदीप्तशकुनअच्छे हैं ९ ॥ दग्धादिक दिशासंज्ञा शुभाशुभ ॥ सूर्य्य की त्यागी दिशा दग्धा है। सूर्य्य जिसदिशामेंजायगा वह धूमिताननाहै। सूर्य्यजिसदिशा में है वह दीप्ताहै। प्रभातमें ऐशानी दग्धाहै। पूर्वादीप्ताहै। अग्नि धूमिताननना है बाकी पांचदिशा शान्ताहैं। आठप्रहर में सूर्य्यक्रम से आठोंदिशाओं को भोगै है शान्ता दिशाओंमें मधुरबोलतेहुये पीठपीछे बाम दक्षिण शकुन श्रेष्ठ हैं। दग्धादिकमेंबोलतेहुयेशकुन नेष्ठहैं १४ ॥ दूतके कहेहुये अक्षर शुभाशुभ ॥ दूतके मुखसे निकसे अक्षर दुगनेकर तीन ३ का भागदेकर शून्यबचै तो रोगीमरै अंक बचै तो आरोग्यहोय १५ ॥ दूत शुभाशुभ ॥ जोदूत वैद्यके पूर्वदिशा व उत्तर पश्चिम ईशानदिशामें बैठे तो अच्छाहै। और दिशाओंमें बैठे तो नेष्ठ है। जो दूत तृण शस्त्र कोइलादिक लिये बैठजाय तो अच्छानहीं। लालमाला, लालवस्त्र, तृण, लाठी, दलकाटता, कीच व तेलमेंभीजा। चुची, नाक, माथाऊपर हाथ रक्खे व बालखींडायेहुये ऐसादूत नेष्ठहै ॥ दूत लक्षण ॥ रोगीकीजातिका अच्छीचेष्टावाला। जीवसंज्ञक दिशामेंबैठाहुआ। अच्छेसमयमेंआया दूतरोगीकोसुख हेतुहै। जिस दिशामें प्राण पवन जाय वह दिशा जीव संज्ञक है अर्थात् बैद्यके सन्मुख दूत श्रेष्ठ है २० ॥ दूतकहे अक्षर शुभाशुभ ॥ दूतके मुखसे निकसे अक्षर तीनगुणेकर ८ आठका भागदेय सम बचैतो मृत्युहोय। बिषमबचै तो आरोग्यहोय २१ ॥ रोगी पासजाते हुये वैद्य को शुभाशुभ ॥ रोगीकी चिकित्सा करनेको चलतेहुये मार्ग में सौम्य अर्थात् बाजावगैरह शुभहैं। दीप्त याने अंगारादिक शुभ नहीं २२ बैद्यके गमनमें हस्ती, ब्राह्मण, घोड़ा, बैल, फल, छत्र, मांस जलकुम्भ, स्त्री पुत्रवती, गौबछासहित, खंजरीटपक्षीसिद्धान्न। राजा पुष्प, वेश्या, चन्दनादिक शुभ हैं २४ हरिण, काक, वामें वैद्यगमन में शुभ हैं। कुत्ता, सर्प्प, मूषा, नकुल, मांस, दही, दूध, रूपा, गीदड़, बकरा मुरदारोदन वर्ज्जित, अग्नि प्रकाशित, सफ़ेद वस्त्र, ध्वजा, चित्त को

आनन्द,ग्रहशकुन वैद्यको शुभहैं और शकुनोंसे कहाहै २६॥ रोगी पासजाते वैद्यशकुन ॥ छत्र, गौ, ब्राह्मण, कन्या, मांस, मदिरा, वेश्या गोरोचन,मंगलशब्द, राजा, अश्व, हस्ती, दही,स्तोत्रपाठ, संगीत, भयानक करुणा विहीन शब्दकरतेहुये क्रीड़ा रूप मनोहर मुखसे कहते हुये बालकादिक शुभ हैं २८ पुरुष नामक पक्षी बाम शुभ हस्ती खच्चर विना स्त्री नामकपक्षी दक्षिणशुभ गौ गादड़ीबिना २९॥ अथवैद्यको अपशकुन ॥ बिलाव, गोह, कीरलीया, बानर ये जीवमार्ग छेदकरें तो अशुभ। रोगीके द्वारपै मंगल अमंगलरूप जानो ३०॥ वैद्य गमन निषिद्धकाल ॥ सन्ध्याकाल में, रात्रि में, स्नान, भोजन समय में, विपरीत कालविषे बुद्धिमान् गमन करे नहीं ३१॥ वैद्य रोगीविषयकनियम ॥ वैद्य रोगीके मकान में शयनकरे नहीं। रोगी के घरका भोजन करे नहीं। बिनाबुलाये जाय नहीं। वैद्य रोगी के मुखऊपर मृत्यु प्रकटकरे नहीं ३२ चिकित्साकरे तिसे वैद्य कहते हैं। तिसके लक्षण कहते हैं ३३ वैद्यगुरु सकाशते शास्त्राऽर्थजानताहो। सम्पूर्ण कर्म्म क्रिया जानताहो। अपने हाथसे औषध करने वाला। हलका हाथकाहो। शुद्ध, शूरवीर, सम्पूर्ण रसादिक पास होयँ। चंचल।जल्द बुद्धिवाला। उद्योगी। प्रियबचन बोलनेवाला। सत्यधर्म्मवाला। ऐसावैद्य शुभहै श्रेष्ठहै ३५ श्रेष्ठवैद्य महाअसाध्य रोगीकी चिकित्साकरे नहीं। चतुरहोय। गुरुमुखसे पठनाकियाहोय। सर्व कर्म्म चिकित्सा के देखेहुये। पवित्र हो वहवैद्य उत्तमहै ३६॥ अथनिषिद्धवैद्य ॥ पुरानेकपड़े पहनेहुये। क्रोधी। अत्यन्तगर्बवाला ग्रामग्राममें जानेवाला। बिनाबुलाया रोगीके पास आवै। ऐसे पांच प्रकार के वैद्य धन्वन्तरि समानभी प्रशंसाको प्राप्तनहीं होते ३७॥ वैद्यकर्त्तव्य ॥ रोगका निश्चयकर पीड़ाकी शांतिकरना यह वैद्यका वैद्यत्व है उमरकामालिक वैद्य नहीं है ३८ मनुष्य की १०१ मृत्यु हैं तिन्हों में १ मृत्यु कालसंयुक्त है बाकी सब रोग रूप साध्य हैं। काल सबीको ग्रसता है महामृत्युको दूरकरनेको कोई रसायन नहीं है ४० रोगी रोग शांतिके पीछे वैद्यको द्रव्यदेके पूजा नहीं करे तो रोगीका सुकृत पुण्य किया आधा वैद्यको मिलता है ४१ ॥ रोगीके

लक्षण ॥ धन वाला। वैद्य। वशीभूत। अपनी प्रकृति जाननेवाला। धैर्यवाला। प्रकृतिजाननेवाला। वैद्यशास्त्रविषे निश्चयवाला। वैद्य कृत उपकारको जाननेवाला। पथ्य करने वाला। निज प्रकृतिवर्ण युक्त। सत्वगुण वाला। वैद्यकभक्त। जितेन्द्रिय। ऐसारोगी चिकित्सा करनेयोग्यहै ४३ रोगीसे आदिसभी द्रव्यकी अपेक्षा करते हैं द्रव्य बिना चिकित्सा होती नहीं इसकारणधन चिकित्सांगहै ४४॥ परिचारकलक्षण ॥ स्नेहवाला। निन्दारहित। बलवान् रोगी की रक्षामें निपुण। वैद्य वचनमें निश्चयवाला। परिश्रमनहीं माननेवाला। दयावान्। पवित्र। चतुर। बुद्धिमान्। ऐसा रोगीके समीप रहनेवाला मनुष्य श्रेष्ठहै ४६ ॥ औषधलक्षण ॥ वैद्य जिसद्रव्यसे रोगको हरते हैं वहद्रव्य औषधहै वहजिसतरहसे रोगनाशकहो तिसेकहते हैं बहुत रोगऊपरआरामकारक बहुत गुणयुक्त ऐसा औषधश्रेष्ठहै४७औषध आवश्यकता रोगीकीउमर बाकीहो तो पीड़ायुक्तऔषध बिनाभी जीवेहै औषध से पीड़ा दूर होती है ४८ उमर बाकीहो तबभी औषध बिना रोगीकी पीड़ा दूर नहीं होती दृष्टांत जैसे हस्ती कीचड़मेंखड़ा हुआ उपाय बिना निकस नहीं सक्ता तैसे ४९ उमर बाकी हो अरु चिकित्सा नहीं करे तो मरसक्ताहै जैसे दीपकमें तेलबाती होते भी पवनसे दीपक नष्टहोता है तैसे ५० साध्यरोगी चिकित्सा नहीं करे तो स्वल्पासाध्य हो स्वल्पासाध्य चिकित्सा नहीं करे तो असाध्यहो असाध्यकी चिकित्सा नहीं करे तो मृत्युहो ५१ जबतक श्वासआवे तबतक चिकित्सा करनी चाहिये कोई समयमें चिकित्सासे मरणप्रायभी जीवताहै ५२ आदिमें रोगीकी परीक्षाकरे पीछे औषधकी परीक्षाकरे पीछेऔषधरोगीको देवे समझकर ५३ ॥निषिद्धरोगी॥ जार चोर, म्लेच्छ, ब्रह्महत्यावाला, मच्छीमारनेवाला, वैरी, ग्राममें कपट रचनेवाला ५४ जीवहिंसाकरनेवाला, मांसबेचनेवाला। ऐसेजनरोगी हों तो इन्होंकीचिकित्सा वैद्यकरेनहीं इन्होंकी चिकित्साकरनेसेवैद्य पापी होजाताहै ५५ ॥ रोगीकापरीक्षा ॥ देखकर। स्पर्शकर। पूँछकर रोगीकी परीक्षाकरे चिकित्साके चारअंगहैं वैद्य १ द्रव्य २ परिचारक ३ रोगी ४ इनसबकी तैयारीमें चिकित्सा श्रेष्ठहै ५७-६।३।

२।४।७।६।४।३।१।१०।९। सब अंक या प्रमाणलिखे कोष्ट ११ में अकारसे अन्त क कोष्ट ११ में लिखै क अक्षरसे ह तक कोष्ट ३३ में लिखे—ए ऐ ओ औ अः ये पांचअक्षरोंबिना, दूतके अरु रोगीके नाम अक्षर कोष्ट क अक्षरसे संख्याकर ८ का भाग देकर अधिकबचे तो रोगीजीवै।कमबचैतोरोगीकीमृत्यु।समबचैतो कष्ट६ २

६	३	२	४	७	६	४	३	१	१०	९	०
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	अं	०
क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट	०
ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ	०
ब	भ	म	य	र	ल	व	श	ष	स	ह	०

अ इ उ ए ओ पांच अक्षरपांच कोष्टमें लिखै क अक्षरसे ह तक ३० कोष्टमें लिखे—ङ ञ ण क्ष इनअक्षरों बिना १५ तिथिकोष्ट १५ में लिखै— सात बार ७ कोष्टमें लिखे—३ कोष्टमें शून्य लिखे रेवती से आदि २७ नक्षत्र कोष्ट २७ में लिखै ८ कोष्टमें शून्य लिखे ऐसेचक्र तैयार कर क्रमसे बाल, कुमार, युवा, वृद्ध, मृत, संज्ञकहै। बालककुछ लाभकारी। कुमार अर्द्धलाभकारी। युवा सिद्धिदेनेवाला। वृद्धहानिकारक। मृत मृत्युदेनेवाला। दूतकेवचनके अक्षर जिस कोष्टमें मिले वह बालसंज्ञकहै अक्षरभी उसीकोष्टमें वही तिथि हो तो कुमारबार भी मिले तो युवाहै नक्षत्रादि सबमिले तो मृतहै ऐसे विचारलेवै ६९॥ स्वप्नाध्याय॥ शुभाशुभ भाविफल मनुष्योंका कहते हैं। योग्य स्वप्ना कहते हैं ७१ रात्रिका पहिला प्रहरमें स्वप्ना आवे तो फल १ वर्षमें करै २ प्रहरमें आवे तो ६ महीने में फलकरै ३ प्रहरमें स्वप्ना आवे तो ३ महीने में फलकरै ४ प्रहर में आवे तो स्वप्ना १ महीनेमें फलकरै प्रातःकालमें स्वप्ना आवे तो १० दिनमें फलकरै ७२ स्वप्नमें गौ, बैल, हस्तीपर सवारहोवे के रोवताहुआ के अपने को मराहुआजाने कैअयोग्यस्त्रीसे भोगकरै-ऐसे स्वप्नरोगीको अच्छे हैं जोस्वप्नामेंराजाको केहस्ती कैअश्व कै सोना कैबैल कै गौ इनको

देखे तो कुटुम्बसहित आप आनन्दित होवै ७५ स्वप्नामें हवेली ऊपर अग्रभागमें बैठकर अन्न भोजनकरै व समुद्रको तिरै। ऐसा स्वप्नाआवे तो दासकुल जन्माहुआभी राजाहोवै ७६ दीपक, फला हुआ वृक्ष, कन्या, चक्र, ध्वजा, रथ स्वप्न में मिलै तो मनुष्य को अवश्य राज्यमिले ७७ जो स्वप्नामें मनुष्यका मांस कच्चा भोजन करै तो याको फलसुनो ७८ पैरकामांस भोजनकरै तो ५००) रु० लाभहो। दाहिनेहाथकामांस भोजनकरै तो १०००) रु० कालाभ हो मस्तकका मांस भोजनकरै तो राज्यमिलै हृदयका मांस भोजन करै तो राज्य दिवानहो ७९ स्वप्नामें जूतीजोड़ा व ध्वजा चक्रमिलै पीछे जागे तो व निर्मल यानीपइनी तलवार मिलै तो परदेशगमन हो ८० स्वप्नामें जहाज़ व नाव ऊपर सवारहो विस्तारवाली नदी को तरै तो कहीं गमनहो पीछे जल्दी आगमनभी हो ८१ स्वप्नामें दांतगिरपड़ैं व केशकाटेजावें तो धननाशहोकर पीड़ाहो ८२ स्वप्ना में जिसके सामने शृंगवाला पशु व शूर व बानर व सर्पादिक दौड़ते आवैं तो राजासे भयजानो ८३ स्वप्नामें धूलिसे या तैलसे या घृतसे या और सचिक्कण वस्तुसे अपनेको भीजाहुआ देखै तो रोग आयाजानो ८४ लालकपड़े पहनेहुये व लालचन्दन धारणकरे जो नारी स्वप्नामें पुरुषको प्राप्तहो तो कोई हत्या बनआवै ८५ काले कपड़े पहनेहुये कालातिलक लगायेहुये स्वप्नमें नारी प्राप्त हो तो मृत्युकरै ८६ सफ़ेदकपड़े पहनेहुये सफ़ेद फूलोंकीमाला धारणकरे हुये नारी पुरुषको मिले तो चारों तरफ़से लक्ष्मी की प्राप्तिहो ८७ जो स्वप्नामें अपना शिरमुड़ाये देखै व अपना बिवाहदेखै व अपने घरमें नाच गानादिक देखै तो मृत्युजानो ८८ जो स्वप्ना में नंगे व मूंडमुड़ायेव कालेकपड़े पहनेहुये लंगड़े, लूले, अन्धे, काणेवकाला रंग शरीरवाले, फांसीहाथमें लिये व शस्त्र हाथमेंलिये बांधतेमारते हुये दक्षिणदिशामें हो भैंसा, ऊँट, गधापर सवारहुये दिखाईदेवें तो अशुभये स्वप्ना अच्छेपुरुषको आवै तो बीमारहोवैबीमारको आवै तोजल्दीमृत्युहो ९१ जोस्वप्नमें ऊँचेस्थानसे नीचेगिरपड़े व जलमें डूबजाय व अग्निमें जलजावै व सिंहादिक मारैं या जलजीव नि-

गलजाय जिसके नेत्र जातेरहैं व दीपक बुझजाय व तैल व मदिरा पीवै या लोह तिल मिलैं पक्वान्नमिले व भोजनकरे व कुवांमें गिर पड़े व पातालमें चलाजाय ऐसे स्वप्न बुरे हैं अच्छे मनुष्यको तो बीमारी आवै रोगीको आवैतो मृत्युहो ९४ बुरास्वप्नआवैतोकिसी से कहै नहीं प्रातःकालमें स्नानकर सोना और तिलका दानकरै देवताओंके स्तोत्रका पाठकरै रात्री में देवता के मन्दिरमें बासकरै तीनदिनतक इसकर्मसे दुःस्वप्न दोष दूरहो ९६ स्वप्नमें देवता व राजा व जीवतेहुये मित्र व ब्राह्मण व गो जलतीहुई अग्नि व तीर्थ इनको देखे तो सुख प्राप्तहो ९७ स्वप्नमें अशुद्ध जलकी नदी को तिरके पारजाय तो शुभ वैरियोंको जीतले तो शुभ बैल, हस्ती घोड़ा पर सवार हो तो शुभ ९८ स्वप्न में अयोग्य नारी भोग व विष्ठा लेपन व रोवना व अपनी मृत्यु व कच्चामांसका भोजन ये सब धन सुखका देनेवाले हैं ९९ स्वप्नमें जोंक व मकड़ी व सर्प व माखी जिसको काटलेवै रोगी हो तो बीमार हो अच्छा हो तो धन मिले १०० स्वप्नमें सफ़ेद फूल व कपड़े व मांस व सच्छीफलजो रोगीको मिले तो अच्छे हैं १०१ स्वप्नमें सूर्य्यका मण्डल व चन्द्र-मण्डलदीखे तो रोगीको आराम अन्यको धनमिले १०२ स्वप्नमें जिसके दाहिनेहाथको सफ़ेद सर्प्पडसलेवै तिसको १०००) रु० का लाभ दशदिन भीतरहो १०३ स्वप्नमें बेड़ी जापड़े व फांसी गलमें बँधे तो सुख हो प्रतिष्ठा प्राप्त हो १०४ स्वप्न में रुधिर को पीवै या मदिराको पीवे तो ब्राह्मणको विद्या प्राप्तहो अन्य को धनमिलै १०५ स्वप्नमें दूध पीवै झाग सहित वर्त्तनमें धराहुआ तो दिन १० तक धनमिले कछु सन्देह नहीं १०६ नवीनचावल का खाना व दूधपीना सफ़ेद कपड़े व माला धारण करना स्वप्नमें श्रेष्ठ धनदायकहैं १०७ स्वप्नमें आसन व शय्या व रथ पालकी व शरीर व अश्वादिक ये सब अग्निसे जलते हुये देखे फिरजागे ऐसा स्वप्न आवे तो लक्ष्मी चारोंतरफ़से आवै १०८ जो स्वप्न में तालाबमें दही दूध का भोजन कमल के पत्ता में करेतो चक्रवर्त्ती राजाहो १०९ स्वप्नमें जिसके शरीर से लोहू निकसे या स्नानकरे

या शिर काटाजावे तिसको राज्यमिलै ११० गधा, ऊँट, भैंसा इन के जुड़ेहुये रथपै सवारहो ऐसास्वप्न आवे तोमृत्यु जानो १११॥
रोगीकी अष्टस्थानपरीक्षा ॥ रोगीके आठस्थान देखे नाड़ी १ मूत्र २ मल ३ जिह्वा ४ शब्द ५ स्पर्श ६ नेत्र ७ शरीरकाआकार८-११२ रोगीकी पहले नाड़ीदेखे दोषकोप ज्यादाहो याकमहो नाड़ीकी आदि में व अन्तमें स्थिरतादेखे वैद्यजन ११३ दृष्टान्त जैसे वीणामेंप्राप्त तन्त्री याने स्वर सम्पूर्णरोगोंको प्रकाशकरै है तैसे नाड़ी भी वैद्य हाथमें प्राप्तहुई सबरोगोंको प्रकाश करै है ११५ सबरोगोंका कारण कोपको प्राप्तहुये मलहै मल कोप कारण नाना प्रकारके अपथ्यवस्तु भोजनादिक हैं ११७ सब रोगोंके आदिमें नाड़ी व मूत्र व जिह्वा इनकी परीक्षा करै पीछे रोगीकी चिकित्सा करै ११८ जो वैद्य मूत्रका व जिह्वा के लक्षणको नहीं जाने सो वैद्य मनुष्य को मारैहै यशको प्राप्त नहीं होवै ११९ वैद्य देशकाल व रोगीका बलाबल देखकै चिकित्सा करै तो यश कीर्त्ति को प्राप्तहो १२०॥
नाड़ीपरीक्षा ॥ वैद्य दाहिने हाथ से रोगीके अंगुष्ठमूल के नीचे नाड़ीका स्पर्श करै रोगकी परीक्षा के वास्ते १२१ वैद्य स्थिरचित्त व शान्त मनवाला मनसे सबहाल जानकर अपनी तीनअंगुलियों से रोगीके दाहिनेहाथ की नाड़ी को स्पर्श करै १२२ पुरुष रोगी की नाड़ी पहले दाहिनेहाथ की देखे तिसमें सबहाल देखे व रोग वाली स्त्रीकी नाड़ी पहले बायें हाथ की देखे तिससे सबहालजाने पुरुषकी नाड़ी मुख्य दाहिनी स्त्री की नाड़ी बामी १२३ वैद्यजन ऐसे नाड़ीदेखै रोगीकाहाथ लम्बाकरावे कछुकटेढ़ाहाथकी अंगुली सब पसारके हाथको न हलावे न करड़ाकरै ऐसीबिधि कराय के अंगुष्ठमूलमें नाड़ीदेखे प्रभातसमयमें १२४ तीनबार नाड़ीपरीक्षा करै धारणकरै फिर छोड़दे ऐसे ३ बार परीक्षाकरै बुद्धिसे बिचार कर रोगकोनाड़ीद्वाराप्रकटकरै १२५ बैद्य ३ अंगुलीकरके ३ दोषों की नाड़ी क्रमसे देखे गति मन्द व मध्य व तीक्ष्ण तीनदोषोंकी देखै १२७ वात पित्त कफ व बातपित्त व बातकफ व सन्निपात व साध्य व असाध्य सबकी नाड़ी कहदेवैहै१२८नाड़ीनाम स्नायु १ नाड़ी २

हींस्रा ३ धमनी ४ धारिणी ५ धरा ६ तन्तुकी ७ जीवनज्ञाना ८ ये नाड़ीके नामहैं १२९ स्नान करे पीछे व भोजन करे पीछे तेल लगाये पीछे भूखा व प्यासाकी नाड़ी जानीजावेनहीं १३० अंगुष्ठ मूलमेंधमनीनामनाड़ी जीव साक्षिणी है तिसकी चेष्टासे सुखदुःख शरीरका सब वैद्य जानतेहैं १३१ वैद्यनारीकी नाड़ी वायांहाथ की व वायांपैरकी देखे नाड़ीज्ञान अभ्याससे होताहै १३२ वातनाड़ी का देवता ब्रह्माहै पित्तनाड़ीका महादेव है कफनाड़ी का विष्णु है १३३ अग्रभागमें वातनाड़ीहै मध्यमेंपित्तनाड़ीहै अन्तमेंकफनाड़ी है १३४ वातकीनाड़ी बक्रगतिहै पित्तकी उछलती हुई है कफ की मन्दगतिहै सन्निपातकी अत्यंत जल्दी चलतीहै १३५ वातनाड़ी सर्प व जोंककी गति चलतीहै पित्तकी नाड़ी काक मंडूककी गति चलती है कफकी नाड़ी हंस व मयूर व कपोत व मुरगाकी गतिचलै है वातअधिकमें तर्जनी अंगुली के नीचे प्रकटहो है १३८ वारबार सर्पगति व वारवार मींडकगति तर्जनीके व मध्यमाकेबीचमें अधिक प्रकटहोहै टेढ़ी चलतीहै धमनी नाड़ी वातपित्तसे १३९ सर्प हंस गति नाड़ी वातकफकी होहै अनामिकामें व तर्जनी में प्रकट होहै वातकफ अधिकसे मन्द व बक्रगतिहोहै १४१ सिंह हंसगतिनाड़ी पित्तकफकीहोहै पित्तकफ जो अधिकहो तो मध्यमा व अनामिकामें रहै प्रकटहोहै व पित्तकफअधिकसेनाड़ी कूदती व उछलतीहुईचलै है १४२ जैसे काष्ठ खोदनेवालापक्षी विशेष याने खाती चिड़ाकाष्ठ को काटे है वेगसे ठहर २ तैसे सन्निपात नाड़ी ठहर २ चलैहै सन्नि-पातसे प्रकट ३ अंगुलियोंमें रहैहै १४४ जोनाड़ी एकजगह अपना स्थानमें ३० बार एकहीगतिबोले तो रोगी जीवै व ठहर २ चले तो रोगीको मारै १४५ मन्द २ नाड़ी व शिथिल २ चले तो व ठहर२ चले तो अतिसूक्ष्म कभी अंगुष्ठमूलमें कभी कन्धामें जाबोलै ऐसी नाड़ी सन्निपातकी असाध्यहै मनुष्यकीमृत्युकरै १४८ पहिलेनाड़ी पित्तगति पीछे वातगति पीछे कफगतिको धारणकरै अपनास्थान से भ्रमणकरै चक्रादिवत् भयानकता को धारणकरै व सूक्ष्मताको धारणकरै ऐसी नाड़ीको असाध्यकहतेहैं वैद्यजन १५० जो नाड़ी

गम्भीरहो वह मांसमें बहनेवाली है ज्वरवेगसे नाड़ीगरम व वेग-वाली होती है १५१ काम क्रोधवालाकी नाड़ी वेगवाली होती है चिन्ता भयवाला की नाड़ी क्षीण अल्पहोती है मन्दाग्नि व धातु क्षयवालाकी नाड़ी अतिमन्दहोती है १५२ रुधिरकरकेपूर्णजोनाड़ी है सो गरम व भारी व सम व हलकीचलैहै दीप्ताग्निवालाकी वेग से चलैहै १५३ भूखाकी नाड़ी चपला चलैहै तृप्तकी नाड़ीस्थिर चलैहै मृत्युसे १ दिन पहलेनाड़ीडोरूके आकार होजाती है १५४ जो नाड़ी कांपै अत्यन्त अंगुलियों में स्पर्शकरेतो बार२ असाध्य जानकर ऐसे बीमारको वैद्यजन त्याग देवै १५५ जिसकी नाड़ी स्थिरहो कभी२ बिजलीकी तरह चमके ऐसाबीमार १ दिनमें मरै १५६ जिसकी नाड़ी जल्दी चलै मलसे भरी शीतलहोवै तिसकी दोदिनमें मृत्युजानो १५७ जिसकी बात नाड़ी जल्दीचलै कभी२ शीतलहो सचिक्कण पसीनाआवै ऐसामनुष्य ७ दिन भीतर मृत्यु को प्राप्तहोवै १५८ देहमें शीतलता हो श्वास रोगहो नाड़ी शीघ्र चलै तिसकी मृत्यु १५ दिन भीतर हो १५९ जिसके बात नाड़ी बोलैनहीं शरीर शीतलहो भीतरसेबाहर ग्लानिहो मन्द२नाड़ीचलै तिसकी तीनदिनभीतर मृत्युजानो १६० जिसकीनाड़ी अतिसूक्ष्म हो व अतिवेगवालीहो व शीतलाहो तिसकी थोड़ीउम्र कहो १६१ जिस रोगीकी नाड़ी बिजलीकीतरह कभीचलै कभी बन्दहोवै ऐसा रोगी मरै १६२ जिसकी तिरछी व सर्पगति व गरम व अति वेग-वालीहो व कंठमें कफहो तिसका जीवना दुर्ल्लभहै अवश्यमरै १६३ जिसकी नाड़ी अतिवेगवाली हो शीतल हो या चंचलहो नासिका का आधार तक चलती दीखै तो १ पहर भीतर मृत्युहोवै १६४ जिसकी नाड़ी मलयुक्त जल्दीचलै व दुपहर में अग्नि समान ज्वर हो ऐसा मनुष्य १ दिन जीकर दूसरे दिन मरै १६५ जिसकेहाथ की नाड़ी वैद्यको मिलै नहीं पैरमें नाड़ी दीखै मुख प्रकाशमान हो ऐसे रोगीको दूर से त्याग देवै १६६ बात पित्त कफ ये तीनोंजिस नाड़ीमें हों तिसको कष्ट साध्य व असाध्य कहो १६७ बातज्वरमें नाड़ीवक्रगति व चपला व शीतलाहो है अरुपित्तज्वरमें नाड़ी को-

मल व शीघ्रगति लम्बीहोहै १६८ कफज्वरमें नाड़ी मन्द व शीतल व स्थिरा व स्निग्धा हो है वातपित्त ज्वरमें नाड़ी वक्रगति व कलुक चपल करड़ी होवे है १६९ वातपित्त ज्वरमेंनाड़ी दृष्टिमें थोड़ीदीखै अतिमन्द होवै पित्तकफज्वरमें नाड़ी सूक्ष्मा शीतला व स्थिराहो है १७० जिसकीनाड़ी हंसगति व हस्तीकीगतिहो अरुसुखप्रसन्नहो तिसको आरोग्य जानो १७१ जोरोगीकाहाथ स्पर्शकरै पीछे जल से धोवै तो जल्दीरोग नाशको प्राप्तहो दृष्टान्त जैसे जलसे धोवने से पंक यानेगारा नाश होती हैतैसे १७२ ॥ मूत्रपरीक्षा ॥ अब मूत्र परीक्षा कहै हैं जिसके जानने से रोग चिह्न जानाजाय १७३ रात्रि का अन्तकी चारघड़ीरहैं तिससमयमें वैद्य रोगीको जगाय कांचके पात्र में मूत्र करवावै तिसकी सूर्योदय में परीक्षा करै अरु मूत्रकी आदिकी धारा पृथिवी में करावै मध्यधारा कांचपात्रमें कराय रख देवै फिर विचारकर चिकित्सा करै १७६ बातका रोगमें सफ़ेदमूत्र जानो कफका रोगमें झागसहितहो पित्तका रोगमें मूत्र लालवर्ण जानो वातपित्तमें व वातकफ मेंमूत्रमिलाहुआजानो अनेकरंगमूत्र हो १७७ सन्निपात रोगमें मूत्र कृष्णवर्ण जानो यह मूत्र लक्षणहै १७८ वैद्य मूत्रकी परीक्षा विधिसेकरै मूत्र पात्रमें तैलकी बूंद तृण सेगेरै हलका हाथसे १७९ जोतैलबूँद मूत्रमें प्रकाशमान फैलजाय तोरोगीको साध्यजानो जो फैले नहीं तो कष्टसाध्य जानो बूँद तली में बैठजाय तो असाध्य यहपरीक्षा नागार्ज्जुनकेमतकीहै १८० वात कोपमें मूत्र नीला व रुक्ष पित्तकोपमें पीला व लाल व तैलसमान कफकोप में चिकना व परवलके जलके समान रुधिरकोप में मूत्र सचिक्कण व गरम व लालहो है १८२ जिस रोगीके अन्नपाकहोवै नहीं तिसकामूत्र बिजोरारस समान व कांजी सम व जलसमहो है १८३ अजीर्णमें मूत्र चावलकापानी सम होहै नवज्वरमें धूम सम होहै व ज्यादा मूत्र हो है १८४ वातपित्त ज्वरमें धूमाका जल सम गरम होहै जीर्णज्वर में मूत्र रुधिर सम लाल व पीला होहै पित्तकफज्वरमें मूत्र मैला व लालहोवे है अरु बातकफमें मूत्र सफ़ेद व बुलबुलावाला होवे है व सन्निपातमें मूत्र अनेक वर्ण होवे है

वैद्य विचारलेवै १८६ जो मूत्रपात्रमें तैलबिन्दु पूर्वदिशामें बढ़ै तो रोगीजल्दी अच्छाहोवे जो बूंद दक्षिण दिशामें बढ़े तो ज्वर आवै उत्तरदिशामें बढ़े तो आरोग्यहोवे पश्चिम दिशामें बढ़े तो सुख व आरोग्यहोवे १८८ ईशान दिशामें जावे तो एक मासमें मृत्युहोवे अग्नि दिशा में या नैर्ऋति में जाय तो मृत्युहो बूँद में जो छिद्रहो- जावै तोभी मृत्युहोवे १९० जो बूँदकारूप फैलाहुआ व हल व क- छुआ व गैंडा व करण्ड याने वंशादिकृतभांडविशेषः। व मण्डल व मस्तक रहित नर व खण्डितगात व तलवार व हथियार व मुशल व पट्टिश शस्त्र विशेषः। व तीर व लाठी व चुराहा व त्रिराहा ऐसे रूप बूँद के तैलपात्र में होजावें तो तिस बीमारकी चिकित्सा वैद्य करेनहीं १९३ जो हंस व तालाब व कमल व गज व चमर व छत्र व तोरण व हवेली अच्छी ऐसारूप बूँदका मूत्र में होजावे तो रोगी आरोग्यहोवे वैद्य चिकित्साकरै १९४ तैलबूँद मूत्र में चालनी सम छिद्रवाली होवे तो प्रेतदोष जानो १९५ तैलबूँद मूत्रमें नरके आ- कारहोवे तो व दोमस्तक होजावे तो भूतदोष जानो वहां भूत विद्या करै १९६ रोगी का मूत्र मंजिष्ठरङ्ग तुल्य व धूमवर्ण व नीला व चिकणा व पानी सम व शीतल ऐसे रूप जानकर वैद्य औषध देकर मूत्र बदले १९८ तैलबूंद बाताधिकसे सर्पाकार होती है पित्तसे छ- त्राकार होवे है कफसे मोतीके आकारहो वे ऐसेमूत्रलक्षणहैं १९९॥

मलपरीक्षा ॥ बातकोप से मल टूटाहुआ अरु झागवाला व रुक्ष व धूमवर्ण होवे है बातकफ में मल पीलारंग हो है २०० बातपित्तकोप से मलबँधाहुआ व टूटाहुआ व पीला व कालाहोवे है पित्तकफकोप से मल श्याम व कटुक गीला व चिकणा होवे है २०१ त्रिदोष से मल काला व त्रुटित व पीला व बँधाहुआ होवे है जोमलदुर्गंधयुक्त व शिथिलहोवे तो अजीर्णरोग जानो २०२ क्षयीरोगमें श्याममल होवे है आमबातमें मल पीला दस्तसमय कटिमें पीड़ाहोवे है अति कृष्ण व अतिसफ़ेद व अतिपीत व अतिलाल व अतिगरम ऐसा मल मृत्युदायकहै २०४ बातमें मलकाला पित्तमेंपीला कफमेंलाल अरु सफ़ेद मिलाहुआ मलहो है २०५ बातपित्तमें व बातकफमेंमल

आमरूप होवे है वा सफ़ेद मिश्रितरंग होवे है अजीर्ण में मलकच्चा होवे है अरु अच्छामनुष्य का मल पकाहुआ होवे है २०६ दीप्ताग्निवाला का मल शुष्क व ग्रन्थीवाला होवे है मन्दाग्नि वाला का मलपतला होवे है जिसकामल दुर्गंधि युक्त व चमकताहुआहोतिस को असाध्य कहे २०७वात कोपमें मलबद्ध व कालाहोवे है पित्तकोप में पीला कफकोपमें पानीके सम व झागसहित व गीला व सफ़ेद रंग होवे है २०८ रुधिरकोपसे रक्तसम व जलसम मलहोवैदोदोष का कोपमें मल २ रंगहोवे सब दोषोंके कोपमें मल अनेक रंगहोवै २०९ जिसरोगीके दुर्गंधयुक्त व कालारंग व लालरंग व सफ़ेदरंग व कईरंग मिलेहुये मांस सम ऐसा जिसरोगी का मलहो तिसकी मृत्युहोवै २१० त्रुटित व शिथिल बारम्बार निकसे ऐसा मल अजीर्णमें होवेहै यह दिशामात्र मलप्रकरणकहाहै २११ ॥ जिह्वापरीक्षा॥ वात अधिक में जिह्वा शीतल व खरखरी व स्फुटिता होवे है पित्त कोप में लाल व काली होवे है कफके कोप में सफ़ेद व चिकनी होवेहै २१२ सन्निपातमें काली व कांटेवाली व सूखी दो २ दोषके कोपमें मिश्रितरूपाजानो २१३ अरु यह अन्यग्रन्थकामतहै बातमें शाकपत्र समान जिह्वा होवे है व रुक्षा पित्तमें लाल व कालीहोवेहै कफसे सफ़ेद व चिकणी होवेहै सन्निपात में जिह्वा दग्धरूपा व खरधरी व कांटेवाली होवे है दो २ दोषसे कईरङ्गकी मिली हुई होवे है २१४॥शब्दपरीक्षा॥ मोटेस्वरसे बोले तो कफदोष जानों स्पष्टबोले तो पित्तकोप जानो पूर्वोक्त दोनोंतरह रहित बोले तो बातकोपजानो २१५ ॥ स्पर्शपरीक्षा॥पित्तकोपमें गरमशरीरजानो बातकोपमें शीतल शरीरजानो कफकोप में चिक्कण शरीरजानो सबही चिह्न मिलैं तो सन्निपात जानो कफरोगवाला गीलासमरहैहै २१६ ॥ नेत्रपरीक्षा ॥ नेत्ररुक्ष व धूम्रवर्ण व लाल किञ्चित् व गोलक में प्रविष्ट गर्ववाला मनुष्यकी तरह देखना ऐसे लक्षण बातकोपके हैं २१७ पित्तसेनेत्र हल्दी समान पीले व लाल व हरे व दीपकको न देखसके व दाह सहित ऐसेनेत्र पित्तकोपसे कहै २१८ चिकणे व जलयुक्त व सफ़ेद वर्ण व ज्योतिरहित कफयुक्त ऐसेनेत्र कफकोपसे होहैं २१९ दो २

दोष कोपसे दो२ दोषके नेत्रहो हैं त्रिदोष कोपसे त्रिदोषके लक्षण वाले नेत्रजानो २२० त्रिदोष दूषित जो नेत्रहैं सो गोलक में गड़े हुये व जलसे भरेहुये व बराबरसे खुलेहुये ऐसेनेत्र जिसरोगीकेहों तिसको सन्निपात ग्रस्तजानो २२१ जिसरोगीका एकनेत्र भयानक खुलाहुआ दूसरा मिचाहुआ व नेत्रका तारा कलुकदीखे अरु भ्रम युक्त ऊपरको देखे ऐसे रोगीको असाध्य जानो व कम्पायमानहोंके देखे सोभी असाध्यहै २२३ जो एक नेत्रसे देखे चेतना जातीरहै अक्षिकातारा भ्रमण लगजावे वह एक रात्रिमें मरै २२४ वात कोप से नेत्ररुक्ष व धूम्रवर्ण व अन्तर्दाहयुक्त व चञ्चल होवे हैं पित्तकोप से पीला व हरा व दीपकको नहीं देखसके अरु दाहवाला होहै कफ कोपसे नेत्रसफ़ेद व जलभरे व कान्तिरहित होवे हैं २ दोष में दो चिह्न जानो सन्निपातसे नेत्र भयानक गोलक में गड़ेहुये कालेहोहैं २२७ यह और ग्रन्थकामतहै द्वंद्वदोषसे२वर्णमिले नेत्रजानोत्रिदोष से कालेवर्ण भयानक तन्द्रा मोहयुत लालवर्ण होवे हैं २२८ जिस रोगीका एकनेत्र भयानकहो दूसरा मिचारहै तिसकी तीन दिन में मृत्युहो २२९ जिसके नेत्र ज्योतिरहितहों कलुककाले रंगहों तिसकी मृत्युहो २३० जिसकेनेत्र लाल व कालेरंगहों भयानकदीखे तो अवश्य मरै २३१ ॥ मुखपरीक्षा ॥ बातकोप में मुखमीठा रहै है पित्तकोपमें मुखकडुवा रहै है कफदोषमें मुखमीठा व खट्टा रहै है त्रिदोषमें मुखसर्वरस करके युतरहै है २३२ अजीर्णमें मुखघृत से पूर्णकी समरहैहै अग्निमंदमें मुखकास्वाद कसैला रहै है २३३ ॥ स्वरूपपरीक्षा ॥ वायुसब दोषों में प्रबलहै कारणसमर्थहोने व वेगवान होनेसे व बलवान् होनेसे व अन्यको कोपकराने वालाहोने से स्वतंत्रसे व व्याधिकारकसे इनकारणोंसे प्रबलहै २३४ बहुत करके पवनयुत मनुष्य स्फुटित गातहोवै है शीतलताका वैरीचलायमान बुद्धिवाला व स्मरण पूर्वबातोंका व मित्र दृष्टि व ज्यादाप्रलापकरने वाला होवैहै २३६ पित्त अग्निकारूपहै पित्तकोपसे तृषाअरु भूख ज्यादालगै है सफ़ेदरंग शरीर व गरमहाथ व पैरगरम व मुखतांबा सम शूरवीरसम अभिमानीकी सम पीलेकेशहोवै हैं अल्परोमावली

यह पित्तकोपके लक्षणहैं २३७ कफचंद्ररूपहै इस वास्तेकफवाला सौम्यहोहै कपड़े पहने चिकणाशरीरदीखे हाथमांस संधिमिलीहुई रहै भूख व प्यास व शोक व क्लेशसे रहित बुद्धिमान् सतोगुणीसत्य-वादीहोहै २३८॥ आयुर्विचार ॥ वैद्यआदिमें आयुःपरीक्षामनुष्यकी करै आयु बाकीहो तो चिकित्सा सफलहोहै २३९ जिसकी सौम्य दृष्टिहोवै सौम्य नासिका व मुखहो स्वादु व गन्धको जानै तिसको साध्यजानो हाथ व पैर जिसके गरम हों स्वल्पदाहहो जिह्वा को-मलहोय ऐसारोगी अवश्यजीवै २४१ पसीना रहित ज्वर होवे नासिकाद्वारा श्वासलेवै कफहीनकंठहो ऐसारोगी निश्चयजीवै २४२ कालज्ञान विधिसे पात्र में जलभरके पूर्णचंद्रमा व सूर्यकोदेखेजो पूर्वदिशामें छिद्रदीखै तो ६ मासतक दक्षिणमें छिद्र दीखै तो ३ मासतक पश्चिममें २ मासतक उत्तर दिशामें १ मासतक मृत्युहो अरु पश्चिममें धूम्राकृतिवाला अग्नि दीखै तो दशदिनतक मरै यह कालज्ञान वालोंका मतहै २४४ जिसकी आयुबाकी नहींहो अरुं-धती व ध्रुव व विष्णुके तीनपैर व चौथा मातृमंडल दीखतानहीं २४५ अरुंधती जिह्वाहोहै ध्रुव नासिकाका अग्रभागहोहै दोनोंभृकुटियों के मध्यमें विष्णु हैं अरु दोनों भृकुटीमातृमंडलहै २४६ नासाग्र व दोनोंभृकुटी व मुख जिसको दीखैनहीं कानसेसुनैनहींवह अवश्यमरै २४७ तो नौ भृकुटी पांचनेत्र सातकर्ण तीननासिका तीनजिह्वाऐसे जिसकोदीखै वह अवश्यमरै २४८ जोपुरुष आपहीमोटाहोजावै वा आपही कृशहोजावै अन्यभावको प्राप्तहो ऐसापुरुष६ महीनेमेंमरै २४९ जिसकीजिह्वा कालीहो मुखलालहो जिह्वा स्पर्शको जानै नहीं वह अवश्यमरै २५० रोगीपास जाने में लग्नशुद्धि सूर्यकेंद्रमें होतो ज्वरघनाहो चंद्रमा केंद्रमें होतो शीतबातहो भौम केंद्रमेंहो तो रक्तविकारहो बुध बृहस्पति शुक्र केंद्रमें हों तो जलदी आराम हो २५१ शनिकेंद्रमेंहो तो शिथिलहोके मरै राहुकेंद्रमें होतो जलदी मरै ऐसेप्रकार वैद्यलग्न देखकेचलै २५२ रात्रिमेंदाह दिनमेंशीतलता कंठमेंकफ मुखका स्वादु रहैनहीं लालनेत्रहों जिह्वाकाली व नाड़ी सूक्ष्मा व भारीहो ऐसे मनुष्यको रामनाम जपना चाहिये निश्चय

मरै २५३ सौम्य दृष्टिहो यथार्थ बोलै हाथ पैर गरमहों स्वल्पदाह हो मुखमें स्वादुहो कोमल जिह्वाहो नासिकासे कोमल श्वासचलै पसीना रहित ज्वरहो ऐसासाध्यहै वैद्यकूं चिकित्सा करनेकूं योग्य है २५४ मुख सूखारहै कालेदाग होवैं सफ़ेद रंग रहित दांतपंक्तिहों शीतल नासिकाहो लालनेत्रहों एक नेत्रसे देखै हाथ पैर उठै नहीं बधिरहोजावैश्वासशीतल व अत्यन्तगरमहोश्वासकाउदयहोशीतलशरीर व कांपैउद्वेगसहित व कर्त्तव्य अकर्त्तव्य रहितहोजावेऐसा लक्षण मृत्युसमय में होवै है २५५ शरीर शीतल व चिकणाहोजावै माथामें पसीना आवे कंठमें कफस्थितहो अरु कफहृदयमें जावैनहीं ऐसामनुष्य निश्चयमरै २५६ जिसको निद्रा अच्छी आवै सुखसे शरीर उद्यम सहितहो इन्द्रिय प्रसन्न होवैं ऐसारोगी जीवै २५७॥ स्वल्पायुः लक्षण ॥ जिसकाशरीर व शीतलताकी प्रकृति विकृति हो जावै वह अरिष्टहो है विस्तारसे सुनो २५८ जो नानाप्रकार शब्दों को सुनै व विपरीति शब्दसुनै व शब्दबोला सुनै नहीं ऐसे नरकी स्वल्प उमरजानो जो नर गरम को शीतलसमान ग्रहणकरै व शीतलको गरमसमान ग्रहणकरै कछुक गरमशरीरहो अरु शीतलता करके शरीर कांपै उपाय कछुजानै नहीं व घबराय जावै व अपने अंगोंको धूलसेंभरे मानै जिसका शरीर वर्ण बदला जा व शरीरमें पंक्तिपड़जावें स्नानकरेपीछे तिसकोनीलमक्षिका सेवनकरै विपरीत रसों को अंगीकार करे रसस्वाद जाने नहीं ऐसे नर की उम्र कम जानो २६१ सुगन्ध को दुर्गंधजाने व दुर्गंधको सुगन्धजाने व विपरीत प्रकारसे गन्ध ग्रहणकरै वह अवश्यमरै २६२ रात्रिमें सूर्य प्रकाश देखे दिनमें चन्द्रप्रकाश देखे अरु दिनमें तारे प्रकाशमान् देखै अरु विमान व यान व मकानादियुत आकाशको देखै व पवन रूपका शरीर आकाशमें देखै धूम व ओस व वस्त्रादिकोंसे ढकीहुई भूमिकोदेखैसंसारकोजलताहुआ व जलमेंडूबाहुआदेखै अरु भूमि को अष्टदलसम रेखायुत देखै अरु नक्षत्र देखैनहीं अरु अरुंधती व ध्रुव व आकाशगंगा न दीखे ऐसे मनुष्य की मृत्यु जल्दी जानो २६६ दर्पणमें व जलमें व धूपमें अपनी छाया दीखे नहीं व छाया

एक अंग हीन दीखे व बिकारवाली दीखे व और जीवको दीखे व कुत्ता व काक व कंकपक्षी विशेष व गीध व प्रेत व राक्षसादिक की छायादीखै तो रोगीमरै स्वस्थमनुष्य का रोग आवै २६८ लाज व शोभा जातीरहै आपही आप तेज अरु बल अरु पिछली बात का स्मरणहोजा तिसकी मृत्युजानो २६९ जिसका तरलाओष्ठ पतित होजावे ऊपरला ओष्ठ ऊर्ध्वगतहो अथवा दोनों ओष्ठ जामनफल समहोजावें तो जल्दीमरै २७० दांत लाल होजावें व काले व गिर पड़ें व खंजनपक्षी समान होजावें तो जल्दी मरै २७१ जिसकी जिह्वा काली व कफसे लिप्त होजावे व शून्य व खरधरी होवे तो जल्दीमरै २७२ जिसकी नासिका कुटिला व टूटीहोजावे व सूखी व ज्यादह फुरै व खंडित होजाय ऐसा मनुष्य ज़ल्दी मरै २७३ जिस की पलक ज्यादह फरकै वहभी जल्दी मरै २७४ जो रोगी मुख में अन्नदयो से खावेनहीं व शिरको कँपावै एकदृष्टि हो मूढ़सम हो वह जल्दीमरै २७५ बहुत प्रकार उठायाभी रोगी मोहकोप्राप्तहो बल-वान्हो वह दुर्बलहो तिसरोगीकोरोग पकाहुआ जानो २७६ जिस रोगी को निरन्तर निद्राआवै व निरन्तर जागै व बोलनेकी इच्छा करै मोहमें प्राप्त हो ऐसे रोगीको वैद्य त्याग देवै २७७ जो रोगी दोनों ओष्ठको जिह्वासेचाटै व हाथ ऊपरको करै व रात्री में प्रेतों के संग भाषणकरै तो जल्दी मरै २७८ जिस रोगीके रोमओंसे रुधिर झिरै अरु ज़हर आदि कछुखाये बिना तो वह रोगी अवश्य मरै २७९ जिस रोगीकी अच्छीतरह चिकित्सा हो अरु बिकारबढ़ैबल व मांस शरीर में होवे नहीं वह रोगी मरै २८० भूत व प्रेत व पि-शाच व राक्षस नानाप्रकारके मरनेवाला रोगीको प्राप्तहोहै २८१॥

छायापुरुष लक्षण॥ अबछायापुरुष लक्षण कहते हैं जिसके जानने से नरत्रिकालज्ञहोताहै २८२ दूरस्थितपुरुष का जिसतरह उपाय से काल जानाजावै वह विस्तारपूर्वक कहते हैं यह शिवकाशास्त्रमें लिखाहै २८३ पुरुष एकान्त बनमें जायकर सूर्यकोपृष्ठपीछेकरके अपनीछाया को देखै कण्ठदेश से सावधानहोके तिसपीछे आकाश को देखे तिसपीछे बहुतदेरतकगक्करदेखै फिर। ओंह्रींपरब्रह्मणेनमः।

यह मन्त्र १०८ बार जपै तिसकेपीछे उस पुरुष को महादेव दीखै २८५ शुद्धस्फटिक समान कान्तिवाला नानाप्रकार का रूपधारण करेहुये महादेवको छःमहीनेतक अभ्याससे देखकर वह नर मनुष्य पति याने अत्यन्त धनवाला होवै २८६ ऐसा अभ्यास जो दो वर्षतक करै तो कर्त्ता व हर्त्ता व सामर्थ्यवाला व त्रिकालज्ञ होके परमानन्द को प्राप्तहो २८७ निरन्तर अभ्यास से कछुदुर्लभनहीं वह आकाश में जब कृष्णवर्णदीखै निर्मल आकाश में तब जानले की छः मासतक मृत्युहो तिसयोगी की संशयनहीं २८९ वहीरूप आकाश में पीलादीखै तो रोगआवै लालदीखै तो भयहो नीलदीखै तो हत्या प्राप्तहो कईरंग दीखै तो उद्वेग होजावै २९० पैर गुल्फ टांकणा व पेट खण्डितदीखै तो मृत्युजानो यह छःमहीने व १ वर्ष व २ वर्ष अभ्यासकरने से सिद्धहोहै २९१ शिर व दाहिनी भुजा बिनादीखै तो मृत्युजानो व बिना शिरहीदीखै तो १ महीनामें मरै व जाँघबिना दीखै तो १ दिनमेंमरै ग्रीवा बिना दीखै तो ८ दिनमें मरै अपनी छाया नहींदीखै तो उसीवक्त मरै २९३ दोषकी विषमताको रोगकहे हैं दोषसमताको आरोग्यकहैहैं रोगदुःख के दायक है वही रोगज्वर से आदिहोत है २९४ जो मनुष्य दिनचर्य्या के अनुसार वर्त्तैनहीं वह रोगको प्राप्तहो उसीरोग के लक्षण कहते हैं जीव व आत्माको दुःखकारी व्याधि होवे है तिसके भेद ज्वरादिक बहुतहैं ग्रन्थोंमें कहे हैं २९६ वहरोग स्वाभाविक कोइक आगंतुक कितनेक मानस कितनेक कायिकहो हैं २९७ व्याधि तीनप्रकार की होहैं कर्मज व दोषज व कर्मदोषज ऐसे जानो २९८ वैद्यरोग की चिकित्सा अच्छीकरे शास्त्रप्रमाण रोग शान्त न हो वहकर्म्मज व्याधि जानो २९९ कर्म्मक्षय से कर्मजव्याधि नाशहोहै औषध से दोषजव्याधि नाशहोहै कर्मदोषज व्याधि कर्म्मदोष क्षयसे नाशहो है ३०० रोग साध्य व जाप्य व असाध्य ३ तीनप्रकार के होतेहैं साध्य दो प्रकार हो है सुखसाध्य १ कष्टसाध्य २ ऐसेजानो ३०१ जिसको क्रियाधारण करै याने यत्नकरै इतने तो रोग शांतरहै अरु जित्र यत्न नहींहो जिवफिररोग बढ़जावै सोजाप्यकहिये ३०२ सुखी

जाप्यआतुरको औषधउत्तमहै जैसेस्तंभयतनसेलगायाहुआगिरता मकानको थांभैहै तैसे ३०३ साध्यरोग जाप्यहोजा जाप्य असाध्य होजाअसाध्य प्राणोंकोहरैहै जो चिकित्सानहींकरावै ३०४ उपद्राव लक्षण रोगकरनेवाला दोषका कोपसे अन्य उपद्रव याने विकारहो उसको उपद्रवकहैहैं अरिष्ट लक्षण रोगी का मरण निश्चय जिससे दिखजावै उसे अरिष्ट व रिष्टकहै हैं ३०५ ॥ चिकित्सा लक्षण ॥ जो क्रिया व्याधिहरतीहै विसे चिकित्सा कहैहैं दोष धातुमलोंको शांत करै वहीरोगको हरैहै जिनक्रियाओं करके शरीर में धातुसमहो विसे चिकित्साकहैहैं यहीवैद्यकर्महै ३०६ रोगजन्मतेही तिसकीचिकित्सा करै कमजानकर त्यागैनहीं अग्निविष शत्रुसम रोगहोहै स्वल्प भी बढ़कर दुःख देहै ऐसे जानो ३०७ वैद्य कर्त्तव्य रोग की आदिमें परीक्षाकरै पीछे औषध समझै पीछे ज्ञानपूर्वक रोगीको देवै ३०८ जो वैद्यरोग निदान जानेनहीं औषधीदेवै औषधकर्म्म में निपुणहो तोभी ऐसावैद्यकी सिद्धि प्रारब्धवशसे जानो ३०९ औषध बनानी जाने रोगको जानेनहीं वैद्यकर्मकरै वह राज्यसे दण्डयोग्यहै ३१० जो वैद्य केवल रोगजाननेवालाहो औषधकरने में निपुणनहींहोतो तिस वैद्यको प्राप्तहुआ रोगी को दुःखहो दृष्टान्त जैसे नाव मल्लाह बिना जलमें भ्रमतीफिरै तैसे ३११ जो वैद्य केवल शास्त्रही जानने वालाहो क्रियामें निपुण नहो वह रोगीको प्राप्तहुआ मोहको प्राप्त होजाय दृष्टान्त युद्धमें डरपोक मनुष्य जैसे ३१२ जो वैद्य रोग व औषध जाने देशकाल को भी जाने तिसको सिद्धिहो इसमें सन्देह नहीं ३१३ आदिमें व अन्तमें रोगको जानै पीछे औषधजानै पीछे कर्मकरै ३१४ कुशल वैद्य विकार जानकर लज्जाकरै नहीं सम्पूर्ण विकार विचारण से आते हैं ३१५ दोष बिना रोग नहींहोता जो अनुक्तदोष चिह्नोंकरभी रोगनिदानकरै ३१६ अच्छे वैद्य असाध्य रोगी की चिकित्सा नहीं करै इसीवास्ते आदि में साध्य असाध्य की परीक्षा में यत्नकरै ३१७ शीत में शीतनाशक औषध गरम में गरम नाशक औषध करै क्रिया लोपकरै नहीं वैद्य जन ३१८ अप्राप्त काल में याने जिस वक्त क्रिया न बनसकै अरु प्राप्त काल

में याने क्रिया बनन के समय अरु हीनक्रिया अरु त्यागीहुई क्रिया ये सब साध्य रोगी को भी सिद्धि न देवै ३१९ स्वल्प विकार में बड़ा कर्म्म करना बड़ा विकारमें स्वल्पकर्मकरना यह वैद्यकी कुशलता नहीं है युक्त कर्म करना तिसे वैद्य कुशला कहे हैं ३२० क्रियाका गुण नहींहो २ क्रियाकरै पहलीक्रिया का वेग शान्तहोले तबकरै दो २ क्रियाओंको मिलावै नहीं ३२१ एकरूपकी क्रियाका मेलन करैनहीं अरु भिन्नरूपकी क्रियाओंका मेलनसे सांकर्य्यदोष है नहीं ३२२ लंघन व बालुरेत का पसीना हुलास व बमन व अवलेह व अंजन ये सब सन्निपातमें पहिलेदेवै ३२३ वैद्य एकान्त में शास्त्रकी लिखीहुई क्रियाको बिचारै कछु तर्कणाभीकरै ३२४ जो अवस्थाहो व देशकाल व बलदेखिकै कर्त्तव्य अकर्त्तव्य वैद्यजन करै ३२५ चिकित्साफल कहीं चिकित्सा से द्रव्य की प्राप्तीहो है कहीं मित्रताहो कहीं धर्महो कहीं यशहो कहीं कर्माभ्यास हो चिकित्सा निष्फलहोवे नहीं ३२६ चिकित्सा पुण्यका विक्रयकरै नहीं लोभसे धनवालोंसे आजीवन वास्ते द्रव्यलेवै गरीबोंको खैरात व पुण्यहेतु औषधदेवै ३२८ जो रोगी आरोग्यहोके वैद्यको द्रव्यादिकदेके पूजै नहीं तो अपना पुण्यकिया वैद्यकोमिले ३२९ बड़ा रोगग्रस्त ब्राह्मण व गोको मार्गमें देखके वैद्यचलाजाय तो वैद्यको ब्रह्महत्यालगै ३३० रोगी१दूत२ वैद्य३ दीर्घआयुः४ द्रव्य५ सुसेवक६ श्रेष्ठऔषध७यह चिकित्साके अंगहैं ३३१ जिसके रोगहो उसे रोगीकहैहैं जिसतरह के रोगीका वैद्य चिकित्साकरै वहकहते हैं ३३२ अपनी प्रकृतिवर्ण याने स्वरूपको रोगी यथार्थ धारण करेहुये हो अरु सत्त्वगुणवाले नेत्रयुतहो अरु वैद्यमें भक्तिरखनेवाला व जितेन्द्रिय ऐसारोगी वैद्य को चिकित्सायोग्य है ३३३ आयु बाकीवाला सतोगुणवाला साध्य व द्रव्यवान् व मित्रोंवाला व वैद्यवाक्य माननेवाला आस्मिक ऐसा रोगी वैद्यइलाजयोग्यहै३३४क्रूर व हठवाला व भयवाला व कृतघ्नी व दुष्ट व शोकवाला व मूर्ख व मरनेकी इच्छाकरै व इन्द्रियरहित व बैरी व आप वैद्य व श्रद्धाहीन व शंका करनेवाला वैद्योंकरके त्यागा हुआ ऐसेरोगियों की चिकित्सा करे नहीं करै तो दुःखपावै जो वैद्य

रोगीके घरमें पूजा न जा कछु द्रव्यसे तो सिद्धि न हो ३३७ व्याधि तत्त्व जानना पीड़ाका निग्रहकरना यही वैद्यका वैद्यत्वहै अरु वैद्य आयुपति नहींहै ३३८ मनुष्यकी १०१ मृत्युहैं जिनमें १०० मृत्यु तो आगंतुक हैं १ एककालयुतहै ३३९ चिकित्सा विना आगन्तुक मृत्युभी मारदेहै जैसे तैल अरु बत्ती होतसन्ते भी वायु दीपक को बुझादेहै तैसे ३४० दोष व आगन्तुक मृत्युसे रसमंत्र जाननेवाले वैद्य अरु पुरोहित राजाकी रक्षा निरंतर करैं ३४१ अथ देशज्ञान॥ जिसजगह अल्पजल अल्प वृक्ष अल्प पर्वतहों वह जांगल देशहै स्वल्परोगवहांहोहै इससे विपरीत अनूपदेश है—जो समहो याने जांगल अनूप से अन्य सो साधारण है ३४२ जांगल में बात घनीहोहै अनूपमें कफघना साधारण में सममलहोहै तीनप्रकार भूदेशहोहै ३४३ दूसरामत जिसजगह ज्यादैजल व ज्यादैवृक्षहों तहां बात कफकी बहुत व्याधिहोहै विसे अनूप कहै हैं ३४४ अल्पजल व अल्पवृक्ष जहांहो तहां पित्त रुधिरकी व्याधिहोहै विसे जांगलदेश कहैहैं दोनुवोंसे अन्य साधारण देश हैं ३४५ मार्गशिर १ पौष २ माघ ३ आषाढ़ ४ श्रावण ५ भाद्रपद ६ इनमहीनोंमें बातकाराज्यहै ३४६ आश्विन १ कार्त्तिक २ बैशाख ३ ज्येष्ठ ४ इनमास में पित्त राजाहै ३४७ फाल्गुन १ चैत्र २ में शीतल जलसे उपजा हुआ पीड़ाकारक कफराजा है ३४८ दूसरा मत हेमंत व बर्षा व शिशिर इन तीनऋतुओंमें बातप्रधानहै शरद व ग्रीष्मऋतु में पित्तप्रधानहै बसंतऋतु में कफप्रधान है जैसा योग्यहो तैसा वैद्यकरै ३४९ बहुत करके कफ पूर्वाह्णमें व प्रदोष समयमें रहैहै पित्त मध्याह्नमें व अर्द्धरात्रिमें रहैहै व बायुप्राप्यता से अपराह्ण में व अर्द्धरात्री पीछेरहै है ३५० कफको तीक्ष्ण औषध से बैरीसमान दूरकरै अरु बातको सचिक्कण औषध से मित्रसमान जीतै पित्तको जमाई समान मधुर व शीतलसे जीतै ३५१ कफकोपमें बमन व हुलास देवै पित्तकोपमें बिरेचन करे बातको शोधनकरै सबके मिलापमें सबकर्म करै ३५२ बातकोप कारण—दिव्यचावल चणा शामक गुवार मोठतूर धान्य मटर मसूर रानमूंग रानउड़द कोदु हरितशाक व कटुद्रव्य तुरट

खट्टा शीतल रुक्ष लघुभोजन बिषमभोजन भोजननहींकरना अजी-र्णमें भोजन पुरानीबस्तु भोजनज्यादै परिश्रमगर्तादिक याने गढ़ाका उल्लंघन जलमें तिरना दूसरे पड़ना पैरे मार्गमें चलना लाठी की चोट उच्चप्रकार पड़ना धातुक्षय रात्रिमें जागरण मूत्रादि बेगरोकना अति बमन अतिविरेचन अतिफस्त अधिक सींगी वगैरहरुधिर मांस कम अति कामदेव चिंता शोक भये सभवायुकोपकरै हैं वर्षा शिशिर दिन रात्रिका तीसरा पहरमें मेघमें पूर्वबायुसे शीतलता ये सभशरीर वायुके कोप कारणहैं ३५८ दूसरा ग्रंथमत मूत्रादि बेग धारण भोजनपर भोजन जागरण ज्यादाभाषण उच्चस्वरसे–व्यार याम, गमन, कटु, खट्टा, कसैला, रुक्ष, पदार्थ, भोजन, चिंता, मैथुन, भय, लंघन शीतशोक मेघआगमन इन्होंसे बातकोपहोहै ३६० अंगका खरधरापना व अंगका संकोचन व अंगमें शूल व श्यामरंगहोजा व पीड़ा व चेष्टाभंगसोवना समानहोजा शीतलता रूखापन शोष ये बायुको कोप करैहै ३६१ सचिक्कण व गरम व स्थिर बलवालावी-र्यवाला लवण स्वादरस खट्टा तैल धूपस्नान, उबटना मसलना वस्तिकर्म करना मांस मदिरासेवन, मर्दनकरना पसीना, निरूहण कर्म, हुलासलेनी शयन अच्छा पान विहार आहार शरीर बंधन इतनेकर्म वातकोप शांतिकरैहै ३६२ कटु अम्ल मदिरा लवण दाह करनेवाला तीक्ष्णक्रोध धूप, अग्नि, भय, परिश्रम, शुष्कशाक, खाय अजीर्णमें भोजन व विषम भोजन अरु मेघ रहितसमय इनकर्मोंसे पित्तकोपहोवै है ३६४ दो प्रकार उदय तिल व कुलथी व मच्छी व मेषमांस व गौका दही व तक्रसे इन्होंसे न रोकै पित्तकोपहोवैहै ३६५ तीसरे प्रकार कडुआ गरम दाह करनेवाला तीक्ष्ण लवण ब्रत करनेसे धूपसे, मैथुन, तृषा भूखका रोकना दंड कुश्ती मदिरा अजीर्ण में भोजन शरद अरु ग्रीष्म ऋतुमें अरु मध्याह्न अर्द्ध-रात्रि में पित्तकोपको प्राप्तहोहै ३६७ परिश्रम पसीना दाह अति दुर्गंध व आलस्य मुखपाक व अंगमें चिह्न व प्रलाप व मूर्च्छाभ्रम व पित्तदाह येसब पित्तके कर्महैं ३६८ कटुस्वादु व कसैला व शी-तल व पवन व छाया व रात्री व पाणी व चांदनी पृथिवीमें शयना

फुहारा कमल व स्त्री से शरीरस्पर्श घृत व दूध विरेचन व सेचन फस्त व चंदनादि लेप अच्छापान करना भोजन व क्रीड़ा यह सब पित्तको शांतकरैं ३७० कफकोप के कारण गुरुक्षार मीठा व अम्ल व सचिक्कण उड़द व तिल व द्रवपदार्थ व दही व दिनमेंशयन शीतलताअरुचेष्टा इन्होंसे व दिवसकेपहिलेभागमें व रात्रिकेप्रथम भागमें कफकोपको प्राप्तहोहै ३७२ दूसरेप्रकार दिनमेंशयन मीठा शीतल मच्छे व मांस भोजन अम्ल व चिकना तिल व ईष जलका विकार वर्फवगैरह अतिभोजनखाराजलपान खाराभक्ष्यइन्होंसे कफ कोपको प्राप्तहोहै ३७४ सफेदपना व शीतलता भारीपन, खाज चिकनादेह अँधेरी कफसे मुखलिपाहुआ सूजना, देरमें कास करै ये कफके कामहैं ३७५ रूखा, खार,कसैला, कटु, तीक्ष्ण, दंड कुश्ती वमन,स्त्रीगमन,मार्ग्गमेंचलना, जागरण, जलक्रीड़ा,पैररगड़ने३७६ धूमपान, ताप, मस्तकरेचन, मुखसे थूकना, पसीना शरीर बन्धन अच्छापानी, भोजन,क्रीड़ायेसवकफको शान्तकरैहैं३७७ आमव्याधि लक्षण, आलस्य व तंद्रा व हृदयमें मल, मलमूत्र वेगरोकना, पेट भारी,अरुचि,सोयाहुआ अंग येलक्षण जिसरोगीकेहों तिसके आम व्याधि जानो ३७८ लंघन व कछुक गरमद्रव्यंपान व हलकाअन्न रूखा, ओदन व कडुआरस व मूंगरस व निरूहणवस्ति व पसीना व पाचन व रेचन व वमन ये सब आमव्याधिको जीतैंहैं ३७९ वर्ष १६ पर्य्यंत वाल्यावस्थाहै वर्ष ७० पर्य्यंत मध्यहै तिससे उपरान्त वृद्धहै ३८१ मंगलादिकसे युक्तहो कुटुम्बसहित रोगी श्रद्धावाला वैद्यके अनुकूलहोवै वहुतद्रव्यके बस्त्र व भूषण धारणकरे सतोगुणी वैद्य व ब्राह्मणोंमें भक्तिहो चिकित्सामें कोई सन्देह करै नहीं पीड़ा रहितहो ये सब लक्षण आरोग्यकेहैं ३८३ अतिमोटा व अतिकृश दोनों अच्छे नहीं मध्य शरीरवाला श्रेष्ठ है क्षीणपुरुष मोटा अच्छा नहीं ३८४ औषधसे मोटाको कछुक कृशकरै कृशको कछुक मोटा करै मध्य शरीरवाले की वैद्य रक्षाकरै ३८५ जिसके समदोष हों सम अग्निहो समधातु मलक्रियाहो प्रसन्न जाकीआत्मा बमन इन्द्रियहो वाको स्वस्थकहैहैं ३८६ दोषों का समानपना वैद्योंको नि-

इचय करायेहैं वह स्वस्थताबिना नहींहोसक्ता ३८७ वात वृद्धिमें मनुष्य कृशहोवै खरधराहोवै गरमवस्तुकी इच्छाकरै मलगाढ़ा रहै अल्पबलहो गात्रफुरै निद्रा आवैनहीं ३८८ पित्तवृद्धि में मल मूत्र नेत्र शरीर पीलेरहैं इन्द्रिय क्षीणहोजावे शीतलकी इच्छारहै ताप व मूर्च्छा रहै कम निद्राआवे ३८९ कफवृद्धिमें मलमूत्रसफेदरहै जाड़ा लागै शरीर भारीरहै अति निद्राआवै संधि शिथिल रहै व ग्लानि रहै मुखसे जल व कफपड़ै ३९० रसवृद्धिमें अन्नमेंरुचिनहींहोशरीर भारीरहै मुखसे जलपड़ै छर्दि आवै व मूर्च्छा व ग्लानि भ्रम कफ होवेहै ३९१ रक्तवृद्धिमें रुधिर ज्यादहहो शरीर लालरंग हो नेत्र लालरहैं नाड़ियोंमें रुधिर पूरारहै रक्तबँधाहुआ विसर्परोग व प्लीह रोग व विद्रधिरोग को करै है और कुष्ठरोग व वातरक्त व गुल्म शिरापूर्ण, पीलिया इनको करैहै शरीर भारी व निद्रा आवै मद व दाहरहै अंगविकला व अग्निमन्द व मोह व लालत्वचा लाल नेत्र लालमूत्ररहै गुदा व लिंग व मुख पकजावै बवासीर फुनसी व मस्सा होजावै व बालउड़जावें अंग टूटे व प्रदररोग हो व हाथपैरमेंज्वरहोवे ये लक्षण रक्तवृद्धिसे उपजें हैं अरु रक्तवृद्धि से उपजेहुये रोगोंको फस्त व विरेचनसे शांतकरै ३९४ मांसवृद्धिमें कपोल व ओष्ठ व कटि पृष्ठ लिंग व जांघ हाथ व गोड़ येसब मोटेरहैहैं अरु शरीर भारी रहै ३९५ मेदकी वृद्धिमें पेट व पांशु बँधजायखांसी व श्वासरहैदुर्गंध आवै शरीरमें चिकनापन कम कामकरने में भी ज्यादह परिश्रम हो तृषालगै पसीना आवै गलेमें व ओष्ठ में प्रमेह होजावै कटि पृष्ठ व पेट व ग्रीवा स्तन इन्होंमें पीड़ारहै ३९७ अस्थी बढ़ीहुईअस्थी में अस्थियोंकोपैदाकरैहै अरु दांतबड़े बिकट होजावें ३९८ मज्जा वृद्धिमें साराअंग अरु नेत्र भारीरहैं ३९९ वीर्य्यवृद्धिमें पथरीहोवै व वीर्य्य इन्द्रियसे निकसाकरै ४०० स्वेदवृद्धि में दुर्गंध शरीर में आवै त्वचामें खाजचलै आर्तव याने स्त्रीधर्म्म रजस्वला ताकीवृद्धि में स्त्रीके रुधिर में दुर्गंध होवे आर्तव दुर्गंध ज्यादह निकसै अंग टूटाकरै ४०१ स्तन वृद्धिमें चूंची मोटीहोजावें दूधगिराकरै बारम्बार चूंचियोंमें पीड़ारहै ४०२ उदरवृद्धिमें पेटमोटारहै अरु उदर

वृद्धि गर्भवृद्धि हुयेपीछे होयहै गर्भवतीस्त्रीके पसीनाआवे बालक होनेकेसमय दुःख ज्यादहहोवे है ४०३ दोष व धातु मलोंका ह्रास नाम कृशकरना अरु कृश करनेवाला औषध व आहार व क्रीड़ा वैद्य यथायोग्य करवावे ४०४ क्रमसे दोषसे धातुबढ़े धातुसे मल बढ़े इसतरह मलवृद्धिहोय है ४०५ अयोग्यखानेसे व अतिक्रोधसे व शोकसे व चिन्ता व भय व परिश्रमसे अति मैथुनसे भोजननहीं करनेसे व रेचनमूत्रादि वेगधारण से चोट से हठसे इन्हों से बात पित्त कफ तीनोंदोष व धातु व मल इन्होंका नाशहोवे है ४०६ बात नाशमें अल्पचेष्टाहो मन्दबोले संज्ञाजातीरहै पित्तनाशमें कफअधिक आवे अग्नि मन्दरहै कांतिजातीरहै ४०७ कफनाशमेंसंधिशिथिल रहै मूर्च्छा व रूखापन व दाहरहै रसनाशमें हृदयमें पीड़ाकंठसोख शून्य त्वचा अरु तृषारहै४०८ रक्तनाशमें नाड़ीशिथिल व शीतल रहै व तिरछीहो व खाल खरधरीहोवै है ४०९ मांसनाशमें कपोल ओष्ठ, ग्रीवा, कंधे, छाती, उदर, संधि, लिंग नासिका पुट पिण्डी इन अंगों में सूखापन शरीर रुक्षरहै पीड़ारहै नाड़ी शिथिलहोयहै ४१० मेदनाशमें प्लीहवृद्धि व संधि शून्य शरीररुक्ष सचिक्कणमांस खानेकीइच्छाहोयहै ४११ अस्थिनाशमें हाड़ोंमें शूलशरीररुक्षनख व दन्तटूटैहैं ४१२ मज्जानाशमें अल्पवीर्य्यहो सन्धिमें पीड़ा व टूटी रहैं हाड़ों में शून्यतारहै ४१३ वीर्य्यनाशमें स्त्रीभोगमें इच्छा नहीं अरुलिङ्ग व अण्डकोशमेंपीड़ा व बहुतदेरमें शुक्रसेकहो वीर्य्यअल्प व रुधिरयुतहो ४१४ बलनाशमें क्रोध,क्षुधा,चिन्ता,शोक, परिश्रम रुक्ष, तीक्ष्णगरम, कटुक इन्होंसेभयकरै निर्बलहो अत्यन्तइन्द्रियोंमें पीड़ारहै कान्ति जातीरहै मन बिगड़जावे रूखा शरीरवकृशहोजावे ४१६ पुरीष याने विष्ठा नाश में पांसली व हृदयमें पीड़ारहैबोलते हुये बायुशरीरमें ऊपरको जावेयाने डकारआवे कुक्षिभारीरहै ४१७ मूत्रनाशमें अल्पमूत्रता वस्तिमें पीड़ारहैस्वदनाशमें त्वचा रुक्षरहै नेत्रभी रुक्षरहैं रोमावली खड़ीरहैपसीना आवेनहीं ४१९ आर्तव याने स्त्रीधर्मनाशमें योग्यकालमें स्त्रीधर्मयानेरजस्वलाहोवेनहींहोवे तो अल्पआर्तवहो योनिमें पीड़ाहो ४२० स्तन्य नाशमें चूंची होवें

नहीं अरुहोंतो स्वल्पहों व शिथिलहोवे हैं ४२१ गर्भक्षयमें कुक्षि ऊँचीनहो गर्भफिरैनहीं ऐसेजानो ४२२ यथायोग्यऔषध व आहार व बिहारादिक सेवनसे सर्वक्षयादिक दूरहोय हैं ४२३ सचिक्कण व स्वापदार्थसे व वीर्य्यवान् पदार्थ व पुष्ट पदार्थ व दूध व मांसरसादिकसे मनुष्यके बलवृद्धिहोवे है ४२४ दोष व धातु मलकरकेक्षीण नर बलक्षीणभी अन्नपानकी इच्छाकरे तो धीरेधीरे आरोग्यहो ४२५ क्षीणपुरुष जिस जिस आहारकी इच्छाकरे यथायोग्य वहीआहार मिलनेमें क्षयादिक दूरहोय हैं ४२६ बातक्षयवाला पुरुष इन्हों की इच्छाकरे है कसैला व कडुवा व अतिकटु, रुक्ष, शीतल हलका यव मूँग, कांगनी इन्होंसे बातक्षय दूरहोयहै ४२७ पित्तक्षयवालेको ये पदार्थयोग्यहैं उड़द, कुलथी, पीसाहुआअन्न व पीठीकेपदार्थ मस्तु सूक्त, अम्ल, तक्र, कांजी, दही, कटु, गरम, तीक्ष्ण, क्रोध, बिदाही, गरमदेश व गरमसमय चाहैहै इन्होंसे पित्तक्षय दूरहोयहै ४२८ कफ क्षयवालेको ये बस्तुहितहैं शीतलजल मधुर, सचिक्कण, लवण, अम्ल, भारीपदार्थ, दही, दूध, दिनमेंशयन ४२९ रसक्षयवाले को ये पदार्थहितहैं शीतलजल रात्रीमेंनिद्रा जाड़ा चांदनी मीठारसभोजन ४३० रक्तक्षयवालेको ये पदार्थहितहैं ईखरस, मांसरस, मन्थ, खांड़ घृत, गुड़, शरबत, दाखरस, अनाररस, सचिक्कण, लवण, कांजी, मदिरा, कन्दमूल, फल, रुधिरमें सिद्धहुआपदार्थ ४३२ मांसक्षयवाले के हित, दहीमें सिद्धअन्न, सिखरण, कईप्रकारके मोटेजीवोंकामांस इन्होंकी इच्छाकरे ४३३ मेदक्षय वालेको ये पदार्थ हितहैं सिखरण मधुर, अम्लरस, संयोगमें पकाहुआ पदार्थ, मेदसिद्ध, मांस ४३४ अस्थिक्षयवालेको ये पदार्थ हितहैं मांस, मज्जा, हाड़स्नेहयुत अन्नादिक॥ मज्जाक्षयवालेको ये हितहैं स्वादुअन्न अम्लरसयुतश्रेष्ठ है ४३५ शुक्रक्षयवाले को मयूरके व मुरगाके अण्डे हंस व सारा के, जलज व स्थलज जीवोंकामांसहित है ४३६ मलक्षयवाले को ये पदार्थ हितहैं यव, पीठी, शाक नानाप्रकारके मसूर, उड़दका यूष ४३७ मूत्रक्षयवाले को अच्छी ईखरस दूध गुड़ सहित, बेरजल पेया, काकड़ी ये हित हैं ४३८ स्वेदक्षयवाले को ये पदार्थ हित हैं

शरीर मर्द्दन व उबटना, मदिरा व पवन रहित स्थानमें शयन व भोजन, भारीवस्त्र धारण करना ४३९ आर्त्तव क्षयवाली स्त्रीको ये पदार्थ हितहैं कडुवा, अम्ल, गरम, विदाहि, भारीफल, शाक, पान पदार्थ ४४० स्तनक्षयवालीको ये पदार्थहितहैं मदिरा, चावलसांठी मांस, गोदुग्ध, खांड़ आसव, दही हृद्यपदार्थ ४४१ गर्भक्षयवाली को ये पदार्थहितहैं मृग व बकरी व भेड़ व सूरी इन्होंके गर्भपकाये हुये व इनजीवोंकी वसा व शूल्यकामांस ४४२ रससे आदिलेशुक्र पर्य्यन्त धातुको पुष्टकरनेवाला चेष्टामेंचतुर तिसे बलकहे हैं ४४३ चोटसे व भयसे व क्रोधसे व चिन्तासे व परिश्रमसे व धातुक्षयसे बलक्षयको प्राप्तहोयहै ४४४ शरीरभारीरहै अङ्गजड़वत्रहैं ग्लानि होय शरीरवर्ण बदलजाय तन्द्रारहै निद्राआवै वातसूजाहो ये बल-क्षयके लक्षणहैं ४४५ बलक्षयवालेको ये हितहैं दोषसाम्यकरनेवाला व धातुपुष्टि करनेवाला व अग्निसाम्य करनेवाला ये सबद्रव्य बल को बढ़ावे हैं ४४६ कोई कृशभी बलवान् होयहै कोई स्थूलभी नि-र्बलहोयहै तिसकारण चेष्टामें कुशलहो तिसेबलवान्कहे हैं ४४७ औषधमान तोल बिनाद्रव्यकी युक्ति जानीजातीनहीं प्रयोगसाधन अर्थमान याने तोलकहे हैं ४४८ मागधतोल कहै हैं तीसपरमाणु का त्रसरेणु होयहै त्रसरेणुकानाम वंशीभीकहै हैं ४४९ झरोखा के बीचमें सूर्य दीखतसन्ते जो सूक्ष्मदीखैहै तिसका तीसवांभाग पर-माणुहोयहै ४५० छःबंशियोंकी १ मरीचिहोयहै ६ मरीचियोंकी १ राईहोयहै तीनराइयोंका १ सर्षपहोयहै ८ सर्षपोंका १ यवहोयहै४ यवका १ गुंजाहोयहै यानेचिरमठी तिसेरत्तीकहते हैं ४५२ छः रत्ती का माशाहोयहै उसीको हेम व धान्यक कहैहैं ४ माशाको शाणहोय उसीको धरण व टंककहै हैं २ टंकका कोलहोयहै ४५३ दो कोलका कर्षहोयहै उसीको पाणिमानिकाकहै हैं और अक्ष १ पिचु २ पाणितल ३ किंचित्पाणि ४ तिंदुक ५ बिड़ालपद ६ षोडशिका ७ करमध्य ८ हंसपद ९ सुवर्ण १० कवलग्रह ११ उदंबर १२ ये सबकर्षकेपर्य्यायहैं यानेनामहैं४५७दोकर्षोंका अर्द्धपल होयहै उसीकोशुक्ति व अष्टमि-का कहैहैं अरु दोशुक्तिका पलहोयहै उसीकोमुष्टि १ आम्ल २ चतुर्थि-

का३ प्रकुंच ४ षोड़शी ५ बिल्व ६ कहे हैं सब पलके पर्य्याय हैं ४५९ दो पलका प्रसृति होवे है उसीको प्रसृत कहे हैं दो प्रसृति का अंजली होयहै उसीको कुड़व कहे हैं व अर्द्धसरावक व अष्टमान कहे हैं ये सब अंजली के पर्य्याय हैं ४६० दो कुड़व की मानिका होय है उसीको सरावक कहे हैं वैद्यों के जानने योग्य है ४६१ दो सरावक का प्रस्थ होय है ४प्रस्थका एक आढ़क होय है उसी को भाजन १ कांस पात्र २ चतुःषष्टिपल ३ कहते हैं सब आढ़क के पर्य्याय हैं ४६२ चार आढ़कका द्रोणहोय है उसीको कलश १ नल्वण २ उन्मन ३ घट ४ राशि ५ कहे हैं ये सब द्रोणके पर्य्याय हैं ४६३ दो द्रोणका शूर्पहोय है उसीको कुंभ १ चतुःषष्टिसरावक कहे हैं ये शूर्पपर्य्याय हैं दो शूर्पका द्रोणीहोय है उसीको बाहगो-णीकहे हैं ४६४ चारि द्रोणीकोखारी कहे हैं सूक्ष्मदर्शियाने पंडित लोग कहे हैं चारहजारछानबेपलकीखारीहोयहैदोहजारपलको भार कहे हैं सौ पलकी तुलाकहे हैं यहनिश्चय है ४६६ माशा टंक बिल्व कुड़व प्रस्थ आढ़क राशि गोणी खारी येसब क्रमसे चार चारगुणे होते हैं ४६७ रत्तीसे लेकर कुड़व तकद्रव वआर्द्रव शुष्कद्रव्योंका तोल समहोयहै ४६८ प्रस्थसेलेकरद्रव आर्द्रवका द्विगुणा होय है तुलाका मानद्विगुणा नहीं होता ४६९ बांशका व लोहका पात्र ४ अंगुल बिस्तार ४ अंगुल ऊँचाहो अरु पात्रकोमल हो वह मानकुड़व होयहै ४७० जो औषध प्रथम जिसयोगकी कही है तिसीनामसेवह योग कहते हैं ४७१ जहां औषधकी मात्रा नहीं कही है तहांदेशकाल अवस्थाबलप्रकृतिदोष देखकरमात्रा देवे ४७२ कलियुगमेंमंदाग्नि ह्रस्वयाने ठींगनेबल रहित नर हैं इसवास्ते इन्हों के योग्य मात्रा वैद्यकहते हैं ४७३ कलिंगमान। सफ़ेद १२ सर्षपका यव होय है दो यवकी चिरमठी होयहै तीनि चिरमठीका बल्लहोयहै ८ गुंजायाने चिरमठी का माशा होयहै कहीं ७ गुंजा का माशा होयहै ४ माशा का शाण होयहै उसे निष्क व टंक कहे हैं ६ माशाका गद्यानहोय है १० माशाका कर्षहोयहै ४ कर्षका पलहोयहै ४ पलका कुड़व होयहै प्रस्थसे आदि पूर्वले तोलकी सम जानो ४७७ औषध युक्तायुक्त

बिचार औषध सब नवीन युक्तकरै व बर्त्तै सबकर्मों में बायबिड़ंग पीपली गुड़ घृत शहत धनियां इनको बर्जकर याने इनबिना ४७८ बांसा, नींब, पटोलपत्र, केतक, कोहला, शतावरि, सांठी, कुड़ा, अश्वगंध बावची, जटामासी, गँगेरनकीछाल, पीयाबांसा, सौंफ, हींग, अदरख ईख इनको सरस याने आलीग्रहण करै इनको द्विगुणी नहीं बर्तै क्रिया में ४७९ तांबूल, कांजी पुराने अच्छे होय हैं सूखा नवीन द्रव्य सब क्रिया में बर्त्तै ४८० गीला द्रव्य सर्बत्र द्विगुणा गेरै क्रियामें जहां काल नहीं लिखाहो तहां प्रभात जानो जहां औषध का अंग नहीं लिखाहो वहां जड़ जानो ४८१ जहां आपसमें औ-षधों का भाग नहीं लिखाहो वहां बराबर जानो जहां पात्रका नि-र्णय नहीं हो वहां मट्टीका पात्र जानो ४८२ जो औषध ज़िस नुस्ख़ा में दोबार लिखीहुई हो वहां उसको द्विगुणी बर्त्तो १ वर्ष उपरांत औषध गुणहीन होवै ४८३ दो माससे उपरांत चूर्णमेंपराक्रम नहीं रहैहै १ वर्षसे उपरांत गोली व अवलेह कामके नहीं रहै हैं ४८४ चारमाससे उपरांत घृत तेल काम के नहीं अरु औषध व हलके पाक याने मेथी पाकादिक १ वर्ष उपरांत कामके नहीं ४८५ आस-व व धातु भस्म व रसपुराने अच्छे होयहैं जो द्रव्य व्याधिको दूर करने वाला नहीं हो व नुस्ख़ा में हो उसे दूरकरै ४८६ जो द्रव्य व्याधि दूरकरनेयोग्यहो नुस्ख़ामें लिखा न हो तबभी अंगीकारकरै ४८७ बिंध्याचल आदि दक्षिण के पर्वत अग्निरूप हैं हिमाचल आदि उत्तरके पर्वत सौम्यहैं इसवास्ते रोगके अनुरूप व बात पित्त के अनुरूप औषध ग्रहण करो अरु अन्य बनों कीभी औषध गरम व शीतल यथायोग्य ग्रहण करो ४८८ प्रातःकाल में प्रशस्त मन वाला पवित्र वैद्य औषध ग्रहण करै आदिमें सूर्य्य के सम्मुख ह्वैके मौन हुआ शिव को हृदय में नमस्कार करै ४८९ एक सी पृथ्वी मांहसे द्रव्य उत्तर की तरफ ह्वैके ग्रहण करै सांपकी बंबी व कुत्सित देश अनूप व ऊखर देश व श्मशान इन जगह की औषध नहीं लेव जहां जीवजंतु घने बसैं वहां की औषध व अग्नि की दाह से दग्ध व जाड़ा की दग्ध हुई औषध ये सब कामकीनहीं ४९१

शरद् ऋतुमें सम्पूर्ण कार्य के अर्थरस सहित औषध ग्रहण करै
विरेचनवमन वास्ते बसंतऋतुके अंतमेंवैद्य औषध ग्रहणकरै ४९२
अतिस्थूल जटावालेवृक्षों की मूलत्वचा ग्रहण करै अथवा सूक्ष्म
वृक्षमात्रके सूक्ष्मजड़ ग्रहणकरै ४९३ बड़से आदि वृक्षोंकी छाल
बिजोरादिक वृक्षका सारलेवै तालीसादिक वृक्षों की पत्ती लीजै
त्रिफलादिकवृक्षका फललीजै धवआदि वृक्षकेपुष्पलीजै स्नुही याने
थूहर आदि वृक्षका दूधलीजै ४९५ कहीं जड़ कहीं कंद कहीं पाती
कहींफल कहींसम्पूर्ण वृक्ष कहींगोंद कहींछाल ऐसे वैद्यबर्त्तैं ४९६
चीता जमींकन्द नींबबांसा त्रिफला धव कटेली खदिर बड़ येसबक्रम
से जानो ४९७ घृत तेल व जल व काढ़ा व व्यञ्जनादिक ये सब
पकायके शीतलकरि पीछे गरम करै तो बिष समान जानो ४९८
सूक्ष्म व जलमेंगेरेडूबजायऐसीहरितकी व भिलावा येश्रेष्ठहैं ४९९
बराह के मस्तकसमानहो उसे बाराहीकन्द कहतेहैं जोकांचसमान
हो उसे सौबर्च्चल लवणकहै हैं जो स्फटिक समानहो उसे सैंधव
लवण कहैहैं ५०० सुवर्णसम कांतिवाली सोनामाखी श्रेष्ठहै चन्द्र-
मासमान रूपामाखी श्रेष्ठ है ५०१ जो जल पूर्ण कांसे के पात्र में
गेराहुआ बिखरैनहीं प्रतानकरि बढ़ै वह शिलाजीत श्रेष्ठ है ५०२
सचिक्कण कपूरश्रेष्ठहोयहै सूक्ष्म बीजवाली इलायचीश्रेष्ठहोयहैअति
सुगन्धवाला व भारी सफ़ेद चन्दन श्रेष्ठहै ५०३ लालचन्दन अ-
त्यन्तलाल श्रेष्ठहै काकतुण्ड समान सचिक्कण व भारी अगर श्रेष्ठ
होयहै ५०४ सुगन्धवाला हलका व सूक्ष्म देवदारु श्रेष्ठहोय है व
सचिक्कण व सूक्ष्म व सुगन्धि व कोमल देवदारु गुणदायकहै ५०५
अत्यन्त पीली दारुहल्दी श्रेष्ठहोयहै भारी व सचिक्कण व सफ़ेद व
सुगंधित कोमल अन्यरङ्गवाला जायफल श्रेष्ठ होयहै ५०६ गौके
थनसमान मुनक्का दाख श्रेष्ठ होयहै करवन्दी समान दाख मध्यमा
होयहै ५०७ मलरहित चन्द्रकांति समान खांड़ श्रेष्ठ होयहै गौके
घृत समान व रुचिकारक सुगन्धवाला शहत श्रेष्ठ होयहै ५०८
चावलोंमें शालिचावलश्रेष्ठहोयहै सांठीचावलोंमें लालसांठीचावल
श्रेष्ठहोयहै सूखे अन्नोंमें यव व गेहूं श्रेष्ठहोयहै ५०९ शिंबि अन्नोंमें

मूँग व मसूर वतूरधान्य श्रेष्ठ हैं रसों में मधुर रस श्रेष्ठहै लवणों में सैंधव लवण श्रेष्ठहै५१० अनार आमला व दाख व खजूर व फालसा व आंव व बिजोरा येफलों में श्रेष्ठ हैं ५११ पत्रशाकोंमें बथुआ व जीवन्ती व पोतिकाश्रेष्ठहोय है फलशाकोंमें परवल श्रेष्ठहै कंदशाकों में जमींकन्द श्रेष्ठहै ५१२ जंघाल याने मोटीपीड़ियोंवाले पशुओं में राण कुरङ्ग हरिण श्रेष्ठहै पक्षियों में तीतर लवा मत्स्यों में लोहित मत्स्य श्रेष्ठहै ५१३ तांबेके समान वर्णवाला हरिण होयहै काला रङ्ग काराण होय है कछुक लालरङ्ग व हरिणकी आकृतिवाला मोटा कुरंगहोयहै ५१४ जलोंमें आकाशसे वर्षाहुआ जलश्रेष्ठहै दूधों में गौकादूध श्रेष्ठहै घृतोंमें गौकाघृत श्रेष्ठहै तैलोंमें तिलकातैलश्रेष्ठहै ईखकेबिकारमें मिश्रीश्रेष्ठ ५१५ ग्रीष्मऋतुमें शिंबिअन्नों में उड़द कोत्यागदेवे लवणोंमें ऊख लवणकोत्यागै फलोंमें लकुच याने छोटे वड़हलकाफलत्यागै शाकोंमें शिरसमके शाकको त्यागै५१६ ग्राममें रहनेवालेपशुओंमेंगौकेमांसकोत्यागै महिषीकीवसाकोअवश्यत्यागै भेड़कादूध व कुसुम्भतेल व फाणितकोत्यागै ५१७ ईखकारसपकाया हुआआधाकढ़ाहुआ फाणितहोयहै५१८ मच्छिव अनूपदेशके जीव का मांस दूधसहित खावेनहीं कबूतरका मांस सर्षप तैलमें भूनकर खावेनहीं५१९ मछलीको खांड़ व शक्करसहित खावेनहींतथाशहतसे खावेनहीं सत्तूमांसरससेखावेनहीं दही गरमअन्नसे खावेनहीं५२० दहीको गरमपदार्थसङ्ग त्यागदेवै जलसे मिलाय शहत पीवेनहीं दूध खिचड़ी मिलायके खावे नहीं केलाका फल तक्रसङ्ग खावेनहीं बिल्वफल दहीसङ्ग खावे नहीं ५२१ कांसेके पात्रमें दश दिन तक धरे घृत व शहत तो बिषसमहोयहै तिनको त्यागदेवे पकाहुआअन्न व कषाय फिर गरमकरेहुये को त्याग देवै ५२२ एक जगह बहुत मांस बिरोधको प्राप्तहोय है अरु शहत व घृत व बसा व तेलभी आपसमें एकजगह बिरोधी है ५२३ जहां लवणशब्दहो वहांसैंधव लवणजानो जहां चन्दन शब्द हो वहां लालचन्दन जानो चूर्ण व अवलेह व तेल व आसव इन्होंमें सफेदचन्दनका ग्रहण है कषाय व लेपमें बहुतकरके लालचन्दन युक्तहोयहै भीतरकी शुद्धिमें अज-

मोद व अजवाइन होय है वही आहरकी शुद्धि में भी जानना दूध घृतके शब्दमें गौकादूध व घृतयुक्त होयहै जहां शकृतरसहोय वहां गौका गोबरजानो मूत्र शब्दहो तहां गोमूत्र जानो ५२६ बहुत करके औषध प्रातःकाल में ग्रहण करै व कषायादिक भी प्रभात समय में ग्रहणकरै जो समय औषध ग्रहण करनेका है जो आगे कहता हूं ५२७ औषध खानेके पांच समय हैं प्रथम काल सूर्य्यो-दय दूसरा काल भोजन समय तीसरा सन्ध्या को चौथा रात्री में भोजनके समय में पांचवां सोने के समय में ५२८ जिस मनुष्य को पित्त व कफका वेगहो उसे रेचन व वमन व लेखन क्रिया प्रातः-कालकरै लेखन याने चमड़ेकी पट्टी माथे पर बांधकर औषध भरै पित्तके अधिकार में वमन कफके अधिकार में रेचन व लेखन यह औषध करनेका प्रथमकाल बाँधा ५३० अपान वायुके बिगड़े भो-जनके प्रथम औषधखिलावै व अरुचिमें विचित्र भोजनकेसंगरुचि-कार औषधखिलावै अच्छा वैद्य समान वायु अरु मंदाग्निमें अग्नि ज्वलित कारक द्रव्यभोजनके मध्यमेंदेवै व्यानवायुके कोपमें भोजन के अन्तमेंखवावै अरु हुचकीआपेक्षक कंपावायुमें भोजनके आदि अंतमेंदेवै यह २ कालहैं ५३४ स्वरभंगकरनेवाली उदानवायुके कोप में ग्रासग्रासके अन्तमें औषधदेवै संध्यासमय अरुप्राणवायुके कोप में सांझके भोजनके अन्तमें देवै यहतृतीयकाल बाँधा अरु बारबार प्यास छर्दि हिचकी श्वासमें अरु बिषपीड़ितको अन्नकेसंग औषध देवै यह चौथा काल बाँधा गले के ऊपर कर्ण रोग मुख नासिका रोगमें लेखनके निमित्त रात्रीको बिना औषध पाचन शमन औषध देवै यह पांचवां कालबांधा ५३८ औषध प्रतिनिधि कहतेहैं चीता के अभावमें जमालगोटाकी जड़ औषधमें मिलावै अथवा शिखरिज याने शिलाजीत मिलावै धमासा के अभाव में तांवड़ा धमासा वरतै ५३९ तगरके अभावमें कुष्टवरतै मोहवाके अभावमें मंजिष्ठा वरतै ५४० अहिंस्राके अभावमें मानकन्द वरतै लक्ष्मणाके अभावमें मोरशिखावरतै ५४१ बोलसरीकेअभावमें लालकमलवरतै नीलक-मलकेअभावमें कमोदनीवरतै ५४२ पुष्करमूलकेअभावमें व ग्रंथि-

पर्णीकेअभावमें व जलपीपलीके अभावमें कुलिंजनवरतै ५४३ चवि-
का वगजपीपलीकेअभावमेंपीपलामूलवरतैंवावचीकेअभावमेंपुआ-
ड़काबीजवरतै५४४जावित्रीकेअभावमेंलवंगवरतै आककेदूधकेअ-
भावमेंआककारसवरतै५४५दारुहल्दीकेअभावमेंहलदवरतै रसौत
केअभावमें दारुहल्दीवरतै ५४६ सौराष्ट्री माटीके अभावमें फटकड़ी
वरतै तालीसपत्रके अभाव में स्वर्णताली वरतै ५४७ भारंगी के
अभावमें तालीस व कटेलीकीजड़वरतै संचरलवणकेअभावमें सादा
लवणधूलसहितवरतै ५४८ मुलहठीकेअभावमें धवकोवरतै अम्ल-
वेतके अभावमें चूकावरतै ५४९ मुनक्का दाखके अभावमें कास्मरी
फल वरतै दोनुओंके अभावमें मधूक याने महुआपुष्प वरतै ५५०
नख औषधके अभावमें लवंगपुष्पवरतै कस्तूरीके अभावमें कंकोल
वरतै ५५१ कचूर के अभावमें ग्रन्थिपर्णीवरतै केसर के अभावमें
नवीन पुष्प कुसुम्भा के वरतै ५५२ कंकोल के अभाव में जाती
पुष्प वरतै कपूर के अभावमें सुगन्धबाला नागरमोथा वरतै ५५३
चन्दन के अभाव में कपूर वरतै दोनुओं के अभाव में लालच-
न्दन वरतै ५५४ लालचन्दनके अभावमें नवीनबाला वरतै अतीस
के अभावमें नागरमोथावरतै छोटीहरड़ेके अभाव में आंवला वरतै
५५५ नागकेसर के अभावमें पद्मकेसरवरतै मेदाके अभावमें शता-
वरिवरतै जीवक काकोली के अभावमें विदारीकंद वरतै ऋद्धि के
अभावमें आसगंध वरतै वृद्धिके अभावमें बाराहीकंद वरतै वाराही
के अभावमें चर्मकराल को वरतै बाराहीकंद पश्चिमदेशमें गृष्टिसं-
ज्ञक होय है अनूपदेश में वाराहसमान रोमहोयहैं औषधके ५५९
भिलावा के अभावमें रक्तचन्दन व चीता वरतै ईख के अभाव में
नल याने नड़ वरतै ५६० सुवर्णके अभावमें सोनामाखी बरतै चांदी
के अभावमें रूपामाखी वरतै ५६१ सोनामाखी के अभावमें सुवर्ण
सम गेरू बरतै सुवर्णभस्म व चांदी भस्मके अभावमें लोह भस्मसे
काम लेवे ५६२ कान्त लोहके अभावमें तीक्ष्ण लोह वरतै मोती
भस्म के अभावमें मोतीसीपी बरतै ५६३ शहतकेअभावमें पुराना
गुड़बरतै राबके अभावमें सफेदखांड़ बरतै ५६४ मिश्री के अभाव

में सफेदखाँड़बरतै दूधके अभावमें मूंगरस व मसूररस बरतै ५६५ जो जो औषध जिस जिस औषध के अभाव में लिखाहै वह उसी तरह वैद्यबरतै ५६६ रसबीर्य्य बिपाक करिकर द्रव्यकोबिचार औषध में युक्तकरै ५६७ द्रव्यमें पांच पदार्थहोतेहैं गुण१रस२वीर्य्य३ बिपाक४शक्ति५ ऐसेजानो ५६८ षट्द्रव्य आश्रित रस क्रमसेबलदायकहोतेहैंक्रमकहतेहैं स्वादु१ अम्ल२लवण३तिक्त४उष्ण५कषाय६ मधुररस पृथ्वी जलसेहोयहै अम्लरस पृथ्वी तेजसे होयहै लवण जलतेजसे उपजेहै तिक्त आकाशबायुसेउपजैहै उष्णबायु तेजसे उपजैहै कषाय पृथ्वी बायुसे उपजैहै ५७० स्वादु व अम्ल व लवण बायुको दूरकरै है तिक्त व उष्ण व कषाय कफकोदूरकरेहै कषाय व तिक्तमधुरपित्तको दूरकरेहै और रसबिपरीत फलदेयहै ५७१ जोरस बातनाशकहै वह जो रुक्ष व हलकापन व शीतलतायुक्तहो तो बात नाशकरैनहीं ५७२ जो रस पित्तनाशकहैं वेजोतेज व गरम व हलके हों तो पित्तनाशकरैंनहीं ५७३ जोरस कफनाशकहोवे जो चिकना व भारी व शीतल हो तो कफनाशकरैनहीं ५७४ मधुर रस शीतलहै धातुवस्तन्यकोबलदेयहै व नेत्रकोहितहै व बातपित्त नाशकहै मुटापा व मल व कृमिको पैदाकरैहै बाल बृद्ध व क्षीण व विवर्ण्य व केशरहित व शिथिल इन्द्रियवाला ऐसे मनुष्यों को श्रेष्ठ है वीर्य्य पैदाकरै है अरु मधुर रस कंठ खुशकीको दूरकरैहै बिषहरैहै सचिक्कणहै आयु को हितहै ५७७ अत्यन्त मधुर रस भोजन कियाहुआ ज्वर व श्वास गलगंड व गलार्बुद व कृमि व मोटापन व अग्निमन्द व प्रमेह व कफके रोग इनरोगोंको पैदाकरैहै ५७८ खट्टारस पाचनहै व रुचिकारकहै अरु पित्तकफ व रुधिर रोग पैदाकरैहै व हलकाहै लेखनहै व गरमहै बाहरसे शीतलहै ग्लानिकारकहै बातनाशकहै सचिक्कण है तेज है सर याने शरीर में प्रवेश करनेवाला है वीर्य्य बंधेज व अनाह व दृष्टिका नाश करै है रोम व दांतों को खड़ेकरै है नेत्र व भृकुटियोंकोसंकोचकरैहै ५८० अत्यंत खट्टारसभोजन कियाहुआ तृषा व दाह अंधेरी व ज्वर व खाज व पीलिया व बिसर्प्प व शोथ व बिस्फोटक व कुष्ठ इतने रोगोंको करैहै ५८१ लवणरस शुद्धिकरै

है व रुचिउपजावै है पाचनहै व कफपित्त नाशकरैहै पुरुषपनाको व बातको हरैहै शरीरकोकोमल व शिथिल करैहै बलहरैहै मुखमें जल पैदा करैहै कपोल व कंठमें दाहकरैहै ५८३ लवणरसअत्यंत भोजन कियाहुआ नेत्रपाक व रक्तपित्त व कोढ़रोग व क्षयीरोग व वलीपलित व कुष्ठ व बिसर्प्प व तृषा इन रोगोंको पैदाकरैहै ५८४ तिक्तरस कडुआ है गरमहै तेज है निरंतर बातपित्त को पैदाकरै है कफको हरैहै हलका है कीड़े व खाज व वलिताको हरैहै रूखापन व स्तन्यको हरैहै मेदवृद्धिवाले पुरुषको क्लेशकरैहै अश्रुपातकोदेय है नासिका,नेत्र,मुख व जिह्वा इन्होंको उद्वेगकरैहै दीपनहै व पाचन है रुचि उपजावैहै नाक का शोष पैदा करै है क्लेद मेद,बसा,मज्जा, मल मूत्र इनको शोखैहै श्रोत्रनाड़ीको प्रकाश करै है रूखाहै बुद्धि वढ़ावैहै मलबंधकरैहै अग्निका अंशरूपहै इसवास्ते बुद्धिकोहितहै तिक्तरस अत्यंत भोजनकियाहुआ भ्रम व दाह मुख तालु ओष्ठइन्हों में शोषकरैहै कंठमें पीड़ा व मूर्च्छा तृषा कंपा व बल वीर्य्यको हरैहै कटुरस शीत तृषा मूर्च्छा,ज्वर,पित्त कफ इनको दूरकरैहै कृमि,कुष्ठ, विष,ग्लानि,दाह,रक्तविकार इनकोहरैहै रुचिउपजावै है आपरुचि हीनहै कंठ व स्तन मुखको शुद्धकरैहै बातवालाहै अग्नि पैदाकरैहै नासिकामें शोषकरैहै रूखा व हलकाहै५९१ कटुरस अत्यंतभोजन कियाहुआ शिरमें शूल व मन्यास्तंभ व पीड़ाकरै है कंप व मूर्च्छा व तृषा पैदाकरैहै बलवीर्य्यको हरैहै ५९२ कषायरस घावको पूरण करैहै व ग्राहीहै व स्तंभनहै व शोधन है व लेखनहै व पीड़न है व सौम्यहै व शोषणहै व बातको कोपकरैहै कफ व रुधिर व पित्त इन को हरैहै रूखाहै शीतलहै हलकाहै शरीरको स्वच्छकरैहै आमको स्तंभनकरैहै जिह्वाको जड़करैहै कंठ व मूत्रस्रोतको बंधकरै है ५९४ कषायरस अत्यंत भोजनकियाहुआ ग्रह याने बंध व आध्मान व हृदय में पीड़ाकरैहै व अपक्षेपकरोग करैहै ५९५ मधुर रसवाले पदार्थ सब कफकारी हैं इनके बिना पुराना चावल व मूंग व गेहूं व शहत व मिश्री व जांगलदेश के जीवकामांस ५९६ खट्टारसवाले पदार्थ प्रायतासे पित्तकारीहै इन्होंकोवर्जकरि आंवला व अनार लवण प्राय-

तासे नेत्रका बैरीहै सैंधव लवण बिना ५९७ तिक्तरस प्रायतासे कडु-आपन होनेसे बातको कोपकरैहै व बीर्य्यहीन है सोंठि व पिप्पली व लवण व परवल व गिलोय इनको वर्जकरि ५९९ पिप्पली व सोंठि व नागरमोथा व कटुकधातुनाशकहोयहै प्रायतासे कषायरस स्तंभन होयहै हरीतकीबिना ६०० संक्षेपसे ६ छः रसोंके गुणकहेहैं रसादिक योगसे तो औरही गुणका उदयहोयहै ६०१ पृथ्वीका भारी गुण है आकाशका हलकागुण है जलका सचिक्कण गुणहै वायुका रुक्षगुण है तेजका तीक्ष्णगुण है ६०२ गर्वादिकगुण पृथिव्यादिकमें रहते हैं साहचर्य से रसोंमें भी रहतेहैं ६०३ भारीगुण बायुको हरैहै पुष्टि व कफको पैदाकरैहै देरमेंपकैहै स्निग्धगुण बातकोहरैहै कफपैदाकरैहै धातुबीर्य्य बढ़ावैहै ६०४ लघुगुण पत्थ्यहै कफकोहरै है जल्दीपकैहै ६०५ रुक्षगुण बातपैदाकरै है कफकोहरैहै तीक्ष्णगुण पित्तको करैहै लेखनगुण कफबातकोहरैहै ६०६ सुश्रुतग्रन्थमें २० गुण लिखे हैं तिनको कहतेहैं गुरु १ लघु २ स्निग्ध ३ रुक्ष ४ तीक्ष्ण ५ श्लक्ष्ण ६ स्थिर ७ सर ८ पिच्छल ९ विशद १० शीत ११ इष्ट १२ मृदु १३ कर्कश १४ स्थूल १५ सूक्ष्म १६ द्रव १७ शुष्क १८ आशु १९ मन्द २० ऐसे जानो ६०८ तीक्ष्ण गुण भारीहोय है लघुगुण रुक्ष होयहै श्लक्ष्ण स्नेहबिनाभी होयहै कठिन चिक्कणारूपहोय है ६०९ बात व मलकास्तंभन करनेवाला स्थिरगुणहोय है वात मलका प्र-वर्तन करनेवाला सगुणहोय है ६१० पिच्छलगुण बलकरै है टूटा हुआको जोड़देयहै कफकारी है व भारीहै बिशद गुण घावको भरै है ग्लानि को दूरकरै है ६११ शीतगुण आनन्द करनेवाला है व स्तम्भन करै मूर्च्छा व दाह व तृषा पसीना को हरै है उष्णगुण शीत से बिपरीतहोय है अरु पाचनहोयहै ६१२ स्थूलगुण शरीरको मोटा करै है स्रोतों का अवरोध करै है देह के सूक्ष्म छिद्रों में जो प्रवेश करैहै वह सूक्ष्महोयहै ६१३ द्रवगुण ग्लानिकरै सर्वशरीर में व्याप्तहोजाय इससे बिपरीत शुष्क होय है आशुगुण शरीर में जल्दी प्रवेशहोयहै। दृष्टांत जैसेतेल में जल फैलजाय तैसे ६१४ सम्पूर्णकर्मोंमें जो चिरकारीहो तिसे मंद व शिथिल कहतेहैं ६१५

दीपन पाचन आमको पकावें अरु अग्निज्वालित करै तिसे दीपन कहते हैं यथा सौंफ अरु आमको पकावे अरु अग्नि बढ़ावै उसे पाचन कहै हैं यथा नागकेसर चीता दीपन पाचन है ६१७ जो द्रव्य कोठेको शुद्धकरै मल न बांधै और बढ़े दोषको शमनकरै उसे शमन कहते हैं यथा गिलोय ६१८ जो द्रव्य मलको पकाय भेदनकर गिरावे उसे अनुलोमन कहते हैं यथा हरड़ ६१९ जो वस्तु पकने योग्य अनपची होइ कोठेमें लिपटि के रहगई हो तिसे अधोमार्ग से गिरावे उसे स्रंसन कहते हैं यथा अमतास ६२० जो मलवातादि दोष से विशेष पकगयाहो अपक्कहो उसे पतला करवावे उसे रेचन कहते हैं यथा निशोथ ६२१ जो मलवातादि दोषते वँधाहो वा न वँधा हो वा गोटे परगयेहों उसेफोरिकै अधोमार्ग से गिरावे उसे भेदन कहते हैं यथा कुटकी ६२२ जो द्रव्य कच्चा पित्त कच्चा कफ ऊर्ध्वमार्ग से गिरावे उसे वमनकहते हैं यथा मैनफल ६२३ जो द्रव्यदुष्ट मल वा पित्त कफ स्थान छुटाइकै ऊर्ध्व मार्ग या अधोमार्ग से गिरावे उसे शरीरशोधनकहते हैं यथा बनतोरी ६२४ जो वँधेहुये कफादिकको सुशक्तिकर निकारै उसेछेदन कहते हैं यथा यवाखार शुंठी मिरच पीपरि शिलाजीत आदि ६२५ रसादिधातु अरुशरीरके तिन्हें सुखाकै देहको दुर्बलकरै उसेलेखन कहते हैं यथा शहत व गरम जल यव बच ६२६ जो दीपनकरै व पाचनकरै व गरमीकरके कफ धातु मल इनके रसको सुखावे तिसे ग्राही कहते हैं यथा सोंठि श्वेतजीरा गजपीपरि ६२७ जो द्रव्य रुक्ष हो अरुशीतल हो कषाय हो अरु पाचन शक्तिक्षीण हो सो वातकृत द्रव्यको स्तंभन कहते हैं यथा कुरैया लोहनपत्ती ६२८ जो द्रव्य जराअवस्था के रोगनको दूरकरै उसे रसायन कहते हैं यथा गिलोय व गुग्गुल ६२९ जिसद्रव्य से मैथुन में बिशेष सुख हो तिसे बाजीकरण कहते हैं यथा बरियारा व कौंचबीज ६३० जो धातुको वढ़ावे उसे शुक्रकहते हैं यथा असगंध मुशली शतावरि ६३१ और धातुको वृद्धिकरै उसे रेतजन्य कहते हैं यथा दूध उर्द आंवला ६३२ शुक्रकी प्रकट करनेवाली स्त्रीकी धातुको रेचन

करनेवाली बड़ी भटकटैयाका फलहै और वीर्य्यस्तंभी जायफलहै और वीर्यशोषकहरड़है तबूज है ६३३ जो बस्तु रोममार्गसे शरीर में प्रवेशकरै तिसे सूक्ष्मकहिये यथा सैंधव शहत अरण्डी तेल निंब ६३४ प्रथम शरीर में व्यापित हो फिरपचै उसे व्यवायिक कहतेहैं यथा भांग अफीम ६३५ देहके बंधन ढीलेकरै रसादि धातु अरु शुक्रको क्षीणकरै तिसे बिकासीकहते हैं यथा सुपारी कोदव ६३६ जोबस्तु बुद्धिको संभ्रमकरै और मदकरै व गरमहो सो तमोगुणी है यथामदिरा ६३७ ब्यवायि अरु विकासी सूक्ष्मछेदनकृत मदकृत अग्निवर्द्धन मृत्युकारक येसबद्रव्य जिसऔषधिकेसंगपीवे तैसागुण करै ऐसाविषहोताहै ६३८ जोद्रव्य अपने पराक्रमसे संचित दोषों को निकारडारै उसे प्रमाथी कहतेहैं मरीच व बच ६३९ जो पदार्थ आपस में स्निग्धता गुण करिकै रसबाहिनी नाड़ियोंका निरोधकरै अरु शरीरको जडकरै उसे अभिष्पंदी कहते हैं यथादही ६४० बिदाहिद्रव्य इतने अवगुण करै है खट्टीडकार तृषा हृदयमें दाह और देरसेपकैहै ६४१ योग बाहिद्रव्य संसर्गजबस्तु के गुणोंको ग्रहण करैहै यथा शहत जल तेल पारा लोह येपदार्थ दुसराके गुणसरीखे अपने गुणकरैहैं ६४२ गरम व शीतल गुणकरके वीर्य दोप्रकारका है त्रिभुवनमें वीर्य अग्नि व सोमरूपहै ६४३ गरम पदार्थ बातकफ कोहरैहै पित्तकी वृद्धिकरै है शीतलपदार्थ पित्तकोहरै है बातकफको करै है ६४४ गरमपदार्थ भ्रम, तृषा, ग्लानि, पसीना, दाह, जल्दी पकैहै वातकफको हरैहै शीतलवात कफपैदाकरैहै अरु आनन्दरूप है व जीवन व स्तंभन व रक्त पित्तको स्वच्छकरै है ६४५ उदरकी अग्नि संयोगसे जो अन्यरस पैदा रसका परिणामका अन्तमें उसे विपाक कहतेहैं ६४६ मधुररस मधुरको पैदाकरैहै अम्लरस अम्ल कोपकावैहै कटु व तिक्त व कषाय इन्होंकारसप्रायतासे कडुआहोयहै रसोंकापाक तीनप्रकारकाहोयहै स्वादु व अम्ल व कषायहोयहै ६४९ मधुरपाक कफकरैहै वातपित्तको हरैहै खट्टारस पित्तपैदाकरैहै वात कफहरैहै कडुआरस बातकोकरैहै पित्तकफकोहरैहै ऐसे रस विपाक जानो ६५१ आपसमें औषधरसादि साम्यहोते भी जिसका विशेष

गुणहोवहकहतेहैं जमालगोटाकीजड़ चीतासमानहै रसादिककरिकै परंच रेचन गुणकरनेवाली है महुआकी समान मुनक्कादाखहै परंच मृदुरेचन गुणकरैहै दूधके समान भी घृतहै परंच घृतदीपनहै आंवरेकारस गुणवीर्य विपाक अधिकारमें समानगुणहै यद्यपि हलका है तौभी तीव्रदोषोंको हरैहै और बड़हलकागुण वीर्यविपाक त्रिदोष कारकहै जोदोनों मिलाइकेदे तौभी आंवरा अपने प्रभावसे त्रिदोष नाशकहै कोई कोई द्रव्य केवल प्रभावसेही रोगदूरहोताहै जैसे सहदेईकी जड़ माथापर बांधनेसे ज्वरको दूरकरै है ६५५ जोऔषधि स्वभावसे प्रसिद्धहै वह वैद्य चिंतमन करनेके योग्यनहीं जो स्वभाव से प्रसिद्ध औषधिनहीं वह वैद्य चिंतमन करनेयोग्यहै ६५६ जोप्रत्यक्ष फलदेनेवाली औषधि वहस्वभावसे प्रसिद्धहै कारणसेऔषधि परीक्षा वैद्य न करै ६५७॥ अथदिनचर्या ॥ मनुष्यजिसविधि करिकै आरोग्यरहै तिसविधिकोवैद्य करवावै ६५८ जो पुरुष दिनचर्या वा रात्रिचर्या वा ऋतुचर्याजैसे ग्रन्थोंमें लिखी है विनके समान आहार विहारादिकरै वह सदाआरोग्यरहै ६५९ स्वस्थ यानेआरोग्यवान् लक्षण कहते हैं समदोषरहै वा समअग्नि जिसकीहो समधातु बल क्रियाहो प्रसन्न आत्माहो इन्द्रिय मनवाला स्वस्थ कहावैहै ६६० सम दोष स्वस्थ याने आरोग्य वाला पुरुष विना नहींहोते ६६१ मनुष्य अपनी उम्र रक्षाके अर्थ ब्राह्मी मुहूर्त्त में जागै स्वस्थपुरुष सम्पूर्ण पाप शांति के अर्थ परमेश्वर का स्मरण करै पीछे दही व घृत व दर्पण सिद्धान्न व विल्वपत्र व गोरोचन व माला पुष्पों की इनका दर्शन व स्पर्श न करै जो ज्यादह जीवने की इच्छा करै तो अपना मुख घृत में देखै ६६२ प्रभात में मलादि विसर्जन से आयु बढ़ै है अरु अंत्र कूजन व आध्मान व उदर भारीपन ये रोग नहीं होते हैं ६६४ मलवेग रोकने से आठो पवाशूल व परिकार्त्तिका मलरोध व डकार जादै आवै अथवा मुखद्वारा मल निकसै इतने रोग मनुष्यके होते हैं ६६५ बातका रोकनासे बात मूत्र मलरोधहो वा आध्मानहो वा छर्दि वा उदर में बातरोगहोहै ६६६ मूत्रवेग रोकने में वस्ति व लिंगमें शूलचलै व मूत्रकृच्छ्रहो व शिर

में पीड़ाहो बन्धन व आनाहरोगहोहै ६६७ वेग रोकिकर अन्य कार्य न करै अरु बलसे वेगधारण न करै काम व शोक भय क्रोध से मनके वेगोंको धारणकरै ६६८ गुदालेआदि मलअंगोंकामार्जन कान्ति बलदे है व पवित्रकरै है आयुः व दरिद्रता व कलिपापहरै है ६६९ मट्टीलगाय हाथपैरका धोवना शुद्धिकरै है मल व परिश्रम को हरै है नेत्रों में गुणकरैहै राक्षस दोषकोहरैहै ६७० दातन बारह १२ अंगुल की लम्बी मुखमेंकरै कनिष्ठिकाअंगुलीसे मोटीकोमल ग्रंथि वब्रणवाली न हो एकएकदांतकोघर्षणकरै कोमलहाथसे अरु दन्त शोधनचूर्णलगायअरुदांतके मसुढ़ेको दन्तनसेघसैनहीं पीछे शहत व शुण्ठ व मिरच पिप्पलयुत तेल व सैंधव लवणचूर्णसे व तेजबलाके चूर्ण से नित्य दांतोंकी शोधनकरै मधुरवृक्षोंमें तो दंतन महुवाकीकरै कटुकवृक्षों में करंजवाकी दन्तनकरै तिक्तवृक्षोंमेंनिम्ब की दन्तनकरै कषायवृक्षों में खदिरकी दन्तन करै समय व दोष व प्रकृति देखकरि यथोचित द्रव्यसे दन्तनकरै ६७५ मुख प्रक्षालन से मुख कफ व बैरस्य गन्धजावै जिह्वा व मुख के रोगजावै रुचि व हलकापनप्राप्तहो ६७६ आककीदन्तनकरै तो वीर्यबधै बटकीदंतन करै तो कान्तिबधै करंजकी दन्तनकरै तो जीतहो रुक्षवृक्षकीदंतन करै तो धनप्राप्तिहो बदरीकी दन्तनकरै तो मधुरध्वनिहो खदिरकी दन्तनकरै तो मुखमें सुगन्धआवै बिल्व की दन्तनकरै तो धीरजता व बुद्धिबधै चम्बेली की करै तो श्रवणेन्द्रिय बलवान्हो सिरस की दन्तनकरै तो कीर्ति सौभाग्य व आयुबधै उंगा की दन्तन करै तो धीरजता बुद्धि शक्ति व स्वरबधै अनार की दन्तनकरै तो रूपबधै व श्रेष्ठहो अर्जुन व कुडावृक्षकी दन्तन से रूपअच्छाहो तगर व मंदार वृक्षसे दुःखप्रगटै ६८१ कण्ठ तालु ओष्ठ जिह्वा दन्त इनमें रोगहो तो दन्तन करै नहीं अरु मुखपाक में व शोषमें व श्वास व कास व छर्दिवाला दन्तन न करै अरु दुर्बल व अजीर्णमें भोजन करनेवाला अहिक्का व मूर्च्छा मदवाला शिर रोग तृषावाला परिश्रमवाला व ग्लानिवाला व अर्दितरोग व कर्णशूलरोग व नेत्ररोग व नवीन ज्वरवाला अरु हृदय रोगवाला दन्तन कभी करै नहीं ६८४ जिह्वा

साफकरनेको सुनाकी सलाई या चांदीकी या तांबाकी या बीच से पटीकाष्ठकी कोमलस्वरूप कोमल पत्रवाली चाहिये ६८५ दशअंगुल की कोमल व सचिक्कण दन्तन तिससे जिह्वा लेखनकरै वह कर्म्म जिह्वा मल व मुख बैरस्य व दुर्गन्ध व जड़ता तिसेहरैहै ६८६ दंतन पीछे शीतलजल से गंडूष याने कुरलेकरै बारंबार गंडूष कफ तृषा मलहरैहै मुखकी शुद्धिकरतहै कछुक गरमजल का गंडूष कफ अरु मलकोहरै है दन्तजाख को हरैहै मुखहलकाकरैहै ६८८ विषमूर्च्छा मदवाला व शोषरक्त पित्तवाला व नेत्ररोगवाला क्षीण व रुक्षवाला इनको गंडूष अच्छानहीं शीतलजलसे मुख प्रक्षालन रक्तपित्तकोहरैहै मुखकीपीड़ा का याने कील व शोष व नीलापन व व्यंग इनको हरै है ६९० अरु कछुक गरमजल से मुखका प्रक्षालन मुखको शुद्धकरै है व मुखसूजन व कफ बातकोहरै है व मुख सचिक्कणकरैहै ६९१ कड़वे तेल आदि द्रव्यन को नित्य योजना करै कफको याने प्रभात कालमें पित्तकोपमें बातकोपमें सामकाल में लेवै ६९२ सुगन्धता मुख में व चिकणापन व इन्द्रिय प्रकाश व श्रेष्ठध्वनि व पलिरोग नाशरूप लेनेवाले को प्राप्त होवै है ६९३ सुरमा नित्य नेत्रों में अंजनकरै तो मनुष्य को श्रेष्ठ है अंजन से नेत्र शुद्ध व सूक्ष्मवस्तु देखने में कुशल रहतेहैं ६९४ अंजन नेत्र मल व खाजकोहरैहै व नेत्रदाह व पीड़ा हरैहै नेत्रकोरूपबधावैहै अरु पवन व धूपकोअंजन युत नेत्रसहते हैं सब नेत्र के रोगोंको अंजनहरै है ६९६ रात्रि में जागाहुआ व परिश्रमवाला व छर्दिवाला व भोजनकरे पीछे व ज्वरवाला व शिरधोवे बादनेत्रमें अंजन आंजेनहीं ६९७ पुरुषनख व केश श्मश्रुयाने दाढ़ी पांचदिनसेजादे न रक्खै इन्होंकोदूरकरनाही शरीरको आरोग्यदे है ६९८ हजामत करावनी पुष्टिकरै है व रूप बधावैहै व उमरकी बृद्धिकरैहै व शरीर शुद्धकरैहै नासिका वर्जकरि अन्यअंगोंके रोमपाड़ै नासिकाके रोमपाड़नासे नेत्रदृष्टि दुर्बलहोवै है अरु केश कछुशिरपै व मुखपैशोभावालारक्खै तो कंघो वा आदिसे शोधन नित्यकरै केशका प्रसाधन केशकिरज व जूम व मलदूरिकरै है ७०० दर्पण देखना मंगलरूपहै व कांतिबधावैहै पुष्टि व आयु-

बैल बधावैहै ७०१ पाप व अलक्ष्मी याने दरिद्र दूरकरै है शरीरको हलकाकरैहै कामोंमें सामर्थ्यदेहै शरीरको मोटाकरैहै ७०२ व्यायामयाने कसरतसे दोष कोपनाश व अग्निवृद्धिहोवैहै व्यायामकरनेवाले पुरुषोंको रोग कभी नहींहोता ७०३ अरु विरुद्ध व विदग्ध भोजन कियाहुआ जल्दी पचैहै व्यायामवालेका शरीर जल्दी शिथिल व केश सपेद व शरीरमें बली नहींहोती ७०४ व्यायामवालेको जरायाने बुढ़ापा जल्दी नहीं प्राप्तहोता व्यायाम समान मोटापन दूरकरनेवाला कोई उपायनहींहै ७०५ बलवाले पुरुषों को व स्निग्ध भोजन करनेवालोंको संपूर्ण कालमें गुणदे है बसंतऋतु व शीतकालमें हितकरनेवाला है व्यायाम और कालमें थोड़ी देरकरै बलार्धकेयोग्य ऐसेजानो ७०७ हृदयस्थित बायु जल्दीमुखमेंप्राप्तहो अरुमुख शोषको प्राप्तहोयहै बलार्धका लक्षणहै ७०८ अथवाकटि व नासिका व संधि व कोष इन्होंमें पसीनाआवे तिसेबलार्धकहतेहैं ७०९ भोजनपीछे व मैथुनपीछे व कास व श्वासवाला व कुष्ठ व क्षयीरोगवाला व रक्तपित्तवाला व क्षत व शोषवाला व्यायामकभीभी नकरै७१० अतिव्यायामसे कास व ज्वर व छर्दि व श्रम व ग्लानि व तृषा व क्षुद्र तमक व रक्तपित्त ये रोगहो हैं ७११ संपूर्ण अंगों में अभ्यंग तेलमलाना नित्यकरै अरु शिर व कान व पैरइन्होंमेंविशेष करिमलै ७१२ शिरसमतेल व गन्धयुततेल व फूलोंकातेल व अन्य द्रव्ययुततेल कभी बीदूषितनहोवै ७१३ अभ्यंगमलना बातकफहरै है श्रम व शांति व बल सुख निद्राअच्छारूप व कोमलपन व आयु वृद्धि इन्होंकोकरैहै ७१४ मस्तकमें अभ्यंगकियाहुआ संपूर्ण इंद्रिय तृप्तकरैहै नेत्र दृष्टि पुष्टकरैहै व शिरकेरोगोंकोहरैहै अरु केशवृद्धि व दृढ़ता व कोमलपन व लंबापन व कालापन केशोंकोकरैहै व शिरको पुष्टकरैहै ७१६ कानमेंतेल चोवनसे इतनेरोगनहींहोते कानरोग व कानमेंमल व मन्यास्तंभबहूनुग्रहः ऊंचासुनना व धरिपना ऐसेजानो ७१७रसादिकानमें भोजनसेपहिलेघालै अरु तेलकानमें सायंकाल में घालै ७१८ पैरमेंतेललावना पैरकोदृढ़करैहै निद्रा दृष्टी वृद्धिकरै है अरुपादसोना व श्रम व स्तंभ व संकोच व फोठनाइनकोहरैहै ७१९

कसरतवाले पुरुषको अरु पैरमें तेलमलनेवाले पुरुषको रोग प्राप्तनहींहोते दृष्टान्त जैसे गरुड़को सर्पनहीं प्राप्तहोते तैसे ७२० तेलमलनेसे रोगसमूह व नाड़ी समूहद्वारा शरीरतृप्तहोहै बलबधैहै शरीरमें दृष्टांत जैसे जलसेसींची वृक्षकीजड़को तो वृक्षकेपत्ते डाली हरीहोतीहै तैसे तेलसेसींची धातुबधेहै ७२२ नवीन ज्वरवाला व अजीर्णवाला तेलमलैनहीं अरु रेचनवाला व वमनलेनेवाला व निरूहण वस्तिवाला तेल मलैनहीं ७२३ नवीन ज्वरवाला व अजीर्ण वाला तेलमलै तो कष्ट साध्यहोजावै अरु रेचनवाला व वमनवाला व वस्तिवाला तेलमलै तो अग्निमंदआदि रोगउपजैं ७२४उबटना मलनाकफहरैहै व मेदरोगको हरैहै व वीर्यबधावैहै व बल बधावैहै रुधिरवृद्धि व कांति व त्वचावृद्धि व कोमलताकरैहै७२५मुखलेपसे नेत्रपुष्टहोहै व मुखकपोलपुष्टहोवैहै व प्रकाशमान त्वचाकमलसमान मुखहोवैहै ७२६ स्नानकरना अग्निदीपनकरैहै आयु व वीर्य व बल बधावै है अरु खाज व मल व श्रम व पसीना व तन्द्रा व तृषा व दाह व पाप इनकोहरैहै ७२७ शरीरके ऊपर शीतल जलसे शरीर की गरमाई शरीरके भीतरचलीजातीहै इसवास्ते स्नानपीछे अग्नि दीप्तहोवैहै ७२८ शीतलजलसे स्नानकरना रक्तपित्तकोहरैहै गरम जलसे स्नान बलबधावैहै अरु बातकफकोहरैहै ७२९ गरमजलसे शिरस्नान नेत्र दृष्टिहरैहै बातकफकोप में हितकारीहै गरम जलसे शिरस्नान७३० गरमजलसे स्नान अरु दुग्धकापीवना अरुनवीन स्त्री अरु सचिक्कण भोजन व अल्पभोजन ये सब मनुष्यों के पथ्यहैं ७३१ जो मनुष्य आमला से जलयुत स्नानकरै उसके बाल सपेद नहींहों वहवर्ष १०० जीवै ७३२ ज्वरवाला व अतीसारवाला नेत्र रोग कर्णरोग व बातब्याधि वाला व पीनसरोगवाला व अजीर्ण वाला व भोजन से पीछे मनुष्य स्नान करै नहीं ७३३ स्नान करै पीछे बस्त्रमें शरीर मार्जन करना कांति देनेवाला है शरीर की खाज व त्वचारोग नाश करै है ७३४ रेशमी व पीताम्बर वस्त्र व लाल वस्त्र बिचित्र बस्त्र धारण करना शीत काल में श्रेष्ठ है अरु बातकफ को हरै है ७३५ कषाय रंग का बस्त्र धारण करना गरम समय

में धारण करै शुद्ध है पित्तको हरै है गरम कालमें भी कषाय रंग वस्त्रहलका धारणकरै ७३६ जो वस्त्रशीतल जादे नहो व गरमजादे नहो वह बर्षाकाल में धारणकरै ७३७ नवीन स्त्री धारण करना यह सब कामना व आयु इनको बधावै है लक्ष्मी व आनन्ददेवे है त्वचा के रोगहरै है मनुष्यन को वशकरै है वं रुचि उपजावे है ७३८ किसीकालमें भी मलीन वस्त्रधारण न करै मलीनवस्त्रधारण से खाज व कृमिउपजे हैं ग्लानि व दरिद्रता प्राप्त होवै है ७३९ केसर का तिलक व चन्दन का तिलक व अगर मिलाहुआ गरमहै बातकफ नाशकरै है शीतकाल में श्रेष्ठ है ७४० कपूर व वाला मिला चन्दन गरम समय में श्रेष्ठहै सुगन्ध हो है व शीतलहो है चन्दन कस्तूरीयुत न गरम व शीतल बर्षा समय में श्रेष्ठ धारण करना ७४१ चन्दन लेपन से तृषामूर्च्छा दुर्गंधि श्रम दाहदूर हो है सौभाग्य कांति त्वचा रूपबलबधावैहै ७४२ स्नानके अयोग्य पुरुषों को चन्दनादिलेप अच्छानहीं अरु पुष्प सुगन्धित व पत्र तो धारण भी श्रेष्ठहै ७४३ भूषणोंसे अंगको भूषणकरै विधान से यथायोग्य सुवर्ण का गहना धारण करना पवित्र है अरु सौभाग्य व सन्तोष करै है ७४४ रत्नयुत गहना धारण करना ग्रहों की कुदृष्टिहरै है व पुष्टिकरै है व दुःस्वप्ननाशै है व पाप व निर्भागपना को हरैहै ७४५ सूर्य रत्नमाणिक्यहै मोती रत्न चन्द्रमाकाहै विद्रुम रत्न मंगलका है पन्ना रत्न बुधका है पुष्परांज गुरुका है बज्र रत्न शुक्रका है नीलमणि रत्न शनिका है गोमेदरत्न राहुकाहै वैडूर्यकेतु काहै ७४७ नवीनबस्त्र व सुगन्धित पुष्पमाला रत्न धारण प्रीति बधावै है राक्षस दोषहरै है धन सौभाग्यकरैहै ७४८ सिद्धमन्त्र व महौषधी व गोरोचन व सर्षप व मंगलबस्तु इन्होंकाधारण आयु बलको बधावै है अरु राक्षस दोषकोहरैहै शुभदायक है अरु बैरी भयहरै है व वशकरै है ७४९ देव व गौ व ब्राह्मण व वृद्ध व गुरु इनको पूजन आयुबधावै है पवित्र है दरिद्रता व पापहरै है ७५० भोजन समय में मंगल पदार्थ को देखकरि परिक्रमा करै नित्य इससे आयु व धर्मबढ़ै है ७५१ संसार में आठ पदार्थ मंगलरूप

हैं ब्राह्मण १ गौ २ अग्नि ३ सुवर्ण ४ घृत ५ सूर्य ६ जल ७ राजा ८ ऐसे जानो ७५२ पादक याने खड़ाऊं भोजन से पहिले व पीछे धारण करै तो पैर रोग जाय वीरज व नेत्रको हित है ७५३ मनुष्य मात्रको शरीर में ४ प्रकारकी इच्छा रहैहै खाने की १ पीनेकी २ सोयनेकी ३ मैथुनकी ४ ऐसेजानो ७५४ भोजनकी इच्छाके विघात से इतने रोगहोवैंहैं अंगमर्द १ अरुचि २ श्रम ३ तंद्रा ४ नेत्ररोग ५ धातुक्षय ६ दाह ७ बलनाश ऐसे जानो ७५५ प्यासके विघात से ये रोगहोवैंहैं कंठव मुखमोशोष १ कानशोष २ रक्तशोष ३ हृदयमेंरोग हो है निद्राविघात से जंभाई शिर व नेत्रभारीरहै हैं अंग टूटै तंद्रा अन्नपकेनहीं ७५६ भूखकेवक्तजोभोजन न मिलै तो जठराग्नि मन्द हो है आहार जठराग्नि का ईंधन रूप है जैसेईंधन वर्जित अग्नि मन्द तैसे भोजन विना जठराग्नि मन्द अरु जठराग्निको भोजन समय ये न मिले तो वात पित्तको नाशकरे है दोषनाश पीछे धातु को सुखावै है पीछेप्राणों को खावै है ७५८ भोजन करना शरीर को पुष्टकरै है व बलकरै है स्मृति व उमर व शक्तिशोभा को बधावै है ७५९ गुणयुत अन्न को भोजन करै अरु देशकाल को बिचारकर दोनों वक्त भोजन करै ७६० शामको व प्रभात में दो वार मनुष्यों को भोजन वेद कहता है बीच में ३ वार भोजन करै नहीं अग्निहोत्र समान भोजन काल है ७६१ एक पहर के मध्य में भोजनकरै नहीं २ पहर भोजन को होने न दे १ पहर बीच में भोजन से रस पैदाहो है २ पहर भोजनहुये पीछे बल नाशहो है ७६२ रस व दोष मलपके पीछे भूख उपजै है काल में व अकाल में ऐसेजानो ७६३ जिससमय डकारआवै नहीं शरीर में आनंद हो यथोचित मूत्र मलवेगहोवै शरीर हलकाहो भूखलगै व प्यास लगै यहकाल भोजनकाहै ७६४ भोजन व मलोत्सर्ग याने पाखाने जाना एकांत जगह में करै तो लक्ष्मीबधै अरु एकांत में न करै तो दरिद्री होवै ७६५ भोजन व मलोत्सर्ग व स्त्री गमन ये एकांत में करनेहितहैं ७६६ अंगहीन व दरिद्री की व भूख की व पापीकी व पाखण्डी की व रोगी की व मुर्गाकी व सर्प की व कुत्ताकी दृष्टि

भोजन समयबुरी है ७६७ पिताकी व माताकी मित्रकी व वैद्य की पाककर्त्ता याने रसोई पाकी हंसकी व मोरकी व सारसकी व चकोर की दृष्टि भोजन समय में अच्छी है ७६८ अन्नब्रह्मा है रसविष्णु है भोजन करनेवाला महादेवहै ऐसे चिंतवन करिभोजन करै तो दुष्ट दृष्टिदोष लगेनहीं ७६९ अंजनी के पुत्रकुमार ब्रह्मचारी जो हनुमानूजी हैं उनका स्मरण करि भोजन करे तो दृष्टि दोष लगेनहीं ७७० सुवर्णपात्र में भोजन करना दोष को हरै है व दृष्टि को बधावै है अरु पथ्य है चांदी के पात्र में भोजन करना नेत्रों को हित है व पित्त को हरै है अरु कफ बातपैदाकरैहै ७७१ कांसी के पात्र में भोजन करना बुद्धि बधावैहै व रुचि उपजावै है अरु रक्त पित्त को साफ़करै है पीतल के पात्रमें भोजन करनाबाय को पैदाकरै है व शरीर को रूक्षकरै है शूल व कफ कृमिको हरै है ७७२ लोहे के पात्र में भोजन करना सिद्धि प्राप्त करै है सोजा व पाण्डु को हरै है बल देहै कामला रोग को हरै है ७७३ पत्थर के व मट्टी के पात्र में भोजन करने से दरिद्र हो है काष्ठ के पात्र में भोजनकरना रुचि उपजावै है अरु कफ पैदा करैहै ७७४ पत्तों की पत्तल में भोजन करना रुचि उपजावै है व दीपन है विष व पापको हरै है तांबा के पात्र में जलपीवै या मट्टीके में पीवे हित है स्फटिक का पात्र शीतल व पवित्र हो है अरु कांच का पात्र व वैडूर्य का पात्रभी शीतल व पवित्र हो है ७७६ भोजन के अगाड़ी लवण सहित अदरक भोजन पथ्यहै अरु अग्नि दीपनकरैहै अरु रुचिको उपजावै है व कण्ठ को शुद्ध करै है ७७७ लवण सैंधवसे जानो चन्दन करि रक्तचन्दन। सैंधव लवण स्वाद है दीपन है पाचन है हलका है चिकना है रुचिकारकहै शीतलहै बलदायक है नेत्रों को हित है सूक्ष्म है त्रिदोष हरै है ७७९ अदरक भेदनी है भारीहै तीक्ष्णहै गरमहै दीपन है कड़वीहै पाकमें मीठीहै बातकफ को हरै है ७८० एकाग्रचित्त होके भोजन समय में पहले मीठारस भोजनकरै मध्यमें खट्टा व लवण सहित भोजन करै अन्त में कटु तिक्त कषाय भोजन करै ७८१ अनारआदि फलआदि में भोजन

करै परंच केला की घड़ व काकड़ी वर्जकर ७८२ मृणाल कंदर ईषसे आदि रसभोजनकी आदिमें भोजन करै भोजनकरेपीछे नहीं ७८३ भारी अलपीठा कमल व चावल के पदार्थ व खोहा आदिभोजन करे पीछे खावैनहीं भूखाभी थोड़ा भोजन करै इनपदार्थों को ७८४ कठिन पदार्थ घृत सहितखावै पहिले तिसपीछे कोमल पदार्थ खावै अन्तमेंद्रवपदार्थखावै ऐसापुरुषआरोग्य व बलवान्रहै ७८५ आदि में द्रवपदार्थखावै तो ज्यादह जलपीवै नहीं भोजनके मध्यमें कठिन पदार्थखायके पीछे जलपीवै ७८६ भोजनमें जो स्वादहो वहीक्रमसे भोजन करै भोजनकरे पीछे जिसमें फेरइच्छारहै उसे स्वाद कहते हैं ७८७ स्वाद याने मधुर अन्न मनको प्रसन्न करैहै बल पुष्टि व उत्साह व जिह्वा का स्वाद उपजावै है अस्वाद अन्नबिपरीत फल करैहै ७८८ गति गरमअन्न बलकोहरैहै शीतल व शुकाअन्न पकता नहींहै अत्यन्त चिकणा अन्न ग्लानि करैहै युक्तिसे करा भोजन हितहै ७९० जल्दी कियाभोजन गुण व अवगुणको प्राप्तनहींहोहै शीतल व अन्न देरसे भोजनकरनेसे अन्न अतिप्रियहोहै ७९१ मन्दाग्निवाला बहुतअन्न भोजन करै नहीं भारी स्वभावसे भी हो है अरु संस्कारसेभीहोहै ७९२ मूंगआदिककी ज्यादामात्राले तोभारी है उड़द आदिक आदिसेही भारीहै पिसाहुआअन्न संस्कारसेभारी होहै ७९३ आहार ६ प्रकारका है चोष्य याने चुषणा द्रव्यका १ पेय याने द्रव्यकापीना २ लेह्य याने चाटना ३ भोज्य याने खाना ४ भक्ष्य याने कोमल खाना ५ चब्य याने चाबणा ६ ये उत्तरोत्तर क्रमसे भारीहैं ७९४ भारीपदार्थ कमभोजन करै हलका तृप्तिपर्यन्त भोजनकरै द्रवकीमात्रा भारीहै नहीं क्योंकि भोजन पीछेभी द्रव को पीवै हैं ७९५ पेयलेह्य भक्ष्य इन्होंमें उत्तरोत्तर क्रमसे भारी है द्रवपदार्थ सहित शुष्कभी भोजन हितहै ७९६ शुकाअन्न बारंबार भोजनकिया पकता नहीं शुका व बिरुद्ध व बिष्टंभ करनेहारा पदार्थ अग्नि को मन्दकरैहै ७९७ मनुष्योंकी अग्नि४प्रकारकीहै मंद१ तीक्ष्ण २ विषम ३ सम ४ मंदाग्निवाला हलका भोजन करै तीक्ष्ण अग्निवाला भारी भोजन करै विषमाग्निवाला सचिक्कण

भोजनकरै समाग्निवाला समान भोजनकरै ७९८ भोजन करता हुआ बोले नहीं किसीकी भी निन्दा न करै निन्दितकथा को सुनैभी नहीं अरु न कहे ७९९ सत्तूको भोजन दंतोंसे काट२भोजनकरैनहीं व रात्रिमें सत्तूभोजनकरैनहीं अरु बहुतभी सत्तूखावै नहीं व जलके संग सत्तूखावै नहीं व २ बार खावैनहीं व केवल सत्तूखावैनहीं८०० ज्यादा सत्तू भक्षण करै नहीं १ सत्तूभक्षणकरि दूधपान करै नहीं २ मांससत्तू खावैनहीं ४३ रात्रिमें सत्तूखावैनहीं ४ जलसंग खावैनहीं ५ सत्तूखाकर दांतोंको चाबैनहीं ६ सत्तूको गरमकरखावैनहीं७ ऐसे प्रकार सत्तूभक्षणसे बर्जदेवै ८०१ अकालमें भोजन व स्वल्पभोजन इसे बिषमभोजन कहैहैं ८०२ अल्प भोजन करनेसे आलस्य पैदा होहै व भारी शरीरहोहै व शरीर जड़होहै व गड़गड़ शब्द पेट में होहै बारबार शरीर कृशहोहै बलका नाश करैहै ८०३ समय में भोजन मिलेनहीं शरीरमें बलहोनहीं तिसकेअनेकरोगउपजैहैं अरु मृत्युभी होजावै तोआश्चर्य नहीं ८०४ समयभोजनका बितायपीछे भोजन मिले तो बायुकरि कर अग्निमन्द होहै ताके अन्नकष्टसेपकै है अरु फेर खानेकीइच्छा नहींहोहै ८०५ भोजन दिनसमयमें कर फेर सायंकाल बिना भोजन करै नहीं क्योंकि जिह्वा अन्न रस से तृप्तहुई स्वादको प्राप्तनहीं होती ८०६ कुक्षिके ४ भाग समझ २ भागतो अन्नसे पूरणकरै ३ भाग जलसे पूरणकरै ४ भागको वायु संचारवास्ते आकाशरक्खै ८०६ अतिजल पीवनेसेअन्नपकैनहीं अरु जलनहींपीवै तोभीअन्नपकैनहीं तिसकारणसे अग्निबधावनकेअर्थ बार २ जल थोड़ा २ पीवै ८०८ भोजनकी आदिमें जल पीवै तो शरीर कृशहो व मन्दाग्नि व दोषकोपहो भोजनमध्यमें जलपीवैतो अग्निदीपन हो भोजन अन्तमें जलपीवै तो मोटाशरीरहो व कफ बधै ८०९ तृषितहुआ भोजन करै नहीं अरुभूखापुरुष जलपीवै नहीं तृषित भोजनकरै तो गुल्मरोगहो व भूखाजल पीवै तोजलो- दर रोगहो ८१० भोजन कालके ३ भागकरै प्रथम काल बातका २ भाग पित्तका ३ भाग कफका है इस प्रकार पहिले मधुर रस भोजन कियाहुआ वायुशमनकरैहै मध्यमें भोजनकिये अम्ललवण

भोजन पित्ताशय में अग्नि वृद्धिकरे है अंतमें कटु तिक्त कषाय रस भोजन किये कफको शांत करै है ८१३ दूध स्वादहै सचिक्कणहै व कफपैदाकरै है शीतल व भारी है ऐसादूध कफ पैदाकरनेहारा तिसे भोजन अन्तमें कैसेपीवे ८१४ उत्तर—जो दाह करनेवाले पदार्थ भोजन कियेजावे हैं तिससे दाहशांति करनेवास्ते भोजनकेअन्तमें दूधको पीवै ८१५ लवण अम्ल कटु व गरम पदार्थकोभोजनकरै है तिन्होंका दोष हरनेवास्ते भोजनको मधुर खाके समाप्त करै ८१६ भोजन कियेहुये रस बलवानूरस के वशहोते हैं दृष्टांत जैसे सबदोष कोपितहुये बलवान्दोष के वशहोते हैं तैसे ८१७ ऐसाप्रकारभोजन करि अँगुली दांतोंपरफेर जल से आचमनकरै अरु दांत में लगे अन्न काढ़कर सलाकासे फेरै आचमनकरै अरुदांतोंकेबीचमें प्राप्त अन्न शोधन द्रव्यसे शनैः २ हरै ऐ..प्रकार नहीं करै तो मुखमेंदुर्गंध पैदाकरै है अरु दंत ऊपर लगाहुआ लेपको खुरचकर दूरकरैनहीं अरु दूरकरनेमें यत्नकरै नहीं ८१९ कुरलाकरि जलयुतहाथसे नेत्रों को स्पर्शकरै तो नेत्र शुद्धरहैं ८२० भोजन करि हाथ जलसे धोवै अरु हाथके तलभाग घसकरि नेत्रोंसे स्पर्श करै तो बहुत जल्दी नेत्रकी अँधेरीको दूरकरै है ८२१ भोजन करिकरि अगस्त्यादिक को स्मरण करै ऐसी प्रार्थना करै कि विष्णु भगवान् अजीर्ण रूप अन्नको भोजनकरो ऐसे सत्यप्रकार से भोजन किया अच्छी तरह पको ऐसी प्रार्थनाहै ८२२ अगस्त्य व अग्नि व बड़वानल भोजन किया अन्नोंको जराओ अरु परिणाम से उपजासुख प्राप्तहो ऐसी प्रार्थना मेरीदेहके रोग नाशको प्राप्तहो ८२३ मंगल व अगस्त्य व अग्नि व सूर्य्य व अश्विनीकुमार इनोंका भोजनके अन्तमेंस्मरण करै तो अजीर्ण कभी होवे नहीं ८२४ अगस्त्य मंगलादिक इनोंका उच्चारणकरि अपना हाथ उदर को मले पीछे आलस्य रहित हो अनायास देनेवाले कर्म्मकरै ८२५ जागताहुआ भोजनपीछे बैठा-रहै जो भोजनकरि सोवे उस अग्निको कफकोपको प्राप्त हो नाश करै है भोजनकर पीछे कफ बधे है जीर्ण याने पुराना भोजन होते वायु बधे हैं विदग्ध अन्नहोते पित्तबधे है ८२६ भोजन करिकफ

को ऐसे हरै है धूमासे याने हुक्कापीवै व रमणीक कषाय कटुकतिक्त रससे व सुपारी कपूर कस्तूरी लवंग जायफल इनोंसे व कटुकषाय फलसे व ताम्बूलादिकसे ऐसेजानो ८२७ मैथुन पीछे व सोके जागे तब व स्नानपीछे व भोजन पीछे व वमन पीछे व युद्धपीछे व सभा पंडितोंकी में व राजाओंकी में ताम्बूल चरवणकरै ८२८ ताम्बूलतीक्ष्णहै व गरमहै व रुचि उपजावै है व सरहै व तिक्तहै व क्षारहै व उष्ण है काम व रक्तपित्तको पैदाकरै है व हलका है ८२९ वशीकर है व कफ व मुखकीदुर्गंध व मल व वात व श्रमइनको हरै है मुखमें स्वाद व सुगन्ध व तेज इनको करै है ८३० हनु याने ठोढ़ी व दंत व मलको हरै है व जिह्वाको शुद्धकरै है मुखकापानी व कंठरोग इनको भी हरै है ८३१ नवीन ताम्बूल मीठाहै व कटुककषायहै व भारी है व कफको पैदाकरै है पत्ता व शाककेसमानगुणकरै है ८३२ पुरानाताम्बूलकडुवा नहीं है व पतलाहो है व कटुकसफेदाई लियेहो है यहबहुतगुणदे है इससे अन्यताम्बूलहीनगुणहो है ८३३ सुपारीफल भारी है व शीतल है व कषाय रसहै व कफपित्तको हरै है मोहन है व दीपनहै व रुचि करै है व मुखकीदुर्गंध को हरै है ८३४ जो सुपारी बीचमें करड़ीहो वह त्रिदोषको हरै है उसकारस भारी है व अभिष्यंदि है व अग्निको मंदकरै है ८३५ खदिर कफपित्तको हरै है चूना बात कफको हरै है औरको संयोगसे त्रिदोषको हरै है व मनको प्रसन्न करै है मुखस्वाद व सुगन्ध व कांति व अच्छा व वर्णकरै है ८३६ पानका अग्रभाग में आयुबलहै मूलमें यशहै बीचमें लक्ष्मी बसै है इसवास्ते अग्रभाग व जड़ व मध्य पानकाबर्जदेवै ८३७ पानकीजड़ खावैतो रोगहोपान का अग्रभाग खावै तो पापलगै पानका चूर्णकर खावै तो उमरघटै पानकी नाड़ी खावै तो बुद्धिका नाशकरै है ८३८ पान का पहिला पीकविषसाहो है पानका २ पीक रेचक व दुर्जरहो है पानका ३ पीक पीने योग्यहै अमृत सम रसायन हो है २ पीक त्यागै ३ पीकपीवै ८३९ जुलाबलेकरि व भूखापुरुष ज्यादापान खावैनहीं ज्यादापान खायादेह दृष्टि व केश दन्त व अग्नि व कानश्रवण व बल इनका नाशकरै है अति पान खानासे शोष व बातरक्तहो है दंत रोगवाला

वा दुर्बल वा नेत्र रोगवाला वा विष वा मूर्च्छा वा मदइनसे पीड़ित पुरुष को व क्षयरोगवाला व रक्तपित्तवाला इनकोपान खानाअच्छा नहीं ८४० भोजन करि शतपैर तक चलै शनैः २ तिसचलना से अन्न पचै कंठ वा जानु वा कटिइनोंमें सुखहो ८४१ भोजन करिबैठ जावे तो पेट ठामाहो अरु भोजनकरि सोवे तो शरीर पुष्टहो भोजन करि चहलकदमी करे तो आयुवधै भोजनकरि ज्यादा भाजै तो मृत्युहो ८४२ सोवने समय सूधा सोके ८श्वासलेवे पीछे दाहनी करवट लेकर २ श्वास लेवै पीछे बामपार्श्व कडोठ लेके ४ श्वास लेकरि शयनकरै ८४३ नाभिसे ऊपर बाम पार्श्व में अग्नि रहैहै इस वास्ते भोजनकियाका अच्छा पाक होनेके अर्थ वामी पार्श्वसे शयनकरै भोजन पीछे ८४४ खाट याने पलँग त्रिदोष को हरैहै निवारकी बुनी शय्या बात कफ को हरैहै पृथिवी में सोवे तो बल वीर्य बधै तख्तपर सोवे तो बात बधै ८४५ अन्य मत में पृथिवी का सोना वात को करैहै पित्त वा रुधिर को हरैहै ८४६ सुन्दर पलँगपर सोवै तो मन प्रसन्नहो बुद्धि व धीर्य्यता व नींद अच्छी आवे अरु परिश्रम व बात नाशहोवे अरु बीर्य्य बधै व साधारण खाटपैसोवे तो साधारण फलहै ८४७ पैरोंके दबावनेसे मांस वा रुधिर वा खालबधै निद्रा अच्छी आवे कफ बात वा परिश्रम हरै ८४८ पवन रूखापन व बिवर्ण रूपको पैदा करैहै अरु दाह वा पित्तको हरैहै पसीना वा मूर्च्छा वा प्यास इनकोहरैहै ॥ सेवनपवन॥ बीजनाकीकरनी विपरीतफलदेहै ८४९ ग्रीष्मऋतुसे शरदऋतुतक पवन सेवै बाकी ऋतुवोंमें पवन सेवन अच्छी नहीं ८५० पूर्वदि-शाकी वायु भारीहै अरु गरमहै अरु सचिक्कणहै पित्त रुधिर को कोप करैहै दाह करैहै बातदोष पैदा करैहै कफ वा शोष रोगवाला कोहितहै स्वादुहै अरु अभिष्यंदी है त्वचादोष वा बवासीर वामुख में कीड़ेवसन्निपातज्वर व श्वास व आमबात इन रोगों को कोप करवावैहै ८५२ दक्षिण दिशाकी वायुस्वादहै पित्त वा रक्तको हरै है वा हलकीहै बीर्यकरि शीतलहै वा बलदायकहै वा नेत्रोंकोहित है बातल नहींहै ८५३ पश्चिमदिशाकी वायु तीक्ष्णहै वा शोषण

है वा बलको हरैहै वा हलकीहै अरु मेद वा पित्त वा कफकोहरैहै शरीरमें पवनको बधावैहै ८५४ उत्तर दिशाकी वायु शीतल है वा स्निग्धहै दोषोंको कोपकरावैहै वा ग्लानिपैदाकरैहै व बलवधावैहै मधुरहै वा कोमलहै ८५५ अग्नि दिशाकी बायुरूखी है वा दाह को करैहै अरु नैऋत्य दिशाकी पवन दाहको करैहै ८५६ वायव्य दिशाकी पवन तिक्तहै ईशान दिशाकी पवन कड़वीहै ८५७ चारो तरफ़की पवन आयुनाशकरैहै वा अनेक रोग पैदाकरैहै इस वास्ते पुरुष सेवेनहीं सेवे तो सुख मिले नहीं ८५८ विजना की पवन दाह वा पसीना वा मूर्च्छा वा श्रम इनको हरैहै ताड़के पत्तों का बीजनाकी पवन त्रिदोषको हरैहै ८५९ बंशके बीजनाकीवायु गरम होहै अरु रक्त पित्तको कोपकरैहै चमर की पवन वा वस्त्र के बीजनाकी वा मयूर के पंखों के बीजनाकी वा वेत के बीजना की पवन सचिक्कण होहै त्रिदोषको हरैहै ८६१ दिनमें शयन करै नहीं शयनसे कफ पैदाहोहै ग्रीष्म वर्जित कालमें ८६२ जिन पुरुषोंको दिनमें शयन करनेका नित्य अभ्यास है जो वह शयन न करै तो बातादिक कोपको प्राप्तहोहै ८६३ कसरतवाला वा नशावाला वा श्रमसे आया हुआ वा बमनवाला वा दस्तका रोगवाला वा शूल रोगवाला वा श्वास रोगवाला हिचकी वा बायुका रोगवाला वा क्षयीरोगवाला वा कफवाला वा मदसे क्षीण वृद्ध वा अजीर्णवाला वा रात्रिमें जागाहुआ वा उपवासवाला इनकोदिनमें यथेच्छशयन करवावै ८६६ जिनको निद्राबशमें कररक्खीहै तिनको दिनमेंसोना वा रात्रिमें जागना बुरा नहीं ८६७ भोजन पीछे निद्रा जो है बात को हरैहै अरु पित्तको पैदा करैहै वा कफको करैहै शरीर को पुष्ट करैहै वा सुखदेहै ८६८ पित्त नाश वास्ते शयन है बात नाश के अर्थ शरीर मर्दनहै कफनाशके अर्थ बमनहै ज्वरनाशकेअर्थलंघन श्रेष्ठहै ८६९ भोजन करि बैठजाने से पुष्टिहो है भोजनकरि पठन करने से शरीर दृढ़ हो है ८७० भोजन करिके सुन्दर शब्द बोलै सुन्दर पदार्थ स्पर्श करै सुन्दर रूप वा सुन्दर रस पदार्थ को सेवै वा मनको प्रिय पदार्थ को सेवै तिसकरके अन्न अच्छी तरह पचै

है ८७१ निन्दित बचन वा स्पर्श वा रूप वा रस गन्ध भोजन पीछेसेवे तो अन्न पचे नहीं भोजनकरि ज्यादा हँसे तो छरदिआवे ८७२ अति शयन न करै वा अति भोजन न करै वा अति द्रव्य पदार्थ भोजन न करै अग्निमें तपन करे नहीं धूपमें बैठे नहीं वा जलमें तिरे नहीं पैरसे ज्यादा गमनकरै नहीं ज्यादा सवारी पै चढ़े नहीं ८७३ कसरत वा मैथुन वा धावन वा गमन वा युद्ध वा गान वा पाठ भोजन करि २ घटीतक करै नहीं ८७४ ज्यादाजलपानसे वा विषम भोजनसे वा मल मूत्रादि वेग धारणसे सोनेकेसमय जागने से समयमें भी हलकाभोजनकियाहुआ मनुष्यके अन्नको पकावेनहीं अरु ईर्षासे वा भयसे वा क्रोधसे वा लोभसे वा रोगसे वा दीनतासेवा वैरभावसे वा सेव्यमान अन्न पाककोप्राप्तनहीं होताहै ८७८ अजीर्ण में जो भोजनकियाजाय उसे तो अध्यासन कहे हैं रात्रिके भोजनका अजीर्ण होतो २ वक्त भोजनकरे नहीं दिनमें भोजनका अजीर्णहो तो रात्रि भोजन बुरा नहीं ८७९ रात्रि का भोजन विदग्ध में जो भोजनकरे तो अग्निमन्दहो अरु रात्रिका अजीर्णमें प्रातःकाल भो-जन विषसमहो है ८८० जो प्रातःकालमें अजीर्णकी शंकाहो तो ५ माशे सुंठि ५ माशे हरड़ सोंधानिमक मिलाय शीतलजलसे खावे पीछे निःशंकहोके भोजन करै ८८१ दिनमें स्त्री भोगकरने से उमर घटै है जो नहिं सरै तो बसंत व ग्रीष्मऋतुमेंदोषनहीं ८८२ बसंतादि ऋतुमें दिनमें स्त्रीभोगसे मुखवर्ण व कफ व मुटापा वा कुमारअवस्था सुख मिले है ८८३ मार्ग में गमनकरनेसे वर्ण व कफ व मुटापा वा बलनाशहोहै ८८४ जो चहलकदमी करे तो आयु व बल व बुद्धि व अग्निबधे है अरु इन्द्रियजागे है ८८५ उष्णीष याने पगड़ीबांधने से तेजप्राप्तहो है वा केशबधे है व रज बात व कफ इनको हरै है अरु पगड़ी हलकीश्रेष्ठहै भारीपगड़ी पित्तरोग व नेत्ररोग पैदाकरै है ८८६ जूती जोड़ापहरनेसे नेत्रमें सुखहो व तेजबधे व उमर बधे व पैरका रोगजावे व बल बधे व पुष्टिहो ८८७ जूती पहने बिना मार्ग में चलने से आयु वा इन्द्रियनाशहो व नेत्ररोग उपजे ८८८ छत्रीका धारण वर्षा व पवन व धूप व रज इनको हरै है शीतलता को दूर

करै हैं नेत्रों को गुणदेहै अरुमंगल रूप है ८८९ लाठी का धारण करने से सतोगुण व आनन्दबल स्थिरता व धीर्य्यता वीर्य इनको वृद्धिहो हैअरु आश्रमरूप है अरु भयकोहरै है ८९० ऊपरआच्छादन युत पालकी में सवारहोने से त्रिदोष नाशको प्राप्तहो है ८९१ नौका व जहाज की सवारी बात कफरोगवाले को अच्छीनहीं व भ्रम करै है ८९२ हस्ती पै सवार होने से बात पित्त पैदाहो है अरु धनवा आयु बधती है ८९३ अश्व पै सवारहोनेसे बात व पित्त व अग्नि वा परिश्रम पैदा हो है अरु मेदरोग वा कफ इनका नाशहो है यह बलवानोंको सवारी श्रेष्ठ है ८९४ धूप सेवन से पसीना व मूर्च्छा वा रक्त पित्त तृषा व छर्दि व परिश्रम व दाह व बिवर्णताहोहैअरु छाया इन्होंको दूरकरै है ८९५ मेघबर्षणासे वीर्य वा शीतलता वा नींद वा आलकस बधै है दृष्टिभयदेहै वा मोहको करैहै व कफवात रोगकरै है ८९६ अग्नि बात कफ स्तंभ शीतलताकम्पन इनकोहरैहै अरु अभिष्यंद नेत्ररोगको हरैहै अरु रक्त पित्तकरैहै ८९७ धूमा जल्दी कफकरै है नेत्र नाशकर है शिरको भारीकर है बात व पित्त को कोपकरावै है ८९८ सबसे मैत्री सम्पूर्ण नरोंसे करै सज्जनों से तो अवश्यहीकरै सत्पुरुषों से सत्संग करै दुष्टसंगको त्यागै अरु देव व ब्राह्मण वा बृद्ध पुरुष व वैद्य व राजा इनको सेवै ८९९ याचनवाले पुरुषों को विमुख न करै अरु गुरु की समीपमें बास नम्रतापूर्वक करै ९०० गुरुके स्थानपर व समीप में पैरहाथ पसारै नहीं अनुचित कामकरै नहीं ९०१ जोआपनीगैल बुराईकरिचुका हो तिसे भी उपकार करै अपनी समान सम्पूर्ण मनुष्यों को देखै बैरीसे दूरदेश में बसै ९०२ न किसीको अपना बैरी प्रकाशकरै न अपनेको किसीका बैरी प्रकाश करै अरु अपना अपमान को प्रकट करैनहीं अरु न किसीको दुःख देवै ९०३ जलमें अपने शरीर को देखैनहीं अरु नंगाहोके जलमें प्रवेश करै नहीं जिस जलकी थाह जाने नहीं वहां प्रवेश करै नहीं अरु भयानक जीवको पालनाकरै नहीं ९०४ समयमें उन्मत्तका व हित व सत्य व प्रियबचनकहै बहुत करि मधुररस भोजनकरै व सचिक्कण अन्नखावै ९०५ रात्री में दही

भोजन करैनहीं अरु दिनमें दही लवणविना खावै नहीं व बहुतमूंग की दाल खावैनहीं व शहत अकेला खावै नहीं व खांड़ घृत बिना खावैनहीं ६०६ दूसरा पुरुषका आशयको देखै जैसे वह प्रसन्नहो वैसे विसकोबरतै तिसे पण्डितकहतेहैं ६०७ अकेलासुखमानैनहीं अरुसबका विश्वास करैनहीं अरु शंकायमान होवैनहींअरुउद्यम रहित होवैनहीं कारणमें ईर्षाकरै फलमेंनहीं ६०८ मूत्रादि वेगों को धारणकरै नहीं अरु मनके वेगको धारणकरै अरु इन्द्रियोंकोपीड़ा देवैनहीं अरु इन्द्रियोंको अतिलड़ावैनहीं ६०९ वर्षा व धूपादिकमें छत्री धारणकरै रात्रि व वनादिकमें लाठी हाथमें राखै जूती जोड़ा पहनेहुये आवै व पृष्ठपीछे देखताहुआविचरै ६१० नदीकोहाथोंसे तिरैनहीं अग्नि बनमें व ग्राम में लगीहुई के मध्यमें जावैनहींटूटी नाव पै बैठ जल में पारहोनहीं सन्देहवाला वृक्ष पै चढ़ै नहीं दुष्ट अश्वादिक पै सवार होवै नहीं ६११ सभा में जाय मुखफाड़ हँसै नहीं व कास व डकार व जँभाई व छींक सभा में लेवैनहीं ६१२ नाक अंगुलीदेकरि फ़ेरैनहीं भयंकर आसन बैठेनहीं उर्ध्वजानु याने उकड़होके देरतक बैठेनहीं अरु नखसेधरतीसें लेखनकरैनहीं६१३ बुहारीकी धूल शरीर पै धारै नहीं नखसे तृणको काटैनहीं उच्छिष्ट हुआ ब्राह्मणको स्पर्श करै नहीं ६१४ सूर्य उदय से पहले लाल जो आकाश होयहै तिसे देखै नहीं व सूर्य उदयहोता व अस्तहोता को देखै नहीं व सूर्यका प्रतिबिम्ब जलमें देखै नहीं ६१५ सूक्ष्म पदार्थको नित्यदेखैनहीं दीप्त व अशुद्ध व अप्रिय पदार्थको देखैनहीं अरु आकाशमें इन्द्रधनुष किसीको दिखावै व देखैनहीं६१६ बल-वानके संग युद्ध करै नहीं ज्यादहभार शिरपै उठावै नहीं व शरीरको ताड़नादे नहीं व केशोंको हाथसे कँपावै नहीं ६१७ पूजनकरतेहुये के बीचमें जावैनहीं स्त्री पुरुषके बीचमेंगमनकरै नहीं व बैरीकाअन्न भोजन करै नहीं व वेश्या का अन्न भोजन करै नहीं और किसी का प्रतिभू याने जामिन न होवै और वृथासाक्षी न होवै ६१८मिथ्या याने झूँठ बोलै नहीं द्यूतयाने जुवाखेलेनहीं अरुस्त्रियोंकाविश्वास करैनहीं अरुस्त्रीजन स्वतंत्रबिचरैनहीं ६१९ स्त्रीजनोंकीरक्षाकरनी

चाहिये अरु यौवनमें विशेषकरि रक्षाकरने योग्यहै अरु टूटीखाट पै सोवै नहीं व अनेक छिद्रवाली खाटपै भी सोवैनहीं ९२० अरु अकेलापुरुष देवतामन्दिरमें शयनकरैनहीं अरु रात्रिमेंअकेला शयनकरैनहीं अरुवृक्षतले अकेला सोवैनहीं ९२१ ऐसेप्रकार दिन को व्यतीतकरै अरु सदातनकर्म करतारहै तिसपीछे रात्रि विषय कर्मकरै ९२२ यहआचारविस्तारसे कहाहुआको जोअच्छेप्रकारसे करै तिसकी उमरबढ़े आरोग्यमिलै व धनपरधनबढ़ै ९२३ संध्याकाल में पांचकर्म वर्जनेचाहिये आहार १ मैथुन २ निद्रा ३ उच्च प्रकारसे पाठ ४ मारगमें गमन ऐसोजानो ९२४ संध्यामें भोजनसे व्याधि होयहै संध्यामें मैथुनसे गर्भव्यंगहोयहै सायंकालमें निद्रासे दरिद्री होयहै अरुपाठ करनेसे आयुघटैहै गमनसे भयहोयहै ९२५॥ अथ रात्रिचर्या॥ चांदनीचांदकी ठंढी है कामदेवको आनन्ददेहैअरु तृषा व पित्तको व दाहको हरैहै ९२६ दिनमेंज्यादहजाड़ा बात व कफको करै है अंधेराभय व मोह व दिशाभ्रमको करै है पित्तको हरै है व कफको करैहै व कामको बधावै है व ग्लानि पैदाकरै है ९२७ रात्रि भोजन रात्रिका पहिला पहरमें करै कछुक अल्प भोजन करै अरु दुर्जर भोजनको बर्जदेवै ९२८ नित्य मनुष्योंको शरीरमेंकामदेवकी इच्छारहै है मैथुनका रोकनासे मेह व मेदकी वृद्धिहोयहै व शरीर शिथिलहोयहै ९२९ स्त्री १६ बर्षकीहो तबतक बालानामहैअरु ३२ बर्षतक स्त्रीकीतरुणीसंज्ञाहै ९३० अरु ५० बर्षतककी अधिरूढ़ा संज्ञाहै ५० बर्षसे उपरान्त वृद्धासंज्ञाहै वृद्धाको कामदेव सुखनहीं होता ९३१ ग्रीष्म व शरदऋतुमें बालास्त्री अच्छी है विषयीपुरुष को शीतसमयमें तरुणी श्रेष्ठहै वर्षा व बसंतमें प्रौढ़ाश्रेष्ठ है ९३२ नित्य बालास्त्रीकोभोगै तो बलबधैनित्यतरुणीस्त्रीकोभोगै तो शक्ति को कमकरै है अरुप्रौढ़ा भोगै तो नित्य जराको प्राप्तकरै है ९३३ अतिनवीन मांस १ व नवीन अन्न २ बालास्त्री ३ दूध भोजन ४ घृत ५ गरमजलसेस्नान ६ ये छहपदार्थ प्राणोंके हितकारी हैं ९३४ बासीमांस १ वृद्धास्त्री २ प्रातःकालका सूर्य ३ ताजादही ४ प्रभात में मैथुन ५ व प्रभातमें निद्रा ये छः पदार्थजल्दी प्राणोंको हरते हैं

है ६३५ वृद्धपुरुष भी तरुणीस्त्रीको नित्यभोगकरनेसे तरुणहो और वृद्धास्त्रीके भोगसे तरुणपुरुष भी वृद्धहोयहै ६३६ अच्छीउमरवाले व मंदजरावाले व शरीरवर्ण अच्छे वाले व स्थिर चित्तवाले मांस वृद्धवाले ऐसेपुरुष स्त्रीभोगकेयोग्यहैं ६३७ हेमंतऋतुमें वाजीकरण औषधिखाके स्त्री भोगकरै कामदेवजागे तबअरु शिशिर ऋतुमें मैथुन नित्यकरे इच्छाहो तबवसन्त व शरदऋतुओं में दिनमें मैथुन करे अरु ग्रीष्म व वर्षाऋतुमें मैथुन १५ दिनमें करै ६३८ सुश्रुत ग्रंथकासार प्रमाणकहते हैं संपूर्ण ऋतुओंमें ३ दिनमें मैथुनकरै अरु ग्रीष्मऋतु में १५ दिनमें मैथुनकरै ६३६ शीतल समयमें रात्रि में मैथुन करै ग्रीष्मऋतुमें दिनमेंकरै मैथुन वसंतऋतुमें दिनमें वरात्रि में मैथुनकरै वर्षाऋतुमें मेघगर्जन समयमें मैथुनकरै शरदऋतु में जल व बगीचाके समीपमें मैथुनकरै कामदेवक्रमसे ऋतुओंमें ऐसे स्थानों पे बसे है ६४० मैथुन सन्ध्या प्रात सर्वसमयमें व सर्व कालमें अमावास्या पूर्णिमामें न करै गौके समीपमें मैथुन नकरै व आधी रात्रि व दुपहर दिनमें मैथुन याने स्त्री भोग न करै ६४१ स्त्रीभोग एकान्त स्थानमें करै जहां स्त्रियोंका गानसुनै ऐसेस्थान में मैथुन वासा अतिश्रेष्ठहै ६४२ जिसजगह गुरुवसै वहां मैथुन करै नहीं जिस स्थानमें कपाट न हों वहां मैथुनकरै नहीं जहां लज्जाआवे वहां न करै जहां मैथुन विषय वचनादि औरोंके सुनै वहां मैथुन न करै ६४३ जिसे पुत्रकी इच्छाहो वहऐसेप्रकार होके मैथुन करै स्नानकिया व चन्दन शरीर में लगायकै सुगन्ध शरीरमें लगायके पुष्पमाला धारण करिकै पुष्टपदार्थखाके नवीन वस्त्र पहनके भूषण धारण करके ताम्बूल खाताहुआ ऐसाहो स्त्री भोगकरै तौ कामदेव बढ़ताहैसुन्दरपलँगपैकरै ६४४।६४६ क्षुधावाला वअजीर्ण वाला व धीर्य्यतारहित व शरीर पीड़ा वाला व तृषावाला व बालक व वृद्ध व रोगी मैथुनको त्यागदेवे ६४७ भूखा व प्यासा व चित्तमें अधीर्यवाला जो मैथुनकरै तौ बलनाशहो क्षयीवाला भोगकरै तो वीर्यनाशहो अरु वायु कोपहो रोगी मैथुनकरै तौ प्लीहायाने तापतिल्ली हो व मूर्च्छा मृत्युभी होजावै ६४८ अच्छा रूप व गुणवाली व शील स्वभाव

वाली व अच्छे कुलकी जन्मी हुई व कामदेव प्रकट वाली व प्रसन्न चित्तवाली व नवीन वस्त्र व भूषण धारणवाली ऐसी स्त्रीको कामदेव प्रकट वाला व प्रसन्न चित्तवाला व बाजीकरण औषध खानेवाला पुरुषसेवै ९४९।९५१ रजस्वला व कामदेव रहित जो व मलिन स्त्री व अप्रियबचन बोलती व आपसे ऊंचेवरण वाली व वृद्धा व रोग वाली व अंगहीन व गर्भवाली व बैरवाली व योनि रोगवाली व अपने गोत्र की व गुरुकी स्त्री व संन्यास धारण करनेवाली ऐसी स्त्रीसे गुणवान् पुरुष भोगकरै नहीं ९५२।९५४ गर्भवाली स्त्रीको ७ सात महीना उपरांत भोगै नहीं अरु ८ महीनासे तो बिलकुलभोगै नहीं ९५५ रजस्वला स्त्री से भोगकरै तो नेत्र व आयु व कांति वधर्म इनका नाशहोयहै ९५६ बिरक्तस्त्री व गुरुकी स्त्री व अपने गोत्र की व वृद्धा इन्होंसे व पूर्वकाल व संध्या समय में भोगकरै तौ मृत्युहो जल्दी ९५७ गर्भवालीसे भोग करै तौ गर्भको पीड़ाहो रोग वाली से भोगकरै तो बलनाश हो हीन अंगवाली व मलीन व बैरवाली व कृश व बंध्या इनसे भोगकरै व प्रकट स्थानमें तौ वीर्यक्षीण हो व मनमें ग्लानि उपजै ९५८।९५९ नदी के तीरपै जाना व गंगायमु- नादिनदी जल व मैथुन व मृतवत्सा स्त्री से सम्भाषण व भोजन दे- व यात्रा व बाग व नदीदेखना व पुरुषों में बैठना इतनेकर्म गर्भवाली स्त्री पुंसवन कर्मपीछेत्यागै ९६०।९६१ प्रभात व आधीरात्रिके काल में बातपित्त कोपको प्राप्तहोय है तिरछी योनिवालीके उपदंश रोग पैदाहोयहै अशुद्ध योनिवालीके बायुकोप व दुष्टयोनि वीर्य व सुख नाशहोय है ९६२ मल व मूत्र व नीरज इनके वेगको धारण करै नहीं अरु वेग धारण करै तो पथरीरोग व धातुका क्षयहोयहै ९६३ वीर्यको कभी भी धारण करै नहीं ऐसेजानो ९६४ मैथुन के अंतमें स्नान व मिश्री सहित दुग्धपान व ईष रससिद्ध पदार्थ व शीतल पवन व मांसरस व शयन ये हितहैं ९६५ ज्यादह मैथुन से कास व श्वास व ज्वर व कृशपना व पांडुरोग व क्षयी व आक्षेपकरोग पैदा होयहैं ९६६।९६७ रात्रिमें जागना शरीरको रूखाकरै है कफ व विषके रोगको हरै है ९६८ कालमें नींदसे धातुसम रहै है व तन्द्रा नाश

व पुष्टि व वर्ण व बलकी वृद्धि व अग्नितेज होयहै ९६९ जो शयनसमयमें शहतमें विजौरादलचूरण मिलायपानकरै तौ पीड़ाकरने वाला वातका निरोधकर सुख पूर्वक सोवेहै ९७० सूर्य उदयसे पहिले जलकी ८ चुल्लूपीवै तौ रोग व जराको जीतके बर्ष १०० व १२० तक जीवै ९७१ ववासीर व सूजन व संग्रहणी व ज्वर उदररोग, जराकोष्ठरोग, मन्दरोग, मूत्राघात, रुधिररोग, पित्तरोग कानरोग, कंठरोग, शिररोग, कटिरोग, नेत्ररोग, वातरोग, रक्तपित्त क्षयीरोग, कफरोग इतने रोगों को प्रभात समय जलका पीवना हरैहै ९७३ प्रभातमें जो नित्यनासिकासे जलपीवे तो बुद्धिमान्हो नेत्र गरुड़ पक्षीके नेत्र समहों सपेदबालहों नहीं शरीरमेंबली पड़े नहीं व सम्पूर्ण रोगनाशहोवै ९७४ तीन प्रसृति जलपीवे तो व्यंग व बलीपलित रोग व कास स्वरभेद सोजा इन सबको हरैहै प्रभात समयमें जलनस्यसे दृष्टि बधैहै ९७५ स्नेहके पीने में व क्षत रोगमें व फ़स्तलिये के वक्त उचकी रोग में आध्मान रोगमें अग्नि मन्दमें व कफ़वात रोग में प्रभात नासिकासे जलपीवे नहीं ९७६ ऋतुचर्यादोषोंका संचय व कोपजिसमेंलसे होयहै सो ऋतु६होयहैं सूर्यकी राशिका क्रमसे जानो ९७७ मेषसे वृष संक्रान्तितक ग्रीष्म होयहै मिथुनसे कर्कसंक्रांतितक प्रावृट्होयहै सिंहसे कन्यासंक्रांति तकबर्षाहोयहै तुलासे वृश्चिक संक्रांतितक शरद्होयहैधनसेमकर संक्रांतितक हेमंतहोयहै कुम्भसे मीनसंक्रांतितक बसंतहोयहै ९७९ आदिकी तीनऋतुओंको उत्तरायण कहेहैं अंतकीतीनऋतुओंको दक्षिणायन कहते हैं ९८० हेमंतऋतु शीतलहै सचिक्कणहै स्वादुहै उदरकी अग्निको बधावैहै शिशिरऋतु अत्यन्तशीतलहै व रुक्षहै वात व अग्निको वधावैहै ९८१ बसन्त ऋतु मधुर है सचिक्कणहै कफवृद्धि करैहै ग्रीष्म ऋतु अतिकडुआहै पित्तपैदाकरैहै व कफको हरैहै ९८२ बर्षाऋतुशीतलहै व दाहपैदाकरैहै अग्निमंदकरैहै वायु को पैदाकरैहै शरद्ऋतु गरमहै पित्तपैदाकरैहै मध्यमबलदेहै ९८३ वायुका संचय व कोप ग्रीष्मादिक तीन ऋतुओंमेंहोयहै अरु बर्षादिकमें पित्तकासंचय कोपहोयहै शिशिरादिक ऋतुओंमेंकफकासंच-

य व कोपहोयहै ९८४ हलके व रूखे ओषधिसे वातका संचयहोय है हलका व रुक्षशरीरमें गरमकाल होनेसे कोपको प्राप्तनहींहोता ९८५ अम्लपाकवाले ओषध निर्म्वजलसे बर्षादिऋतुओं में पित्तसंचय होय है शीतलकाल होनेसे कोप को प्राप्त नहीं होती ९८६ सचिक्कण व शीतल ओषध व जलसेंक शिशिरादिऋतुमें कफकासंचय होयहै तुल्य काल होनेसे व स्कन्दनपनासे कफ कोपको प्राप्त नहीं होयहै ९८७ हेमन्तऋतुमें पित्तनाशहोयहै वातकफकासंचयहोयहै वायु शिशिरऋतुमें कोपहो व कफनाश होयहै ९८८ हेमन्तमें संचय कफ शिशिरमें अतिसंचितहोयहै शीतसचिक्कण भारीओषध द्रव्य से स्कन्दहुआ कोपको प्राप्त हो नहीं ९८९ भोजनादि के वश से यह कालस्वभाव होयहै भोजनसे जल्दीभी संचयहोयहै कोपकाल में विशेषकरि होयहै ९९० चयकोप व दोष अच्छे बिहार आहार सेवनसे शान्तहोय है समान बिहारादिका सेवनकाल में सम कोप करै है बिपरीत हो तो बिपरीत जानो ९९१ अपने स्थानमें दोष बढ़नेसे कोठाकड़ा रहै पीला वर्णहो अग्निमन्दहो अंगभारीरहै व आलस्यहो अन्न द्वेषहो ९९२ संचयमें दोषों का उपाय नहीं तो अत्यन्त बधकरि अनेक रोगोको पैदाकरै है ९९३ बर्षाऋतुमेंवायु बलवान् होय है इस वास्ते मधुरादि तीनरस सेवन करै वायु की शान्तिवास्ते ९९४ अरु बर्षाऋतु में शरीर गीला समहोयहै तिसे क्लेशदूर करनेवास्ते तीन कटुआदि रसभी सेवन करै ९९५ पसीना व मर्दन करावै गरम दही व जांगलदेश का मांस व गोहूँ व चावल साठी व उड़द व जल कूपका ये सब बर्षाऋतु में हित हैं ९९६ बर्षाहुआ जल व पूर्व्वपवन व वृष्टि व धूप व ठण्ढ व परिश्रम व नदी नीर व दिनमें शयन व रूखापदार्थ व नित्यस्त्री भोग येबर्षाऋतुमें त्यागदेवे ९९७ घृतस्वादु कषाय तिक्त रस व शीतल द्रव्य व हलका भोजन व दुग्ध स्वच्छ रस व मिश्री व ईषरस श्रेष्ठ रस स्वल्प भोजन जांगलदेश मांस गेहूँ यव मूँग चावल नदीजल अंशूदकजल चन्दन चन्दनकपूर माला पुष्पकी निर्मल बस्त्र ये पदार्थ शरद्ऋतुमें हितहैं ९९९ मित्रके स्थान में बसन

मीठीबाणी जलमें क्रीड़ाकरना पित्तका बिरेचन जुल्लाब बलवान्‌को फस्त येशरद् ऋतुमें अच्छेहैं १०००दही भोजन अतिब्यायाम याने दण्डकुस्तीकरना अम्ल व कटुव गरम तीक्ष्ण रस दिन में शयन शीतलता धूप ये शरद् ऋतुमें अपथ्यहैं १ दिनमें सूर्य्यकी किरणों से गरमहो रात्रि में चन्द्रमाकी किरणों से शीतलहो उसे अंशूदक कहै हैं यह सचिक्कण है त्रिदोषको हरै है २ ईषका रस, चावल मूँग, तालाबकाजल और दूधप्रदोषमें चन्द्रमाकीकिरण शरद् ऋतु में येभी पथ्यहैं ३ प्रभात भोजन व खट्टा व पिष्ट व लवण भोजन व तैलमर्द्दन, धूप, परिश्रम, गेहूँ, ईषरस, चावल, उरद, पिसाहुआअन्न व नवाअन्न, तैल, कस्तूरी, अच्छीकेसर, अगर, गरमजल, धूमरहितअ-ग्नि, चिकना पदार्थ, स्त्रीभोग, भारी व गरमवस्त्र इनको हेमन्त ऋतु में सेवै शिशिरऋतु ठण्ढाहोयहै अरु रुक्षहोयहै इसवास्ते हेमन्तमें कहे सबपदार्थ सेवै ६ छर्दि, नस्य, शहदयुत हड़ व ब्यायाम व उ-बटना ये पदार्थ कफनाशक पदार्थ, स्वच्छ पदार्थ व जांगलदेशका मांस, गेहूँ, अनेकप्रकारकेचावल, मूँग, यव, चन्दन, अगर, केसर कालेपन व कटु व गरम व हलका येपदार्थ बसन्तऋतुमें सेवनेयोग्यहैं॥ वर्ज्यपदार्थ॥ मीठारस, खट्टारस, दही, चिकनारस, दिनमेंशयन, दुर्जर पदार्थ, शीतलता ये सब बसन्तमें सेवैनहीं। ग्रीष्मऋतुमें मधुर चि-कना, हलका, द्रवरूप, कांजी, मिश्री, सत्तू, दूध, शालिचावल रस मांसरस, चन्द्रमाकिरण, दिनकाशयन, मलयागिरिचन्दन, शीतल जल ये सब ग्रीष्ममें सेवै। अरु कटु, क्षार, अम्ल, धूप, श्रम ये सब ग्रीष्ममें बर्ज्य देवै। इनऋतुओंमें इन बिधियोंसे जो सेवनकरै वह ऋतुजनित दोषोंकोप्राप्तहोवैनहीं १२॥इतिदिनरात्रिऋतुचर्यासमाप्ता॥

प्रथम स्नेहपानक्रिया॥ स्नेह चारिभांति कहिये घृत १ तेल २ बसा कहेमांस में मिलीचरबी ३ हाड़के भीतरकीमज्जा ४ ये चारोंस्नेह वैद्य सूर्य्योदयहोते मनुष्यको पिलावै। ते स्नेह दोप्रकारके हैं स्थावर और जङ्गम स्थावर कहिये अचर जहां उपजे वहीं स्थिररहै ऐसे स्नेह अनेकप्रकारके हैं तिनमें तिलकातेल श्रेष्ठहै जंगमकहे चर जो श्वाससहित तिनसेउत्पत्ति घृतादि अनेकनमें घृतश्रेष्ठहै॥ अथस्नेह

भेद ॥ घी तेल मिलावै तिसे यमककहेहैं घी तेल वसामिलावै तो त्रि-
वृतकहोयहै। घी तेल बसा मज्जासहितहो तो महान्कहैं ॥ अथस्नेह
पानक्रम ॥ घृत रोगीको तीनिदिन पिलावै तेल चारिदिन वसापांच
दिन मज्जा छःदिन घृतादिस्नेह सातदिनसे अधिकसे अधिक पान
करनेसे आहार होजाताहै ओषधि सदृश गुणनहीं करताहै ॥ अथ
स्नेह मात्राप्रकार ॥ वातादि दोष ऋतुकाल जठराग्नि अवस्था और
निर्बल सबल समबलविचारि अल्पमध्य ज्येष्ठमात्रा यथोचितरोगी
के घृतस्नेहकी मात्रादेना और मात्राप्रमाण और बिना दोषसमझे
बिना बलाबल जाने न्यूनाधिक मात्रा अकाल व बिपरीत भोजन
और बिहारकरनेसे सूजन व बवासीर घनीनिद्रा असावधानता ये
रोगहोते हैं बिना समय घटबढ़ बिना उचितदेशकाल विरुद्ध पदार्थ
खाना यह मिथ्याहार है असमर्थ कर्म्म करना आकाल परिश्रम
करना ऋतुसेबिपरीतयथा गरमीमें धूपखाना शरदीमें बहुत जला-
भ्यास बिना वस्त्र इत्यादि विहार मिथ्याहै ॥ अथ मात्राप्रमाण ॥ दी-
प्ताग्निवाले को मात्रा घृतादि स्नेह पलभरदेना मध्यमाग्निमनुष्य
को तीनकर्ष प्रमाण देना मन्दाग्नि मनुष्यको दो कर्ष प्रमाण देना
और इसी घृतादिपान की सामान्य मात्रा कहते हैं तेभीतीनहैं जो
मात्रा आठपहर में पचै सो महतीहै दिनभरमें पचै वह मध्यमा है
दोपहर में पचै वह अल्पाहै इनतीनों मात्रामें तोलकाप्रमाण नहीं
जैसापचै और महती मध्यमा से अल्पा सुखदायी है अल्पमात्रादो
कर्षकी अग्नि दीप्तकरै स्त्री प्रसंग की इच्छाकरै जो थोरे बातादिक
कुपितहों तिन्हें शान्तकरै मध्यममात्रा कर्ष तीन की शरीरपुष्टधातु
पुष्ट श्रमशान्तिकरै ज्येष्ठ मात्रा पलभरकी कुष्ठरोग, विषबिकार, उ-
न्माद, भूत, प्रेतबाधा, मिरगी ये रोगदूरकरती है॥दोषोचितस्नेहापान॥
पित्तकोपमें केवल घृत वायुकोप में सैंधव संयुक्त घृत कफकोपमें
सोंठि, मिर्च, पिपरी, यवाखार पीस घृतमें युक्तकरि प्यावै ॥ अपर
रोगोंपर घृत ॥ रुखाई अरुक्षत, बिषार्त्ति, बात पित्तदोष, हीनबुद्धि
सुधिभूलना इनमेंअवश्य घृतपिलावै ॥ तेलयोग्यरोगी ॥ कृमिबिकार
वायु बद्धशरीर, कफ और मेदबद्ध शरीर इनमें तेल पिलावे जो तेल

उसे स्वाभाविक अहितहो नहीं तो अग्निदीप्त करेगा जो मनुष्य परिश्रमकरि दुर्बल और पीड़ितहो धातुक्षीण, शुष्करक्त, शरीरपीड़ा भस्मक, आक्षेपकादि वायु, बलिष्ठवायु इनमें बसापिलाना योग्य है दुष्टकोष्ठको, क्लिशितको, वायुपीड़ितको, प्रबलाग्निकोमज्जापिलाना योग्यहै और घृत सर्वशरीरको हितहै। शीतकालमें दिनकोपिलावै गरमकालमें रात्रिको पिलावै वात पित्त अधिकवालेको रात्रिको। वात कफ अधिकवालेको दिनमें पिलावै। नसाके कारण, मर्दनको कुरलेको, मस्तकमें दाबनेको, कान आंखमें डालनेको, घृत व तैल वातादिदोष सबल निर्बल विचारयुक्तकरै घृत गरमजल संग पीवै तेल यूषसंयुक्तपीवै चरबी हाड़ मज्जा मांडयुक्तपीवै तो सुखदायी है यूषमांडविधि आगे कहैंगे। स्नेहद्वेषी कहे जिसे स्नेह भावेनहीं तिसे अन्नकेसंगदेना और बालक, वृद्ध, सुकुमार, दुर्बल, तृषायुक्त ऐसे मनुष्यनको भातके साथ गरमीमेंदेना। तिलभलेप्रकार कूटि थोरासा उनका चूरणडारिथोराघृत और जलदेकर पतलापकाइले तब गुनगुना गुनगुनाखाइ तो तुरत धातु उत्पन्नकरै शरीरचिकना करै। दोहनीकेभीतर मिश्रीपीसि घृतमिलाइ लिप्तकरै तिसमें दूध गौका दुहाइ तुरन्त गरम गरमपिये तो तुरन्त धातु उत्पन्नहोइ। स्नेहपिये पर परिश्रमकरने व कफकृत पदार्थखानेसे स्नेह न पचा हो व मलरोध किया हो तो गरमजल से वमन करावै तो अजीर्ण मिटै। जो स्नेह अजीर्ण शंकाहो तो गरमजल प्यावै जब शुद्ध डकारआवै अन्नपर इच्छाउपजै तबजानै अजीर्ण शांतिभया पित्तप्रकृतिको स्नेहपानसे गरमीहोती है प्यास बिशेषलगती है उसे शीतल जलपिला वमनकरावै तो प्यासकी गरमी शान्ति होवै अजीर्ण में उदररोगमें तरुणज्वरमें दुर्बलको अरुचिको अतिस्थूलकोमूर्च्छामें मदार्तिको वस्तिकर्म भयेको विरेचन भयेको वमनीको परिश्रमीको गर्भगिरी स्त्रीको इनसबको स्नेह न प्यावै औषध दे जिसे स्वेदनिकसाहो रेचन करायाहो मद्य पीनेवालेको मैथुन श्रमीको बालवृद्धको रुक्षशरीरीको रक्त धातु क्षीणको बातरोगीको घृतादि स्नेहपिलाना योग्य है जो स्नेह पानसे गुणभयाहो तो आरोग्य शरीर में

वायु शुद्धवर्तीहो अग्निदीप्त मल चिकना दस्तसफा शरीर कोमल तेजयुक्त चिकना ग्लानि रहित स्नेहसेवी मनुष्य ऐसा होजाताहै उपद्रव बिना शरीर हलका इन्द्री निर्मल ये लक्षण अच्छे स्नेहभये केहैं और रूखेके लक्षणहोंतो स्नेहपान बिपरीतभया समझनाअन्न न भावे मुखमें पानीछूटै मलमार्ग में जलनरहै अरुमलबहै तन्द्रा अतीसार शरीरपाण्डु ये लक्षण अतिस्नेहपीनेके हैं रुक्षमनुष्यको बिना मलनिकरा मट्ठा तिलका कल्क यवकेसत्तू खिलाइ स्निग्ध करै स्निग्धको सामाकेचावल चनादिखिलाइ रूखाकरै अग्निदीप्त शुद्धकोठा धातुपुष्ट इन्द्रिय दृढ़ जरारहित वलकान्ति युक्त लक्षण स्नेह सेवनवालेके होते हैं ॥ स्नेह सेवीको वर्जित पदार्थ ॥ श्रमन करै ठंढे पदार्थतजे बहुत न जागे न दिनमें सोवै कफकृत पदार्थ रुक्षान्न न खाय ३३ ॥ अथस्वेदनाविधिः ॥ स्वेदन चारिभांतिकेहैं तिनकेनाम तापकहैहैं सेकना १ ऊष्मकहैं बफारा २ उपनाहकहैं पोटरीसे सेकना ३ द्रवकहैं काढ़ादिकमें बैठना ये चारों वायु पीड़ाको हरते हैं ॥ स्वेद विशेषकर्तव्य ॥ तापस्वेद और उष्ण स्वेदबिधि सो कफनाशक है उपनाह स्वेदबिधि बायु नाशक है द्रवस्वेदबिधि पित्तबात नाशक है। बलवान् शरीरीको वायुका बड़ा बेग हो तो स्वेद अधिक करना उचितहै हलके शरीरमें हलका स्वेद उचित है मध्यम रोग वालेको मध्यमतर स्वेद उचितहै। कफदोषमें रुक्षपदार्थ रेणुकादि से स्वेदकरै कफबात रोगमें रुक्ष स्निग्ध पदार्थ से सेंककरै कफमें बायुयुक्त रोगमें गरम स्थानमें बैठाय स्वेद करै व धूपमें बैठाइकैकरै हलकासा व मल्लयुद्ध व मार्ग चलावै व भारी बस्त्र उढ़ावै व चिन्ता उपजाइके व परिश्रम कराय बोझ उठवाइ ऐसीयुक्तिसे कफमेदयुक्त वायुरोग दूरहोताहै।और नाशयोग्य वस्तियोग्य रेचनयोग्य प्रथम स्वेद निकराय उपाय करै जिसस्त्री के पेटके भीतर गर्भ का जालहो वामूढ़ गर्भहोइ इनदोका गर्भ जबबाहिर होजाय तबस्वेदकरै जिस मनुष्यको प्लीहा भगन्दर अर्श अश्मरी इन रोगवालेनको प्रथम स्वेदनकरि शस्त्र उपाय करना उचित है। स्वेदकर्म करनेका समय स्थान आहार पचनेके अनंतर जिसस्थानमें पवनका प्रवेशनहोसके

तहां बैठके स्वेद कर्म करै स्वेद किये पुरुषको बड़े पात्रमें तेलभरि बैठावे तो बातादिक दोष और रसादि सप्त धातु के बिकार मलको पतलाकरि उसके साथ निकल जातेहैं। स्वेदीके चित्तस्वास्थ्य करने का यत्न जिसका स्वेदकरि पसीना निकालनेसे मल पतलाहो चित्त सावधान नहो तो छातीपर चंदन लगानेसे सावधानहोगा जिसका शरीर तेल में भिजोय गया है और मल पतला गिरता है उसकी आंखोंपर कदली व केवड़ाके जल में बस्त्र भिजोय के धरने से चित्त स्वस्थहोगा॥ स्वेद अयोग्य॥ अजीर्णी दुर्बल प्रमेही उरुक्षत पीड़ित प्यासातुर अतीसारयुक्त रक्तपित्तरोगी पाण्डुशरीरी उदररोगी ऐसेजानो। मदाती गर्भवाली स्त्री ऐसेको स्वेदन न करै जो अवश्य करनाहो तो सूक्ष्म स्वेदले॥ अल्पस्वेदन विधिः॥ हृदय अण्डवृद्धि नेत्ररोग इन रोगन में थोरा स्वेदले। अति स्वेदोपद्रवसंधि पीड़ा दाह तृषा ग्लानि भ्रम रक्त पित्तसे फुनसी इनके शमनार्थ शीतोपचारकरै शांतिहोइ॥ तापस्वेद॥ बाल कपड़ा हाथ कपड़ा कपड़े का गेंदबनाके और अग्नि ये छःभांतिके तापस्वेदहैं जैसा जहां योग्य तैसाकरै॥ अथऊष्माविधिः॥ पत्थरादि तप्तकरि सेकनेको उष्मक हैं लोहेको गोला व ईंट व पत्थर तपाइ उसपर खट्टा पदार्थ थोड़ा छिड़क सुखोष्णभरा लेके कंबल उढ़ाइ स्वेदन करै दूसरा बातहारी कहे दशमूलादि क्वाथ व रस गरम करि घड़े में भरि मुख मूंदि व गल छेदि धातु व काठकी व बांसकी दोहाथ लम्बी नलबनावे गो पूछ की सूरति तिसे तीन खण्ड करै एक छः अंगुल बाकीके दो समान पतली ओरसे उस छः अंगुलके टुकड़े का मोटा मुख घड़े के छेदमें प्रवेशि उसमें मध्यखण्ड ऊंचाकरि जोरै फिर तीसराखंड सीधालगाइ गजशुंडी साकरी तीनों सन्धिमूंदि तब रोगीको घीव तेललगाइ व लेपकरि कंबलउढ़ाइ सबओरसे ढक निस्सन्धितकरि तब उस गजशुंडी का मुख कम्बल के भीतरखोलि स्वेदन करै तो पसीनानिकसै तृतीयरोगी के शरीरसे बीताभर अधिक लम्बाचौड़ा गढ़ाखोदि द्वादशांगुल गहिरा खैरकी लकड़ी भरि फूंकि क्षारझारि गढ़ेमें दूध व काँजी व मट्ठा छिड़के वायुहारी एरण्डपत्राबिछाइ रोगी

को सुलाइ भारीवस्त्र उढ़ावै तो पसीना निकरै। चौथा पूर्व्व प्रकार गढ़ातपाइ उर्द औटि पानीले छिड़कि एरंड बड़पत्तादि शय्या रचि पूर्ववत् स्वेदनकरै॥ अथोपनाहक्रिया॥ दशमूलादि बात हत द्रव्य ले चूर्णकरि दूध व मृगकी चरबीमिलाइ तप्तकरि बातपीड़ित अंग को पोटली से सेकै व बायुहत द्रव्य कांजी में पीसि सेंधानोन व तिलतेल युक्त तप्तकरि वायुपीड़ित अंग पोटलीकरि सेंकै॥ अथोपनाह महाशाल्वणक्रिया॥ ग्रामीमांस, जलचरमांस, जीवनीयगण द्रव्य गोदही, सज्जी, यवाखार, खारीनोन, बीरतर्वादि गण, कुलथी, उड़द गेहूं अरसी, तिल, सरसों, सौंफ, देवदारु, निर्गुण्डी, मगरैला, एरंड मूल रेंड़ी, रासनमूल, सहिंजना, सोआबीज, पीपरि, नाजबोइ, पांचों नोन, अनार, कठसरैया, असगन्ध, बरियारा, दशमूल, गिलोय, कौंच बीज इनमें जितनी मिलैं, तिन्हें जलमें पीस तपाइ पोटलीबाँधिसेंकै ठण्ढीपरे गरम तवेपर तपाय तपाय सेंकै इस महाशाल्वण प्रयोग से सब वायु पीड़ा दूरहोती है॥ अथ द्रवस्वेदविधिः॥ दशमूलादि वायुहत द्रव्यों का क्वाथबनाइ रोगीको कढ़ाइ ऊंचा चौकोन कोढ़र सोने व चांदी व लोहा व काठका छत्तीसअंगुल ऊँचाबनाइ बैठाइ वह काढ़ाले रोगीके ऊपर पतलीधार से गेरै नाभी के छः अंगुल ऊँचआवै तब हाथको हटावै इसीप्रकार एक व दोदिन ठारठारकरै इसीभांति तेल दूध घृत द्रव स्वेदन भी करै फिर पवन को पचावै ऐसे दोतीनबार घृत व तेल लगाइकर सब नसें अरु रोमों का मुख खुलजाताहै जो पवन प्रवेश न करनेपावै तो उनके मुखसे स्नेहादि पदार्थ प्रवेश कै वायुको निकारदेते हैं शरीर को तृप्त और बलवान् करते हैं-दृष्टान्त॥ जैसे जलसे अंकुर की जड़में जल सींचनेसे वृक्षबढ़ै पुष्टहो तैसे द्रव संज्ञक स्वेद से मनुष्य का रोग नाशहो उमर बधै तैसेही रसादि सप्तधातु में बातदोष बढ़नेसे पेट व मल मार्गमें भरभराहटहोतो तेलस्वेदकरै इससे परे बातनाशक और यत्न नहीं जब ताईं स्वेदकरै कि वायु शूल देह जकड़ना भारीपन दूरहोइ अग्नि दीप्त देहकोमल हलकी हो तब न करै। स्वेद करे पर तेल लगाइ सुखोष्णजलसे नहाइ कफकृत भोजन न करै। एक मुहूर्त्त से चार

मुहूर्त्ततक करवाइ आरोग्यहोने तक २७ ॥ अथ बमन विधिः ॥ शरद् वसन्त प्रावृट्काल में चतुर वैद्य बमन विरेचन करावै इससे मनुष्य की प्रकृति शुद्धहोतीहै ॥ बमनयोग्य ॥ जिसे ब्रमन करने की सामर्थ्य हो कफ व्याप्तहो मुखसे लार बहतीहो जिसे बमनहितहो धीर चित्त हो तिसे ब्रमनकरावै। विषरोग, स्तन्यरोग, मन्दाग्नि, श्लीपद, अर्बुद, हृद्रोग, कुष्ठ, बिसर्प, प्रमेह, अजीर्ण, भ्रम, बिदारी, अपची, कास श्वास, पीनस, अपस्मार, ज्वर, उन्माद, रक्तातीसार, नासा ओष्ठतालुपाक, कर्णस्राव, द्विजिह्वक, गलगण्ड, अतीसार, पित्त, कफ, मेद, अरुचि, इनरोगों में वैद्य ब्रमन बतावै॥ बमन अयोग्य ॥ तिमरी, गुल्म रोगी, उदररोगी, कृश, दुर्बल, अतिवृद्ध, गर्भिणी, मोटा, क्षतरोगी, मदपीड़ित, बालक, रुक्षदेही, भूखा, निरूहण वस्ती किया, उदावर्त्ती ऊर्द्धरक्ती छर्दिरोगी, केवल बातरोगी, पाण्डुरोगी, कृमिरोगी, बहुबाक्य श्रमसे स्वरभंगी ऐसे रोगियों को बमन न करावै और अजीर्ण युक्त विषपीड़ित, कफव्याप्त इन मनुष्यों को मुरेठी महुआ की छाल का क्काथपिलाइ बमन करावै। और सुकुमार, दुबला, बालक, बूढ़ा, भयभीत इनको कभी बमन न करावै ॥ बमनके पूर्व्व उपचार ॥ जिसे बमन करानाहो उसे पहिले पेटभर यवागू दूध मट्ठा दही और अनभावन पदार्थ और कफकृतपदार्थ इनके खानेसे दोष ऊपर उभर आतेहैं तब ब्रमन की औषधदेइ तो बमन अच्छेप्रकार होताहै औ स्नेह पानकियेको अच्छेप्रकारहोताहै॥ बमनयोग्य पदार्थ ॥ सबब्रमन प्रयोगमें सैंधव व शहतयुत औषध हितकारक होताहै जो तूतिया व तांबा घृतयुत बमन देतेहैं वह भयानक बमनहै। जिसे भयानक वमन दियेपर रेचन देना हो तो घी न खानेदेय ॥ बमन में औषध क्काथका प्रमाण ॥ क्काथकी द्रव्य कुड़वभरि कूटिकै आढकभर जल में औटाय आधा जलजाय तब उतारिलेय फिर बमन करनेवाले मनुष्यको पिलावै॥ बमन क्रियाका क्काथ ॥ नवप्रस्थ पिलावै सो ज्येष्ठ मात्रा है। छःप्रस्थ पिलावै सो मध्यम मात्रा है तीनप्रस्थ पिलावै सो छोटीमात्रा है। बमनमें कल्क चूरण अवलेह तीनतीन पलदेना सो बड़ीमात्रा है दोदो पलकी मध्यम मात्रा है एक एक पलकी लघु

मात्रा जानना । जिस मनुष्यको बमनकी औषधदेइ उसके सातबार ताईं सबदोषगिरैं आठवींबार पित्तगिरै तो उत्तमबेगहै पांच बार में दोष गिरि छठेंबार पित्तपड़ै वह मध्यम बेग है तीन बार में सब दोष गिरि चौथी बार पित्तगिरै वह कनिष्ठ बेग है । बमन और रेचन और फस्त लेनेमें प्रस्थ साढ़ेतेरह पलका जानना । कटुतीक्ष्ण गरम पदार्थ से बमनकरायेसे कफार्तीको कफनाश होताहै मधुर शीतल पदार्थकरि बमनकराये पित्त नाश होताहै मधुर क्षार खटाई व गरम पदार्थ से कफयुक्त बात नाश होताहै सोंठ मिरच पीपरि ये तीक्ष्णहैं मुनक्का अनारादि मधुरहैं । कफ प्रकृतिको पिपरी मैनफल सेंधव चूर्णकरि गरम जलसे पिलाने से बार २ कफ गिरेगा । पित्त प्रकृतीको पटोल नीमपत्र चूर्णकरि ठंढे पानी में पिलाने से बार २ पित्त गिरैगा कफबात पीड़ित को मैनफल दूध में मिलाय पिलाने से कफबात दूरहो और सेंधव गरम जल में पिलाने से अजीर्ण मिटै ॥ बमन करने की रीतिः ॥ बमन औषधपीके दोनों घुटने तोरिके बैठे और एरण्डपत्रकी डण्डी शुद्धकरि गलेमें प्रवेश करै तो बमन होगा और बमन करनेवाले का मस्तक और दोनों ओर की पसली सहराताजाय इसरीति से वैद्यलोग बमन कराते हैं ॥ बमनकोपलक्षण ॥जो बमन अच्छीतरह न होइ तो रोगी केमुखसे लारबहै हृदय में पीड़ारहे कोठेमें खजुरी ये उपद्रव होइँ ।अति बमनसे तृषा अधिक हुचकी डकार अज्ञानता जीभ निकलना नेत्र चंचलता संभ्रम चित्त टोड़ी जकरना मुखसे रुधिर पड़ना बारबार थूकना कंठपीड़ा ये अति बमन से होहैं जो बमन प्रयोग से बमन अधिकहोतो उसे मृदुरेचन करै । अति उबकाई आते आते जीभ ऐंठिजाती है उसे जो पदार्थ अच्छा लगताहो चिकना व खट्टा व सलोना सो घीयुक्त को बनाइ उसकेमुखमें रखदेना व दूध दही घृत इनमें कोईमेंसानि मुखमें राखै और उसके सन्मुख खट्टेकेला दिखलावै तो उसे देखने से बमनवाले की जीभ में पानीछूटै जीभ कोमल होजाती है और प्रकृतिस्वस्थ होतीहै । जोज्यादह वमनसे जीभनिकलआवै तौतिल और दाख पीसि जीभपर लेपकरि बैठायदेय और जोआंखें चंचल

भईहो तो आंखिनपर घी लगाइ धीरे २ सहरायदेइ। जो वमन के अंतमें ठोड़ी जकड़जाइ तो सेंकसे और कफ वात हारी द्रव्य सूंघने से खुलतीहै वमनके अंतमें रुधिरआनेलगै तो रक्तपित्तका उपाय करै। जो तृषावधै तो आंवरेका रस रसोत धानकीखील लालचंदन खस ये पांचो पलभर चारपल ठंढे पानीमें मथिकेशहत घृत संयुक्त मिश्री डारिके पिलावै तो प्यास शांतहोवै। दारुहलदी काथकरि तिसके समान बकरीका दूधमिलाइ औटि गाढ़ाकरि सुखाइलेइ उसे रसांजन कहतेहैं॥ वमन उत्तम होनेका लक्षण॥ जो वमन सम्यक्हो तो हृदय कंठ मस्तकके कफादिकका दोष न रहै अग्निदीप्तहो अंग हलकाहो कफपित्त जनित विकार नाशहोइ॥ वमनपर पथ्य॥ मूंग व सांठी चावल का यूष देना व जांगलदेश मृग मांसका यूष दे सम्यक् वमनहुये ये रोग नहीं रहते न होते हैं तन्द्रा निद्रा अति मुखमें दुर्गन्ध खाज संग्रहणी विषदोष भारी अरु गरिष्ठ पदार्थ ठंढाजल परिश्रम मैथुन तेलमर्दन क्रोध जिसदिन वमनकरै तो इन सेबचारहै ३२॥वमनांतेविरेचन॥ प्रथममनुष्य स्नेहपानादि कर्मकरि फिर वमन करै तब रेचन उत्तम प्रकार हो। और प्रथम कर्म्महीन रेचनकरै कफ नीचेजाइ ग्रहणीकहे पित्तधरा अग्निधरा इनकोछाइ लेताहै इसीकारण से अग्नि मंद देहभारी देह जकड़ना प्रवाहिका कहे अतिदारुण अतिसार ये रोग उत्पन्न होतेहैं जो कर्महीन रेचन शीघ्र दिया चाहै तो नीचे गिरनेवाला कफ और आंव तिसे सूखे एरंडकी जड़ आदि सेवन कराइ पचाइरेचन करै। रेचनकादोप्रकार जोदूध घृत करि स्निग्ध मनुष्य वा माटीके गोला व ईंटकरि स्वेदित मनुष्य तिसे रेचन औ वमन दे औ कार कार्त्तिक चैत बैशाखमें रेचन कर्मकिये देहशुद्धिहोजातीहै। और वैद्य रोगीकारोग विचार तिसके निवारणार्थअनुक्तकाल में विरेचनकरैविशेष रेचनयोग्य पित्तबिकार उदररोग आध्मान वायु कोष्ठबद्ध इनरोगों को विशेष शुद्धकारक ये परमौषधहैं क्रमसे जानना वस्तिकर्म रेचन कर्म वमनकर्म तेलघृत शहत यथारोग यत्न करै। दोष निवारण में उत्कर्म रेचन वातादि दोष लंघन पाचन करै दबजातेहैं परन्तु थोरेकुपथ्यकरे उभर आते

हैं और जो रेचन करि वातादि दोषोंसे शुद्धकिये शरीरमें वेग नहीं उभरते । रेचनके अयोग्य बालक वृद्ध अतिस्नेह पानकरि उरक्षती क्षीण मनुष्य भययुक्त श्रमित तृषित स्थूलशरीर गर्भिणी नवज्वरी तुरत पुत्र जनिता स्त्री मन्दाग्नि अति मदपीड़ित शरविद्धित क्षत युक्त रुक्षकहे निस्तेज मनुष्य इनको रेचन नहीं देना । रेचन योग्य जीर्णज्वरी विष पीड़ित वात रक्त भगन्दर रोगी अर्श रोगी पांडु रोगी उदर रोगी ग्रन्थिरोगी हृदयरोगी योनिरोग प्रमेह गुल्मप्लीहा व्रणी विद्रधि छर्दि विस्फोटक विसूची कुष्ठ कानरोग नाकरोग मस्तक रोग मुख रोग गुद रोग गरमी यकृत सूजन नेत्र रोग कृमि रोग सोमलादि रोग शूल मूत्रघात इन रोगनकर पीड़ित मनुष्य को रेचन दीजै । रेचन तीन प्रकार का है कोमल मध्यम तीक्ष्ण जिस मनुष्य की केवल पित्त प्रकृति हो उसका कोठा मृदुहै जिसकी केवल कफ प्रकृति हो उसका कोठामध्यमहै जिसकी केवल वात प्रकृति हो उसका कोठा कठोर है सो कड़े कोठे वाला रेचनमें दुःख पाताहै उसे रेचन करने में मलद्रावशीघ्र नहीं होता कोमल कोठा समझ मृदु रेचन करावे । मध्यम कोठावाले को मध्यम मात्रादे रेचन करावे कठोर कोष्ठको करड़ी मात्रादे रेचनकरावे मृदु मध्यमादि कोष्ठीको मृदु मध्यमादि औषधदे कोमल कोष्ठी को दाख दूध रेंड़ी तेल युक्तकरि रेचनदे मध्यम कोष्ठीको निशोथकटुकी अमलतास इनका रेचनदे क्रूर कोष्ठी को थूहर दूध चोक जमालगोटा इन करिके रेचनदे । मल गिरते गिरते अन्तमें कफगिरै ऐसे तीस वेग आवैं सो उत्तम मात्राहै ॥ वेगकहैं दस्त ॥ जिसमें बीसवेग तक अन्तमें कफगिरै वह मध्यमहै जिसमें दशबेगतक कफगिरै वह हीन रेचन मात्रा है ॥ रेचनकाथादिप्रमाण ॥ रेचनमें काढ़ाकी मात्रा दो पल उत्तम एक पल मध्यम आधापल कनिष्ठ मात्राहै ॥ रेचनमें कल्क मोदक चूरण तीनोंका ॥ कर्ष कहे दश दश माशे प्रमाण है और शहत घृत युक्त रेचन देइ वा रोगीका अवस्था बल देखि दोकर्षसे पलभर तक यथोचित मात्रा देना ॥ रेचनमें द्रव्य प्रकार ॥ पित्तमें निशोथ चूरण दाख क्वाथ मेवा गुलकन्द गुलाब फूलबड़ी सौंफके काढ़े

में देइ। कफकोपमें सोंठि मिरच पीपल चूर्ण त्रिफला क्वाथमें पिलाये कफ दोष दूरहोइ। वात कोपमें निशोथ सोंठि सेंधवचूर्ण नींबूरस व कांजी व जंगली जानवरके मांसका यूष युक्तदेइतो रेचन अच्छा हो वायु कोप शान्तिहो ॥ अपर औपध रेचनपर ॥ रेंड़ी तेलसे दूना त्रिफला क्वाथ प्यावै व दूना दूध युक्त प्यावै तो दस्त जल्द हो ॥ रेचनेऋतुभेद ॥ निशोथ इन्द्रयव । पीपरि सोंठि दाख शहत डारि वर्षामें प्यावे । शरदमें निशोथ जवासा मोथा सुगन्धबाला मिश्री श्वेतचन्दन मुरेठी दाख क्वाथमें प्यावे तो रेचनहो हेमन्तमें निशोथ चीता पाढ़ा जीरा देवदारु बच इनका चूरण गरम जल साथ पीवै तो रेचनहो। शिशिर बसन्तमें पीपरि सोंठि सेंधव विधारा निशोथ इनका चूर्ण शहतयुक्त चाटै तो रेचनहो ग्रीष्ममें निशोथ का चूरण शक्कर समभाग युक्तकरि फांकै तो रेचनहो ॥ रेचनपर अभयादिक मोदक ॥ हड़, मिर्च, सोंठि, बिड़ंग, आंवला, पीपरि, पीपरामूल, तज पत्रज, मोथा येसब समभागले जमालगोटाकी जड़ त्रिगुणी निशोथ अठगुणीशक्कर छःगुणी शहतमें मल कर्ष२भरकी गोलीबांधै प्रभात एक खाय शीतलजल पीवै तो विषमज्वर, मन्दाग्नि, पांडु, कास, भगंदर, दुर्नामकुष्ठ, गुल्म, अर्श, गलगंड, भ्रम, उदररोग, दाह, प्लीह प्रमेह, यक्ष्मा, नेत्ररोग, बातरोग, पेटफूलना, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, पीठ पसुरी, छाती, जांघ, कटि, पेट इनके रोग दूरहों इस अभयामोदक सेवनसे तुरतही बाल सफ़ेदपना मिटै यह रसायन श्रेष्ठहै ॥ रेचन अच्छेप्रकार होनेका यत्न ॥ रेचनौषध पीके ठण्ढे जलसे आँखें मुख पोंछै सुगन्धादि फूल सूँघै पान खायाकरै इसयोगके करनेसे चित्त स्वास्थ्य रहता है अच्छीतरह वेग आते हैं ॥ रेचन समय साधना ॥ पवन मल मूत्र न रोकै न आँघै ठण्ढाजल न छुवै ज्यों २ वेगहोय त्यों २ बार २ गरमपानी पीवै इससे खुलकै मल गिरैगा। सम्यक् रेचनमें जैसे सम्यक् बमनमें कफ और खाईहुई ओषधि पित्तवायुसब दोष मुखसे गिरते हैं तैसेही ये सब मल मार्ग्ग से गिरते हैं ॥ रेचन देनेपर वेग न होय तिसके उपद्रव ॥ जिस मनुष्यको रेचन देने से वेग न आवै व अच्छी तरह न आवै उसकी नाभिके नीचे कड़ापन

और कोखमेंशूल, मलमें वायुमिलजाय खजुरी, मंडल, देहजकड़ना दाह, अरुचि, पेटफूलना, अमछर्दि ये उपद्रव होते हैं ॥ अशुद्धरेचन यत्न ॥ जिसे रेचन अच्छी तरह न हुआ उसे रात्रिको अमलतास का पाचनदे। फिर स्नेह बिधिसे घृत पिलाय कोठा चिक्नाकरि रेचनदेनेसे शुद्धरेचन होगा सब उपद्रव शान्तहोंगे और जठराग्नि दीप्तहो देह हलकी ॥ अतिबिरेके उपद्रवाः ॥ मूर्च्छा, कांच निकरना पेटमें शूल, कफ अधिक गिरना, मांसधोवन समगिरना, चरबीसी व पानीसागिरे॥ अतिबिरेचन उपद्रवयत्न॥ ठण्ढेजलसेशरीरपोंछैवगुलाब केवड़ा छिड़के वस्त्रसे पोंछै व चावल का धोवन शहतयुक्तपीवै और शहत औषधदे बमन करावै इससे उपशमन होताहै आम्रकीछाल गोदधि सौबीरा पीसि कल्ककरि नाभिपर लगावै तो वेग बन्दहो सौवीरक्रिया आगे कहेंगे दस्त बन्द करनेको बकरीका दूध शकुनी चिड़िया का मांस व मृग मांसका यूष भात खाय व मसूरी यूष साँठी चावलका भातखाय और अनार सेवन करै ये ठण्ढे पदार्थको सेवन करै वेग बन्द हो ॥ स्पष्टबिरेक लक्षण ॥ शरीर हलका, प्रसन्न चित्त, स्वस्थगमन वायु ऐसे लक्षण देखि रात्रिको पाचन देना व पाचनार्थ एरण्डमूल, सोंठि, धनियां क्वाथदेय। रेचन सेवनसे इन्द्रियां बलवान्हों बुद्धि प्रसन्न रहै अग्निदीप्तहो धातुपुष्टि अवस्था बढ़ै स्थिर होती है ॥ रेचनपर बर्जित ॥ प्रताप, ठण्ढाजल, तैल स्पर्श अजीर्ण, श्रम,मैथुन इनसेबचै ॥ रेचनपरपथ्य ॥ चावल, मूंगकायवागू व हरिणादि मांसका यूष व लवा बटेर तीतर मांसका यूष भातमेंदे ४०॥अथबस्तिकर्म॥गुदाकेभीतर अंडकोशकीजड़ताईं द्रव्यभरिपिचकारी देनेको बस्तिकर्म कहते हैं सो दोप्रकारहै अनुबासन १ निरूहण २ जिसमें घी तेलादि चिकनी वस्तु भरिदीजै उसे अनुबासन बस्ति कहैं और काढ़ा तेल दूध मिश्रित पिचकारीभरि पीड़ितकरै वह निरूहण बस्तिहै। प्रथम अनुबासन बस्तिहै पीछे निरूहणहै। इसीसे निरूहणको उत्तर बस्तिभी कहते हैं अनुबासन की द्रव्यका प्रमाण स्नेहादि २ पल व १ पल प्रमाण जानना ऐसे पिचकारी के भेद हैं ॥ अनुबासन योग्य ॥ रुक्ष प्रकृतीको व स्नेहपान रहित को

व अग्निदीप्त करनेको केवल वातरोगीको अवश्य अनुवासन योग्य है ॥ अथानुवासनअयोग्य ॥ निरूहणयोग्य कुष्ठी, प्रमेही, मोटाशरीरी उदररोगी ये अनुवासन योग्य नहीं और अजीर्णी, उन्मादी, तृषी शोक, मूर्च्छा, अरुचि, भय, श्वास, कास, क्षय इनसे पीड़ित को निरूहण वास्ति अयोग्य है परन्तु अनुवासन योग्य है वस्ति कहे पिचकारी निर्माणविधिः ॥ नेत्र कहे पिचकारी की नल जो गुदा में प्रवेशी जाइ सो सुवर्णादि धातुकी बांस नरकुल गजदन्त मृगसींग की और अग्रभाग पत्ता विल्लोर की बनावे ॥ नलीयोग्य अवस्था ॥ जो वर्ष एकसे छःवर्ष ताईं बालकके वस्तीकी नली छःअंगुल बनावे और छःवर्षसे बारहवर्ष ताईंकी आठ अंगुलकी बनावे और बारह वर्षसे ऊपरवालेकी नली बारह अंगुलकी बनावे ॥ नलीछिद्रप्रमाण और निर्माणविधि ॥ छः अंगुलकी नली का प्रवेश करनेवाला मुख मूंग समानकरै नीचेका छोटी अंगुली समान और आठ अंगुलवा-ली का मटर सा दूसरा मध्य अंगुलीसा बारह अंगुलवालीका झर-बेरीके बेरसमान दूसरा अंगूठासमान राखै नली बहुतचिकनी रहै गोपुच्छ सदृश एकओरपतली दूसरीओरमोटी मोटीओरके चौथाई भागमें दोछल्लेजड़ेहों तिसमें थैली हरिणादिकेमूतनेकी चढ़ाइ पूर्वो छल्लोंका मध्यमथैली समेत पुष्ट बहुत करै जिस थैलीकी औषध न और राहसे निसरै तबपिचकारी ठीकजानो थैली निर्मितजातिहरि-ण, छाग, बराह, बैल, भैंसा इनके मूत्र की थैली उसनलीमें लगावै जो राननमिलैं तो इनकेचमड़ेको कमलपत्र समकाटि दोनोंओर छीलि साफ करि थैली समान बनाय नलीपर चढ़ावे ॥ व्रणादि पिचकारी प्रमाण ॥ घाव फोड़ा नासूरादि पिचकारी आठ अंगुल लंबी मूंग पैठिने माफिक छेदरहै गृद्धके पक्ष सदृश मोटी अतिचिकनी पतली छोटी नासूर व्रणयोग्यहै॥ वस्तिगुण॥ वस्ति अच्छेप्रकार होतोशरीर पुष्टकांति बलआरोग्य आयुवृद्धिकरै ॥वस्तिसेवनकाल॥ वसंतऋतुमें संध्यासमय स्नेहवस्तिकहे अनुवासन वस्तिकरना ग्रीष्मवर्षा शर-दमें रातको करना रोगी को गरम चिकना भोजन रातको खिलाइ अनुवासन करनेसे मद व मूर्च्छा उत्पन्नहोताहै औररूखेभोजनसेबल

क्रांतिहानिहोय ये दोनोंतरह वस्तिकर्मकरे येरोगहोतेहैं॥ वस्तिकर्ममें न्यूनाधिकमात्रादोष॥ अनुवासन व निरूहणमें हीन मात्रा देनेसे रोग नहींजाता अतिमात्रा देनेसे आनाह, ग्लानि, अतीसार ये उपजते हैं॥वस्तिउत्तम मात्रा॥ उत्तममात्रा छः पलकीबलीको अनुवासनदेना मध्यमबलीको तीनपलकी बलहीनको हीनमात्रा डेढ़पलदेना॥ स्नेहमें और द्रव्यमात्रा॥ शतावरि सेंधवका चूर्णछः माशेकी उत्तममात्राहै चारिमाशेकी मध्यम दोमाशेकी कनिष्ठ जानना॥ विरेचनपर वस्तिप्रकार॥ विरेचनकियेको सातदिन बिताय बलआने पर भोजनकराय अनुवासन बस्तिकरना॥ पिचकारी पीड़न प्रकार॥ अनुवासन कर्मके प्रथमतेललगाइ गरमपानी से नहवाइ यथालिखित भोजनकराइ कुछ टहलाइ पवनमलमूत्र शंकामिटाइ बाईंकरवट पौढ़ाइ दाहिना गोड़ा सिकोड़बायां बगारि मलमार्ग में घीलगावै तब पिचकारीकी थैली में यथालिखित स्नेहमात्राभरि वैद्यबरवस्तिमुख बांधकरिबायें करधारि धीरे धीरे मलमार्ग में दोअंगुली प्रवेशै तबदाहिनेहाथसे द्रव्यभरी थैलीले मन्द २ पीड़ित करै जिससे भीतर पिचकारी के वेगकी चोट न लगे ऐसे पिचकारी देते हैं उससमय उबासी छींक खांसी न आवै। रोगीको बस्तिप्रद समय पिचकारीदे तीसमात्रातांई रोकै इतनी बेरमें स्नेहादिक अन्दर प्रवेश होजाइगा फिर सौतक सीधासुवावै। मात्रा प्रमाण जंघमंडल कहे कटिसे घुटनी पर्य्यन्त तिसके चारोंओर चुटकी बजाता हाथघूम आवै तो एकमात्राहोय यहसर्वग्रंथ निश्चयहै बस्तिके पीछें कृत्य बस्तीपीड़ितकरि रोगीके पांव हाथ शरीरफैलाइ लम्बाकरदे इस्से सातों धातु अपने अपने स्थानमें फैलजाती हैं तब हाथ पांवके हथेरीतरवा जांघकटि नितम्ब धीरे२थपकीदे सहराइदे तबरोगीको शय्यापर स्वस्थकर पौढ़ाइ निद्राकरावै। बस्तिगुण प्रलाशयमें स्नेहादि पहुंचनेसे वायु औरमल ये सब इकट्ठा करि जल्दी बाहर निकारदेइ तौ जानियेकि बस्ति ने बरबय भेदरुष्टती बारियां दिनदिन पिचकारी याने दवागुणाकिया बस्ति बिकार निवृत्त प्रयोग। अनुवासनान्त जब स्नेहादि अनुवासन बस्तिसे प्रवेशहुये हैं उनका बिकार दूरहोय और पुराने

चावलका भात खिलावै। वातादि दोष बस्ति प्रमाण पूर्वोक्तवत् पिचकारी बनाइ सात या आठ या नव वेगताईं देना अंतमें निरूहण पिचकारी देना। प्रथम बस्ति वेग होनेसे वंक्षणद्वारा शरीर में चिकनाई आती है अर्थात् धातु बढ़ती है दूसरीमें मस्तक वायुदूर जाय तीसरीसे शरीरमें बलहोताहै। चौथी पांचवींसे रसरक्त बढ़ताहै छठी सातवींसे मांसमेदा चिकने होते हैं आठवींनववींसे शुक्र धातु स्निग्ध होते हैं अठारह वेगदेनेसे शुक्रधातुका दोष नाश हो जिसे छत्तीस वेगहों तिसे हाथी घोड़े सदृश बलहोय और देवता समानकांति होय रूखे मनुष्यको स्नेह बस्ति हलकीहलकी नित्यप्रति देइ और जो रोग चिरकालका होइ तो निरूहण वस्ति हलकी २ नित्यप्रतिदेइ। जो रुक्षबातकरि अधिक पीड़ितहोय उसेअनुवासन बस्ति जबप्रयोजनजानै तबदेइ औरचिकने व मोटे मनुष्यको जब२ उचितजाने तब २ निरूहण बस्तिदेइ तो रोग नाशहोता है। स्नेह शीघ्र निकलनेपर जबस्नेहादि शीघ्रनिकलपरै तब निरूहण बस्ति करै इसीरीतिसे जितने वेगदेइ सबके अन्तमें निरूहण देताजाय। जो विरेचन बमन करि शुद्ध न किया बस्ति कर्म्म किया तिससे स्नेहादिरुकनेसे ये उपद्रवहोते हैं शिथिलगात्र,आध्मान, पेटफूलना शूल, श्वास और भटी॰कठोर इनउपद्रवन के दूरकरने को तीक्ष्ण निरूहणदेना तीक्ष्ण औषधयुक्त फलवती जिससे वायु अधोगामी होय मलयुक्त स्नेहको गिरावै तिसतीक्ष्ण रेचन तीक्ष्ण नासदेनेसे शमन होते हैं जो स्नेह बस्ति रुकनेसे कोई उपद्रव न होय और स्नेहादि भीतररूखे कोठाके कारणसे अटकरहें और शूलादि उपद्रव न करै तो उसेदीर्घकालतक रहनेदेय॥ बस्ति औषधगिराने का यत्न॥ जो पिचकारी का दिया स्नेह न गिरै तो दुसरायके फिर पिचकारी स्नेह गिरावे व स्नेह रातभर बस रहे तो सबेरे रेचन दे गिरावै ये दोनों प्रकार करि स्नेह गिरावे। अनुवासन स्नेह, गुर्च,रण्ड की जड़, करंजकीछाल, भारंगीछाल, रूसा अगियाखैर, शतावरि कटसरैया,कोआ, ढोढ़ी ये पलपल भरउरद,यव,अरसी, बेरकीमींगी कुरथी ये दोदो पल ये सब अधपिसी चारिद्रोण जलमें औटाइ द्रोण

सेर रहै तब छानि आढ़कसेर तिलका तेल मिलाइकै जीवनीगण सूक्ष्मचूर्ण करि उसमें डारिकढ़ाई में भरिऔटि काथ जराइउतार छानलीजे इसे अनुवासन कहतेहैं पिचकारी में भरते हैं बस्तिकर्म उलटाहोनेसे छियसर रोग होते हैं तिसकी चिकित्सा सुश्रुतमेंदेखि करना ३२ बस्तिकर्म में पथ्य पान आहार विहारादिक आचरण पूर्व्वोक्त स्नेहपान सदृश देना इसमें भी चाहिये ३१ ॥ अथनिरूह बस्तिविधिः ॥ निरूहण बस्ति का कारण कहे रोगानुसार करिकै अनेकभेद हैं जहांजैसा करना चाहिये तहां मुनीश्वरों ने वैसाही नामधराहै यथा क्लेशन बस्ती दो हृदबस्ती यह नामप्रकारजानना १ निरूहका दूसरानाम स्थापनबस्ती कहते हैं इसकारणसे उत्पन्नहुये दोष संयुक्त रसादिक धातु अपने स्थानमें प्राप्तहैं उनके बातादिक दोष वा रोगोंको दूरकरि शुद्धधातोंको स्थितकरती है निरूहमेंकाथ प्रमाण निरूहमें सवाउ प्रस्थकी उत्तम मात्राहै प्रस्थभरकी मध्यम कुड़वकी कनिष्ठमात्राहै ३ निरूहमें अयोग्य अतिस्निग्ध कोठेवाला ऊर्द्ध्वगत दोषवाला उरुक्षती व कृशआध्मानी छर्दी, हिक्की, अर्शी, श्वासी, काशार्त्ती ऐसेमनुष्य गुदाके निकटपीड़ित शोथी अतिसारी शीतरक्ती कुष्ठी गर्भिणी मधुप्रमेही जलोदरी इनरोगिनको निरूहण देना योग्यनहीं ४ निरूहबस्ती योग्य बात उदावर्त्त बातरक्त बिषमज्वर मूर्च्छा तृष्णा उदरआनाह मूत्रकृच्छ्र पथरी पुराना रक्तस्राव मन्दाग्नि प्रमेह शूल अम्लपित्त हृदयरोग इनरोगिनको निरूहदेना योग्यहै ५॥ निरूहबस्ती बिधान ॥ जिसे निरूहबस्ती देनीहो तिसे मल मूत्रकी शङ्कानिवारण कराई पौन छूटनेकी शङ्का मिटाई कोष्ठ शुद्ध करि देहमें तेल लगाई तप्तजलसे अङ्गपोछ नाभितरे पोटरीसेथोरा सेंकै दोपहर प्रथमसे भोजनत्यागि जिसे जैसा दोष देखै तिसे तैसी औषध पिचकारीमें भरि पूर्व्वोक्त अनुवासन बस्ति बिधानसे निरूहण बस्तीकरे फेर औषध बाहर निकसनेके कारण मुहूर्त्तकहे दो घड़ी कच्ची ऊकरु बैठावे इतनेमें औषध गिरे तो अच्छा न गिरे तो शोधनकरि गिरावे शोधनकहे रेचन योंभी न गिरे तो यवाखार गोमूत्र खट्टेकारस सैंधवमिलाइ फिर पिचकारी देनेसे गिरैगी ॥ अच्छी

निरूहलक्षण ॥ निरूह अच्छीहोय तो क्रमसे मल पित्त वायुगिरै और शरीर हलकाहोय तो निरूह शुद्धजानिये ॥ अशुद्धवस्तीलक्षण ॥ जिसे वस्ती कर्म्मसे त्रिदोष जन्यविकार और मलनहीं निकलगया उसके मूत्रमार्ग में पीड़ा शरीर जड़ता अरुचिहोइ ॥ निरूहस्नेहशुद्धवस्तीलक्षण ॥ देहहलकी मनसन्तोष स्वेदचिकना रोगनाश ये अच्छीवस्तीके लक्षणहैं जो चतुरवस्तीकर्म्म जाननेवालेवैद्य यों निरूह वस्तीकरैं नहीं तो वस्ती विरुद्धहोतीहै १०॥ निरूहवस्ती दानप्रमाण॥ निरूहवस्ती एक व दो व तीन व चारबार जैसा दोषदेखै तैसी दे बातरोगमें स्नेहयुक्त निरूह एकबारदे पित्तमें दूधयुक्त दोबारदे कफ में कषाय कटु रुक्षादियुक्त सुखोष्णकरि तीनिबारदे त्रिदोषमें दूध कषाय मांसरसयुक्त क्रमसे चारबारदेना तिसपीछे स्नेह वस्तीदेना ११ सुकुमार व बालक व वृद्धहो तो हलकी निरूहदेना सुकुमारादि को तीक्ष्ण वस्ती से बल और आयु घटतीहै हड़ व आंवरादि कषायहै त्रिकुटादि कटु है कुरथी यवादि रुक्ष हैं १२ ये द्रव्य आदि मध्यान्त क्रमसे देना प्रथमदोष उभरन मध्यमें दोष नाशन अन्त में दोष क्षीणकरि शमनकरि देना १३ दोष उभारणद्रव्य रेड़ीबीज महुआ छाल पीपरि सैंधव वच हाऊबेर इनकी पिचकारी से दोष उभरता है १४ ॥ दोष नाशक द्रव्य ॥ शतावरि मुरेठी वेल इन्द्रयव कांजी में पीस गोमूत्र युक्त पिचकारी रोग हारक देना १५ व दोष शमन औषध निशोत आदिक शोधन द्रव्य का क्वाथकरि तेल व सैंधवडारि मथिकै दोष शोधन निमित्त इसीका अथवा औरद्रव्यका कल्क भी मथिकै पिचकारी देना १६ मकरामूल महुआ छाल मोथा रसौत ये सब समान दूधमें पीस दोष शमनार्थ देना १७ लेखन वस्ती त्रिफला क्वाथ में गोमूत्र शहत यवाखार ये द्रव्य सम भागलेवै ऊषादिगण द्रव्य मिश्रित करि लेख न वस्ती देनालेखन कहे जो मेद दूषित तिन रोगन को द्रवसाकरै १८ वृंहणवस्ती मुशली गोखुरू कोंचबीज इत्यादि वृंहणद्रव्यहै सो धातुको बढ़ाती है इनका क्वाथकरि महुआ की छाल दाख अनारादि मधुर द्रव्यका कल्क औ घृत मांसरस ये सब पूर्वोक्त क्वाथ में डारि धातु बढ़ाने

को पिचकारी देइ १९ पिच्छिल बस्ती बेर की छाल इलायची ल-
सोड़े की छाल सेमर जवासा मोथा ये सब सम भाग ले दूध में
पीसि शहत छाग मेढ़ा हरिण इनका रुधिर मिश्रितकरि चतुरवैद्य
दोष पिघलाने को पिच्छल्ल बस्ती देते हैं इसकी मात्रा का प्रमाण
बारह पल है २० ॥ निरूहण बस्ती प्रमाणविधिः ॥ अक्ष औ कर्ष
एकहीसंज्ञाहै सैंधव कर्ष भर शहत चारिपल मर्द्दनकरि छःपल घी
दे एकत्रकरै इसमें दोपल पूर्व्वोक्तकल्क द्रव्यमिलावै अथवा पूर्व्वोक्त
कल्क द्रव्यका क्वाथ कहे काढ़ाकरि लीजिये व आठपल प्रमाण
कुशलवैद्य इकट्ठे करि मथिनिरूह बस्तीदेय निरूहबस्तीकी साधा-
रण बिधिजानो ॥ बिशेष बिधान ॥ बातमें ४ पल मधु ६ स्नेह इकट्ठा
करि पिचकारीदेना पित्तमें ४ पल मधु ३ ले स्नेह इकट्ठाकरिपिच-
कारी देइ कफमें ६ पल मधु ४ पल स्नेह एककरि देना २१ मधु
तेलबस्ती रण्डमूल क्वाथ ८ पल शहत तेल चारिचारिपल बड़ीसौंफ
सैंधव आधाआधापल येसब एककरि क्षणभर मथि यह मधु तेल
बस्तीहै इसकेदेनेसे मेदरोग,गुल्म,प्लीह, कृमिमल व उदावर्त्त येरोग
नाशहोयँ बलकान्ति स्त्रीइच्छा धातुवृद्धि अग्निदीप्तहोइ २२ दीपन
बस्ती शहत घी दूध तेल दोदोपल हाऊबेर सैंधव कर्षकर्ष सोघस
पीसि सबमिलाइ पिचकारी देइ अग्निदीप्तहोइ २३ युक्त रथबस्ती
रण्डमूल क्वाथ शहत तैलमें सैंधव,बच, पीपरि मैनफल चारो सम
भाग चूर्ण करि मिलाय पिचकारी देय यह उक्त रथबस्ती सब
रोगों पर दीजाती है २४ सिद्ध बस्ती पञ्चमूल क्वाथ तैल और
महुआ मुरेठीकाथमें पीपरि सेंधव मिलायदेय यह सिद्धबस्ती सब
रोगनपर देते हैं २४ ॥ अथोत्तरबस्तीविधान ॥ उत्तर बस्ती कहे मूत्र
मार्ग्गमें पिचकारी देनेकी बिधि तिसमें प्रमाण बारहअंगुल लम्बी
तिसके मध्यमें पखुरी चमेलीपुष्प सदृश और चमेलीपुष्पकी दण्डी
समान मोटी रहै १ ॥ मात्रा प्रमाण ॥ मनुष्य २५ बर्षताईं स्नेहमात्रा
दोकर्षकी दे पच्चीस के उपरांत पलभर देना २ ॥ अथ स्थापनविधि॥
स्थापन कहे उत्तर सेवक को शुद्धस्नान कराय घुटने टिकाइ बैठाइ
घुटने टेकि खड़ा रहै तब इष्टछालाका चांदीका १२ अंगुलमुँहपर

मुरा ८ अंगुल सीधा सरसों निकलजाने माफ़िकछेद होता है उस में घी व तेल लगाय मूत्रमार्ग्गमें धीरे २ छःतथा आठ अंगुलप्रवेशकरे यत्न पूर्व्वक जिसमें पीड़ा न करे जब मूत्र थैलीतक पहुँच खट खटबजै तो जानो इसके पथरी है इसी शलाकासेबन्द मूत्र भी खुलजाताहै शलाकाछिद्रसे वहिजाताहै और जोपिचकारीदेनाहीहो तो शलाकाकी पेंदीपर थैलीचढ़ाय औषधि भरि पूर्व्ववत् पीड़ित करै इससे मूत्रकृच्छ्रादिक दूरहोते हैं यह उत्तर वस्ती क्रमहै ३ व स्त्रीके उत्तर वस्ती विधान ॥ स्त्री की योनिमें दो छिद्र होते हैं एक मूत्र मार्ग्ग दूसरा गर्भमार्ग्ग योनि वहीहै उसकीशलाका छंगुनियांकी मुटाई दशांगुलकी मूंग निकलने माफिकछेदराखि चारिअंगुलयोनि में प्रवेश पिचकारी देइ और मूत्रमार्ग्ग में सूक्ष्म शलाकादोअंगुल प्रवेश ४ वालकके एकअंगुल शलाका प्रवेशै चतुरवैद्यअतिमहीन रसायनसे देइ पिचकारी पीड़ने में हाथ न कँपै ५ ॥ स्त्रियोंकीवस्ती कीमात्राप्रमाण ॥ योनिमार्ग्ग पिचकारी देनेकी मात्रा दोपल औषधि लेना मूत्रमार्ग्गकी मात्रा एकपलहै वालक वस्तीकीदोकर्षहै निपुणवैद्य स्त्रीको उतानापौढ़ाय पिचकारी पीड़ितकरै फिरउटकुरु बिठाइ दियाहुआस्नेह गिरावै ६ शोधनद्रव्य मूत्रकृच्छ्रादिमें शोधन द्रव्य रेंड़ी तेलादि द्रव्यभरि पिचकारी देइ अथवा फलवर्ती रेंड वीजादि सूत व वस्त्रकी कड़ीबत्ती बनाइ रेंड तैलादिमें तप्त करि भिजोइ उसपर रेंड़ी पीसि चुपरै योनिमें राखै जो वस्तीकिये नाभि तरे वस्तीस्थान अधिक उष्णहोइ तो बटगूलरकी छालके काथकी पिचकारीदेना व ठण्ढे दूधकी इनसे बस्ती शुद्ध होती है और शुक्र सम्बन्धी पीड़ा और स्त्रीके आर्त्त व सम्बन्धीरोग पीड़ा दूरहोय प्रमेहकी उत्तमबस्ती कभी अयुक्तनहीं ७ ॥ उत्तम वस्तीलक्षण ॥ उत्तर बस्ती मेंस्नेहवस्तीहुई तब शुक्रसम्बन्धी प्रमेहादि पीड़ा दूरहोती है उसके ये लक्षणहैं ८ फलबस्ती मलमार्ग्ग में घी लगाइ मल गिराने के कारण रेचन द्रव्य रेंड बीजादि कड़ीबत्तीपर लेपि गुदामें धरै इसे फलबस्ती कहैं ७ ॥ अथ नस्य कर्म ॥ नाककीराह औषधिदेनेको नास कहते हैं इसके दो नामहैं नावन १नस्य २ नस्यरीति दोविधि हैं एक

रेचन दूसरा स्नेहन और रेचनको कर्षणभी कहियेसो वातादिदोष-
निको कर्षणवालीहै और स्नेहन नस्य धातुको वृद्धि करतीहै इस
से वृंहण कहिये २ नस्यकर्म समय कफदूषित को प्रात नस्य देना
पित्तदूषित को मध्याह्न में देना वायुदूषित को सन्ध्याकेभीतरदेना
और जो अति पीड़ितहो तो रात्रिको देना॥ अथनस्येनिषेधः॥ नस्य
कर्म ऐसे को बर्जित है भोजन करचुकेपर तुरतही न दे दुर्दिन कहे
आँधी व अतिपवन व मेघादितहो और लंघनीको पीनसकेआरम्भ
में गर्भिणीको त्रिकारीको अजीर्णपर वस्तीकृतको स्नेहपीतकेपानी
व मद्यपीको तर्पणकृतको क्रोध शोकार्त्ती तृषीको वृद्ध और बालक
कोमलमूत्रबायुआरोधीको तुरित स्नानाकांक्षी को ऐसे मनुष्यनको
और इनकर्म्मकियेपर नस्यकर्मनकरै४व नस्यकर्म योग्यायोग्यआठ
वर्ष उपरांतअस्सी वर्षपर्य्यंतनासकर्मकरना ५॥रेचन नासाविधि॥रेचन
कारकद्रव्यकी नासदेनाचाहै तो राई व सरसौंकातेलतीक्ष्णहै तिस
कीनासदेना व तीक्ष्णद्रव्यमें सिद्धकिया तेल व तीक्ष्णद्रव्यका क्वाथ
व तीक्ष्ण द्रव्य का स्वरसले तेल घृत सिद्धकरि नासदेना॥ रेचनस्य
प्रमाणः॥ रेचन संबन्धी औषधकी आठबूंद दोनों नकुनामें नासदेइ
सो उत्तम मात्राहै छहबूंदकी मध्यम चारिबूंदकी कनिष्ठ मात्राहै ७
नस्यद्रव्य प्रमाणम्॥ नासदेनेके तेलादि सिद्ध करनेमें तीक्ष्ण औष-
धि एकशाणदेना हींग यवभरि सैंधव माषभरि दूध आठशाण पानी
तीनकर्ष मधुर द्रव्य कर्ष कर्ष प्रमाणदेना ८॥ मस्तकरेचनविधि॥ म-
स्तक रेचन दोप्रकार है एक अवपीड़न दूसरा प्रधमन ये मस्तक
रेचन जानना ९॥ अवपीडन या प्रधमन बिधान॥ तीक्ष्ण द्रव्यपीसिकै
स्वरसलेनेको अवपीड़न कहते हैं १ दूसरी छःअंगुल प्रमाण नली
दोमुखकी बनाइ एकमुखपर तीक्ष्ण द्रव्यका चूर्णधरि नाकमें प्रवेश
करि दूसरे मुखलगाइ फूंके उसे प्रधमन कहतेहैं तीक्ष्ण द्रव्य सोंठि
मिर्च पीपरि इसे त्रिकुटा कहते हैं १० रेचन व स्नेहन नासयोग्य
उर्ध्वगतकहेभृकुटी,मस्तक,कपाल,दशमद्वारपर्यंत,गतरोग,कफजन्य
स्वरभंग,अरोचक,नाक टपकना,माथेकी पीड़ा, पीनस,सूजन, मृगी,
कुष्ठ इनमेंरेचन उचित है भयाकुल स्त्री दुर्बल बालक इन्हें स्नेहन

उचितहै ११ अवपीडन योग्य कंठरोग, सन्निपात, तंद्रा विषम ज्वर मनोविकार, कृमि इनमें अवपीड़न नासयोग्य है १२ प्रधमनयोग्य मूर्च्छा अपस्मार संन्यासादि अचेतन रोगमें अत्यन्त तीक्ष्ण चूर्णादिकरि नासदेना १३ ॥ अथरेचन संज्ञक नस्य ॥ गुड़ सोंठि औटिके व अद्रकरस गुड़घोलि नासदे पीपरिसेंधा औटिकैदे तिस्से कान, नाक माथा, ठोढ़ी, कंध, गल, हाथ, पायँकीपीर अच्छीहोइ १४॥ पुनः प्रकार॥ महुयेकी छालका गाभा पीपरि वच मिरच इन्हैं पीस तप्त जलसे नासदेइ तो मृगी उन्माद सन्निपात अपतंत्र अज्ञान ये सबरोगमिटैं शरीरहलकाहो बुद्धिसावधानहोती जानना १५ ॥ पुनः तृतीयप्रकारः ॥ सैंधवश्वेत मरिच सरसों कूट ये सब छाग मूत्रमें पीसिनासदेने सेतन्द्रा नेत्रालस्य दूरहोइ १६ ॥ अथ प्रधमनस्य॥ सैंधव, बच, पीपरि मरिच, कंकोल, लहसुन, गूगुल, कायफर इनके चूरण रोहित मछरी के पित्तामें पुटदेइ एकनलीके मुहमेंधरि दूसरा मुख नाकमें प्रवेशि औषधकीओर से फूंकदेइ तौ तन्द्रादि अचेतनरोग नाशहो इसचूर्ण का प्रधमननाम है १७ ॥ अथ बृंहणनस्य विधान ॥ बृंहणकहे धातु को पुष्टकरै और बढ़ावै इस बृंहणनास की मात्रा बृंहणनस्यके दो भेदहैं एकमर्श १ दूसरा प्रतिमर्श २ येदोनों बृंहण हैं इनकेयोग्य मर्शमें तर्पणी नस्यकीमात्रा अष्टशाणकी मुख्य प्रमाण चारिशाण मध्यम मात्राका प्रमाणहै एकशाणहीन मात्राका प्रमाणहै ये तीन मात्राविषे और बातादि दोषका बलाबल विचारिकै रोगीकोबैठाइ बस्त्र उढ़ायनाकमें नासदेइ दो व तीनबार एक दिनकाअंतरदेकेदेइ व दोदिनका अन्तरदेकेदेइ व तीनदिनका अंतरदेकेदेइ व पांचदिन का अन्तरदेकेदेइ व सातदिनका अन्तर नस्यकर्म विचक्षण वैद्यकरै १८ जो मर्शसंज्ञक नाससे व रेचन संज्ञक नाससे कोई उपद्रव बढ़ै उसकायत्न कहतेहैं मर्श नासमें मात्रा अधिक दीजाय व रेचननास में मात्रा अधिक दीजाय तो मेदादिक धातु घटिजाती है तौअनेक उपद्रव उत्पन्न होतेहैं इस कारण से जो उबकाइ होतो और क्षयादिव्याधि हो तो बृंहण कहिये जो धातु बढ़ावै सो नाकमें देइ व खिलावै १९ बृंहणनस्य योग्य मस्तक रोग घ्राण, रोग, नेत्ररोग

सूर्य्यावर्त्तरोग,जो सूर्यकेचढ़तेबढ़ै और सूर्यके उतरेघटै आधाशीशी दांतरोग दुर्बलता कटि पीड़ा बाहु कन्ध पीड़ा मुखशोष कर्णनाद बातपित्त बिकार अकाल केशपाक और बालन का गिरजाना व इन्द्रलुप्त इन रोगिन में घृतादि स्निग्ध पदार्थ व शर्करादि मधुर इनकरिके बृंहणनास देना २ पक्षाघातादि परनास उड़द किमांच बीच मींगी रासन बरियारा एरंड की जड़ रोहिष तृण अश्वगन्ध इनका क्काथ करि भुनी हींग सैंधव डारि तप्त नासदेय तौ पक्षाघात कंपवाय समेत अर्दितवाय मन्यास्तंभ अपबाहुक इतनेबात रोगशमनहों २१ प्रतिमर्श नासकी मात्रा दोविन्दुरूपहै घृतादि स्निग्धपदार्थ द्वैद्वैबुन्द एकएकनथुनामेंदेइ इसे प्रतिमर्श नास कहते हैं २२ विन्दुसंज्ञा पिघलाघी व तेलमें छोटीअंगुरीबोरिकै उठानेसे जितना बुन्द टपकताहै उसेविन्दु कहतेहैं और आठबिन्दुको शाण कहतेहैं सोईशाणमर्शनासकी मात्राहै और प्रतिमर्शकी दोविन्दुकी मात्रा है २३ प्रतिमर्शकाल सबेरे दातूनकरके घरसे निकसलेपरिश्रम पर राहचलके मैथुन करके मूत्रमल त्याग के अंजन करके भोजनकिये पर सूर्य निकरते बमनांत में संध्या समय ये प्रतिमर्श देने के समय हैं २४ प्रतिमर्शनसे तृप्तलक्षण नासदेनेसे छींकथोरी आवै और स्नेह थूक मार्गद्वा मुहसे गिरपड़े तो शुभजानिये २५ प्रतिमर्शयोग्य॥ क्षीण धातु तृषित शुष्क मुख बालक बूढ़ा इनको प्रतिमर्शउचितहै और गलेके ऊर्ध्वरोगमें शिथिलको त्वचाकीझुरीं पड़नेपर पलित इनरोगन को प्रतिमर्शनास दूरकरै इन्द्रियनमेंबल होय २६ अकालेकेशपाकपरनास॥ बहेड़ा, नींब, खंभारी,हर्र, लसोड़ा, काकतुंडी इनके बीजनका तैल भिन्न २ काढ़ि नासदेइ तो बार कालेहोयँ २७॥ नस्यबिधि॥ पवन औ धूरि बर्जित स्थानमें मनुष्य दातूनकरि हुक्कापी गला मस्तक शुद्धकरि घाममें उतानापौढ़े पीछे शिरझुका नाक ऊँचीरहै हाथ पावँ फैलाइ कपड़ेसे आँख ढके वैद्य महीन धारसे एक २ ओर नासदेइ नस्यदेनेका पात्र सोने वा रूपे वा तांबे वा शीशेकाहोइ वा सीपीपत्र द्रोण वा कपड़े की पुटरी से नास देइ २८ नास लेनेवाला माथा न कँपावै क्रोध न करै बोलै

नहीं माखी मच्छ षट्कीड़ादि काटने न पावै हँसे नहीं ऐसे संयम विना नस्यद्रव्य प्रवेश नहीं होता खांसी आजाती है तो खराब हो मस्तकमें आँखिनमें कंठमें पीड़ाउत्पन्नकरतीहै ॥ नस्यसाधारणप्रकार॥ नासदेनेसे शृंगारकमें औषधि प्रवेशनार्थ पांच व सात व दशमात्रा ताईं नास धारणकरै जब मुहँमें उतरे तबपरे २ दहिनेबायें थूकदे सन्मुखथूकने से औषधि गिरजातीहै शृंगारक उसे कहते हैं जो नाकके दोनोंछेद भौंहतक पहुँचे दो गलेको चलेगये हैं एक दाहिनी एक बाईं भृकुटी के नीचेहो कपालको चलेगये हैं ३० नस्येवर्जित ॥ नासलेके संताप न करै धूरि क्रोध बैठना निद्रा सौ मात्रा ताईं इनसे वचै उतानापरारहै धुवां न पीवैथूक न लीले २१ नस्येशुद्धआदिभेद ॥ नास विषे तीनलक्षण शास्त्र कहते हैं शुद्धहीन अतियोग सो मैं संक्षेपकहताहूं ३२ उत्तम शुद्धयोग भयेसेदेह हलकी मनशुद्ध मुख नाक रंध्र शुद्ध शिररोग रहित चित्त इंद्रिय प्रसन्न ये शुद्धयोग लक्षण हैं ३३ हीनयोगलघुयोगभये देह में खजुरी गुरुत्व मुख नाकसे कफ गिरै राहीन योग लक्षण है ॥ अतियोग लक्षण ॥ मस्तककी मज्जा नाकसे गिरै वायु वृद्धि इन्द्री भ्रम माथ खाली हीन वृद्धि योग यत्न कफ वायु हारक द्रव्यकी भली भांति नासदेइ फिर घीका नासदेइ अतिस्निग्धलक्षण जोनस्यकर्मसे स्निग्धता अधिकहोतो कफ अधिकगिरै माथाभारी इन्द्रियभ्रम मनुष्य को रुक्षनास देना नासमें पथ्य अभिष्यंद्यान्न कहे दध्यादि भक्षण त्यागे सुष्टु आचारकरै पूर्वोक्त पंचकर्मसंख्याबमन विरेक नस्य निरूहवस्ती अनुवासनवस्ती येपंचकर्म हैं अथधूमपानछप्रकारके हैं शमन वृंहण विरेच कासहर वामन व्रणधूपन ये छःप्रकार जानना शमन धूमपानकी पर्य्ययसंज्ञा मध्यप्रयोगिक वृंहणपर्य्याय स्नेहन औ मृदु रेचनपर्याय शोधन औ तीक्ष्ण धूमे अयोग्यथकित भयभीत दुःखपीड़ित वस्ती किया दस्त आनेको रातजगेको प्यासे को मुख सूखनेवाले को उदर रोगी को शिर तपनेवालेको मिरगी रोगीको उबकी रोगीको अध्मान रोगीको पेटफूलने को उरुक्षत को पांडु रोगीको गर्भिणीको रुक्षको क्षीण को दूधदही सहत घृत

स्वरस मद्य मछरी इनके भोजन कियेको बालक वृद्ध इनको धूमपान योग नहीं और असमय धूमपान करनेसे उपद्रव उत्पन्न होते हैं धूमपानातिकालेकृत उपद्रव की चिकित्सा धूमपानसे भये उपद्रव में घी पिलावे नासदेइ अंजनकरै तर्पन करै अर्थात् शरीर तृप्ति करने को दाषकाजूसदे घृत उपरस दूधमिश्री घोलि पिलावै व इनका रस सहत युक्त पिलावै व और मधुर वस्तु व खटमिट्ठा पदार्थ दे तो धूम उपद्रव शांतिहो धूमपानावस्था समये धूम सेवन बारहबर्षसे अस्सीवर्ष पर्यन्तके मनुष्यको करावे जो धूमपान अच्छा बनै तो श्वास कास नाक बहना गले माथेकी पीर वात कफ जन्य विकार ये सब दूरहों धूमपान विषे उपयोगीकी प्रकृति अच्छे धूमपानभये चक्षुरादि इन्द्रिय और अन्तःकरण वात ये प्रसन्नहोती हैं और केश दन्त ठोढ़ी ये दृढ़ होती है ॥ धूमनलिकाविधान ॥ धूमपाननलि के तीन खंड होई व तीनठोर टेढ़ी हो छगुनियासी मोटी मटरसा छेदहो शमन धूमपानकी नली ४० अंगुल लम्बीलेइ मृदु संज्ञक की ३२ अंगुल लम्बी तीक्ष्ण संज्ञक की २४ अंगुल की कासघ्न की १६ अंगुल लम्बी व मनी संज्ञककी १० अंगुल लंबी औ ब्रणकेहे घाव में धूनी देनेकी १० अंगुल लंबी परन्तु ब्रण की नली पूर्वोक्त नलियोंसे महीन हो औ छेद कुलथी प्रबेश करने माफिक करहो लो ब्रणधूमि होयगा ॥ धूम पान ईषक विधान ॥ द्वादश अंगुलकी सीक छिलके समेत परद्रव्य कल्क चटाई छांह में सुखाई सीक निकर बकले कल्क लिप्त रहिजाई उसके छेद में घृतबोरि महीनबत्ती प्रवेशि जलाइ देइ दूसरा छोर मुह में ले धुवाँ खींचैं औ मुहसे धुवाँ छोड़ै और नाकसेपी मुहसे छोड़े बुद्धिमान् धूनी विधान दो सरवेले एक सम्पुट करै ऊपर छेद रहै उस छेदसे सम्पुटमें अग्नि धरि कल्क सुलगावे तब दुमहीननलीले एक सम्पुटके छिद्रमें दूसरे मुहसे ब्रणपर धुवाँदेइ ॥ कल्क धूमद्रव्यानि ॥ शमन धूम पानमें रालादि गणका कल्कदेई मृदुमें घृतादिस्नेह राल मिलाइ कल्क करिदेइ तीक्ष्णमें सरसों मधुवादि कल्क करि देई कासमें मरिच भटकटैयादि कल्क करिदेई बमन हेत च-

नींदिका धुवाँ देना व्रणमें नींब वचादि कल्क करिदेई वाग्भट्टोक्त एलादि गण उभय इलायची शिला रसकूट कसेरू मूल मकरा जटामासी खसरोहिष तृण व अगिया खैर कपूर कचरी किर्मानी अजवाइन तज तमालपत्र नागरमोथा चमेली केशर सीपी वाघनख देवदारु अगर केसर किमाच मूल गुग्गुल राल कपूर चम्पा पुष्प ये एलादि गण हैं ॥ वालग्रह निवारणधूप ॥ मोरपंख निम्बपत्र भटकटैया मरिच हींग जटामासी विनवर छागरोम केंचुरी विलारवीट हाथीदांत इन ग्यारहोंके चूरणमें घृत मिलाई घर धूपान्त करेसे सब वालग्रह पिशाच राक्षस उपद्रव और इन सम्बन्धी ज्वरनाश होइ ॥ धूमेपरिहार ॥ धूमपानसे परिहार रेचन नस्यसदृशकरना धुवाँ पीनेकी नली धातुमय व बांसकी में पिये ११ ॥ गंडूषकवल प्रतिसार विधिः ॥ गंडूष ४ प्रकारहैं स्नेहीक शमन शोधन रोपण योंही ४ प्रकार कवलभी हैं १ स्नेहिक गंडूष भेद चिकना उस पदार्थ स्नेहिकहै वायु प्रबलता में दीजे ठण्ढा पदार्थ शमनमें पित्त बिकार में कडुवा खट्टा उष्ण शोधनमें कफ बिकारमें ३ कषाये कटु मधुर तप्त करी रोपणमें देना व्रणादिमें ऐसेही कवलमें जनावा २ गंडूष कवल रीति जो गीलाकाढ़ा दे मुहँमेंभरि खूब गुलगुलावे उसे गंडूष कहैं जो कल्ककरि मुहँमें धर फेराकरै सो कवल है ३ ॥ उभयोर्द्रव्य प्रमाण ॥ गंडूषके क्वाथेमें द्रव्य कोल२ कवलमें कर्ष२ देना ४ गंडूष कवल योग्य अवस्था पांचवर्षके ऊपर सावधानकरि रोग निवारणार्थ कपालगला मुख कुल्लसेक तीन व पांच व सात दोषनाशतक गंडूषकरै ५ ॥ पुनि प्रमाण ॥ जब मुखमें कफ भरआवै व तीनों दोष शांतितक व नेत्रनाकसे जल टपकनेतक गंडूषकरै ६ ॥वातरोगेस्नेह॥ गंडूष तिल कल्क पानी दूध वा तैलादि स्निग्ध येदनापित्ते शमन गंडूष तिल नीलकमल घृत खांड़ दूध शहदयुक्त कुल्लेकरे से पित्त ज्यादह ठोंड़ी और मुखसे दूरहोय व्रणादिपर गंडूष शहदके कुल्ले करने से मुख क्षतरस अज्ञान चटकना दाह प्यास ये उपद्रव दूरहों मुख शुद्धहो ९ विषादिपर गंडूष घृत व दूध के कुल्ले करने से विषबिकोर चूने से फटा अग्नि से जरामुख अच्छाहो १० दांतलेए

पर तिल तेल से सेंधव युक्त कुल्ले करने से दांत हलना दूरहो मुख सोख परामुख सूखना औ फीका रहना कांजी के कुल्ले से शांति हो कफ दोष पर अदरख के रसमें सैंधव त्रिकुटा राई पीस मिलाइ कुल्ले करने से कफ दोष मिटै कफ रक्त पित्त पर त्रिफला चूरण शहत में डाल कुल्ले करे से कफ रक्त पित्त दोष मुख में न रहै मुख पाक पर दारुहर्दी, गुर्च, त्रिफला, दाष, चमेली पत्र, जवासा, समानले क्वाथ करि छठवां भाग शहत दे ठंढे कुल्ले किहे त्रिदोष मुखपाक मिटै गंडूष करने वाली द्रव्य प्रतिसारण अर्क कवल में भी देना कवल विधान ॥ केशर, त्रिजौरादि, सैंधव, त्रिकुटा, इन सबका कौरबनाइ मुखमें विलोवे तौ मुखकी कठोरता औ कफ वातकी अरुचि दूरहो प्रतिसारणप्रकार ॥ प्रतिसारण में तीन प्रकार औषधीदेनेकेहैं कल्क अवलेह चूरण जैसा मुखमें दोषदेखै तैसी औषधि अंगुली के अग्र भागमें से मुखके भीतर मले॥ प्रतिसारण चूरण ॥ कूट, दारुहर्दी, धव-पुष्प, पाढ़ा, कुटकी, हर्दी, तेजबल, मोथा, लोध इनका चूरण जीभ और दांतकी जड़में बारबार मल लार गिरावे तौ इस प्रतिसारणसें दांत पीड़ा रक्तगिरना ममूढ़ा सूजन दाह ये रोग दूरहों ॥ गंडूषादिहीन वृद्ध भये से उपद्रवके लक्षण ॥ हीनभये कफ अधिक आस्वाद अज्ञा-नता होतीहै अन्नसे अरुचि अति योगसे मुखपकना पिटिकाहोना मुखशोष ग्लानि ये उपद्रव होयहैं ॥ समगगंडूषलक्षण ॥ मुखव्या-धि नाश चितप्रसन्न मुख निर्मल हलका जीभको स्वाद ऐसा जानना अथलेपविधानम् ॥ लेपके तीन नामहैं लिप्त लेप लेपैन लेप दो-षघ्नहै विषघ्नहै वर्णप्रद है मुख लेपकहै मुखलेप सो तीन प्रकार है उसका प्रमाण तीन भांति है जो अंगुल भर मोटा लेपहो सो दोषघ्नहै पौन अंगुल मोटा लेप चढ़ावे सो विषघ्न है अर्द्ध अंगुल लेप वर्ण्यहै ऐसे तीन प्रमाणहैं औदालेप रोग हरताहै सूखाक्रांति हरताहै दोषघ्न लेप गदापुराना, देवदारु, सोंठि, सिरस, सहजन तुचा पांचौसमभाग कांजीमेंपीसि सूजनपर लेपकरै नवोसूजनदूरहो बहेड़ेकी मींगीके लेपसे दाह पीड़ा नाशहो ॥ दशांगलेप॥ सरसों, मुरेठी, तगर, लालचन्दन, इलायची, मांसी, हर्दी, दारुहर्दी, कूट, नेत्रबाला ये

दशौ समभाग चूरण करि पंचमांश घृत मिलाइ पानी में पीसि लेप करे सविसर्पविषदोष विस्फोटक सूजन दुष्टफूड़ा ये सब पराजय हो इसका दशांग लेपनाम है ॥ विषघ्नलेप बकरी का दूध तिल पीसि माखन युक्त लेपकरै व कारीमाटी तिलका लेपकरै विष सम्भव सूजन भिलाव सूजनदूरहो ॥पुनर्लेप॥ करियारी, अतीस, कटु दूधिया, कटुतुरई, मूरी तीनोंके बीज पांचों समान कांजी में पीसिकै कीटदंशपर बिस्फोटपरलगाये दोषमिटै ॥ क्रांतिकारकलेप॥ रक्तचंदन मजीठ, कूट, मालकांगनी, बटांकुरस, सूर ये सब समान जलमें पीसि लेपकरै व्यंगरोगमिटे क्रांतिबढ़ै ॥पुनः॥बीजपूरकी जड़ घृत मेनशिल गोमयरस मिलाइ लेपै कांतिबढ़े मुहासा व्यंगरोग ये सब दूरहोयँ तरुण पिटिकापर लेप जो तरुणमनुष्यके मुहपर छोटी छोटी पिरकी भरै वहतरुण पिटिकाहे ॥ लेप ॥ लोध धनियां तीनों समभाग पीसि लेपकरै तैसे गोरोचन मिरच पानीमें पीसि लगावे व सरसों बच लोध सैंधव समभाग जलमें पीसि लेपै येतीनप्रकार लेपलगाये से मुहपर की तरुणपन की पिटिका अच्छी होय ॥ व्यंगरोगपैलेप ॥ अर्ज्जुनकी छाल व मजीठव श्वेत घोड़ेके नखकी भस्मी तीनोंमें कोई द्रव्य शहत संयुक्त लेपकरै व्यंगरोग मिटै ॥ मुखपरकी झाईपैलेप ॥ मदार को दूध हर्दी घिस लगावै तो बहुतदिन की भई मुखपर की झाई निश्चय दूरहोय ॥ तारुण्यपिटिकपरलेप ॥ वट का पीला पत्र चमेली रक्तचन्दन कूट दारुहरदी लोध सब एकमें पीसि लेपै तो तरुणपिटिका व्यंग झाई दूर होय ॥ रूषीपरलेप ॥ पुराने तिल व उसकी लकड़ी कुक्कुटबीट दोनों गोमूत्रमें पीसि लेपकरै तो रूषी दूर होय ॥ पुनः प्रकारः ॥ खैर नींब जामुन तीनो छाल गोमूत्र में पीसि लेपकरै रूषानाशहो ॥ दारुणरोगपरलेप ॥ चिरौंजी, मुरेठी, कूट, माख, सैंधव ये पांचों समभावगपीसि शहत युक्त लेपकरै दारुण रोगमिटै पुनर्लेप॥ खसखस पीस दूध में लेपकरै व आमकी बिजुरी छोटीहड़ दूधमें पीसि लेपै तो दारुणरोग नाशहोइ इन्द्रलुप्त पर लेपन करूरा परवर की पत्ती कारस तीनदिनलेपै तो बादषोरा दूरहोइ ॥ पुनः ॥ भटकटैया शहत लेपकरै व घुंघुची के पत्र व फलका रस शहत लेप

करै व भलावा पत्र का रस शहत लेप करै तो बादषोरा दूर होइ केशबर्द्धनलेप ॥ गुखुरू तिल पुष्प समान चूरण करि समान घृत शहत में फेंटि लगावै तौ बारबाढ़ैं बारजमेपर हाथीदांतको जराइ रसौत औ बकरीके दूधमें पीसि लेपकरै जहां बार न होयथा हथरी में तो बारजमें तो और अंगमें क्या न जमेंगे रसौत बिधि निरूहण बस्तीमेंकहीहै ॥इन्द्रलुप्तपरलेप ॥ मुरेठी, कमल, दाख तीनोंघृत तेल गऊ के दूधमेंपीसि लेपकरै बादषोरा दूरहोइ ॥ पुनः ॥ चतुष्पद चर्म रोम,नख,सींग,हाड़ इनकीभस्म तिलतेल फेंट लेपकरै तो नष्टबार जमें॥ केशकृष्णकरण ॥इन्द्रायन के बीज का तेल पाताल यन्त्र से निकारि सफ़ेदबारपरलगावै तौ कालेहोजायँ ॥पुनः॥ लोहचून भंगरा त्रिफला, कालामाटी, ये छवों समान चूरणकरि ऊख रस में सानि मासभर राखि कुछ दिनों लेपकरै तो अकालके श्वेत बाल कालेहोइँ तृतीय ॥ आवँरा तीनहड़ दोबहेर एकआमकी बिजरी पांच लोहचून एक कर्ष ६ कड़ाहीमें अतिसूक्ष्म घोंटिकै उसीमें दिनरात्रि रहनेदेफिर लेपकरैतोश्वेतकेशकालेहों ॥चतुर्थ ॥ त्रिफलातिलपत्रलोहचूर्णभंगरा येसब समभागसे छगरीके मूत्रमें पीसि पकेबारपर लगाये कारेहों पंचमलेप ॥ त्रिफला, लोहचून, अनारकी छाल कमलनील येपांचो औषधपांचपल औभंगरेकारसछःप्रस्थनिचोरपूर्वोक्तद्रब्य एकत्रकरि लोहेकी कढ़ाईमें सूक्ष्मकरिघोंटै एकमासभरराखे तिसपीछे निकारै बकरीके दूधमें घिस श्वेत बारनपर लेपकरै जो सेण्डपत्ताबांधैराति भर बांधेरहै प्रभात स्नानकरते समय धोयडारै योंहीं तीनदिन लेप करनेसे सपेदबार कारेहोयँ ॥ अथलोमशातनप्रकार ॥ बारगिरानेकालेप ॥ शङ्खचूरनदो भाग, हरिताल एकभाग, मैनशिलअर्द्धभाग, सज्जी एकभाग ये सब दवाई पानीमें पीसि जहांकेबार गिरानेहों तहांलेप करै बाकी बारनको कपड़ेसे ढाकेराखै लेपके पहिले बार दूरकरिकै तब उसठौरमें यहलेपकरै सातबारकरै सबबारगिरैं फिरन होइँजैसे बार बनवायेपर यहरोम शातन अतिउत्तमहै ॥ पुनः ॥ हरतालशंख चूरणपलासक्षारदोदो शाण केलेके दण्डका पानीमें वक्राकपत्रके रसमें पीसि सातबार लेपकरैसे बारगिरजाइँ बारगिरानेको यहलेप

उत्तमहै ॥ सपेदकुष्टपरलेप ॥ पीरीचमेली, गजपीपरि, कसीस, विड़ंग, मैनसिल, गोरोचन, सेंधव छवो समभाग गोमूत्र में पीसि लेपकरे श्वेतकुष्ठ दूरहोय ॥ पुनः ॥ काकठोढ़ी, कूट, पीपरि, सब समान खरी मूत्रमें पीसि लेपकरे श्वेतकुष्ठ दूरहोइ ॥ सेहुआंपर लेप ॥ आंवरा, राल, जवाखार ये तीनों सौवीरनाम कांजीमें पीसि लेपकरे सेहुआं दूरहोय ॥ पुनः ॥ दारुहरदी, मूरीकेबीज, हरताल, देवदारु, पान येसब कर्षकर्षभर शंखचूरण, शाणभर सब पानीमें पीसि लेपकरे सिधमन जो सेहुआं सो दूरहोइ ॥ नेत्रलेप ॥ हड़, सैंधव, गेरू, रसोंत, चारौंसमान पानी में पीसि पलकपै लेपकरे सब नेत्ररोग जायँ ॥ पुनः ॥ रसोंत, सोंठि, मिर्च, पीपरि, चारोंसमान पानीमें पीसि गोलीबनाइ पलकपर लेपकरे इसअंजन नामिका लेपसे नेत्र कोरनिकी खजुरी औ गुहांज़नी जो पलककी कोरपर छोटी छोटी पिटकी होती हैं सो दूर होइँ ३६ ॥ खजुरीपरलेप ॥ चकोड़, विपात, कच्चीसरसों, तिल, कूट, हरदी, दारुहरदी, मोथा ये आठों समभाग मट्ठेमें पीसि लेपकरे खजुरी दाद विचर्चिका पायँफूटना येरोग न रहैं ३७ ॥ सूखीखाजपर लेप ॥ चोक, विड़ंग, सिंगरफ़, गंधक, चकौड़ बियाकूट, सेंदुर ये सातौंसमानले नीमपत्र, धतूरापत्र, पान, तीनोंरसनिकार जुदेजुदे पूर्वोक्तद्रव्य रसमेंपीसिलेपकरे सूखी खाज दाद बिचर्चिका पदफूटना खाजरक्त कुष्ठ ये सब नाशहोयँ ॥ पुनः ॥ छोटीहड़ सेंधव चकौड़बिया, कटसरैया पांचो मट्ठेमें पीसि लेपकिये खजुरी दाद दूरहोय ॥ रक्तपित्तपरलेप ॥ लालचन्दन, खस, मुरेठी, बरियारा, ब्याघ्रनख, कमलये छहोंसमभाग दूधमेंपीसि लेपकरे तो रक्तसम्बन्धी शिर के रोगमिटैं ॥ उदररोगपर लेप। सरसों हरदी कूट चकौड़बिया तिल येसब समान कड़वेतेल में पीसि लेपकरै शीत पित्तसम्बन्धी उदररोग दूरहोयँ ४१ ॥ वातविसर्पपर ॥ नीलकमल देवदारु रक्तचन्दन मुरेठी बरियारा येसमभाग दूधमेंपीसि घृत मिलाइ लेपकिये बातबिसर्प दूरहोइ ॥ पित्तविसर्पपर ॥ कमलनाल रक्तचन्दन लोध खस कमल कोकाबेली सरिवन आंवरा जंगीहड़ येसब समभाग पानी में पीसि लेपकिये पित्तबिसर्प हानि होइ कफबिसर्पपर त्रिफला पद्माक खस धावपुष्प कनेर नरटमूल

जवासा येसब समानले जलमें पीसि लेपकिये कफविसर्प हरै॥ पित्त बातरक्तपर॥ मरोरफली नीलकमल पद्माक सरसौंफूल इनकाचूरण सौबार धोया घृतमें फेंटि लेपकिये पित्त बातरक्त हानिहो॥ नाकरक्त स्रावपर॥ आंवरा घीमें भूंज कांजीमें पीसि लेपकिये नाकसेरुधिर गिरना दूरकरै॥ बातजशिरोपीड़ापर॥ कूट व मुचकुन्दपुष्प कांजी में पीसि रण्डतेलयुक्त मस्तकपर लेपकिये बातजन्य शिरोपीड़ामिटै॥ पुनर्लेपः॥ देवदारु तगर कूट सुगन्धबाला पांचौ समान कांजी में पीसि रण्डतेलमिलाइ माथेपर लेपकिये बातसम्भव शिरोपीरनाश होय॥ पित्तसम्भव शिरोरोगपर लेप॥ आंवरा कसेरू सुगंधबाला कमल पद्माक रक्तचन्दन दूबजड़ खस नरकट जड़ ये नवौं द्रव्य सम ले पानी में पीसि माथेपर लेपकिये पित्त सम्बन्धी औ रक्तपित्तसम्बन्धी मस्तकपीड़ा दूरहोय॥ कफसम्भव शिरोपीरपर॥ मेवड़ीबीज तुरंग बालछड़ मोथा इलायची अगर देवदारु जटामासी रासन रेंड मूलये दशद्रव्य पानीमेंपीसि गरमकरि माथेपरलेपै तो कफसम्बन्धी पीड़ादूरहोय॥ पुनः॥ सोंठि कूट चकौड़बीज देवदारु रोहिषविना अगिया खैर येपांचौद्रव्य समान गोमूत्रमें पीसि सुखोष्ण माथेपर लेपसे कफजन्यपीर दूरहोय॥ सूर्य्यावर्त्त आधाशीशीपर॥ सरिवन कूट मुरेठी पीपरि नीलकमल येकांजीमेंपीसि रण्डतेलयुक्त लेपकिये सूर्य्यावर्त्त आधाशीशी दूरहोय॥ शंखक अनन्त सर्वशिरोरोगपर॥ छतावरि नीलकमल दूब कारेतिल गदापुरैना पांचौ समानपानीमें पीसिलेपकिये शंखकअनन्त बातसब शिरकेमिटैं॥ पुनःबिधान॥ ज्ञानी वैद्योंकी सम्मतसे लेपका दूसरा बिधान कहताहूं एक प्रलेपाख्य दोप्रदेहक॥ इनकी उँचाईकेप्रमाण येदोनोंलेप भैंसेके गीलेचमड़े की मुटाईरहै सो गुणदायक है शीतवीर्य्य सूक्ष्म प्रवेश बाधारहित है औ दीपन प्रलेप जानो उष्ण प्रदेहक कफ बात हरताहै येदोनों लेप रोमदूरकराइके लगावै रोमदूरहोनेसे रोम मुख पुलके अच्छी तरह लेपगुण प्रवेश करताहै॥ लेपनिषेध॥ रात्रिको लेप न करै औ बाल का लेप सूखै नपावै क्योंकि सूखने से रोम उखरै तो देह में अधिक पीड़ाकरै॥ रात्रिलेपनिषेधकारण॥ रात्रिकोतम वेगसे शरीर

की उष्णता उफाइ रोम मुखपर आइ रहती है बिना लेप निकरि जाती है इसकारण रात्रिको लेपनकरै ॥ रात्रिकेलेपकीविधि ॥ रात्रि को लेप चतुरवैद्य निश्चयकरै जहां व्रणपकता नहीं चिरकालतक औ गम्भीर शोथहो व रक्त कफ सम्भवहो ॥ व्रणोपचार सप्तप्रकार लेपक्रम ॥ प्रथम लेप सूजनदूरकरनेको दूसरा जमेरुधिरको यथा-स्थान में पिघलाके फैलावने को तीसरा व्रणपरकी खाल को मृदु औ पतलीकरने को चौथाव्रण फोरके बहानेको पांचवां शुद्धकरने को जो पीव न बाकी राखै छठा घाव पूरने को सातवां घाव के चर्म को शरीर की रंगत करने को ॥ व्रणेवातशोथनिवारणलेप ॥ बिजौरा मूल, मांसी, देवदारु, सोंठि, रासन, अरनीमूल सब समान पानी में पीसिलेपकरै वातशोथ शांतिहोय ॥पित्तशोथपर॥ मुलेठी रक्तचंदन मुर्रा, नरकटजड़, पद्माक,खस, नेत्रवाला,कमल, आठौ समानपानी मेंपीसि लेपकरै पित्तशोथ दूरहोय॥ कफशोथपरलेप॥ पीपरि, सहिंजन छाल, बालू, व खांड़ हर्र ये पांचौ गोमूत्रमें पीसि गुनगुना ले लेप करै यह अदेहसंज्ञक लेप कफशोथ दूरकरता है॥ आगंतुक औरक्त-शोथपरलेप ॥ हल्दी, दारुहल्दी, रक्त व श्वेतचन्दन, हड़ दूब,गदा-पुरैना, खस, पद्माक,लोध, गेरू रसोंत येसब समभागपानीमेंपीसि आगंतुक औ रक्तजशोथपर लेपकियेसे दूरहोय ॥ व्रणपकानेपरलेप॥ सनकी जड़, मूरी, सहिंजनके बीज, तिल, सरसों, यव, लोहकीट अरसी ये आठौ समानले पानीमेंपीसि प्रदेहसंज्ञक लेपसे व्रणपकै गा ॥ व्रण फोरने पर लेप ॥ लटजीराकीजड़, चीतेकीजड़ व छाल सेहुँड़,मदारका दूध, गुड़, भिलावां, कसीस,सैंधव ये औषध दूना दूधमें पीसि व्रणपर लेपकियेसे व्रणफूटै ॥ पुनः ॥ करंज मींगी, भि-लावां, दंतत, मूलकीछाल, चीता, कनेर ये पांचौ कबूतरकी बीट व कुंज बीट व गीदरबीट में समान मिलाइ लेप करै फोड़ा फूटै तीसरा लेप ॥ सज्जी जवाखार दोनों लेपकरै व चोकको जड़कीछाल लेपकरै फोड़ाकेफूटैमें प्रबल है ॥ व्रणशोधन लेप ॥ तिल,सैंधव,मुरेठी नीमपत्र, हल्दी, दारुहल्दी, निशोथ ये सब सम भाग चूरण करि घी में घेपि फोड़े फूटेपर लगावै व इसके कल्ककी टिकिया बनाइ

घीमें छोडि जलावै जब टिकिया जलजाइ तब उतारि घी राखिछोडै टिकिया फेंकिदेइ ये दोनोंप्रकार व्रण शुद्धकरै ६९ ॥ व्रणशोधन रोपण पर लेप ॥ नीमपत्र, घृत, मधु, दारुहल्दी, मुरेठी, तिल ये सब पीसि लेपकिये व्रणशुद्धहोइकै पूरआवै ७० ॥ कृमिनिवारण लेप ॥ करंज नीम,बकायन तीनों पीसि कृमि स्थलमें भरै तो कृमि मरजायँ व लोहचुन व हींगपीसि भरै व हींग नीमपत्रभरै तो कृमिनाशैं ७१ ॥ व्रणशोधन रोपणपरलेपन ॥ नीमपत्र, तिल, दतूनिकी जड, सेंधव ये सबसमान पानीमेंपीसि शहतयुक्तलेपकिये व्रणशुद्धहोइकै पूरिआवै ७२ ॥ पेटपीड़ापर नाभिलेपन ॥ मैनफल, कुटकी,कांजीमें पीसि कुछ गरमकरि नाभिपर लेपकियेसे पेटशूल मिटै ॥ वातबिद्रधीपर ॥ सहिंजन छाल, बकाइनपत्र, अरंडमूल ये समपीसि सुखोष्णलेपकरे से बातबिद्रधी दूरहोय॥ पित्तबिद्रधीपर ॥ भिलावां,मुरेठी,शक्कर घीमेंलेप कियेसे व असगंध, खस, रक्तचन्दन, दूधमेंपीसि लपकियेसे पित्त बिद्रधी दूरहोय ७५ ॥ कफबिद्रधीपर ॥ ईंट, बालू, लोह कीट, गोबर गोमूत्रमें पीसि लेपकियेसे इस प्रदेहलेपसे कफबिद्रधी दूरहोय ७६॥ आगन्तुक बिद्रधीपर ॥ रक्तचंदन, मजीठ. हल्दी, मुरेठी ये सब समान दूधमेंपीसि चोट वा रुधिर विकारपरलेपकरे अच्छाहोय७७॥ बात गलगंडपर ॥ बेत,सहिंजन बीजसमानले जलमें पीसिशीतगरमप्रदेह संज्ञक लेपकरै तैसेही दशमूल पीसिलेपकरै ७८ ॥ कफगलगंडपर ॥ देवदारु, इन्द्रायन दोनों पीसि प्रदेहकलेप कफ गंडमालादूरकरै ॥ अपचीपर ॥ सरसों, नीमपत्र, भिलावां तीनो समभाग राखिकरि मेषके मूत्रसे लेपकरै अपची दूरहोय ८० ॥ गंडमाला अर्बुदगलगंड पर लेप ॥ सरसों औ सहिंजनकेबीज सनईकेबीज औ अरसी यव मूलीके बीज ये सब औषध समान भागले खटायेंभरा मट्ठेमें पीसिकै लेपकरै तो गंडमाला अर्बुद गलगंड ये रोग दूरहोयँ ८१॥ अपबाहुकपर लेप ॥ केवल बातपीड़ित कोईअंग अपने सोभाविक कर्म से पीड़ाकरै तहांके रोम दूरकरि घुघुती पीसि सुखोष्णलेप कियेसे अपबाहुक वायु बिशूची हाथकी गुद्रसी जंघाकी वायुसम्भव पीड़ा दूरहोय ८२॥ पीलपांवपरलेप ॥ धतूरा,अरंड,मेवड़ी तीनोंपत्ती गदा-

पुरैना, सहिंजनछाल, सरसौं ये छहोंपीसि अतिकालके भये पील-पांवपरलेपकिये अच्छाहोय ८३॥ अंडरोगपर॥ कालाजीरा, हाऊबेर, कूट अरंडमूल, खैरछाल ये पांचोंसमान कांजीमेंपीसि अंडकोशपर लेपकिये अच्छेहोय ८४॥ उपदंशकहे गरमीपर लेप॥ कनैरकी जड़ पानीमें पीसि इन्द्रियपर लेपे तो उपदंश सम्बन्धी असाध्य पीड़ा दूरहोय ८५॥ पुनः॥ त्रिफला कढ़ाईमें जराइ राखकरि शहतमें फेंटि लेपकरै गरमी के घाव शीघ्र पूरआते हैं॥ पुनः॥ रसोंत,सरसों,हड़ तीनों समानपीसि शहतमें घेपि उपदंश सम्बन्धी ये दवहिते व्रण परलेपकरै तो उपदंशको हरिलेइ ८७॥ अग्निदग्धपरले ॥ वंशलो-चन,पाकरि,रक्तचन्दन,गेरू,गुर्च ये पांचोपीसि घीमेंले जरेपैलगावै वा घी चौराई क्काथमें मिलाइ लेपकरै जरेकीव्यथा शांतिहोय ८८॥ पुनः॥ यवकीराख,तिलके तेलमें घेपिलगावै तौ दग्धव्रण पूरिआवै॥ योनिसंकीर्णलेप॥ पलाशफल, गूलरफल, तिलके तेलमेंपीसि शहत मिलाइ योनिमें लेपकरै दृढ़ संकुचितहो॥ माजू कपूर पीसि शहतमें फेंटि लेपकरै गिरीहोइ योनि तनिआवै॥ पुरुप इन्द्रियकठोर करनेका लेप॥ मिरच,सेंधव,पीपरि, तगर,भटकटैयाकेफल,लटजीराकेबिया, कालेतिल,कूट,यव उड़द, सरसौं, असगन्ध ये सबसम पीसि शहत मिश्रितकरि नित्यइन्द्रियपर मलाकरै तो इन्द्रियमोटीहोइ स्त्रीकेस्तन पर लगायाकरै तौ कठोर परजाय॥ और पुरुपके भुजदण्डपर औ कानपर मर्दन करनाभला॥ पुनर्लेपः॥ श्वेतफूलका असगंध,सेंधव दोनों सूक्ष्मपीसि चौगुना घृत घृतका चौगुना भेंड़ीकादूध एककरि आंचपर दूधजराइ घीछानि इन्द्रीपर लगाये इन्द्रीमोटीहोइ ९३॥ योनिद्रवलेप॥ इन्दूरनपत्र का रसले, पारा, रक्तकनैरके सोंटे सेघो-टि बार बार रस डार डार जबकजरी पीठीसम होजाइ तब इन्द्रीपै लेपि स्त्री प्रसंग करै तौ स्त्रीसुखपावै पहिले वीर्यपात करै॥ देहदु-र्गन्ध निवारनलेप॥ पान,कूट,हड़ पानीमें पीसि लेपकरै तौ दुर्गन्धदूर होय ९६॥ वशीकरनलेप॥ बच, कालालोन, कूट, हरदी, दारुहर-दी, मिरच ये सबसमानपानीमेंपीसि देहमें लोकबश होनेके निमित्त लगावै तौ अच्छाहै॥ मस्तकमें तेल लगाने की विधि॥ अभ्यंग कहें

तेलमर्दन परिसेककहें तेलचुपरना पिचुकहें रुईके पहलकोतेलमेंबो-रिमाथेमेंबांधे वस्तीकहें माथेमेंचौफेर चर्मबांधितेलभरै येचारिप्रकार हैं सो क्रमसे उत्तरोत्तर बलवान है शिरोवस्ती विधान अभ्यंगपरि-सेक पिचु ये तीनों सर्वत्र प्रसिद्धहैं औ शिरोवस्ती विधि औमात्रा इहां नहींकही सो अगले श्लोकमें कहेंगे ९९ ॥ शिरोवस्तीप्रकारः ॥ मस्तकपर औषध धारण करनी शिरोवस्ति कहते हैं बारह अंगुल चौड़ी हाथभरलम्बी शिरके समान डफाकार हरिण चर्मकीसीं लेइ दोनों ओर खुली ढील नहो सो माथेपर चढ़ाइ भीतरसे चारोंओर उर्दकी पीठीसे निस्संधिकरै फिर नीचे चढ़ेभये चमड़ेको अंगुलभर पीठीसेचारोंओरनिस्संधि करि सुखोष्णतेलभरै १०० ॥ शिरोवस्ति प्रमाण ॥ जबतकनाक मुख नेत्रसे जलनबहै व मस्तक व्यथानमिटैव सौमात्रातकवस्तीस्थितरहैमात्राप्रमाणअनुवासनवस्तीमें कहिआये हैं॥शिरोवस्तीकाल॥भोजन के प्रथमपांच व सात दिनशिरोवस्तीकरै॥ शिरोवस्ती पश्चात् कृतापली प्रमाण पूर्वक करिके उतारि सुखोष्ण जलसे माथाधोय नहाइ ॥ शिरोवस्तीगुण ॥ बात जन्य शिर कंपादि रोग दुर्जय दूरहोता है इससे वैद्यसदा इस रोगमें शिरोवस्ती क-रावै ॥ कर्णोपचार ॥ मनुष्य कोकुछ स्वेदकरि तुरंग गोमूत्र व तैल व स्वरस सुखोष्ण कानमें पूरै॥ कर्णे द्रव्य धारण प्रमाण ॥ कानकंठ शिर रोगोंके निवार्णार्थ सौमात्रा व पांचसौ व हजार मात्रातक राखै ॥ मात्राप्रमाण ॥ घुटनो परकी बजाते हाथघूमै चौफेर सौमात्राप्रमाण कर्णोपचार समय कानमें औषध भोजन के प्रथम रसादिक पूरैऔ तैलादि संध्यासमय १०८ ॥ कर्ण व्यथापर औषध ॥ अर्क वृक्षमें जो पत्ते पीले परजातेहैं तिन्हें खोजि उनपर घृतलगावै तबथोरीआगमें सेकलेइ जब गरमहोइँ तब निचोर कानमें छोड़े तौसबकर्णशूलदूर होइ ॥ पुनः ॥ छाग मूत्रमें सैंधवडारि कुछ तात करि कानमें पूरैतो कानकेभीतरकीपीठिका दूरहोय॥तृतीयऔ० ॥ अद्रककारस,मुरेठी,श-हत,सैंधव, आंवरा, तिलपर्णी दूबमें होती औगुखुरु कैसीसबसूरति पत्तीसमेतफली तिल सदृशहोती है वह तिलपर्णी है सरसोंकातेल सुहागा,नींबूकारस, ये सबपीसि कानमें डारै तो कानकी पीड़ादूर

होय ॥ चौथीऔ० ॥ कैथफलकारस, विजौरारस, अमल बेतकेरस विनाचूकरस, अद्रकरस, ये चारौं सुखोष्ण कानमें डारनेसे कर्णशूल नाशहोय ॥ पंचमऔ० ॥ मदारका कोमल ठिंगुसा, नींबूरसमें पीसि तिलका तैल, सेंधालोनमिलाइ गोला बांधि सेंहुड़के मोटे खण्डमें पोलाकरि गोलाधरै अच्छीभांति दावि उसीके पत्र लपेटि कपरौटि माटी चढ़ाइ मन्दआंचमेंपकाइ पुटपाक सदृश पकजाय तबनिकारि माटी कपड़ाउतारि कूटिकैरस निचोर लेइ फिर उसरसको सुखोष्णकरि कानमें डारै तौ कानकी दारुण शूल शांति होय १३ ॥ कर्ण शूल पर दीपिकतैल ॥ महापंचमूल की जड़ आठ अंगुल रुई व वस्त्र, लपेट दीपमेंबारि चिमटी से पकरि कटोरी में टपकावै वही गुनगुन तिल कान में डारे से कानकी तपक दूरहोइ ॥ महत्त पंचमूल ॥ वेला, रण्ड, टेटी, शिवनी, पाटल इनकी जड़को कहते हैं १४ ॥ पुनः ॥ टेंटुतेल,टेंटुमूल, पानीमें पीसि कल्क करि औ दुगुने तिल तैलमेंले समजल दे पचाइ जल जलाइ उतारि सहता सहता कान में डारने से त्रिदोष जन्य कर्ण शूल मिटै ॥ कर्णनाद परतैल ॥ मुरेठी,माष, असगन्ध, धनियां इन चारोंकाक्काथ औकल्क शूकरकी चरबी में पचाइ चरबी रहिजाइ तबकान में डारै तो कर्ण नादको निकारै ॥ कर्णनादरश्रेष्ठतैल ॥ सज्जी सूखी मूरी, हींग पीपरि सौंफ ये पांचो सम भाग चौगुणे तिल तैलमें समान सूक्त में पचावै जब केवल तैलपावै तो कानमें चुवावै तो कर्णनाद शूल बधिरत्व कान बहब इन रोगन को नशावै ॥ वधिरत्व पर अपामार्ग क्षार तैल ॥ लटजीरेकी राख चौगुणेपानीमें घोलि चनगोल निशि भरधरै प्रात निर्मल जलले चौथाई तैलदे पचाइपानी जराइ कानमें डारै तौ बधिरत्व मिटै सुननेलगै ॥ कर्णव्रणपरसम्बुकतैल ॥ घोंघे का मांस चौगुणे तैलमें लालकरि पचाइले वह तैल कानमें डारैतौ व्रणदूर करै ॥ कर्णश्राव पर औषधि ॥ पंचकषाय का चूरण कैथरस औ मधु मिलाइ कानमें डारैतौ कान बहना बंदहोय १२० पंचकषाय वृक्ष तेंदू, हड़, लोध, मजीठ, आँवरा, हड़, आंवरा फल बाकीकी छाल ॥ कर्णश्रावपरपुनः ॥ सज्जी बिजौरा रसमें घोटि

कानमें डारै कान बहना बंदहोय ॥ पुनः ॥ आंब, जामुन, महुवा, बरगद चारोंकीकोपलकी लुगदी, चौगुणे तैलमें जराइ तैल कानमें डारनेसे पीव बहना बन्दहोइ ॥ कर्णकीटपरतैल ॥ हरताल पीसि गौमूत्र व कटुतैल में मिलाइ कानमें देइ तौ कर्णजन्तुमिटैं ॥ पुनः ॥ सहिंजन मूलका रस, सूर्यमुखीकारस, सोंठि, मिरच, पीपरि पीसि बनबिमाच की जड़कारस, य सब मिलाइ फेटि कानमें छोड़ै तौ कर्ण कीटमिटैं १२५ ॥ अथरुधिरमोक्षप्रयत्न ॥ मनुष्यके शरीरमेंरक्त जन्य विकार से कुष्ठादि रोगजानि रुधिरनिकरावने का प्रमाणकहतेहैं प्रस्थभर व अर्द्धप्रस्थ व चौथाई प्रस्थकहैं कुडवभर १ ॥ रुधिर मोक्षणकाल ॥ देहसे रुधिर निकासनेसे त्वचापर के रोग फोडा फुंसी शोथादिक रोग दूरहोइँ। इसकारण शरदकालमें मनुष्य को रुधिर निकसावना उचितहै २ ॥ रुधिरगुण ॥ रुधिर मधुरहै लाल औ कुछगरमस्पर्श गरुआ चिकनादिसा पंचगन्धी पित्तसमान उष्ण यहलोहूका रूपगुणहै औ रक्तपंचत्वमयहै बिसायधी गंधपृथ्वीगुण गलापन जलगुण उष्णपर्स अग्नि गुण चलना बायुगुण लीनहोना औ श्यामता लालता आकाश गुण ॥ रुधिर दुष्टहोनेकेलक्षण ॥ रुधिर दुष्टमय देहमें पीडारक्त मण्डल खाज शोथदेहणाकसादर्द। रक्तबढ़नेका लक्षण ॥ रुधिरबढ़ै तौ देह और नेत्रलालरहैं औरनसें रक्तपूरितहो फूलजाती हैं देह गरूरहती है नींदबिशेष मददाह ये उपद्रव होतेहैं ॥ क्षीणरक्त लक्षण ॥ जिसके रुधिर शरीर प्रमाणसे घट जाताहै तिसकी रुचि खट्टे औमिट्टेपरअधिकरहतीहैऔरमूर्च्छा तुचारूखी शिथिल शरीर बायु ऊर्द्ध्वगामीऐसेजानो ॥ वायुकरि दुष्टरक्तलक्षण ॥ बायुकुपित रुधिर लालरंग फेनसहित रूखाकर्कसहलुक शीघ्रगामी पतला देहमें सुई समान कोचै ॥ पित्तकरि दुष्टरक्त लक्षण ॥ पित्तकुपित रुधिर पीला हरित नीला व कृष्ण पके आंबकी गंधितत्ता अथिरचींटी माखी न खाइ ॥ कफकरिदुष्ट रक्तलक्षण ॥ कफ कुपित रक्तका पर्स ठंढा चिकना गेरूकारंग मांस फुटका मिश्रित गाढ़ा अथिर होताहै ॥ दो व तीन दोष कुपित रुधिर लक्षण ॥ द्वैदोषकरि दूषित लोहूमें दो दोष के लक्षण पाये जातेहैं त्रिदोष दूषि-

तमें दुर्गन्धहोती है और सब्बलक्षण त्रिदोषके पायेजाते हैं औ कांजी सदृश रूपहोता है ॥ अतिदुष्टरक्तलक्षण ॥ कालेरंग रक्तऊपर चढ़िके नाकको रोहगिताहै आंबकीसी बासहोती है कांजी सदृश सबधातुनिको बहुत दुष्टकरता है ॥ शुद्धरक्त लक्षण ॥ शुद्धरक्त बीरबहूटी के रंग औ पतला होताहै पर्शमें उष्ण शीघ्रचारी ॥ रक्तमोक्षणयोग्य ॥ शोथमें दाहमें अंगपाकमें रक्तवर्ण अंगमें नाकसे बहनेमें बातरक्त कुष्ट कष्टसाध्य पीड़ा बात संयुक्तमें हाथरोगमें पीलपांउ वा बिषकरिगिरे रक्तमेंग्रंथि अर्बुद गण्डमाला क्षुद्ररोग अपचि रक्ताधिमंथ बिदारी कुचरोग देहजकड़ रक्ताभिष्यंदतन्द्रा दुर्गन्ध यकृत श्लीह बिसर्पबिद्रधि पिठिका गात्र ओठ नाक मुख कान पकनेमें माथे पीड़ा उपदंश रक्तपित्त इनरोगनमें रुधिर निकारना उचितहै ॥ रक्तमोक्षणप्रकार॥ सींगी जोंक तोंबी फस्त इनचारि करिके रक्तनिकरावै १५ ॥ शिरा छेदन अयोग्य ॥ दुर्बल बिषयी नपुंसक भीत गर्भिणी गोद बालकवाली पांडुवीबमनादि पंचकर्म कृती स्नेहादि कर्मकृती अर्शरोगी सर्बांग शोथी उदर श्वासकास उबाकी अतीसार अतिस्वेदी सोलहके भीतर सत्रहके ऊपर अवस्थावालेको अकस्मात् नाकसे रक्त गिरेको ऐसे मनुष्य अयोग्यहैं कदाचित् फोड़ा फुनसी हो तो जोंकलगावें ऐसे रोगियोंका बिषादि संयोगसे रक्त अतिदुष्टहो तो शिरा मोक्षण करैं ॥ दोषादिकमें रक्त निकारन विधान ॥ बायु दूषित रक्त सींगीसे लेइ पित्त दूषित जोंकसे लेइ कफदूषित तोंबीसे लेइ द्वै वा तीन दोषदूषित दुष्टरुधिर शिरछेदन करिलेइ॥ सिंगी आदिसे रुधिरखिंचनेका प्रमाण ॥ सिंगी जिस ठौरलगै तिस चारों ओर दश अंगुलताईका रक्त खैंचती है जोंक हाथभर ताईं तोंबी बारह अंगुल ताईं सूक्ष्मशिर अंगुलभरका औ मोटीशिरा जो सब नसोंको रक्तदेइ वह सब शरीरके रुधिर को शुद्धकरती हैं १९ ॥ शिरारक्तन देनेका यत्न ॥ जो नसें छेदके रुधिर भलीभांति न द्रवै तो कूट,चित्ता सैंधव समपीसि उस छेदपर रगरनेसे अच्छेप्रकार रक्तदेइगी २०॥ रक्तमोक्षणकाल ॥ न जाड़ाहो न गरमी हो न स्वेद कियेको न अति उष्ण शरीरको जो रक्त निकारै तौ प्रथम यवा गूदे तृप्तकरि लोहू

निकारै २१ अतिरुधिर स्राव जिसे स्वेदकिये व ऊष्मासे स्थूलनस
से रक्त अधिकआवै बन्दनहो तिसकेहित यत्न आगेवाले श्लोकमें
कहते हैं ॥ रुधिर न थमनेपर ॥ जो शिरामोक्षसे रक्त न बन्दहो तौ
लोध, राल, रसोत, तीनोंकाचूर्ण व यव, गोहूँका चूर्ण वा धव जवासा
गेरूकाचूर्ण व सर्पकेचुलि व रेशमी लत्ताका भस्म इनमें कोई वस्तुको
मुखपर बलकरि दाबदे उसपर चन्दनादि शीतोपचार करै जो इस
से न बन्दहो तौ उसके कुछ ऊपर बढ़िके फस्तदे व अग्निसमखार
उसके मुँहपर लगावे व अग्निसे दागदे तौ बन्दहोगा इससे क्यों
बन्दहो सो कहतेहैं लोधादिसे घाव मुख अमलाताहै शीतल लेप
से रक्त थँभताहै क्षारादिसे क्षत पचता है जलाने से नसका मुख
सिकुरताहै ॥ दग्धकृते रोगशांति ॥ जिसका दहिना अण्डकोश फूले
उसके बामे हाथके अँगूठे की जड़ दागै २४ जो बाम अण्डकोश
फूले तौ दाहिनेहाथके अँगूठेकी मूलदागै जो गूठ आरम्भमेंकरे तो
अवश्य अच्छाहोय और जिसे शीतरसहो उसके गोड़ेके तलके अ-
त्यन्तसेंके तो रसबाहनि औ कफबाहनीके मुखसिकजातीहै अग्नि
दीप्तहोतीहै ॥ दुष्टरक्ता अशेष न होनेपर दुष्ट रुधिर काढ़ने में कुछ
बाकी रहिजाय तो रोगभी कोपको न करेगा औ अशेषहोने व ज्या-
दह निकसनेसे उपद्रव उत्पत्तिहोते हैं अन्ध्यता आक्षेपक वायु तृषा
तिमिर माथेमें पीर पक्षाघात वायु श्वास कास हुचकी जरन पाण्डु
ये रोगहोतेहैं औ सब रुधिर निकसजानेसे मरनेका भी आश्चर्य्य
नहीं ॥ और रक्तसे शरीरकी उत्पत्तिहै और देहको आधारहै रक्तरहेन
से ज्वबत्व है इसीकारण बुद्धिमान् वैद्य रक्षा रुधिरकी करते हैं ॥
रुधिरमोक्षण पर दोषकोप ॥ रुधिर निकरे पर घावपर पित्तकोप दी-
से तौ शीतल चन्दनादि लेपकरै वायु कोप दीसे तौ व घावपर
सूजनहोइ पीड़ाकरै तौ सुखोष्ण घी लगावे ॥ रुधिरमोक्षणपरपथ्य ॥
जो रक्त निकासने पर निर्बल भयाहो तो हरिण खरगोस भेंड़ कृष्ण
मृग छाग इनका मांस खिलावे व साठीके चावर गौ दूधमें खीर
करि खवावे व गऊका दूध भात खिलावे ये पथ्य हितकारके हैं
२८ ॥ सम्यगरक्तमोक्षण लक्षण ॥ पीड़ा बिगत शरीर हलका उभरा

रोगदबै प्रसन्नमन ये सब लक्षणहों तो रक्तमोक्षण अच्छा भया॥
रक्तमोक्षणपर निषेध॥ परिश्रम मैथुन क्रोध ठण्ढे पानीमें स्नान बाहरजाना दोबार भोजन दिनमें निद्रा यवाखारादि खार खटाई कटुकत्यागै शोक बकना अजीर्ण और जिसमें जोरपरता दीखै सो न करै ३० ॥ अथनेत्रोपचार प्रकार॥ नेत्र रोगपर सातप्रकार औषध कहतेहैं सेंक आश्चोतन पिण्डी विडाल तर्पण पुटपाक अञ्जनइति १ सेंक विधान दूध घृत रसआदिक रोगीकी आंखें मुँदवाइ चार अंगुल ऊपरसे महीनधार दे औषध गिरावै इसे सेंक कहते हैं॥ सेंक भेद॥ बात दूषित नेत्ररोगमें स्नेहनसेंकदेइ रक्तपित्तपर रोपण सेंक कफपर लेपन सेंक दूध व घृतादि स्नेहनद्रव्यहै लोध, मुलेठी, त्रिफलादि रोपण द्रव्य है इन्हें दूध में पीसिले सोंठि मिर्च पीपरि लेखन द्रव्यहै आगे इनकीमात्रा कहतेहैं ३ स्नेहनसेंककी मात्राछःसै रोपण सेंककी चारसै लेखन तीनिसै मात्राताईं राखै ४॥ वाताभिष्यंदपरसेंक॥ अरण्डकेपत्र छाल मूल क्वाथ बकरीका दूध सुखोष्ण करि सेंके तो बातअभिष्यंद नेत्रसे दूरहोइ॥ पुनः॥ छगरीका दूध सैंधव डारि सुखोष्णकरि सेंके व हल्दी देवदारु सैंधवडारि छगरी पयमें सेंके तो अभिष्यंदबात विपर्य शुष्काक्षि पाकरोग दूरहोइ॥ पित्तरक्तपर और अभिघातपर सेंक॥ लोध मुलेठी दोनों समान घृतमें मिलाइ तप्तकरि सेंककरै तो पित्तरक्त बिकार अभिघातजनित दोष दूरहोइँ॥ रक्ताभिष्यन्दपरसेंक॥ त्रिफला, लोध, मुलेठी, शक्कर, मोथा ये सब समानपीसि ठण्ढेपानीमें सेंककिये रक्तअभिष्यन्द दूरहोइ९॥ रक्तअभिष्यन्दपर पुनः॥ लाख, मुलेठी, मजीठ, लोध, कृष्ण सामा श्वेतकमल ये सब पीसि पानीमें सेंककरै तो नेत्रनसे रक्ताभिष्यंद दूरहोइ॥ नेत्रशूलपर॥ सफ़ेदलोध घृतमें भूनि चूर्णकरि पोटरी में बांधि उष्णजलमें बोरि आंखिकी पलकनपर फेरै नेत्रशूल दूरहोइ॥ आश्चोतनविधान॥ आश्चोतन कहे बिन्दु चुवाउना आंखिखोलि दूध क्वाथ स्वरसादि द्रव पदार्थ दो अंगुली से बोरि आंखिमें चुआदेय इसको आश्चोतन कहते हैं सो निशा समय कभी न करै १२॥ लेखनादिश्चोतनमें बिन्दुडारनेकाप्रमाण॥ लेखन कर्म में आठ

बिन्दु नेत्रमें देइ स्नेहन में दशरोपण में बारह शीत काल में सुखोष्ण उष्ण काल में शीतल यह निश्चय है॥ वातादिमें श्चोतनयोग्य॥ बातरोग में तिक्त औ स्निग्ध श्चोतन करै पित्त रोगमें मधुर शीतल करै कफ रोग में कटु उष्ण रुक्ष करै ऐसे आश्चोतन हितकारक है॥ आश्चोतन मात्राप्रमाण॥ मनुष्य आंखि खोलि बन्द करै व चुटकी बजावै व गुरु अक्षर उच्चारै इतने काल को वाङ्मात्रा कहते हैं सो सर्वत्र आश्चोतनमें हित प्रदहै १५॥ नेत्रे वाता भिष्यन्द पर आश्चोतन॥ विल्वादि पंचमूल भटकटैया रेंड़ी सहिंजन इनकी जड़का क्वाथले नेत्रनिमें बूंद चुवावनेसे अभिष्यंद दूरहोइ। बात औ रक्तपित्त पर नीमकी पत्ती पानी में पीसिलोध की छालपर लेप करि आगमें सेंकपीसिलेइ उसके रसकी बूंद नेत्रमें चुवावे तौबात से रक्तपित्तसे उत्पन्न अभिष्यंद दूरहोय १७॥ सर्बाभिष्यंद पर आश्चोतन॥ त्रिफला क्वाथ सुखोष्णनेत्रमें चुवावै तौ सब अभिष्यंददूरहोइ १८ रक्तपित्ताभिष्यंदपर चोत्तस्त्री का दूध नेत्रमेंचुवावै तौ बातरक्त पित्तजन्य नेत्रपीर दूरहोय। दूध घृत मिलाय अकेला घृतनेत्रमें चुवावे तौ बातरक्त जनित नेत्रपीर दूरहोइ१९॥ पिंडी बिधान॥ औषध बांटि पिंडीकरि नेत्रनपरधरि पट्टीसे बांधिदेइ इसे पिंडी औ कबलिका कहते हैं। सो अभिष्यंद पर औक्षतपरबांधते हैं २० नेत्राभिष्यंद पर शिरोरेचन जिसेकफ कृत अभिष्यंद औ अधिमन्थ ह्वो सो मस्तकमें तैललगाइ पसीना निकराइ नासलेइ यह मस्तक शुद्धकरनेको नीकाहै॥ सर्बाधि मन्थपर॥ सब अधिमंथ में शिरकी फस्तले असैमन्थमें भौंहदग्धकरै तौ आरामहोइ २२ अभिष्यंदादिपर सर्बाभिष्यंदमें कहीद्रब्यका कल्कनेत्रपर बांधे बाताभिष्यंदमें चिकनी औ उष्णद्रब्यकी पिंडीबांधे। बात औ पित्त अभिष्यंदपर रेंडमूल व छाल व पत्रपीसि पिंडीकरि नेत्रपर बांधनेसे बाताभिष्यंद दूरहोइ आंवरेकीपिंडी बांधनेसे पित्ताभिष्यंद दूरहोइ॥ पुनः॥ पित्ताभिष्यंदपर बकाइनके फलकीपिंडी बांधेसे पित्ताभिष्यंद दूरहोइ। कफाभिष्यंद पर सहिंजन के पत्रकी पिण्डी बांधे कफाभिष्यंद दूरहोइ। कफ पित्ताभिष्यंद पर निम्ब पत्र वा त्रिफलेकी

पिण्डीबांधे से कफ पित्ताभिष्यंद दूरहोइ २७ रक्ताभिष्यंदपर लोध कांजीमें बांटि घृतमेंभूँजिपिण्डीकरि बांधेसेरक्ताभिष्यन्ददूरहोइ २८ नेत्रशोथ औ खाजपर सोंठि नीमपत्र थोरासासैंधवमिलाइ गुनगुनी पिण्डी बांधे नेत्रसूजन खजुरी दूरहोइ ॥ बिडाल विधान ॥ आंखि मूँदि तले ऊपरकी पलकपर लेपकरै बरुनी बराइदेइ तिसे बिडाल कहैं इसकी मात्रा मुखलेपसमान जाने ॥ सर्वाक्षिरोगपर ॥ बिडाल मुरेठी गुरु सैंधव दारुहरदी खपरिया ये पांचों समान पानीमेंपी-सिलेपकरै तौ सबनेत्र अभिष्यंद जाइ ॥ पुनः ॥ रसौत जलमेंपीसि लेपकरै वा हड़ सोंठि रक्तकमल पत्र वा बच हरदी सोंठि व घीकार चिता व अनारपत्र वा बच हरदी सोंठि व सोंठि गुरु ये भिन्नभिन्न पानी में पीसि लेपकिये सबनेत्ररोग दूरहोइँ ॥ पुनः ॥ सैंधव लोध भूंजि मोम घीसें रगड़ अंजनकरि लेप भी करै तो वेगही नेत्ररोग अच्छे होयँ ॥ पुनः ॥ नींबूरस लोहपात्र में रगड़ गाढ़ाभये लेपकिये नेत्रबाधा हतहोइ ॥ अर्मलेपः ॥ भँगरेकेरस में मरिचकोरगड़ लेपकरै तो सब अर्मरोग नाशकरै यह राजप्रयोग है ॥ प्रतिसारण अंजन ॥ नासिका पिटिकी पर यह आंखिनकी कोरपर होती है इस पिटिकी पर वफारादे फोरि अँगुरीसे दाबै तिसपर मैनसिल इलायची तगर सैंधव पीसिशहतमें रगड़ लगावै तो पिटिकीको दूरकरै ३६ नेत्रसं-तुष्ट करनेको तर्पणकहे ॥ तर्पणयोग ॥ जो नेत्र रूखे सूखे कठोरता गु-रुता युक्तहों झरित बरुनी शिरउत्पाति कृच्छ्रोन्मीलन कहे जल्दी पलकैं लगैं तिमिर अंजन फुल्ली अभिष्यन्द अधिमंथ शुक्राक्षिपाक सूजन बातसम्बन्धी और व्यथा ये रोग तृप्तयोग हैं ३७ ॥ तर्पण वर्जित ॥ दुर्दिनमें अतिउष्ण कालमें अति शीत कालमें चिन्ता परि-श्रमयुक्तको औ नेत्रउपद्रव शांति न होय ये तर्पण लायकनहीं ॥ तर्पण विधान ॥ जिसस्थानमें वायु गर्मी धूरि न जाइ इनके बचाउका ठौर रोगी उतानापौढ़े तब उसके नेत्रके चारो ओर जो हड्डी हैं तिसपर उरदकी पीठि ले मेड़बांधै जैसे कटोरी दिवाली होती है तब आंखि मुँदवाय उसमें टिघलाघी व औषधनका मंडकरि व सुखोष्णजल व सौबारकाधोयाघृत व दूधका फेन व नवनीत इनमेंसे कोई भरै कुछ

बेरमें धीरे २ पलकैं मिलमिलावै जिसमें सूक्ष्म सी औषध भीतर भी जाय ॥ तर्पण मात्रा ॥ जो पलक व पोटेके रोगपर तर्पणहो तोसौ वाङ्मात्राताईं औषध भरीराखै जो कफादिजन्य नेत्रमें कोई व्याधि होय तो पांचसै मात्रापर्यंत औषध थिररहै सफ़ेदीके रोगमें छःसैताईं काले डेलेके रोगमें सातसै ताईं रहै पुतरी रोगमें आठसै ताईं अधिमंथ व बातरोगमें हज़ारमात्रा ताईं औषध भरीरहै ॥ तर्पणेकफाधिकउपाय ॥ जो सनिग्ध तर्पण से कफ उत्पन्न हो तो यव पीसि धूमपान करावै कफ शोधन करै ॥ तर्पणेदिनप्रमाण। तर्पण एक दिन व तीन दिन व पांच दिन करै ॥ सम्यक् तर्पण लक्षण ॥ तर्पण अच्छा हो तो सुख से सोवै जागै नेत्र निर्मल हों कान्तिबढ़ै दृष्टि शुद्ध हो रोग नाश पलकैं हलकी ये लक्षण अच्छे तर्पण के हैं ॥ अतितर्पणलक्षण ॥ अति तर्पण से नेत्र पानी बहावैं भारी रहैं चिपचिपाई ॥ हीन तर्पण लक्षण ॥ नेत्र निस्तेज लाल माड़ायुक्त या रोग शांति ४५ ॥ नेत्ररुक्षस्निग्धयत्न ॥ जो नेत्र चिकनेहों तो रुक्ष उपायकरै रूखेहों तो स्निग्ध उपायकरै ४६। पुटपाककी रीतिकहते हैं। हरिणादि मांस २ पल महीनकरि एकपल घृतादि स्निग्ध मिलाइ एक पल सूखी औषध दूध व द्रव्यपदार्थ कुड़वभर ये सबमिलाइ गोलीबांध यथा कर्पपत्रसे वेष्ठितकरि कपरौटी माटी जराइ पुटपाक करलेइ तब गोली निकास रस निचोरै नेत्रपर मेषलाबांधि रसभरै ॥ नेत्रपुटपाकरसधारणविधान ॥ पुटपाकरस व स्नेहलेखन व रोपण भेदकरि ये तीनप्रकारहैं रोगीकोउताना खुलाइ नेत्रखोलिकै भीतरडारै ४८ ॥ स्नेहादिभेदपुटपाकक्रिया ॥ रूखेनेत्रपरचिकनाचिकने पर रूखा पुटपाककरनासबल दृष्टिपर रोगण पुटपाक योग्यहै जो नेत्र में दुष्टरोग व रक्त पित्त व्रण व बायु उपद्रव हो तो आनेवाले श्लोकमें कहे द्रव्यका वेग पुटपाक करै स्नेहन पुटपाक घृतमें हरिणादि मांस बसा मज्जा मेदा और स्वादौषध काकोल्यादि गणका चूर्ण सब एक करि पीसि गोलीबांधि पुटपाककरि रसले नेत्रमें देय दोसै मात्रातक राखै इसे पुटपाककहै ५० ॥ लेखनपुटपाकयथोचित ॥ करेजी, मांस, लोह चून, तांबा, शंख, मूंगा, सैंधव, समुद्रफेन, क-

सीस, सुरमा बकरीके दहीका पानीपूर्वोक्तरीतिपुटपाकरसनेत्रदे सौ मात्राताईं राखै यह लेखनपुटपाकहै ॥ रोपणपु० ॥ स्त्रीका दूध मृग मांस, मधु, घृत, कुटकी ये सब मिलाइ पुटपाककरि रसले आंखिमें देय यहरोपण पुटपाकहै तीनिसै मात्रातक राखै जो पुटपाक न्यूनाधिक होय तो नेत्र भारी रहैं औ निस्तेजका दोष उत्पन्न होय तब कहेहुये सदृश तर्पण क्रिया करै तो पूर्ववत् होय ५२ ॥ संपक्वदोषमेंअंजन ॥ जिसकी आंखिमें दोष भलीभांति पकचुका हो तो उसके नेत्रमें अंजन लगाना फिर पांचवेंदिन लगावै साधारण में हेमन्त शिशिर ऋतुमें मध्याह्नमें लगावै ग्रीष्म शरदमें पहरदिनचढ़े और पहरदिन रहे लगावै वर्षामें बरसता न हो बदरी न हो ऊष्मा अधिक न हो तब लगावै बसन्तमें सबसमय अंजन लगाना हितहै ॥ अंजनभेद ॥ अंजन तीन प्रकारकाहै लेखन रोपण स्नेह सोतीक्ष्ण औ खट्टा दोरसलेखन अंजनजानना कषाय कटु स्नेहयुक्त दोरसरोपण जानो मधुररस स्नेहयुक्त प्रसाद न कहे स्नेह न जानो ॥ अंजनप्रकट गोली ॥ अंजनरस अंजनचूर्ण अंजनगोलीसे रसांजनश्रेष्ठरसतेचूर्णांजन श्रेष्ठ ये एकसे एक उत्तमहैं सो सलाई व अँगुलीसे लगावै ५५ ॥ अंजनअयोग्य ॥ थकित रोनेवाला भयभीत मद्य पिये नवीन ज्वरी अजीर्ण मूत्रादिरोधी इन्हें अंजन अयोग्य है ५६ तीक्ष्णांजनकीबती मेंबड़ी बीजसम मोटी बनावै मध्यममेंडेढ़बीजसम मृदुमेंदोबीजसम गीलेअंजनमें मात्रा तीन बिड़ंग सम उत्तमहै द्वैबिड़ंग सममध्यम है एकबिड़ंग समान छोटीमात्रा है ॥ शुष्कवैरेचनांजन प्रमाण ॥ वैरेचन अंजनसलाईसे नेत्रमें दोबारदेइ मृदु अंजनका चूरण तीनबारफेरै घृतादियुक्त चूर्ण चारिबारदेइ वैरेचनकहे तिसके लगानेसे नेत्रन से पानीगिरै ५९ ॥ शलाकाप्रमाण ॥ पत्थर वा धातुकी सलाई आठ अंगुलकी मृदंगाकार मुख दोनों तिल समान महीन अति चिकने लेखन शलाका प्रमाण लेखन सलाई तांबे व लोहेकी बनावै स्नेह अंजनकी सोने व चांदीकी बनावैं रोपण मृदुतासे अँगुलीबोरिनेत्र में आंजै ६१ ॥ अंजन समय ॥ अंजनसन्ध्या व प्रभात काल करै सहजसमय न करै न अतिशीत न उष्णकालमें न अतिबायु में न

बदरीमें अंजन करै औ नेत्रमें काले भागकेतरेकरै॥ चन्द्रोदयावर्त्ति॥ शंखवेंदी, बहेरेकी मींगी, हड़, मैनसिल, पीपरि, मिर्च, कूट, बच ये आठो समभागले बकरीके दूधमें घोंटि यव भेरि मेवड़ीबीजसम बटी बनाइ पानीमें रगड़ि नेत्रमें आंजे तो तिमिर मांसवृद्धि कांच त्रिट पटलरोग अर्बुद रतौंधी वर्षभर की फुल्ली ये सब दूरहोयँ॥ शुक्रादिकपरलेखनबरती॥ ढांक के फूलकारस, करंजकीमींगी कई बार घोटि २ यव स्वरूपबत्ती बनाइ पानीमें रगड़ि नेत्रमें आंजै तो फुल्ली मांसवृद्धि इनको दूरकरतीहै जैसे शस्त्रसे शुद्धहोजाती है ६४॥ पुनः॥ समुद्रफेन, सैंधव, शंख, मुर्गकेअंडे का छिलका सहिंजन बीज ये पांचो समान महीनकरि जलमें पीसि गोलीबांधि सुखाइ पानी में घिसि अंजनकरै तो शस्त्रादिक का कुछकाम नहींरहता॥ लेखनीदंत वर्त्ती॥ हाथी, घोड़ा, ऊँट, बराह, बैल, बकरा, खर इन सातोंके दांत शंख मोती समुद्रफेन इनसबका चूर्णकरि जलमें पीसि गोलीबांधि सुखाइ पानीमें घिसि अंजनकिये से फूली गिरिजाइ॥ तन्द्रानिवारण लेखनीबर्ती॥ नीलकमल, सहिंजन बीज, नागकेसर ये तीनों सम अति महीन पानीमें पीसि गोलीकरि सुखाइ पानी में घिसि आंजे तो तन्द्रा दूरहोइ॥ रोपणीकुसुमवर्त्ती॥ तिल, पुष्प, अरसी, पीपरि दानासाहि, चमेलीपुष्प ५० मिर्च १६ इन्हें महीनपीसि डेटमें बड़ी बीज तलपबटी बनाइये इसे कुसुमिका वर्त्ती कहैं इसे आंजे तिमिर अर्जुन फूली मांसवृद्धि सब दूरहोयँ॥ रतौंधीपरबर्त्ती॥ रसोत, हल्दी व दारुहल्दी, चमेलीपत्र, नीमपत्र ये पांचो समान गोबरके पानीमें गोली बनाइ आंजनेसे रतौंधी नाशहोइ॥ नेत्रश्रावपरस्नेह वर्त्ती॥ आंवरामींगी १ भाग बहेड़ामींगी २ भाग हड़मींगी ३ भाग जलमें महीन पीसि दो मेवड़ीबीज सम गोली करि पानी में घसि आंजैसे पानी बहना औ बातरक्त जन्य पीड़ामिटै ७०॥ रसक्रिया॥ तूतिया, सोनामाखी, सैंधव, मिश्री, शंख, मैनसिल, गेरू, समुद्रफेन, मिरच ये नव समभाग सूक्ष्मपीसि शहत मिलाइ गोली बांधि अंजन करैसे पलक रोग तिमिर अर्मकाच बिन्दु फुली येरोग दूरहोयँ ७१॥ शुक्रपरक्रिया॥ बटदूध, शुद्ध, कपूर, पीसि अंजन

किये दोमासकी परी फूली दूरहो ७२ ॥ तन्द्रापर लेखनी रस क्रिया॥ शहत औ घोड़े की लारमें, मरिच घासि अञ्जन किये तन्द्रा दूर हो ७३ ॥ पुनरांजन ॥ चमेली, पुष्प, मूंगा, मरिच, कुटकी, वच,सैंधव ये सब समानले छाग मूत्रमें गोली बांधि लगावै तो तन्द्रानिवारण हो ७४ ॥ सन्निपात पर लेखन रसक्रिया॥ सिरस बिया, पीपरि मरिच, सैंधव, लहसुन, मैनशिल, वच सातौ समान ले गोमूत्र में पीसि आंजे तौ सन्निपात शांतिहो सावधान हो ॥ नेत्रदाह पर रसक्रिया ॥ दारुहल्दी, परवर, मुरेठी, नींव,पद्माष, कमल सातौ सम भाग कूटके चौगुनेपानी में क्राथकरि चौथाईरहे उतारिछानि फिर औटाय गाढ़ा हो सिराय मधु मिश्री मिलाइ अञ्जन करै तौ नेत्र जल बहना रक्त विकार नेत्र के रोग दूरहोइँ ७६ ॥ बहानि रोग पर रस क्रिया ॥ रसौत, राल, चमेलीपुष्प, मैनशिल, समुद्रफेन, सैंधव गेरू, मिर्च आठो समभाग शहतदेके अंजनकरै तौ वलकरोग वर्म चिचियाहट औ खाज ये सबदूरहो ॥ औ पलझरता न हरै फिर जमें ७७॥ तिमिर रोगपर रोपनी रस क्रिया ॥ गुरुचका रस कर्षभर, मधु, सैंधव मासे मासे भर सब सूक्ष्म पीसि अंजन करै तो पिल्लार्म तिमिर कांचविन्दु खंजुरी लिंगनाश से पद वा कृष्णडेलले के सब रोग दूरहों ७८ ॥ अंजनान्ते अनोपान ॥ जो अंजन करै खाजहो तौ गदापूर्ण दूधमें घासि लगावै तौ खजुरी मिटै शहतमें लावे तौ जल बहना दूरहो ॥ घृत युक्तसे फूली दूरिहो तिलयुक्त लगाये से तिमिर दूरहो कांजी में लायेसे रतौंधी दूरहो जैसेसूर्योदय से अन्धकार दूरहो तैसे गदापुरैना से अनोपान सहाय से सब नेत्ररोग दूरिहो ॥ नेत्र स्रावपर रोपनी रसक्रिया ॥ वबूर पत्रका क्राथ अति गाढ़ाभये शहत मिलाइ आंजै तौ निश्चय नेत्रसे पानीजानाबन्द होय ८० ॥ पुनः नेत्र स्राव पर ॥ निर्मली फल पानी में रगरि लगावै तौ नेत्रसे पानी बहना बन्दहोय ॥ नेत्र शुद्धहोनेकेअर्थस्नेह की रसक्रिया निर्मली शहतमें घासि किंचित् कपूरमिलाइ आंजैतौ नेत्र अच्छेहोइँ ॥ शिरोत्पात पर रस क्रिया ॥ घृतऔ शहत मिलाइ अंजन करै तौ शिरोत्पात रोग दूरहोय ८३ ॥ धुन्धपर रसक्रिया ॥

सांपकी चरबी, शंख, निर्मली ये सब खरलकरिआंजै तो अंधियारा दिखाई देना दूरहो ॥ लेखन चूर्ण अंजन ॥ मुर्गेके अण्डेका छिलका सपेद कांच, शंख, चन्दन, सैंधव ये छयोसमान अंजनकरि आंजनेसे फूली मांसार्मादिनाशहोय ८५ ॥ रतौंधी पर चूर्ण ॥ छागके करेजे में पीपरि धरि पकाइ पीपरिले उसी मांसके रसमें रगरिआंजै रतौंधी न रहै ॥ कंडू आदिपर मरिच अर्द्धशाण पीपरिसमुद्रफेन दो दो शाण सुरमा नवशाण ये सबद्रव्य चित्रानक्षत्रमेंले महीन सुरमा बनाइ नेत्रमें आंजनेसे आंख खजुवाना कांच विन्दु कफजन्य पीड़ा मल इनसे नेत्र शुद्धकरै ८७ ॥ सर्वनेत्र रोगपर मृदुचूर्णांजन ॥ खपरियाले अति महीन खरलकरि बासन में पानी भर घोलि घंघोइदे पानीनितरि और पात्रमेंभरि आंचमें जराइके खरचिले इसी खरल में डारि त्रिफला क्काथकी तीन भावनादेइ तब उसका दशवां अंश कपूर मिलाइ फिर घोटैसो नेत्रमें आंजेसे सबरोग दूरहोय नेत्रसुख पावै ॥ सर्वाक्षि रोग पर सौवीर अंजन ॥ सुर्मा सातबार लालकरि तपाइ त्रिफलाक्काथमेंबुझाइ वैसेही सातबार स्त्रीकेदूधमेंबुझावे अति महीन पिसाइ नेत्रांजन करेसे सबनेत्ररोग दूरहोइ ॥ यहनेत्रनिको निस्संदेह हित कारक है ८९ ॥ शीश शलाका विधान ॥ त्रिफलाक्काथ भंगरारस सोंठि क्काथ इनकी पुटदिया शीशा गलाइ गलाइ घी गोमूत्र शहत छगरी दूध सबनिमें सात २ बार बुझाइ शलाई बनाय नेत्रमें फेरनेसे सबरोग दूरहो॥ अतःपर और अंजनादिभी इस्से लगानाभलाहै ९० ॥ प्रत्यंजन बिधि ॥ जब शीशशलाकाफेरने से दोष दूरहोके नेत्रसे आंशू गिरते हैं तिसके पीछे शीतलबड़ेपात्र भरि शिरबोरि उसपानी में आंखिखोलि खोलि देखै फिर नेत्र धोइ प्रत्यंजन लगावै सो आगे कहैंगे ९१॥ सदोषनेत्रपर निषेध ॥जिसनेत्र में दोष बाकीहै तोनेत्र धुवावैक्योंकि तीक्ष्णअंजनकरनेसे संतप्तहो तिसे प्रत्यंजन व प्रसादन करै सो कहते हैं ९२ ॥ प्रत्यंजन चूर्ण ॥ शुद्धशीशा गलाइ समभाग शुद्धपारादे तबदोभाग सुरमादे उतारि लेइ सब खरल करि दशवांअंश कपूरदे फिर घोटै इसेप्रत्यंजनकहैं इससे संपूर्ण नेत्ररोग नाशहोते हैं और यह आंखिकोअमृतहै९३॥

सर्प बिष निवारण अंजन ॥ भीतर का अंकुर दूर किया जमालगोटा नींबूरस में २१ पुटदे घोटि गोली बनाइ सर्पडसेकीआंखिमेंआंजे तो विषशांतिहो मनुष्यजिये ९४ जो मनुष्य नित्तप्रति तीनबेला शीतल जल से कुल्ले कियाकरै और मुख धोयाकरै औ नेत्रनिको सींचाकरै छीटे देकै व पात्र में जल भर नेत्र उन्मीलन कियाकरै उस मनुष्य की नेत्रबाधा कभी नहो ९६ ॥ अथ पंचकषाय क्वाथ ॥ पंच प्रकारका है जिसे काढ़ा कहैं स्वरस कहैं अंगरस १ कल्क २ क्वाथ ३ हेम ४ फांट ५ ये एकसे एक गुण में न्यूनहैं यथा स्वरस से लघुकल्क १ उत्तमभूमि से तुरतकी उखारी औषध जलबिना कूटिकै वस्त्रमेंडारि निचोरि ले उस रसको स्वरस कहतेहैं २ सूखीद्रव्य कुड़वकहे १६ तोलेकूटिकैदुगुनेपानीमें दिन रात्रि भिजोइराखै उस रसको भी स्वरस कहते हैं ३ जो द्रव्य हरी न मिलै तौ सूखीद्रव्य अठगुनेपानी में औटे जब चौथाईरहै तबलेइ ४ औदीद्रव्य का रस गुरुहोने से कार्य में आधापल लेना और सूखी द्रव्य रात्रिकी भीजी का रस हलकाहै इससे पलभरलेना ५ स्वरस व काढ़ा व यन्त्र का निकालारस इनमें शहत, शक्कर, गुड़खार, जीरा, लोन घृत, तेल, चूर्ण ये सब ८ मासे युक्तकरना ६ चारपल द्रव्य चौंसठपल जलमेंपकाय क्वाथ आधारहै अरु घनरूपहो तिसेयवागू कहैहैं ७ चारगुणा जलमें पकाय द्रव्यको वहकढ़ी समान व लपसी समान हो वह बिलेपीहो है वह बिलेपी वीर्य को बधावे है तृप्तकरै है रमणीक है अरु बिलेपी मीठीहो तो पित्तको हरैहै ८ व एकपल प्रमाण द्रव्य अल्प कूटकरि चौंसठपल जल में पकाय आधा बचै यह पानहोहै यह भोजनकी जगह दियाजावै है १० द्रव्यकल्कपलभर आठपल जलमें पकाया तिसे प्रमथ्या कहै हैं तिसका पान २ फलहै ११ द्रव कल्क पलभर सोंठि पिपली मासे ५ प्रस्थतोलजलमेंपके अरु द्रव्य सूपहो उसे यूषककहै हैं १२ पलभर द्रव्य १४ पलजलमें पकाया पतला अरु कम चिकनाहो उसे पेयाकहैहैं यह हलका है ग्राहिणीहै धातु पुष्टकरै है १३ यूष बलकरै है कंठमेंसुख दे है इसका हलका पाकहै कफको हरै है १४ पिलोयरस शहत युत

खानेसे सब प्रमेह नाशहो है औ आंवरे का रस हल्दी चूर्णशहत मिलाके खानेसे भी सब प्रमेह नाशहो १५ पुटपाकका रसलेते हैं इस से उसका यतन कहते हैं १६ कोई ओदीद्रव्यहो उसे पीसके गोला बांधै तिसपर बट खड व जामुनका पत्ता लपेटै फिर कपरोटिकर दो अंगुलमोटीमाटी लेसै तब अग्निमेंधरै जब लालहो तब निकारि के उसकारसनिचोरले उसे पुटपाकरस कहतेहैं तब ४ रुपैयाभररस शहत १ रुपयाभर युतपीवै अरु कल्क चूर्ण पतलीद्रव्य मिश्रितकरनीहोतो ८१ पुटरसके योग्यदेना १६ चारतोले कुटैयाकीछाल ताजी चावलके धोवनसे पीसकर गोलाबांध जामुनके पत्तेलपेटै फिर सूतसे बांधि गेहूंके आटासोंलेपकरि माटीलगावै तब गौ के गोसा में फूंकिदे जब अंगाराहोजाय तब आगसे निकार निचोर ठंढाकरि शहतडार पीवै तो बहुतदिनका कठिन भी अतीसारजावै २३॥ चावलधोवनकी क्रिया॥ चाररुपैया भर शुद्ध चावल अठगुने पानी में धोय वही धोवन सर्वत्रदेना २४ अठलू जो कटील व सोहनपत्ती कापुटपाक अग्निको दीपन करताहै जब शहत व मोचरसमिलाइ दे तो अतीसार जावै २५ चाररुपैया भर द्रव्य चौंसठरुपैयाभर पानी माटीके पात्रमेंभर मन्दाग्नि में औटै जब आठरुपया भरिरहै तब उतारिलेइ २६ कुछ गरमरहै तबपीवै क्वाथके चारनामहैं सृत १क्वाथ २ कषाय ३ निर्यूह ४।२७ आहारकारस पंकेपर वृद्धवैद्यके उपदेश से दोपल काढ़ापीवै २८ क्वाथमें मधुमिश्री डारनेका प्रमाण जो वायु प्रधानहो तो मिश्री थोरीदेना पित्त में अष्टमांश कफमें षोड़शांश शहत वायुमें षोड़शांश पित्तमें अष्टमांश कफमें चौथाअंशदेना २६ मन्थ भी फांटका भेदहै तिसकर यहींकहियेहैं चारपल शीतलजल में कुटाहुआ द्रव्यपलभरगेरै माटीके पात्रमें अच्छीतरह मथै तिसे २ पल प्रमाण पीवै ३१ कूटि द्रव्य पलभर एक कुड़व पानी माटी के पात्रमें अच्छीभांति तप्तकरि उतारिले उस कूटी हुई द्रव्यको गरम जलमेंडारि ढकदे जब ठंढाहो तब छानले इसे फांट कहते हैं ८ तोले फांटकी मात्राहै मिश्री शहत पुरानागुड़ जिस भांतिकाढ़ामें डारना कहाहै उसीभांति फांटमेंपड़ताहै ३२ कूटी हुई द्रव्य छःपलभर जल

में रात्रिको भिगोइराखै प्रात निचोरके काढ़िले इसे हिम कहते हैं शीतकषाय भी कहतेहैं इसकामात्रा कांटवत् २ पलकाहै यहसर्वत्र निश्चयजानो ३५ सूखीद्रव्य जलमेंपीसै ओदी निर्जल तिसेकल्क कहै हैं और प्रक्षेपकहते हैं मात्रादशमाशे १० कल्कमें मधु घृत तेल मात्रासे दूनादेना मिश्री गुड़ समान मात्राके अतिओदी पतलीचौ-गुनी ३७ द्रव्यकोक्काथसदृश औटावे फिर विशेषआंचदेइ जबकाढ़ा हो तिसे अवलेह कहै हैं अरु लेहभी कहै हैं इसकीमात्रा ४तोले है चूर्णसे मिश्री चौगुनीदेना गुड़दूना द्रवादि चौगुना यहसर्वत्ररीति है जब आंचदेनेपर तारबँधे और पानीमें पाककीबुन्द न बूड़ै न घुलै तब सिद्धजानै और अँगुरी से दबाने से कुछद्रवै तब सुगन्ध और रसादिडारै अनोपान इसका दुग्ध व ईषरस व यूष व पञ्चमूल क्काथ व बांसा क्काथ ये यथायोग्य हैं ४१ ॥ अथ आसवकल्पना ॥ उदकादिक द्रवबस्तुमें औषधदैके पात्रमेंभर मुखमूंदि मासभर रखनेसे औषध उत्तमहोयहै उसे आसव अरु अरिष्टकहते हैं आसव अरिष्टमें २ भेद हैं जहां अरिष्टमें द्रव्यकी तौल नहो तहां जलादि पदार्थ द्रोणभर दे गुड़ तुलाभर शहत अर्द्धतुला और द्रव्यकाचूर्ण गुड़कादशांश दे अरिष्ट सिद्धकरै। सिन्धुमंद्यभेद कहतेहैं जो कच्चे ऊषरसादि मधुर पदार्थ में सिद्धकरै उसे शीतरस सिन्धुकहिये जो पकाइ के रसमें सिद्धकरै उसे पक्वरस सिन्धुकहै हैं ॥ सुराप्रसन्नादिभेद ॥ धान चावल खमीरकरि अग्निबलयन्त्रसे उतारै उसे सुराकहिये सुराकेफेन को प्रसन्नाकहिये फेनरहित जो नीचेरहै उसे कादम्बरी व घनभीकहिये सुराके नीचे रहै उसे युगलकहिये युगलके घनभाग को मेदकसुरा कहिये मेदनपकानेसे जो सारनिकरै उसेसुराबीज व कण्वक्ककहिये ताड़ व खजूरकारस अग्नियन्त्र योगकरि व कच्चाले मद्य सिद्धकरै उसे वारुणी कहिये कन्द, मूल, फल, घृत, तेलादिस्नेह, लवण ये सब द्रव्य पदार्थमें अग्नि व यन्त्रयोगसे मद्यनिकरै उसे सूक्त क-हिये जो बिनष्टकहे चलितरसलोके खमीर सो खमीरउठी मद्य व तुरंत मधुद्रवमें द्रव्य चूर्णडारि सन्धितकरि मासभरकी उसे चुक्र कहिये व गुड़ पानी तेल कन्दमूल फल यहरीति पूर्बोक्तकरि मास

भरमें सिद्धकरै उसे गुड़सूक्तकहिये इसीप्रकार ऊषरसका और दाष का सूक्तहोताहै यव पानीसहित १ दिनसन्धितकरै उसे तुषाम्बुकहिये और यवगूरी पानीमेंरिभ्काय एकदिन सन्धित राखै उसे सौवीर कहिये कुलथी वा चावल पानीमेंसिभ्कावै उसे मांडकहिये उसमांडमें सुंठ राई जीरा हींग लोनडारि तीनचारदिन सन्धितराखै उसेकांजी कहिये मूरी उबाले पानी में हींग सरसों जीरा सींधा अदरख डारि चारपांचदिनराखै उसेसंडाकीकहिये इसभांति आसवअरिष्टबनता है जोअपक्क औषध व जलसे सिद्धकियाजाय वहमद्य आसवहोय है क्काथसेबनै वहअरिष्टहोयहै इनदोनोंका मान पलभरहै ५३ अति सुखीद्रव्य कूटिकै कपड़ेमें छानिले उसे चूर्ण व क्षोद कहते हैं इसके खानेकी मात्रा कर्षभरहै चूर्ण में गुड़समान खांड़ दोगुनी हींगभुनी हुई देना घृत शहतादि बस्तुदूनी दे चाटै और पीनेकी द्रव्य चूर्णके साथ चौगुनीदेना ॥ चूर्णअवलेहगुटिका अथवा कल्कचूर्ण अवलेह गुटिका ॥ इनका अनोपान बातमें तीनपल पित्तमेंदोपल कफमें एकपल दीजिये अनोपान देनेका कारण यह है कि जैसे तेल पानी में गेरने से फैलजाता है तैसे अनोपानके बलसे औषध प्रवेशकरतीहै औषध में किसीकी पुटदेनाहो तो जितने में चूर्ण पुटकी माफिक हो तितना देना भावनादेना हो तो चूर्ण बराबरिदेवै ऐसी वैद्यजनोंकी रीतिहै ५८ अबगोलीकहे हैं बटिका, गुटिका, बटी, मोदक, पिण्डी, गुंडी ये गोलीकेनाम हैं गुड़ और खांड़दे आगीमें पकावै जैसे अवलेहहो तब गुग्गुल चूर्ण उसीपात्र में डारि गोली बांधै बिना आगिके योगगुग्गुलसेभी गोलीबँधती है और गीलीवस्तु तथा शहतसे भी बँधतीहै मिश्री चौगुनी गुड़दूना चूर्ण लिखे प्रमाण देना गुग्गुल शहतबराबरदेना द्रववस्तु दूनीदेना सद्वैद्य यहीरीतिकरैं कर्षभर गोलीखानेका प्रमाणहै व देहबलदोष देखि खिलावै ६४ ॥ अथघृततेल साधना ॥ कल्कसे चौगुनाघृत व तेल और क्काथादि सबद्रव्यभी चौगुनीदेना तिसकीमात्रा पलभरहै जिसद्रव्यका क्काथदेनाहो तो चौगुने जलमें औटै चौथाईरहै उतारिछानिले उसमें घी तेल सिद्धकरै कोमलद्रव्यनमें चौगुनाजल कठिन द्रव्यनमें अठगुना जल अत्यन्त

कठिनमें सोलहगुना जल दे मध्यमसे अठगुना॥ पुनर्विधि॥ रुपया भर से ४ रुपया भर ताईं में सोलहगुना पानीदे क्राथकरै चौथाई रहे तब ग्रहणकरैं पलसे कुड़वताईं अठगुना प्रस्थसे खारीतक चौगुनापानी देना और जो केवल कल्क पानी घी व तेलमें सिद्धकरै तो चतुर्थांश कल्क दे सेरभर तेल या ३ सेर कल्क और जो कल्क काढ़ीके संग घी तेलपकावै तो घृत तेलका षष्ठांशकल्कदेना तीनपाव में आधपाव और जब कल्करसकेसंग घृत तेलमेंपकावै तो तेलका अष्टमांश कल्कदेना सेर में आधपाव घृत तेलका प्रमाणयहीहै दूध दहीरसमट्ठा इनमें अष्टमांशकल्कदेइ और कल्क भलीप्रकारपकाने के कारण चौगुनाजलदेना और जहां कल्क घी तेल क्राथपाथ पाँची होय तहां स्नेहादिक समान देइ पानी चौगुनादेइ जब सूखीद्रव्य घृत तेलमें पकानीहो तो जलमेंद्रव्यपीस गोला वा कल्ककरि चौगुने पानीमें पचावे जो केवल काढ़ेमें कहाहो तहां उसीक्राथकी द्रव्यका कल्ककरि घृत व तेलयुक्त वहकाढ़ा चौगुना पानीदे पकाना तहां कल्करहितहो तो केवल द्रवबस्तु दूधपानी देकै पकाना जबफूल के कल्क में स्नेह सिद्धकरै तब चौगुना पानीदेवे जब स्नेहसे स्नेह सिद्धकरे तब स्नेहका अष्टमांश दूसरास्नेहले पुष्पयुक्त पकायलेना जबवह स्नेहपाक अँगुरी नेत के मलेसे पत्तीबनजाय उसे आगिपर डारै और जलन से शब्द चिरचिराहट न करै तब सिद्धभया जानो तेलफेन उठनेसे सिद्ध जानिये घृतफेन शान्तिसे सिद्धजानिये जब गन्धआवै और निर्म्मलहोजाय और रस उत्पत्तिकरै तबतेल व घृत सिद्धभया जानिये स्नेहपाक तीनप्रकार का है मृदु मध्य खर जो कल्क मोमतुल्यरहै तो मृदुजानिये जोकल्कनिरसहो कुछकोमलरहै तो मध्यजानिये जो कल्क निरसहो और कठोरहोजाइ तो खर जानिये जो इसप्रमाणसे अधिकजरै तोजानो स्नेहबिगड़ गया अकार्थ गया जो कच्चा रहै तो सेवन करने से मन्दाग्नि करै अरु भारी है नाश लेने को गरम हितहै मध्यम सर्व्व कार्य्य साधक है खर मर्दन के योग्य है जहां जैसा चाहिये तहां वैसा बनावे तेल घृत गुड़ एकदिनमें साधैनहीं दिनान्तरदेकरै तो अधिक गुणकरै ८१॥

ज्वरप्रकारण ॥ ज्योतिष शास्त्रका अभिप्राय नीचराशिका सूर्य्य जिसकी जन्मपत्री में हो जब दशा आवै तब नेत्र नाशकरै अरु वर-शिरोरोगकरै अरु बन्धन करावै व ज्यादह पीड़ाहोवै व कुष्ठरोगहोवै अरु नीचराशि का चन्द्रमा भी अपनी दशा में पूर्व्वोक्त फल देवै २ और केतु की दशा के अन्तर में बुधकी दशाआवै तब बन्धुजनों का समागम हो अरु भूमि निमित्त मुक़द्दमाहो अरु देहमें पीड़ा व ज्वर व्याधिहोवै शनिके अन्तर में भी यही फल जानो तिसका दोषदूर करने वास्ते जप होमादिक करने योग्यहैं ४ सर्व्वज्वर कर्म्मविपाक देव द्रव्य हरने से नानाप्रकार के ज्वरहोयहैं ज्वर १ महाज्वर २ रौद्र ३ वैष्णव ४ ये होयहैं ज्वर आरामवास्ते रुद्रकेजपकरावै अरु महाज्वरशमनवास्ते महारुद्र के जपकरावै रौद्रज्वरमें भी महारुद्र के जप करवावै अरु वैष्णवज्वर में रुद्र व महारुद्रके जपकरवावै ज्वर कर्म्मविपाक जो पूर्वजन्म में क्रूर व खलहो वहदूसरेजन्ममें ज्वरपीड़ित नित्यरहै शीतज्वरी विपाक जोक्रूरकर्म्म व पाप कर्म्म व निन्दा इनकोसेवै तिसकेशीतज्वर निरन्तररहै इसकी शान्तिकेवास्ते जातवेदसे इसमन्त्र के दशहजार १०००० जप करवावै अरु ब्रह्म-भोज यथाशक्तिकरवावै व मदिरा व मांसादिककी बलि करवावै व १ हजार छिद्र के कलशसे देवता स्नानकरावै व १०० सौ ब्राह्मण भोजनदेवै व महादेव का अभिषेक करावै १० अथवा सहस्रधारा कलशसे महादेव का स्नानकरावै अरु जातवेदसे मन्त्रकाजाप अरु यथाशक्तिब्राह्मणभोजनकरावै ज्वर शान्तिवास्तेवेदपाठ सुनै वा श्रेष्ठ आचरणकरै वा ब्राह्मणकी तृप्तिकरै व परमेश्वरका स्मरणकरै शुभ-कर्म्मकरै वा दान द्रव्यकाकरै वा पीपलवृक्षकी परिक्रमाकरै वा श्रेष्ठ रत्नधारै वा दीन मनुष्य की रक्षाकरै ये कर्म्म आठविधि के ज्वरोंको नाशकरैहैं दृष्टान्त ॥ जैसेचन्द्रमा अन्धेराको हरैहै तैसे-अथभगवान् के सहस्रनाम स्तोत्र का पाठ सबतरह के ज्वरोंको हरैहै गणेश व गरुड़ व महादेव व सूर्य व देवी व कुलदेवता इन्हों का पूजन ज्वरको नाशकरै ज्वर निदानादि आदिमें नमस्कार रूप मंगलाचरण करै हैं निदानकी आदि में जगत् को उत्पन्न स्थिति प्रलय करनेहारा जो

शिवहै तिसे नमस्कारकरैहैं वह शिव स्वर्ग अरु मोक्षकाद्वारहै अरु त्रिलोकीका आश्रयहै अनेक मुनियोंके वचनसहित अरु उत्तमवैद्यों के नियोगसे रोगनिश्चय उपद्रव व अरिष्ट व निदान वा चिह्नसहित कहतेहैं जिन्होंने तन्त्रशास्त्रविहीन व अल्पबुद्धि ऐसे वैद्यों को रोग का निदानकरना कठिनहै निदान १ हेतुपर्वरूप २ रूप ३ उपशय४ सम्प्राप्ति ५ ऐसे पांचप्रकारके उपाय रोगों का निश्चय वास्ते हैं निमित्त १ हेतु २ आयतन ३ प्रत्यय ४ उत्थान ५ कारण६ ये निदान के पर्य्यायशब्दहैं २० सूक्ष्मलक्षण करिकै उत्पन्न भया रोग जाना जाय उसे पूर्वरूप कहते हैं दृष्टान्त ॥ जैसे धूमसे अग्नि तैसे रोग के चिह्नादि सब प्रकट शरीर में होजावें उसे रूप कहतेहैं हेतु नाश करनेवाले व व्याधि नाश करनेवाले व हेतु व्याधि नाशकरनेवाले व हेतु की ज्यादा सुख करनेवाले व व्याधिको ज्यादा करनेवाले व हेतु व्याधिको ज्यादा करनेवाले औषध व अन्न व विहार इनों का उपयोग जो सुख देनेवाला वह उपशय व्याधि का होहै उपशय का पर्य्याय शब्द सात्म्य है हेतु नाश करनेवाले औषध यथा शीत कफ ज्वर में शुंठि आदि गरम और व्याधि नाश करनेवाले औषध यथा प्रमेह मेहलादि आदि हेतु व्याधि नाश करनेवाले औषध यथा बात सूजनमें दशमूल आदि हेतु नाश करनेवाला अन्न यथा श्रम से उत्पन्न ज्वरमें रसौदन आदि व्याधि नाश करने वाला अन्न यथा अतीसार में मसूर आदि हेतु व्याधि नाश करने वाला अन्न यथा संग्रहणी में तक्र आदि हेतु नाश करनेवाला विहार यथा दिनमें शयनसे उपजा कफमें रात्रिका जागना आदिक व्याधि नाश करनेवाला विहार यथा उदावर्त्त में प्रवाहनादि हेतु व्याधि नाश करनेवाला विहार यथा स्निग्ध दिनमें शयनसे उपजा कफतंत्रामें रुक्षपदार्थआदिक अरुहेतु सुखकरनेवाले औषध यथा पित्त प्रधान पचता हुआ घाका सूजनमें गरम उपनाह स्वेद आदिक अरु व्याधिको सुख करनेवाला औषध यथा छर्दि में वमन कारक मैनफल आदि हेतु व्याधि सुख करनेवाला औषध यथा अग्निसे जलाहुआको अगर आदिलेप अरु हेतु सुख करनेवाला

अन्न यथा व्रण सूजन में विदाही अन्न व्याधि सुख करनेवाला अन्न यथा अतीसारमें विरेचन अर्थ दूधआदि हेतु व्याधिको सुख करनेवाला अन्न यथा मदपानसे उपजा मदात्ययमें मदिरा आदि हेतु सुख करनेवाला विहार यथा बातोन्मादमें त्रासन आदि व्याधि सुख करनेवाला विहार यथा छर्दि में वमन अर्थ प्रवाहण आदि हेतु व्याधि सुखकरनेवाला विहार यथा व्यायामसे उपजा मूढ़वात में जल तरणआदि यह अठारह उदाहरण उपशयक हैं इससे भिन्नको अनुपशय कहेहैं व्याध्यसात्म्य यह इसका पर्य्याय शब्द है ३० मनुष्यके शरीर में दोष को पत्तल ऊपर जोरकर व्याधि प्रकट होजावै अपने अपने जगहें यह संप्राप्तिहोहै इसका पर्य्याय शब्द आगतिहै अरु जातिहै संप्राप्तिका भेदपांचप्रकारकाहै संख्या १ विकल्प २ प्रधान्य ३ बल ४ काल ५ ऐसेहो हैं यही आठ प्रकार के ज्वर कहेंगे यह संख्याहै तीनदोष इकट्ठे हुये हीनवृद्धि अतिभेद से दोषका अंशकी कल्पना करनी यह विकल्प होहै स्वतंत्र व परतंत्र करिकै व्याधिको प्रधान समझलेना यह प्रधान्य होहै निदानादिक सम्पूर्ण पांचअवयवोंसें व्याधि व्याप्तहो वह बलवान् न्यून अवयवोंमें प्राप्त वह अबल दिनरात्रि ऋतुके भक्ष्यपदार्थसे कफपित्त बात आदि मध्यअन्तमें उपजे सहकालहाहै यह निदान प्रकार कहा वह विस्तारसेकहतेहैं संपूर्णरोगोंको निदानकोपको प्राप्तहुये मलहैं॥

अथबातादिमलकोपकाकारण॥ अनेकप्रकार अपथ्यसेवन दृष्टान्त॥

जैसे रोगके पूर्वरूप निदान कारणहै तैसे ज्वर संतापसे रक्त पित्त होहै अरु रक्त पित्तसे ज्वरहोहै इनदोनों से श्वासहोहै अरु तिल्ली के बढ़नेसे उदर रोग अरु इससे सूजन अरु अर्शसे उदर दुःख व गुल्म हो है अरु दिन में शयन से प्रतिश्याय याने खेहर हो है प्रतिश्यायसे खांसीहो खांसीसे क्षयी होयहै अरु क्षयसे शोषहोयहै प्रथम रोगहो पीछे दूसरारोग के कारणहोजायँ सेवा कोई रोग रोगका कारणहो के शान्त भी होजाय है कोई के शान्त नहीं हो असिद्धिअन्य को पैदाकरैहै ऐसेरोग संकरकष्ट देनेवाले मनुष्योंको हैं ४२ तिसकारण से उत्तमसिद्धिकी इच्छाकरनेहारा वैद्यको यत्न

से ज्वरादिकरोगोंका निश्चय करनाचाहिये दक्षप्रजापतिका किया हुआ अपमानसे क्रुद्धमहादेवके श्वाससे उपजाज्वर वहआठप्रकार का है वातज्वर १ कफज्वर २ पित्तज्वर ३ वात पित्तज्वर ४ वातकफ ज्वर ५ पित्तकफज्वर ६ सन्निपातज्वर ७ आगंतुकज्वर ८ ऐसे हैं वहज्वर मनुष्यके मिथ्या आहार व विहारसोंआमाशयमें रहता जो वात पित्त कफ तीनोंको दुष्टकरै और आमाशयकी जगहमेंरहता जो आहार तासों उपजो जो रस ताको बिगाड़े और आमाशयमें रहता जो अग्नि ताको उदरमें से बाहरकाढ़ि रोगीके सारे शरीर को तातो अग्निरूपकरे है वही ज्वररूपहो शरीर के पराक्रम को खायजाय है जिसके शरीरमें एक साथही ये लक्षणहों तामें ज्वर कहिये शरीरगरमहो अरु पसीना भी नहींआवे भूखजातीरहैसब अंगकर डालाहोजावे हाथ पगोंमें हड़फूटनीहो तिसको ज्वरकहिये ज्वरका पूर्वरूप हाथपगोंमें हड़फूटनीहोय मथवायहो जम्हाईआवैं परिश्रमहो व उदासपना हो ग्लानिहो वर्ण पलटाहुआ हो नेत्रोंमें जल भराहुआ हो शीतवात धूप इनमें इच्छा भी व वैर भीहो शरीर भारीहो रोमावलीखड़ीहो अरुचिहो अन्धेरी आवे मनकहींभी लगे नहीं जाड़ालगे ऐसे लक्षण पूर्व्वरूप ज्वरकाके हैं वातज्वरसें विशेष करि जंभाईआवें अरु पित्तज्वर में विशेषकरि नेत्रोंमें दाहहो अरु कफज्वर में अन्नमें अरुचिहो दोकेलक्षणहों वह द्वंद्वज याने दोदोष का सबकेलक्षणहों वह त्रिदोषका ज्वर होयहै वातज्वर शरीरकांपै ज्वर का विषम वेगहो कण्ठमुख होठसूखेहों निद्रा अरु छींकआवें नहीं शरीर रूखाहोजाय मुखमें स्वाद रसोंका जातारहे दस्तउतरें नहीं शिर व हृदय व सर्वशरीर इनमें पीड़ाहो पेटमेंशूल चलै व अ-फराहो अरु जंम्हाईआवें ऐसेलक्षणोंसे वातज्वर जानिये वातज्वर मेंयहपाचनरूप काढ़ादेवै शुंठि, चिरायता, नागरमोथा, गिलोय इन को यह शुंठ्यादि पाचनहै॥ दूसराकाढ़ा॥ गिलोय, छोटीपीपली, जटा-मासी, शुंठि इनका पाचनरूप काढ़ा सातवेंदिन देवै यह गडूच्यादि पाचनहै॥ शुंठ्यादिकाढ़ा॥ कचूर, दारुहलदी, देवदारु, शुंठि, पुष्करमूल इलायचीबड़ी, गिलोय, कटुकी, पित्तपापड़ा, धमासा, काकड़ासिंगी

चिरायता, दशमूल इनका काढ़ा करिके पिपली सैंधव निमक चूरण की प्रतिबासर दे पीवे सब प्रकारके ज्वरोंको नाशकरै ५७॥ श्रीपर्ण्यादिपाचन॥ श्रीपर्णी, अरणी, बेलफल, स्योनाक, पहाड़मूल इनोंका पाचनरूप काढ़ा वातज्वर को नाश करे॥ गडूच्यादिकाढ़ा॥ गडूची, सारिवा, मुनक्का, दाख, बला, अंशुमती इनोंकाकाढ़ाभीवात ज्वरको नाशै॥ दर्भमूलादिकाढ़ा॥ डाभ, बला, गोखुरू इनों का काढ़ा चतुर्थांश रक्खे खांड़ घृत युत करिकै पिवै तो वातज्वर को नाशै॥ श्रीफलादि काढ़ा॥ बेलफल, सर्वभद्रा याने खम्भारी, रक्त-पाटला, पीलाटेंटू, तर्कारीयानेअरणी, गोखुरू, कटैलीछोटी अरु बड़ी पिठवनी, शालिपर्णी, रास्ना, पिपली, पिपलामूल, कुलिंजन, शुंठि, चि-रायता, नागरमोथा, गिलोय, चिकणाबाला, मुनक्का, दाख, धमासा शतावरि इनोंका काढ़ा वातज्वर उपद्रव सहितको नाशै यह काढ़ा अतिश्रेष्ठहै॥ भूनिम्बादिकाढ़ा॥ चिरायता, नागरमोथा, बाला, दोनों कटैली, गिलोय, गोखुरू, शुंठि, शालिपर्णी, पृष्ठिपर्णी, पोहकरमूल इ-नोंका काथकरि पीवै वातज्वर जावै॥ दुरालभादिकाढ़ा॥ धमासा शुंठि, कुटकी, पहाड़मूल, कचूर, बांसा, एरंडजड़ इनोंका काढ़ा करि पिवै तो बातज्वर शूल श्वास खांसी सहित जावै॥ शुंठ्यादिकाढ़ा॥ शुंठि, गिलोय, पिपलामूल इनोंका काढ़ा पिवै तो वातज्वर रहै नहीं अरु देवदारु, कटैली, शुंठि, धनियांइनोंकाकाढ़ापाचनरूपवातज्वर को हरै॥ पंचमूलादिकाढ़ा॥ पंचमूल, खरैटी, रासना, कुलथी, पोह-करमूल इनोंका काढ़ा वातज्वर व शिर कांपना व संधिशूल इनको हरै ७०॥ कणादिकाढ़ा॥ पिपली, लसण, गिलोय, शुंठि, कटैली काचीनिर्गुण्डी, चिरायता, नागरमोथा इनोंकाकाढ़ा पिवै अरु पथ्य से रहै तो बातज्वर व कफज्वर व अग्निमन्द व कंठ का अवरोध व हृदय का अवरोध व स्वेदरोग व हुचकी व जाड़ा व मोह इन रोगोंको हरै है॥ काकोल्यादिकाढ़ा॥ काकोली, बड़ीकटैली, नागर-मोथा, कुलिंजन, देवदारु, बांसा, शुंठि इनका काढ़ा मिश्री सहित पीवै तो बातज्वर जावै॥ अमृतादिकाढ़ा॥ गिलोय, शुंठि, नागरमोथा हलद, धमासा इनका काढ़ा करि पिपली का चूर्ण बुकाइ पीवै तो

वातज्वर जावै ॥ ग्रन्थ्यादिकाढ़ा ॥ पिपलामूल, पित्तपापड़ा, बांसा भारंगी, शुंठि, गिलोय इनका काढ़ा पीवे तो तीव्र वातज्वर जावै ॥ शालिपर्ण्यादिकाढ़ा ॥ शालिपर्णी, वला, मुनक्का, दाख, गिलोय सारिवा इनका काढ़ा कछुक गरम पीवे तो तीव्र वातज्वर जावे अथवा काश्मरी, सारिवा, मुनक्का, दाख, त्रायमाणा गिलोय इनका काढ़ा गुड़ सहित पीवै तो वातज्वर जावे ॥ गुडूच्यादिकाढ़ा ॥ गिलोय, पिपलामूल, शुंठि इनका काढ़ा सातवें दिन दिया हुआ वातज्वरकोहरै ॥ किरातादिकाढ़ा ॥ चिरायता, नागरमोथा, गिलोय बाला, दोनोंकटैली, गोखुरू, सालवण, पिठवण, शुंठ इनका काढ़ा बातज्वरको हरै है ॥ पिपल्यादिकाढ़ा ॥ पिपली, सारिवा, मुनक्का बड़ी सौंफ, रेणुकेबीज इनका काढ़ा गुड़युत वातज्वरको हरै है ॥ उशीरादिकाढ़ा ॥ बाला, पिठवण, शुंठ, चिरायता, नागरमोथा, सालवण, कटैली, दोनों गिलोय, गोखुरू इनकाकाढ़ा बातज्वरको हरै है ॥ मरिचादिकाढ़ा ॥ मरिच, एरंडमूल, शुंठ, चिरायता, छोटीहड़ पिपली, कटुकी इनका काढ़ा बातज्वरको हरै है ॥ त्रिफलादिचूर्ण ॥ त्रिफला, शुंठ, मिरच, पिपली, निशोत, बराबरगुड़ दूनीखांड़ मिलाय मोदककरि खावे ५ ऊपर गरम जल पीवे तो पसलीका शूल व अरुचि व कास व बातज्वर नाश होवै ॥ पिपल्यादिचूर्ण ॥ पिपली सिंगरफ, सिंगीमोहरा इनका खरलमें पीस रत्ती २ शहत संगदेवै बातज्वर को हरै ॥ द्राक्षादिचूर्ण ॥ मुनक्का, दाख, धमासा, छोटी हरड़, चिक्कणी सुपारी ये बराबरले चूर्णकरि गुड़ सहित खावे तो वातज्वर जावै ॥ शतावरिस्वरस ॥ शतावरि व गिलोय इनका रस गुड़सहित बलहीन का बातज्वर को जल्दी हरै है ॥ कल्पतरुरस ॥ शुद्ध पारा तोला १ गन्धक तोला १ बचनागविष तोला १ मैनशिल तोला १ सुहागा तोला १ शुंठ तोला २ मिरच तोला ८ पिपली तोला ८ ये सब विषआदिखरलमें पीसि चूर्णकरिबस्त्रमेंछान के पीछे खरल में रस गन्धक को दो प्रहर तक पीसे पीछे चूर्ण करि विषादि औषध खरलमें गेरै मिलाय तय्यार करै यह कल्पतरु रसहै रत्ती १ दियाकरैतो बातकफ रोगकोहरैहै अरु अदरखरस

सहित खावैतो बातज्वर व कफज्वर इनकोहरै है अरु श्वास खांसी मुख में लाल पड़ना, जाड़ा, शीतरोग, अग्निमन्द, अरुचिइन रोगोंको हरै है इस रसकी नस्यले तो शिरोरोग कफबात से उपजे को हरैहै ज्यादह मोहकोहरैहै अरु प्रलापरोग व छींकबंध रोगको हरैहै १०२॥ भैरवरस॥ बच, नागविष, शुंठ, पिपली, मिरच, रक्तआक ये सब एकोत्तर भागसे लेकरि अदरक रसमें खरलकरै यह भैरव रसहै बातज्वरको तत्काल हरैहै॥ शीतभंजीरस॥ पारा, गंधक, हरताल, ताम्रेश्वर, सुहागा ये सब बराबर ले खरल करै करेलारस में पीछे तांबेके पात्रको उदरमें लेपै पात्र अधोमुख दूसरे पात्र में रख कपड़ा माटी ऊपर लपेट सुखाय वृक्षोंके बल्कलोंसे पूर्णकरि चुल्ही पर चढ़ाय तीव्रअग्नि से पकावै जब पात्रकी पृष्ठिपर ब्रीहिसे होने लगै तब सिद्धजानै शीतल करि ताम्रपात्रसे खुरचके मिरच बराबर मिलाय चूर्णकरै यह शीतभंजी रसहै पानमें लगाय रत्ती २ मनुष्य को देवै तो बातज्वरको हरै अरु तीसरे दिनका ज्वर व विषमज्वर व नित्यज्वर व दूसरे दिनका ज्वर व चौथिया ज्वर इनको हरै है॥ मातुलिंगादिगुटिका ॥ बिजौराकी केशर, सेंधानिमक, मिरच इन को मिलाय पीस गोलीबांधे मुखमें राखैतो बातकफरोग, मुखशोष जड़पना, अरुचि इनको हरै है। मुनक्का, दाख, अनार इनका कल्क खांड़ व अनाररसकेसंग खावैतो मुखकाशोष व वैरस्यको दूरकरै॥ द्राक्षादिप्रतिसार॥ दाख आंमलाका कल्क घृतसहित मुखमेंरख मुख में प्रतिसारणकरै तो जिह्वारोग, तालुरोग, कंठरोग व इन्हींकेशोष को दूरकरै मुखमें रसअच्छालगै अरु भोजनमें रुचिउपजै॥ हरीतक्यादि गुटिका॥ हरड़ ८ निशोत ८ बरधारा ८सबतोले २४पिपली तोले ४ शुंठि तो० ४ गिलोय तो० ४ गोखरूतो० ४ शतावरितो० ४ सहदेवीतो० ४ बिडंग तो० ४ सबको पीसि शहतमें गोलीबांधे गोली खानेसे ज्वर, खांसी, श्वास, मलस्तम्भ, अग्निमन्दइनरोगों को हरैहै। बातकफज्वरमें व जंघाशूल व पशुली शूल व अस्थिशूल व पीनस श्वास बधिरपना इनरोगोंमें स्वेदकर्म करवावै स्वेदनाड़ी के स्रोतों को कोमलकरि अरु अग्निको आशयमें प्राप्तिकरि अरु

वातकफ को नाशकरि ज्वरको हरै है ॥ खर्परभ्रष्टवालुकास्वेदयोग ॥ खर्परपै बालूको गरमकर कांजी में संसिक्त को इससे स्वेदकर्म करै तो बात व कफरोग व मस्तकशूल व अंगभंग इनको हरैहै ॥ निद्रा नाश निदान ॥ नस्य व लंघन व चिन्ता व व्यायाम व शोक व भय इनकेहोनेसे व कफका अत्यन्त नाशहोनेसे नींदकानाश होयहै ॥ विजयाचूर्णयोग ॥ रात्रिमें भांगको भूनकरि शहत संग खावे तो निद्रा नाश व अतीसार व संग्रहणी इनको हरै १२० पिपलामूल चूर्ण गुड़संग खावे तो निद्रा अवश्यआवै। काकमाचीकी जड़कोसूत्रसे मस्तकपरबांधे तो जिसकी वहुतदिनसे नींदनष्टहुईभी जल्दीआवै॥ पित्तज्वर लक्षण ॥ पित्तज्वरमें वेगतीक्ष्ण हो अरु अतीसारहो नींद कमआवै अरु छर्दिहो अरु कंठ व ओष्ठमुख नासिकाइन्होंकापाक हो अरु पसीनाआवै अरुज्यादहबकै व मुखकटुहो मूर्च्छाहो दाह हो मदहो तृषाज्यादहहो विष्ठामूत्र नेत्र त्वचा पीलेरंगहो अरुभ्रम हो ये लक्षण पित्तज्वरवालेके हैं ॥छिन्नादि पाचन ॥ गिलोय,निंबछाल धनियां,शुंठ,हल्दी इन्हों का पाचनरूप काढ़ाकरि गुड़मिलायपीवै तो पित्तज्वर जावै ॥ दुस्पर्शादिकाढ़ा ॥ धमासा, बांसा, कटुकी, पित्त-पापड़ा, मालकांगणी, चिरायता इन्हों का काढ़ा मिश्रीमिलायपीवै तो पित्तज्वरदाह सहित नाशहोवै ॥ द्राक्षादिकाढ़ा ॥ मुनक्का, दाख,परवल, निंब, कुटकी,हरड़, कटेली, बाला, धनियां, लोध, नागरमोथा शुंठि इन्हों का काढ़ा पित्तज्वर को हरै ॥ पित्तज्वरी प्रतीकार ॥ सफेद कमल व सुगन्धवायु पुष्परस सहित व जलक्रीड़ा व रसिक कथा इन्होंसे भी पित्तज्वर शांतहोवै ॥ तिक्तादिकाढ़ा ॥ कटुकी, नागरमोथा इन्द्रयव, पहाड़मूल, कायफल, बाला इन्होंकाकाढ़ा खांड़सहितपीवै तो पित्तज्वर जावै ॥ पर्पटादिकाढ़ा ॥ पित्तपापड़ा, बांसा,कटुकी, चिरायता, धमासा, मालकांगणी इन्हों का काढ़ा खांड़ सहित पीवै तो प्यास दाह रक्तपित्त सहित पित्तज्वरका नाशहोवै ॥ द्राक्षादिकाढ़ा ॥ मुनक्का, दाख, हरड़छोटी,नागरमोथा, कटुकी, अमलतास,पित्तपापड़ा इन्होंका काढ़ा पित्तज्वरकोहरै अरुमुखशोष व प्रलाप व अंतर्दाहव मूर्च्छा भ्रमकोहरै अरु ज्यादह तृषा व रक्तपित्तको शमनकरै अरु

मलकोसाफ़करै३४१ ॥ पटोलादिकाढ़ा ॥ करूपरवल, यव, धनियां मुलहठी इन्हों का काढ़ा शहत युत पित्तज्वरको व दाहको व अति तृषाको हरैहै ॥ गुडुच्यादि काढ़ा ॥ गिलोय, आंवला, पित्तपापड़ाइन्हों का काढ़ा पित्त व शोष व भ्रमयुत पित्तज्वरको हरै है ॥ ह्रीवेरादि काढ़ा ॥बाला, रक्तचन्दन, कालाबाला, नागरमोथा,पित्तपापड़ाइन्हों का काढ़ा शीतलकरि प्यावैतो अति तृषा ज्वर दाह को हरै ॥ भूनिंबादिकाढ़ा ॥ चिरायता, अतीस, लोध, नागरमोथा, इन्द्रयव, गिलोय बाला, धनियां,बेलफल इन्होंका काढ़ा शहतयुत श्वास व कास व रक्तपित्त व पित्तज्वर इनकोहरैहै ॥ कटूफलादि काढ़ा ॥ कायफल,इन्द्रयव,पहाड़मूल,कटुकी, नागरमोथा इन्हों का काढ़ा दशवें दिनदिया पित्तज्वरको हरैहै ॥पंचभद्रादि काढ़ा ॥ पित्तपापड़ा, नागरमोथा, गिलोय, शुंठ, चिरायता इन्होंकाकाढ़ा बात पित्तज्वरको हरैहै ॥ कलिंगादिकाढ़ा ॥कुरैया, कायफल, लोध, पहाडमूल, कटुकी इन्हों का काढ़ाखांड़युतपीवै पित्तज्वरकोहरै॥ शर्करादिकाढ़ा ॥रक्तचन्दन,बाला कायफल, फालसा, मुलहठी इन्होंकाकाढ़ा खांड़युत पीवै पित्तज्वर जावै॥क्षुद्रादिकाढ़ा॥ कटैली,धनियां,शुंठ,गिलोय,नागरमोथा,पद्माख रक्तचन्दन, चिरायता, परवल, बांसा, पुष्करमूल, कटुकी, इन्द्रयव नींब, भारंगी, पित्तपापड़ा इन्होंकाकाढ़ा शीतल सन्नज्वरोंको हरैहै॥ लोध्रादिकाढ़ा ॥ लोध, कमलकंद, गिलोय, सारिवा इन्हों का काढ़ा खांड़युत पीवे तो पित्तज्वर को हरै अथवा पित्तपापड़ा का काढ़ा खांड़युत पितज्वर को हरै है ॥ पर्पटादिकाढ़ा ॥ पित्तपापड़ा, गिलोय आँवला इन्हों का काढ़ा पित्तज्वर को हरै अथवा मुनक्का दाख का काढ़ा पित्तज्वरको हरै अथवा अमलतासका काढ़ा पित्तज्वरकोहरै है अथवा फालसाका काढ़ा पित्तज्वर को हरै है ये तीनों काढ़े पित्तहारी हैं ॥ विश्वादि काढ़ा॥ शुंठ, पित्तपापड़ा, बाला, नागरमोथा रक्तचन्दन इन्हों का काढ़ा शीतलकिया तृषा छर्दि ज्वर दाहको हरै है ॥ गुडुच्यादि काढ़ा॥ गिलोय, नागरमोथा, धनियां, मुलहठी, चिरायता इन्होंकाकाढ़ा तृषा, शूल, अरुचि, छर्दि, पित्तज्वर इनकोहरैहै ॥ किरातादि काढ़ा॥ चिरायता,गिलोय,धनियां, रक्तचंदन

वाला, पित्तपापड़ा, पद्माख इन्होंकाकाढ़ा दाह, तृषा, श्रम, अरुचि ग्लानि, छर्दि, पित्तज्वर इनको हरै है॥ चन्दनादिकाढ़ा॥ रक्तचन्दन मुलहठी, मुनकादाख, कटुकी, धमासा यह चन्दनादिगण दाह, अरुचि, पित्तज्वर इनको हरै है १५० ॥ पर्पटादिकाढ़ा ॥ राकलापित्तपापड़ा का काढ़ा पित्तज्वरको हरैहै जो रक्तचन्दन, वाला, शुंठइन्हों युत पित्तपापड़ा जल्दी पित्तज्वरकोहरैहै ॥ उदुंबरादिहिम ॥गूलरकी जड़, गिलोय इनकाजल मिश्रीयुत पीवै तो पित्तज्वर जावै अथवा परवलकी जड़काजल मिश्रीयुत पित्तज्वरको हरै है ॥ द्राक्षादिकाढ़ा॥ मुनक्का, हरड़, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, कटुकी, अमलतास इन्हों का काढ़ा प्रलाप, मूर्च्छा, भ्रम, दाह, शोष, तृषा, पित्तज्वर इनको हरै है ॥ दुरालभादिकाढ़ा ॥ धमासा, पित्तपापड़ा, प्रियंगु, चिरायता वाला, कटुकी इन्होंका काढ़ा खांड़युत पीवै तृषा, रक्तपित्त, ज्वर दाह इन्होंकोहरै है ॥ द्राक्षादिकाढ़ा ॥ मुनक्का, पित्तपापड़ा, अमलतास कटुकी, नागरमोथा, हरड़छाल इन्हों का काढ़ा पित्तज्वर जनित मूर्च्छा, शोष, तृषा, गरमी, प्रलाप, भ्रांतिइनको हरै हैं अथवा धमासा, अतीस, चिरायता, कटुकी अरडूसा, पित्तपापड़ा इन्हों का काढ़ा तृषा, दाह, रक्तपित्त, पित्तज्वर इन्होंको हरैहै ॥ छिन्नादिकाढ़ा॥ पराशरादि मुनियोंको बहुतसेकषाय किसवास्तेकहे गिलोय, हरड़ पित्तपापड़ा इन्होंकाकाढ़ा पित्तज्वरको अवश्यहरैहै॥ द्राक्षादिकाढ़ा ॥ मुनक्का दाख, रक्तचन्दन, कमलकन्द, नागरमोथा, कटुकी, गिलोय आंवला, बाला, कालाबाला, लोध, इन्द्रयव, पित्तपापड़ा, फालसा कांगणी, धमासा, बांसा, मुलहठी, कडूपरवल, चिरायता, धनियां इन्होंका काढ़ा पित्तज्वर को हरै अरु तृषा, दाह, प्रलाप, रक्तपित्त भ्रम, ग्लानि, मूर्च्छा, छर्दि, शूल, मुखशोष, अरुचि, कासश्वास हल्लास इन रोगोंको हरै है ॥ ससिकादिकाढ़ा ॥ धनियां, चावलइन्हों को रात्रिमें जलमें भिगोय प्रभातमथ छान मिश्रीमिलाय पीवै तो पित्तज्वरको अरु अन्तर्दाहकोहरै॥ मुद्गादिकाढ़ा ॥मूंग ८ तोलेपानी मेंवमुलहठी इनकाकाढ़ाकरिशीतलपीवै तो पित्तज्वरजावै॥ ह्रीबेरादि काढ़ा ॥ बाला, नागरमोथा, धनियां, रक्तचन्दन, मुलहठी, गिलोय

वांसा, कालावाला इन्हों का काढ़ा खांड़ शहत युतपीवैतो रक्तपित्त तृषा, दाह, पित्तज्वर जावै १६७॥ तिक्तादिकाढ़ा॥ कटुकी, धमासा चिरायता, गिलोय, पित्तपापड़ा, वांसा इन्होंका काढ़ा मिश्री युत रक्तपित्तज्वरको हरै॥ पथ्यादिलेह॥ हरड़का चूर्ण तेल में वा घृतमें वा शहतमें मिलाय चाटै दाह ज्वर, खांसी, रक्तपित्त, विसर्प, श्वास छर्दि इनको हरै॥ आम्रादिकाढ़ा॥ आंब, जामुन, कमलपान, जीवन बट इन्होंके छाल कालावाला इन्होंकाफांट शहतयुत ज्वर को हरै अरु तृषा छर्दि अतीसार ज्यादह मूर्च्छा इनकोभी हरै॥ गुडूच्यादि काढ़ा॥ गिलोय, पद्माख, लोध इन्होंका काढ़ा खांड़युत पित्तज्वरको हरै अथवाउपलसरी कमलकन्दइनका काढ़ाभी खांड़युत पित्तज्वर कोहरै॥ पटोलादिकाढ़ा॥ कडूपरवल, इन्द्रयव इनकाकाढ़ाशहतयुत तीव्रज्वरको तृषाको दाहको नाशै॥ केशरमातुलिंगादियोग॥ जिह्वा तालु, कंठ, क्लोम इन्होंको शोषमें बिजोरा की केशर शहत व सेंधा-नमक युतदेवै तो आरोग्यहोवै अथवा बिजोराकीकेशर शहतसेंधव युत जलसेगंडूषकरै तो शोषमुख मिटै वा हरड़, कांगणी, पिपली लोध, दारुहल्दी, तेजबल इन्होंका जल शहतयुत करिमुखमेंराख थूकै तो मुखका कडुवापन व मुख रोग नाश हो मुखकी कांति बढ़ै अरु रुचिउपजै अरु पित्तज्वरमें मूंगयूष व चावलयूष मिश्रीमिलाय देवै॥ रसपर्पट॥ शुद्धपाराभाग १ गंधकभाग २ कजलीकरिभृङ्गीरस में दो मुहूर्त्ततक खरल करै फिर लोहपात्र में धर मन्द २ अग्नि से चुल्हीऊपर पकावै लोहे के पलटासे चलावै पीछे लोहभस्म अथवा तांबेकी भस्म चतुर्थांश गेरै घटी ४ तक चलावै नहीं कोमलता से पकन दे पीछे गौका गोमय ऊपर केलापत्र रख तिस में द्रव्य धरै पात्रसेढकै तिसऊपर गोमय रक्खे फिर द्रव्य को खरल में पीसे निर्गुण्डीरससे पीछे अरणीरसमें १ दिन फिर त्रिफलारसमें १ दिन फिर कुमारी रसमें १ दिन फिर बाला रसमें १ दिन फिर भारंगी रसमें १ दिन फिर कटुत्रय रसमें १ दिन फिर भृङ्गीरसमें १ दिन फिर चीता रसमें १ दिन फिर गोरखमुंडी रसमें १ दिन ऐसेखरल करि भावना देवै पीछे अदरख अर्क में ७ दिन भावनादे खरल

करि पीछे द्रव्यको अग्निसे तपाय पसीनाकाढ़े ऐसे पर्पटीरस होय है ४ रत्ती कफज्वरमें देवे। बांसा व शुंठ व हरड़ इन्होंका क्वाथ अनुपानहै अथवा चव्यके रसमेंले तो कफज्वरजावे १८३॥ कलिंगादि चूर्ण ॥ इन्द्रयव, कुटुकी, हलद, त्रिकटु, नागकेशर, चीता इन्हों का चूर्ण गरमजल संग लिया कफज्वर को नाशै॥ शृंग्यादिलेह ॥ काकड़ासिंगी, पिपली, कायफल, पुष्करमूलइन्होंका शहत युत अवलेह श्वास खांसी सहित कफज्वर को हरै सिंधुकवल, सिंधा, शुंठ मिरच, पीपल, राई, अदरख युत ग्रासकफको नाशै कफज्वर में मूंग का यूषदेना श्रेष्ठ है॥ त्रिफलादिचूर्ण॥ त्रिफला, पिपली शहतमें मिलाय चाटे तो कफज्वर खांसी श्वासजावै अथवा घृतमेंचाटै॥ अजाजियोग ॥ जीरा खांड़युत अथवा अनाररस युत लेवे तो रुचिउपजै अथवा शहतमेंलेवै मूंगयूष चावल भोजनदेवै॥ कफज्वरमेंचन्दनादि काढ़ा॥ रक्त चन्दन, रोहिष तृण, बाला, कालाबाला, पित्तपापड़ा नागरमोथा, शुंठि इन्होंका काढ़ापित्तज्वरको हरै॥ शतधौतघृत ॥शत बार धोये घृतके लेप से दाह नाशहोय अथवा निंबपत्रकेरसझाग सहित लेपसे शरीरकी दाहपीड़ा जावै। पलाशकेपत्तोंकेलेपसे दाह ज्वर जावै अथवा बड़बेर के पत्तों के रसके लेपसे दाह जावै अथवा सीधे सोतेहुये की नाभीके ऊपर तांबा व कांसेका पात्र रक्खे तिस पर शीतल जलकी धारा गेरै इसयोगसेभी दाहमिटै॥ औदुम्बरादि योग॥ गूलरका निर्यास मिश्रीसे पीवै तो दाहमिटै अथवा गिलोय का सत मिश्रीयुत पीवे तो पित्तज्वर जावै अथवा गौके तक्रमें वस्त्र भिगोय शरीरपैफेरै तो दाहमिटै अथवा कांजीके पानीमें वस्त्र भिगोय शरीर पर फेरै तो दाह मिटै॥ द्राक्षादिकल्क॥ दाख, आंवला इनका कल्कभी दाहको हरै अथवा अनारके बीजसे भी दाह मिटै अथवा धनियां कल्कसे भी दाहमिटै दाहवालेको व छर्दि को व कृशको अन्न रहितको व तृषावालेको धानकी खीलका यूष शहतयुत देवै पित्त ज्वरमें मूंगचावल का यूष मिश्रीयुत पीवै॥ अमृतादिहिम ॥ गिलोय का हिममिश्रीयुत प्रभातमें पीवै तो पित्तज्वर जावै बांसाका हिम मिश्रीयुतपीवैतोखांसी रक्तपित्त पित्तज्वरको हरै॥ कफज्वरनिदान ॥

अन्नमें अरुचि हो शरीर भारीहो रोमांचहो मूत्र नख नेत्र सफ़ेदहों घनीनींदआवे शरीरठंढाहो मुख मीठाहो वेग ज्यादह न हो ज्यादह आलस्यहो श्वास खांसी पीनसभी हो अंग भीज़ासम हो छर्दि हो अंगजकड़ाहो अन्न जरेनहीं येलक्षण कफज्वरके हैं॥ नीरदादिपाचन॥ नागरमोथा, शुंठ, धमासा, बांसा यांचाकाढ़ा पाचनरूप पीवै कफ-ज्वर में खांसी श्वास अतिशूल को हरै॥ पिपल्यादिपाचन॥ पिपली पीपलामूल, मरिच, गजपिपली, शुंठि, चीता, चाव, रेणुकेबीज, बेलदोड़े अजमोद, सर्षप, हिंग, भारंगी, पहाड़ मूल, इन्द्रयव, जीरा, वकाण मोरबेल, अतीस, कुटकी, बायबिड़ंग यह पिपल्यादि गण कफवायु को हरैहै अरु गुल्म शूल ज्वरको हरैहै यह दीपनहै अरु आम को पकावै है॥ क्षौद्रादिकाढ़ा॥ पिपली शहतयुत चाटै तो खांसी श्वास ज्वर, तिल्ली, हुचकी इनको हरै॥ पिपल्यादिचूर्ण॥ पिपली, त्रिफला बराबर ले शहत में या घृत में मिलाय चाटै तो खांसी श्वास जावै॥ कटूफलादिलेह॥ कायफल, पुष्करमूल, काकड़ासिंगी, अजमाण अजमोद, त्रिकटु ये बराबरले अदरख अर्कमें चाटै व शहत मिलायं चाटै तो कफज्वर, खांसी, श्वास, छर्दि, कफ, बायुरोगजावै॥ निर्गु-ण्ड्यादिकाढ़ा॥ निर्गुण्डीका काढ़ा पिपलीचूर्ण युत पीवै तो कफज्वर निर्बलता कानका बधिरपना ये जावैं॥ यवान्यादिकाढ़ा॥ अजमान पिपली, बासा, खसखसंका बक्कल इन्होंकाकाढ़ा खांसी, श्वास, कफ-ज्वरको हरै॥ बासादिकाढ़ा॥ बासा, कटेली, गिलोय इन्हों का काढ़ा शहतयुतपीवै तो ज्वर व खांसीहरै २१४॥ निम्बादिकाढ़ा॥ निम्ब, शुंठ गिलोय, शतावरि, धमासा, चिरायता, पुष्करमूल, पिपली, पीपला-मूल, कटेली इन्होंकाकाढ़ा कफज्वरकोहरै॥ मरीच्यादिकाढ़ा॥ मिरच पीपलामूल, शुंठ, पिपली, चीता, कायफल, कुलींजन, निर्गुण्डी, बच हरड़, कटेली, जटामांसी, काकड़ासिंगी, अजमोद, निम्बइन्होंकाकाढ़ा उपद्रवसहित कफज्वरकोहरै॥ निदग्धिकादिकाढ़ा॥ कटेली, गिलोय पिपली, शुंठ इन्होंकाकाढ़ा कफज्वर, श्वास, कफ, खांसी, शूल, अग्नि-मंदपेटमें बायुइनकोहरै॥ भारंग्यादिकाढ़ा॥ भारंगी, गिलोय, नागर-मोथा, देवदारु, कटेली, शुंठ, पिपली, पुष्करमूलइन्होंका काढ़ाज्वरको

श्वास को हरै भूँख बढावै अरु रुचि उपजावै ॥ मातुलिंगादिकाढ़ा ॥ बिजौराकी जड़, शुंठ, गिलोय, पीपलामूल इन्होंकाकाढ़ा यवाखार युत वा पिपलीयुत पीवै तो कफज्वरहरै ॥ त्रिफलादिकाढ़ा ॥ त्रिफला निसोत, नागरमोथा, त्रिकटु, इन्द्रयव, परवल, अमलतास, कटुकी चीता बराबर इन्होंका काढ़ा शहतयुत कफज्वर व खांसीको हरै ॥ पिप्पल्यादिगण ॥ पिपली, पीपलामूल, चवक, चीता, शुंठ, मरिच अजमोद, इन्द्रयव, पहाड़मूल, रेणुके बीज, जीरा, भारंगी, बकाण फल, हिंगु, कटुकी, सर्षप, विडंग, अतीस, मोरवेल यह गण कफ नाश करै है पंचकोल, पिपली, पीपलामूल, चवक, चीता, शुंठ यह पंचकोल शोधन है अरु कफ को हरै है ॥ पटोलादिकाढ़ा ॥ कडूपरवल, हरड़ बहेड़ा, आंवला, कटुकी, कचूर, बासा, गिलोय इन्होंकाकाढ़ा शहत युत कफज्वरको हरै ॥ बीजपूरादिकाढ़ा ॥ बिजौराकीजड़, हरड़, आंवला, शुंठ, पीपलामूल इन्हों के काढ़े में यवाखार बुरकाय दे तो कफज्वर जावै बारहवां दिनलेवै ॥ भूनिम्बादिकाढ़ा ॥ चिरायता, निम्ब पिपली, कचूर, शुंठ, शतावरि, गिलोय, बड़ीकटैली इनकाकाढ़ा कफज्वरकोहरै ॥ कट्वयादिकाढ़ा ॥ कटुकी, चीता, निंब, हल्दी, अतीस, बच शतावरि, गिलोय, चिरायता, थोहर, आक इन्होंका काढ़ा शहतयुत कफज्वरको हरै ॥ त्रिकंटकादिकाढ़ा ॥ गोखुरू, खरैटी, कटैली, गिलोय शुंठ इन्होंका काढ़ा मलमूत्र रोधको व कफज्वरको हरै २३० ॥ कुष्ठादिकाढ़ा ॥ कुलिंजन, इन्द्रयव, मूर्वा, पलोट इन्होंकाकाढ़ा शहत मिरच चूर्णयुत पीवै तो कफज्वरजावै ॥ त्रिफलादिकाढ़ा ॥ त्रिफला, परवल बासा, गिलोय, कटुकी, बच, शुंठ इन्होंका काढ़ाशहत युत कफ ज्वर को हरै अथवा दशमूलबासा इन्होंका काढ़ाभी कफज्वरकोहरै सप्तछदीगिलोय, निंब, तेंदु इन्होंकाकाढ़ा शहतयुतकफज्वरकोहरै ॥ आमलक्यादिकाढ़ा ॥ आमला, हरड़, पिपली, चीता इन्हों का काढ़ा सर्वज्वरको व कफरोगकोहरै है यहभेदीहै दीपनहै अरुपाचनहै २३४ तिक्तादिकाढ़ा ॥ कटुकी, नींब, अतीस, शुंठ, मिरच, पीपल, इन्द्रयव बाला इन्होंका काढ़ा कफज्वर हुचकी खांसी सहितको हरै ॥ मुस्तादिकाढ़ा ॥ नागरमोथा, महुआबीज, त्रिफला कटुकी, फालसा इन्हों का

काढ़ाकफज्वरकोहरै॥ चपलादिकाढ़ा॥ पिपली, गजपीपली, शुंठ, चवक चीताइन्होंकाकाढ़ा श्वास, कास, हृल्लासकफज्वरकोहरै॥ पिचुमन्दादि काढ़ा॥ निंब, शुंठ, कटैली, पुष्करमूल, कटुकी, कचूर, बासा, कायफल, पिपली, शतावरि इन्होंका काढ़ा कफज्वरको हरै॥ वासादि काढ़ा॥ बासा, बिशाला, दशमूल, तुलसी, शुंठ, पुष्करमूल, भारंगी इन्होंका काढ़ा कफज्वरको खांसीको शूलकोहरै॥ कंटक्यादिकाढ़ा॥ कटैली, गिलोय, देवदारु, बासा, शुंठ इन्होंकाकाढ़ा पीपलीरज युत कफ ज्वरको हरै॥ कणादिकाढ़ा॥ पिपली, शुंठ, गिलोय, देवदारु चिरायता, एरंडमूल इन्होंका काढ़ा पित्त कफ ज्वर को हरै॥ मुस्तादिकाढ़ा॥ नागरमोथा, धमासा, शुंठ इन्होंकाकाढ़ा कफज्वरको हरै॥ बातपित्तज्वरलक्षण॥ जिसमनुष्य के बात पित्तज्वरहो तिसे मूर्छा घुमेर दाह हो नींदआवेनहीं मथवायहो कंठमुखसूखे रहैं छर्दिहो रोमांचहो अरुचिहो अँधेरीआवै सबअंगमें पीड़ाहो जम्भाई आवै बकवादकरै ये लक्षण बातपित्तज्वरकेहों॥ नीलोत्पलादिहिम॥ नीले कमलबला, मुनका, दाख महुआ, मुलहठी, बाला, पद्माख, शिवण, फालसाइन्होंकाहिम बनायदेवै तो बातपित्तज्वर, प्रलाप, भ्रम, छर्दि हरै॥ निदग्धिकादिकाढ़ा॥ कटैली, गिलोय, रास्ना, त्रायमाण, हरीतकी इन्होंकाकाढ़ा बातपित्तज्वर को हरै॥ बिश्वादिकाढ़ा॥ शुंठि, गिलोय नागरमोथा, चिरायता, पंचमूल इन्होंका काढ़ा बातपित्तज्वर को हरै॥ नीलोत्पलादिकाढ़ा॥ कमल, बाला, पद्माख, आँवला, काश्मरी महुआ, मुनका, मुलहठी, फालसा इन्होंका काढ़ा शीतलकरिपीवै तो बातपित्तज्वर, प्रलाप, मोह इनको हरै॥ आरग्बधादिकाढ़ा॥ अमलतास, नागरमोथा, मुलहठी, महुआ, बाला, हरड़, हल्दी, दारुहल्दी, परवल, निम्ब, गिलोय, कटुकी इन्हों का काढ़ा बात पित्त ज्वर कोहरै॥ द्राक्षादिकाढ़ा॥ मुनका, चिरायता, गिलोय, बासा कचूर इन्होंका काढ़ा बात पित्तज्वर को हरै॥ पंचमूलादि काढ़ा॥ पंचमूल, गिलोय, नागरमोथा, शुंठ, चिरायता इन्होंका काढ़ा बात पित्तज्वरको हरै॥ मुद्गादियूष॥ मूंग आंवला इनका यूष बातपित्त ज्वर में हित है अरु दाह ज्यादह में चनेका यूष हित है अथवा

अनार आँवला मूंग इन्होंकायूष वातपित्तज्वरकोहरै॥ मुद्गादियोग॥ मूंग कफ पित्तको हरै है कटेलादिभी हरै है वात पित्तज्वरमें इन्होंका यूष हित है। अतिदिये मलरोध शूल उदावर्त्त ज्वरकोकोपै है॥ मधुकादिकषाय॥ महुआ, सारिवा, मुनक्का, मुलहठी, रक्तचन्दन, कमल कन्द, खम्भारी, फललोध, त्रिफला, पद्मकेशर, फालसा, कमलइन्हों को पीस जलमें कषायकरि मिश्रीशहतयुत करिपीवै तो वात पित्त ज्वरको दाहको तृषाको मूर्च्छाको अरुचिको भ्रमको रक्तपित्तकोहरै जैसे पवन बादलोंको तैसे ॥ पंचभद्र कषाय ॥ गिलोय, पित्तपापड़ा नागरमोथा, चिरायता, शुंठ इन्होंका काढ़ा वात पित्तज्वरकोहरै॥ दूरालभादि कषाय॥ धमासा, गिलोय, नागरमोथा, वाला, कटुकी पित्तपापड़ा इन्होंका काढ़ा वातपित्त ज्वरकोहरै ॥ भूनिंबादिकषाय॥ चिरायता, कटुकी, वाला, रक्तचन्दन, धनियाँ, हरड़, दशमूल, कालावाला, सुंठ, करमन्दमूल इन्होंका कषाय वातपित्त ज्वरकोहरै॥ त्रिफलादि कषाय॥ त्रिफला, सांवरी, रास्ना, अमलतास, वासा इन्हों का कषाय वातपित्तज्वरकोहरै॥ मधुकादि फांट॥ महुआपुष्प, मुलहठी रक्तचन्दन, फालसा, कमल, लोध, गंखारी, नागकेशर, त्रिफला, सारिवा, मुनक्का, धानकीखील इन्होंकाफांट गरमकछुक मिश्रीशहत युत पीवैतोवातपित्त ज्वरजावै यहीफांट शीतलपीवैतोदाह, तृषा, मूर्च्छा अरतिभ्रम, रक्तपित्त इनको हरै॥ द्राक्षादि कषाय॥ मुनक्का, चिरायता आंवला, गिलोय, कपूर इन्हों का कषाय द्वंद्वज यानी दो दोषके ज्वरकोहरै॥ व्याघ्रादि कषाय॥ कटेली, भारंगी, वासा, रास्ना, धमासा मोचरस, अमलतास इन्होंका कषाय वातपित्त ज्वरको हरै अरु त्रिफला कषायभी वातपित्त ज्वर व कासकोहरै है॥ मुस्तादिकषाय॥ नागरमोथा, धनियां, चिरायता, गिलोय, निंब, कटुकी, कडूपरवल इन्होंका कषाय वातपित्त ज्वर को हरै है॥ बलादि कषाय॥ बला गिलोय, एरण्डमूल, बाला, नागरमोथा, भारंगी, पद्माख, पिपली कालाबाला, रक्तचन्दन इन्होंकाकषाय वातपित्तकोहरै अरु अग्निको बढ़ावै॥ रसायन॥ त्रिफला, मृतलोह, भृङ्गराज, अर्जुनपत्रका चूर्ण त्रिजातक, शिलाजीत, शुंठ, मिरच, पीपल सब बराबरसबोंकीतुल्य

मिश्रीमिलायशहतमें गोली बांधे दशमाशेकी यह गोली वातपित्त ज्वरको हरैअनोपान संग २७६॥ वातकफज्वरलक्षण॥ अंगवालाकपड़ाभीजासमहोसंधियोंमें पीड़ाहो नींदआवै शरीरभारीहो मस्तक मेंशूलहो। खेहर खांसीहो पसीनाआवैशरीरमें संतापहो ज्वर वेग मध्यमहो उसे वात कफज्वरकहिये। वात कफज्वरमें औषध ९ दिन देवै। सूखेजड़वाले पदार्थका यूष वात कफज्वरमें हितहै॥ पंचकोल॥ पिपली, पीपलामूल, चव्य, चीता, शुंठि यहगण दीपनहैवात कफ ज्वरको हरैहै। यह औषध प्रत्येक आठमाशे लेनेसे पंचकोल कहैहैं पंचकोलतीक्ष्णहै पाचनहै कफ वातकोहरैहै अरु गुल्म, तिल्ली उदरशूल, आनाह इनरोगोंको हरैहै पित्तको कोप करैहै॥ निंबादिकषाय॥ निंब, गिलोय, शुंठ, देवदारु, कायफल, कुटकी, वचइन्होंकाकषाय बातकफ ज्वरको हरैहै संधिपीड़ा मस्तकशूल खांसी अरुचि इनको भी हरै है॥ किराताादि कषाय॥ चिरायता, शुंठि, गिलोय, कटैली पिपली, पीपलामूल, लहसुन, निर्गुण्डी इन्होंका कषाय बात पित्त ज्वरको जल्दी हरै है॥ वृहत् पिपल्यादि कषाय॥ पिपल्यादि गणका कषाय बात कफज्वरको हरैहै इससे ज्यादह औषध इसरोगमें नहीं है पिपली पीपलामूल, चव्य, चीता, शुंठि, बच, अतीस, जीरा, पाढ़ा कुरैया, रेणुबीज, चिरायता, कटुकी, मूर्वा, सर्षप, मरीच, कायफल, एरण्ड मूल, भारंगी, बायबिडंग, काकड़ासिंगी, आककीजड़, बड़ी कटैली रास्ना, धमासा, अजमाण, अजमोद, शिवणसाल, हिंग ये सब बराबर पिपल्यादि गणमें २८ औषध हैं इन्हों का कषाय बात कफ ज्वर को हरै अरु बात रोग को व शीत रोग को व पसीना व कंप व प्रलाप व अतिनींद रोमांच व अरुचि व महाबात व अपतंत्र व शून्य रोग इतने रोगों को हरै यह पिपल्यादि कषाय है॥ सिंहिकादि कषाय॥ कटैली, अजमाण, गिलोय इन्हों का कषाय पिपली चूर्णयुत, कफज्वर, कास, श्वास, पीनस इनको हरैहै॥ कटूफलादि कषाय॥ कायफल शुंठ, बच, नागरमोथा, पित्तपापड़ा, धनियां हरड़, काकड़ासिंगी, देवदारु, भारंगी इन्हों का कषाय बात कफ ज्वरकोहरै॥ दशमूली कषाय॥ दशमूल रसमें पिपली चूर्णगेरपीवै तो

कफज्वर, अजीर्ण, तन्द्रा, पार्श्वशूल, श्वास, कास इनकोहरै ॥ पिपल्यादि कषाय ॥ पिपली का कषायपीवै तो वात कफज्वरको प्लीहको नाशै॥ दार्व्यादि कषाय ॥ देवदारु, पित्तपापड़ा, भारंगमूल, नागरमोथा, वच धनियां, कायफल, हरीतकी, शुंठ, करंजवा इन्होंका कषाय हिंगुशहत युतपीवै तो कफ वातज्वर हुचकी शोष गलग्रह श्वास कास प्रमेह इन रोगों को नाशै जैसे वृक्षको इन्द्रवज्र तैसे ॥ पटोलादि कषाय ॥ कड़ू परवल, शुंठ, इन्द्रयव, पिपली इन्होंका काढ़ा दीपनपाचनहै अरु तृषाको व वात कफरोगको व शूलको व श्वास कासको व अरुचिको व बद्धकोष्ठ को नाशै है ॥ क्षुद्रादि कषाय ॥ कटैली, गिलोय, शुंठ पुष्करमूल इन्होंका कषाय वात कफज्वरको व श्वास कास अरुचि पार्श्वशूल त्रिदोष ज्वर इनको हरैहै ॥ आरग्वधादिकषाय ॥ अमलतास, पीपलामूल, नागरमोथा, कटुकी, हरीतकी इन्होंका कषाय वात कफ ज्वर को हरै ॥ मुस्तादि कषाय ॥ नागरमोथा, पित्तपापड़ा, शुंठ गिलोय, धमासा इन्होंका कषाय कफ वात अरुचि छर्दि दाह शोष कफवातज्वर इन रोगोंको हरैहै ॥ भूनिम्बादि कषाय ॥ चिरायता, नागरमोथा, कटुकी, गिलोय, धमासा, पित्तपापड़ा, शुंठ इन्हों का कषाय वातकफज्वर को नाशै है ३०४ ॥ चातुर्भद्रादि कषाय ॥ चिरायता नागरमोथा, गिलोय, शुंठ यह चातुर्भद्रहै वात कफको हरैहै । स्वेद शोषकचूर्ण ज्यादह पसीनासे कुलथी चूर्ण शरीरमेंमलै अथवा जीर्ण गोमय अरु लवणकापात्र इन दोनों को चूर्णकरि शरीरमें मलै तो स्वेददूरहोवै अथवा मिरच, शुंठ, पिपली, हरीतकी, लोध, पुष्करमूल चिरायता, कटुकी, कुलिंजन, शिवलिंगी, कचूर, कपूर, काचरी, इन्होंको चूर्णकरि शरीरमें स्रोतोंकेमलै तो स्वेद दूरहोवै अथवा चिरायता अजमाण, कटुकी, वच, कायफल इन्होंका चूर्णशरीरमेंमलै तो स्वेददूर होवै ॥ सूर्यशेखररस ॥ पारा १ भाग, भूनासुहागा १ भाग, शुद्ध गन्धक १ भाग अरु जयपाल तुष रहित २ भाग, सींधा १ भाग, मरिच १ भाग, चिंचाखार १ भाग, दालचीनी १ भाग, खांड १ भाग इनको जंभीरी नींबूके रसमें १ दिन खरलकरै यह सूर्यशेखर रसहै २ रत्ती गरमजल संग देने से वात कफज्वर को हरै ॥ कफपित्तज्वर लक्षण ॥

मुख कफसे लिपारहै अरु कडुवारहै तन्द्रा होवै मोहहोवै खांसीहो अरुचिहो शरीर जकड़ाहो कफपित्तपड़ै पसीनाआवै कभीजाडालगै कभी दाहहोवै ये पित्तकफज्वरके लक्षण हैं इस ज्वर में दशवेंदिन औषधदेवै ॥ कंटकार्यादि कषाय ॥ कटैली, गिलोय, भारंगी, शुंठ, इन्द्र-यव, बासा, चिरायता, चन्दन, नागरमोथा, परवल, कटुकी इन्हों का कषाय पित्त कफज्वरको दाहको तृषाको अरुचिको छर्दिको खांसी को श्वासको शूलको हरै है ॥ नागरादि कषाय ॥ शुंठ, बाला, नागर-मोथा, धनियां मोचरस इनका कषाय ग्राहीहै पित्त कफज्वरको हरै है ॥ शृंगबेरादि कषाय ॥ परवल अदरख का कषाय पित्त कफज्वर छर्दि दाह खाज बिसर्प इनरोगोंको हरैहै ॥ पटोलादियूष ॥ परवल धनियां इनका यूष पित्तकफज्वर को हरैहै दीपन है ३२० ॥ पटो-लादि कषाय॥ परवल, निंब, हरीतकी, बहेड़ा, आंवला, मुलहठी, बला इनका कषाय पित्त कफज्वरको हरैहै ॥ तिक्तादिकषाय ॥ कटुकी, बाला बला, धनियाँ, पित्तपापड़ा, नागरमोथा इनकाकषाय पुनर्ज्वर को हरैहै ॥ लोहितचन्दनकषाय ॥ रक्तचन्दन, पद्माख, धनियाँ, गिलोय निंब इन्होंकाकषाय पित्तकफज्वर, दाह, तृषा, छर्दि को नाशै अरु अग्निको बढ़ावै ॥ जीरकादिकषाय ॥ जीरा, करेलारस, शीतज्वर में हितहै वा नागरमोथा, पित्तपापड़ा यहशीत कषाय भी शीतज्वरको हरैहै। अरु इन्द्रयव, पित्तपापड़ा, धनियाँ, परवल, निंब इन्हों का कषायशहतयुत पित्त कफज्वरको नाशै ॥ नागरादिकषाय ॥ शुंठ, इन्द्र-यव, नागरमोथा, रक्तचन्दन, कटुकी इन्होंका कषाय पित्तकफज्वर को व भ्रम मूर्च्छा अरुचि छर्दिको हरैहै ॥ द्राक्षादिकषाय ॥ मुनक्का अमलतास, कुटकी, नागरमोथा, पीपलामूल, धनियाँ इन्हो का कषाय पित्तकफज्वरको व उदावर्त्त व शूलकोहरैहै॥ पटोलादिकषाय॥ परवल, इन्द्रयव, धनियाँ, नागरमोथा, आँवला, रक्तचन्दन इन्हों का कषाय कफ रोगको व पित्त कफ ज्वरजनित तृषा छर्दि दाहको हरैहै ॥ यवादिकषाय॥ इन्द्रयव, पद्माख, धनियां, हल्दी, दारुहल्दी रक्तचन्दन, गिलोय, देवदारु, तेजबल, धमासा इनका कषाय पित्त कफज्वरको हरैहै। अरु तृषा, छर्दि, दाह को भी हरैहै अरु वीर्य्यको

वढ़ावे है अग्नि को दीपन करै है ॥ त्रायंत्यादिकषाय ॥ त्रायमाण नागरमोथा, कटुकी, सफेद कटैली, परवल इन्हों का कषाय पित्त कफज्वर में दीपनपाचनहै ॥ किरमालादिकषाय ॥ अमलतास, बच हिंग, वाला, धनियाँ, हल्दी, नागरमोथा, मुलहठी, भारंगी, पित्त-पापड़ा इन्होंका कषाय अष्टमांश शेषरहा शहतयुत पित्तकफज्वर को हरैहै पथ्यवाले को ॥ पटोलादिकषाय ॥ परवल, नागरमोथा वाला, रक्तचन्दन, कटुकी, पित्तपापड़ा, शुंठ, वाला, वासा इन्होंका कषाय कफ पित्तज्वरको हरैहै अरु तृषाको हरै ॥ गुडूच्यादिकषाय ॥ गिलोय, निंब, धनियाँ पद्माख, रक्तचन्दन इन्हों का कषाय तृषा छर्दि, अरुचि, सर्वज्वर इनको हरैहै ॥ शुंठ्यादिकषाय ॥ शुंठ, पित्त-पापड़ा, धमासा इन्होंकाकषाय कफपित्तज्वरको हरै। अथवा चिरा-यता, नागरमोथा, गिलोय, धमासा इन्हों का कषाय भी पित्तकफ ज्वरको हरैहै ॥ पंचतिक्तकषाय ॥ कटैली, गिलोय, शुंठ, पुष्करमूल चिरायता इन्होंका भी कषाय सर्वज्वरको हरैहै ॥ भारंग्यादिकषाय ॥ भारंगी, पुष्करमूल, नागरमोथा, कटैली, गोखुरू, बड़ीकटैली, अम-लतास, शुंठ इन्होंका कषाय पित्त कफज्वरको हरै है। अरुखांसी श्वास, अरुचि, पार्श्वमूल इन्होंको हरैहै ॥ पटोलादिकषाय ॥ परवल चन्दन, मूर्वा, कटुकी, पाढ़ा, गिलोय, पिपली इन्होंका कषाय पित्त कफज्वरको व अरुचि, छर्दि, खाज, विषइनकोभीहरैहै ॥ त्रिफलादिक-षाय ॥ त्रिफला, त्रायमाणा, मुनक्का, कटुकी इन्होंकाकषायपित्तकफज्वर को हरैहै ॥ वत्सकादिकषाय ॥ कुरैया, पद्माख, शुंठ, रक्तचन्दन, पाढ़ा मूर्वा, गिलोय, वाला, कटुकी इन्होंका कषाय सर्वज्वर को हरैहै अरु रक्त, पित्त, दाह, शूल, अम्लपित्त इनको नाशैहै ॥ अमृतादि कषाय ॥ गिलोय, निंब कटुकी, नागरमोथा, इंद्रयव, शुंठ, परवल चन्दन इन्होंका कषाय पिपली चूर्णयुत पीवै यहअमृताष्टकहै पित्त कफ ज्वरको हरैहै अरुछर्दि, अरुचि, हल्लास, दाह, तृषाइनको भी हरै है ॥ वासास्वरस ॥ पत्र पुष्प सहित वासाकारस मिश्री शहत युत कफपित्तज्वरको व रक्तपित्तको व कामलाको हरै है ३४६ ॥ कटुकीचूर्ण ॥ कटुकीका चूर्ण खांड़युत गरम जलसंगलेतो पित्त कफ

ज्वरकोनाशै ॥ लाजमण्ड ॥ धानकी खीलकरिकै वाचालकका लाज मण्डहो इसके पानसे पित्त कफज्वर जावै अरु तृषामिटै ॥ बाटमंड ॥ सुन्दर यवभुनेहुवों का बाटमण्डहोयहै यह कफपित्तज्वरको व कंठ रोगको व रक्तपित्त ज्वरको हरै है ॥ मुस्तादिनिर्यूह ॥ नागरमोथा पित्तपापड़ा, चिरायता इन्हों का निर्यूह व पित्तपापड़ा का यूष व धनियां पित्तपापड़ा का यूष पित्तकफज्वर को हरैहै ॥ निंबादियूष ॥ निंबकडू परवल इन्हों का यूष पित्त कफज्वरकोहरैहै ॥ भूनिंबादि ॥ चिरायता, अजमाण, कटुकी, बच, कायफल इन्होंकारज शरीरमें मलनेसे ज्यादहस्वेदमिटै ॥ चन्द्रशेखररस ॥ शुद्धपारा, शुद्धगन्धक,मरिच, सुहागा ये सब बराबर और चारोंकीसम मनशिललेवै मत्स्य पित्तामें तीनदिन भावना करे यह चन्द्रशेखर रसहै इसको २ रत्ती अदरख के अर्कमेंदेवै ऊपर शीतल जलपीवै अरु पथ्यतक्र चावल व वृन्ताक सागदेवै तीनदिनतक देने से कफपित्तज्वरको व ज्यादह गरमीको व ज्वरको हरैहै ॥ सन्निपातज्वर लक्षण ॥ आपही कभीदाह कभी शीतलगे अस्थि संधि शिर इनमें पीड़ाहो। नेत्रोंमें जलआवै काले व लालहोजावैं अरु गदलनेत्रहों कानोंमें शब्द और पीड़ाहो। कंठमें कांटेपड़जावैं तन्द्रा मोह प्रलाप श्वास कास अरुचि भ्रम यहभीहों अरु जीभकाली अरु खरधरीहोकरलठरायजावै अंगसब बिकल होजायँ रुधिरमिला कफ व पित्त थूकै। अरु शिरकोधुनै तृषा अधिकलगै नींदआवै नहीं हृदयमें पीड़ाहो पसीना मूत्र मल उतरै नहीं उतरै तो थोड़ा उतरै शरीर अति कृशनहोवै कंठमें निरन्तर कफबोलै श्याम व लालमण्डल शरीरमें पड़जावै ज़बान से बोलै नहीं याने गूंगाहोजाय मुख, नासिका, कान इनका पाकहो पेटभारी होजावै अरु बातादि कुपित दोषोंका चिरकाल में पाकहो यह सन्निपात ज्वर के लक्षण हैं ॥ धातुपाक लक्षण ॥ नींदका नाश हो हृदयमें स्तंभहो मलका अवरोध हो शरीर भारिरहै अरुचिहो सब पदार्थमें अप्रीतिहो बलनाशहो ये धातुपाक के लक्षणहैं ॥ दोषपाक लक्षण ॥ दोष व प्रकृति विकारको प्राप्तहोवै अरु ज्वर व देहहलकी हो इन्द्रियोंको अपने २ विषयों के ग्रहण करनेकी शक्ति कमहो ये

दोषपाक के लक्षणहैं। सन्निपात ज्वरके अन्तमें कानके मूलमें दारुण सूजनहो तो हज़ारों में कोई एकजीवै ॥ साध्यासाध्य लक्षण ॥ वातादि दोष वृद्धिहुयेहों अरु अग्नि नाशहोजाय संपूर्ण लक्षणहों तो सन्निपात ज्वर असाध्य है इससे विपरीत कष्टसाध्य होय है। सन्निपात ज्वर सातदिनमें व नवादिनमें व ग्यारह दिनमें फेर घोर तरहोके शांतहोय व नाश रोगीको करै। और सन्निपातकी मर्यादा अठारहदिन व चौदहदिन वा बाईसदिनकी है चाहे शान्तहो चाहे रोगीको मारै॥ त्रिदोषज ज्वर ॥ धातु मल पाकहोनेसे वातादि दोष की वृद्धि करिकै सातदिन वा नवदिन वा बारहदिन इन दिनोंतक शान्तहोय वा मारदेवै ॥ कट्फलादिपान ॥ कायफल, त्रिफला, देवदारु, रक्तचन्दन, फालसा, कटुकी, पद्माख, कालावाला ये औषध कर्ष तोल जलमें पकावै इसकापान त्रिदोषज्वर दाहसहितको अरु तृषा कोहरै दीर्घकालसे ज्वरवालों को यह अमृत समान है। दशमूलादि मण्ड लाजमण्ड दशमूल कषाय संग सिद्धकिया सन्निपात ज्वर में हितहै अथवा धमासा, गोखरू, कटैली इन्हों में सिद्धआहार। दोष शान्तिके अर्थ हितहै॥ ज्वरवाला धानकी खील के सत्तू सेंधा लवण सहितखावै इससे आरामहोवै जल्दी यह जीर्णहोवै यहलाज सत्तू रक्तपित्तमें तृषामें दाहमें ज्वरमें शीतलरूप हितहै परन्तु सन्निपातमें न देवे सन्निपात ज्वरमें प्रथम पित्तको हरै ज्वरवालोंमें पित्त शमनहीं मुख्यहै। सन्निपात ज्वरमें दाहयुत रोगीको शीतल जल से सेचनकरै तो रोगी जीवेनहीं यहकर्म वैद्यत्यागे॥ शिरपाद्यंजन॥ शिरसबीज, पिपली, मिरच, सैंधव इन्होंको गोमूत्रमें खरलकरि नेत्रों मेंआंजैतोशुद्धहोवै अथवा मैनशिल, बचइनको लहसुन रसमेंपीस नेत्रोंमेंआंजैतो मूर्च्छाहटै अथवा कस्तूरी, मरिच इनको अश्वकी लारमेंपीस अरु शहत मिलाय नेत्रोंमेंआंजैतो तन्द्राहटै। वा मिरच पीपल, शुंठ इन्हों को महीनपीस नासदे तो भी तन्द्रा मिटै। सन्निपात ज्वरवाला पहिले लंघन करै। अरु चतुर्थांश रहा जलठण्ढा करिपीवै यही औषधहै अरु समयपर औषधलेवै। सन्निपात ज्वर में तृषावाले को व पशुली शूलवाले को व तालुशोषवाले को जल

शीतल कभी भी न प्यावै जो प्यावै तो मृत्यु होइ ॥ वालुकास्वेद ॥ बात कफज्वरमें रुक्षस्वेद करवावै स्निग्ध स्वेद केवल वातज्वरमें करवावै ॥ सैंधवादिनस्य ॥ सैंधव लवण, सफ़ेद मरिच, सर्षप, कुलिंजन इनको बकरा मूत्रमें खरलकरि नस्य देवै तो तन्द्रा मिटै अथवा बिजौरा, अदरख इनका रस कछुक गरम करि अरु सैंधव, बिड़ियालोन, काचलोन इन्हों सहित नस्यबनायके नाकमें लेवै इससे कफ शान्तहो निकसजावै अरु शिर, हृदय, कंठ, मुख, पशुली इनकी पीड़ाहटै ॥ कल्पतरुनस्य ॥ मूर्च्छा नाश वासो कल्पतरु रसकी नस्यके समान कोई नस्य नहींहै ॥ द्राक्षादि जिह्वालेप ॥ जीभ रोग, तालुरोग, कण्ठरोग, जिह्वा खरधरी होय व जिह्वा फटजावै व कांटे पड़जावैं इनरोगों में दाखों को शहत में पीस घृतयुक्त करि जीभमें मलै इससे जीभके रोग मिटैं अरु कोमलहोवै ॥ द्राक्षादिक वलग्रह ॥ सैंधानमक व त्रिकटु इनको अदरखके रसमेंमिलाय इस को मुखमेंरक्खै रसकंठमें जानेदेवै इसमेंसे वारंवारथूंकै तिसकरिकै हृदयरोग, मन्यास्तंभ, पशुलीशूल, शिर व कंठशूलइनकोनाशै अरु कफहटै शरीरहलकाहोवै। अरु संधिशूल, ज्वर, मूर्च्छा, निद्रा, श्वास गलरोग, मुख नेत्र का भारीपन व जड़पना व ग्लानि ये सब नाश होवैं। यह बलाबल देखके एकदिन वा दोदिन व तीन व चारदिन तक यह लेवै तो सन्निपात वालों को श्रेष्ठ है अष्टांगावलेह भी सन्निपात में अच्छाहै अरु ऊपर के अंगों के रोगों में सायंकाल में अवलेहलेवै अरु नीचेकेअंगोंके रोगोंमें प्रातःकालमें अवलेह श्रेष्ठ है ॥ कटूफलादि अवलेह ॥ कायफल, पुष्करमूल, काकड़ासिंगी, त्रिकटु धमासा, अजमोदा इनकोचूर्णकरि वस्त्रसेछान शहतमें अवलेहकरै इससे सन्निपातज्वर, हुचकी, श्वास, कास, कंठरोग नाशहोवै यही चूर्ण कफरोगमें अदरख रसमें मिलायदेवै। यही मोहको व मूर्च्छा को व तंद्राको व खांसीकोहरैहै अरु सम्पूर्ण सन्निपातोंमें शहतदेवै नहीं शहतशीतलहै अरु शीतलपदार्थ इसमेंअच्छेनहीं अरुगरम पदार्थ संगशहत विषसमान होजाय है ऐसेजानो। सन्निपातज्वर में पहिले आमकफ नाशक औषधदेवै जब कफकोप क्षयहोजाय तब

पित्तवातकोहरै। अरु लंघन, तालुकास्वेद, नस्य, निष्ठीवन, अवलेह अंजन ये सब सन्निपात में हितहैं। लंघनोंका सहना यहदोषोंकी शक्तिहै अरु अच्छापुरुष लंघनसहतानहीं। सन्निपातमें जोऔषध देवे जब उसकावेग शांतहोले तब दूसरीदेवै। सन्निपातज्वर में तपाये लोहसे शरीरमें पांचजगह दागदेवै अरु रुद्राभिषेक, ब्राह्मण भोजन, ग्रहजप, मंत्रादि से रक्षाकरै ४१ ॥ कंटकार्यादिपाचन ॥ कटैली दोनों, शुंठ, धनियां, देवदारु इन्हों का कषाय सर्व ज्वर को हरैहै ॥ मनशिलादिअंजन ॥ मैनशिल घोड़ाकी लार में पीसके नेत्रों में एकबारभी आंजे तो तंद्रानाश होवै। बबूल के पत्ती व हरीतकी इन्होंका बफारा पसीना को हरैहै। अरु चिरायता, कटुकी, कुलिंजन, अजमान, इन्द्रयव, कचूर ये बराबरले चूर्ण करि शरीर में मलै तो पसीना, कंठरोध, सन्निपात नाशहोवै अथवा अजमान वच, शुंठ, पिपली, अजमोदा इन्हों का चूर्ण महीनपीस शरीर में मलै तो सन्निपात जावै अथवा वच, नागविष एकभाग, मरिच २ भाग, रानशेणी भस्म १६ भाग इन्होंकाचूर्ण धतूरेके रससे भावना कियाहुआ धूपमें सुखाके शरीर में मलै यहपसीना व शीतको नाशै। अथवा भुनेहुयेचने, अजमान, वच, मिरच इन्होंका महीन चूर्ण शरीरमेंमलै तो पसीनानाशहोवै अथवा तुलसीकारस अजेक त्रिकटु इनको शहतयुतकरि चाटै तो कफरोग व मूर्च्छा सन्निपातमें नाशकरै। अरु सन्निपातमें लंघन३ रात्रि व ५ रात्रि व१० रात्रितक करै अरु लंघन सन्निपातमें आरोग्यहोनेतकभी बुरानहीं। लंघनके अन्तमें पूर्वोक्त ग्रासदेवै ॥ अतिलंघनलक्षण ॥ ज्यादहलंघनको कफ पित्त सहैहै अरु आमक्षय पीछे वायु क्षणमात्रभी लंघनकोसहेनहीं। हीनलंघनसे मैथुनमें अश्रद्धा व शरीरभारीहोय समलंघनसे रुचि उपजै शरीरहलका होवै ग्लानि मिटै प्रसन्न चित्तहोइ सब उपद्रव शांतहोवैं अरु अतिलंघनसे मोहउपजै अरु संधि शिथिलहों अरु वायुका रोगहोवै ऐसे लंघन प्रकार कहाहै ४१८ पंचमुष्टिकयूष में गोखुरू चूर्णयुतकरि दोषशमन होनेतकदेवै। यव १ कोल २ कुलथी३ मूंग४ शुंठ५ इन्होंको चार२ तोलेलेवै आठगुणाजलमेंपकावै इस

से बातपित्त कफनाशहोवै अरु शूल,गुल्म,श्वास,कास,ज्वर ये नाशैं अरु सप्तमुष्टिकयूषकहतेहैं यव १ कोल २ कुलथी ३ मूंग ४ सुकेमुले ५ धनियाँ ६ शुंठ इन्हों का यूष सन्निपात ज्वरको व बातकफ रोग को व आमरोग व कंठरोगको हरै अरु मुखको शुद्धकरै। सन्निपात में जो मनुष्यकांपै अरु ज्यादहबकै कछुभी संज्ञा न रहै तिसकी चिकित्सा कहेहैं। ऐसेरोगीको पुराने घृतसे अभ्यंग शरीरकाकरै पीछे बला, रास्ना, गिलोय इन्हों को तेलसे अंगोंको सेचनकरै अथवा वर्त्तक, लावक, तित्तर, शशा, कुलिंग इनजीवोंके मांसरस से अग्निबल पूर्वक तृप्तकरै। अरु सन्निपातवाले को भूखलगने में जो मांसखानेको देवै वहवैद्य नीचहै प्रतिष्ठाको प्राप्तहोवै नहीं॥ सुवर्णादिलेप॥ सोना, मोती, चांदी, मूँगा, कस्तूरी, केशर, गोरोचन, कौड़ी रुद्राक्ष, मुलहठी, बेलफल, कुलिंजन, खजूर, पुनर्नवा मुनक्का, पिपली, शुंठ, जीयापोता, मृग सारंगासिंग, कतकबीज, एरण्डजड़ शरजातितृण, मयूरिका, श्वेतसांठी स्त्री के दूधमें पीसकरि शरीर में लेपकरै तो सन्निपातआदि सबरोग नाशहोवैं। सन्निपात ज्वरमें कफ निग्रहपाहिलेकरै कफशांत बाद स्रोत प्रकाशहोतेहैंअरु शरीरहलका होवै अरु तृषामिटै॥ अन्य सन्निपातनिदान॥ सन्निपात १३ प्रकारके हैं बातोल्वण १ पित्तोल्वण २ कफोल्वण ३ बातपित्तोल्वण ४ बात कफोल्वण ५ पित्तकफोल्वण ६ त्रिदोषोल्वण ७ हीनबात मध्य पित्त कफाधिक ८ हीनबात मध्यकफ व पित्ताधिक ९ हीनपित्त मध्य कफ बाताधिक १० हीनपित्त मध्यबात कफाधिक ११ कफहीन मध्यबात पित्ताधिक १२ हीनकफ मध्यपित्त बाताधिक १३ ऐसेहोयहैं॥ बातोल्वणसन्निपातलक्षण॥ संधिहाड़शिर इन्होंमेंशूलहो ज्यादहबकै अरु शरीर भारीरहै। अरुभ्रमहो तृषाहो कंठ व मुखसूखे रहैं बाताधिक व कफपित्तहीन ऐसासन्निपात में होवै॥ पित्तोल्वणसन्निपातनिदान॥ मलमूत्र लालहो अरु दाह हो अरु पसीना आवै तृषालगै बल नाशहो मूर्च्छाहो ऐसेलक्षण पित्ताधिक सन्निपातमें होयहैं॥ कफोल्वणसन्निपातनिदान॥ आलस्यहोवै अरुचिहोय हृल्लासहो दाहहो बमन हो अरति हो भ्रमहो तंद्रा व कासहो ऐसे लक्षण कफोल्वण

सन्निपातके हैं ॥ वातपित्तोल्वणनिदान ॥ भ्रमहो प्यासलगै, दाहहो शरीर भारीरहै। शिरमें शूलहोय ये लक्षण मंदकफ ज्वरबात पित्तोल्वण सन्निपात में होयहैं॥ बातकफोल्वणनिदान ॥ शीतलता, कास अरुचि, तंद्रा, तृषा, दाह, अंगपीड़ाऐसेलक्षणबातकफोल्वणपित्तावर सन्निपातमें होय हैं॥ पित्तकफोल्वणानिदान ॥ छर्दि हो जाड़ालगै बारबार दाहहो तृषाहो मोहहो हाड़ों में पीड़ाहो मन्दबात पित्तकफोल्वण सन्निपात में ऐसे लक्षण होयहैं ॥ त्र्युल्वणसान्निपातनिदान ॥ सर्ब लक्षण युतहो उसे त्र्युल्वण सन्निपात कहे हैं ॥ हीनबात मध्यपित्त कफाधिक सन्निपात लक्षण ॥ पीनस, छर्दि, आलस्य, तंद्रा, अरुचि अग्निमन्द ऐसे लक्षण हीनबात मध्यपित्त कफाधिक सन्निपातके होयहैं ॥ हनिवात मध्यकफ पित्ताधिक निदान ॥ नेत्र मूत्र त्वचा हल्दी समानहोवैं दाहहो तृषाहो अरुचिहो भ्रमहोऐसेलक्षणहीनबातमध्य कफ पित्ताधिक सन्निपात में होयहैं ॥ हीनपित्त मध्यकफ बाताधिक सन्निपात निदान॥ शिरमेंशूल हो कंपहो, श्वास, प्रलाप, छर्दि, अरुचि ये लक्षण हीनपित्त मध्यकफ बाताधिक सन्निपात में होयहैं ॥ हनिपित्त मध्यवात कफाधिक सन्निपात निदान ॥ शीतलगै शरीर भारी हो तन्द्राहो प्रलापहो हाड़शिरइन्होंमें शूलहो ऐसा लक्षणहीनपित्त मध्य बात कफाधिक सन्निपातका होयहै ॥ हनिकफ मध्यवात पित्ताधिक सन्निपातलक्षण ॥ सन्धिमें पीड़ाहोय अग्निमंदहोय तृषालगै दाह अरुचिभ्रमहो ऐसे लक्षण हीनकफ मध्यबात पित्ताधिक सन्निपातमें होयहैं ॥ हीनकफ मध्य पित्त बाताधिक सन्निपात निदान ॥ कासहो श्वासहो खेहर हो मुख शोष हो पंशुली में शूलहो ऐसें लक्षण कफहीन मध्यपित्त बाताधिक सन्निपात में होय हैं ४४६ ॥ वातोल्वण सन्निपात चिकित्सा ॥ इस सन्निपात में पंचमूल काकाढ़ा दोष बलाबल देखिके गरमदेवै ॥ मुस्तादिकाढ़ा ॥ नागरमोथा, पंचमूल इनका काढ़ाभी इस सन्निपातकोहरै ॥ कटूफलादिकाढ़ा ॥ कायफल, नागरमोथा, बच, पाढ़ा, पुष्करमूल, जीरा, पित्तपापड़ा, देवदारु हरीतकी, काकड़ासिंगी, पिपली, चिरायता, शुंठ, भारङ्गी, इन्द्रयव कुटकी, कचूर, रोहिषतृण, धानियां इन्होंका काढ़ा हींग व अदरखरस

युत कानके मूलकी सूजनको व गल सूजनको व कफवातज्वरको व श्वासको व कासको व हुचकीको व हनुग्रहको व गलगण्डको व गण्डमालाको व स्वरभेद को व कफरोगको व शिरके भारीपनेको व बधिरपनेको व कफमेदकी वृद्धिको व दाह मूलक ज्वरोंको व सन्निपात ज्वरोंको व अभिन्यासको व मूर्च्छाको नाशैहै ॥ पित्तोल्वण सन्निपात चिकित्सा ॥ फालसा, त्रिफला, देवदारु, कायफल, रक्तचंदन पद्माख, कटुकी, पृश्निपर्णी इन्होंका काढ़ा शीतलरूप इस सन्निपात को हरैहै ॥ चन्दनादिपर्णी ॥ चन्दन, पद्माख, कटुकी पृथकपर्णी इन्हों काकाढ़ा शीतलकिया पीवै तो इस सन्निपात को नाशै ॥ मुस्तादि ॥ नागरमोथा, पित्तपापड़ा, बाला, देवदारु, शुंठ, त्रिफला, धमासा, लघुनीलि, कपिला, निशोत, चिरायता, पाढ़ा, बला, कटुकी, मुलहठी पीपलामूल यह मुस्तादिगणहै इसका जल यानी कषाय सन्निपात को हरैहै अरु पित्ताधिक सन्निपात ज्वरको व मन्यास्तंभको व उरोघातको व हनुस्तंभको व शिरोग्रहको नाशैहै ॥ किरात तिक्तादिकषाय ॥ चिरायता, नागरमोथा, गिलोय, शुंठ, पाढ़ा, बाला, कमल इनका कषाय इस सन्निपातको हरैहै ॥ शुंठ्यादिकाढ़ा ॥ कचूर, पुष्करमूल, कटेली, काकड़ासिंगी, धमासा, इन्द्रयव, परवल, कटुकी इन्हों काकाढ़ा सन्निपातज्वरको व कासको व श्वासको व दिनमें नींदकोव रातिमें जागरणको व मुखशोषको व तृषाको व दाहको व त्रिदोष रोगको हरैहै ॥ कफोल्वण सन्निपात चिकित्सा ॥ दोनोंकटेली, पुष्करमूल, भारंगी, कचूर, काकड़ासिंगी, धमासा, इन्द्रयव, कडूपरवल, कटुकी इन्हों का काढ़ा इससन्निपात ज्वरको व उपद्रव युत श्वासको हरैहै ॥ अथवा यह पूर्वोक्तबृहत्यादिगण ॥ दशमूल, फालसा त्रिफला, देवदारु, कायफल इन्हों का कषाय कफोल्वण सन्निपातज्वर को हरैहै ॥ त्र्युल्वणसन्निपात चिकित्सा ॥ शुंठि, धनियां भारंगी, पद्माख, रक्तचन्दन, परवल, निंब, त्रिफला, मुलहठी, बला खांड़, कटुकी, नागरमोथा, गजपिपली, अमलतास, चिरायता, गिलोय दशमूल, कटेली इन्होंका काढ़ा त्र्युल्वण सन्निपातज्वरको व सन्निपात उत्थानको व मृत्युरूप रोगको नाशैहै ॥ व्योषादिकाढ़ा ॥ शुंठ

मिरच, पिपली, नागरमोथा, त्रिफला, निंब, कडूपरवल, कटुकी इन्द्रयव, चिरायता, गिलोय, पाढ़ा इन्होंकाकाढ़ा त्रिदोषज ज्वर को हरैहै ॥ वातपित्तोल्वण सन्निपात चिकित्सा ॥ लघुपंचमूल काकाढ़ा शहदयुत वात पित्तज्वरको व वातपित्तोल्वण सन्निपात को हरै है ॥ वातकफोल्वण चिकित्सा ॥ चिरायता, नागरमोथा, गिलोय, शुंठ इन्हों का काढ़ा चातुर्भद्र नामक वात कफोल्वण सन्निपात को हरैहै ॥ पित्तकफोल्वण चिकित्सा ॥ पित्तपापड़ा, कायफल, कुलिंजन, कालावाला रक्तचन्दन, शुंठ, नागरमोथा, काकड़ासिंगी, पिपली इन्होंका काढ़ा पित्तकफोल्वण सन्निपातको व तृषाको व दाहको व अग्नि मन्दता को हरैहै ॥ हीनवात मध्यपित्त कफाधिक इस आदिले छहों सन्निपातों की एकतन्त्र चिकित्सा ॥ जो दोष बढ़ाहुआ हो उसे क्षयकरैअरु जो दोष क्षयहो उसे बढ़ावै । ऐसेहीन वृद्ध दोषों की चिकित्सा करै । बढ़ा हुआ दोष शान्तहुआ पीछे मध्यदोष आपहीशान्तहो अरु क्षय हुआ दोष वृद्धिहुआ पीछे मध्यम दोष आपही बढ़ै ॥ द्वात्रिंशांग ॥ भारंगी, चिरायता, निम्ब, नागरमोथा, कटुकी, बच, शुंठ, मिरच पीपल, बासा, बिशाला, रास्ना, धमासा, कडूपरवल, देवदारु हलदी, पाढ़ा, कुचला, ब्राह्मी; दारुहलदी, गिलोय, निसोथ, अतीस, पुष्करमूल, त्रायमाण, कटैली, दोनों इन्द्रयव, त्रिफला, कचूर बराबर ले काढ़ाकरै इससे तेरह सन्निपात नाशहोवें अरुशूल को व कासको व हुचकीको व श्वासको व उरुस्तंभको व अंत्रवृद्धि को व कंठरोग को व अरुचिको व संधिग्रह को नाशै दृष्टान्त जैसे सिंह हस्ति समूहको तैसे ॥ अष्टादशांगकाढ़ा ॥ चिरायता, देवदारु दशमूल, शुंठ, नागरमोथा, कटुकी, इन्द्रयव, धनियां, गजपिपली इन्होंकाकाढ़ा तंद्राको व प्रलापको व खांसीको व श्वासको व अरुचिको व दाहको व मोहको व श्वासयुतज्वरको व अष्टविधिज्वरोंको व मृत्यु तुल्यज्वरको हरै ॥ द्वादशांग ॥ दशमूलके कषायमेंपुष्करमूल व पिपली मिलाय देवै इससे कास श्वासयुत सन्निपात ज्वरजावै ॥ सन्निपातावररेचन ॥ वेलफल, निसोथ, जयपालजड़, अमलतास इन्होंका कषाय नीलि चूर्ण युत अरु घृत गौ का मिलाय पीवै लो

जलदी विरेचन होवै ॥ संज्ञानाशचिकित्सा ॥ जिसे मूर्च्छा हो अरु ज्यादहबकै अरु कांपै तिसे वर्त्तक,लावक,तित्तर, कुलिंग इनजीवों के मांसरससे तृप्तकरै अरु पुराने घृतसे शरीरमें अभ्यंगकरवावै। अरु बला, रास्ना, गिलोय इन्होंके तेलसे सेचन करै ॥ विल्वादि काढ़ा ॥ बेलफल, अरणी, स्योनाक, गम्भारी, पाठला, शालिपर्णी पृश्निपर्णी, दोनों कटैली, गोखुरू, दोनों दशमूल इन्हों का काढ़ा सन्निपात ज्वरको हरै है॥ शुंठ्यादिकाढ़ा ॥ शुंठ,देवदारु,कचूर,पित्त-पापड़ा, बड़ीकटैली, कुटकी, चिरायता, नागरमोथा, धमासाइन्हों का काढ़ा पिपलीचूर्ण शहद युत सन्निपातज्वरको व जीर्णज्वर को व कास को व विषमज्वर को हरै है ॥ अर्कादिकाढ़ा ॥ आक,धमासा चिरायता, देवदारु, रास्ना,निर्गुण्डी,बच,अरणी,सेव,पिपली,पीप-लामूल, चवक, चीता, शुंठ, अतीस, मार्कव इन्होंका कषाय सन्नि-पात ज्वरोंको व वायुरोगोंको व दन्तबन्धको व धनुर्वातको व शीत को व श्वासको व अंग जकड़नेकोनाशै है अरुकास सूतिकारोगको भी नाशै है ॥ तिक्तादिकाढ़ा ॥ कुटकी,चिरायता,पित्तपापड़ा,गिलोय कचूर, रास्ना,पिपली,पुष्करमूल, त्रायमाण, कटैली, देवदारु, शुंठ हरीतकी, धमासा, भारंगी इन्होंका काढ़ा सन्निपातज्वरको व दिन में शयनको व रात्रि जागरणको व मुखशोषको व दाह को व कास को व सर्व्वश्वासको नाशैहै। पित्ताधिक सन्निपातमें शुंठ्यादिकाढ़ा हित है। अरु कफाधिक सन्निपातमें वृहत्यादि काढ़ा हितहै। वा-ताधिक सन्निपातमें कटुफलादि काढ़ा हित है॥ दार्व्याद्यष्टादशांग ॥ देवदारु, शुंठ, चिरायता, धनियां, कटुकी, इन्द्रयव, गजपिपली दशमूल, नागरमोथा इन्होंका काढ़ा मृत्युतुल्य सन्निपातज्वरको व कासको व हृदयशूल को व पांशुपीड़ा को व श्वासको व हुचकीको व छर्दि को हरै है ५०० ॥ गुडूच्यादिकाढ़ा ॥ गिलोय, चन्दन, पुष्कर-मूल, शुंठ, इन्द्रयव, धमासा,हरड़, अमलतास,बाला,पाढ़ा,धनियां नागरमोथा, कटुकी इन्होंकाकाढ़ा पिपलीचूर्णयुत तन्द्राको व कास को व ज्वरको व श्वासको व तृषाकोहरैहै अरुमलमूत्र रोध व वायु रोध व अवष्टंभ व सन्निपातज्वर इनको भी हरै है। यह पाचन है

दीपन है ॥ अमृतादिकाढ़ा ॥ गिलोय, दशमूल इन्हों का कषाय तेरह विधिके सन्निपातज्वरकोहरैहै॥ विश्वादिकाढ़ा ॥ शुंठ,अतीस,दशमूल गिलोय, पाढ़ा, पिपली, इन्द्रयव, चिरायता, कटुकी, वासा इन्होंका काढ़ा ज्वरसे क्षीण रोगीको हित है ॥ त्र्यूषणादिकाढ़ा ॥ शुंठ, मिरच पीपल, दशमूल, भारंगी, गिलोय इन्होंका काढ़ा उग्र सन्निपातज्वर को हरै है ॥ दशमूलादिकाढ़ा ॥ दशमूल, पीपलामूल, शुंठ, भारंगी थोर, रानथोर इन्हों का काढ़ा सन्निपात ज्वरको हरै है ॥ आटरुषादि काढ़ा ॥ वासा, पित्तपापड़ा, निम्ब, मुलहठी, धनियां, नागरमोथा शुंठ, देवदारु, वच, इन्द्रयव, गोखुरू, पीपलामूल इन्हों का काढ़ा सन्निपातज्वर को व श्वासको व अतीसारको व कासको व शूलको व अरुचिकोनाशैहै ॥ कट्फलादिकाढ़ा ॥ कायफल,त्रिफला,देवदारु चंदन, फालसा, कडूपरवल,पद्माख,वाला इन्होंका काढ़ा सन्निपात ज्वरमें दाहको हरै है जिसे वहुत दिनोंसे ज्वर आताहो उसेअमृत तुल्यहै ॥ किरातादिकाढ़ा ॥ चिरायता, नागरमोथा, गिलोय,शुंठ यह किरातादि गणहै और इसे चातुर्भद्रभी कहतेहैं यहदशमूलसंहित इससे बहुतकालका ज्वर मिटै व बातकफोल्वण सन्निपात जावै व त्रिदोषज्वर जावै अरुयही किरातादि निसोतयुत जुल्लाबकरिशुद्धि करै अरु दशमूल, कचूर,काकड़ासिंगी,पुष्करमूल,धमासा, भारंगी इंद्रयव, परवल,कटुकी इन्होंकाकाढ़ा सन्निपातज्वरको हरै है अरु कास को हृदयशूलको व पशुली शूलको व श्वासको व हुचकीको व छर्दि को हरै है ॥ पंचतिक्क काढ़ा ॥ कटैली, पुष्करमूल, चिरायता गिलोय, शुंठ इन्होंका काढ़ा अष्टप्रकार के ज्वरोंको हरैहै ॥ दार्व्यादिकाढ़ा ॥ दारुहल्दी, नागरमोथा, चिरायता,त्रिफला, कटैली, परवल, हल्दी, निम्ब इन्होंका काढ़ा सन्निपातज्वर में मूर्च्छा को नाशै है ॥ ग्रंथ्यादिकाढ़ा ॥ पीपलामूल,इंद्रयव,देवदारु,गुग्गुल,वायविड़ंग भारंगी, माकव, शुंठ, मिरच, पिपली, चीता, कायफल, पुष्करमूल रास्ना, हरीतकी, कटैली दोनों अजमान, निर्गुण्डी, चिरायता,वच चवक, पहाड़मूल इन्होंकाकाढ़ा सब सन्निपातों को व बुद्धिभ्रंश को व स्वेदको व शीतको व प्रलापको व शूलको व आध्मानको व विद्र-

धिको व बातकफको व बातब्याधिको व सूतिकारोगकोनाशै है५.२१॥ लहसुनादिकाढ़ा ॥ लहसुन, चिरायता, तिरकांड, भारंगी, अतीसइन्हों का काढ़ा घोड़ा के मूत्र में बनायाहुआ पीवे तो दारुण सन्निपात ज्वरजावे अथवा दशमूलके यूष में कायफल का चूर्ण मिलायपीवैतो सन्निपातज्वर जावे अथवा यहीकाढ़ा अदरखके अर्ककेसंग पीवे तो सन्निपातज्वर जावै ॥ पंचमूलीकषाय ॥ पंचमूल व किरातादि गण त्रिदोषज ज्वर में हितहै शहद युत यही काढ़ा पित्ताधिक में हित है अरु पिपलीयुत यहीकाढ़ा कफाधिक में हितहै ॥ अर्कादिकाढ़ा ॥ आक पीपलामूल, सेंवा, देवदारु, चवक, निर्गुण्डी, पिपली, रास्ना, भृङ्ग सांठी, चीता, बच, चिरायता, शुंठ इन्होंका काढ़ा सन्निपातज्वरकोव सप्तबात को व सूतिका रोग को व नानाप्रकार के बायुरोग को व शीतको व अपस्मार रोगको नाशै जैसे कामदेव को महादेवजी तैसे॥ मृतसंजीवनबिटिका ॥ बच नागबिष, शुंठ, मिरच, पीपल, गन्धक सुहागाभुना, मृततांबेकीभस्म, धतूरा के बीज, सिंगरफ ये सब बराबर ले एकदिन भांगके रस में खरलकरै पीछे चने समान गोली बनावे और आककी जड़के कषाय के संग गोली खावे यह मृतसंजीविनी गोली सन्निपात ज्वरको नाशकरैहै ॥ त्रिनेत्ररस ॥ शुद्धपारा शुद्ध गंधक, ताम्रभस्म ये औषध बराबर लेवै तीनों तोल समान गौके दूधमें मर्दन करै धूपमें पीछे एकदिन निर्गुण्डी रसमें खरल करै पीछे शिग्रुज रसमें खरल करै फिर गोला बनाय अंधमूषागत कहे फिर तीन प्रहर बालुका यंत्रमें पकावे तिस पीछे खरलमें पीसै फिर अष्टमांश बचनागबिष मिलाय मलै यानी खरलकरै ऐसे त्रिनेत्ररस सिद्ध होयहै २ रत्ती रस पंचकोलकषाय संग वा बकरी के दूधके संग देवै इससे सन्निपातज्वर दारुणभी नाशको प्राप्त होवै इसमें संदेह नहीं ॥ भस्मेश्वररस ॥ बन के उपला की राख १६ तोले बिष यानी बचनाग १ तोला मरिच १ तोला इनको मिलायपीसै यह भस्मेश्वर रसहै सन्निपातज्वर को नाशकरै है १ रत्ती अदरखकेअर्क संग देवै ॥ अग्निकुमाररस ॥ पारा २ कर्ष गंधक २ कर्ष इन्होंकी कजली करै फिर हंसपदी रसमें १ दिन खरलकरै पीछे कल्ककीगोली

करि कांच की शीशीमें घाले अरु १ कर्ष विष घाले फिर शीशीका
मुख बन्दकरे फिर गलेतक वालुका से भरदेवे फिर १ दिन अरु २
रात्रि इतने कालतक दीप्तअग्नि से पकावे फिर स्वांग शीतल होने
पर काढ़लेवे फिर ६ माशे विष याने बचनाग ६ माशे मरिचकेसंग
द्रव्यको खरल करे ऐसे अग्निकुमार रस होयहै १ रत्ती दिया हुआ
सन्निपातज्वर को व वायुको व मन्दाग्नि को व शूलको व संग्रहणी
को व गुल्म को व क्षय को व पांडुको व श्वासको व कास को नाश
करे है॥ पंचवक्त्ररस॥ गंधक, पारा, ठांकणखार, मरिच, बिष इन्होंको
धतूराके रससें एकदिन खरलकरे ऐसे पंचवक्त्ररससिद्धहोयहै १ रत्ती
अदरख रसमें देवे इसमें सन्निपातज्वर नाश होयहै॥ दूसराप्रकार॥
शुद्धपारा, शुद्ध बच नाग विष, शुद्ध गंधक, मरिच, सुहागा, पिपली
इन्हों को धतूरा के रसमें १ दिन खरल करे पीछे सुखावे ऐसे पंच-
वक्त्ररस सिद्ध होयहै २ रत्ती आकके जड़की कषायकेसंग शुंठ मिरच
पीपली सहित दिया सन्निपात को नाशै है इसपै दही चावल पथ्य
है अरु शीतल जल इसी रसमें शहद मिलालेवे तो कफादिक दोष
नाशको प्राप्तहोवें यही रस शहद अदरख रस युत पीवे तो अग्नि-
मन्दता हटै इसरसकेऊपर घृतभोजन वहुतश्रेष्ठ है॥ उन्मत्तरस॥ शुद्ध
पारा एकभाग गंधक एकभाग इनको धतूराकेरसमें एकदिन खरल
करै दोनोंकी बराबर शुंठ मरिच पिपलीगेरे महीन पीसै ऐसे उन्मत्त
रस सिद्धहोयहै इसकी नाकमें नस्यदेनेसे सन्निपात नाशहोवे॥ कनक
सुन्दररस॥ सोना आठशाण, पारा बारहशाण, गंधक बारह शाण
तांबाभस्म दोशाण, अभ्रक भस्म चारशाण, स्वर्णमाखी दोशाण, बङ्ग
दोशाण, शुद्धसुरमातीनशाण, लोहभस्मआठशाण, शुद्धबिषबचनाग
तीनशाण, ग्रंथिपर्णी४तोले एकदिननींबूकेरसमें खरलकरै फिरमंद २
अग्निमें पचावे तिसपीछे सूक्ष्मचूर्णकरे ऐसे कनक सुंदररस होयहै
१ माशा अदरख के अर्क संग अथवा लहसुन के रस संग देवे इससे
सन्निपात ज्वर व किलासकुष्ठ व सर्व्व कुष्ठ व बिसर्प्परोग व भगं-
दर रोग व ज्वर व बिष व अजीर्ण इनको यहरस नाशकरैहै ५५६॥
तान्द्रिकसान्निपात॥ सन्निपात ज्वर में तन्द्रा होय उसे युक्ति से वैद्य

जीते यह ज्वरों में कष्ट साध्य उपद्रव है ॥ तन्द्रालक्षण ॥ जिस ज्वर केमध्य में आमाशय में कफ सञ्चित होनेसे सन्निपात ज्वर में तन्द्रा होयहै अथवा पतलारस व दूध व दिनमें शयन करना इन्हों से दुर्बल को व कमवातवालेको कफ कोप को प्राप्तहोयहै वह कफवायु मार्ग को रोक के धमनी नाड़ियों में जाय पहुंचे है अरु तन्द्रा को उपजावे है उस तन्द्राका लक्षण कहते हैं तन्द्रा वाले मनुष्य के नेत्र कछुक खुलेरहैं अरु गढ़ले होजावें अरु नेत्र के तारे भ्रमण लगैं अरु कभी नेत्र झपैं कभी खुलैं पलक चंचल रहैं सीधे शयन करते हुओं के मुख खुल जावैं दांत दीखैं अरु ओष्ठ फटैं अरु चिकना कफ कण्ठ में जावे अरु कण्ठ मार्ग को रोक देवै अरु शरीर बिकार को प्राप्त होवै इसतन्द्रावाला मनुष्य तीन रात्रितक साध्य पीछे असाध्य होय है ॥ असुरादि अंजन ॥ कासा मल्लकाचूर्ण कस्तूरी इन को शहद्में मिलाय नेत्रों में आंजेतोतन्द्रिक सन्निपात नाश होवै ५६४॥ लोहांजन॥ लोह की भस्म, सफ़ेद लोध्र, मरिच, गोरोचन इन्हों का अंजन नेत्रोंमें आंजे तो तन्द्रा नाशहोवै॥ सैंधवादिअंजन ॥ सेंधानमक मैनशिल, शुंठ, मिरच, पीपल इन्होंका अंजन तन्द्रा, मोहको नाशैहै ॥ ज्योतिष्मतीनस्य ॥ ज्योतिष्मतीतेल, पेठाजड़, बकराके मूत्र में पीस नस्य देवै तो तन्द्रानाश होवै ॥ जातीपुष्पनस्य ॥ जावित्री पुष्प, मूंगा मरिच, कटुकी, बच, सेंधानमक इन्हों को बकराके मूत्र में पीस नस्य देवै तो तन्द्रानाश होवै ॥ द्राक्षाद्यवलेह ॥ स्निग्ध आमका को पीस करि मुनक्का दाख संगमिलावै अरु शुंठ मिलाय शहद में अवलेह करै इसे चाटै तो श्वास, कास, मूर्च्छा, अरुचि नाशहोवै ॥ सन्निपात प्रकोप कारण ॥ खट्टा, चिकना, गरम, तीक्ष्ण, कटु, मीठा, मदिरा, तापन सेवा, कषाय, काम, क्रोध ज्यादह करना, अतिरूखे, भारी जड़पदार्थ मांस अतिपदार्थ सेवन, शीतपदार्थसेवन, शोक, श्रम, चिन्ता, पिशाच बाधा, अति स्त्री प्रसंग इन्हों के ज्यादा सेवन से चैत्र, वैशाख, श्रावण भाद्रपद, आश्विन, कार्त्तिक इनमासों में बहुत करके सन्निपात कोप को प्राप्तहोय है ॥सन्निपातनाम॥ संधिक १ अंतक २ रुग्दाह ३ चित्त विभ्रम ४ शीतांग ५ तंद्रिक ६ कण्ठकुब्ज ७ कर्णक ८ भग्ननेत्र ९

रक्तष्ठीवी १० प्रलापक ११ जिह्वक १२ अभिन्यास १३ ऐसेभेदहैं॥ इन्होंकीमर्यादा॥ संधिक७दिनरहै अन्तक१० दिन रुग्दाह२० दिन चित्तविभ्रम २४ दिन शीतांग १५ दिन तान्द्रिक २५ दिन कण्ठकुब्ज १३ दिन कर्णक ६० दिन भग्ननेत्र ८ दिन रक्तष्ठीवी १० दिन प्रलापक १४ दिन जिह्वक १६ दिन अभिन्यास १६ दिन इन्होंकी ज्यादह उमरयह है अरुमृत्यु क्षणमात्र में भी होजावे तो आश्चर्य नहीं॥साध्यासाध्य॥संधिक, तन्द्रिक, कर्णक, कण्ठकुब्जक, जिह्वक, चित्तविभ्रंश ये छः साध्यहैं अरु इन्हों से बाकी सात मारने वालेहैं॥

संधिक सन्निपात॥ ज्वर को पूर्वरूप में शूलचलै, अरुशोषहो वायु से बहुत जगह पीड़ाहो। कफवृद्धिहो। ज्वरवेग ज्यादह हो बल नाश होजावे अरु नींद आवे नहीं ये लक्षण संधिक सन्निपात के हैं॥

संधिकारिरस॥ शुद्धपारा, शुद्ध गन्धक, अभ्रकभस्म, तीनों खार जीरा, शुंठ, मिरच, पीपल, त्रिफला, लवण इन्होंको बराबर ले चीता के रस में यानी काढ़ा में १ दिन खरलकरै यहसंधिकारि रसहै इसे ५ रत्ती खावे पीपली शहदसंग ऊपर गरम जलपीवे॥

सन्निपातानलरस॥ पाराभस्म, गन्धक बराबर दोनों के बराबर तांबे की भस्म इसी सम खपरिया, इसीसमसिंगरफ इन्हों को अमलबेत के रस में इसके अभाव में चने के खार के रस में खरलकरै अरु नींबूकेरसमें खरलकरै १ पुट दे भूधरयंत्र में पकावे पीछे हिंग, कपूर, शुंठ, मिरच पिपली इन्हों सहित द्रव्य को खरलकरै ब्राह्मी के रस में सातपुट दे पीछे अदरख अर्क में सातपुट दे। फिर महाराष्ट्री के रसमें सात पुट दे फिर निर्गुण्डी रस में सात पुटदेवे फिर कनेर के रसमें सात पुट दे फिर चूर्ण करि इस रसको ६ रत्ती अदरखके अर्क संग देवे तो सन्निपात नाश होवे अरु अतितन्द्रा, ज्वर, श्वास, कास, ग्लानि अतीसार इन्हों को भी नाश करै॥

निर्गुण्ड्यादि धूप॥ निर्गुण्डी गुग्गुल, महुआ, निंबपत्र, राल इन्होंका धूपसंधिक सन्निपातको हरै॥

दूसरा निर्गुण्ड्यादिधूप॥ निर्गुंडी, निंब, कुलींजन, भांग, बिंदोलाकपास का, महुआ, बच, तगर, देवदारु, आकजड़, आजमान, चीता, बेलफल इन्होंकाचूर्णकरि शहदमें व आसवमें भिगोय इन्होंकाधूपग्रहपीड़ा

को व संधिक सन्निपात को नाशैहै ॥ देवदारुकाढ़ा ॥ देवदारु, कचूर अमरबेल, रास्ना, शुंठ इन्होंकाकाढ़ा गुग्गुल युतपीवै तो बायु रोग को नाशै ॥ मुस्तादिकाढ़ा ॥ नागरमोथा, एरंडमूल, जलपिपली, नील-कोरांटी, तेलियादेवदारु, गिलोय, रास्ना, शतावरि, कचूर, कटुकी, बासा शुंठ, दशमूल इन्हों का काढ़ा संधिक सन्निपात को व मन्यास्तम्भ बायुको हरैहै ॥ वचादिकाढ़ा ॥ बच, धमासा, गिलोय, भारंगी, कोरांट देवदारु, नागरमोथा, शुंठ, वृद्धदारु, रास्ना, गुग्गुल, असगन्ध, एरंड-मूल, शतावरिइन्होंकाकाढ़ा सन्निपात संधिककोवजड़ताको वग्लानि को व भोलको व पक्षाघातको नाशै है ॥ रास्नादिकाढ़ा ॥ रास्ना, शुंठ गिलोय, कोरांठा, नागरमोथा, शतावरि, हरीतकी, देवदारु, कटुकी कचूर, बासा, एरंडमूल, दशमूल इन्होंका काढ़ा प्रभातमें पानकिया अंतवृद्धिको व ज्वर को व पीठिका कमल पीड़ाको व संधिक सन्नि-पातको नाशकरैहै ॥ अमृतादिकाढ़ा ॥ गिलोय, एरंडमूल, शुंठ, देवदारु रास्ना, हरीतकी इन्होंकाकाढ़ा प्रभातमें पिया सकल बात रोगों को नाशै है ॥ ग्रन्थादिकाढ़ा ॥ पिपलामूल, बहेड़ा, हरीतकी, अमलतास आँवला, बासा इन्हों का काढ़ा एरंडतेल युत बायु रोगको व मन्द-पनाको हरैहै ॥ पञ्चमूल्यादि काढ़ा ॥ पंचमूल, पिपली, सैंधव, शुंठ इन्हों का चूर्ण कुलथीका कषाय युतकरि पीवै तो वायुरोगजावै ॥ रास्नादि काढ़ा॥रास्ना, गिलोय, कचूर, बरधारा, देवदारु, शुंठ, त्रिफला, शतावरि इन्हों का काढ़ा गुग्गुलसंयुक्त संधिक सन्निपातको हरै है । क्षारा-दि परिमाण, जीरा, गुग्गुल, खार, लवण, शिलाजीत, हिंग, शुंठ, मिरच पीपल ये ४ माशे क्वाथमें देने प्रतिवासके योग्य हैं अरु संधिक सन्निपात में लंघन श्रेष्ठ है अरु स्वेद उपनाहादिक श्रेष्ठ है अरु सूक्ष्म करनेके सब कर्म अच्छेहैं अरु यवागूरस भी पथ्यहै ॥ अन्तक सन्निपात निदान ॥ शरीर में दाह हो अरु शिर कांपै अरु संताप हो अरु मोहहो अरु हुचकीहो अरु खांसीहो अरु ज्ञानरहेनहीं ये अन्तक सन्निपात के लक्षणहैं अच्छावैद्य इसरोगवालेको त्याग देवै ॥ अन्तक रोटिकाबन्ध ॥ वैद्यों को बहुत अनुभव करके अंतक सन्निपात चिकित्सा कही है सो यह है । राईकोलहसुनके रस में

पीस रोटी बनावै कोमलरूप उसे घृतसे या तेलसे चुपड़करि गरम गरम असीमस्तक ऊपर बंधावै दो दो पहर में रोटी को बदलता जावे जबतक मनुष्यधीर्यताको प्राप्तहो तबतक बांधता जावै इससे उपरांत कर्म इस सन्निपात में नहीं है॥ मृतसंजीवन रस॥ शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक इन्हों की कजली करै फिर खरल में लोहभस्म तांबाभस्म, बिषबचनाग, हरताल, मुरदासिंग, मैनशिल, सिंगरफ चीता, इंद्रबारुणी, अतीस, शुंठ, मिरच, पिपली, सोनामाखी, भांग जयपाल, पलस ये सब बराबर तीन दिन अदरखके रसमें खरल करै पीछे कांचकी शीशी में घाल बालुकायंत्र में पकावै दो प्रहर पकाय स्वांग शीतल होनेपर अदरख रससे एकदिन खरलकरै यह मृतसंजीवन रस महादेवजी का कहाहुआहै इसको ३ रत्ती देवै तो सन्निपात दारुणभी जावै अरु सन्निपातमें मराहुआभी जीवै इसके ऊपर पथ्य दूध का देवै व आनन्द भैरव रसदेवै॥ पथ्यादि काढ़ा॥ हरीतकी, वासा, फालसा, देवदारु, कटुकी, रास्ना, गिलोय, कुलिंजन इन्हों का काढ़ा उपद्रव सहित अंतक सन्निपात को नाशै है अथवा अंतकसन्निपातनाशवास्ते मृत्युंजयजपादिअरुमहादेवजीकोचित्तमें ध्यान लगावे॥ रुग्दाहसन्निपातनिदान॥ ज्यादह बकै अरु संतापहो ज्यादह मोहहो अरु शरीर मंदहो भ्रमहो आपही शरीर भ्रमणकरै कंठमेंकांटेपड़ें व दुःखहोवै अरु ठोढ़ीलटकजायतृषाबहुतलगै दाह हो श्वासहो कासहो हुचकी आवें ये लक्षण रुग्दाहके हैं यह कष्ट तरसाध्य है मनुष्य को मारदेयहै॥ जलधरकाढ़ा॥ नागरमोथा, रक्त-चन्दन, शुंठ, बाला, कालाबाला, पित्तपापड़ा इन्होंका काढ़ाठंढाकरि देवै इससे रुग्दाह, सन्निपात नाशहोवै॥ अभयादिकाढ़ा॥ हरीतकी पित्तपापड़ा, नागरमोथा, कटुकी, अमलतास, मुनक्का इन्होंका काढ़ा रुग्दाहको नाशैहै॥ ब्राह्म्यादिकाढ़ा॥ ब्राह्मी, मुनक्कादाख, नागरमोथा वच, बाला, अमलतास, कटुकी, त्रिफला, चिकना, निंब, कोशातकी, दश-मूल, चिरायता इन्होंका कषाय रुग्दाह सन्निपातको व बातव्याधि कोनाशकरैहै॥ उशीरादिकाढ़ा॥ बाला, रक्तचंदन, कालाबाला, मुनक्का दाख, आँवला, पित्तपापड़ा इन्होंकाकाढ़ा रुग्दाह को व तृषा को

नाशकरै है ॥ धान्याककाढ़ा ॥ धनियां, चावल इन्होंको रात्रिमें भिगोय प्रभातछान मिश्री मिलाय पीवे तो हिमरूप काढ़ासे अंतरकी दाह तृषा मिटै ॥ अगर्वादिधूप ॥ अगर, कपूर, नख, तगर, वाला, चन्दन राल इन्होंका धूप रुग्दाह सन्निपात को हरै है ॥ दध्यादिलेप ॥ बड़बेरीके पत्ते दहींमें पीसशरीर में लेपकियेसे दाहमिटै अथवा कपूर चन्दन, निम्बपत्ती इन्होंको तक्रमें पीसलेपकरैतो दाहजावे अथवा बड़बेरी की पत्ती, चन्दनसफ़ेद, निम्बपत्ती इनकोपीस पैरोंकेतलवों पर लेपकरै तो रुग्दाह सन्निपात जावै ॥ लाजतर्पण ॥ दाहवालेको व छर्दिवालेको व कृशको व लंघनवालेको व तृषावालेको खांड़शहद युत धान खीलका यूष देवै अथवा सुन्दर रूपवाली नवीन यौवन वाली यानी १४ वर्ष से बीसवर्षतकवाली व पुष्टस्तन यानी चूंची वाली व चतुर शृंगारादि किये हुये ऐसी स्त्री को अपनी भुजा से आलिंगन करे तो रुग्दाह नाशहोवै ॥ पथ्यावलेह ॥ हरीतकीको तैल में व घृत में व शहदमें मिलाय चाटै तो रुग्दाह, कास, रुधिररोग बिसर्प, श्वास, छर्दि इनको नाशै ॥ भैरवीगुटी ॥ शुद्ध पारा, शुद्धगंधक इन्हों की कजलीकरि एकदिन ईषकेरस में खरलकरै फिर भृङ्गीरस में चार भावना देवै फिर तिलपर्णी के रससे भावनादेवै ऐसे खरल करि वस्त्रमें छानिलेवै इस द्रव्यके बराबर मृत तांबाभस्मगेरै तांबा से अष्टमांश विष गेरै अरु पिपली काली, बायबिड़ंग, जीरा, रास्ना वला ये प्रत्येक तांबाभस्म से आधी २ गेरै इनको एकत्रकरिभृङ्गी के रसमें १ प्रहर खरल करवावै फिर कल्ककरि चिकने पात्रमें रख मन्द २ अग्नि से एक प्रहरतक पकावै फिर स्वांग शीतलहोनेपर चने समान गोली बनावै अरुयहीगोली चीता अदरख सेंधालवण के संग खावै पथ्य दही युत हलका लेवै इसके सेवनसे सब सन्निपात नाश होय हैं यह भैरवी गुटी है ॥ चित्तभ्रमसन्निपात ॥ शरीरमें पीड़ा हो अरु भ्रम, मद, ताप, मोह, श्वास ये होवैं बिकल भावहो अरु बिक्षिप्त केसे नेत्रहों और हँसे गावै नाचै अरु ज्यादह बकै ये लक्षण चित्तभ्रम सन्निपात के हैं यह सन्निपात कष्टतर साध्य है॥ मध्वादिकाढ़ा ॥ महुआ, नख, शाल्मली, पिपली, अर्जुनसाल, हरीतकी

एकांगी, मुराव, रक्तचन्दन इन्हों का काढ़ा चित्तभ्रम सन्निपात को नाशैहै ॥ द्राक्षादिकाढ़ा ॥ मुनक्का दाख, देवदारु, कटुकी, नागरमोथा आंवला, गिलोय, हरीतकी, अमलतास, चिरायता, पित्तपापड़ा, कडू परवल इन्हों का काढ़ा चित्तभ्रम सन्निपात को हरे अथवा ब्राह्मी मुनक्का, परवल, वाला, हरीतकी, पित्तपापड़ा, अमलतास, कुटकी शंखपुष्पी इन्हों का काढ़ा चित्तभ्रम को हरे है ॥ ब्राह्म्यादिकाढ़ा ॥ ब्राह्मी, वच, शतावरि, त्रिफला, कुटकी, चिकनीअमलतास, चिरायता, निम्ब, कडूपरवल, दाख, दशमूल इन्हों का काढ़ा चित्तभ्रम सन्निपातको व रुग्दाहको नाशै है ॥ पथ्यादिकाढ़ा ॥ हरीतकी, पित्तपापड़ा, कटुकी, दाख, देवदारु, नागरमोथा, चिरायता, अमलतास कडूपरवल, आंवला इन्हों का काढ़ा चित्तभ्रम सन्निपातको हरैहै ॥ हरीतक्यादिकाढ़ा ॥ हरीतकी, पित्तपापड़ा, मुनक्का दाख, शंखपुष्पी कटुकी, नागरमोथा, अमलतास, ब्राह्मी इन्हों का काढ़ा चित्तभ्रम सन्निपात को नाशकरै है ॥ कणाद्यञ्जन ॥ पिपली, मरिच, वच, सैंधव करंजबीज, हल्दी, आँवला, हरीतकी, वहेड़ा, महुआ, शुंठ, हिंग वकराकेमूत्रमें पीस गोलीकरै जलमेंपीस नेत्रोंमें आँजै तो चित्तभ्रम सन्निपात जावै अरु अपस्मृति भूतवाधा व शिररोग व नेत्ररोग व भ्रम नाश होयहै ॥ कुम्भोद्भवनस्य ॥ अगस्त्य वृक्षके पत्तोंके रसमें गुड़, शुंठ, पिपली महीन पीस नाकमें नस्य लेवैतो चित्तभ्रम नाश होयहै व एकांगी मुराव, बाला, महुआ, मुलहठी, चन्दन, देवदारु नख, पित्तपापड़ा, अगर, पीतबाला, लोहभस्म, इलायची इन्होंका धूप चित्तभ्रम सन्निपातको व ग्रह दोष को हरै है अरु लक्ष्मी देय है मंगल रूपहै ॥ सन्निपात गजांकुश ॥ शुद्ध पारा, अभ्रक भस्म, हरताल, सोनामाखी, हींग इन्होंको खरलकरै गवारपठारसमें व बांझककोड़ी रसमें व कडू परवल रसमें व निर्गुण्डी रस में व पांढरी रसमें व निम्ब रसमें व चीता रस में व धतूरा रसमें व ग्रंथिपर्णी रसमें व पाढ़ा रसमें व भांग रसमें व नींबू रसमें इन रसों में तीन दिन खरल करै फिर तीनोंखार सेंधानमक, विषबच्छनाग, काकोली जयपालसब बराबरले मिलावै ऐसेसन्निपात गजांकुश सिद्धहोयहै

८ रत्तीखावैतो सन्निपातनाशहोवेहै ॥ प्राणेश्वररस ॥ पारा, गंधक, तांबा भस्म, पारा भस्म इन्होंको ताड़मूल के रसमें एकदिन खरलकरै व बाराही रसमें खरलकरै फिर द्रव्यको कांचकी शीशीमें रख मुखको बन्दकरै फिर बालुकायंत्रमें एकदिनतक पकावै फिर तीनोंखार, पांचौ लवण, त्रिफला, शुंठ, मिरच, पिपली, चीता, जीरा, इन्द्रयव, गुग्गुल हिंग इनसबोंको द्रव्यमें मिलावै ऐसे प्राणेश्वररस सिद्धहोय है १ माशा गरमजल संगदेवै इससे सन्निपातज्वर व ग्रहणीको नाशकरैहै यहप्राणेश्वररस प्राणोंकी रक्षाकरैहै ॥मारेश्वररस॥ शुद्धपारा एकभाग गन्धक दोभाग इन्होंको अदरखके रसमें एक दिनतक खरलकरै। फिर तांबेके पात्रमें संपुटकरि संधियोंको खाम मूषायंत्र में रात्रिमें गजपुट मध्य पचावै फिर प्रभातमें स्वांग शीतल होनेपर पात्रसे काढ़ चूर्णकरि १ रत्ती शुंठ घृत संगदेवै तो सन्निपात नाशहो। इसपै अनोपान गरमजल आठतोलेपीवै पथ्य दही चावलदेवै अरु तृषा लगेतो शीतल जल प्यावै यहमारेश्वररस कृशको पुष्ट करदेयहै ॥ शीतांगसन्निपात निदान ॥ अंग शीतल गार समानहोवै और कांप अरुचि, हुचकीआवै अंग शिथिल होजाय श्वास खांसी बमनहोवै मुखसे लारपड़े अरु स्वरभेदहो अरु उग्र ताप हो अतीसारहो ये लक्षण शीतांग सन्निपातकेहैं ॥ शीतांग चिकित्सा ॥ इसमें मृतसंजीवन रस २ रत्तीदेवै अथवा सर्वांग सुन्दररसदेवै अथवा स्वच्छंदभैरव रसदेवै अथवा पञ्चवक्त्ररसदेवै इनरसों से शीतांग सन्निपातनाश होवै ॥ अर्कादिकाढ़ा ॥ आकजड़, जीरा, शुंठ, मिरच, पीपल, भारंगी कटैली, काकड़ासिंगी, पुष्करमूल, गोमूत्रमें इन्होंकाकाढ़ा सिद्धकिया पीवै तो शीतांग सन्निपातको व मोहको व श्वास कास व कफवृद्धि इन्होंको हरैहै ॥ मातुलिंगादिकाढ़ा ॥ बिजौरा, चिरायता, पीपलामूल देवदारु, दशमूल, अजमोद, शुंठ इन्होंकाकाढ़ा शीतांग सन्निपातहरै है अथवा कर्कोटिका, पित्तपापड़ा, कुलित्थ, पिपली, बच, कायफल कालाजीरा, चिरायता, चीता, कटूबल, नागरमोथा, हरीतकी इन्होंके चूर्णको शरीरमें मलनेसे शीतांग दूरहोवै ॥ श्रीवेष्टादिचूर्ण ॥ सरल वृक्षके फलोंकाभस्म आठभाग, मरिच चारभाग, पाराएकभाग, विष

एकभाग इन्होंकामहीन चूर्णकरि खरलकर शरीरमें मलैतो असाध्य शीतांग सन्निपातमें भी पसीना आवै भुनेचनेका चूर्ण,भुनीभांगका चूर्ण, भुनी कुलथीका चूर्ण इन्होंको महीनपीस शरीर में मलै तो शीतांगमें पसीना आवै ॥ तन्द्रिक सन्निपात निदान ॥ तन्द्रा हो ज्वर कावेग अरु तृषा अधिकहो। जीभकाली और खरधरीहो। श्वास कास अतीसार दाह कानमें पीड़ा कंठमें जड़ता निरन्तर नींदआवै ये लक्षण तन्द्रिक सन्निपातके हैं ॥ तन्द्रिकपरीक्षा ॥ ज्वर उत्पन्नहोतेही नेत्रोंसे दीखेनहीं तब तन्द्रिकजानो यहकष्ट साध्यहोयहै ॥ भारंग्यादिकाढ़ा ॥ भारंगी, पुष्करमूल, गिलोय, नागरमोथा, कटैली,हरीतकी,शुंठ इन्होंका काढ़ा तीनदिन पीवैतो तन्द्रिक सन्निपात जावै ॥ दूसराप्रकार ॥ भारंगी, पुष्करमूल, हरीतकी, कटैली, शुंठ, गिलोय इन्होंकाकाढ़ा प्रभातमें पीवै तो तन्द्रिक सन्निपात नाशहोवै ॥ अमृतादिकाढ़ा ॥ गिलोय, कडू परवल, वासा, शुंठ, मरिच, पीपल इन्हों का काढ़ा तन्द्रिकको नाशै ॥ रास्नाद्यंजन ॥ रास्ना,मैनशिल, जलमें सिद्धकिया तेल इन्होंको मिला नेत्रोंमें आंजैतो तन्द्रिकजावै अथवा सेंधानमक, कपूर, मैनशिल, पिपली इन्होंको घोड़ाकी लारमें खरलकरि नेत्रोंमें आंजै तो तन्द्रिक जावै ॥ कृष्णादिनस्य ॥ पिपली मैनशिल, हरताल इनका अंजन तन्द्रिक को हरै अथवा गिलोय परवल इन्होंका काढ़ा तन्द्रिककोहरै। शुंठ, मिरच सहित ॥ कुष्ठादि नस्य ॥ कुलिंजन,गवाक्षी,शुंठ,हल्दी, दारुहल्दी, मरिच,पिपली, वच इन्होंको वकराकेमूत्रमें पीस नस्यदेवै तो तन्द्रिक नाशहोवै अथवा मरिच,दारुहल्दी,बच, कुलिंजन, बायबिड़ङ्ग शुंठ, हल्दी, कंवडाल इन्होंको वकरा के मूत्रमें पीस नस्यलेवैतो तन्द्रिक सन्निपात नाश होवै अथवा कटैली, गिलोय, पुष्करमूल,शुंठ, हरीतकी इन्होंकेकाढ़े में शुंठ, पिपली, अगर, मरिच इन्होंको पीस मिलाय नस्यदेवै तो तन्द्रिक सन्निपात नाशहोवै ॥ कंठकुब्ज सन्निपात निदान ॥ माथा बहुतदुखै अरु कंठ रुकजावै दाहहो मोहहो शरीरकांपै। अरुज्वरहो अरु रक्तसे व बायुसे पीड़ाहो ठोढ़ी फरकै नहीं गरमी ज्यादह हो। ज्यादह बकै अरु मूर्च्छा हो ये लक्षण कंठकुब्ज सन्निपात केहैं ॥ श्टं-

ग्यादिकाढ़ा ॥ काकड़ासिङ्गी, कुड़ा, हरीतकी, नागरमोथा, कचूर, चिरायता, भारंगी, हल्दी, कटुकी, पुष्करमूल, चीता, मिरच, कटैली, वासा आँवला, देवदारु, बहेड़ा, चवक, शुंठ, पिपली, कायफल इन्हों का काढ़ा किञ्चित् गरम कंठकुब्ज सन्निपातको नाशै है ॥ त्रिकट्वादिकषाय ॥ शुंठ, मिरच, पिपली, इन्द्रयव, कटुकी, त्रिफला, दारुहल्दी, हल्दी इन्होंका काढ़ा कंठकुब्जको हरै है ॥ फलत्रिकादि काढ़ा ॥ त्रिफला शुंठ, मिरच, पिपली, नागरमोथा, कुटकी, कुड़ा, वासा, हल्दी इन्हों का काढ़ा कंठकुब्ज को नाशैहै जैसे सिंहशब्दसे हस्ती तैसे ॥ किरातादि ॥ चिरायता, कटुकी, पिपली, इंद्रयव, कटैली, कचूर, बहेड़ा, देवदारु, हरीतकी, मरिच, कायफल, नागरमोथा, अतीस, आंवला, पुष्कर मूल, चीता, काकड़ासिंगी, बासा, शुंठ इन्होंकाकाढ़ा कंठकुब्जकोनाशै है ॥ कृष्णादिनस्य ॥ पिपली, ऊंगा इन्हों का नस्य कंठकुब्ज को नाशै है अथवा त्रिकटु, कटुतुम्बी इन्हों का नस्यकंठकुब्जको नाशकरैहै ॥ सिद्धबटी ॥ शुद्धपारा, शुद्धगन्धक, काकड़ासिंगी, सेंधानमक, नवीन बाला इन्हों को ब्राह्मीरसमें खरल कर बेर समान गोलीबांधै खाने से रोगको नाश करे यही गोली कंठकुब्ज सन्निपातको हरै अथवा पूर्वोक्त अनोपानके संग आनन्दभैरव रसभी सन्निपातोंको हरै है ॥ कर्णकसन्निपातनिदान ॥ कंठ रुकजावै ज्यादह वकै बहिरा होजाय शरीरमेंखेदहो गरमरहै अरुश्वासकासहो और कर्णमूलमेंसूजनहो ज्वर हो ये लक्षण कर्णक सन्निपातके हैं ॥ रास्नादिकषाय ॥ रास्ना बड़ी कटैली, हरीतकी, शुंठ, मिर्च, पिप्पल, कुटकी, नागरमोथा, पुष्करमूल, काकड़ासिंगी, आंवला, भारंगी इनका काढ़ा कर्णक सन्निपात को नाशै है ॥ दूसरा रास्ना ॥ असगंध, नागरमोथा, कटैली भारंगी, बच, पुष्करमूल, कटुकी, काकड़ासिंगी, हरीतकी इन्होंका काढ़ा कर्णक सन्निपात को नाशै है ७०० ॥ मरिचादि ॥ मरिच, दश मूल, पिपली, त्रिफला, हल्दी, शुंठ, कटुकी, चिरायता इनका काढ़ा सैंधवयुत कर्णक सन्निपात को हरैहै ॥ भारंग्यादि ॥ भारंगी, लघुशमी पुष्करमूल, कटैली, शुंठ, मिर्च, पीपल, बच, गोडासूरण, काकड़ासिंगी कटुकी, रास्ना इनका काढ़ा कर्णक सन्निपात को हरै है ॥ दशमूलादि

काढ़ा ॥ दशमूल, कुटकी, पिपली, त्रिफला शुंठि, चिरायता, मिरच इन को काढ़ा कर्णक सन्निपात को हरै है ॥ इंगुद्यादिलेप ॥ हिंगोण, हल्दी विशाला, सैंधव, देवदारु, आक इनको महीनपीस लेपकरै तो कर्ण की गांठ नाश होवै अथवा अल्पसूजन व ग्रंथि हो तो लेप हित है मध्यम सूजन व ग्रन्थिहो तो चोख वगैरह ज्यादह सूजा व ग्रन्थि हो तो शस्त्रादिसे चिरादेवै कानशूल में व्रण हो तो हल्दी, वृन्दावन कुलिंजन, करवंदी के पत्ते, दारुहल्दी, हिंगण जड़ इनको आक के दूधयुत करि लेपकरै ॥ कुलित्थादिलेप ॥ कुलथी, कायफल, शुंठि, अजमाण इनका चूर्ण गरम जलके संग पीस लेपकरै कर्णमूल सूजन जावै ॥ गैरिकादिलेप ॥ गेरू, गोखुरू, शुंठि, कायफल, वच इन्होंको कांजी में पीस गरमकरि लेपकरै कर्णमूलका रोग नाशै अथवा सेंवा, राई इनको महीन पीस लेपकरै कर्णमूल सोजा जावै अथवा पुष्करमूल दालचीनी, चीता, गुड़, कायफल, कुलिंजन हीराकसीस आक के दूधमें पीसकर इनका लेपकरै कानकासोजा व ग्रंथि इनको नाशै है अथवा जयपाल जड़, चीता जड़, गुड़, भिलावा, हीराकसीस इनको थोहर व आकके दूधमें पीस लेपकरै कान के मूल का सोजा नाशै नागरादिलेप ॥ शुंठि, देवदारु, रास्ना इन्होंको चीतारसमें पीस लेप करै गल का सोजा नाशहोइ ॥ निशादिलेप ॥ हल्दी, हिंगण, सैंधव देवदारु, कुलिंजन, दारुहल्दी, विशाला इन्होंको आकके दूधमें महीन पीस लेपकरै तो कानग्रंथि सोजा नाशहोवै अथवा जोंक आदिसेकान मूलका लोहू कढ़वावै ॥ बीजपूरादिलेप ॥ बिजौराकी जड़, दालचीनी नरबेल, शरपुंखी, मोरशिखा, तुंबी, पिपली, कुचिला इन्हों का लेप कानके मूलका सोजा व ग्रंथि इनकोहरै है अथवा अकेला कुचिला लेपसेही कानमूल सोजा जावै अथवा लुतीका कंदका लेपसे पूर्वोक्त रोगजावै अथवा ककेरा जीवके मांससे पसीना देवै वा बांधै तौ कान की जड़का सोजामिटै अथवा सिरसम, सैंधव, बच, गृहका धूम शुंठि, हल्दी इन्हों को जलमें पीस लेपकरै तौ कान की सूजन मिटै रोहितकादिलेप ॥ रक्तरोहित, अक्रोड़ वृक्ष, मोती सीप, कंवडाल करेला, मोरचूत, हरताल, सिरस, मैनसिल, नौसादर, गंधक, हीरा-

कसीस, कुलिंजन, रक्तलज्जावंती, करंजवा, गुग्गुल, यवाखार इन्हों का लेपकरै तो कानका सोजा नाशहोइ ॥ मरिचादिनस्य ॥ मरिच पिपली, लवणरज इन्होंको गरम जलसेपीस नस्यलेतो कानकेरोग नाशहोवें अथवा सेंधानिमक, पिपली इन्होंकाचूर्णगरमजलमें पीस नस्यलेवै प्रभातमें तो निरंतर कानरोग होवैनहीं । और कानमूल सोजा नाशवास्ते जोंक लगवावै व घृतादि पानकरै व लेपकरै व पसीनादेवै । वा कफ पित्त नाशक बमन करवावै वा कवल याने ग्रास देवै इन्होंसे कर्म सिद्धकरै ॥ कांजिकादिलेप ॥ धतूराबीज, राई, गुड़ इन्होंको कांजी में पीस लेपकरै कर्णमूल का सोजा नाशहोवै । इस कर्णक सन्निपात में बैद्योंको यह उपचार कहे हैं ॥ पथ्य ॥ पुरानेचावल सांठियोंका यूष व मूंगका यूष देनाहितहै यहजल्दी जीर्णहोहै ॥ भुग्न नेत्र सन्निपातनिदान ॥ ज्वर, बलक्षय, स्मृतिनाश, श्वास, बक्रदृष्टि मूर्च्छा होवै, ज्यादहबकै, असहो, कंपहो, सोजाहो येलक्षण भुग्न नेत्र सन्निपातके हैं ॥ दार्व्यादिकाढ़ा ॥ दारुहल्दी, कडूपरवल, नागरमो था कटैली, कटुकी, हल्दी, निंब, हरीतकी, बहेड़ा आंवला इन्होंका काढ़ा भुग्नसन्निपातको हरै है ॥ श्रेष्ठादिकाढ़ा ॥ पिपली, परवल, कटुकी, नागरमोथा, निंब, देवदारु, कटैली, इन्होंकाकाढ़ा मोहको व पित्तज्वरको व सन्निपातको हरैहै ॥ यष्पादिकाढ़ा ॥ मुलहठी, कडूपरवल, कटुकी नागरमोथा, निंब, देवदारु, कटैली, इन्होंका काढ़ा मोहको व पित्त ज्वरको व उग्र सन्निपातको नाशैहै ॥ मरिचादिनस्य ॥ मरिच, असगंध, पिपली, सेंधानिमक, लहसुन, महुआ, बच व अदरख इन्होंको बकराके मूत्रमें पीस नस्यलेतो भुग्ननेत्रसन्निपातको नाशै भूनिंबादि चिरायता, बच, पिपली, लहसुन, सिरसम इन्होंको शहदमें अवलेह करि चाटैतौ भुग्ननेत्र सन्निपात जावै अथवा पिपली लवण इन्हों को पीस नेत्रोंमें आंजे तो भुग्ननेत्र जावै अथवा बच, मरिच, हिंग मुलहठी इन्हों का नस्य भुग्ननेत्रको नाशै ॥ मार्तण्डभैरवरस ॥ शुद्ध पारा, शुद्धगंधक बराबर अरुगंधकसे चौथाई सोहागा इन्होंको तांबे के पात्रमेंघोलजयंतीकेरससे खरलकरैपीछेसें बाकीजड़केरसमेंखरल करि आठ भावना देवै धूपमें फिर शुंठि रसमें फिर मरिच रसमें फिर

पीपलरसमें फिर वासा रसमें फिर चीता रसमें फिर ईश्वरी रसमें फिर तिलपर्णी रसमें फिर जावित्री रसमें फिर पीपल पान रसमें फिर पीपलजड़ रसमें इन रसों में सात दिनतक भावना देवै फिर द्रव्यका गोलाकरि विशोषणकरै फिर वस्त्रमेंबांध भट्टी दे भूधरयंत्र में पकावे यानी पसीनादेवै दोपहर तक फिर स्वांग शीतलहोनेपर काढ़ा महीनपीसै फिर विष, कर्पूर, इलायची, जावित्री ये दशमांश मिलावे फिर भांगके रसमें एकदिन खरल करै यह रसकपूर शहद सङ्ग खावै तो सन्निपात नाशहोवे इसकी मात्रा ४ रत्तीहै यह मार्तंड रस असाध्यको भी साध्यकरै है इस के ऊपर दशमूल काढ़ा पीवै पथ्य मूँग को यूष देवै ॥ रक्तष्ठीवी निदान ॥ लोहूथूकै प्यास घनी हो ज्वरहो छर्दिहो मोहहो अतीसार हो हुचकी हो आध्मानहो शरीर भ्रमै श्वासहो मूर्च्छाहो जीभकाली व ज्यादहलालहो शूलहोजीभमें कांटे पड़जावैं ये लक्षण रक्तष्ठीवी सन्निपातके हैं ॥ पर्पटादि ॥पित्त-पापड़ा, धमासा, वासा, सुगंधिरोहिस तृण इन्हों का काढ़ा खांड़ सहित पीवै कंकोलचूर्ण युत रक्तष्ठीवी सन्निपात को नाशैहै ॥ जल-दादिकाढ़ा ॥ नागरमोथा, पद्माष, पित्तपापड़ा, चन्दन, जावित्री मुलहठी, शतावरि, महुआ, निम्ब, वाला, चीता, रक्तचन्दनइन्होंका काढ़ा रक्तष्ठीवी को हरै हैं ॥ रोहिषादिकाढ़ा ॥ सुगंधितृण, धमासा बासा, पित्तपापड़ा, शांवा, कटुकी इन्होंका काढ़ा रक्तष्ठीवीको नाशै अथवा पद्माष, चन्दन, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, जावित्री, त्रिफ-ला, रक्तचंदन, बाला, मुलहठी, निम्ब इन्होंकाकाढ़ा रक्तष्ठीवी को नाशकरै ॥ मधुकादिकाढ़ा ॥ महुवा, मुलहठी, फालसा, रक्तचंदन पत्रज, देवदारु खंभारी इन्होंका काढ़ा रक्तष्ठीवी कोनाशै है ॥ दूर्वा-दिनस्य ॥ दूर्वाके रससेनस्यलेवै अथवाअनारकेफूलके रसकीनस्य लेवै अथवा त्रिफला दूर्वाके रससे नस्यलेवै रक्तनाशहोवै ॥ आम्रा-दिनस्य ॥ आमकी गुठली, चपला इन्होंकानस्य नासिकारक्तकोबंद करै ॥ चिकित्सा ॥ पंचवक्त्ररस २ रत्तीदेवै अथवा भस्मेश्वररस १ माशा देवै रक्तष्ठीवीजावै अथवा रक्तमारेश्वररस २ रत्ती घृतसंगअरुशुंठि सहित देवै रक्तष्ठीवी नाशै ऊपर २ पल गरमजल देवै दही भात

पथ्यदेवै तृषामें शीतलजलदेवै ॥ सोमपाणीरस ॥ पारा४माशे गंधक ४ माशे चीताके रसमें इनको खरलकरै फिर १ माशा मृतलोहका भस्म मृततांबाभस्म इनको पूर्वद्रब्यमेंमिलाय चूर्णकरे फिर धतूरा रस १ पलमें खरलकरैफिर त्रिफलारस १ पलमें खरल करै फिर कुमारीरस १ पलमें खरल करै फिर वृद्धदारुरस १ पल में खरल करै फिर दारुहल्दीके रस १ पलमें खरल करै फिर अदरख अर्क १ पलमें खरल करै फिर कोशाम्र के रस १ पलमें खरलकरै फिर भेकपर्णीरस १ पलमें खरल करै फिर निर्गुण्डीरस १ पलमें खरल करै फिर भृंगीरस १ पलमें खरल करै फिर चीतारस १ पल में खरल करै फिर आंवले रस १पलमेंखरल करै फिर एरंडजड़केरस १ पलमें खरल करै फिर इन्द्रयवरस १ पलमें खरलकरै इन्हों के रसमें या काढ़ा में खरल करि २ सुखावताजावै अरु स्वल्पखरल करै फिर पारासमान शुंठि, मिरच, पीपल मिलाय सोमपाणी रस सिद्धकियेकी गोली चना बराबर बांधे यह गोली जीर के रस संग लेवै ऊपर पंचमूलका काढ़ा पीवै पथ्य दहीचावलकाहै इससे रक्त-ष्ठीवी सन्निपात नाशहोवै ॥ प्रलापक सन्निपात निदान॥ शरीरकांपै, ज्यादह बकै, शरीर गरम बहुत होय, दाहहोय, ज्वरका वेगघनोहो, संज्ञा जाती रहै, सब अंग विकलहोयँ, शिरमें शूल हो चिन्ताहो ये लक्षण प्रलापक सन्निपात के हैं यह जल्दी मृत्युको प्राप्त होवै॥ मुस्तादिकाढ़ा ॥ नागरमोथा, बाला, दशमूल, शुंठि, पित्तपापड़ा रक्त चंदन, धवके फूल, बासा सब बराबर ले काढ़ा करि पीवै प्रलाप-क सन्निपात नाश होवै ॥ तगरादिकाढ़ा ॥ तगर, असगन्ध, कुम्भा शंखाहूली, देवदारु, कटुकी, ब्राह्मी, जटामासी, नागरमोथा, अमल-तास, हरीतकी, मुनक्का, दाष इन्होंका काढ़ा प्रलापक सन्निपात को नाशै है ७७० ॥ जलधरादिकाढ़ा ॥ नागरमोथा, दशमूल, बाला, शुंठि चन्दन अमिलतास, बासा, पित्तपापड़ा इन्होंकाकाढ़ा प्रलापकको नाशै है ॥ दूसरातगरादिकाढ़ा ॥ तगर, पाढ़ा, अमलतास, नागर-मोथा, कटुकी, जटामासी, असगंध, ब्राह्मी, मुनका, चन्दन, दशमूल शंखाहूली इन्हों का काढ़ा जल्दी प्रलापक को नाशै है ॥ उपचार॥

सांत्वभाषणसे वअंजनोंसे व तीक्ष्णनस्यसे वअन्धकारसेवनसेइन्हों से विकृत चित्तको प्रकृतिको प्राप्तकरे॥ मृतोत्थापनरस॥ शुद्धपारा शुद्धगन्धक, दूना मैनशिल, विष, शिंगरफ़, मृतलोहा, मृत अभ्रक मृततांबा, हरताल, सोनामाखीइन्होंको अम्लवेतसरसमें व जम्भीरी नींबूरसमें व चांगेरीरसमें व शुंठिरसमें व निर्गुण्डी रसमें व हस्त-मुण्डीरसमें इनरसोंमें तीनदिनतकमलिकर भूधरयन्त्रमें १ दिनतक पकावे फिर शीतल होनेपर चीताके रसमें २ प्रहरतक खरलकरै १ माशा खावै अनोपान यहहै अदरखके रसमें हींग, शुंठि, मिरच, पी-पल, कपूर मिलालेवै इससे सन्निपात नाशहोवै मराहुआ भी जीवै जिह्वकसन्निपातनिदान॥ श्वास, कास, ताप हो अरु जीभ लठराय जावे कांटे पड़जावैं अरु गूंगा होजावे बहराहोजावे बल जातारहै ये लक्षण जिह्वक सन्निपात के हैं यहकष्टतरसाध्य है॥ उग्रादिकाढ़ा॥ वच, कटैली, धमासा, रास्ना, गिलोय, शुंठि, कटुकी, काकड़ासिंगी, पुष्करमूल, ब्राह्मी, भारंगी, चिरायता, वासा, कचूर इन्हों का काढ़ा जिह्वक सन्निपात को नाशै॥ क्षुद्रादि काढ़ा॥ कटैली, शुंठि, पुष्करमूल गिलोय, ब्राह्मी, वच, कपूर, कचरी भारंगी, वासा, धमासा, वाला, तुलसी इन्होंका काढ़ा जिह्वक सन्निपात को नाशै अथवा शुंठि, पित्तपापड़ा, हल्दी, दारुहल्दी, त्रिफला गिलोय नागरमोथा, कटैली, निम्ब, परवल, पुष्करमूल, कुलिंजन, देवदारु इन्होंका काढ़ा जिह्वक सन्निपात को नाशै है॥ सिंह्यादिकाढ़ा॥ कटैली, शुंठि, पुष्करमूल, कटुकी, रास्ना, गिलोय, भारंगी, काकड़ासिंगी, कचूर, धमासा, वासा, नागरमोथा, ब्राह्मी, बच, चिरायता इन्होंकाकाढ़ा जिह्वक सन्निपातको नाशै॥ देवदार्वादिकाढ़ा॥ देवदारु निम्ब, बहेड़ा, हरीतकी, परवल, हल्दी, दारुहल्दी, शुंठि, कटैली, पुष्करमूल, नागरमोथा, गिलोय, बासा इन्होंकाकाढ़ा जिह्वक सन्निपातकोनाशै॥ किरातकवल॥ चिरायता, अकरकरा, कुलिंजन, कचूर पिपली इन्होंका चूर्ण कटुतेल युत करि अरु बिजौरारस मिलाय मुखमें धरै जिह्वक नाशै॥ शालूरपर्ण्यादिअवलेह॥ कमलकंद शालि पर्णी, कुलिंजन, शंखपुष्पी इन्होंकाचूर्ण शहतयुतकरि चाटै जिह्वक

को नाशकरै ॥त्रिपुरभैरवरस॥ शुंठि, सुवर्ण, दारुहल्दी, हल्दी, त्रिफला, गिलोय, नागरमोथा, कटैली, निम्ब, परवल, पुष्करमूल, कुलिंजन, तेलिया देवदारु इन्होंका काढ़ा जिह्वक सन्निपात को नाशै अथवा बचनागविष, शुंठि, पिपली, गजपिपली, आक, रक्तएरंड ये औषध पहिले एकभाग दूसरे दोभाग तीसरे तीन भाग या प्रमाण क्रमसे लेवै वृद्धि से फिर अदरख रसमें खरल करै यह त्रिपुरभैरव रसहै जिह्वकको नाशै अथवा आनन्दभैरव शहतसंग रत्ती १ देवै दही भात पथ्य देवै अथवा त्रिनेत्ररस देवै॥ अभिन्याससन्निपात निदान॥ नींद आवै नहीं, श्वास बहुत जल्दी चलै, शरीरकांपै, चेष्टा सब जातीरहै, घोंघाबोलै, काष्ठ समान होजावै, बल क्षय होवै ये लक्षण अभिन्यास सन्निपात के हैं यह मृत्युरूपहै॥ औषधमर्यादा॥ जितने श्वास आवैं तितने औषध देनाचाहिये दैव की गति अलक्ष्य है जानीजाती नहीं॥ दृष्टान्त ॥जैसे अगाध जलमें पात्र को मांजते पात्र हाथसेछूटजावै तिसको चतुरनर जल्दी ग्रहणकरै तलीमें प्राप्त होने पहिले तैसे अभिन्यास को पूर्ण चिह्न हुआ पहिली क्रिया करै अभिन्यास में जब नींदआवै तब बलनाश रोग का जानो सामान्यउपचार॥ इसरोगमें सन्निपात तांतकरस १ माशा देवै अरु पथ्य पूर्वोक्तदेवै वा आनन्दभैरव रस देवै अथवा दोनों कटैली गिलोय, मुनक्का, दाष, जीरा, शुंठि, मिरच, पिपली, काकड़ासिंगी, बायबिड़ंग इन्होंका काढ़ापीवै ऊपर घृताक्त चावलोंके भूनेहुयोंका पेया बनायदेवै इससे हुचकी, श्वास, कास, अभिन्यास, वायु, मल, मूत्रइन्हों का अवरोध ये सब नाश होवैं॥ रिंगण्यादिकाढ़ा॥ कटैली, पुष्करमूल, भारंगी, कचूर, काकड़ासिंगी, धमासा इन्होंका काढ़ा देवै कफ नाशहोवै॥ त्रिवृतादिकाढ़ा॥ निशोत, कडुवृन्दा, हरीतकी, बहेड़ा, आमला, कटुकी, अमलतास इन्होंका काढ़ा यवाखारयुत सम्पूर्णज्वरों को नाशैहै॥ त्र्यायंत्यादिकाढ़ा॥ त्रायमाण, दशमूल, पुष्करमूल, एरण्ड, अजमान, भारंगी, गिलोय, बासा, कचूर, काकड़ासिंगी, शुंठि, मिरच, पिपली, पुनर्नवा इन्होंका काढ़ा गोमूत्र में सिद्धकिया पीवै तो जल्दी अभिन्यासको व कफज्वर को हरैहै॥ सुरभ्यादिकाढ़ा॥ कटैली

बेलफल, सैंधव,धमासा,शुंठि,पाषाणभेद,एरण्डमूल इन्हों का काढ़ा गोमूत्र में सिद्धकिया अभिन्यासको नाशै॥ शृंग्यादिकाढ़ा॥ काकड़ासिंगी, भारंगी,हरीतकी,जीरा,पिपली, चिरायता, पित्तपापड़ा देवदारु,बच,कुलिंजन,धमासा,कायफल,शुंठि,नागरमोथा, धनियां कटुकी,इन्द्रयव पहाड़मूल, रेणुकबीज, गजपिपली, उंगा, पिपलामूल चीता,त्रिशाला, अमलतास, निंब, कचूर, बावचीबीज, बायबिड़ंग, हल्दी,दारुहल्दी दोनोंअजमाण ये औषधबराबरले काढ़ाकरै हिंग, अदरखके अर्कयुतकरै यहअभिन्यासको व तन्द्राको व प्रमेहको व कर्णमूलको व १३ सन्निपातोंको व हुचकीको व श्वास को व खांसी को व सब उपद्रवोंको नाशै है अथवा काकड़ासिंगी, लालधमासा पोहकरमूल, भारंगी,कचूर, कटैली इन्होंका काढ़ा अभिन्यास को व कफको नाशैहै॥ तिक्तादिकाढ़ा॥ कटुकी,हरीतकी,जयपालजड़,त्रायमाण,अमलतास इन्होंकाकाढ़ा सैंधव व यवाखारयुत ज्वरोंकोहरैहै अरु भेदीहै॥ व्याघ्रादिकाढ़ा॥ कटैली, धमासा, भारंगी, कचूर,काकड़ासिंगी,पोहकरमूल इन्होंका काढ़ा अभिन्यास को व हृदयके कफ कोनाशै है॥ भार्ग्यादिकाढ़ा॥ भारंगी, पोहकरमूल, रास्ना, बेलफल नागरमोथा,शुंठि,दशमूल,पिपली,अतीश इन्होंकाकाढ़ाहिंग व अदरखरस संयुत अरु पिपली संयुत सन्निपात ज्वरोंको व अभिन्यास को व हृदय शूलको व पार्श्व शूलको नाशैहै॥ बीजपूरादिकाढ़ा॥ बिजौरा, बेलफल, पाषाणभेद, कटैलीदोनों,एरण्डजड़,सब कर्ष२ भर प्रमाणले काढ़ाकरै आठगुणाजलमें पकाय पीछे गोमूत्र बिड़लवण सौवर्चल लवण युतकरि पीवै तो हृदयशूल को व वस्तिशूलको व आनाहबातको व अभिन्यासको हरै है॥ मातुलुंगादिकाढ़ा ॥ बिजौरा पाषाणभेद, बेलफल,कटैली,पाढ़ा, एरण्डमूल इन्होंका काढ़ा गोमूत्र सैंधवयुत अभिन्यासकोव आनाहको व शूलको नाशै है॥ कारव्यादिकाढ़ा॥ कारवी, पोहकरमूल,एरण्डमूल, त्रायमाण, शुंठि, गिलोय दशमूल, कचूर,काकड़ासिंगी, बासा, भारंगी, पुनर्नवा इन्होंकाकाढ़ा गोमूत्रमें सिद्धकिया नाड़ी स्रोतोंको शुद्ध करै अरुअभिन्यासकोहरै पटोलादि ॥ परवलपत्र,बड़ी कटैली, छोटी कटैली, अजमाण,मिरच

पिपली, बेलफल, करंजवा, चीता, करंजबीज, मंजिष्ठा, त्रायमाण, शुंठि इन्होंका काढ़ा कंठको शुद्धकरै अरु अभिन्यासको हरै ॥ जयमंगल रस ॥ पाराभस्म, अभ्रकभस्म, बकायण, मिरच, लोहभस्म, हरताल सोनामाखी, शुंठि, बच नागविष, सुहागा, चीता, पिपली, मिरच ये सब बराबरलेवै फिर इन्होंको पाढ़ारसमें खरल करै फिर निर्गुंडी रस में खरलकरै फिर बेलफल रस में खरलकरै फिर मुलहटी रस में खरलकरै एकदिनमें पुटदेवै फिर पात्र में घालि मुख बन्दकरि भूधर यन्त्रमें पकावै शीतल होनेपर यह जयमङ्गल रसहोयहै यहमाशा १ दशमूलके कषाय सङ्गलेवै सन्निपातको नाशै अरु यह रस नेत्रोंमें आंजै वा नस्यमेंदेवै तो अभिन्यास सन्निपातको हरै॥ स्वच्छंदरस॥ शुद्धपारा १ भाग, शुद्धगन्धक २ भाग, सुवर्णभस्म १ भाग, चांदी भस्म १ भाग, तांबाभस्म १ भाग इनको सूरजमुखी रसमें खरल करै फिर निर्गुण्डी रस में भावनादेवै फिर अदरख अर्क में भावना देवै फिर भृङ्गरस में भावनादेवै फिर धतूरा रसमें खरल करै फिर मूषापर्णी रसमें भावना देवै फिर अग्निकर्णी रसमें भावनादेवै फिर अरणीरसमें भावनादेवै फिर तिलपर्णीरसमें भावानादेवै फिर चीता रसमें भावनादेवै फिर काकमाची रसमें भावनादेवै ऐसे तीनदिन तक खरलकरि भावना देकरि तैयारकरै फिर मच्छके व माहिष के व बाराह शूकरके व बकराके व मोरके पित्तामें भावनादेवै एकदिन में फिर अन्ध मूषागत बालुकायन्त्रमें एक दिन पकावै शीतलहोने पर चूर्णकरि अदरखके अर्क सङ्ग खावै माशा १ पीछे निर्गुण्डी व दशमूल इन्होंका कषाय पीवै मरीच चूर्णयुत । यहरस अभिन्यास सन्निपातको नाशै है, पथ्य मूंगकायूष व दूध व घृतकाहै ॥ मातुलुंग्यादिरस ॥ बिजौरारस, हिंग शुंठियुत मुखमें देवै सन्निपात जावै अथवा तीक्ष्ण, कटु औषध कानों में देवै सन्निपातजावै अथवा अदरख रसमें शुंठि, मिरच, पीपल, सेंधव मिलाय मुख में देवै अथवा मरिच चूर्ण अदरख के अर्क में नस्य लेवै यह संज्ञाकारक नस्यहै रामठादिनस्य ॥ हिंग, शुंठि इनको भृंग रसमें व निम्बूरसमें मिलाय चाटै अथवा कटु, तिक्त औषधोंका नस्यलेवै॥ मरीचादिनस्य ॥ मरिच

सादालवण, पिपली, निर्गुंडी, महुवाके फूल, कायफल इन्होंका चूर्ण करिगरमजलमें मिलाय आठबिंदुका व ४ बिंदुका नासिकामें नस्य लेवैसन्निपात में सुरतहोवै॥ लशुनादि अंजन॥ लशूण, मिरच, पिपली सैंधव, वच, सिरसफल, शुंठ इन्होंकाचूर्ण गोमूत्रसे खरलकरिअंजन करे इससेकफ वायु, रक्त पित्त, इनको नाश होवै॥ जात्यादिअंजन॥ जावित्रीके फूल, प्रवाल, मिरच, कटुकी, वच, सैंधव लवण इन्होंको बकराके मूत्रमेंखरलकरि अंजनकरै तन्द्रानाशहोवै अथवा सिरस के बीज, मरिच इनको बराबर ले बकरा के मूत्र में खरलकरै यह अंजन अभिन्यास सन्निपात में संज्ञाबोधन करे है॥ दंभवद्दाग॥ सन्निपात अभिन्यासमें संज्ञा जातीरहै किसीतरहभी बोध न होवै तब रोगीके दोनों पैरोंके तलुवों पर व मस्तकपर गरमलोहेसे दाग दिवाय सुरत करवावे। जो इससे भी संज्ञा नहो तो मस्तकको व तलुवों को व भृकुटियों को लोहा की शलाका से दग्धकरै॥ हारिद्रकसन्निपात निदान॥ देह, नख, नेत्र, कर, पैर जिसके पीले होजावें अरु वार २ थूके अरु खांसी हो यह हारिद्रक सन्निपात होय है यह साध्य नहीं है यह १३ सन्निपातों से भिन्न है मर्यादा, सन्निपात वाला तत्काल अच्छा होवै ३ दिन में व ५ दिन में व ७ दिन में व १० दिन में व १२ दिन में व २१ दिन में शुद्धहो जीवै। पित्त कफ वायु वृद्धि से दशदिन, वारह दिन, सात दिन इस मर्यादा में मारै व अरोग्यकरै पुरुष को धातुमलपक्कनेसेती॥ धातु पाक लक्षण॥ निद्राका नाशहोवै, हृदय में स्तम्भ होजावे, मल मूत्रका अवरोधहो, शरीरभारीहो, अरुचिहो, सबपदार्थोंमें अप्रीति हो, बल रहै नहीं यह धातुपाक लक्षण हैं॥ मलपाक॥ दोषों की प्रकृति विकार को प्राप्तहो, मन्दज्वरहो, हलका शरीरहो अरुसब इन्द्रिय शुद्धहोयँ ये दोषपाकके लक्षण हैं॥ सन्निपातके असाध्य लक्षण॥ दोष वृद्धिको प्राप्तहोवै अरु अग्नि नाशहोवै सबचिह्न निदानहो ऐसा सन्निपात असाध्य है अरु इससे बिपरीत कष्टसाध्य होवैहै॥ आगंतुकज्वर॥ यहज्वर अभिचार से याने मरणादिप्रयोग से उपजैहै और चोटलागने से उपजैहै और भूत प्रेतादि की पाड़ी

से उपजैहै और ब्राह्मण, गुरु, सिद्धि, वृद्धइन्होंके कोपसे वा शापसे उपजेहै इनकारणों से आगन्तुकज्वर उत्पन्न हो वातादि दोषों को कोपकरि दुःखदेवैहै सो वात, पित्त, कफ, तीनप्रकार भेदसे होयहै ॥ चिकित्सा ॥ आगंतुकज्वर में लंघनकरै नहीं । अरु केवलशुद्धवात क्षयदोषजन्यआगंतुकज्वर में व जीर्णज्वर में लंघनकरवावे ॥ अभिचाराभिघातजज्वरनिदान ॥ अभिचार व अभिघातसे उपजेज्वर में मोह व तृषाज्यादहहोयहै ८७० अरु अभिचारजज्वरको व अभिशापज्वरको होमादिकरिकै व देवपूजाकरिकै दूरकरै अरु मंगलरूप मण्यादिक धारणकरै व तीर्थ स्नानसे व ग्रहों के पूजन से पूर्वोक्त ज्वरको दूरकरै ॥ अभिघातज्वर चिकित्सा ॥ अभिघात ज्वरमें शीतल क्रियाकरै अरु कषाय व मधुर व सचिक्कणरस दोषको विचारिदेवै ॥ सामान्य उपचार ॥ घृतके पीनेसे व अभ्यंगसे व रक्तावसेकसे व शुद्ध मांस रसौदन भोजनसे अभिघातज्वर नाशहोयहै । वेधजज्वरको व बंधज ज्वरको व श्रमजज्वरको व अत्यध्वजज्वरको व भंगजज्वरको व अंशजज्वरकोदूधसे व मांसरसौदन से दूरकरै ॥ मार्गश्रम जन्य ज्वरचिकित्सा ॥ इसज्वरमें दिनमें शयन करावै व शरीरकाअभ्यंगकरवावे ॥ दूसरा प्रकार ॥ अथवा बेधजादिकछहोंज्वरोंकोमदिरावदूधभोजनसेनाशकरै ॥ भूताभिषंगज्वरनिदान ॥ काम, शोक, भयइन्होंसेवायु कोपैहैअरुक्रोध से पित्तकोपैहै अरु भूताभिषंग से तीनोंदोषकोपैहैं ये भूताभिषंगज्वरके लक्षणहैं ॥ दूसरा प्रकार ॥ भूताभिषंगसेतीउद्वेग व हास्य व रोदन व कंपन ये होवेहैं ॥ सामान्य चिकित्सा ॥ भूतजज्वर में शीतभंजी रस रत्ती २ देवै ॥ त्रिकट्वादियोग ॥ गन्धक, शुंठ, मिरच पीपल ये सबघृतमें मिलायलेवै भूतज्वरजावै ॥ गन्धकादियोग ॥ गंधक आमला भोजन करनेसे भूतजज्वर जावै इसकीमात्रा १० मासेहै ॥ अष्टमूर्तिरस ॥ सोना, रूपा, तांबा, शीशाभस्म, गन्धक, सोनामाखी विमला, मैनशिल शुद्ध सबकी बराबर शुद्ध पारा निम्बू रसमें इन को १ प्रहर खरलकरै कुम्भधरपुटमें पकावै यह अष्टमूर्त्तिरसरत्ती १ भूतज्वरको व चातुर्थिक ज्वर को त्र्याहिकज्वरको व द्व्याहिकज्वर कोनाशैहै ॥ मधुकनस्य ॥ महुआसार, मिरच, सैंधवनिमक, पिपली, बच

इन्होंका नस्य भूतज्वर को हरैहै॥ व्योपादिनस्य॥ शुंठ,मिरच, पीपल आठपत्ते तुलसीके इन्होंका नस्यलेवै भूतज्वरकोनाशै अथवा सहदेवीके मूल विधि से कंठ में बांधै तो भूतज्वर, चातुर्थिकज्वर व त्र्याहिक व द्व्याहिकज्वरको नाशैहै॥ सूर्यावर्त्तबंध॥ सूर्यफूलवल्लीके मूल कानमें बाँधै भूतज्वरको नाशैहै॥ विजयाबंध॥ सायंकालमें निमंत्रणकरि प्रातःकालमें विजयाको ल्यावै फिर जड़को शिरपर बांधै यहभूतज्वरको हरैहै॥ पुष्पार्कयोग॥ पुष्पार्क योगमें काकतुण्डी की जड़को रक्तसूत्रसे बाहुमें वा शिरमें वा कंठमेंबांधै भूतज्वर नाशहोवै॥ मृत्तिकातिलक॥ ककेरा जनावर के बिलकी माटीका तिलककरै तो भूतज्वरको हरैहै॥ मंत्रविधि॥ गोमयका मंडलकरै तिसको मंत्रिवत् विद्वान् गंधपुष्प अक्षतादिसे पूजै अपनाहाथ मण्डलऊपर स्थापन करि मंत्रकोजपै फिर साध्यमनुष्यके मस्तकको स्पर्शकरि मंत्र १०८ वार जपै॥ अथमंत्रः॥ कालकालमहाकाल कालदण्डनमोस्तुते कालदण्डनिपातेन भूम्यंतर्निहितंज्वरम् त्रिदिनंकारयेदेवं हन्याद्भूतादिकान्ज्वरान्॥ अथवा भूतज्वरको भूतविद्या से अथवा शांत्यादिकसे ज्वरको हरैहै॥ अभिशापजज्वर चिकित्सा॥ काम, शोक, चिंता प्रहार, भय, भूतबाधा, श्रम, क्रोध, लंघन इन्हों से उपजे ज्वर में दीप्ताग्निवालेको मांसौदन देवै॥ दूसराप्रकार॥ अभिशापज ज्वर को आतिथ्यादि भोजनसे दूरकरै॥ विषजन्यआगंतुक ज्वर॥ विषजन्य ज्वरमें मुख कालाहो अरु दाहहो और अतीसार लगै अरु अरुचि हो ज्यादह तृषा लगै शरीर में शूल चलै और मूर्च्छा हो ऐसे जानो। औषध गंधज ज्वर में मूर्च्छा हो और शिर में शूल चलै और छर्दि व छींक आवै॥ चिकित्सा॥ औषध गंधजज्वरको व विषजज्वरको विष पित्त हरनेवाले कषायोंसे नाशै अथवा सर्व गन्धादिगण कषायसे नाशकरै॥ सर्वगन्ध॥ इलायची,दालचीनी,तालीसपत्र,नागकेशर, कपूर, कंकोल, कृष्णागर,केशर,लवंगये सर्व गन्धगणहैं॥ कामजज्वर निदान॥ चित्तमें भ्रमहो, तन्द्राहो, आलस्यहो,भोजनमें अरुचिहो, हृदयमेंपीड़ाहो और शरीर सूखताजावै ये लक्षण कामज ज्वरकेहैं॥ चिकित्सा॥ सुगन्धित चन्दन लेपवाली

मोतियोंका हार पहिननेवाली चलायमान कुचवाली सुंदर बाणी बोलतीहुई सुन्दररूप व गात्रवाली ऐसी सुन्दर स्त्रीका आलिंगन कामज ज्वरको हरैहै अरु दाहको भी नाशैहै॥ दूसराप्रकार॥ सुंदर फूलोंकीशय्या दाहकोहरै वा कमलके पत्तोंकी शय्या दाहकोहरै वा मित्रोंके संग बासभी दाहकोनाशै वा फूलोंके बगीचामें बसना भी दाहकोहरै वा बावड़ीके जलका अवलोकनभी दाहकोहरै वा तोता वा कोयल वा मैना इन्होंकी बाणी दाहको हरै। वा स्त्रियोंकी कथा वा रसिककथा दाहकोहरै वा ठट्ठा मस्करीभी दाहकोहरैहै वा खस खसका ब्यजनाभी दाहको हरैहै ॥ तीसराप्रकार ॥ और चन्दन कपूर, बाला इन्होंके शरीरमें लेपसेभी दाहशांतहोवै ॥ चौथाप्रकार॥ सुन्दर चन्द्रमा समान घरमें चन्दनसे छिड़केहुए में शयन करना भी दाहको नाशैहै ॥ पांचवांप्रकार ॥ धनियां रातिमें भिगोय प्रभात मिश्रीयुतपीवै जलको दाहमिटै॥ छठवांप्रकार ॥ कांताका अधरामृत पीनेसे दाहनाशहोवै यह सर्वोपरि उपायहै ॥ सातवांप्रकार ॥ प्रश्न॥ कांताके कटाक्षसे दग्धमनुष्योंका औषधकहो ॥ उत्तर॥ अधरचुंबन यह तो क्वाथहै दृढ़ आलिंगन यह पथ्य है ॥ भयज शोकज कोपक ज्वरों के निदान ॥ भयज ज्वरमें ज्यादा बकै शोकजमें भी ज्यादा बकै कोपज में ज्यादा कांपे ॥ भयजाचिकित्सा ॥ व्याघ्रादि भयज ज्वर में जलके मध्यमें बसावै रोगीको इस शीतलक्रियासे भयरोग नाश होवै। आनन्द देनेवाले पदार्थोंसे वा मनोज्ञ पदार्थोंसे वा पित्त नाशक पदार्थोंसे शोकज व कामज व भयजज्वर नाशहोवैं ॥ दूसरा-प्रकार ॥ आश्वासनसे वा इष्टपदार्थ लाभसे वा बायुके नाश होने से वा आनन्ददायक पदार्थोंसे कामज, शोकज, भयज ज्वर नाशहोय हैं। कामदेव उत्पन्नहोनेसे क्रोधजज्वर नाशहोवै। और क्रोधउत्पन्न होनेसे कामजज्वर नाशहोवै ॥ क्रोधजज्वर चिकित्सा ॥ क्रोधजज्वरमें पित्तनाशक क्रियाकरै और नारी सुन्दर बाक्यकहै वा आश्वासनकरै वा इष्टलाभहो वा बायुनाशक द्रव्यकालाभ श्रेष्ठहै। और विसर्पज्वर में और विस्फोटक ज्वरमें घृतकापान हितहै वा कफ पित्ताधिक में घृत पान हित है ॥ विषमज्वर संप्राप्ति ॥ जितने आरोग्य न होवै

तितनैशरीर माड़ारहै और योग्यपथ्य छोड़करि अपथ्यसेवनसे अ-
ल्पसी दोष विषमज्वर को प्राप्तकरै है ॥ दूसरा प्रकार ॥ ज्वरसे मुक्त
को अपथ्य सेवनसे अल्प भी दोष को इसीधातुको प्राप्तहो विषम
ज्वर को करै है ॥ विषमज्वरनाम ॥ संतत १ सतत २ अन्येद्यु ३
तृतीयक ४ चातुर्थिक ५ ऐसे पंच प्रकारके होय हैं ६२० संतत
ज्वर रसधातुमें रहैहै। सतत रक्त धातुमेंवसैहै। अन्येद्यु ज्वरमांस
में वसै है त्र्याहिक मेदमें वसै है फिर डाडमज्जा में जाके चातु-
र्थिक ज्वरको पैदाकरै है यह घोररूप होय है। संतत जो दशदिन
वा सातदिन वा बारहदिन रहके शांतहो। सतत जो अहोरात्र में
२ वारआवै अरु शान्तहो अन्येद्युष्ट जो अहो रात्रमें १ वार आवै
अरु शान्तहो। तृतीयक जो तीसरेदिनआवै। चातुर्थिक जो चौथे
दिन आवै ॥ विषमज्वरचिकित्सा ॥ विषमज्वर सब सन्निपातसे पैदा
होतेहैं इन्होंमें उल्वण दोषकी चिकित्सा करै ॥ शोधन ॥ विषमज्वरों
में वमन व रेचन करवावै और सचिक्कण रससे वा गरमरस अन्न
पानसे विषमज्वरको शांतकरै ॥ विषमपथ्य ॥ तक्र मांसखावै वा दूध
मांसखावै वा दही मांसखावै वा माषमांसखावै इनपथ्योंसे विषम
ज्वरजावै ॥ दूसराप्रकार ॥ मदिरा व मट्ठाका पानकरै। वा मुर्गा का
मांसखावै व तित्तिर पक्षीका मांसखावै विषमज्वरमें ये पथ्यहैं ॥ चि-
कित्सा ॥ संतत विषमज्वरको व क्षीण पुरुषके जीर्णज्वरको पथ्यरूप
भोजनों से शांतकरै ॥ घृतपान ॥ जोज्वरकषाय व लेपन व लघुभोजन
इन्हों से शांतन होवै तो घृतपान करवाय शांतकरैवाताधिक विषम
ज्वर नाश वास्ते घृतपानश्रेष्ठ है वा बस्तिकर्म श्रेष्ठ है ॥ पित्ताधिक
विषमचिकित्सा ॥ घृतयुतदूधके रेचनसे वा तिक्त शीतरसोंसे पित्ता-
धिक विषमज्वरको शान्तकरै ॥ कफाधिकविषमचिकित्सा ॥ वमन से
पाचनसे, रुक्षअन्नवपानसे, लंघनसे, गरमरससेकफाधिकविषमज्वर
को शान्तकरै॥ मार्कण्ड्यादिपाचन ॥ मार्कण्डी, छोटीहरड़, मुनक्का, दाख
जीराइन्होंका पाचनविषमज्वर में देवै ॥ महौषधादिपाचन ॥ शुंठ
पिपलामूल, बड़ीसौंफ, मार्कण्डीयानेभूइतरबड़, अमलतास, हरीतकी
इन्होंका काढ़ा सेंधवयुत विषमज्वर को नाशै ॥ पाचनवरेचन ॥ नली

का, छोटीहरीतकी इन्होंका चूर्ण मिश्री संगलेवै व गरमजल व गुण संग रेचन करै ॥ द्राक्षादिपाचन ॥ मुनक्का, दाख, त्रिफला, शुंठ, धनियां इन्हों का काढ़ा पाचनरूप है सर्व कर्म्मोंमें योजना योग्य है। और कुमारी मूल दशमाशे गरमजल संग पीके बमन करै विषमज्वर पुराना भी नाशहोवै ॥ पटोलादिकाढ़ा ॥ परवल, मुलहठी, चिरायता कटुकी, नागरमोथा, हरीतकी इन्होंका काढ़ा विषमज्वर को नाशै अथवा त्रिफला, गिलोय, बासा इन्होंका काढ़ा विषमज्वरको नाशै है ॥ यष्ट्यादिकाढ़ा ॥ मुलहठी, धमासा, बासा, त्रिफला, बाला, गिलोय नागरमोथा इन्होंकाकाढ़ा मिश्रीसंयुक्त विषमज्वरकोनाशकरैहै ॥ मुस्तादिकाढ़ा ॥ नागरमोथा, कटैली, गिलोय, शुंठ, आंवला इन्होंका काढ़ा शहत पिपली चूर्णयुत विषमज्वरको नाशैहै ॥ महाबलादि काढ़ा ॥ खरैटीजड़, शुंठ इन्हों का काढ़ा तीनदिन देनेसे विषमज्वर को हरैहै ॥ नागरादिकाढ़ा ॥ शुंठ, नागरमोथा, कटैली, गिलोय, आंवला इन्होंका काढ़ा शहत, पिपलीचूर्णयुत विषमज्वरको नाशै है ॥ पटोलादिकाढ़ा ॥ कडूपरवल, कटुकी, मुलहठी, हरीतकी, नागरमोथा इन्होंका काढ़ा विषमज्वरको नाश करैहै इसमें संशय नहीं ॥ कुलकादिकाढ़ा ॥ कडूपरवल, निम्ब, बड़ीकटैली, इन्द्रयव, गिलोय इन्होंकाकाढ़ा शहतयुत विषमज्वरकोनाशै ॥ भारंग्यादिकाढ़ा ॥ भारंगी पित्तपापड़ा, शुंठ, बासा, पिप्पली, चिरायता, निंब, गिलोय, नागरमोथा धमासा इन्होंकाकाढ़ा सर्वज्वरोंको हरैहै औरजीर्णज्वर, धातुगतज्वर विषमज्वर, उपद्रवयुतज्वर इन्होंकोभी हरैहै ॥ दूसरा ॥ भारंगी, नागरमोथा, पित्तपापड़ा, धमासा, शुंठ, चिरायता, कुलिंजन, कटैली, पिपली गिलोय इन्हों का काढ़ा जीर्णज्वर को व विषमज्वरों कोनाशै है ॥ निशाद्यंजन ॥ हल्दी, पिपली, मरिच सैंधवानिमक, तिलोंके तैलमेंखरलकरि नेत्रोंमें आँजे विषमज्वर नाशहोवै ॥ नरकेकेशनस्य ॥ नरकेकेश तिल तैलमें सिद्धकरि काकचंचुको घिस नेत्रोंमेंआँजे सर्वज्वरनाश होवै ॥ कणादिनस्य ॥ पिपली, आमला, हिंग, दारुहल्दी, बच, सफेद सर्षप, लहसुन इन्होंको बकरेके मूत्रमें खरलकरि नेत्रोंमें आँजे विषमज्वरोंको नाशकरै ॥ सैंधवादिअंजन ॥ सैंधव, पिपली, चावल, मैन-

शिल इन्होंको तैलमें खरलकरि नेत्रोंमें आंजे विषमज्वर नाशहोवै॥ लहसुनादि अंजन॥ लहसुन, पिपली, राई, बच, कुलिंजन इन्हों को जलमें पीस नेत्रोंमेंआँजे ज्वर नाशहोवै॥चतुःपष्टिककाढा॥ काकड़ासिंगी, हिंग, कायफल, हल्दी, कुलिंजन, रेणुकबीज, कटुकी, रास्ना एरंडमूल, लहसुन, दारुहल्दी, अमलतास, परवल, त्रायमाण, निशोत, चीता, मोरवेल, धमासा, गिलोय, चिकणा, दन्तीमूल, चिरफल वायविडंग, छोटी इलायचीदाने, दालचीनी, चिरायता, गुग्गुल, बासा इंद्रयव, कालेमूंग, क्षीरकाकोली, वाला, शतावरि, मिरच, ब्राह्मी भारंगी, गजपिपली, शुंठ, हरड़, फालसा, मूर्वा, मोगरी, पिपलामूल नागरमोथा, अजमोद, अजमाण, वड़ीसौंफ, कृष्णागर, रक्तचंदन कूड़ा, चवक, श्वेतउपलसरी, बच, कायफल, दशमूल इन्होंकाकाढ़ा आठप्रकार के ज्वरोंको नाशै जैसे हस्तियोंको सिंह तैसे॥ निम्बादि चूर्ण॥ चिरायता, हरीतकी, नागरमोथा, कटेली, त्रायमाण, शुंठ, धमासा, कटुकी, चिकणामूल, कचूर, पिपली, परवल, वड़ीकटेली, वाला पिपलामूल, पित्तपापड़ा इन्होंका काढ़ा सब विषमज्वरोंको हरै है॥ जीरकादिचूर्ण॥ स्याहजीरा गुड़मिलाय खावै विषमज्वर जावै अथवा छोटीहरड़ शहदयुत खावै विषमज्वरको नाशै अथवा तुलसी के पत्तोंकेरसमें मरीचका चूर्ण मिलाय चाटै विषमज्वर जावै अथवा द्रोणपुष्पी के रसमें मिरचघाल चाटै विषमज्वर जावै॥ वर्द्धमानपिप्ली॥ दूधके संग पांच से पीपलको बढ़ावै १०० तक फिर पांचतक घटावै ऐसे वर्द्धमान पिपली बहुत दिनोंतक लेवै चावल दूधको हमेशह खावै तो बात, रक्त, ज्वर, पांडु, बवासीर, गुल्म, सोजा, उदर रोग, विषमज्वर इनरोगोंको यह वर्द्धमान पिपली नाशैहै और जीरा गुड़ अग्निमन्दको व शीतलज्वरको व बात रोगको नाशैहै॥ हरीतक्यादिचूर्ण॥ हरीतकी शहद युत विषमज्वर को हरैहै और पिपली बर्द्धमान विषमज्वरको हरैहै वा जीरागुड़ विषमज्वरको हरैहै वा त्रिफलागुड़युत विषमज्वरको हरैहै॥ बंदाकयोग॥ बंदाकचूर्ण तक्रकेसंग अथवा घृतकेसंग अथवा दही माड़केसंग विषमज्वरको हरैहै व हिंग संगभी बंदाकचूर्ण विषमज्वरकोहरैहै॥ निंबादिचूर्ण॥ निंबपान ४०

तोले शुंठ, मरिच, पीपल १२तोले त्रिफला१२तोले तीनोंलवण१९ तोले दोनोंखार८तोले आजमाण२०तोले इन्होंका चूर्णकरि प्रभात में भक्षणकरै इससे पांचोंप्रकारके विषमज्वर नाशहोवैं ॥भृङ्गराजचूर्ण॥ जड़सहित भृङ्गराज को छायामें सुखावै पीछे चूर्णकर लेवै फिर इसी समान तोल त्रिफलाचूर्ण मिलावै फिर दोनोंके समान तोल मिश्री मिलावै एकरूप करि १ पल तोल प्रभातमें खावै अग्निमन्द रोग विड्बंध,पांडु इनको हरैहै ॥ दीप्यादिचूर्ण ॥ अजमोद, हरीतकी, हिंग चीता, शुंठ, जवाखार, जीरा, स्याहजीरा, पिपली, त्रिफला, सैंधव लवण इन्होंका चूर्ण विषमज्वरको हरैहै ॥ पंचसार ॥ घृत,शहद,दूध पिपली, सफेदखांड़ ये पंचसारहैं इन्हों को मिलायपीवै विषमज्वर हृद्रोग, कास, श्वास, क्षयीरोग इनको नाशैहै ॥ पद्मकादिसार ॥ पद्माख, बेलफल इन्हों का चूर्ण घृतसंग वा मट्ठाके संग पीवै बिषम ज्वर जावै अथवा गौका दूध गोमयसहित पीवै बिषमज्वर जावै ॥ लशूनादिकल्क ॥ लहसुनका कल्क तिलतैलयुत प्रभातमें खावै विषमज्वरजावै और बातब्याधि नाशहोवै ॥ गडूचीकल्क ॥ गिलोयका चूर्ण बस्त्र में छानाहुआ १००तोले गुड़ १६ तोले शहद १६ तोले घृत १६तोले एकत्रकरि अग्निबल पूर्वक खावै और पथ्य भोजन करै। इसके खानेवाले पुरुष के रोग होवै नहीं और जरा, बली पलित ये रोग आवें नहीं और ज्वर वा विषमज्वर नाश होवै और प्रमेह, बात,रक्त, नेत्ररोग ये भी नाशहोवैं यह उत्तम रसायनहै बुद्धि को बढ़ावैहै और सन्निपातको हरैहै इसका सेवनेवाला १०० बर्ष जीवै दिव्यशरीर होजावै यह सर्वोपरि उपायहै ॥ विषममहाज्वरांकुशरस ॥ शुद्धपारा,बिष,गंधक ये बराबर ले इनतीनोंके बराबर धतूराके बीज लेवै इन चारों से द्विगुणा शुंठ, मिरच, पीपल ले फिर अदरख अर्क में व निंबूरसमें खरलकरै ऐसे महाज्वरांकुश रस सिद्ध होयहै इसकी मात्रा रत्ती २ देवै पांच प्रकारके विषमज्वर को नाश होवै और यहीरस त्रिदोषजज्वरको भी नाशकरै इसका फल १ प्रहरमें होयहै ॥ दूसरारस ॥ पारा १ भाग गंधक २ भाग सुहागा २ भाग विष १ भाग मिरच ५ भाग कायफल १ भाग जयपाल

१ भाग इन सबका चूर्णकरिदेवे यह दारुण ज्वरकोहरै और कभी रात्रिको ज्वरहो कभी दिनमें कभी दोदिनमें कभी तीन दिनमेंज्वर आवे यह विषमज्वर होयहै इसकोभी यहरस हरैहै ॥ मेघनादरस ॥ लोहभस्म, कांसीभस्म, तांबाभस्म ये समभाग इनतीनों के बराबर गंधक इनको पलाशकेकाढ़ामें खरलकरि गोलाबनाय गजपुट में फूंकदेवे याप्रकार छःपुटदे फूंके शीतलहोनेपर मेघनादरस सिद्ध होवै १ माशा पानसंग लेवे विषमज्वर को नाशै ॥ गोपीज्यादिघृत ॥ सारिवा, भूमिआंवला, आंवला, सालवण, पिपली, कटुकी, बाला मुनक्का, बेलफल, कटैली, रक्तचन्दन, अतीश, नागरमोथा, इन्द्रयव इन्होंका काढ़ा घृतयुत विषमज्वर को व क्षयी को व शिररोगको व पशुलीदर्द को व अरुचिको व छर्दि को व शोषको व हलीमकको नाशै है॥ पंचतिक्तघृत ॥ बासा, निम्ब, गिलोय, कटैली, परवल इन पांच औषधोंको कल्ककरि घृतको पकावे वहघृत विषमज्वरोंको व पांडुरोग को व कुष्ठको व बिसर्पको व कृमिरोगको व बवासीर को नाशैहे ॥ षट्पलघृत ॥ शुंठि२० पिपली२०चीताजड़ २० चवक२० पिपलामूल२० ये प्रत्येक बीस२ तोले ले द्रोणतोल भर जलमें पकावे और चतुर्थांश रक्खे ये पांच औषधों के कल्कछठा सेंधवगेरै इसवास्ते इसघृतको षट्पल कहते हैं यह विषमज्वरको नाशकरैहै औरखांसी,श्वास,दुर्बलता,शीतलता,प्लीहा,ऊर्द्ध्ववात,सोजा,पांडु इनरोगोंको हरैहै। १०००श्लोक॥ ॥ क्षीरषट्पलघृत ॥ पिपली, पिपलामूल, चवक, चीता, शुंठि, सैंधवलवण ये सब प्रत्येक चार२ तोले इन्होंका काढ़ा और काढ़ा समानदूध और घृत१ प्रस्थ तोल गेर सिद्धकरै यहघृत प्लीहाको व विषमज्वरको नाशकरै ॥ २प्रकार ॥दश मूल, पिपली, पिपलामूल, चवक, चीता, शुंठि, दूध इन्होंमें पकाया घृत विषमज्वरको व खांसीको व अग्निमन्दताको व वातपित्तज्वर को व प्लीहाको व पांडुरोगको नाशैहै॥ अमृताद्यघृत ॥ गिलोय, त्रिफला, परवल, धमासा इन्होंका काढ़ा घृत एकत्र पकायाहुआ विषमज्वर को व क्षयीको व गुल्मरोगको व अरुचिको व कामलाको नाशैहै॥ शुंठ्यादिघृत ॥ शुंठि, पिपली, पिपलामूल, चवक, चीता, य-

घाखार ये प्रत्येक चार२ तोले इन्होंका काढ़ा और प्रस्थतोल घृत अदरखरस एकप्रस्थ दहीमस्तु एकप्रस्थ इन्होंको एकत्रपकायसिद्ध करै यहघृत विषमज्वर को व जीर्णज्वर को नाशैहै ॥चन्दनादिघृत ॥ चन्दन,चीता, कटैली,इन्द्रयव, नागरमोथा, शुंठि, कटुकी,त्रायमाण आंवला, बाला, दोनों सारिवा इन्होंका काढ़ाकरि दूध ४ सेर घृत १ सेर घालि फिर पकाय घृतको सिद्धकरै यहघृत चातुर्थिक ज्वर को व उन्मादको व विषमज्वरोंको व श्वासको व कास को व अप-स्मार यानी मृगीरोगको हरैहै ॥ कल्याणघृत ॥ विड़ंग, नागरमोथा त्रिफला, मंजिष्ठ,अनार, नीलेकमल, पिपली, बाला, एलाची,चंदन कृष्णागर, देवदारु, कालाबाला, कुलिंजन, सालवण उपलसरी दोनों पित्तपापड़ा, निशोत, जमालगोटा की जड़, बच, तालीसपत्र चिकणा, कड़ूवृंदावन, कटैली, मालती, पिठवण येसब तोले२ भर लेवै कल्ककरै घृत प्रस्थभर चौगुना दूध दूना जलमेंसिद्धकरै ऐसे कल्याणघृत हो यह त्रिदोषको हरै व विषमज्वर को श्वास कास गुल्म उन्माद इनको नाशै ॥ महाकल्याणघृत ॥ सबऔषध कल्याण घृतकी और जीवनीयगण प्रत्येक एक एकतोला, दशमूलके काढ़ा में व शतावरि के रसमें व चौगुने दूधमें सिद्धकरै घृतको सिद्धकरै यह महाकल्याणघृतहै यह अपस्मारको व शोषको नाशै और यह घृत काश्मरी बीजसंग नपुंसकताको हरै यहीघृत काकोल्यादिगण युत विषमज्वरको नाशै ॥कोलादिघृत॥ बेरी, अरणी, त्रिफला, इन्हों का काढ़ा, दही, घृत हिंगणचूरण, मिलाय घृतको तय्यारकरै यह घृत विषमज्वरको नाशै ॥ अमृतघृत ॥शुंठि, चवक, यवाखार, पिपला मूल, चीता,पिपली येप्रत्येकचारचार तोलघृत१ प्रस्थमेंपकावै और शहत १ प्रस्थ अदरखरस एकप्रस्थ इन्हों में भी पकावै यह घृ सिद्धिरूप पांचप्रकार के विषमज्वरोंको व सर्वज्वरों को हरै और शरीरकोस्थूलकरै और श्वास,कासकोहरै बलवर्ण, अग्निकोबँधावै॥ घृतपान ॥ घृतदेवै मन्द कफ बात पित्तादिकज्वर में और पकेदोषोंमें घृतअमृतहै और कच्चेदोषोंमें घृत बिषरूपहै ॥षट्तकतैल॥ तैल एक भाग, सज्जीखार,शुंठि,कुलिंजन, मूर्वा, लाख,हल्दी, मांजिष्ठ इन्होंका

काढ़ा छः भाग, दही एकभाग ऐसे तैलको सिद्धकरे शरीर में मर्दन से दाहकोहरै ॥ लाक्षादितैल ॥ पद्माष, कुलिंजन, लाल कमल, अतीस पुष्करमूल, कमोदनी, वाला, मंजिष्ठ, अगस्त्य, गेरू, कायफल, दोनों सारिवा, लोध, नागरमोथा, क्षीरकाकोली, खजूर, भद्रमोथा, आँवला शतावरि इन्हों को कल्क सहित लाखरस व दूध व मस्तु व कांजी इन्होंमें सिद्धकिया तैल शरीरमेंलगावै दाहको व विषमज्वरको नाश करै ॥ दूसरालाक्षादितैल ॥ पीपलकीलाखका काढ़ा २५६ तोले तैल ६४ तोले दही मस्तु २५६ तोले इन्होंको एकत्रकरि फिर बड़ीसौंफ तो० १ हल्दी तो० १ मूर्वा तो० १ कुलिंजन तो० १ पित्तपापड़ा तो० १ कटुकी तो० १ महुआफूल तो० १ रास्ना तो० १ असगंध तो० १ देवदारु तो० १ नागरमोथा तो० १ चन्दन तो० १ इन सबको महीनपीस पूर्वोक्तमेंडारै सबको एकरस मधुरी आंचसेपकावै जब रस जलजाय तैल आयरहै तब उतारले फिर इसतेलकोश-रीरमें मर्दनकरै यहतेल वातरोगोंको व विषमज्वरोंको व कास को व श्वासको व पीनसको व खाजको व दुर्गंधि को व शूलरोगको व गात्रस्फुरण को व दरिद्रता को व ग्रहदोषको नाशैहै यह अश्विनी कुमारों का प्रकटकियाहै ॥ षट्तरणतैल ॥ लाख, महुआ, मंजिष्ठ, मूर्वा चन्दन, सारिवा इन्हों के काढ़ामें सिद्धतैल ज्वरको नाशैहै ॥ अजादि धूप ॥ बकरी चाम व रोम बच, कुलिंजन, लाख, गुग्गुल, निम्बपात इन्होंका धूप ज्वरको नाशैहै ॥ वचादिधूप ॥ बच, हरीतकी, घृतइन्हों का धूपविषमज्वरकोहरैहै ॥ मसूरधूप ॥ मसूरका तूषकाधूप सर्वज्वरों को हरैहै ॥ सहदेव्यादिधूप ॥ सहदेवी, बच, हल्दी, रास्ना इन्हों का धूप व लेप ज्वरको हरै है ॥ गुग्गुलादिधूप ॥ गुग्गुल, बच, राल, निंब आक, चन्दन, दारुहल्दी इन्होंकाधूप सर्वज्वरोंको हरै है ॥ माहेश्वर धूप ॥ शिवलिंगी, गोशृंग, विडालविष्ठा, सांपकी कांचली, मैनफल जटामांसी, बेलफल, गंगाजल, घृत, यव, गुड़, बावची, बकराके केश सिरसम, बच, हिंगु, कंबडल, मरिच ये समभाग बकरा के मूत्रमें पीसै यहधूप सर्वज्वरों को व डाकिनी पिशाचादि दोष को नाशैहै सर्पत्वचादिधूप ॥ सांपकी कांचली, सिरसम, हींग, नींबपात बराबर

ले चूर्णकरि धूपदेवै यहधूप राक्षस, डाकिनी दोषकोहरै व विषम ज्वरको भी हरै ॥ पलंकषादिधूप ॥ लाख, नींबपात, बच, कुलिञ्जन हरीतकी, सिरसम, यव,घृत इन्होंकाधूप ज्वर को शांतकरै॥ माहेश्वर धूप ॥बिंदोला, मयूरपंख,बड़ीकटैली,पलञ्जालु, मदनफल, दालची-नी,मार्जारविष्ठा,नख,त्वच,केश,सांपकीकांचली,हस्तीदांत,सींग, हिंग मरिच ये सब बराबरले धूपकरिदेवै तो स्कन्द ग्रहोन्माद, पिशाच राक्षस, देव इन्हों से उपजे ज्वर को नाशै ॥ निंबपत्रादिधूप ॥ निंब पात,बच,कुलिजन,हरीतकी, सिरसम,घृत,गुग्गुल इन्होंकीधूप विष-मज्वरको हरै ॥ मार्जारविष्ठाधूप ॥ बिलावकी बिष्ठा धूपसे विषमज्वर नाशहोवै अथवा श्मशानकी उपजी सहदेवी वा दूर्बाइन्होंकी जड़ को रक्त सूत्रमें बांधि हस्तमें बांधै विषमज्वर नाशहोवै अथवा अनु-राधा नक्षत्रमें वा उत्तराभाद्रपद नक्षत्रमें आमकाबांदा वा कनेरका बांदा वा पलाशकाबांदा इन्होंको हाथपै बांधै तोज्वरनाशहोवै ॥ उ-लूकपक्षबन्ध ॥ उलूकका दाहिनापक्ष सपेद सूत्रसे बांयेंकानमें बांधै तो एकाहिक ज्वरजावै अथवा गोपालपत्री वा सहदेवी वा बला वा गोभी वा बिजयाइन्होंको पृथक्२मूलकंठपैबांधैतो ज्वरजावै॥ भूतके-शीमूलबन्ध ॥ भूतकेशीकेसातखण्डकरिरक्तसूत्रसे हस्तपैबांधैज्वरजावै निर्गुण्डीबन्ध ॥ निर्गुण्डीजड़, सहदेवीजड़ प्रातःकालकटिमें बांधै सर्व ज्वरकोनाशै ॥ कनेरमूलिकाबन्ध ॥ सपेद कनेरकीजड़कानके ऊपरबांधै व आककीजड़को कान ऊपर बांधै सर्बज्वरको नाशै ॥ संततज्वरचि-कित्सा ॥ परवल,इन्द्रयव, देवदारु, गिलोय, निंबपात इन्होंकाकाढ़ा विषमज्वरकोनाशै ॥दूसराप्रकार ॥ परवल,इन्द्रयव, देवदारु,त्रिफला नागरमोथा,मुनक्का, दाख,महुआ, गिलोय,बासा इन्होंकाकाढ़ा शहद युत देवै यह पांचप्रकारके विषमज्वरोंको हरैहै ॥ तीसराप्रकार ॥ पर-वल, नागरमोथा, बासा, कटुकी, सारिवा इन्होंकाकाढ़ा संततज्वरको हरैहै ॥ चौथाप्रकार ॥ कडूपरवल, इन्द्रयव, धमासा, हरीतकी, कटुकी गिलोय इन्होंका काढ़ा संततज्वरको नाशै ॥ आमलक्यादिकाढ़ा ॥ आंवला, नागरमोथा, शुंठि, कटैली, गिलोय इन्होंका काढ़ा शहद व पिपलीचूर्ण युत संततज्वरको नाशै ॥ ज्वरभेद ॥ एकाहिक, द्व्याहिक

त्र्याहिक, चातुर्थिक ये विषमज्वरहैं और १ जीर्णज्वरहै॥ संततज्वर चिकित्सा॥ त्रायमाण, कटुकी, धमासा, सारिवा इन्होंकाकाढ़ा संतत ज्वरको हरैहै॥ पटोलादिकाढ़ा॥ परवल, हरीतकी, निंब, इन्द्रयव, गिलोय, धमासा इन्होंका काढ़ा कास सहित संततज्वरकोहरैहै॥ द्राक्षादि॥ मुनक्का, निंब, नागरमोथा, इन्द्रयव, त्रिफला इन्होंका काढ़ा अन्येद्युज्वरको हरैहै॥ पटोलादिकाढ़ा॥ परवल, त्रिफला, निंबपात दाखमुनक्का, अमलतास, बासा इन्होंका काढ़ा खांड़ शहद युत एकाहिक ज्वरको हरैहै॥ ब्रह्मदण्डीनस्य॥ ब्रह्मदण्डी का नस्य एकाहिक ज्वरकोनाशै॥ सर्पाक्षिबन्ध॥ चन्द्रमाका ग्रहणमें सर्पाक्षीको निमंत्रणकरिकाटै फिरइसकीजड़को कालेसूत्र करिबांधे बायेंकानके ऊपर एकाहिक ज्वरजावै और यही दाहिने कानकेऊपरबांधै तो द्व्याहिक ज्वरजावै अथवा कन्याकेकाते सूतसे उँगाकी जड़को शिखा में बांधै तो एकाहिक ज्वरजावै अथवा काकमाचीका मूल कान पर बांधै तो रात्रि ज्वरजावै॥ सर्पाक्षीतिलक॥ श्मशानकी जन्मी सर्पाक्षीकीजड़ रविवारको लावै फिर घृतमेंमिलाय तिलककरै तो एकाहिक ज्वरजावै॥ दान॥ अंगदेशमें व बंगदेशमें व कलिंगदेशमें व सौराष्ट्रदेशमें व काशी में दानकिया तिसको एकाहिक ज्वरमें स्मरण करै॥ तर्पण॥ जो तपस्वी अपुत्र सरस्वतीके तीरपै शरीर त्यागता भया तिसको तिलांजलि देने से एकाहिकज्वर जावै अथवा उलूकका दाहिनापक्ष रक्तसूत्रसे दाहिनेहाथमेंबांधे द्व्याहिकज्वरजावै॥ बासादिकाढ़ा॥ बासा, परवल, त्रिफला, दाख, अमलतास, निंब इन्हों काकाढ़ा खांड़ शहदयुत द्व्याहिक ज्वरकोहरै॥ पटोलादि॥ कड़ूपरवल, निंब, मुनक्कादाख, अमलतास, त्रिफला, बासा इन्होंका काढ़ा खांड़ शहदयुत एकाहिक ज्वरकोनाशै॥ अंजन॥ भेड़के केशोंकीबत्ती बनाय तिलके तेल से भिगोय जलाय कज्जल करै इस काजलको दोनोंनेत्रोंमेंआंजैतोद्व्याहिकज्वरजावै॥ हिंगुलयोग॥ हिंगुलविषबराबरले खरलकरि १ रत्तीदेवै पंचप्रकारके विषम ज्वरोंको हरै। जैसे सूर्योदयसे अँधेरा तैसे॥ तृतीयकप्रकार॥ यहज्वर तीनप्रकार का है कफ पित्तात्मक कटि पृष्ठ संधि इन्होंमें प्रवेशहो पीछे शरीरमें प्रवेश

होयहै। और बात कफात्मक पृष्ठसे प्रवेशहो फिर शरीरमें प्रवेशहो है और बात पित्तात्मक शिरमें प्रवेशहो फिर शरीरमें प्रवेश होयहै ऐसे तृतीयकके तीनभेदहैं॥ महौषधादिकाढ़ा॥ शुंठि,गिलोय, नागरमोथा, चन्दन, बाला, धनियां इन्हों का काढ़ा शहद खांड़युत तृतीयक ज्वरकोहरै॥ शिशिरादि॥ रक्तचन्दन, धनियां, शुंठि, बाला, पिपली, नागरमोथा इन्होंका काढ़ा शहद खांड़युत तृतीयक ज्वरकोहरै है॥ उशीरादि॥ बाला,चन्दन,नागरमोथा,गिलोय,धनियां,शुंठिइन्हों का काढ़ा शहद खांड़युत दाह तृषासहित तृतीयक ज्वरको हरैहै॥ शीतभंजीरस॥ शीतभंजीरस रत्ती २ देनेसे वा मुसली को कांजी से पीनेसे तृतीयकज्वरजावै॥ अपामार्गमूलिकाबन्ध॥ उँगाकीजड़ रक्त सूत्रके सात तागों से कटिमें बांधै रविबारको इससे तृतीयक ज्वर जावै अथवा बाराहीजड़ कानपै बांधै वा उलूक पक्षको। हाथ पै बांधै वा पंचरंगसूत्र गलेमें बांधै इन्होंसे तृतीयक ज्वरजावै॥ चातुर्थिकज्वरनिदान॥ चातुर्थिक २ प्रकारकाहै। कफजन्य १ बातजन्य २ कफजन्य जंघाओंमें प्रथम प्रवेशहो फिर शरीरमें प्रवेशहोयहै और बातजन्य प्रथम शिरमें प्रवेशहो फिर शरीरमें प्रवेशहोयहै। और बिषमज्वर चातुर्थिक से अन्य मध्यावस्था में दाह करै है पहिले व ज्वरसे पीछे दुःखदेवै नहीं और बिषमज्वर के उपद्रव औषधों से साध्यहै जैसे बीज भूमिमें हो वह बर्षाकाल में उत्पन्न होय है तैसे धातुओंमें दोष कालपर आय कोपैहै। और ज्वरका बेगनहींरहै तब धातुओंमें जाबसै है दीखता नहीं और तृतीयक चातुर्थिक ज्वरोंमें साधारण कर्म्मत्याग विशेष कर्मकरै। ज्वरकावेग कालको चितमन से ज्वरआवैतो सुन्दरअद्भुत पदार्थ दिखाय ज्वरकालको भुलावै। और संततज्वरको व विषमज्वरको अच्छे पथ्योंसे दूरकरै॥ बासादि काढ़ा॥ बासा,आँवला,सालवण,देवदारु, धनियां,शुंठि इन्होंकाकाढ़ा खांड़शहदयुत चातुर्थिककोहरैहै॥ पथ्यादि॥ हरीतकी,सालवण,शुंठि देवदारु,आँवला,बासाइन्होंकाकाढ़ाखांड़शहदयुतचातुर्थिककोहरै॥ देवदार्व्यादि काढ़ा॥ देवदारु, छोटीहरीतकी, बासा,शालपर्णी, शुंठि आँवला इन्होंकाकाढ़ा शीतल शहद मिश्रीयुत देवै चातुर्थिकज्वर

को व कासको व श्वासको व मन्दाग्नि को हरै है ॥ स्थिरादिकाढ़ा ॥ सालवण, देवदारु, आँवला, सरलवृक्ष, शुंठि इन्हों का काढ़ा खांड़ शहदयुत चातुर्थिक ज्वरको नाशै ॥ दुःस्पर्शादिकाढ़ा ॥ धमासा, बाला बड़ी कटैली, नागरमोथा, महुआकेफूल, हरीतकी, असगन्ध, शुंठि वासा, गिलोय, पित्तपापड़ा इन्हों का काढ़ा शहदपिपली चूर्णयुत दाहको व पसीना को व शोषको व कृमिरोगको व रुधिररोग को व शीतलताको व भ्रांतिको व श्वासको व शूलको व तृषाकोवदि-वाज्वरको व रात्रिज्वरको व पांचो विषमज्वरोंको नाशैहै ॥ दार्व्यादि काढ़ा ॥ दारुहल्दी, देवदारु, इन्द्रयव, मंजिष्ठ, अमलतास, पाढ़ा, कचूर, पिपली, शुंठि, चिरायता, गजपिपली, त्रायमाण, पद्माख, बच धनियां, अदरख, नागरमोथा, सरलवृक्ष, सेंभा, दालचीनी, हरीतकी कटैली, पित्तपापड़ा, दर्भमूल, कटुकी, धमासा, गिलोय, पुष्करमूल इन्होंका काढ़ा विषमज्वर को व त्रिदोषज ज्वरको नाशै है ॥ मुस्ता-दिकाढ़ा ॥ नागरमोथा पहाड़मूल आँवला इन्होंकाकाढ़ा चातुर्थिक ज्वरको हरै अथवा त्रिफला दूधसंग चातुर्थिकको हरैहै ॥ बेलफल चूर्ण ॥ बेलफल मधुमाधवी इन्होंका चूर्ण सफेद बछरावाली गौके दूधके संग रविवारकोपीवैतो इससे चातुर्थिकज्वर नाशहोवै॥ पुनर्न-वादुग्धयोग ॥ सफेद सांठी की जड़ दूधसंग पीने से पित्तज्वर जावै अथवा ताम्बूल के भक्षण से भी चातुर्थिकज्वर जावै ॥ वृषदंशपुरी-षादियोग ॥ वृषदंशकीविष्ठाकोदूधमेंमिलायपीवैतोचातुर्थिकज्वरजावै॥ सिरीषकल्क ॥ सिरसकाफूल, हल्दी, दारुहल्दी इन्होंकाकल्क घृत संयुक्तचातुर्थिकज्वरको हरैहै ॥ हिंगुनस्य ॥ हींगपुरानीघृत संयुक्तकी नस्यलेनेसेचातुर्थिकज्वर नाशहोवै ॥ दृष्टांत ॥ जैसेसुन्दरकांताकामुख देखनेसे साधुभाव जातारहै तैसे ॥ अगस्त्यपत्रनस्य ॥ अगस्त्य पान के नस्यसे चातुर्थिक ज्वरनाश होवै ॥ उलूकपक्षधूप ॥ उलूक के पंख गुग्गुल इन्होंको कालेवस्त्रमें बाँध धूप देने से चातुर्थिक ज्वरनाश होवै अपामार्गकी जड़ रविवारको गलेमें बांधै तृतीयकज्वरजावै ॥ सहदेवीमूलबंध ॥ नंगाहोके सहदेवीकी जड़को कानके ऊपरबांधै तो चातुर्थिक जावै अथवा द्रोणपुष्पीका रसनेत्रों में आँजैचातुर्थिक

जावे ॥ काकजंघादिबंध॥ काकजंघा, चिकणा, पिपली, भृङ्गराज, उंगा इन्होंके प्रत्येक २ फूल गल में बांधनेसे चातुर्थिक जावे ॥ पंचकषाय ॥ कूड़ा, परवल पान, कटुकी १ कडूपरवल, सारिवा, नागरमोथा पाढ़ा, कटुकी २ निम्ब, परवल, त्रिफला, दाख, नागरमोथा ३ बासा चिरायता, गिलोय, रक्तचन्दन, शुंठि ४ गिलोय, आंवला, नागरमोथा ५ ये पांचकाढ़े पांचप्रकारके ज्वरोंको हरते हैं ॥ धातुशोषकविषमज्वर ॥ शरीरमें अन्नरसदुष्टहो और कफपित्तकोपकोप्राप्तहो आधे शरीरको गरमकरै और आधेको शीतल करैहै कफकरिकै कोष्ठ में पित्तदुष्टहो और कफ हाथ पैरों में दुष्टहो व्यवस्थितरहै इससे शरीर गरमरहै और हाथपैर शीतलरहैं पित्तकरिकै और कोष्ठमेंकफ दुष्टहो और हाथ पैरोंमें पित्तव्यवस्थितहो इससे शरीरशीतलऔर हाथ पैर गरम रहैं वायुकोप बिना विषमज्वर होवै नहीं कफपित्त नाशेहुये पीछे भी वायुचेष्टा करैहै शीत पूर्वक व दाहपूर्वक संततादि विषयों के स्वरूप रसधातु मध्यमें कफ बातरहते ज्वरकी आदि में शीत को पैदाकरैहै और वही शांतहोके अंत में पित्तदाह को पैदा करै है ॥ विषमभेदबातबलासक ज्वर ॥ अल्पज्वररहै, रुक्षशरीर हो सूजनभी हो अंग जड़हो अति कफाधिक्यहो ये लक्षण बातबलासक ज्वरके हैं ॥ प्रलेपकज्वरके लक्षण ॥ शरीर चिकट हो, कफ शरीरमें हो, मन्दज्वर हो, जाड़ा लगाकरै ये प्रलेपकज्वर के लक्षण हैं। प्रलेपकज्वरमें कफज्वर नाशक क्रिया करै। और रसधातु में स्थित पित्तज्वर पहिलेदाहको पैदाकरैहै वहपित्तशांतहुये बातकफ अंतमें शीतको पैदाकरैहै और शीतपूर्वकज्वर १ दाहपूर्वकज्वर २ येसंसर्गजज्वरहैं पहिलाकष्ट साध्य है दूसरा असाध्य है ॥ सामान्य चिकित्सा ॥ शीतज्वरमें गरम चिकित्सा शीत नाशक करै और दाह ज्वरमें दाहनाशक कर्म्म करै ॥ शीतनाशक क्रिया ॥ आच्छादनभारी वस्त्रोंसे, कम्बलादिसे, रुईकेभरे कपड़ोंसे, शीतकोहरै ॥ क्षुद्रादि ॥ कटैली, शुंठि, नागरमोथा, पित्तपापड़ा, धनियां, चिरायता, निम्ब गिलोय, भारंगी, रक्तचन्दन, पुष्करमूल, कडूपरवल, कटुकी, बासा मंजिष्ठ, इन्द्रयव इन्हों का काढ़ा प्रातःकाल पीवै यह शीतज्वर व

पांचप्रकारके बिषमज्वरों को नाशैहै॥ शुकाह्वादिकाढ़ा॥ कूड़ा, पवाड़ बासा, गिलोय, निर्गुण्डी, भृंग,शुंठि,कटैली,अमसान इन्होंकाकाढ़ा शीतज्वर को हरैहै॥ घनादि॥नागरमोथा,निम्ब,शुंठि,गिलोय,बड़ी कटैली, कडूपरवल, इन्द्रयव इन्होंका काढ़ा शहदयुत शीतज्वरको हरै है॥ भद्रादि॥ भद्रा, धनियां,शुंठि, गिलोय, नागरमोथा,पद्माख रक्तचन्दन, चिरायता, परवल, बासा, पुष्करमूल, कटुकी, इन्द्रयव निम्ब, भारंगी, पित्तपापड़ा ये सब समभागले काढ़ाकरै प्रभात में पीवै तो शीतज्वर नाशहोवै॥ बिभीतादिदाहपूर्व्वज्वर पर॥ बहेड़ा अमलतास, कटुकी, निसोत, हरीतकी इन्होंका काढ़ादाहपूर्वक बिषमज्वरको नाशै है॥ महाबलादि काढ़ा॥ चिकणामूल, शुंठइन्होंका काढ़ा तीन दिन पीने से बिषमज्वर को व शीतज्वरको व कंपवायु को नाशै है॥ व्याघ्र्यादिकाढ़ा॥कटैली,शुंठि,कुरडूची,पुष्करमूल,चिरायता, बासा, गिलोय, भारंगी,निम्ब, परवल, पद्माख,नागरमोथा कटुकी, इन्द्रयव, रक्तचन्दन, इन्होंका काढ़ा कफ को व बात को व पंचबिधि, बिषमज्वरको व कृमिरोगको व पांडुरोगको व छर्दि को व कामलाको नाशै है॥ देवतापूजन॥ महादेवजी को पार्वती व गण व मातृगण सहित को प्रभात में पूजनकरै तो बिषमज्वर मिटै। २ प्रकार विष्णुसहस्रनामस्तोत्रकेपाठ श्रवणकरैतो बिषमज्वरनाश होवै और तीर्थसेवनसे व वेदकेअध्ययनसेदेव, अग्नि,वृद्ध, ब्राह्मण इन्होंकीपूजासे बिषमज्वरशांतहोवै॥ पद्माकादितैल॥ कूट,कमलकंद रक्तकमलकंद,कालाबाला, मृणालविष, पुष्करमूल, कुमुदकंद, बाला मंजिष्ठ, पद्माख, गेरू, कायफल, दोनों सारिवा, लोध्र, नागरमोथा मोखवृक्ष,खजूर, भद्रमोथा,आंवला, शतावरि इन्होंकाकाढ़ालाखका रस,दूधमस्तु,कांजी इन्होंमें सिद्धकिया तैलदाहज्वरकोहरै है१६०॥ माहेश्वरधूप॥ शिवलिंगी, गोशृङ्ग, बिड़ालविष्ठा, सांपकेचली, गेलफल, भूतकेशी, जटामांसी,बेलफल, वंशत्वचा,घृत, यव, मोरचन्दा भेड़केकेश, सिरस, बच, हिंगु, गोहाड़,मिरिच इन्होंकी धूपवकराके मूत्रमें पिसीहुई सर्वज्वरोंको व डाकिनीको व पिशाच, प्रेतके दोषों को नाशै है॥ गोजिह्वादिचूर्ण॥ गोजिह्वा, जयाजड़ इन्हों को चावल

के जलमेंपीसि पीवै शीतज्वरजावै अथवा पाढ़े के काढ़ामें मिरच मिलायपीवै तो शीतज्वरजावै ॥ जीरकादिचूर्ण ॥ जीरा,लहसुन,शुंठि मिरच, पिपली,पाढ़ा इन्होंको गरमजलसेपीसि गुड़युतपीवै शीत-ज्वरकी आदि में अथवा कड़ूकाकड़ीको खाय ऊपर खट्टातक्र पीवै फिर अग्निसेतपै देहसेपसीना निकसै शीतज्वर जावै ॥ कायस्थादि तैल ॥ तुलसी,रास्ना,कटुकी, दारुहल्दी, गुग्गुल, गठोना,सहदेवी बच,कूट इन्होंकोपीस सैंधव,यवाखार युतकरि निम्बुकेरसमें खरल करि फिर इसमें तेलको सिद्धकरै यहतैल अभ्यंगसे शीतज्वर को नाशै है अथवा मुरदाके कपड़ाकी धूपदेनेसे शीतज्वरजावै ॥ जया-मूलीबन्ध ॥ जयाकीजड़को मस्तककेऊपरबांधै तो शीतज्वरजावै और देवडांगरीकी जड़ कानकेऊपर बांधै रात्रिज्वरजावै और आंब की जड़कानपरबांधैतो शीतज्वरजावै और आंबकीजड़कोशिखापैबांधै तोउष्णज्वरजावै और पुनर्वसुनक्षत्रमें मदारवृक्षका बांदालावै तिस को दाहिने हाथपर बांधै शीतज्वर जावै अथवा सुन्दर रूपवती मनको प्रसन्नकरनेवाली यौवनअवस्थावाली कुंकुम,कस्तूरी,स्तनों में लगायेहुये चंचलनेत्रवाली ऐसीस्त्रीकोआलिंगनशीतअवधितक करै इससे शीतज्वर जावै जब जाड़ा नाशहोजावै तबस्त्रीकोअलग अग्निमन्द शीतज्वर इनकोनाशै ॥ भूतभैरवचूर्ण ॥ हरताल, शिपी चूर्ण ये बराबरले इन्होंका नवमांश तूतियाले इन्होंको कुमारी रस में खरलकरै फिर बन उपलोंसे गजपुटमें फूंकदेवै शीतल होने पर रत्ती १ मिश्रीयुत प्रभातमें पीवै शीतज्वर नाशहोवै इसरससे किसी को छर्दिहोयहैकिसीकोनहीं । यहरस एकदिनमेंहीं शीतज्वरको हरै है पथ्य मध्याह्नमें चावल व शिखरणदेवै ॥ पथ्यादिचूर्ण ॥ हरीत-की,इन्द्रयव इन्होंका चूर्ण माशे १० गुड़सङ्गदेवै यह शीतज्वर को व विषमज्वर को हरै है ॥ हरिद्रादिचूर्ण ॥ हलदी, निम्बपात,पिपली मिरच,नागरमोथा,वायबिडङ्ग,शुंठि,सैंधव,चीता, कूट, अतीश, पाढ़ा हरीतकी,बराबरलेवै इनको बकरीके मूत्रमें खरलकरै । गोमूत्रसङ्ग नस्यमें बरतै और रुधिरके सङ्ग अञ्जनमें बरतै और रसोतकेसङ्ग खानेमें बरतै यह विषमज्वर को जलदी हरै है । और शुंठि, मिरच

पिपली,शहत इन्होंके सङ्ग सन्निपातको नाशैहै । गोमूत्रसङ्ग शीत ज्वरको हरैहै। वासा रससङ्ग रक्त पित्तको हरैहै। क्षयी, कास,श्वास इन्होंमें दूध व असगन्ध के सङ्ग देवै । संग्रहणी में तक्रसंग देवै। मूत्रकृच्छ्र में चावल धोवन संगदेवै । प्रमेहमें शहतसंगदेवै । गुल्म व शूलमें गुड़के शरबतसंगदेवै। वायुरोगमें गरमजलसे देवै। शूल में अदरख अर्कसंग लेपकरै ॥ भारोग्यरस ॥ पारा, गन्धक, पिपली मूल,बंशलोचन, जयपाल,शुंठि,मिरच,पिपली,पाचोंलवण प्रत्येक२ भाग इन्हों को नागरपान के रसमें खरलकरै १ दिन यह रत्ती १ निशोत पानसंग नवज्वरको हरै सन्निपातमें रत्ती २ देवै यह परम दुर्लभहै ॥ शीतांकुश ॥ तूतिया, सुहागा, पारा,खपरिया,विषवच्छनाग गन्धक,हरताल इन्हों को करेलाके रसमें खरलकरै एक घड़ी तक यहरस रत्ती १ खांड़ जीराके संग देवै यह पांचप्रकार के विषमज्व- रोंको व शीतको हरै ॥ २ शीतारिरस ॥ हरताल, खपरिया इनको मूषापर्णी के रसमें फिर धतूरा के रसमें खरलकरै देरतक इसकी गोलीदेवै शीतज्वर नाशहोवै ॥ दूसराप्रकार ॥ हरताल एक भाग तांबाभस्म एकभाग, तांबाका नवमांश नीलातूतिया इन्होंको पीस कौमारीके रसमें खरलकरै गजपुटमें पकावै शीतल होनेपर काढ़ै रत्ती २ खांड़संगदेवै इससे एकाहिक, द्व्याहिक, वेलाज्वर, चातुर्थिक इनज्वरों का नाशहोवै॥ तीसराप्रकार ॥ मैनसिल, हरताल, तूतिया तांबा, पारा, गन्धक सब समानभाग लेवै त्रिफलाके रसमें खरल करि गोलाबनावै फिर सम्पुटमें दे कपड़ माटीकरि गजपुटमें फूंक देवै फिरिआकदूधमें व थोहरदूध में सातभावनादेवै फिर जमाल- गोटा के काढ़ा में सात भावना देवै ऐसे शीतारि रस सिद्ध होय है यह १ माशा तुलसी का रस व ६ माशे गुड़ मिरच नग ५० के चूर्णसंग लेवै ऊपर भात खावै शीतज्वर नाशहोवै ॥ चौथाप्रकार ॥ पारा एकभाग, गन्धक २ भाग, हिंगुल ३ भाग, जयपाल ४ भाग इन्होंको जयपाल की जड़ के रसमें खरल करै १ रत्ती मिश्री संग प्रभातमें देवै शीतलजल के संग यह शीतज्वर को हरै है ॥ भूतभै- रवरस ॥ हरताल १ तोला तूतिया २ तोला सीपीकी भस्म ६ तोले

इन्होंका चूर्ण एकत्रकरै फिर धतूरा रस में १ पहर खरलकरै लोहे के पात्रमें फिर अग्नि के ऊपर धर शोषण करै फिर प्रभात कछुक गरम चणासमान खांड़सहित खावै यह शीतज्वरको नाशै है इसमें संशयनहीं ॥ दाहपूर्व्वशीतोपचार ॥ अरण्ड के पत्ते भूमि लीपीहुई पै बिछावै फिर वही पत्ते रोगीकी देह पै धारण करै तिससे दाह मिटै और ज्वर नाशहोवै और दाह शान्तहुये पीछे जो शीतलता आवै ताको युक्ती से निवारण करै ॥ अथवा दाहनासवास्ते ॥ सुन्दर स्त्री का आलिंगनकरवावै दाह पर्य्यन्त ॥ शीतोपचार ॥ दाहवाले मनुष्यको सीधासुलाय नाभीऊपर तांबा का वा कांसीका पात्रधरै तिसपर शीतलजल की धारा बहुत गेरै इसकर्म्म से दाह जल्दी नाशहोवै॥ षटचक्रतैल ॥ साजीखार, शुंठि, कूट, रक्तचन्दन, मूर्वा, लाख, हलदी पतंग, मुलहठी इन्होंकेकाढ़ामें छहगुणा तक्रमिलाय तेलको सिद्धकरै यहतेलदाहसहित ज्वरकोनाशकरै ॥ महाषट्कतैल ॥ रास्ना, शुंठि, कूट रक्तचन्दन, हलदी, मुलहठी, पिपली, चिकणामूल, लाख, सैंधव, साखिवा, पाढ़ा, देवदारु, रक्तरोहड़ा, बाला, समुद्रफेन, रोहिषतृण इन्हों के काढ़ा में तेलको पकाय छहगुणा तक्रमिलाय तेलको सिद्ध करै यहतेल दाहज्वरको व शीतलज्वर को नाशकरै ॥ अंगारतैल ॥ मूर्वा लाख, हलदी, दारुहलदी, मंजिष्ठ, कडू वृन्दाबन, बड़ी कटेली, सैंधव, कुलिंजन, रास्ना, जटामासी, शतावरि इन्होंकाकाढ़ा कांजी २५६ तोले तेल एकसेर इसबिधिसेतेलको सिद्धकरै यहतेलज्वरको नाश करै है ॥ रसादिधातु गतलक्षण ॥ शरीर भारी रहै, हृदय भारी रहै अंगोंमें ग्लानिरहै, छर्दिआवै, अरुचिहोय, दीनताहोय ये लक्षणरस धातु गतज्वर के हैं रसधातुगत ज्वरवाला बमन व लंघन करै ॥ धातुगतज्वरचिकित्सा ॥ रसधातुगत ज्वरमें रससंशुद्धि याने पसीना लेवै और रक्तधातुगत ज्वर में रक्तमोक्ष याने दस्त करवावै मांस धातुगत ज्वरमें रेचन करवावै मेदधातुगत ज्वरमें सहन होवै नहीं परन्तु रेचन, बमन, स्वेदन करवावै अस्थिगतज्वरमें स्वेद व मर्दन करवावै मज्जा व शुक्रधातुगतज्वरोंको असाध्यजानै ॥ रक्तधातुगत ज्वरलक्षण ॥ रक्तथूकै बारम्बार दाहहो, मोहहो, छर्दिआवै, भ्रमरहै

ज्यादा बके, अंगोंपर फुनसीहों,तृषा ज्यादालगै ये लक्षण रक्तधातु गतज्वर के हैं २२ ॥ गायत्र्यादिकाढ़ा ॥ खैर, त्रिफला, निम्ब, परवल बासा, गिलोय इन्होंका काढ़ा शहत घृतयुत रक्तदोष में श्रेष्ठहै॥ वराप्यजादिकाढ़ा ॥ त्रिफला, जीरा, बड़ी कटैली, हलदी, बेणुबीज वासा इन्होंकाकाढ़ा शहतयुत महा रक्तदोष को हरे है ॥ वृषादि॥ वासा धमासा,पिपली, पित्तपापड़ा, चिरायता, कुटकी इन्होंकाकाढ़ा मिश्रीयुत रक्तदोष ज्वर,दाह,तृषा, मूर्च्छा, भ्रम, पित्तज्वर इन्हों कों हरे है ॥ रक्तगतचिकित्सा॥ जलसेक,ज्वरनानकऔषध,लेप,रक्तमोक्ष ये उपचार रक्तगतज्वर में हितहैं ॥ मांसगतज्वरलक्षण ॥ पिण्डियोंमें पीड़ा, तृषा, मलमूत्र ज्यादाबेग, पसीना आवे, दाह, चित्त विक्षेप ग्लानि ये मांसगतज्वर के लक्षणहैं ॥ मांसगतज्वर चिकित्सा ॥ इस ज्वरमें तेजरेचनदेवे आरामहोवे॥मेदगतज्वरलक्षण ॥अत्यन्तपसीना आवे तृषालगे, मूर्च्छा हो,ज्यादाबके, छर्दिआवे, दुर्गन्धशरीरमें हो अरुचिहो,ग्लानिहो, सहनशक्ति का नाश ये लक्षण मेदगतज्वरके हैं ॥ अस्थिगतज्वरलक्षण॥ अस्थियों में पीड़ाहो ज्यादाथूके,श्वासहो अतीसारहो, बमनहो, अंगों का विक्षेपहो ये लक्षणअस्थिगतज्वर के हैं ॥ शास्त्रार्थ ॥ अस्थिगतज्वरमें छर्दिनाशकऔषध व बस्तिकर्म व अभ्यंग व उद्वर्तनकर्म ये करवावे ॥ मज्जागतज्वरलक्षण ॥ अँधेरी आवे और हुचकी आवे,कास,शीतलता,छर्दि,अन्तर्दाह,महाश्वास मर्मस्थानकहे वृषण,ललाट,हृदय, नेत्र इन्हों में पीड़ाहो ये लक्षण मज्जागतज्वर के हैं और मज्जा शुक्र गतज्वरकी चिकित्सा नहींहै अवश्यमरै ॥ वीर्य्यगतज्वरलक्षण॥ शिस्न गर्वायमान रहे और वार-बार बीर्य्य श्रावहो ये शुक्रगतज्वर के लक्षण हैं इस ज्वर वाला निश्चय मरै ॥ साध्यासाध्य॥ रस, रक्त, मांस, मेद इनमें रहता ज्वर साध्यहोयहै और अस्थि,मज्जागत असाध्यहै और वीर्य्यगतज्वर वाला जीवै नहीं ॥ प्राकृतवैकृतज्वर ॥ जिसऋतुका जो दोषराजाहो उसमें वही कोप प्रकटहोवे यह प्राकृतहोय है विपरीतप्रकटहो वह वैकृत होय है जैसे वर्षाऋतु में वात ज्वर, शरद ऋतुमें पित्तज्वर वसन्तऋतु में कफज्वर ऐसे प्राकृत हैं और वर्षाकाल में पित्तज्वर

शरत्काल में कफज्वर, बसंत काल में बातज्वर ऐसे वैकृत जानो और प्राकृत वातज्वर दुःसाध्य है और प्राकृत पित्तज्वर सुसाध्य है॥ उत्पत्तिक्रम ॥ ग्रीष्मऋतुमें संचितवायु वर्षाकालमेंकुपितहो और पित्त कफसे मिल ज्वरको उत्पन्नकरै और वर्षाकालमें संचित पित्त शरदकालमें कुपितहो और कफसे मिल ज्वरको उत्पन्न करै और कफ पित्तके स्वभाववाले को विसर्गकाल है और इसमें लंघन से भयहोत नाहिं और हेमंतकाल में संचित कफ बात पित्तसें मिल बसंतकालमें कुपितहो ज्वरको उत्पन्नकरै और इन्हों की काल के अनुसार प्रवृत्ति और वृद्धिजानो और वातादिदोषोंको बढ़ानेवाला आहार विहार अनुपशयहोय है और बातादि दोषों को शांतकरने वाला आहार विहार उपशयहोयहै ॥ अन्तर्वेगज्वरके लक्षण ॥ शरीर के भीतर दाहहो और तृषा ज्यादालगै और ज्यादाबकै श्वास और भ्रम हो और संधियों में और हाड़ोंमें शूलचालै और पसीना आवै नहीं और अपानवायु और मल रुकजावै ये लक्षण अन्तर्वेग ज्वर के हैं॥ बहिर्वेगलक्षण ॥ खाल ऊपर ज्यादा संतापहो और तृषा कम हो ये बहिर्वेगज्वर के लक्षण हैं यह सुखसाध्यहोय है और अंतर्वेग दुःसाध्यहोय है ॥ आमाशयगतज्वर लक्षण ॥ मुखसे लाल पड़ै और छर्दि आनेकेसी भ्रान्तिहोवै और हृदयभारीहो अन्नमें रुचि उपजे नहीं तन्द्रा आलस्य ये भी होवै और मुख पकजावै और मुख का रस जातारहै और शरीर भारीरहै भूखकानाशहो और मूत्रज्यादा उतरै और रोमांचहो ज्वरकाबेग ज्यादाहो ये आमज्वर के लक्षण हैं इसमें औषध देवैनहीं जो देवै तो फिरज्वरको उत्पन्न करै और शोधन शमन औषधदेवै तो विषमज्वर को उत्पन्न करै ॥ कटुक्यादि काढ़ा ॥ कुटकी नागरमोथा पीपलामूल हड़ इन्होंकाकाढ़ा आमज्वर में हितहै ॥ सर्व्वेश्वररस ॥ पारा १ भाग गन्धक २ भाग सुहागा ४ भाग जमालगोटा ८ भाग इन्होंको तीन दिनतक निरन्तर खरल करि पीछे ३ रत्तीभर देनेसे नवीनज्वर को हरै और ६ रत्तीरसको हरड़ का चूर्णके संगलेनेसे बातज्वर नाशहोवै और ६ रत्तीभर रस को खांड़ शहत के संगदेनेसे कफनाशहोवै और १ रत्तीभर देने से

भयंकर जीर्णज्वर को हरै और ज्यादा लंघनों से उपजे ज्वर को नाशकरै और ३ रत्ती रसको पीपली शहत के संगलेनेसे सूतिका रोग शान्तहोवै और पांचवर्ष के बालक को १ यव समान देने से ज्वर शान्तहोवै और १ रत्तीसे लगाय ४ रत्तीतक देनेसे क्रमबुद्धि से विषमज्वरोंको शान्तकरै और खरीखांड़के संगदेनेसे तीनप्रकार के ज्वरको शान्त करै और ३ रत्तीभर रसको वायबिड़ंग अजमान के संगदेनेसे कृमिरोग को हरै ऐसे यह सब रोगों को शान्तकरै यहरस भैरवजी ने कहाहै ॥ त्रिपुरभैरवरस ॥ मीठा तेलिया ४ माशा गन्धक तांबाभस्म जमालगोटा ये सम भाग लेइ पीछे इन्हों को जमालगोटा की जड़के रसमें खरलकरि १ पहरतक पीछे इसको ३ रत्तीभर देवै त्रिकुटा व अदरख का रस व मिश्रीकेसंग यहनया ज्वरको नाशकरै है और मन्दाग्निको व वायुके सूजनको व शूलको व विष्टंभको व ववासीर को व कृमिरोगको हरै और इसपर पथ्य तक्रके संगखावै ॥ रत्नगिरि ॥ पारा अभ्रक तांवा सोना भस्म गंधक ये सम भाग लोहभस्म आधाभाग वैक्रान्त रत्नभस्म पावभाग पीछे इन्होंको भंगरा के रसमें खरलकरि पर्पटी रसकीनाईं पकाय पीछे चूर्णकरि पीछे सहोंजना वासा निर्गुण्डी गिलोय चीता भंगरा कटैली मुण्डी जयन्ती अगस्त्या ब्राह्मी चिरायता घिकुवार पट्टा इन्हों के रसोंमें तीनतीन भावना देइ लघुपुट में पकाय शीतल होनेपर काढ़ि १ माशाभरदेने से पीपली के दानाके संग नयाज्वर को हरै २ घड़ी में यहरस योगवाही है और इसपर मूंग मूंगकायूष वायु तक्र ज्वरमेंकहे शाक ये पथ्य हैं ॥ नवज्वरेभसिंह ॥ शोधापारा गंधक लोह तांबा शीशा मिरच पीपल शुंठि ये सम भागलेइ और मीठा तेलिया आधाभाग मिलाय इन्होंको २ दिनतक खरल करि पीछे अदरख के रसके संग २ रत्ती देने से नयाज्वरको वात संग्रहणीको व सबरोगों को दूरकरै ॥ ज्वरघ्नीबटिका ॥ शोधापारा १ भाग शिला जीत पीपल हरड़ै अकरकरा कडुआतेल में शोधागन्धक गडूंभा ये चार चार भागलेइ पीछे महीनपीसि गडूंभाकी जड़ के रसमें उड़द समान गोलीबनाय गिलोय के काढ़ा के संग खानेसे नवीन ज्वर

को नाशकरै और ये गोली ज्वरमात्रों को नाशकरनेवाली हैं॥ विश्व तापहरणरस॥ पारा तांबाभस्म निसोत गन्धक कुटकी जमाल-गोटा पीपली मीठातेलिया कुचिला हरड़े येसमानभाग लेइ पीछे इन्होंको धतूरा के रसमें १ दिनतक खरलकरि पीछे २ वालभरकी गोलीबनाय अदरक के रसके संग खानेसे नवीन ज्वर शान्तहोवै इसमें पथ्य मूंगका यूष आदिहलका भोजन है॥ श्वासकुठाररस॥ पारा गन्धक मीठातेलिया सुहागा खार मनशिल ये प्रत्येक चार चार माशे लेइ मिरच ३२ माशा त्रिकुटा २४ माशा पीछे इन्होंको खरल में बारीक पीसि तय्यार करि बर्त्तने से यह श्वासकठार रस सबतरहके श्वासरोगों को व आठप्रकार के ज्वरोंको दूरकरै॥ उदक मंजरीरस॥ पारा गन्धक मिरच सुहागा खार ये समभागलेइ और इनसबों के बराबर खांड़लेइ पीछे इन्होंको मच्छ के पित्ताकेरसमें बारम्बार खरल करि पीछे ३ रत्ती भर अदरकके रस के सङ्ग खावै और इस में दाहलगै तो शीतल बीजना से हवा करावै और तक्र चावल बैंगन की भाजी इन्हों का पथ्य देवै इस से नवीन ज्वर भ-यंकरभी शान्तहोवै १ दिनमें और पित्त ज्यादाबढ़े तो मस्तक ऊ-पर पानी का तरड़ादेवै॥ ज्वरधूमकेतुरस॥ पारा गन्धक शिंगरफ समुद्रझाग ये समान भागलेइ पीछे इन्होंको अदरक के रस में १ पहर तक खरलकरि पीछे २ बल्ल प्रमाण लेनेसे अदरक के रसके सङ्ग तीनदिन में नवीन ज्वर को नाशकरै॥ बटिका॥ पारा१ भाग गन्धक २ भाग शिंगरफ ३ भाग जमालगोटा ४ भाग पीछे इन्हों को जमालगोटाकीजड़के काढ़ामें खरलकरि चिरमठी समानगोली बनाय प्रभात में मिश्री और ठंढेपानी के सङ्ग गोली को खानेसे १ दिनमें नयाज्वर को हरै॥ दूसरीबटी॥ पारा गन्धक मीठा तेलिया शुंठि मिरच पीपल हरड़े बहेड़ा आमला शोधा जमालगोटाकेबीज ये समभागलेइ पीछे इन्होंको द्रोणपुष्पीके रसमें भावना देइ पीछे उड़दसमान गोलीबनाय खानेसे नयाज्वर जावै॥ ज्वरांकुश॥ हरिण के शिंगके टुकड़ेकरि ज्वालामुखी के रस में पीसि बर्त्तन में घालि चुल्हीपर मन्दअग्नि से २ पहर तक पकाइ पीछे अष्टमांश त्रिकुटा

मिलाय निष्कप्रमाण नागरपान के रसमें खाने से वात पित्तज्वर को व सवतरह के ज्वरोंको नाशै ॥ नवज्वरेभांकुश ॥ गन्धक सुहागा पारा मिरच इन्होंको मच्छी के पित्ता में तीन दिन तक भावना देइ पीछे ६ रत्ती तक खावै ऊपर तक्र चावल का पथ्य और बैंगन की भाजीलेवै इससे पसीना उपजि ज्वर शान्तहोवै ॥ अमृतकलानिधि ॥ मीठा तेलिया २ भाग कौड़ीभस्म ५ भाग मिरच ९ भाग इन्होंकी मूंगसमान गोली वनाय खानेसे ज्वर को व पित्त को व कफको व मन्दाग्निको हरै ॥ पंचामृतरस ॥ सोना भस्म १ भाग चांदीभस्म२ भाग तांबा भस्म ३ भाग शीशाभस्म ४ भाग लोह ५ भागइन्हों को मच्छ के पित्ता के रसमें भावना देइ पीछे ६ रत्ती रसको खांड़ अदरक रसके संग खानेसे सवप्रकार के ज्वर दूरहोवैं ॥ जीर्णज्वरां-कुश ॥ पाराभस्म अभ्रकभस्म शीशाभस्म तांबाभस्म कान्त लोह भस्म वैक्रान्तमणिभस्म शिंगरफ सुहागाखार गन्धक मीठातेलिया कूठ ये सव समानभाग लेइ पीछे इन्होंको त्रिकुटा त्रिफला नागर-मोथा भंगरा निर्गुण्डी इन्हों के रसों में अलग २ भावना तीनदिन तक देइ पीछे उड़दप्रमाण खानेसे जीर्णज्वरको व क्षयीको व खांसी को व त्रिदोषको व मन्दाग्निको व पाण्डुको व हलीमकको व गुल्म को व उदररोगोंको व अर्दितको व संग्रहणी शूल अरुचि इन्होंको हरै और कांति तेज वल पुष्टि वीर्य इनको वढ़ावै साध्यासाध्यको भी हरै ॥ पच्यमानज्वरलक्षण ॥ ज्वरकावेग अधिकहो तृषा ज्यादह लगै प्रलापहो श्वासहो भ्रमहो मलवँहै छर्दिआवै ये पच्यमान ज्वरके लक्षण हैं ॥ निरामज्वरलक्षण ॥ अल्पक्षुधाहो शरीरहलकाहो अल्पज्वरहो वातादिक की प्रवृत्ति अच्छीतरहहो चित्तप्रसन्नहो ये लक्षण निरामज्वर के हैं ॥ ग्रन्थांतरोक्तजीर्णज्वरनिदान ॥ जिसके २१ दिनकेपीछे शरीर में सूक्ष्महोकर ज्वररहै और भूख जातीरहै शरीर दुर्बल होजाय पेटमें तिल्लीहोजाय ये जीर्णज्वर के लक्षणहैं जीर्णज्वरवाला व्रत व लंघन कभीनकरै लंघनसे क्षीण नरहोजाता है और ज्वर बलवान् होवै है ॥ पुरानेज्वरमेंदोष ॥ अपथ्य करने से फिर कोपजाय तो पहिली तरह क्रियाकरै ॥ ज्वरक्षीणकोवांति

निषेध ॥ ज्वर क्षीणको बमन व रेचनहितनहीं इसरोगवालेको यथेच्छ दूधपानकरवावै वा निरूहण बास्तदेवै और शरीरसे परिश्रमकरने से व मलादि अमंगलरूप पदार्थ देखने व सेवन से गयाहुआ भी ज्वर फेरआजावै है ॥ बातजीर्णज्वर ॥ जीर्णज्वरमें ज्यादह पसीना आवै वा रुक्ष शरीरहो तो घृतकापान करवावै अथवा जीर्णज्वरोंमें दोषपका पीछे स्नेहवस्तिदेवै अथवा निरूहण वस्तिदेवै ॥ छिन्नादि काढ़ा ॥ गिलोयका काढ़ा पीपलिचूर्ण संयुक्त जीर्णज्वरको व कफ को नाशकहै अथवा पंचमूलका काढ़ा जीर्णज्वर व कफ इनको हरैहै ॥ त्रिकण्टकादिकाढ़ा ॥ कटैली शुंठ गिलोय इन्होंको काढ़ा पिपली चूर्णयुत जीर्णज्वर को व अरुचिको व कासको व शूलको व श्वासको व अग्निमन्दताको व अर्दितको व पीनसको व उर्द्धबिकार को हरै है ॥ गडूचीकाढ़ा ॥ गिलोय का काढ़ा चतुर्थांश शहदयुत पीवै जीर्णज्वर जावै ॥ द्राक्षादि ॥ दाख, गिलोय, कचूर, काकड़ासिङ्गी नागरमोथा, रक्तचंदन, शुंठि, कुटकी, पाढ़ा, चिरायता, धमासा, बाला धनियां, पद्माख, कालाबाला, कटैली, पोहकरमूल, निंब इन्होंका काढ़ा जीर्णज्वरको, अरुचि को, श्वासको, कासको, कंपको नाशै है ॥ शुंठिकाढ़ा ॥ शुंठि४तोला काढ़ाकरि शहदयुतदेवै यहकाढ़ाअरुचिको अग्निमन्दताको, पीनसको, श्वासको, कासको, उदररोग को हरै है और कांति, तेज और चित्तप्रसन्नता इनकोबढ़ावैहै ॥ कर्णादिकाढ़ा ॥ पिपली, महुवाफूल, मुनक्का, चिकणा, रक्तचन्दन, सारिवा इन्होंका काढ़ा क्षीणज्वरको हरैहै ॥ तिक्तादि ॥ कटुकी, पित्तपापड़ा, चिरायता नागरमोथा, गिलोय इन्होंकाकाढ़ा जीर्णज्वरको हरै है ॥ कलिंगादि काढ़ा ॥ इन्द्रयव, कुटकी, नागरमोथा, चिरायता, पिपलामूल, शुंठि राजकन्या, देवदारु इन्होंकाकाढ़ा पिपली चूर्णयुक्त जीर्णज्वरको व विषमज्वरों को हरै है ॥ द्राक्षादिचूर्ण ॥ मुनक्कादाख, गिलोय, शुंठि इन्होंका काढ़ा पिपली चूर्ण युत श्वासको व शूलको व कासको व अग्निमन्दताको व जीर्णज्वरको हरै है ॥ लवंगादिकाढ़ा ॥ लवंग पिपली, पिपलामूल, कटैली, चीता, चिरायता, नागरमोथा, त्राय-माण, भारंगी, देवदारु, बासा, ब्राह्मी, गजपिपली, दशमूल, इन्द्रयव

खदिरपर्णी, रास्ना, काकड़ासिंगी, शुंठि, वच इन्होंका काढ़ा तुलसी के रसमें दे तो ज्वरको व सूतिकारोग को व शीतरोगको व अरुचि को व भ्रमको व अग्निमन्दको व गुल्मको हरै है ॥ तालीसादिचूर्ण ॥ तालीसपत्र १ भाग, मिरच २ भाग, शुंठि ३ भाग, पिपली ४ भाग वंशलोचन ५ भाग, इलायची आधाभाग, दालचीनी आधाभाग, खांड ३२ तोले यहचूर्ण रोचनहै पाचनहै कास, श्वास, ज्वर इनकोहरै और छर्दि, दस्त, सोफ, आध्मान, तिल्ली, ग्रहणी, पांडु इनकोहरै व खांड़को पकाय चूर्ण मिलाय गोली बनाय बरतै ३२० ॥ त्रिफलादि चूर्ण ॥ त्रिफला, पिपली इन्होंका चूर्ण शहदयुत भेदनहै और अग्नि को दीप्तकरै है ॥ कटूफलादिचूर्ण ॥ कायफल, नागरमोथा, कुटकी कचूर, काकड़ासिंगी, पोहकरमूल इन्हों का काढ़ा शहदयुत वा अदरख का अर्कयुत जीर्णज्वरको व कास को व श्वासको व अरुचि को व वायु को व शूलको व छर्दिको व क्षय को हरै है ॥ त्रिवृत चूर्ण ॥ निशोत, पिपली, सारिवा, त्रिफला इन्हों का चूर्ण बराबर की खांड़युत भेदी है और कोष्ठ शूल, दाह, गौरव, ज्वर इनकोहरै है ॥ लवंगादिचूर्ण ॥ लवंग, जायफल, पिपली इन्हों का चूर्ण आधा तोला, मिरच २ तोला, शुंठि १६ तोले सबको मिला पीस बराबर की खांड़ युतकरि खावै यहचूर्ण ज्वर को व अरुचि को व प्रमेह को व श्वास को व गुल्म को व अग्नि मन्दको व संग्रहणीको हरै है ॥ पंचाजादि ॥ बकरीका मूत्र, मल, घृत, दूध, दही और गौका मूत्र, मल, दूध, दही, घृत और भेड़का दूध, दही, घृत, मूत्र, मल ये तीनोंजीवोंके पांच पदार्थमिले प्रत्येक प्रत्येक जीर्णज्वर को नाशै है ॥ लोधादिचूर्ण ॥ लोध, चन्दन, पिपलामूल, अतीश इन्हों का चूर्ण घृत, खांड़, शहदयुत खावै ऊपरसे दूधपीवै यह जीर्णज्वर को हरै है ॥ वर्द्धमानपिप्पलीयोग ॥ क्रमवृद्धि से पीपलि खावै फिर घटावै यथा प्रथम दिन में १ दूसरे दिन २ ऐसे दशादिनतक बढ़ावै फिर दश से घटावै ऐसे पिपली बार बार खावै एकहजार १००० तक खावै बलवान् को पिपली पिसीहुई खवावै और मध्य बलवान् को दूधसंग प्यावै शीतजाय हीन बलवालेको शहद संग चटावै कास

जीर्णज्वर, अरुचि, श्वास, हृद्रोग, पांडु, कृमि,मन्दाग्नि,विषमाग्नि उनको यह नाशै और पिपली, शहद व घृतकेसंग ज्वरको व श्वास को व कासको व हृद्रोगको व पांडु को व कामलाको व प्रदरको व प्रमेह को हरै है ॥ पिप्पली मोदक ॥ शहद एकभाग, घृत २ भाग पिपली ४ भाग, खांड़ ८ भाग, दूध ३२ भाग, चातुर्जात १ भाग शहद १ भाग इन्हों को पकाय मोदक बनावे यह मोदक धातुगत ज्वरों को व श्वास को व कास को व पांडुरोग को व धातुक्षय को व अग्निमन्दको हरै है ॥ मधुपिप्पलीयोग ॥ पिपली शहदयुत मेद कफ, श्वास, कास, ज्वर, पांडु, प्लीहा इनको हरै है ॥ दुग्धयोग ॥ कफक्षीण जीर्णज्वर दाह सहित में गौका दूध हित है ॥ पंचमूली क्षीर ॥ पंचमूल युत गौका दूध कास को व श्वास को व शिरशूल को व पसुली शूल को व पीनस को हरै है ॥ शितादिपेय ॥ मिश्री घृत,शुंठि, खजूरी, मुनक्का, दाख इन्होंसे सिद्धदूधसर्बज्वरकोहरैहै। अथवा बेलची, बेलफल, सांठी, दूध, जल, एकत्रकरि पकायबाकी रहा दूध सर्ब ज्वरोंको हरै है ॥ विल्वादिकाढ़ा ॥ बेलपत्र के पत्तों में सिद्ध किया दूध उत्पात ज्वरोंको हरैहै ॥ मधुकादि ॥ मुलहठी,अम-लतास, मुनक्का, दाख, कुटकी, धमासा, त्रिफला, कडूपरवल इन्हों का काढ़ा रेचक है और त्रिदोष ज्वर को नाश करै है ॥ अमृतादि हिम ॥ गिलोय को रात्रि में जल माहिं भिगोवे प्रभात मथ छान पानकरै और पथ्यसे रहै गिलोयका यह हिमत्रिदोषज्वरकोहरै है। इसमें कुछ संशय नहींहै ऐसे जानो ॥ गुडयोग ॥ पिपलामूल चूर्ण गुड़युतखावे बहुतदिनों की नष्ट निद्रा जलदीआवै ॥ वार्ताकभक्षण योग ॥ संध्यासमयमें बैंगनकाशाक पकाय प्रभातशहदयुत देवै नींद जलदी आवै ॥ गडूची स्वरस ॥ गिलोय के रस में पिपली, शहद मिलायपीवै इससेजीर्णज्वर,कफ,तिल्ली,कास,अरुचि येसबजावैं ॥ गुड़पिप्पलीयोग ॥ पिपली गुड़युत जीर्णज्वर को व अग्निमन्द को व शूल को व खांसी को व अरुचिको व अजीर्ण को व पांडुकोवकृमि को नाशैहै और पिपलीसंग गुड़ दूना तौललेवै ॥ वातकफज्वरावर ॥ जीर्णज्वरवात. कफसम्बन्धीमेंवातकफज्वरोक्तक्रियाकरै। औरजीर्ण-

ज्वर कफहीनमें दूध अमृत समान है और दूध नवीनज्वरमें विष समानहै। अथवा चन्दनादि तैलसे वा नारायण तैल से जीर्णज्वर जावै ॥ वर्द्धमानपिप्पली ॥ तीन तीन वृद्धि से वा पांच पांचवृद्धिसे व सात२ वृद्धिसे पिपली गौके दूधके संग लेवै पिसीहुई दशदिन तक फिर दशयें दिनसे घटावै ऐसेही इक्कीस दिन तक लेवै इसप्र- योगसे जीर्णज्वर नाशहोवै। और पांडु, कास, श्वास, अग्निमन्द कफाधिक्य येसब नाशहोवें ॥ नस्य ॥ शहदयुत वा तैलयुतज्वरहारी औषधकी नस्यदेवै इससे शरीरका भारीपन व शिरका भारीपन शूल, इन्द्रिय, आलस्य, जीर्णज्वर नाशहोवै और रुचिउपजै ॥ रक्त करवीरादिलेप ॥ लालकनेर का फूल, कूट, आंवला, धनियां, वाला इन्होंका लेप ज्वरमें शिरकी पीड़ा को हरैहै ॥ हिंग्वादिनस्य॥ पुराने घृतमें हिंग, सैंधवनिमक मिलाय नस्यदेवै ज्वरनाशहोवै ॥ जयंती मूलवंध॥ सफेद अरणीका मूल शिखा में वांधै क्षीणज्वरनाशहोवै दृष्टांत। जैसेदुष्टनर पापकरि आत्माकोनाशै तैसे ॥ वायसजंघावंध॥ काकजंघा का मूल वा काकमाची का मूल शिर में वांधै नींदआवै अथवा स्नूहीका मूल गुड़युत खावै नींदप्राप्तहोय ॥ मुक्तापंचामृत ॥ मोती १ भाग, मूंगा ४ भाग, उत्तमवंग २ भाग,शंख १ भाग,शीपी १ भाग, चिरायता १ भाग इन्होंको ईखके रसमें फिर गौकेदूधमें फिर विदारी रसमें फिर कुवारपट्ठा रस में फिर शतावरिके रस में फिर दर्भके रसमें फिर हंसपदीके रसमें ऐसे दोपहर तक खरलकरै फिर बन उपलों की पांच पुटमें फूंकदेवै ऐसे पंचामृतरस सिद्धहोवै है यह ४ रत्ती पिपलीसंग खावै ऊपर वनस्पति खानेवाली गौ का दूध पीवै तो जीर्णज्वर नाशहोवै और इस से सब रोग नाश हों अपने २ अनुपान से ॥ जीर्णज्वरांकुश॥ पाराभस्म, अभ्रक भस्म, शीशाभस्म, तांबाभस्म, लोहभस्म, वैक्रांतभस्म, हिंगल, सुहागा गन्धक, विषबचनाग, कूट ये सब बराबरले इन को शुंठि, मिरच पीपल इन्हों के रसमें खरलकरि भावना देवै फिर त्रिफला रसमें फिर नागरमोथा के रसमें फिर भृंगराजके रसमें फिर निर्गुण्डी के रसमें ऐसे तीनदिनतक खरलकरै यह रस उड़द समान तोलदेवै

इससे जीर्णज्वर, क्षयी, कास, मन्दाग्नि, पांडु, हलीमक, गुल्म उदर, आर्दितवायु, संग्रहणी, शूल सब प्रकार के आरोचक इतने रोग नाशहोवें । और यही कांति, तेज, बल, पुष्टि, वीर्य इन्हों को बढ़ावै और साध्यासाध्य रोग को भी हरै ॥ धातुज्वरांकुश ॥ लोह अभ्रक, तांबा, पारा, गन्धक, विष वचनाग, शुंठि, मिरच, पिपली त्रिफला, कोष्ट ये सब बराबर लेवै इन्होंको भृङ्के रससें फिर अद-रख के रसमें फिर निर्गुण्डी के रसमें ऐसेतीनदिन खरलकरै फिर इसकी मूंगसमान गोलीकरै यही गोली रोगनाशक अनुपान से सर्वरोगों को हरै और अजीर्ण, बात, कास इनको तो अवश्यही हरै औरयही दीपनीहै रुचिको उपजावै है और धातु गत ज्वरों को भी नाशै है ॥ कल्याणघृत ॥ तालीसपत्र, त्रिफला, इलायची, बाला, ख-ड़नाग, पृष्ठिपर्णी, पृथक्पर्णी, जमालगोटा, अनार, उत्तम चन्दन सफेद, हलदी, दारुहलदी, कडूवृन्दावन, कमलकन्द, जावित्री, कमल, पित्तपापड़ा, पद्माख,वायविडंग, मंजिष्ठ, कुष्ट कटैली, बारीक वेलची, सारिवा दोनों, तगर, लवंग इन्होंको चौगुने जलमें काढ़ा करै फिर काढ़ामें घृतगेरै पकाय घृतमात्र रहै तबउतारले यह घृत तृतीय ज्वरको व चातुर्थिक को व वातिकंप को व बंध्यादोषको व अपस्मारको व उदर रोगको व आमवात को व उन्मादको व जी-र्णज्वरको हरैहै अथवा शोषाधिकार में कहा चन्दनादि तैल जीर्णज्वर को हरैहै ॥ लाक्षादितैल ॥ लाखका रस २५६ तोले, तैल सेर १, दहीमस्तु ४ सेर, शतावरि १ तोला हलदी १ तोला मुल-हठी १ तोला रास्ना १ तोला असगन्ध १ तोला कटुकी तोला १ मूर्वा तोला १ पित्तपापड़ा तोला १ चन्दन तोला १ देवदारु तोला १ नागरमोथा तोला १ कोष्ट तोला १ ये सब मिलाय तैलको पकावै यह तैल विषमज्वरों को व पृष्ठअंगकी फूटनको व शूलको व दुर्ग-धिको व खाजको व भ्रमको व वातको हरैहै ॥ दूसरचन्दनादितैल ॥ चन्दन, बाला, रंजणीवृक्ष, चिकणा मुलहठी, शिलाजीत, पद्माख मंजिष्ठ, सरलवृक्ष, देवदारु, कचूर, इलायची, नागकेशर,तमालपत्र तैल, जटामासी, कंकोल, तगर, नागरमोथा, हलदी, दारुहलदी

सारिवा, चिरायता, लवंग, कुष्ट, केसर, दालचीनी, पित्तपापड़ा नलिका इन्होंका काढ़ा चौगुना मस्तु तेल इन्हों को एकत्र पकाय सिद्धकरै यह तेल ग्रहपीड़ा को हरै और बल वर्णको बढ़ावै। और अपस्मारको व क्षयको व उन्मादको व क्षतको व अलक्ष्मी को व गात्रस्फोटन को व दाहको व जीर्णज्वरको हरै ॥ हरीतकीपाक ॥ हरीतकी ६४ तोले जल सेर १० में पकावै फिर दशमूल २ प्रस्थ गेरै प्रस्थ १॥ यवगेरै और पिपलीमूल, चीतामूल, भारंगी, शंखाहूली, चिकणामूल, कचूर, शुंठि, अघाड़ा, नागरमोथा, पोहकरमूल गजपिपली ये प्रत्येक चार चार तोले गेरै यह पथ्यापाक भृगु जी को कहाहै यह जीर्णज्वर को हरै जलदी तुष्टि, पुष्टि, बल ये बढ़ावै और रसकोप, संग्रहणी, क्षीणधातु, अतीसार, गुदरोग, श्वास, कास वात, रक्त इन्होंको हरैहै॥ कौक्कुटघृत॥ तरुणकुक्कुट का शिर, पैर आंत वर्जित मांसका कषाय ४०० तोले और बड़ीकटैली, काकड़ासिंगी, बेरी, कुलित्थ, भारंगी, आमला, कचूर, पोहकरमूल, पंचमूल, बड़ारासभ ४०० तोला जल दो द्रोणभर में पकाय चतुर्थांश रहै तब कषाय को ग्रहणकरै और ७ गुणा दूध मिला फिर आढ़क भर घृतमिला सिद्धकरै फिर लघुपंचमूल मिलावै फिर घृतरहैपकनेमें तब उतारलेवै सुन्दर पात्र में घालै फिर बल दोष को विचार मात्रापीवै जीर्णघृत हुआ पीछे रक्तसाठी चावल पथ्यखावै यह घृत जीर्णज्वर को व श्वासको व कासको व क्षयी को व विषमज्वर को हरै और यह घृत लेखनहै व बलवर्ण, अग्नि इन्होंको बढ़ावैहै और बृंहणरूपहै और वीर्यको ज्यादा बढ़ावै है इसपै खटाई खावै नहीं॥ वासादिघृत ॥ बासा, गिलोय, त्रिफला, त्रायमाण, धमासा इन्हों का काढ़ा और दुगुना दूध और पिपली, नागरमोथा, मुनक्कादाख चन्दन, कमल, शुंठि इन्हों का कल्कमिला घृतको पकावै यह घृत जीर्णज्वरको हरै है ॥ पिप्पल्यादिघृत ॥ पिप्पली, चन्दन, नागरमोथा, बाला, कुटकी, इन्द्रयव, आँवला, सारिवा, अतीश, सालवण मुनक्कादाख, आँवलाबीज, त्रायमाण, कटैली इन्हों के काढ़ामें सिद्ध घृत जीर्णज्वर को व क्षयको व कासको व मस्तक शूल को व पसु-

ली शूल को व अरुचि को व अंगतप्तता को व मन्दाग्नि को व विष-
माग्नि को हरै है कोई वैद्यको मत यह है इस घृत को दूध में भी
पकावै ॥ क्षीरवृक्षादितैल ॥ पिपली, आसना, निम्ब, जामन, सांत-
वण, सांदड़ा, सिरसवृक्ष, खैर, सारिवा, गिलोय, बासा, कुटकी
पित्तपापड़ा, बाला, बच, मालकांगणी, नागरमोथा इन्हों का काढ़ा
वा कल्क में तेलको पकावै इसतैलको शरीर में मर्दन करै तत्काल
जीर्णज्वर नाश होवै ॥ सेवतीपाक ॥ सेवतीके फूल एकहज़ार, घृत
प्रस्थ तोलसें पकावै फिर घृतसे खांड़ ४ गुनी मिलावै फिर दाल-
चीनी ४ तोले, नागकेशर ४ तोले, तमालपत्र ४ तोले, इलायची ४
तोले, मुनक्कादाख २४ तोले, शहद ३२ तोले, गिलोयसत २ तोले
सबको मिला तय्यारकरे फिर मासे १० नित्यखावै यह जीर्णज्वर
को व क्षयी को व कास को व अग्निमन्दको व प्रमेह को व प्रदर
को व रक्तरोग को व कुष्ठ को व बवासीर को व दारुण नेत्ररोगको
व दारुण मुखरोग को हरै है ॥ पिप्पलीपाक ॥ पिपली ६४ तोले
दूध में पीसै फिर गऊका घृत १२८ तोले मिलावै इसको मंदाग्नि
से पकावै फिर दशसेर चौबीसतोले खांड़ मिलाय पाक पकावै फिर
शीतलहोनेपर दालचीनी, तमालपत्र, इलायची, नागकेशर इन्होंका
चूर्ण १२ तोले मिलावै इसकी मात्रा दोषधातु बल बिचारकरिखावै
यहपाक बलको व बीर्य को व तेजको बढ़ावै है और जीर्णज्वर को
व क्षतक्षीण को पुष्टकरै है और तृषा, अरुचि, श्वास, शोष, जिह्वा
रोग, कामला, हृद्रोग, पांडु, प्रदर, त्रिदोषजज्वर, बातरक्त, प्रति-
श्याय, आमबात इनको हरै है एकवर्षतक नित्य खानेसे जरा याने
बुढ़ापा जावै ॥ ज्वरमुक्तलक्षण ॥ इन्द्रिय प्रकाशमान हो, शरीर ह-
लका हो, ग्लानिहो, चित्तस्वस्थ हो व प्रसन्नहो और सर्वोपद्रव
की शांति हो यह ज्वर मुक्त के लक्षण हैं ॥ साध्यज्वरलक्षण ॥ अल्प
दोषन में बलवान् ज्वर हो और उपद्रव रहित हो ये साध्य ज्वर के
लक्षण हैं ॥ असाध्यज्वरलक्षण ॥ बहुत कारणों से बहु लक्षण ज्वर
होवै है यह मृत्युरूप जलदी इन्द्रियों को नाशकरैहै और ज्वरक्षीण
का व सूजावालाके ज्वर गम्भीररूप रात्रिमें बहुत देरतक रहै ऐसा

ज्वर प्राणनाशक होवै है और ज्वर केशोंका वेष सुंदर करै वह भी प्राणनाशक होवै है ॥ गम्भीरज्वरलक्षण ॥ जिस ज्वर में अन्तर्दाह हो, तृषा ज्यादहलगै, श्वास, कास, हो ये लक्षण गम्भीरज्वरके हैं असाध्यलक्षण ॥ जो ज्वर आरम्भ से विषम लक्षणवाला हो व जो ज्वर रात्रिमें बहुत देरतकरहै व क्षीण व रुक्ष मनुष्यको गम्भीरज्वर ये तीनोंज्वरअसाध्यहैं मनुष्यनको मारदेतेहैं ४२५ ॥ दूसराप्रकार ॥ कान के समीपमें पसीना ज्यादा आवै और सम्पूर्णगात्र चिकटहो और शरीर शीतलहो तब अवश्य मरै ॥ तीसराप्रकार ॥ जो ज्वरमें विकलहो व मूर्च्छा आवै व ज्यादा सोवै व बल रहैनहीं ऊपरजाड़ा लगै भीतर दाहहो तौ मृत्यु होवै ॥ चौथा प्रकार ॥ जिसके माथे पै पसीना आवै व ठंढाहो माथा, व शरीरकीनसें शिथिलहोजायँ उठताहुआ भी मोहको प्राप्तहो ऐसा स्थूलभी हो तौ दैवयोगसे जीवै पांचवां प्रकार ॥ जिसके रोम खड़े हुये हों और नेत्र लाल हों और हृदयमें ज्यादा शूलचलै और मुखमें श्वास ज्यादहहो ऐसामनुष्य अवश्य मरै ॥ अन्यअसाध्य लक्षण ॥ जो पुरुष स्वप्नमें प्रेतोंके संग मदिरा पीवै व जिसको स्वप्नमें कुत्तेसतावें वह मनुष्य घोर ज्वरको प्राप्तहो जल्दी मरै अथवा जिसको प्रभात समय में ज्वरहो और दारुण सूखी खांसी हो और बल, मांस शरीर में रहै नहीं ऐसा मनुष्य जल्दी मरै और जिसको तीसरे पहरकेवक्त ज्वरहो और कफ सहित दारुण कासहो और बल,मांस शरीरमें रहैनहीं ऐसामनुष्य मरै और जिस को ज्वरमें आपही दाह हो, तृषा ज्यादा लगै व मूर्च्छाहो व बल रहे नहीं और संधि टूटीसी दीखै ऐसारोगी जल्दी मरै और जिसको गो दुहनकालमें पीड़ा हो और पसीना ज्यादा आवै और लेप ज्वर हो ऐसा रोगी जल्दी मरै और जिसके मस्तक पै पसीना आवै और मस्तक ठंढा हो और शील ज्वर आया करै और शरीर चिकटहो और कंठ पै स्थित पसीना छातीपर आवै नहीं ऐसारोगी निश्चयमरै और जिसको चिक्कणपसीना बहुतज्यादा आवै और शरीर शीतलहो ऐसा रोगी निश्चय मरै ॥ दूसराप्रकार ॥ हुचकी श्वास, तृषा, इन्हों करि युक्तहो और भ्रम युतहो और नेत्रभी भया-

नकहों और निरंतर श्वास चलै और बलहीनहो ऐसा रोगीनिश्चय मरे॥ असाध्यज्वरलक्षण॥ जिसकी इन्द्रियां नाशहोजायँ इन्द्रियों की तेजी जातीरहै और शरीर कृश होजाय और अरुचि हो और ज्वर का बेग गंभीर व तीक्ष्ण हो ऐसे लक्षण वालेका इलाज बैद्य करै नहीं॥ ज्वरमोक्षपूर्बरूप॥ दाह, स्वेद, भ्रम, तृषा, कंप, बिड्भेद, मूर्च्छा ज्यादा होवै और ज्यादा दुर्गंध युत हो ये लक्षण ज्वरमोक्ष पूर्ब के हैं॥ ज्वरमुक्तलक्षण॥ शरीर हलका हो, मस्तक में खाज चलै और ओष्ठमें पड़पड़ी पड़े और सबइन्द्रियां अपने अपने बिषयोंकोग्रहण करने लगैं और शरीरकी सब ब्यथा जाती रहै और सब शरीर में पसीना आवै भूख लगै, छींक आवै मल की प्रवृत्ति हो ये लक्षण ज्वर मुक्तके हैं॥ मधुरज्वरलक्षण॥ ज्वर, दाह, भ्रम, मोह, अतीसार छर्दि, तृषा, निद्रानाश, मुखलाल, तालू जीभ शोषणहो और बगलमें सिरसों समान फुनसी निकसै ये मधुर ज्वरके लक्षण हैं यह ज्वर घृत पानसे अथवा स्वेदके रोकनेसे उपजै है॥ सुरसादियोग॥ तुलसी गोमयरस, जीरा, मरीमाखी, सावरसिंग, रक्तचन्दन, स्याहजीरा, बाला चिरायता, इन्द्रयव, गिलोय, इलायची, कमलाक्ष इन्हों को पीस पीवै मधुर ज्वरनाशहोवै॥ मुस्तादि॥ नागरमोथा, पित्तपापड़ा, मुलैठी मुनक्का, दाख इन्होंकाकाढ़ा अष्टमांश बाकीरहा शहतयुतपीवै यहपित्त भ्रमको व ज्वरको व दाहको व छर्दिको व मधुर ज्वरको हरै अथवा माखीकी बीट, सपेद ईख जड़, कपूर, कौड़ी, शङ्ख, तुलसीकी मंजरी बड़केपान ये सब बराबर ले काढ़ा करै अष्टमांश बाकीरक्खे तबपीवै यह मधुर ज्वर को हरै॥ चन्दनादि॥ रक्तचन्दन, बाला, धनिया कालाबाला, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, शुंठि इन्होंका काढ़ा मधुर ज्वर को हरै॥ मक्षिकादियोग॥ माखी गुड़ संयुक्त मधुरज्वर को व भ्रम को व मोह को व अतीसार को जल्दी नाशै॥ कृष्णमधुरलक्षण॥ ज्वर हो, नेत्रों में मोहहो, दन्तकाले होजायँ, व ओष्ठ काले होजावैं और जीभ, कंठ, मुख, नाक, ये सबलालहों और नेत्र चित्र बर्णहो और कंठमें मोती माला समान फुनसियों की माला पहिनी जायँ सातवेंदिन और इक्कीसदिन तक सिरसों समान फुनसी सब

शरीर में होजावैं ये लक्षण कृष्ण मधुर ज्वर के हैं ॥ सहस्रवेधपाषाणादियोग ॥ हिंग, पाषाण, कछुवा की खोपरी, बड़ी इलायची तुलसीकेपत्ते, गोला, आंवकी गुठली, खसखस, इन्हों को गोमयरस में पीसप्यावे इससे कृष्ण मधुर ज्वरजावे ॥ भूनिंबादिकाढ़ा ॥ चिरायता, अतीस, लोध्र, नागरमोथा, इन्द्रयव, गिलोय, वाला, धनियां बेलफल इन्होंका काढ़ा शहद संयुक्त विड्भेद को व श्वास को व कास को व रक्तपित्त को हरै है ॥ वासादिकाढ़ा ॥ वासा, दाख, हरीतकी इन्हों का काढ़ा शहत खांड़युत रक्तपित्त को व श्वास को व कास को व ज्वर को हरै है ॥ मधुकादिकाढ़ा ॥ मुलहठी, दालचीनी कुष्ठ, नीलेकमल, रक्तचन्दन, बच, त्रिफला, सादड़ा, वासा, मुनक्का दाख, सिरसवृक्ष, पद्माख, मूर्वा, भारंगमूल इन्हों का काढ़ा शहदयुत दाहको, व मूर्च्छा को, व तृषाको, व भ्रमको, व रक्तपित्त को हरै ॥ दुर्जलज्वरीकोपटोलादिकाढ़ा ॥ कडूपरवल, नागरमोथा, गिलोय, वासा, शुंठि, धनियां, चिरायता, कुटकी इन्हों का काढ़ा शहदयुत दुर्जल जनित ज्वर को हरैहै ॥ चिरायतादिचूर्ण ॥ चिरायता निसोत, वाला, पिपली, वायविडंग, शुंठि, कुटकी इन्हों का चूर्ण शहदयुत दुर्जलज्वर को हरैहै ॥ हरीतक्यादिचूर्ण ॥ हरीतकी, निम्बपात, शुंठि, सैंधव, लवण, चीता इन्हों का चूर्ण दुर्जलज्वरको नाशै है ॥ शुंठ्यादिकल्क ॥ भोजनके आदिमें शुंठि, राई, हरड़ इन्होंकेकल्क को खावै यह कल्क नानाप्रकार के देशों के जलको सहै है ॥ आर्द्रकादि चूर्ण ॥ अदरक, जवाखार इन्होंकाचूर्ण नानाप्रकारके देशों के जलोंकोसहैहै इसको गरमजलसंगलेवै ॥ दुर्जलजेतारस ॥ बचनागविष २ भाग, कौड़ीभस्म ५ भाग, मिरच ६ भाग इन्होंकाचूर्ण वस्त्रसे छानि अदरखरस में खरल करै फिर मूंग समान गोली बांधै फिर जल के संग दो २ गोली प्रभात व सायंकाल भक्षण करै यह रस ज्वर को व दुर्जल को व अजीर्ण को व आध्मान को व विष्टम्भको व शूल को व श्वास को व कासको हरै है ॥ ज्ञानोदयरस ॥ इन्द्रयव १६ भाग, पित्तपापड़ा ४ भाग, जायफल ६ भाग, सफेदएरण्डमूल १ भाग इनसब के समान खांड़ मिलावै फिर नित्यखावै दुर्जलदो

ष मिटै॥ हरिद्रकब्लक्षयोग॥ हल्दी, जवाखार इन्होंको गरमजल से लेवै यह अनेकदेशों के जलों के दोष को हरै॥ मद्योद्भवज्वर॥ मदिरा का अजीर्ण को बिचारि खांड़युत जलपी के बमन करै व पित्तज्वर की चिकित्सा करै और इसज्वर की आदि में लंघन करै नहीं जिसको अपथ्यसे फिर ज्वर आजावै तिसको आदिमें लंघन करावै और जिसके उदरमें मलहो और अपथ्यसे ज्वर आजावै तिसे रेचनदेवै तो आराम होवै॥ किरातादिकाढ़ा॥ कुटकी, चिरायता, नागरमोथा, पित्तपापड़ा, गिलोय इन्हों का काढ़ा पुनर्ज्वर को हरै॥ तिक्तादिकाढ़ा॥ कुटकी, बाला, चिकणा, धनियां, पित्तपापड़ा नागरमोथा इन्हों का काढ़ा पुनर्ज्वर को हरै॥ अपथ्यजज्वरलक्षण॥ अपथ्यजज्वरमें व मध्यजज्वर में प्रधान पित्त रहै है और दाह, शीत शिरमें शूल, उदरवृद्धि, अतीसार, मल बद्धता, कंडू ये सबहों अपथ्यजज्वर में॥ कटुक्यादि॥ कुटकी, पिपलामूल, नागरमोथा, हर्र अमलतास इन्हों का काढ़ा सर्व ज्वरों को हरै है॥ आमलक्यादि चूर्ण॥आमला, चीता, हर्र, सैंधव निमक, पिपली इन्हों का चूर्ण सर्वज्वरों को हरै है और यह भेदी है, रुचि करै है, कफको जीतै है दीपन है, पाचन है॥ गुडूच्यादिकाढ़ा॥ गिलोय, धनियां, निम्बछाल, पद्माख, रक्तचन्दन इन्हों का काढ़ा सर्वज्वरों को व दाहको व लालपड़ती को व तृषा को व छर्दि को हरै है और रुचिकारक है॥ क्षुद्रादि॥ कटैली, चिरायता, शुंठि, गिलोय, एरण्डमूल इन्हों का काढ़ा आठप्रकार के ज्वरको हरै है॥ नागरादि॥ शुंठि, देवदारु धनियां, दोनोंकटैली, इन्हों का पाचनज्वरको हरै है और पिप्पल वृक्ष के पूजन से व हवन से व मन्त्रजप से व महादेव पूजन से व ब्राह्मण, गुरू पूजन से, व बिष्णुसहस्रनाम पाठ से, मणिधारणसे व दान से, व तपस्वी के आशीर्बाद से इनकर्तव्योंसे आठप्रकार के ज्वरोंका बेग नाश होवै है अथवा समुद्र के उत्तरतीर में द्विविद नाम बानर है उसके स्मरण करने से ज्वरनाशहोवै है॥ बेलाज्वर॥ शोकसे व क्रोध से व अजीर्ण से व संतापसे व बलहानि से अन्तकाल में भयङ्कर ज्वर उपजै है॥ मूलिबन्धन॥ नीलीकाजड़ सर्व

ज्वरों को हरै है व दूधीकी जड़ कानपै बांधै वेलाज्वर को हरै है॥ पिप्पलीचूर्ण॥ पिप्पली का चूर्ण शहद में मिलाय चाटै कास ज्वर हुचकी, श्वास इनको हरै और कंठको शुद्धकरै और प्लीहाको नाशै और बालकों को हित है॥ धान्यादिचूर्ण॥ धनियां, लवङ्ग, निसोत शुंठि इन्होंका चूर्ण गरमजल से खावै तरुणज्वर नाश होवै और इन्हों का काढ़ा अग्निमन्द को व श्वास को व विषम अजीर्ण को वात इनको हरै है॥ गोरोचनादिचूर्ण॥ गोरोचन, मिरच, रास्ना कुष्ठ, पिपली इन्हों का चूर्ण गरमजलसे लेवै सर्वज्वर नाशहोवै॥ सितोपलादिचूर्ण॥ मिश्री १६ तोले, बंशलोचन ८ तोले, पिपली ४ तोले, इलायची २ तोले, दालचीनी १ तोले इन्होंका चूर्ण घृत शहद युत खावै यह कास को व श्वास को व क्षयी को व हस्त पाद, अंग इन्हों की दाह को व मन्दाग्नि को व जीभजकड़ना को व सुप्तजिह्वा को व पशुली शूलको व अरुचिको व ज्वरको व ऊर्ध्व- गत रक्तविकार को व पित्तको नाशै॥ भारंग्यादिचूर्ण॥ भारंगी, का- कड़ाशृंगी, चवक, तालीसपत्र, मिरच, पिपलामूल, ये प्रत्येक आठ आठ तोले, शुंठि २४ तोले, पिपली ४ तोले, गजपिपली ४ तोले इलायची १ तोले, नागकेसर १ तोले, दालचीनी १ तोले, तमाल पत्र १ तोले, बाला १ तोले, मिश्री ४ तोले यहचूर्ण अष्टविधज्वर को व कास को व श्वास को व सोजा को व शूलको व उदर रोग का व आध्मान को व त्रिदोष को हरै है॥ अनन्तादिचूर्ण॥ धमासा बाला, नागरमोथा, शुंठि, कुटकी इन्होंकाचूर्ण १ तोला सुखोष्णजलके सङ्ग सूर्योदयसे पहिले खावै यह सर्ब ज्वरों को व मन्दाग्नि को हरै॥ भेडोक्तसुदर्शनचूर्ण॥ तालीसपत्र, त्रिफला, बारीक इलायची त्रिकुटा, त्रायमाण, निसोत, मूर्बा, पिपलामूल, हल्दी, दारुहल्दी कचूर, चिकणामूल, कोष्ट, कटेली दोनों, नागरमोथा, पित्तपापड़ा निंब, पोहकरमूल, भारंगी, अजमान, बाला, चवक, चित्ता, सपेद कमलकन्द, तगर, काला बाला, बायबिड़ंग, बच, धमासा, कुड़ा- छाल, गिलोय, इन्द्रयव, देवदारु, पीतबाला, सेंबाबीज, करूपरवल, कुटकी, पद्माख, तमालपत्र, अतीस, काकोली, मुलहठी, केसर, वंश-

लोचन, लवंग, पिठवण, दगड़फूल, सालवण, सूखीआंबकी गुठली इनको बराबरले इनसबसे आधाचिरायता, सबको मिला चूर्णकरै यह सुदर्शन चूर्ण ज्वरको, द्वंद्वज्वरको, त्रिदोषज्वरको, विषमज्वर वातज्वर, पित्तज्वर, कफज्वर, धातुज्वर, अभिघातज्वर, सामज्वर मानसज्वर, दाहज्वर, शीतज्वर, तृतीयकज्वर, चातुर्थिकज्वर, विपर्य्यज्वर, एकाहिकज्वर, द्व्याहिकज्वर, सन्निपातज्वर, पक्षज्वर, मासज्वर, तृषा, दाह, मोह, भ्रम, दैन्य, तन्द्रा, श्वास, कास, अरुचि, पाण्डु, हलीमक, कामला पशुलीशूल, पृष्ठशूल, जानु शूल, स्त्री का रजोदोष, वात, पित्त, शिरोग्रह, नानाप्रकारके देश, जलजदोष, त्रिकशूल, सम्पूर्ण वातबिकार, दूषीविषजाविकार इनरोगोंको सुदर्शनचूर्ण गरमजलसङ्गहरैहै जैसेसुदर्शनचक्र दैत्योंकोनाशै तैसे ॥सुदर्शनचूर्ण॥ त्रिफला, हल्दी, दारुहल्दी, दोनोंकटैली, कचूर, शुंठि, मिरच, पिपली, पिपलामूल, मूर्बा, धमासा, कटुकी, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, में हदी बीज, बाला, निम्ब, पोहकरमूल, मुलेठी, कूड़ा, अजमान, इन्द्रयव, भारङ्गी, सेंबाबीज, त्रुटी, बच, दालचीनी, पद्माख, कालाबाला, चन्दन अतीसचिकणी, शालिपर्णी, पृथक्पर्णी, बायबिड़ङ्ग, तगर, चीता, देवदारु, चवक, करूपरवल, पान, जीवक, ऋषभ, दोनोंके अभावमेंभूमि आँवला, लवङ्ग, वंशलोचन, सफेद कमल, काकोली, मुलहठी, तमालपत्र, जावित्री, तालीसपत्र, येसब बराबरले सबसे आधाचिरायता इनका चूर्णकरै यह सुदर्शन चूर्ण वातज्वर, पित्तज्वर, कफज्वर द्वंद्वज्वर, त्रिदोषज्वर, विषमज्वर, आगंतुकज्वर, धातुज्वर, सन्निपात ज्वर, पीनस ज्वर, एकाहिकादि ज्वर, मोह, तन्द्रा, भ्रम, तृषा, श्वास, कास, पाण्डु, शीतज्वर, कामला, त्रिकशूल, कटिशूल, जानुशूल, पशुली शूल, इनरोगोंको यह सुदर्शनचूर्ण शीतल जलकेसङ्ग सब रोगोंको नाशकरैहै दृष्टांत जैसे सुदर्शन चक्र सबको नाशैहै तैसे यह चूर्ण है ५२५ ॥ लघुसुदर्शनचूर्ण ॥ गिलोय, पिपली, पिपलामूल, कटुकी, हर्र, शुंठि लवङ्ग, निंब, दालचीनी, चन्दन, इन सबसे आधाचिरायता इन्होंका चूर्ण यह लघु सुदर्शन चूर्णहै सर्वज्वरोंको हरै इसमें संशय नहीं ॥ आमलक्यादिचूर्ण ॥ आंवला, हर्र, सैंधव, चीता, पिपली

इन्होंका चूर्ण जीर्ण ज्वरको व अग्निमन्दको व मलवद्धताको नाशै है ॥ केसरादि ॥ विजौराकीकेसर,शहत,सैंधवनिमकयुत जीभरोगको व तालु,गल,शोषकोहरै मस्तकपर लेपै॥ विदार्यादि॥ बिदारी,अनार लोध, कवट, बिजौरा, इन्होंकालेप मस्तकके ऊपरकरै तृषा,व दाह नाशहोवै ॥ ज्वरघ्नीगुटिका ॥ शुद्धपारा १ भाग इलायची ४ तोला राल लोन तो०४ पिपली तोला ४ हर्र ४तोला अकरकरा ४ तोला गन्धक कटुतैलमेंशुद्ध४तोला इन्द्रवारुणी यानेगडूंभा४तोला इन्हों का चूर्ण गडूंभाके रसमेंकरै १मासाकी गोलीबांधै फिर गोली गिलोय के रससङ्ग लेवै सर्व ज्वर नाशहोवै॥ वलादिघृत ॥ चिकणा, गोखुरू कटैली, पृष्ठिपर्णी, धवकेफूल, निंब, पित्तपापड़ा,नागरमोथा, त्राय-माण, धमासा, इन्होंके काढ़ामेंभूमिआमला, कचूर, मुनक्का,पोहकर-मूल, मैदा, आंवला इन्होंका कल्क मिलाय फिर ६४ तोले घृत ६४ तोले दूध, इन सबको मिला घृतको सिद्धकरै यह घृत ज्वरको व क्षयीको व कासको व शिरशूलको व पशुली शूलकोहरैहै॥ मंजि-ष्ठाद्यघृत ॥ मंजीठ, अतीस,हर्र, वच,शुंठि,कटुकी,देवदारु,हल्दी सब चार तोले इन्होंका काढ़ा करि फिर औषध गेरै शुंठि, पिपली,हिंग जवाखार,साजीखार,कटुपंचक, इन्होंका कल्क मिलावै १ तोलाएक फिर ६४ तोला घत्त मिलावै ऐसे घृतको सिद्धकरै यह घृत कफज्वर को व अण्डवृद्धि व हुचकीको व अरुचिको व श्वासको व पाण्डुको व मलबद्धताको व प्रमेहको व बवासीरको व प्लीहको व अपस्मार को व क्षय व उदावर्त्तको व मन्दाग्निको व कृमिको व कुष्ठको नाशैहै ॥ कु-लित्थादिघृत ॥ कुलथी, बेरी, हरीतकी, बहेड़ा, आंवला, दशमूल, यव इन्होंका काढ़ा १६३८४ तोले जलमें बनावै फिर पंचकोल, सातवण आंवला, हींग, तुंबरु, कचूर, पोहकरमूल, आकजड़, अतीस, वच चिरायता, नागरमोथा, काकड़ाशृंगी, धमासा, करंज, पाडल काष्ठ पादुल, कटुकी,कटैली, परवल, निम्ब, पाथरी,कासिबदा, मदनफल जटामासी ये सबको प्रत्येक एकएक तोला,सब लवण४तोले,जवा-खार १ तोला,सज्जीखार १ तोला,घृत६४तोला,इनसबको मिलाय सिद्धकरै यह घृत कफ व बातको व गृध्रसी वायु व संग्रहणीको व

गुल्मको व श्वासको व कासको व बवासीर को हरै है औरदीर्घज्वर वालोंको अमृत समानहै॥ अमृतादिघृत ॥ गिलोय, हरीतकी, बहेड़ा आंवला, परवल, धमासा, इन्हों में पकाया घृत विषमज्वर को व क्षयीको व गुल्मको व अरुचिको व कामलाको हरै है ॥ गुडूच्यादि-घृत ॥ गिलोयके रसमें सिद्ध घृत व त्रिफलाके रसमें सिद्धकियाघृत व मुनक्कादाखकेरसमेंसिद्धकिया घृत व चिकणाके रसमेंसिद्ध किया घृत ये सब घृत ज्वरको हरै हैं ॥ पंचतिक्तघृत ॥ बसा, निम्ब, गिलोय कटैली, परवल इन्होंके कल्कके बराबर घृत सिद्धकिया विषमज्वर पाण्डु, कुष्ठ, विसर्प, मूलव्याधि, अर्श, कृमिइन्होंकोहरैहै ॥ अमृतादि२ ॥ गिलोय, त्रिफला, परवल, धमासा इन्होंका काढ़ा सैंधव निमक ४ तोला दूध २५६ तोला घृत६४तोलाऐसे घृतकोसिद्धकरैइसघृतमें दूध ४ गुणागेर पकावै यहघृत विषमज्वरको व प्लीहाको व अरुचि को व मन्दाग्नि को नाशै है यह घृत परमोत्तम है ऐसे जानना ॥ महाषट्पलघृत ॥ करंज, चीता, शुंठि, मिरच, पिपली, पिपलामूल चवक, लवण, जीरा, स्याहजीरा, सोराखार, जवाखार, बिड़लोन हिंग, शेरणी, सैंधव, लवण, अदरखरस, घृत सबको मिलाय घृतको सिद्धकरै यह षट्पल घृत अरुचि को व अग्निमन्द कोव प्लीहाको व ज्वर को व श्वास को हरै है ॥ प्रकार२ ॥ पिपली, पिपलामूल चवक, चीता, शुंठि, सैंधव नमक ये सब चार चार तोले इसबसे चौगुणे जल में काढ़ाकरै फिर काढ़ासे चौगुणा दूध फिर ६४ तोले घृत मिलाय सिद्धकरै यह घृत प्लीहको व विषमज्वरको व मन्दाग्नि को व अरुचि को हरै ॥ लघुलाक्षादितैल ॥ लाख, मजीठ, हल्दी इन्हों का कल्क तिल तैल छहगुणा कांजी के जल में सिद्धकरै यह तैल दाहको व शीतज्वरको हरै है ॥ लाक्षादितैल ॥ लाख १० तोला मंजीठ ८ तोला चन्दन ४ तोला रक्तचन्दन ४ तोला दालचीनी ४ तोला तमालपत्र ४ तोला एकांगीमुरा ४ तोला नागरमोथा ४ तोला चिरायता २ तोला निसोत २ तोला शुंठि २ तोला गिलोय २ तोला पिपली २ तोला पित्तपापड़ा २ तोला कटैली २ तोला बायबिड़ंग २ तोला शुंठि २ तोला आमला २ तोला बासा २ तोला हल्दी २

तोला वारुणी २ तोला निर्गुण्डी २ तोला इन्होंका कल्कतय्यारकरि ६०० तोले गौकादूध ४०० तोले तिलका तैल सबको मन्दाग्निसे पकावै यह तैल सर्व्वज्वरोंको नाशै और बल, वीर्य, पुष्टि इन्होंको पैदाकरै और इसके मर्दनसे श्रम, भ्रम जावै और कान्तिको बढ़ावै और अस्थिपीड़ाको नाशै और नींद को प्राप्तकरै॥ मध्यमलाक्षादि तैल॥ तैल६४तोले इससे चारगुणा लाखकाकाढ़ा फिर नागरमोथा १ तोला कुष्ठ १ तोला मुलहठी १ तोला दारुहल्दी १ तोला भद्रमोथा १ तोला मूर्व्वा १ तोला कुटकी १ तोला बड़ीसोप १ तोला रेणुकबीज १ तोला चन्दन १ तोला रास्ना १ तोला इन्होंका कल्क काढ़ा में मिलायतैलकोसिद्धकरै यहतैल अभ्यंगसे जीर्णज्वर,विषम ज्वर, राजयक्ष्मा, गर्भिणीरोग, बालकरोग सब जावैं॥ षट्तकतैल॥ लाख, हलदी, कुष्ठ, शुंठ, मंजीठ, सज्जीखार, मोरबेल, चन्दनइन्हों का काढ़ा तैल, छहगुणादूध सबको मिलाय तैलकोसिद्धकरैयहतैल शीतको व दाहको नाशै॥ स्वर्जिकाद्यतैल॥ सज्जीखार, कूठ, मजीठ लाख, मूर्व्वा,अतीश,शुंठ इन्होंका काढ़ा दूध, तैल सबको मिलाय तैलको सिद्धकरै यह दाह को व शीतज्वर को हरैहै॥ बलादितैल॥ चिकणामूलमुलहठी, मजीठ, पद्माख, एरंडमूल,चन्दन, समुद्रझाग हलदी, गेरू,कमलकंद इन्होंका कल्क, दूध मस्तु, चौगुनाजल, तैल सबको मिलाय तैलको सिद्ध करै यह तैल अंगों में मलने से बात पित्तज्वरको व जीर्ण ज्वरको नाशैहै॥ पटोलादितैल॥ परवल, निम्ब गिलोय, आँवला, मैनफल इन्होंका काढ़ामें तैल को सिद्ध करै यह तैल पिचकारी से गुदामें प्रवेश किया ज्वर को हरै है॥ चन्दनादि॥ चन्दन, कोष्ट,सिवणी, महुवाफूल,अगर इन्होंका काढ़ामें सिद्धकिया तैल पिचकारीसे गुदामेंदिया सर्व्वज्वरोंको हरैहै॥ पटोलादि॥ पड़वल मैनफल, निंब, गिलोय, महुवाके फूल, गोखुरू, खैर, काकड़ासिंगी महुवा,रिठा,बासा,असगंधयेएकएकतोलेसबतैल २५६ तोलेसबको मिलाय पकावै यहतैल पिचकारीसे गुदामें प्रवेशकिया सम्पूर्ण ज्वरों को व बात बिकारोंको हरैहै॥ आरग्वधादिनिरूहवस्ति॥ अमलतास बाला, मैनफल, चारप्रकारकी पर्णी, मधुकाठ इन्होंका काढ़ानिरूह

बस्तिदेवै ज्वरनाशहोय अथवा मालकांगनी, मैनफल, नागरमोथा मुलहठी, शतावरि इन्होंका कल्क घृत गुड़ युत व शहत युत बस्ति देवै तो ज्वर नाशहोवै ॥ तैलपाकविधि ॥ घृत, तेल, गुड़ ये सब एक दिनमें सिद्ध न करै और आपसमें १ दिन बीचमें दियाकरै तो गुण देवै है जब स्नेह कल्क अंगुलीमें वर्त्तमान होजावे और अग्निमें गेरें शब्द करेनहीं तबतो सिद्ध होवे है और नस्यमें स्नेहका कोमलपाक करै और मालिशमें तीक्ष्ण पाक तेलकाकरै और अभ्यंगमें मध्यपाक तेलकाकरै जो पाकतेलका अंगुलीसे ग्रहणकरै बिखरजाय वह खर पाकहोवैहै अभ्यंगमें खरहितहै, नस्यमें मृदुहितहै, पिचकारीमें गुदा वास्तव पानमें मध्यम हितहै परन्तु द्रव्य पाक मृदुकरै, खरनहीं खर पाक मस्तकपर मलनेसे बिकार पैदाकरै है ॥ चन्दनबलातैल ॥ चन्दन ६४बला ६४ तोला लाख ६४ तोला बाला ६४ तोला इनको १०२४ तोले जलमें पकावे जब चतुर्थांशरहै तब तेल तिलोंका तो० १२८गेरै फिर चन्दन, बाला, महुवाफूल, शतावरि, कुटकी, देवदारु, हलदी कूट, मंजीठ, अगर, कालाबाला, असगंध, चिकणा दारुहलदी, मूर्वा नागरमोथा, वेलचीही, दालचीनी, नागकेसर, रास्ना, लाख, निर्गुण्डी चांफा, शिलाजीत, सारिवा, लवण, सैंधवलवण येसबभाग कल्क करै दूध २५६। सबको मिलाय तेलको सिद्धकरै यह तेल अभ्यंग से सात धातों को बढ़ावे है और कास, श्वास, क्षयी, छर्दि, प्रदर रक्त पित्त, कफ, दाह, कंडू, फुनसी, शिररोग, नेत्रदाह, अंगदाह, वातक्षय, प्रमेह इनको हरैहै और बाल, वृद्ध, तरुणको भी श्रेष्ठ है। और पांडु, कामला, सोजा, सर्बज्वर इनको भी हरै ॥ अश्वगंधादितैल ॥ असगंध ६४ तोला चिकणा ६४ तोला लाख ६४ तोला और १०२४ तोला जल का काढ़ा चतुर्थांश रहै तब १९२ तोले तेल मिलावे और काढ़ा से चौगुणा दही का जल, फिर असगंध मैनशिल, देवदारु, रेणुकबीज, कोष्ठ, नागरमोथा, चन्दन, हलदी कुटकी, शतावरि, लाख, मूर्वा, मंजीठ, महुवाफूल, बाला, सरिवा इन्होंका कल्क मिला तेल को सिद्धकरै यह तेल सब ज्वरों को हरै और सब धातों को बढ़ावै। और मालिश से क्षय रोग को हरै ॥

बृहल्लाक्षादितैल॥ लाख काढ़ा ६४ तोला दूध ६४ तोला फिर लोध ४ तोला कायफल ४ तोला मंजीठ ४ तोला नागरमोथा ४ तोला केसर ४ तोला पद्माख ४ तोला चन्दन४ तोला बाला४तोला मुलेठी ४ तोला इन्हों का कल्क। तेल सब को मिलाय तेल को सिद्धकरै यहतेल दंतरोगको व सर्बज्वरों को नाशैहै और बलपुष्टि बढ़ावै है ॥ पंचममहालाक्षादितैल ॥ लाख, हलदी, मंजीठ, बेरी मुलेठी, चिकणा, बाला, चन्दन, चंपक, नीलकमल ये प्रत्येक चौबीस चौबीस तोला इन सबसे चौगुना जल चतुर्थांश रहै तब रेणुकबीज, पद्माख, असगंध, वेतस,कूट, देवदारु, नख, दालचीनी, बड़ीशोय, कमल, जटामासी, मुलेठी ये सब एक एक तोला इन्होंका कल्क पूर्बोक्त काढ़ा में मिला मस्तु ५५६ तोला कांजी ५५६ तोला दूध ५५६। तोला तैल ६४ तोला सबको मिला तेल को सिद्धकरै यह तेल दाहको व वायुको व कफको व सर्ब ज्वरों को व ग्रह पीड़ा को व राक्षस पीड़ाको व बालकोंके रोगों को हरै है इसमें संशय नहीं ॥ निरूहवस्तिद्रव्यमान ॥ वात विकार में कषाय ६ पल और पित्त विकार में कषाय ८ पल कंफ विकार में कषाय ११ पल ऐसे निरूहवस्तिमें वर्त्तै। और स्नेहवात विकारमें ६ पल और पित्तविकार में ४ पल स्नेह कफ विकार में ३ पल निरूहवस्तिमें ऐसेवर्त्तै। शहत तीनोंदोषोंमें ४ पल वर्त्तै और कल्क २ पल वर्त्तै और सेंधानिमक माशे १० वर्त्तै और मांस, रस, दूध, आम्ल मत्स्य ये सब पल पलभरवर्त्तै ऐसे निरूहवस्ति में वर्त्तना ॥ चतुर्थलाक्षादि तैल॥ लाखका रस समान तिलका तेल इससे चौगुनी मस्तु और असगंध, देवदारु, रेणुकाबीज, कूट, नागरमोथा, चंदन मूर्बा, कुटकी, रास्ना, शतावरि, मुलहठी ये औषध सम भाग लेवै ये सब मिलाय तेलको सिद्धकरै यह मालिश करने से सर्वज्वरोंको व क्षयीको व उन्मादको व श्वासको व मृगीको व वायुको व राक्षस पीड़ाको व भूत बाधाको नाशै और गर्भिणी को हित है॥ परीक्षा ॥ तेलका शब्द जातारहै और फेनरहैनहीं और गन्धवर्ण अच्छाहोजाय तौ सिद्धजानो अथवा फेन अत्यन्तआवै वहभी तेल

अच्छा होवैहै और सिद्धतेल एकवर्ष से व आधावर्ष से उपरांत हीनवीर्यहोवैहै और घृत एकवर्ष उपरांत कामका नहीं और गुड़ १ वर्ष उपरांत कामकाहोवैहै और चूर्ण २ महीने उपरांत कामका नहीं । और गोली अवलेह १ वर्ष से उपरांत कामके नहीं और घृत ४माससे उपरांत कामका नहीं सिद्ध किया ॥ महाज्वरांकुश ॥ पारा ३ माशे, बचनागविष ३ माशे, गंधक ३ माशे, धतूराकेबीज ६ माशे इन सबसे दूनी चोकलेवै इन्होंका महीनचूर्णकरै यहचूर्ण रत्ती २ निम्बु रसमें वा अदरख रसमें देवै यह त्रिदोषको व सब विषमज्वरोंको हरैहै॥ज्वरघ्नीवटिका ॥ शुद्धपारा १ भाग, शिलाजीत ४ भाग, पिपली ४ भाग, हरीतकी ४ भाग, करकरा ४ भाग कटुतैल में शुद्धगन्धक ४ भाग, गडूंभाफल ४ भाग इनको महीन पीस गडूंभाके रसमें गोलीबांधै ४ उड़दसमान गोली गिलोयकेरस के संगलेवै ज्वरमात्र को नाशै ॥ ज्वरसुरारिरस ॥ कलखपरिया के चूर्णको निंबुके रसमें २१ भावनादेवै फिर नवनीत ताजा घृत में खरलकरै यह रत्ती ६ खांड़के संग दिया नवज्वरको हरैहै ॥ स्वर्ण-मालतीबसंत ॥ सुवर्ण १ भाग, मोती २ भाग, मिरच ३ भाग, ख-परिया ८ भाग इन्हों का चूर्णकरि नवनीत घृत में खरल करावै फिर नींबूके रसमें खरलकरै जब तक चिकनाई नाशनहो तब तक खरल करै यह बसंतरस रत्ती २ पिपली, शहतसंग दिया सबरोगों में हितहै ॥ लघुमालतीबसंत ॥ खपरिया २ भाग, मिरच १ भाग इनको लूणीघृत में खरल करै फिर नींबूके रसमें खरलकरै जबतक चिकनई नाश न हो तबतक खरलकरै फिर रत्ती ६ पिपली, शहत संगदिया जीर्णज्वर को व धातुगतज्वरको व अतीसारको व रक्ता-तिसारको व रक्तविकार को व ज्यादा पित्तविकार को व प्रदर को व बवासीर रक्तको व विषमज्वर को व नेत्ररोग को हरैहै दृष्टान्त॥ जैसे सिंह हस्तीको तैसे और बालकों के सबरोगों को हरैहै और जयन्ती के फूल के संग गर्भिणी को देवै सर्वज्वरों को हरै और गर्भकी पालना करै ॥ दार्व्यादिवटिका ॥ दारुहलदी १ तोला तूतिया १ तोला खपरिया १ तोला इन्हों को धतूराके रसमें खरल

करै दिन ३ तक इसकी गोली चना समान करै फिर २१ मिरच ७ तुलसी के पत्ते इन्होंके संग २ गोलीखावै, पथ्य दूधखांड़पीवै ये गोली तरुणज्वरको व विषमज्वर को व सर्वज्वरको हरैं ॥ हुताशनरस॥ शुंठि १ तोला सुहागा १ तोला मिरच १ तोला कौडी भस्म १ तोला वच्चनागविष पावतोला इन्होंका चूर्ण रत्ती १ देवै यह ज्वरको नाशै ॥ दूसरालघुमालतीवसंत॥ खपरिया को मनुष्य के मूत्रमें २१ दिनतक भिगोवै फिर इसकी त्वचाकोदूरकरै फिरआधा भाग मिरच चूर्णमिलावै फिर सबको नवनीत घृत में खरल करै फिर नींबूके रसकी १०० पुटदेवै ऐसे रस लघुमालतीबसंत सिद्ध होवै है यह पिपली, शहत, मिश्री इन्होंके संगदिया धातुगत ज्वर को व पित्तको व भ्रमको व रक्तपित्तको व रक्तातीसारको व ग्रहणी को व बवासीर को नाशै है इसमें पथ्य मधुर दही व दूध देवै॥ अपूर्वमालतीवसंत ॥ वैक्रांतभस्म, अभ्रकभस्म, तांबाभस्म, सुवर्ण माक्षिक, चांदीभस्म, वंगभस्म, मूंगाभस्म, पाराभस्म, लोहभस्म सुहागा, शंखभस्म, ये सब बराबरले इनको शतावरिके रसमें व हलदी के रसमें सातपुट देवै फिर चांदनीमें रक्खै यह रस पिपली शंहतके संग रत्ती तीनदिया जीर्णज्वरको व धातुज्वरकोहरैहै और गिलोयसत, मिश्रीसंगरस प्रमेहको हरै और यह बिजौरा रस के संग अश्मरी कहे पथरी को हरै ॥ दूसरालघुमालतीवसंत ॥ खपरियाचूर्ण २१ दिनतक घोड़ाके मूत्र में भिगोवै फिर धूपमें सुखावै जबतक गीलापन न हटै तबतक पीछे मरिचचूर्ण ४ तोला, हिंगलू ८तोले सबका चूर्णकरि गौके लूनीघृतमें खरलकरै पीछे १०० नींबू के रसमें खरलकरै जबतक चिकनाई न हटै तबतक खरलकियेजावै यह रस रत्ती ४ शहत पिपली संग देवै यह गजकेशरि रस संग्रहणीको व अतीसार को व ज्वरको व क्षयीको व बवासीरको व शूलको व अग्निमन्दको व वातविकार को व प्रदर को व बवासीर रक्तको व विषमज्वर को व नेत्ररोग को हरै ॥ लघुविसूकाभरणरस ॥ वच नागाविष ४ तोला पाराभस्म ३ मासे इन दोनों को चूर्ण करै चूर्णको कांचके२प्यालोंमें धर संपुट करै और मुद्रित करि मन्द २

अग्नि से तपावै २ पहर तक जो रस उपरला पात्र में लगै वह पवन बंदकरि शीशीमें रक्खै सन्निपात रोगमें मस्तकपर मलै दूध संग सन्निपात को व सर्व विषको हरै जो ताप लगै तो मधुर रस देवै। यह सन्निपात को बहुत जल्दी नाशकरैहै। ऐसेजानो॥ जल-चूड़ामणिरस॥ पाराभस्म १ भाग, गन्धक १ भाग, मैनशिलपाव भाग, सोनामक्खी पावभाग, पिपली पाव भाग, शुंठि पाव भाग मिरच पाव भाग, इन्होंका चूर्णकर मत्स्य के पित्ता में खरल करै फिर मयूर के पित्ता में खरलकरै ऐसे सुखायें २ सात पुटदेवै फिर यह रस रत्ती २ मुसली के रसके संग अथवा पंचकोल के काढ़ाके संग सन्निपातको हरैहै॥ कनकसुन्दररस॥ धतूराके बीज ८ शाण पारा १२ शाण, गंधक १२ भाग,ताम्रभस्म २ शाण, अभ्रकभस्म ४ शाण, सोनामक्खी भस्म २ शाण, बंगभस्म २ शाण,शुद्धसुरमा ३ शाण, लोहभस्म ८ शाण, शुद्ध बचनागविष ३ शाण, लांगली तोला ४ इन्होंको नींबूके रसमें एकदिन खरलकरै फिर सकोरा में धर संपुटकरै मन्द २ अग्निमें पकावै शीतलहोनेपर महीनचूर्णकरै यह रस माशे १ अदरख रसके संग व लहसुनके रसके संग सन्नि-पात को व किलासको व सर्बकुष्ठों को व विसर्प को व भगंदर को व ज्वरको व विषको व अजीर्ण को हरै॥ सन्निपातभैरवरस॥ पारा ३ कर्ष, गंधक ३ कर्ष, इन्होंकी कज्जलीकरै फिर चांदी भस्म कर्ष १। अभ्रकभस्म ताम्रभस्म १ कर्ष, बंगभस्म १ कर्ष, शीशाभस्म१ कर्ष,लोहभस्म १ कर्ष सबकोकज्जलीमें मिला इनको शेंवाररससें व ज्वालामुखीरसमें व शुंठिरसमें व बेलपत्ररसमें व चावल के रस में इन्होंमें प्रत्येक पहर १ एक २ खरलकरै फिर गोला करि वस्त्र में धरै फिर लवणपूरित कांच पात्र में धरै फिर कांचकी शीशी को थाली में घाल बालुका यंत्र से २ प्रहर तक पकावै फिर शीतल होनेपर द्रव्यको काढ़ि चूर्णकरै फिर मूंगाचूर्ण १० माशे वचनाग-विष ४ माशे ये मिला सर्पके गरल में एक दिन खरल करै फिर तगर रसमें मुसली रसमें फिर जटामासी रसमें फिर चोक रस में फिर पिपली रसमें फिर नीलपुष्पीरस में फिर तमालपत्र रस

में फिर इलायची रस में फिर चीता रस में फिर रानतुलसी रस में फिर बड़ी सोंफरस में फिर देवडांगरी रस में फिर धतूरा रस में फिर अगस्त रस में फिर मुण्डी रस में फिर महुवा रस में फिर मैनफल रसमें खरल करताजावै यह रस रत्ती २ विजौरा रसमें व अदरख अर्कमें १६ मरिचचूर्ण संगदिया जल्दी सन्निपात को हरै ॥ रसपर्पटी ॥ पारा को अर्णीके रसमें शुद्धकरै एरण्डके रस में फिर भृंगराज रसमें फिर काकमाची रसमें ऐसे पारा को शुद्ध करै पीछे गंधक को भी ऐसे शुद्ध करै पूर्वोक्त रसों से फिर गन्धक को भृंगराज रसमेंपीसि धूपमें सुखावै सातबार व तीनबार फिर पारासंग चूर्णकरि जब चूर्णकज्जल सम होजावै पारा दीखे नहीं तब निर्धूम में बेरी का कोइला अँगार से कछुक द्रव करले फिर महिषीगोबर केला के पत्ता में धरि दूसरा केला के पत्ता से दाब-पीड़नकरै जब शीतल होजाय तब पत्तासे उठा चूर्णकरै ऐसे पर्पटी-रस सिद्ध होवै है और सृष्टि आदिमें ज्वरादि व्याधिग्रस्त संसार को देखि महादेवजी कृपाकरि अमृत समान रस पर्पटी को रचते भये इस रसको रत्ती १ भुनाजीरा रत्ती १ भुनीहींग रत्ती १ मिलाय खावै ऊपर शीतल जल तीन चुलूभर पीवै हमेशाकी हमेश रत्तीएक बढ़ावै और दशरत्तीसे ज्यादा एकदिनमें खावै नहीं और दशदिनसे रत्ती एक एक रोज घटावै ऐसे दिन २० तक खावै और शिव गुरू ब्राह्मण इन्हों को पूजनकरि श्रद्धाकरि खानेका आरंभ करै, पथ्यमें दूध, व मांस रसलेवै यह रस ज्वरको व संग्रहणीको व अतीसारको व कामलाको व पाण्डुको व शूलको व प्लीहको व जलोदरको नाशै और बल, वीर्य्य, पुष्टि इन्होंको पैदाकरै और इसकाखानेवाला १०० वर्षजीवैऔरजवानसमरहै ॥ रविसुन्दररस ॥ हरताल २ भाग, तांबामृत २ भाग, पारा १ भाग, गंधक १ भाग, बच्छनाग विष १ भाग, इन को २१ रात्रितक सूर्य्यकी धूपमें निंबके रसमें खरलकरै फिर रत्ती १ मिश्री संगदेवै यहरस आठ प्रकारके ज्वरोंकोहरै ॥ कज्जलीगुण ॥ शुद्धपारा, शुद्ध गंधक, इनको खरलकरै पारा न दिखै और कज्जल सम होजाय, तबतक यह कजली बल वीर्य्यको बढ़ावै और नाना

प्रकारके अनुपान के संग सम्पूर्ण रोगोंको हरतीहै॥ गदमुरारिरस॥ पारा, गंधक, शीशाभस्म, लोहभस्म, अभ्रक, तांबा, येसब बराबर भाग और आधाभाग विष इन्होंका चूर्ण गदमुरारि होवेहै यहरत्ती १ अदरखकेरसकेसंग आमज्वरको हरैहै॥बालार्करस॥ पारा सिंगरफ, जयपाल गंधक इनको जयपालजड़के काढ़ामें खरलकरि दो पहरदेवे ज्वरकोनाशै जैसे सूर्य्य अँधेराको॥ ज्वरांकुश॥ पारा,गंधक, बचनागविष, ये सबसमभाग तीनोंके बराबर धतूराबीज, इन चारों से दुगुणा शुंठि मिरच,पिपलीचूर्ण, इन्होंकोपीस गुंजा २ नींबूरसमें व अदरख रसमें मिलाय देवे यह ज्वरोंको व विषमज्वरोंको व सन्निपातको एक पहर भीतर हरैहै॥ विश्वतापहरण॥ पारा, ताम्र भस्म निसोत,गंधक, कुटकी, जयपाल, पिपली, कुचिला, हरीतकी इन्होंका चूर्ण धतूराके रसमें १ दिन खरलकरैयहरसरत्ती ६ अदरखअर्कसंग खावै तरुण ज्वर जावै इसपै पथ्य मूंग यूष चावलहै॥ सन्निपातभैरवरस॥ पारा, गंधक, संदूरभस्म, ये सब बराबर भाग इन सबोंकी बराबर बत्सनागविष, इन्होंके चूर्णको अदरख रसमें भावना देवै फिर भृङ्गरसमें फिर बिजौरा रसमें फिर भांगरसमें फिर निर्गुण्डी रसमें फिर भृङ्गराज रसमें ऐसे सबोंमें भावना देवै यहरस माशे २ देवै सन्निपात को हरै और इस पै शीतल पवन करावै निर्मलजल से स्नान व पान करावे पथ्य दूध खांड़देवै॥ त्रिभुवनकीर्त्ति॥ हिंगल बत्सनाग विष, शुंठि, मिरच,पिपली, सुहागा, पिपलामूल इन्हों के चूर्णको तुलसी रसमें खरलकरै एक दिन फिर अदरख रसमें खरल करै एक दिन तक धतूरा रसमें खरलकरै १ दिन तक ऐसे दिन ३ तक खरल करै यहरस रत्ती १ अदरख अर्कके सङ्ग खावे सर्व ज्वर नाशहो और तेरह सन्निपात नाश होवैं॥ मृतप्राणदायीरस॥ पारा गंधक, सुहागा, बत्सनागविष, धतूराके बीज ये सब समभाग इन्हों को धतूराके बीजोंके काढ़ामें भावना देवे १ पहर तकपीछेबत्सनाग विषके काढ़ा में १ पहर तक खरलकरे फिर धतूराके रसमें भावना देवे ऐसे प्रत्येक तीनतीनभावनादेवै, फिर शुंठि, मिरच, पिपली इन्हों के काढामें ५ भावनादेवै ऐसे सिद्धकरै यह रत्ती १ दिया ज्वरको व

सन्निपातको व तरुण ज्वरको व कफ रोगको नाशै, पथ्य दूध भात क्षीर दही भात, तक्रभात खांडयेलेवे और ज्वरातीसारसें व आमातीसारमें व संग्रहणीसेंबवासीरसें शहत खांडयुत देवे और वातज्वरसें व शकम्पवायु में व बाहुकंपमें व एकांग वायुमें शुंठि, मिरच, पिपली चीता इन्हों के चूर्ण युतदेवे मृगीरोग में व उन्माद में खांड धतूरा बीज युतदेवे ॥ ज्वरोपद्रव ॥ श्वास १ मूर्च्छा २ अरुचि ३ छर्दि ४ तृषा ५ अतीसार ६ मलवद्धता ७ हुचकी ८ खांसी ९ अंगभेद ये १० ज्वर के उपद्रव हैं ॥ ज्वरोपद्रवचिकित्सा ॥ जो ज्वरसें उपद्रव उपजैं तो वैद्य ज्वरका इलाज करें मूल व्याधि शांतहुये उपद्रव भी शांत होजावे इसवास्ते पहिले व्याधिको हरे पीछे उपद्रव को अथवा कुशल वैद्य पहिले उपद्रवको हरे तब बलाबल विचारि चिकित्साकरे समझ करि ॥ सिंहयादिकषाय ॥ कटैली, दोनों धमासा, परवल, काकड़ासिंगी भारंगी, पोहकरमूल, कुटकी, कचूर, कैरेया इन्होंका काढ़ा सन्निपातोद्भव श्वासको हरै॥ द्वात्रिंशांगकाढ़ा ॥ भारंगी, निंब, नागरमोथा हरीतकी, गिलोय, चिरायता, वासा, अतीस, त्रायमाण, कुटकी, वच शुंठि, मिरच, पिपली, स्योनाक, कूड़ा, रास्ना, धमासा, परवल, पाडल कचूर, दारुहलदी, विशाला, निशोत, ब्राह्मी, पोहकरमूल, छोटीकटैली बड़ी कटैली, हलदी, बहेड़ा, देवदारु इन्हों का काढ़ा सन्निपातोद्भव श्वासको व कफ कासको व हृदय रोगको व हुचकीको व वायुको व मन्यास्तंभको व गलामयको व आर्दितको व मलवद्धताकोनाशै है॥ मद्ध्वादिकाढ़ा ॥ पिपली, कायफल, काकड़ासिंगी इन्हों का चूर्ण शहदयुत महाश्वास को हरै है ॥ श्वासावरदाग ॥ वन उपलों की अग्नि में लोहाको तपाय चाकू आदिको हाथ के पंजा पै दागदेवै श्वास नाश होवे ॥ आद्रकादिनस्य ॥ अदरक रसकी नस्यदेनेसे मूर्च्छा नाश होवे है अथवा मैनशिल, मिरच, सैंधव निमक इन्हों के अंजन से मूर्च्छा जावै ॥ शीतांभसादियोग ॥ शीतल जलसे नेत्रों को सेंकै व सुगंध धूपखेवे व सुगंधित द्रव्य सुँघावे व कोमल ताड़के बिजनाकी पवन करवावै व कोमल केला के पात स्पर्श करवावै इन कर्म्मों से मूर्च्छा नाशहोवे और अदरक, सैंधव मिलाय मुख में रक्खे

बिजोरा की केसर सींधायुत मुख में धरै इन्हों से अरुचि नाशहोवै ७२५ ॥ सैंधवादियोग ॥ सैंधव लवण महीन पिसा जलमें मिलाय नस्यलेने से हुचकी नाशहोवैं अथवा शुंठि, खांड़, तिक्तरस ये भी हुचकी को नाशैं अथवा हींग के धूम सेवनसे हुचकी नाश होवैं ॥ अश्वत्थक्षार ॥ पीपलकी सूखीछाल अग्नि में जलाय राखकरि जल में मिलावे यह जल पानकरने से हुचकी को व छर्दि को नाश करै ॥ शुष्कअश्वपुरीषयोग ॥ घोड़ेकी सूखीलीद के धूम सेवन से हुचकी नाशहोवे हैं। पकायेहुये यवों के रससे भी नस्यलेनेसे हुचकी मिटै हैं ॥ ज्वरकासीकणादि ॥ पिपली, पिपलामूल, बहेड़ा, पित्तपापड़ा, शुंठि इन्होंकाचूर्ण शहदयुत अथवा बासाकारस शहदयुत कास को हरै है ॥ पुष्करादिचटणी ॥ पोहकरमूल, शुंठि, मिरच, पीपल काकड़ासिंगी, कायफल, धमासा, अजमान इन्होंकाचूर्ण शहदयुत कासको हरै है ॥ बिभीतकयोग ॥ बहेड़ाको घृतमेंभिगोय और गोबर से लपेट अग्निमें मन्दगरमकरै शीतलहोनेपर मुखमें लेनेसे खांसी को हरै है ॥ लवंगादिबटी ॥ बहेड़ादल, लवंग, मिरच ये सम भाग इनसबोंके समान खैरसार इनकोपीस बबूलकी जड़के काढ़ाकेजल से गोलीबनावे ये गोली बहुत जलदी कासको हरती है ॥ ज्वरीदाहचिकित्सा ॥ इसमें दाहाधिकार की लिखी चिकित्सा करै और ज्वर के अबिरुद्ध क्रियाकरै ॥ गडूच्यादि ॥ गिलोय का काढ़ा शहद मिश्रीसंयुक्त छर्दिको शांतकरै अथवा माखीका बिष्ठा शहद संयुक्त छर्दि को हरै अथवा माखीबीट, चन्दन, मिश्रीसंयुत छर्दि को हरै ॥ दन्तशठादिकाढ़ा ॥ बिजौरा, अनार, जम्भीरी निम्बू, बेरी, आम्लबेतस इन्हों का कल्क मुखमें धरै अथवा इन्हों का लेपकरवावै तो ज्वरमें तृषा नाशहोवै अथवा चांदीकी गोली मुखमें धरी तृषा को हरै ॥ जलादियोग ॥ शीतल जल शहत संयुत कंठ तक पान करि बमन करै इस से तृषा हरै अथवा कूट, बड़ छाल, धानकी खील इन्हों का शहत में अवलेह तृषा को नाशै ॥ ज्वरातीसारचिकित्सा ॥ बलवान् को लंघनकरावै इसके सम औषधि ज्वरातीसार में नहीं है ॥ बत्सादन्यादिकाढ़ा ॥ कूड़ाछाल, गिलोय, नागरमोथा, चिरायता

निंब, अतीस, शुंठि इन्हों का काढ़ा ज्वरातीसार को हरै अथवा शुंठि, गिलोय, कूड़ाछाल, नागरमोथा इन्होंका काढ़ा ज्वरातीसार को हरै ॥ पाढ़ादि ॥ पाढ़ा, गिलोय, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, शुंठि चिरायता, इन्द्रयव इन्होंका काढ़ा दारुणज्वरातीसार को हरै है ॥ ज्वरेमलबद्धताचिकित्सा ॥ विड्बन्धन में वातनाशक जानु लोमन कर्मकरै अथवा करड़ी फलवती को गुदामें चढ़ा मलको प्रवर्त्तन करावै ॥ पथ्यादिकाढ़ा ॥ हरीतकी, अमलतास, कुटकी, निशोत आमला इन्हों का काढ़ा जीर्णज्वर को व मल बद्धता को नाशै ॥ ज्वरीपथ्य ॥ वमन, लंघन करावै काल प्रभाते यवागू देवै और पसीना देवै और कटु, तिक्तरस देवै ये पाचन रूप औषधि तरुण ज्वर में पथ्यहै। और सन्निपात में ये सर्व करावे और आम व कफनाशक क्रियाकरावे। अवलेह, अंजन, नस्य, गण्डूष रसक्रिया ये सब करावे। और पैरों में व हाथों में व कंठमें व कपोल हृयसें पसीना आवे तो भुनीहुई कुलथी का चूर्ण मलवावै॥ तरुणज्वरमें अपथ्य॥ स्नान, रेचन, मैथुन, काढ़ा, व्यायाम, दिनमें शयन, तैलादि मर्दन, दूध, घृत, द्विदलअन्न, मांस, तक्र, मदिरा, स्वादु पदार्थ जड़पदार्थ, द्रवपदार्थ, भारी पदार्थ, अन्न, वायु, भ्रमण, क्रोध इतने कर्म्म तरुण ज्वरमें करने नहीं॥ मध्यमज्वरमें अपथ्य ॥ पुराने साठी चावल, बैंगन, करेला, सौभांजन, वंशांकुर, तुरी, आषाढ़फल, मूंग मसूर, चणा, कुलथी रानमूंग इन्होंका यूष, पाढ़ा, गिलोय, बथुवा चावल पदार्थ, जीवंतीशाक, काकमाची, मुनका, दाख, कैथा, अनारफल और हलके पदार्थ सब मध्यम ज्वरवाले को हित हैं॥ ज्वरमें पथ्य॥ दूसरे मतका। चावल पदार्थ, बथुवा, काकमाची, पित्तपापड़ा परवल, तिक्तशाक, गिलोय, पालाभाजी, कालशाक, निम्ब फूल मारीष, दार्वीफल, जीवंती, चांगेरी, चूकाकूड़ा व भेड़दूध पदार्थ प्रियशाक, मूंग, मसूर, चणे, कुलथी, रानमूंग इन्होंका यूष और लवा तीतर, कपिंजल, मृग, शरभ, मृगजाति इन पशुओंके मांस ये सवज्वर वालेको पथ्यहैं और मयूर, सारस इन पक्षियों के मांस और कुक्कुट मांसज्वरवालेको अपथ्य याने बुरेहैं। बैंगनआदि शाकअच्छे हैं परंतु

स्नेहयुक्त देवेनहीं चावल व अन्न, एकवर्ष पुराने देवै और गेहूंरोटी करनेवास्ते २ वर्षके पुराने वर्त्तै और रोटी बहुत अल्प खावे ज्वर-वाला ॥ जीर्णज्वरमेंपथ्य ॥ विरेचन, वमन, अंजन, नस्य, धूमपान अरु वासनवस्ती, नलकावेधना, ज्वर शांत करनेवाली औषधि का देना व लेप, औषधियों के तेलका लगाना, स्नान, शीतल उपचार एण, कुलिंग, हरिण, मोर, लवा, तीतर, मुरगा, कुरच पृषत, चकोर कपिंजल, बटेर, कालपुच्छ इन जीवों का मांस, गौ तथा बकरी का दूध व घृत, हड़, पहाड़ी झरणोंका जल, एरण्डतेल, सफेद चन्दन चन्द्रकी चांदनी, त्रियाका आलिङ्गन ये सब पुराने ज्वर में पथ्यहैं ॥ आगंतुकज्वर पथ्य ॥ इस ज्वर में लंघन करै नहीं और घृत का पीना और मलना योग्य है और रक्तमोक्ष, मद्यपान, मांसरस भक्षण ये भी हित हैं और क्षत तथा घाव से उपजे ज्वर में क्षत व घाव की चिकित्सा करनी चाहिये और विषसे उपजे ज्वर में विष तथा पित्त की चिकित्सा करै और क्रोधसे उपजे ज्वर में पित्तनाशक क्रिया व मधुर वचन बोले और अभिचार व अभिशापसे उपजे ज्वरमें जप होम करावै और उत्पात तथा ग्रहपीड़ासे उत्पन्न ज्वरमें दान तथा स्वस्तिवाचन आदि औषधि है और कामसे उत्पन्न ज्वरमें कामके जीतनेवाली क्रिया करनीचाहिये और शोक तथा भयसे उत्पन्नमें सब बातकी हरनेवाली क्रिया करनी चाहिये—और धीरज देना, प्यारी वस्तुका मिलना, तथा आनन्द देनेवाली वस्तुका लाभ ये सबकाम तथा क्रोधसे उत्पन्न ज्वरमें विशेषकारि उपकारकहैं और भय तथा शोक से उत्पन्न ज्वर में काम व क्रोध में कही हुई औषधि करनी योग्यहै। भूतके आवेशसे आयेहुये ज्वरमें भूतका बांधना, कबुलाना ताड़नकरना उचित है और मनके क्षोभ से उत्पन्न ज्वर में मनका शांतकरना उचितहै आगंतुक ज्वरमें पहिले वैद्योंने ये पथ्य कहेहैं॥ विषमज्वर ॥ वमन, रेचन, विष्णुसहस्रनाम का पाठ, वेदका सुनना देवता, ब्राह्मण, गुरू इन्होंका पूजन, ब्रह्मचर्य्य, तप, नियम, होम दान, जप, साधुओं का दर्शन, सत्य बोलना, रत्न तथा औषधियों का धारण करना, मङ्गलाचरण ये सब ज्वरों को हरै है ॥ सर्वज्वरों

में अपथ्य ॥ अधिवासन कर्म्म, लालफूलोंकी माला तथा लालवस्त्रों का पहनना, वमन के वेगका रोकना, दतून करना, अहित भोजन विरुद्ध अन्न, तथा पान, विदाही तथा भारी वस्तु, बुरा जल, खार खटाई, पत्र, शाक, निरूहणवस्ति, खस, तांबूल, करोंदा, कटहल का फल, तोड़ीमछली, तिलकीखली, नवीनअन्न, चूनकीबनी वस्तु अभिष्यंदी सब वस्तु इन सबों को ज्वरवाला त्यागे और ज्वर छूट-जानेके पीछे जबतक बल न आवे तबतक व्यायाम कहे दण्ड, कुश्ती आदि, स्त्रीसंग, स्नान और वहुत चलना, फिरना इनको बचावै॥ मन्त्र ॥ वज्रहस्तोमहाकायोवज्रतुण्डोमहेश्वरः हतोसिवज्रतुण्डेनभू-म्यांगच्छमहाज्वर। ठः शः शंतः। तालपत्रेलिखित्वातुकंठेवाहोचबन्ध येत् ॥ पेय॥ आम्रतिक्तपान। हज़ार करिये या घृतसंयुक्त पीवै तीन दिनतक चातुर्थिज्वर नाश होवै॥ ज्वरमुक्तलक्षण ॥ धातुओंकासं-क्षोभसे व दोषोंके संचलन से मोक्षकाल में ज्वर वेग ज्यादा होवे है त्रिदोषजज्वर व अन्तर्वेग ज्वर व धातु गतज्वर इन्होंमें और अन्य ज्वरों में पसीना आयकरि ज्वर मोक्षहोवैहै॥

इतिवेरीनिवासकरविदत्तवैद्यरचितनिघण्टरत्नाकरभाषायांज्वरप्रकरणम् ३४०

अतीसारी कर्म्मविपाक जो स्मार्ताग्नी को ब्राह्मण, क्षत्री वैश्यहोके त्यागै सो अतिसार रोगी होवै॥ प्रायश्चित्त ॥ अग्नि रश्मी इसमंत्र का जप १०००० करावे और दशांश होम करावें और घृत, तिल, सुवर्ण इन्होंकादान ब्राह्मणको देवै॥ दूसराप्रकार॥ जो अग्नित्रयीका नाशकरै वह अतिसाररोगीहोवे है ॥प्रायश्चित्त ॥ तोला ४ अथवा २ सोनाकी व तांबा की मूर्त्ति अग्निदेव की बनावे और मूर्त्तिको अग्निसे तपाय लाल चन्दनसे लेपदेवै और लालवस्त्र पहनादेवे और लालफूलोंकी माला पहनावै और बकरा के ऊपर संवार करादेवे और मोती गहनोंसे भूषितकरै और कांति मूर्त्तिकी बढ़ावे फिर उसमूर्त्तिको ब्रह्मचारी वा अग्निहोत्री ब्राह्मणको पहि-ले वस्त्रादि पहनाके स्वस्थचित्तकरि उसमूर्त्तिको दान करदेवै मंत्र पढ़ताहुआअग्निकेप्रसन्नवास्ते॥मंत्रः॥तेजोरूपोग्निरीउपस्त्वमंतस्त्व श्चासिवैनृणाम् त्वंवेत्थप्राक्तनंपाप मतिसारंविनाशय। एवंकृत्वान

रःसम्यगतिसारंव्यपोहति । निरुजःससुखीनित्यंदीर्घमायुश्चविंद-
ति ॥तीसरेप्रकारकाकर्म्मविपाक॥ स्त्री को मारने वाला अतिसारी
होवेहै ॥प्रायश्चित्त ॥पीपलवृक्ष १० ऐसेकरि नित्यसींचे औरशर्करा
धेनुका दानकरै और ब्राह्मण सन्त १०० कोभोजन देवै ॥ रक्तातीः
सारकर्मविपाक ॥ जो बनमें अग्निदेवै सो रक्तातीसाररोगीहोवै ॥प्राय-
श्चित्त ॥जलकादानकरै और बटवृक्ष को रोपै ॥अतीसारनिदान॥ मैदा
आदि गरिष्ठ बस्तु और शीतलबस्तु और पतलीबस्तु खानेसे और
भोजनकेऊपर भोजनकरनेसे और विषम भोजन तथा अति भोजन
से और अधिक चिकनी और रूखी और गरमबस्तुके खानेसे और
विरुद्धफल देनेहारा हीनाधिक योगसे और विषसे व भयसे व शोक
से व दुष्टजल व मदिराकेज्यादा पानसे व ऋतुविपरीत भोजनादिसे
व जलमें ज्यादा क्रीड़ाकरनेसे व मलमूत्रके बेगरोकने से व कृमि
दोषसे मनुष्योंके अतिसार पैदाहोवै है ॥संप्राप्ति॥ मनुष्यके शरीरमें
इनकुपथ्यों से जलधातु बढ़ै तो उदरकी अग्निको शांतकरै और वह
जल पवनको प्रेरितबिष्ठा से मिल गुदाके मार्ग्ग से पतला होकर
नीचे अधिक उतरै उसको अतिसार जानिये। बात १ पित्त २
कफ३ सन्निपात४ शोच५ आम६ इन भेदों से यह अतिसार छः
प्रकारका है ॥ अतिसारपूर्बरूप ॥प्रथम हृदय, नाभि, गुदा, उदर
पेडु इनमें पीड़ाहो और सबअंगन में हड़फूटन हो और गुदा की
पवनरुकजाय, बद्धकोष्ठ और अफाराहो अन्न पचैनहीं तो जानिये
कि मनुष्य के अतिसार होगा ॥ अतिसारपूर्बरूपचिकित्सा ॥ इसके
आदिमें लंघन हितहै वह पाचन करैहै और इसमें तृषादि उपद्रव
होवे तो षड़ंगयूषदेवै । मूंगयूष, रस, तक्र, धनियां, जीरा, सैंधव
निमक यहषड़ंगयूषहोते हैं यह अग्निको दीप्तकरै और संग्रहणी को
नाशैहै और अरोचकज्वर में व प्रवाहिका में श्रेष्ठ है ॥ विल्वादिषड़ंग
यूष ॥बेलफल, धनियां, जीरा, पाठा, शुंठि, तिल इन्हों को पीस यूष
देवै अतिसार नाशहोवै ॥ यवागू ॥यवागू देइ तृषाको हरैहै हलकी
है और अग्निको दीपन करै है और वस्तिको शुद्धकरै है और वि-
रेचन में व अतिसार में यवागू सारेहित हैं ॥ बर्जनीय ॥ क्षीण, वृद्ध

बालक, गर्भिणी इन्होंको वर्जितकरि अन्यका अपक्क अतिसार बढ़ा हुआको बन्ध औषधिसे करे नहीं ॥ अतिसारावरलंघन ॥ अतिसार में आदिमें लंघन करावे देहका बलाबल देखिके पीछे शुंठि, मिरच पिपली इन्होंका पाचनदेवै और पित्ताधिक अतिसार में लंघन करावै नहीं और पित्ताधिक ज्वरमें भी लंघन करावे नहीं और इन्हों को पाचन कषाय भोजन बरोबर दिवावै ॥ दीपन ॥ अजमान, शुंठि वाला, धनियां, वेलफल, ह्रिपर्णी इन्होंका काढ़ा दीपन व पाचनहै ॥ अतिसारप्रक्रिया ॥ अतिसार में व ज्वरमें व रक्तपित्तमें व नेत्र रोग के आदि में औषध करे नहीं इन रोगों का वेग दुस्तर है ॥ दूसराप्रकार ॥ सम्पूर्ण अतिसारों में पका आमको जानि चिकित्सा करै और आमातिसार में लंघन श्रेष्ठ है पीछे पाचनदेवै अथवा लंघनानन्तर पातल लघु भोजन करावे ॥ धान्यपंचकपाचन ॥ धनियां वाला, वेलफल, नागरमोथा, शुंठि इन्होंका काढ़ा आमशूल नाशक है और ग्राही है और भेदी है और दीपन पाचन है पित्ताधिक में शुंठिको वर्जिकर धान्य चतुष्कको वरतै ॥ धातक्यादिमोदक ॥ धौके फूल, शुंठि, पाषाणभेद, वेलफल, अजमोद, नागरमोथा, मोचरस चुका इन्हों का मोदक सर्वातीसार को हरै है ॥ कुटजाष्टककाढ़ा ॥ कुड़ाछाल, वालवेल, अतीस, नागरमोथा, धौकेफूल, अनार, लोध पाषाणभेद इन्होंका काढ़ा शहत, मोचरस संयुक्त पीवै यह दारुण अतिसार दाह युक्त को व रक्त शूलको व आम व्याधिको हरै है ॥ वातातीसारनिदान ॥ कछुक ललाई लियेहुये मलउतरै और मलमें झागमिले हों और रूखा और थोड़ा बारम्बार आम सहित आवै औ दिशाके समय पेडु में पीड़ाहो तो वातका अतिसार जानिये ॥ पूतिकादिकाढ़ा ॥ करंज, पिपली, शुंठि, चिकणा, धनियां, हरीतकी इन्होंका काढ़ा सायंकालमें पीवै वातातिसार नाश होवै ॥ पथ्यादि ॥ हरीतकी, देवदारु, शुंठि, नागरमोथा, अतीस, गिलोय इन्हों का काढ़ा दारुणबातातीसार को नाशै ॥ वचादि ॥ बच, अतीस, नागरमोथा, इन्द्रयव इन्होंकाकाढ़ा बातातिसारकोहरै ॥ सुवर्च्चलादिकाढ़ा ॥ सुवल लवण, बच, हिंग, चिरायता, चीता, अतीस, शुंठि, मिरच

पिपली इन्हों का काढ़ा बातातीसार को हरै है ॥ कपित्थाष्टक ॥ ८ भागकैथाके ६ भागखांड़, अनारदाना ३ भाग, अमली ३ भाग बेलफल ३ भाग, धौकेफूल३ भाग, अजमोद ३ भाग, त्रिपली३ भाग मरीच १ भाग, जीरा १ भाग, धनियां १ भाग, पिपलामूल १ भाग बाला १ भाग, सैंधवनिमक १ भाग, आजमान १ भाग, दालचीनी १ भाग, तमालपत्र १ भाग, इलायची १ भाग, नागकेसर १ भाग, चीता १ भाग, शुंठि १ भाग इन्हों को महीन पीस चूर्णकरै यह जलसम्बन्धी रोगोंको व संग्रहणी को व अतीसारको नाशै है ॥ लाइचूर्ण ॥ चीता त्रिफला, शुंठि, मिरच, पिपली, बायबिड़ंग, दोनों जीरा, भिलावां आजमान, हिंग, सांभर, ठांकणखार, सैंधवलवण, बिड़लवण, सोंचर लवण, कालालवण, गृहधूम, बच, कूट, नागरमोथा, अभ्रक, गंधक यवाखार, सज्जीखार, अजमोद, पारा, बांझककोड़ी, गजपिपली इन्हों का चूर्णकरि समभाग फिर सबकी बराबर इन्द्रयव मिलाय चूर्णकरै सूर्य्योदय में चूर्ण २ तोले देवै यह मन्दाग्नि को व कास को व बवासीरको व प्लीहाको व पाण्डुको व अरुचिको व ज्वरको व प्रमेह को व सूजन को व बिष्टम्भ को व संग्रहणी को व सर्वातीसारको व शूलको व आमबात को व सूतिका रोगको व त्रिदोषज व्याधिको नाशैहै और इसके भक्षणसे काष्ठ भी जीर्णहो इसमें पथ्य नहींहै स्नान, मैथुन, मांस ये बर्जित नहीं और कांजी, खट्टा दही येभी बर्जितनहीं ॥ कुटजचूर्ण ॥ इन्द्रयव, नागरमोथा, धौकेफूल, लोध शुंठि, मोचरस इन्होंका चूर्ण गुड़ तक्र संयुतपीवै जल्दी अतीसार नाशहोइ ॥ शुंठीचूर्ण ॥ धौकेफूल, मोचरस, अजमान इन्होंका चूर्ण तक्रसंगपीवै उग्रअतीसार नाशहोवै ॥ बृहल्लवंगादि ॥ लवंग, इलायची तमालपत्र, कमलकंद, बाला, जटामांसी, तगर, कालाबाला, कं-कोल, कृष्णागर, नागकेसर, जायफल, केसर, जावित्री, जीरास्याह जीरा सफेद, शुंठि, मिरच, पिपली, पुष्करमूल, कचूर, त्रिफला, कूट बायबिड़ंग, चीतामूल, तालीसपत्र, देवदारु, धनियां, अजमान मुलहठी, खैर, आम्लबेतस, बंशलोचन, किरमाणी, अजमान, कपूर अभ्रकभस्म, काकड़ासिंगी, कालाअतीस, पिपलामूल, अरणी, सांवां

नागरमोथा, श्वेतअतीस, शतावरि, गिलोयसत, निशोत, धमासा ये सब बराबर भागले और सबोंकी बराबर खांड़ले मिलाय चूर्ण बनावै और प्रभात शामको माशे १० खावै यह बल वीर्य्य पुष्टिको बढ़ावे है और प्रमेहको व कासको व अरुचिको व क्षयीको व पीनस को व राजयक्ष्माको व रक्तदाहको व संग्रहणीको व सन्निपात को व हुचकीको व अतीसारको व प्रदरको व गलग्रहको व पाण्डुको व स्वर भंगको व अश्मरी रोगकोनाशैहै॥ विजयायोग॥ रात्रिमेंभुनीहुई भांग के चूर्णको शहत के संग खावै यह अतीसारको व निन्दनाशको व संग्रहणीको नाशै और अग्निको दीपनकरै॥ कुटजावलेह॥ कुड़ाकी जड़को बारीक कूट १०२४ तोलेजल में काढ़ाकरै चतुर्थांशरक्खे इसमें संचललवण, जवाखार, विड़लोन, सेंधव, पिपली, पाड़लमूल इन्द्रयव, जीरा इन्हों का चूर्ण पूर्वोक्त काढ़ा में मिलाय अग्नि से पकावै शीतल होनेपर २ पल फिर इसमें से बेरसमानले शहत संयुक्त करिदेवै यह पका अतीसार को व कच्चा अतीसारको व नानावर्ण वेदनायुत अतीसार को व दारुण अतीसारको व संग्रहणी को व प्रवाहिका को नाशै है॥ दूसराकुटजाद्यवलेह॥ कुड़ाकी छाल का चतुर्थांश काढ़ा करि तिस में नागरमोथा, दूध, वायबिड़ंग बिजौरा, सेंधानिमक, धौकेफूल, पिपली इन्होंका चूर्ण बराबर ले पूर्वोक्त काढ़ामेंमिलाय अग्निमेंपकावै जब घनहोजाय तब शीतल करि शहत मिलावै यह अतीसार को व बवासीर को व संग्रहणी को व भगंदर को व श्वास को व प्रमेह को हरै है॥ कुटजपुटपाक॥ कुड़ाकी आली छाल १६ तोले लेवै इसे चावल के धोवनसे पीसै गोलाकरि जामनके पत्तोंसे वेष्टित करै ऊपर सूत लपेटै फिर ऊपर गेहूंका चून लपेटै फिर करड़ी गारा से लपेटि गोमयकी अग्नि में पकावै जब अंगार समान होजाय तब अग्नि से काढ़ै इसका रस निचोड़ शीतल होनेपर शहत मिलाय चाटै यह सर्व अतीसारोंको नाशैहै तण्डुल, जल, कण्डितचावल ४ तोले आठगुणा जलमेंगेरै भिगोय जल सब कर्ममें वरतै॥ मृतसंजीवनरस॥ पारा, गन्धकसम भाग चतुर्थांश वत्सनाग विष सबोंके समान अभ्रकभस्म इनसब

को धतूराके रसमें खरल करै फिर सर्पाक्षी कषायमें खरलकरै १ पहरतक फिर धौंके फूल, अतीस, नागरमोथा, शुंठि, बाला, जीरा अजमान, यव, बेलफल, पाढ़ा, हरीतकी, पिपली, कुडाछाल, कैथ अनारफल, बला ये सब प्रत्येक कर्षतोलले इन्होंका कल्ककरै फिर चौगुणा जलमें पकावै चतुर्थांश रक्खै इससे पूर्वोक्त रसको ३ दिन खरल करै फिर बालुका यन्त्रमें घालि १ मुहूर्त्त पकावै फिर शीतल होनेपर ४ रत्ती अनुपानके संगदेवै असाध्य अतीसारको भी नाशै अनुपानकहेहैं ॥ शुंठि, अतीस, नागरमोथा, देवदारु, बच, पिपली अजमाइन, धनियां, बाला, कुड़ाछाल, हरीतकी, धौंकेफूल, इन्द्रयव पाढ़ा, बेलफल, मोचरस इन्होंका चूर्ण शहत युत इसको अनुपान कहते हैं ॥ कारुण्यसागर ॥ पारा एक भाग भस्म २ भाग गन्धक ४ भाग अभ्रक भस्म इनको एरण्डतेलमें खरलकरै फिर १ पहरअग्नि से पकावैं फिर भृङ्ग रसमें खरल करै फिर इसमें जवाखार, सज्जीखार, सुहागा, लवण, सैंधवलवण, बिड़लवण, संचरलवण, बत्सनागविष, शुंठि, मिरच, पिपली, चीता, जीरा, केशर इनकासमभाग चूर्ण मिलावै यह रस कारुण्यसागर माशा २ देवे यह अतीसार को व जरा अतीसारको व शूलयुत अतीसारको व रक्तातीसार को व शोथयुत्त अतीसार को व संग्रहणी को नाशै है और अनुपान व अनुपान बर्जितदेवै ॥ कुंकुमबटी ॥ अफीम, केशर, शहतमें खरलकरि १ चावल तोलदेवै अतीसारको हरैहै यह गुरुमुखसे नुसखासुनाहै ग्रंथमें कहीं देखा नहीं ॥ कपित्थादिपेय ॥ कैथा, बेलफल चुका, तक्र अनार ये सब मिलाय पेया करि प्यावै ग्राहिणी है, पाचनी है और बाताधिक अतीसार में पंचमूलकी पेया प्यावै ॥ पंचमूलादिपेया ॥ पंचमूल, चिकणा, शुंठि, धनियां, कमल, बेलफल इन्हों की पेया बातातीसार को हरै सूक्तकेसंग ॥ मसूरादिघृत ॥ मसूर ४०० तोले जल दशसेर चौबीस तोलेमें काढ़ा करि चतुर्थांश रक्खै फिर इसमें बेलफल चूर्ण ३२ तोलेगेरै फिर घृत ६४ तोलेगेरै सबको मिलाय घृतकोसिद्धकरै यह घृतसर्बअतीसारको व संग्रहणीको व भिन्नबिटकताको व प्रबाहिका को नाशैहैं ॥ लोकनाथरस ॥ पाराभस्म १ भाग

गन्धक ४ भाग इनको खरलकरै फिर कौड़ीभस्म, सुहागा मिलाय गोलाकरि सकोरामें धरै दूसरे सकोरासे संपुटदे और खाम गज पुटमें फूंक देवे और शीतल होने पर चूर्ण करि यह लोकनाथ रस ४ रत्ती शहतसंग अथवा शुंठि, अतीस, नागरमोथा, देवदारु, वच इन्होंका कषाय के संग दिया अथवा क्षीरणीका कषाय संग वातातीसार को नाशैहै ॥ महारस ॥ पाराभस्म, लोहाभस्म, मिरच, घृत ये सब समभाग इनको थोहरके दूधमें खरल करै पीछे काकमाची के रस में खरलकरै १ पहरतक गोलाकरि भूधर यन्त्र में अग्नि से पकावे एकदिनतक शीतल होनेपर १॥ माशा देवे ऊपरसर्पाक्षी चूर्ण १० माशा दहीसंग पिलावे यहवातातीसारको हरैहै॥ द्वितीयमहारस॥ पारा, गंधक, मिरच, सुहागा, पिपली, धतूराके बीज ये सब समान भागले फिर इन्हों को भृङ्गी के रस में खरल करै २ पहर तक यह कनक सुन्दर रस रत्ती २ दिया वातातीसारको नाशैहै इसमें पथ्य दही, चावल, घृत गौका ये है ॥ वातातीसारभाजी ॥ फांज, शावरी गुग्गुल, कैथा, अनार, वेरी, क्षीरणी, बाकुची, अरणी वा पत्री इन्होंकी तर्कारी भाजी पकीहुई अतीसार वाताधिक को श्रेष्ठ है पित्तातीसारनिदान ॥ मल पीला, लाल, हरा और दुर्गन्धि युक्त पतला हो और गुदा पकजाय शरीर में पसीना, दाह, मूर्च्छा ये लक्षण पित्तातीसारके हैं ॥ चिकित्सा ॥ आमातीसारको व पित्तातीसारको लंघनसे नाशै और लंघनके पीछे यवागू, मण्ड, तर्पण ये प्यावै अथवा चन्दन, नागरमोथा, परवल, जीरा, शुंठि इन्हों का काढ़ा देवै अथवा खट्टा पेया देवै अथवा तक्रभिन्न ग्राहिणी पाचनी पेया देवै ॥ पित्तातीसार पाणी व अन्न ॥ धनियां, वाला इन्हों का जल दाहको व तृषाको व अतीसार को नाशै है और बाला, पाढ़ा इन्हों के काढ़ा में सिद्ध अन्न खवावै ॥ मधुकादियोग ॥ मुलहठी कायफल, लोध, अनारकी छाल व फल इन्हों का कल्क शहत युत चावल जल के संग देवैं पित्तातीसार नाश होवैं ॥ शुंठ्यादि ॥ शुंठि, ब्राह्मी, हिंग, हरीतकी, इन्द्रयव इन्हों का काढ़ा शहत युत पित्तातीसार को नाशै ॥ विल्वादिकाढ़ा ॥ बेलफल, इन्द्रयव, नागर-

मोथा, बाला, अतीस इन्हों का काढ़ा आमसहित पित्तातीसारको हरैहै॥ कटूफलादि काढ़ा॥ कायफल, अतीस, नागरमोथा, कुड़ाकी छाल, शुंठि इन्हों का काढ़ा शहतयुत पित्तातीसार को हरे॥ मधुयष्ट्यादिकाढ़ा॥ मुलहठी, लोध, कमलकन्द, खांड़ ये समभाग शहत दूध संग पीवे रक्त पित्तातीसार नाश होय॥ समंगादिचूर्ण॥ बला, धौकेफूल, बेलफल, सेंधानिमक, विडलवण, अनारकीछाल इन्होंका चूर्ण चावल पानीसंग शहतयुत पीवे पित्तातीसार व शूलनाशहोवे अतिविषादियोग॥ अतीस, कुड़ाकी छाल, इन्द्रयव इन्हों को चूर्ण शहतयुत चावल पानी से पीवे पित्तातीसारनाशहोवे॥ जंघादिचूर्ण॥ जामुन, आमकी गुठली, मुनक्कादाख, हरीतकी, पिपली, खजूर, शाल्मली, भवरसाली, गूलरछाल, लोध इन्होंका चूर्ण समभाग शहत संग पियै रक्त व पित्तातीसार को नाशै॥ लोकेश्वररस॥ पाराभस्म १ तोला सोना भस्म पावतोला इन दोनों से दुगुना गंधक इन्हों को चीतारस में खरलकरै इसको कौड़ी में भरि सुहागा से मुंहको बंद करै फेर माटी चूर्णलिप्त भांड़में धरै कौड़ीको फेर पात्रका मुंह बंदकरि गजपुटमें फूंकदेवै शीतल होनेपर ४ रत्ती शहत के संग देवै यह सर्वातीसार को हरैहै इससे बालबेल, गुड़, तेल, पिपली शुंठि इन्होंको शहतमें मिलावै यह अनोपान श्रेष्ठहै॥ दूसरा प्रकार॥ लोकनाथ रस ४ रत्ती चावल के धोवन संग देवै, बत्सकादि घृत कुड़ाकी छाल १६ तोले काढ़ा में ४ तोले घृत को पकावै यह घृत पित्तातीसार को हरै और दीप्त पाचन है॥ कफातीसार निदान॥ मलचिकना, सपेद, गाढ़ा दुर्गंधिलिये शीतल थोड़ीपीड़ालिये उतरै और शरीर भारीहोय और भोजनमें अरुचिहो ये लक्षण कफातीसार के हैं॥ चिकित्सा॥ कफातीसारमें लंघन व पाचनहितहै और आमातीसार नाशक औषध व दीपन गणहित है और आमातीसार को पहली आदि में औषध बन्द करै नहीं जो बन्द करै तो बहुत रोगों को पैदाकरै है॥ पथ्यादिकाढ़ा॥ हरीतकी, चीता, कुटकी पाठा, बच, नागरमोथा, इन्द्रयव, शुंठि इन्हों का काढ़ा अथवा कल्क कफातीसार को हरै है॥ कृमिशत्रादि॥ बायबिड़ंग, बच

बेलफल, रस, धनियां, कायफल इन्हों का काढ़ा कफाधिक अतीसारको हरैहै ॥ पूतिकादि ॥ करंज, शुंठि, मिरच, पिपली, बेलफल चीता, पाढ़ा, अनार, हिंग इन्हों का कल्क कफातीसार को नाशै ॥ गो कंटकादि काढ़ा ॥ गोखुरू, कांगनी, कटैली इन्हों का काढ़ा आमातीसार को हरै दीपन है, पाचन है ॥ चव्यादि काढ़ा ॥ चवक अतीस, कूट, बेलफल, शुंठि, कुड़ाकी छाल, इंद्रयव, हरीतकी, शुंठि इन्होंका काढ़ा छर्दि को व कफातीसार को हरै है ॥ कणादिचूर्ण ॥ पाढ़ा, वच, शुंठि, मिरच, पिपली, कूट, कटुकी इन्हों का चूर्ण गरम जलके संगलेय कफातीसारको हरै है ॥ हिंग्वादि ॥ हिंग, सेंधालवण शुंठि, मिरच, पिपली, हरीतकी, अतीस, वच इन्होंका चूर्ण गरम जलकेसंग लेय कफातीसार को हरैहै ॥ बबूलादियोग ॥ बबूल के पान, जीरा, स्याहजीरा इन्होंका कल्क मांशे १० रात्री में खवावे कफातीसार जावै ॥ पथ्यादि चूर्ण ॥ हरीतकी, पाढ़ा, वच, कूट, चीता कटुकी इन्होंका चूर्ण गरम जलके संगलेवै कफातीसार जावै ॥ भयादिचूर्ण ॥ हरीतकी, अतीस, हिंग, सेंधानिमक, शुंठि, मिरच, पिपली इन्होंका चूर्ण गरम जल संगलेवै कफातीसार को नाश करै अथवा छोटीहड़, कालानिमक, हिंग, सेंधानिमक, अतीस, बच इन्हों का चूर्ण गरम जलके संग कफातीसार को हरै है ॥ शुंठीपुटपाक ॥ शुंठी को बारीक चूर्ण करि जलसे पीसै फेर गोला बनाय एरंडके पत्तोंका कल्कसे लपेटै पीछे बेलपत्र के पत्तों के कल्क से लपेटै पीछे सूतसे लपेटै पीछे माटी गारासे लपेटै पीछे कोमल अग्नि से पकावै पीछे शीतल होने पर २ माशा शहत युत ४ तोले तक्र के संगलेवै यह उग्र अतीसारको व सूजनको व कासको हरैहै और कांति अग्निको वढ़ावेहै ॥ त्रिदोषअतीसारनिदान ॥ जिसका मल शूकरके मांस सदृश हो और अनेक रूप दीखै और तंद्रा, मोह, तृषा शोक, भ्रम ये बातें बालक व वृद्ध व स्त्री के होयँ तो असाध्य जानिये ॥ कुटजावलेह ॥ कुड़ाकी छालका काढ़ा करि बस्त्र से छानि घन रूप करि तिसमें अतीस चूर्ण घालि पुनः पकावै इसको चाटै यहसन्निपातज अतीसारको हरैहै और कोइक वैद्योंका यह मतहै कि इस

अवलेहमें कषायसे अष्ट मांश अतीस रजगेरै और कोइक वैद्यचतुर्थांश अतीस रज मिलावे हैं ॥समंगादि ॥ चिकणा, अतीस, नागरमोथा, शुंठि, बाला, धौंकेफूल, कुड़ाकी छाल, इंद्रयव, बेलफल इन्हों का काढ़ा सर्वअतीसार को हरैहै ॥ पंचमूलीबलादि काढ़ा ॥ पंचमूल, चिकणा, बेलफल, गिलोय, नागरमोथा, शुंठि, पाढ़ा, चिरायता बाला, कुड़ाकीछाल, इंद्रयव इन्होंकाकाढ़ा सन्निपातज अतीसारको व ज्वरको व छर्दिको व शूलको व श्वासको व कासकोहरैहै ॥ पंचमूलयोजना ॥ पित्तातीसार में लघु पंचमूल बरतै और बातातीसार में वृहत्पंचमूल बरतै ॥ कुटजपुटपाक ॥ शूलरहितपकाहुआ पुरानाअतीसारको कुटज पुटपाक से हरै दीप्त अग्नि वालाको ताजी कुड़ाकी छालकोचावलके धोवनसे पीस गोला बनाय जामुनके पत्तोंसेवेष्टन करि फिर सूतसे बेष्टन करि फेरि घन गारासे लेपन करि अग्नि में तपाय शीतल होनेपर रस निचोड़ शहत में मिलाय अतीसारी को देवे यह सर्वातीसारको हरैहै यह कृष्णात्रेयका मतहै ॥ सूतादिबटी ॥ पाराभस्म, सोनाभस्म, तांबाभस्म, ये बराबर भाग इन तीनों के सम खैरसार, मोचरस मिलाय फिर इन्होंको शाल्मली रस में २ पहर तक खरल करै फिर चना समान गोली बनावे जीरा चूर्णके संगखावेसन्निपातजअतीसारको व ज्वरातीसारकोनाशकरैनिश्चय॥ चतुः समाबटी ॥ हरीतकी, शुंठि, नागरमोथा, गुड़ येसबबराबरले पीस गोली बनावे यहगोली सन्निपातजअतीसारकोव आमातीसारको व अनाहको व बिड्बन्धको वबिशूचिका वकृमिकोअरोचककोहरै और अग्निको दीप्तकरै ॥ तृप्तिसागररस ॥ पाराभस्म १ भाग गन्धक २ भाग अभ्रक ४ चारभाग ये पदार्थ एकदिन कटु तेलमें खरलकरै फिर पात्रमें घालि चूल्हे पर चढ़ाय बालुका यन्त्रसे पकावे फिर कनेरकी जड़के रसमें एकपहरतक पकावे फिर इसमें जवाखार, सज्जीखार सुहागा खार, पाँचोलवण, चीता, जीरा, स्याहजीरा, बायबिड़ंग इन्होंके चूर्ण तीन तीन माशे प्रत्येक मिलावै यह १ माशा खावै सन्निपातातीसारको व संग्रहणी को व ज्वरको नाशकरै ॥ आनन्दभैरवी ॥ कुटकी, बेलफल, गिरी, गिलोय इन्होंके चूर्णको दहीके संग

पीसे फिर गोली बांधे ये गोली अतीसार दारुण को नाशै॥ शोक-भयातीसारनिदान॥ पुत्र, मित्र, स्त्री, धन, आदि के नाशसे उपजा जो शोक वह उदरकी अग्निको मन्दकरै और शरीर के बाहर का तेज उदरमें जाके रक्त बिगाड़ै है वह रक्त विष्ठा से मिलिके अथवा न मिलके गुदा के द्वारा गुंजा सदृश निकले तो उसको शोकातीसार जानिये वह शोक दूर होनेही से जाता है और उसीतरह किसी प्रकारके भयसे उपजा जो भयातीसार उसको भी जानलो ये अतीसार कष्ट साध्य हैं॥ चिकित्सा॥ भयजव शोकजअतीसार बातातीसार समान होयहै इन्हों में बातनाशक क्रियाकरै अथवा आनन्द व आश्वासन करनेवाली क्रिया करावै॥ पृश्निपर्ण्यादि॥ पृश्निपर्णी, वाला, बेलफल, धनियाँ, कोष्ट, शुंठि, वायविड़ंग, अतीस नागरमोथा, देवदारु, पाढ़ा, कुड़ाछाल इन्होंका काढ़ा मिरच चूर्ण युत शोकातीसारको नाशैहै॥ आमातसारनिदान॥ जिस पुरुष के प्रथम भोजनका अजीर्ण हो वह पीछे गरिष्ट वस्तुखाय तो उसके कोष्टमें बात पित्त कफ ये तीनों जायकरि धातुके समूह को व मल को बिगाड़ै हैं वहमल शूलसंयुक्त दुर्गन्धि लिये अनेक प्रकारका गुदा के द्वारा निकलता है उस को वैद्य आमातीसार कहते हैं॥ चिकित्सा॥ आमके पकनेविना कोई क्रिया हितनहीं और आमातीसारमें लंघन हितहै आदिमें पीछे पाचन देवै अथवा लंघनकेपीछे सद्रव हलका पथ्य देवै॥ सिद्धांत॥ बलवान् रोगी को आमातीसारमें लंघन समान कोई औषधि नहीं है यह लंघनदोष समूहको शांत व पकावे है और आमातीसार में पहिले औषध दे दस्त बन्धनकरै जो आदिमें बंध करेतो सूजन पाण्डु, प्लीहा, कुष्ठ, गुल्म उदरज्वर, दण्डक, आलसक, अध्मानये रोगउपजैहैं और संग्रहणी को व बवासीर को पैदा करैहै इसवास्तेआमको आदिमें स्तम्भन करै नहीं जो स्तम्भन करे तो मृत्युहोवै॥ धान्यकादि॥ धनियां शुंठि इन्हों का काढ़ा एरण्डजड़ चूर्ण युत आमातीसारको हरै और दीपन पाचनहै॥ अभया रेचन॥ अल्पातीसारमेंवाशूलयुतअतीसार में हरीतकी, पिपली इन्हों का काढ़ादेवै रेचन करवावै॥ विड़ंगादि॥

दीप्ताग्निपुरुषबहुत दोषयुक्तबद्धरूपदस्त लगाकरे तिसको बिड़ंग त्रिफला, पिपली इन्होंका काढ़ा देरेचन करावै॥ क्षुधितावर॥ क्षुधा कर पीड़ित को अतीसार रोग उपजै तो मारुत नाशक औषध दे दीपन औषधदेवै॥ देवदारुजलपान॥ जोअतिगांठयुतदस्तआवेतो पहिले बमन करवावे पीछे लंघन अथवा देवदारु, बच, कोष्ठ शुंठि, अतीस, हरीतकी इन्होंमें दूध सिद्ध पीवैसर्व अजीर्णजअतीसार नाशहोवै॥ चित्रकादि॥ चीता, पिपलामूल, बच, कटुकी, पाढ़ा इंद्रयव, हरीतकी, शुंठि, इन्होंका काढ़ा आमातीसार को व बातातीसारको व कफाती सारको व पित्ताती सारकोहरैहै॥ विश्वादियोग॥ शुंठि, हरीतकी, नागरमोथा, बच, अतीस, देवदारु, अथवा शुंठि नागरमोथा, अतीस, अथवा शुंठि, नागरमोथा, अतीस, गिलोयये तीनों काढ़े आमाती सारको हरैहैं इसमें सन्देह नहींहै॥ पथ्यादि॥ हरीतकी, दारुहल्दी, बच, नागरमोथा, अतीस इन्हों का काढ़ा आमातीसारको हरैहै॥ एरण्डादिरस॥ एरण्ड रसमें शुंठिको पीस गरम करिदेवै यह आमातीसार को व शूलको हरै है और दीपन पाचनहै॥शुंठ्यादिचूर्ण॥ शुंठि, अतीस, हिंगभूनी, नागरमोथा, इन्द्रयव चीता इन्हों का चूर्ण गरम जलसंग लेय आमातीसार को हरै है। हरीतक्यादिचूर्ण॥ हरीतकी, अतीस, सेंधानिमक, कालानिमक, बच, हिंगइन्होंकाचूर्णगरमजलकेसंगलेवैआमातीसारजावै और ग्राही है अग्निकोदीप्तकरैहै॥ शुंठीपुटपाक॥ शुंठिकाचूर्ण कलुकघृतमें भिगोय करिएरण्डके पत्तोंसे वेष्टनकरि फिरसूतसे फिरगारा से फिरमन्द २ अग्निमें पकावै शीतल होनेपर रस निचोड़ मिश्री के संग प्रभात में चाटै यह आमातीसारकी पीड़ाको व कुक्षि शूलको व आमशूल को व मल बद्धता को व आध्मानको व अतीसारको नाशैहै॥ शुंठ्यादिचूर्ण॥ शुंठि, जीरा, सेंधा, हिंग, जायफल, आमगुठली, बड़ पान भुइतर बड़ इन्होंका चूर्ण बस्त्रसे छानि दहीमें गोली बांधै फिरदही के संगही गोली खावे यह आमातीसार को व अग्नि मन्दता को व अरुचिको जलदी नाशैहै॥ तीसराशुंठ्यादिचूर्ण॥ सतुवाशुंठि, मिरच भांग ये सम भागले इन्होंका चूर्ण शीतल जल के संग खावै शूल

को वा आमातीसारको हरै पथ्य दहीचावलखावै ॥ सखरुगडचूर्ण ॥ भांग, खांड़, सारवरुएड, जीरा इन्होंकाचूर्ण दही संगलेवै आमातीसारको व रक्तातीसार को हरै॥ यवान्यादि ॥ अजमान, शुंठि, वाला धनियां, अतीस,नागरमोथा,नालबेल, ह्रिपर्णी इन्होंकाकाढ़ा दीपन पाचनहै॥ कलिंगादि ॥ कुड़ाकीछाल, अतीस, हिंग, हरीतकी,सांभर नोन, वच इन्होंकाकाढ़ा शूलको व विड्वंधकोहरै और दीपनपाचन है॥ त्रिकण्टादियवकांजी ॥ गोखुरू, एरण्डमूल, बेलफल ये पदार्थ मिलाय यवकीकांजी आमातीसारको व शूलकोहरै अथवा हरीतकी शहत युत अतीसारकोहरै॥ ह्रीवेरादि॥ वाला, अदरख, नागरमोथा भद्रमोथा, कालावाला इन्होंका काढ़ा अतीसारज तृषाको हरै है॥ त्र्यूषणादि ॥ शुंठि, मिरच, पिंपली, अतीस, हिंग, वच, संचलनिमक हरीतकी इन्होंकाचूर्ण गरमजलसंग आमातीसारकोहरैहै॥ पाढादि॥ पाढ़ा, हिंग, अजमोद, वच, पिपली, पिपलामूल, चवक, चीता,शुंठि नागरमोथा इन्होंकाचूर्ण गरमजलकेसंग सैंधवयुक्त आमातीसारको हरै है॥ पयमुस्तायोग॥ दूध १ भाग, जल ३ भाग, नागरमोथा २० भाग इन्हों को पकाय दूध मात्ररहै तब उतार पीवे यह आमातीसारको व शूलको हरैहै॥ आमपक्कातीसारलक्षण॥ जो मल जल में तिरै और आम जल में डूबजाय और दुर्गंध युक्त सपेदाई लिये चिकनाहो तिसे आम कहेहैं इनलक्षणोंसे विपरीतहो और हलका वह आमपक्क कहावे है॥ असाध्यलक्षण ॥ जामुनकाफल पकाहुआ समान हो अर्थात् सचिक्कण श्याम हो और श्याम रोहित हो अथवा घृत, तेल, बसा,मज्जा, बेशवार इन्हों समानहो अथवा दही मांसधोवन जल समान हो अथवा काला, नीला, अरुण रंगका हो अथवा मलाहुआ सुरमा समानहो अथवा अनेकवर्ण वालाहो अथवा धातुस्नेह की चन्द्रिका युत हो अथवा गांठ युक्तहो और दुर्गंधि युत हो अथवा मस्तक स्नेह समानहो ऐसे प्रकारका दस्त वालारोगी असाध्य होयहै और तृषा, दाह, अरुचि, श्वास,हुचकी पसलीशूल, मूर्च्छा इन्हों युक्त अतीसार वाला असाध्य होहै और जिस अतीसारकी गुदा पकजावै और मन किसी बातमें लगे नहीं

और ज्यादा बकवाद करै यह भी असाध्य होय है इन्हों को वैद्य त्याग देवै और जिसकी गुदा बहेजावे और बलक्षीणहो और अत्यंत सूजन युतहो और गुदापै फुनसियां निकस आवैं और अग्निमंद हो ऐसा अतीसार वाला निश्चय मरै ॥ उपद्रव ॥ सूजन, शूल, ज्वर तृषा, श्वास, कास, अरुचि, छर्दि, मूर्च्छा, हुचकी ये उपद्रव अतीसारके देखि वैद्य त्यागदेवै। और श्वास, शूल तृषाइन्होंसे युतको और ज्वर पीड़ित के वृद्ध अवस्था में अतीसारहो तो निश्चयमरै लोध्रादिचूर्ण ॥ लोध, धौकेफूल, बेलफल, नागरमोथा, आमकी गुठली कुड़ाकी छाल इन्होंका चूर्ण महिषी तक्रसंग पियाय पक्वातीसार को हरैहै ॥ पद्माादिचूर्ण ॥ पद्माख, मजीठ, मुलेठी, बेलफल, गूलरइन्हों काचूर्ण शहत संग खावै अतीसारकोहरै ॥ कुटजादि॥ कुड़ाकीछाल अतीस इन्हों का चूर्ण शहद संगलेय अतीसार को व रक्त पित्तको हरैहै ॥ अवष्ठादिगण ॥ पाढ़ा, धौकेफूल, मजीठ, लोध, कमलकेसर महुआ, बेलफल इन्होंका काढ़ा पक्वातीसारको हरै है ॥ समंगादि चूर्ण ॥ लज्जावंती, धौकेफूल, मजीठ, लोध अथवा मोचरस, लोध, अनार, अनारछाल अथवा आमकी गुठली, लोध, बेलफलगिरी अथवा मुलहठी, अदरख, दीर्घदंती, दालचीनी ये चारोंचूर्णचावलके धोवन संगदेय व शहद संगदेय अतीसारकोहरैहै ॥ कंचटादिचूर्ण ॥ गजपिपली, जामुन, अनार, शृङ्गाटक पान, बेलफल, बर्हिष्ट, नागरमोथा, शुंठ इन्होंका चूर्ण गंगानदी बहतीहुईको बन्दकरै अतीसार की कौन कथा है ॥ अंकोटकल्क ॥ अंकोट जड़ का कल्क शहत युत चावल धोवन संगलेय अतीसारकोनाशकरै दृष्टांत।जैसे सेतुबहती नदी को तैसे ॥ मोचरसादि चूर्ण ॥ मोचरस, नागरमोथा, शुंठि, पाढ़ा अरलु, धौकेफूल इन्होंकाचूर्ण मट्ठाकेसंग दारुणअतीसारकोनाशै है मुस्तादिचूर्ण ॥ नागरमोथा, मोचरस, लोध, धौकेफूल, बेलफल, इन्द्रयव इन्होंकाचूर्ण गुड़युत तक्रसंगलेय दारुणअतीसारकोनाशैहै॥ विश्वादिवटी ॥ शुंठि, जीरा, सैंधव, हिंग, जायफल, आमकी गुठली शंखटुकड़े इन्होंको दहीमें पीसैफेर कछुक अग्निपै पकायगोली १० माशे की बनावै ये गोली पक्वातीसार को व अपक्वातीसार को व

शूलको व संग्रहणीको व चिरकालके अतीसारको व नवीन अतीसारको हरैहै ॥ बटप्ररोहयोग ॥ वड़का प्ररोहको पीसि चावलधोवन सेफेरतक संगपीवै अतीसार नाशहोवै॥कुटजावलेह॥आलीकुड़ाकी छाल ४०० तोलेजल १०२४ तोलेमें पकाय चतुर्थांश रक्खै फेर वस्त्रसेछानि फेर पकावै पीछे इसमें लज्जावंती ४तोले धौंकेफूल ४ तोले बेलफल ४ तोले पाढ़ा ४ तोले मोचरस ४तोले नागरमोथा ४ तोले अतीस ४ तोले इन्हों को मिलाय पकावै जब तक दर्वी कचीये तब तक यह जलके संग व बकरी के दूधसंग मंडसंगलेय नानावर्ण अतीसार को व शूलको व रक्त प्रदरको व बवासीर को हरे है ॥ रालयोग ॥ रालमिश्री युत पुराना अतीसार को नाशै है । नाभिलेपणीय आमला, रालबाल इन्होंको अदरखके अर्कमें पीसि नाभिमण्डलके लेपै यह नदी वेगोपम अतीसारकोहरैहै ॥ पाढ़ादि योग ॥ पाढ़ा गोके दहीमें पीसि अथवा आंबकीगुठलीदहीमें पीसि नाभिमंडलके लेपकरि अतीसारकोनाशैहै ॥ जातीफलादि ॥ जायफल, शुंठि,रालकेनी, खजूर ये प्रत्येक छः छः माशे सब के समान रानशेणीकी राख ये सबएकत्र करि प्रभात व शामदोबेल १॥माशा चावल धोवन जलकेसंग लिह्निया जीर्णातीसारको व रक्तातीसार को व शूलकोहरैहे ॥ रक्तातीसारनिदान ॥ जोपित्तातीसारमेंपित्तकारकद्रव्य अत्यन्त खावै उसके उग्ररक्तातीसारहोहै ॥ यष्ट्यादिकाढ़ा॥ मुलहठी,खांड़,लोध,महुआ, नीलकमल इन्होंकाकाढ़ाबकरीकादूध घालि सिद्धकिया रक्तातीसारको नाशकरैहे इसमें कोइकसंदेह नहीं यहपरमोत्तमहे ॥ कुटजादि ॥ कुड़ाछाल,अतीस,बेलफल,बाला, रक्त चंदन इन्होंकाकाढ़ाआमातीसारको व दाहको व रक्तशूलको व सर्वातीसारकोनाशैहे॥वत्सकादिकाढ़ा ॥ कुड़ाछाल,अतीस,बेलफल,बाला नागरमोथा इन्होंकाकाढ़ाआम सम्बन्धी शूलको व रक्तातीसारको व पुरातन अतीसारकोहरैहै ॥ तंडुलजलयोग ॥ छोटीहड़जीरामेंदोनों कछुक भूने इन्होंका चूर्ण चावलके धोवनके संगलेय अतीसारको हरैहे ॥ डालिंबादि ॥अनारकीछाल कुड़ाकीछालइन्होंकाकाढ़ाशहत युत रक्तातिसारको हरैहै ॥ चन्दनादियोग ॥ चावलकेधोवनमेंचन्दन

मिश्री मिलाय पीवै यह रक्तातीसारको व तृषाको व दाहको व मोह कोनाशैहै ॥ ह्रीवेरादि ॥ बाला, अतीस, नागरमोथा, बेलफल, धनियां कुड़ाछाल, मंजीठ, धौकेफूल, लोध, शुंठि इन्होंकाकाढ़ा दीपन पाचनहै और अरुचिको व आमको व मलबद्धताको व शूलको व रक्तातीसारको व सज्वर अतीसार को नाशैहै ॥ विल्वादियोग ॥ बेलफल बकरीदूधमें सिद्ध खांड़ मोचरस मिलायपीवै अथवा कुड़ाकीछाल चूर्ण मिलाय पीवै यह रक्तातीसार को नाशैहै ॥ कलिंग यव षट्क ॥ हरीतकी, अतीस, संचलनोन, हिंग, कुड़ा की छाल, यव इन्हों का चूर्ण रक्तातीसारको व शूलको हरैहै ॥ कुटजक्षीर ॥ कुड़ाकीछाल ८ तोले चौगुने जलमें पकाय चतुर्थांश रक्खै पीछे ८ तोला बकरीका दूध मिलावे शीतल होने पर ८ माशे शहतमिलाय पीवै यहरक्तातीसारको नाशैहै ॥ रसांजनादि चूर्ण ॥ रसोत, अतीस, इन्द्रयव, कुड़ा कीछाल, धौकेफूल, शुंठि इन्होंको शहत संयुक्त चावल धोवन जलके संगलेवै दारुण रक्तातीसार नाशहोवै ॥ कुटजावलेह ॥ कुड़ाकी छाल ४ तोले आठगुना जलमें पकाय अष्टमांश रक्खै पीछे अनार कारस मिलाय फिर पकावे कुड़ा काढ़ा समान अनार समान है फिर शीतल होनेपर १०माशे तक्र के संग पीवै रक्तातीसार नाश होवै और मरण पाय भी जीवै ॥ सल्लक्यादिस्वरस ॥ हरफारेवड़ी बेरी, जामन, चारोली, आंब, अर्ज्जुन इन्हों की छाल रस दूधशहत घृत रक्तातीसार को नाशै ॥ गुड़विल्वयोग ॥ बेलफल गुड़संयुक्तखावै रक्तातीसार, आम, शूल, अवष्टम्भ, कुक्षिरोग इन्होंका नाश होवै ॥ शतावरीकल्क ॥ शतावरी के कल्क को खाय ऊपर दूध पीवै अथवा शतावरी कल्क में घृत को सिद्धकरि खावै रक्तातीसार नाश होवै ॥ बलादिकल्क ॥ कालेतिल १ भाग, खांड़ २ भाग, बकरीकादूध ४ भाग इन्होंको मिलायपीवे रक्तातीसार नाशहोय ॥ नवनीतावलेह ॥ गौके दूध में नवनीत घृत गौका व शहद व मिश्री मिलाय पीवै यह रक्तातीसार को बन्द करै ॥ शाल्मलिपुष्पयोग ॥ शाल्मलिवृक्षके आलेफूलोंको पीस पुटपाककरि ऊखलमेंकूटि ४ तोलेरस गरमदूध में काढ़े फेर १२ तोले घृत मिलावै फेर १२ तोले तेल मिलावै फेर

मुलहठीका कल्क १२ तोले मिलावै फेर शहद १२ तोले मिलावै इन को मिलाय देवै यह रक्तातीसार को नाशकरै पथ्य दूध भात खावै गुदपाक ॥ बहुत दस्तहोने से जिसकागुदा पित्तकरिकै जलै वा पक जावै तब सेचन व प्रक्षालन करवावै ॥ पटोलादि काढा गुदक्षालनार्थ ॥ परवल, मुलहठी, महुवाकी छाल इन्होंका काढ़ा शीतलकरि गुदा को सेचन करै व प्रक्षालन करै ॥ दूसरा ॥ बकरीका दूध शहद खांड़युत इस के सेचन से वा प्रक्षालन से व पान से गुदा की दाह व पाक नाशहोवै ॥ चांगेरीघृत ॥ गुदाकी कांच बाहर निकसना नाश वास्ते चांगेरी घृत बरतै और ज्यादा कांच गुदा की निकले तो व ज्यादा पीड़ा हो तो मूषा के मांस से स्वेदन गुदा को करावै मूषकमांसस्वेद ॥ गुदभ्रंश में मूषा के मांसका बफारादेवै व मूषा के मांसकोबांधै अथवा गुदभ्रंशमेंशंख टुकड़े,मूषामांस इन्होंकोपकाय तेल लवणयुतकरि इससे पसीना गुदाके दिवावै जल्दीगुदभ्रंश नाश होवै ॥ गोधूमचूर्णस्वेद ॥ गेहूँके चून को जलमें ओसनकरिघृत मिलाय गोलाकरि अग्निसे तपाय २ स्वेदनकरै तो गुदभ्रंश जावै गुदांतप्रवेशन ॥ गुदभ्रंश में गुदा को स्नेहसे चुपड़ि २ अंतः प्रवेश करै पीछे मूषा के मांस से स्वेदन करै यह उपाय गुदभ्रंश को हरै घृत ॥ चूका, बेरी, निंबु, जवाखार, शुंठि इन्हों के काढ़ा में घृत को सिद्धकरि पानकरै तो गुदभ्रंशजावै ॥ कमलपत्रलक्षण ॥ कोमलकमल का पान खांड़युतखावै तिसके गुद निर्गम नहीं होवै ॥ ज्वरातीसार चिकित्सा ॥ जो औषध ज्वरमें कही हैं व अतीसारमें कही हैं तिन्होंसे ज्वरातीसार में कर्म न करै और नवीन क्रियाहै सो कहतेहैं ॥ उत्पल षष्टिक ॥ ज्वरातीसार में लंघन ज्यादा करावै पीछे कमलकंद,साँठीं चावल, धानकीखील इन्होंका माड़ देवै ॥ दाड़िमावलेह ॥ अनाररस १ सेर जल ५ सेर इन्होंका चतुर्थांश काढ़ाकरै इसमें खांड़ १ सेर मिलावै, शुंठि ४ तोला पिपलामूल ४ तोला पिपली ४ तोला धनियां ४ तोला अजमान ४तोला जावित्री ४तोला कासिवदा४तोला जीरा४तोला बंशलोचन ४तोला भांग ४तोला निंबपत्ते ४तोला लज्जावंती ४ तोला कुड़ाछाल ४ तोला शालमली ४ तोला अरला

४ तोला अतीस ४ तोला पाढ़ा ४ तोला लवंग ४ तोला घृत १ सेर शहद १ सेर सबको मिलाय अवलेहकरै यह ज्वरातीसार को नाशै कणादिकाढ़ा ॥ पिपली, गजपिपली, नागरमोथा इन्हों का काढ़ा शहद खांड़ युतप्यावै तृषा व छर्दि नाशहोवै ॥ पाढ़ादिकाढ़ा ॥ पाढ़ा इन्द्रयव, चिरायता, नागरमोथा, पित्तपापड़ा इन्हों का काढ़ाआमातीसार को व ज्वरको नाशकरै ॥ नागरादिकाढ़ा ॥ शुंठि,अतीस,नागरमोथा, चिरायता, गिलोय, कुड़ाकीछाल इन्होंकाकाढ़ा सर्बज्वरोंको व सर्ब अतीसारों को हरै ॥ कलिंगादि ॥ कुड़ाकीछाल, अतीस,शुंठि चिरायता, बाला इन्होंकाकाढ़ा ज्वरातीसार संबंधी संताप को नाश करै ॥ गुडूच्यादि ॥ गिलोय,अतीस,धनियां,शुंठि,बेलफल,नागरमोथा बाला,पाढ़ा, कुड़ाछाल, चिरायता, रक्तचन्दन, कालाबाला, पित्तपापड़ा इन्हों का काढ़ा शहद मिलाय पीवै यह ज्वरातीसार को व हल्लास को व अरोचक को व छर्दि को व पिपासा को व दाह को नाश करै है ॥ बत्सकादि ॥ इन्द्रयव, देवदारु, कटुकी, गजपिपली इन्होंका काढ़ा अथवा गोखुरू, पिपली, धनियां, बेलफल, पाढ़ा, अजमान इन्हों का काढ़ा ज्वरातीसार को व दाह को नाशै है ॥ उशीरादि ॥ बाला, कालाबाला, नागरमोथा, धनियां, बेलफल, मंजीठ धौकेफूल, लोध, शुंठि इन्होंकाकाढ़ा दीपन पाचन है और अरुचिको व आमातीसारको व बिड्बंधको व शूलको व रक्तातीसारको व ज्वरातीसार को व अतीसार को हरै है ॥ बिल्वादि ॥ बेलफल, बाला, चिरायता, गिलोय, धनियां, शुंठि,कुड़ाछाल, नागरमोथा, आंवला इन्होंका काढ़ा ज्वरातीसार को व शूलको हरैहै ॥ पंचमूलादि ॥ पंचमूल,कटैली,नागरमोथा, बाला, कुड़ाछाल, इन्द्रयव, बाला, कटुकी गिलोय, शुंठि, बेलफल इन्होंकाकाढ़ा, ज्वरातीसार को व बातको व कासको व श्वासको व शूलकोहरैहै ॥ अरलवादि ॥ अरलू,अतीस नागरमोथा,शुंठि,बेलफल, अनार इन्होंका काढ़ा सर्वअतीसार को हरैहै ॥ उत्पलादि ॥ कोष्ट,अनारछाल, कमलकेशर इन्होंकोपीसचावलधोवनसेपीवै ज्वरातीसारनाशहोवै ॥ व्योषादिचूर्ण ॥ शुंठि, मिरच पिपली,इन्द्रयव,निम्ब,चिरायता,भंगरा,चीता,कटुकी,पाढ़ा, दारुह-

लदी, अतीस सबसमानभाग सबकेसमान कुड़ाकीछाल सबकोएक-त्रकरि चावलधोवन जलसंगपीवै अथवा शहतमेंअवलेहकरिचाटै यहपाचनहै और ग्राही है और तृषा, अरुचि, ज्वरातीसार, कामला संग्रहणी, गुल्म, प्लीहा, सूजन, पांडु, प्रमेह इन्हों को हरै है ॥ इसबगोलयोग ॥ इसबगोल की फंकी ज्वरातीसारको हरै है यह अनुभवसे लिखाहै और लाजा, सांठीभात, कमलकन्द इन्होंका मंठ ज्वरातीसार में हितहै ॥ पृश्निपर्ण्यादिपेया ॥ पृश्निपर्णी, बला, बेलफल, शुंठि कमल धनियां, अनारकारस इन्होंकी पेया ज्वरातीसार शूलकोहरै ॥ विजया योग ॥ एरण्डमूल, बेलफल, यव, गोखुरू इन्होंको पेयामें भांग अथवा मोचरस शहद मिलाय पीवै यह उदररोगको व सर्बशूलको व विषमज्वरको व कासको व हुचकीको नाशैहै ॥ पंचामृतपर्पटीरस ॥ पारा लोहभस्म, तांबाभस्म, अभ्रकभस्म येसब बराबर भाग, गंधक२भाग इन्हों को लोहा के पात्र में घालि बड़बेरी के काष्ठ की अग्नि से कोमलपाकरस बनावै पीछे रसको केला के पत्ते पै लेपन करै जब पपड़ी जमै तब उतारले यहरस अग्नि को दीप्तकरै है और ज्वरातीसारको व कासको व कामला को व पाण्डुको व प्रमेह को हरैहै और मलबद्धमें व जीर्णज्वरमें बकरीका मूत्र४तोलेकेसङ्ग यहरस देवै और तेल खट्टापदार्थ नहीं खावै ॥ दरदादिपुटपाक ॥ सिंगरफ१भाग अफीम १॥ भाग, सुहागा खार आधाभाग, जायफल आधा भाग इन्होंको पीसि गोलाकरि पुटपाककरै शीतलहोने पर मूंगके समान गौ के दूध के संग खावै यह ज्वरातीसार को व अग्नि मन्दको व निन्द नाशको व अरुचिको नाशै और बल, पुष्टिको बधावै ॥ दुग्ध योग ॥ आधाजल आधा दूध एकत्रकरि पकावै जलजलाकरि दूध मात्र रहै तब उतारले शीतलकरि पीवै यह बद्धबातको व शूलको व प्रवाहिका को व रक्त पित्तको व तृषाको व अतीसारको व रक्त विकारकोहितहै अमृतसमहै ॥ कट्फलादि ॥ कायफल, मुलहठी, लोध अनारकीछाल इन्होंकाचूर्ण चावल जल संग खाय बात पित्तातीसारकोहरै है ॥ पित्तकफाद्यतीसार निदान ॥ दोषोंके लक्षण मिले वह द्विदोषज अतीसारहोय है तिसकी चिकित्सा कहते हैं ॥ मुस्तादि ॥

नागरमोथा, अतीस, मूर्वा, बच, कुड़ाछाल इन्हों का काढ़ा शहद संयुक्त पित्तकफातीसारको हरैहै ॥ समंगादि ॥ लज्जावंती, धौकेफूल बेलफल, आमकी गुठली, कमलकेशर इन्होंका काढ़ा अथवा बेल-फल, मोचरस, लोध, कुड़ाकीछाल, इन्द्रयव इन्होंका काढ़ाअथवा चूर्ण चावल धोवनके संगलेय कफपित्तातीसारकोहरैहै ॥ वातकफा-तीसार निदान ॥ स्वादु, कटुरस सेवनसे बात कफ कोपकरि अती-सारको पैदाकरे अग्निको मन्दकरके वह अतीसार में द्रवमल हो और झाग सहितहो और आम गन्धिकहो व शब्द सहित दस्तहो मूर्च्छा, भ्रम, ग्लानि येभी हों और सक्थि, कमर, गोड़ा, मगर हाड़ इन्होंमें शूलहो लक्षण वात कफातीसार केहैं ॥ चित्रकादि ॥ चीता अतीस, नागरमोथा, बला, बेलफल, शुंठि, इन्द्रयव, कुड़ाछाल इन्हों का काढ़ा बात कफातीसार कोहरैहै ॥ उपचारक्रम ॥ जो बातातीसार में पाचनवग्राही कहते हैं वे इसमें भी प्रयुक्त करने योग्य हैं ॥ वि-ल्वादि ॥ बेलफल, आमकी गुठलीका रस, खांड़ शहत संयुक्त करि पीवै यह छर्दिको व अतीसारको हरै ॥ दृष्टान्त ॥ जैसे अग्नि घृतको ॥ प्रियंग्वादिकाढ़ा ॥ प्रियंगु, अंजना, नागरमोथा इन्हों का चूर्ण कि-म्बा कल्क शहद युत चावल धोवन जलके सङ्गलेवै यह तृषा को व छर्दि व अतीसार को नाशै ॥ आम्रादि ॥ आमकी गुठलीकीगिरी बेलफल इन्हों का काढ़ा शहद खांड़ संयुक्त करि पीवै यह छर्दि संयुक्त अतीसारको नाशै ॥ मुद्गकषाय ॥ भुनीहुई मूंगोंका व धानकी खीलकाकाढ़ा खाँड़ शहद युत छर्दिको व अतीसारको व तृषाको व दाहको व ज्वरको व भ्रमको नाशकरैहै ॥ पटोलादि ॥ परवल, इन्द्रयव धनियां इन्होंका काढ़ा शीतलकिया शहद खांड़ युक्तकरि पीवै छर्दि को व अतीसारकोहरैहै ॥ जंब्वादिकाढ़ा ॥ जामन, आंब, पल्लव, बाला बड़काप्ररोह, शृङ्गाटक इन्होंकाकाढ़ा अथवा चूर्ण अथवा रस शहद युत सेवनकरै छर्दि, ज्वर, अतीसार, मूर्च्छा, तृषा, ज्यादा अतीसार इनकोहरै ॥ पुरीषातीसारावर ॥ दीप्ताग्निवालेके झागसहित मलहो ज्यादानिकसै वह राब, शुंठि, दही, घृत, तेल, दूध ये पदार्थ प्राशनक-रावै ॥ पुरीषक्षयावर ॥ दीप्ताग्निवालेके मलक्षयहो तो बला, शुंठि इन्हों

में सिद्धकिया दूध, तेल, गुड़युत प्यावै ॥ दूसराप्रकार ॥ केलाकी घड़ दही घृत मिश्रितखावै अथवा हलका अन्न भोजनकरै पुरीषक्षयमें हित है ॥ शोफातीसारी देवदार्व्यादि काढ़ा ॥ देवदारु, अतीस, पाढ़ा बायविडंग, नागरमोथा, मिरच, कुड़ा इन्होंकाकाढ़ा शोफातीसारको हरैहै जैसे समुद्रको अगस्त्यजी तैसे ॥ विड़ंगादिकाढ़ा ॥ बायबिड़ंग अतीस, नागरमोथा, देवदारु, पाढ़ा, कुड़ा, मिरच इन्होंकाकाढ़ा शोथातीसार को हरै है ॥ किराताादि ॥ चिरायता, नागरमोथा, गिलोय शुंठि, चन्दन, बाला, कुड़ा इन्होंका काढ़ा शोफातीसार को हरै है॥ पाढ़ादि ॥पाढ़ा, अतीस, कुड़ाछाल, नागरमोथा, दारुहल्दी, बायबिड़ंग मोचरस इन्होंका काढ़ा शोथातीसार को नाशै जैसे समुद्र को बड़वाग्नि ॥ शोथघ्न्यादि ॥ पुनर्नवा, इन्द्रयव, पाढ़ा, बायबिड़ंग, अतीस नागरमोथा इन्होंका काढ़ा शुंठि, मिरच, पिपली चूर्णयुत शोथातीसारको नाशैहै ॥ भस्मातीसारनिदान ॥ शीतवायुयुक्त कोष्ठकी अग्नि भोजन को पकावैनहीं और तृषार्त्तहो परन्तु जलपानकरैनहीं और मल शिथिल व चिकणा व पतला व आमयुतहो ये लक्षण भस्मातीसारकेहैं ॥ शाल्मलिचूर्ण ॥ मोचरस, अजमान, धवकेफूल, तिल, राल लोध, घृतमें इनकाचूर्णबनाय खावै भस्मातीसार नाशहोवै ॥ हिंग्वादिजलयोग ॥ हिंग, शुंठि, बाराविड़ंग, संचलनोन इन्होंका चूर्ण जल २ दोतोले संगलिया भस्मातीसार का नाशकरै ॥ रोहिण्यादिपाचन ॥ कटुकी, अतीस, पाढ़ा, बच, कूट इन्होंका काढ़ा पिये सर्वातीसारका नाशकरै ॥ ह्रीबेरादिकाढ़ा ॥ बाला, धवकेफूल, लोध, पाढ़ा, लज्जावंती कुड़ाछाल, धनियां, अतीस, नागरमोथा, गिलोय, बेलफल, शुंठि इन्होंकाकाढ़ा पुराने अतीसारको व अरुचिको व आमको व शूल को व ज्वरकोहरैहै ॥ धातक्यादि ॥ धवकेफूल, बेलफल, लोध, बाला गजपिपली इन्होंका काढ़ा शीतल किया शहद संयुक्त बालकों को देवै यह सर्वातीसार को हरै है ॥ आनन्दभैरव ॥ सिंगरफ, पारा, बचनाग, मिरच, सुहागाखार, पिपली ये पांचोंसमभाग खरलकरि चूर्ण करै यह आनन्दभैरवरसहै और १ रत्ती वा २ रत्ती बलाबल देखि प्रयोक्तकरै और रसकोशहदमें मिलाय और इन्द्रयव, कुड़ाकीछाल

के चूर्णदशमाशे के संग सन्निपातज अतीसारको हरैहै पथ्य दही चावल व गौकाघृत वा तक्रदेवै और तृषालगै तो शीतलजलप्यावै और रात्रि में भांग थोड़ीसी देवै॥ आनन्दरस॥ जायफल, सेंधव सिंगरफ, कौड़ीकी भस्म, शुंठि, वचनाग, धतूराके बीज, पिपली ये सब एकत्र खरलकरि १ रत्ती गोलीकरै ये गोली उदररोगको व बातको व शूलको व आमातीसारको व संग्रहणी व योनिरोगको नाशकरैहै॥ दाड़िमाष्टक॥ वंशलोचन १ तोले और दालचीनी, तमाल पत्र, इलायची, नागकेशर ये ३ तोले और अजमान, धनियां, जीरा पिपलामूल, शुंठि, मिरच, पिपली इन्होंकाचूर्ण ४ तोले अनार ३२ तोले मिश्री ३२ तोले सबकोमिलाय सिद्धकरै यहचूर्णकपित्थाष्टक चूर्ण के फलकीसमान फलदायक है॥ लघुगंगाधरचूर्ण॥ नागरमोथा इन्द्रयव, बेलफल, लोध, मोचरस, धवकेफूलइन्होंकाचूर्णगुड़तक्र के संगखावै यहचूर्ण सर्वातीसार को व प्रवाहिकाकोहरै है॥ वृद्ध-गंगाधरचूर्ण॥ नागरमोथा, टेंठु, शुंठि, धवकेफूल, लोध, बाला, बेल-फल, मोचरस, पाढ़ा, इन्द्रयव, कुड़ाकीछाल, आंबका बीज, अतीस लज्जावंती इन्होंकाचूर्ण शहदयुत चावलधोवन जल के संगलेय यह प्रवाहिका को व सर्वातीसारको व संग्रहणी को नाशै है यह नदीवेग समान अतीसार को बन्दकरै॥ अजमोदादिचूर्ण॥ अजमोद मोचरस, अदरख, धव के फूल इन्होंकाचूर्ण गौ के दहीयुत नदीवेग समान अतीसार को बन्दकरै॥ वृहद्दाड़िमाष्टक॥ अनार की छाल ३२ तोले खांड़ ३२ तोले पिपली ४ तोले पिपलामूल ४ तोले अज-मान ४ तोले मरीच ४ तोले धनियां ४ तोले जीरा ४ तोले शुंठि ४ तोले बंशलोचन १६ माशे दालचीनी ८ माशे इलायची ८ माशे नागकेशर ८ माशे तमालपत्र ८ माशे सबको मिलाय तय्यारकरै यह अतीसार को व क्षय को व गुल्म को व संग्रहणी को व गलग्रह को व मन्दाग्नि को व पीनसको व कासकोहरै है॥ धातक्यादिचूर्ण॥ बेलफल, धवके फूल, मोचरस, नागरमोथा, लोध, कुड़ाछाल, शुंठि इन्होंकाचूर्ण गुड़तक्र के संग खावै अतीसार नाशहोवै॥ भल्लातादि चूर्ण॥ भिलावा के दोखण्ड भुनेहुये ८ तोले शुंठि ४ तोले हरीतकी २

तोले गेहूँ ४ तोले मेथी, जीरा १ कर्षभर सिरसम ८ माशे अजमान २ तोले पिपली १ तोला हिंग १ तोला चीता १ तोला बिड़लोन १ तोला सेंधा १ तोला जीरा १ तोला इन्होंकाचूर्ण दहीकेसंगखावे सर्व्व अतीसारनाशहोवैं॥ लवुलाइचूर्ण॥ पारा, गंधक, शुंठि, मिरच, पिपली अजमान, मिरच, स्याहजीरा, संचलनोन, सेंधानोन, हिंग, बिड़लोन ये समभाग ले इनसबों की बराबर कुड़ाकीछाल सबको मिलाय चूर्णकरै यह संग्रहणी को व शूलको व आनाहवायुको व अनेक प्रकार अतीसार को हरै है॥ यवान्यादिचूर्ण॥ अजमान, पिपलामूल दालचीनी, तमालपत्र, इलायची, नागकेशर, शुंठि, मिरच, चीता बाला, जीरा, धनियां, संचलनोन ये सम भागलेवे आंबछाल, धव के फूल, पिपली, बेलफल, अनार दीप्यक ये तीनगुणे और खांड़ छःगुनी कैथ आठगुणी इन्हों को एकत्र करि चूर्ण करै यह अतीसार को व संग्रहणी को व क्षयी को व गुल्म को व गलरोग को व कासको व श्वासको व अरुचिको व हुचकी को हरै है॥ वत्सकादिघृत॥ इन्द्रयव, दारुहलदी, पिपली, शुंठि, लाख, कटुकी इन्हों में सिद्धघृत मंडयुत अतीसारको हरै॥ बिल्वतेल॥ बेलफल ४०० तोले इन्होंका काढ़ा चतुर्थांश रक्खै फेरदूध, तेलमिलायपीछे बेलफल, धवकेफूल, कोष्ट, शुंठि, रास्ना, पुनर्नवा, देवदारु, वच, नागरमोथा, लोध्र, मोचरस इन्होंका कल्कयुत करि कोमल अग्नि से पकावे जब तेल शेष रहै तब सिद्धजानै यह संग्रहणीको व बवासीर को व अतीसारको नाशै यह आत्रेयका मतहै। और जोग्रहणीमें व बवासीरमें स्नेह कहे हैं वे सब अतीसारमें भी बरतै॥ शंखोदररस॥ पारा भस्म, गन्धक, लोह, विष, बचनाग, शुंठि, मिरच, पिपली ये सम भाग निम्बरसमें खरलकरै पीछे चोपुट शंखमेंभरै फेर गारासेवेष्टन करि गजपुटमें फूंकदे पीछे शीतल होनेपर विष, बचनाग ६ रत्ती मिलावै फेर रस, जायफल, भांग, शहदके संगदेवै अतीसार में और चीता, अदरखरस, भांग, शुंठि इन्होंके चूर्णकेसंग संग्रहणी में देवै। और शहदके संग अथवा मरिच घृतके संगदेय अग्निमंदता को व क्षयको व उदररोगको हरै है। पथ्य दही, शाक, दूध, तक्र

येदेवै ॥ मूलिकाबन्ध ॥ रक्तसूत्रसे गिलोयबेलको अथवासर्पाक्षीबेल को अथवा सहदेयी जड़को कटिऊपरबांधे तो अतीसारनाशहोवै ॥ दाड़िमीवटी ॥ शुंठि, जायफल, अफीम दोगुणी, कच्चे अनारकेबीज सबकी तुल्य मिलावै इनको कच्चे अनार फलमें घालि पुटपाक में अग्निसे पकाय अनार फल सहित द्रव्यको पीस कल्ककरिगोली बनावे बेरकी गुठली समान यह गोली ८ तक्रके संगदेइ पक्वाती-सारको हरे ॥ बब्बूलादिरस ॥ मोटे बब्बूलके पत्रके रससे अथवा स्योनाकछाल के रससे अथवा कूड़ाछालके रससे पानकियेसेसर्वा-तीसार नाशहोय हैं ॥ न्यग्रोधादिपुटपाक ॥ बट, गूलर, पीपल, पायरी जलबेतस इन्होंका कल्क, सपेद तीतर पक्षी के उदरकी आंतकाढ़ि उसमें कल्कको भरि पुटपाक विधिसे पकावै शीतल होनेपर रस निचोड़ शहद मिलाय चाटै यह सर्व अतीसारोंकोहरैहै ॥ अहिफेन योग ॥ अफीमको खोपरीमें कोमल पकाइ पक्वातीसारमें देवै इससे ज्यादा कोई औषध नहीं है ॥ मुक्ताभस्मयोग ॥ मोतियोंकी भस्म १ रत्ती व आधीरत्ती को कपूरकी धूपदे जायफल के संग दोषबला-बल देखिकै देवै यह अतीसारको हरैहै ॥ जातिफलादिबटी ॥ जाय-फल, खजूर, अफीम समभाग लेवै फेर पानकी बेल के रसमें ३ रत्ती की गोली बांधे फेर ये गोली तक्र के संगखावै अतीसारको हरे ॥ दृष्टांत ॥ जैसे अग्नि साकल्यको ॥ मरीचादिबटी ॥ मरीच, खपरिया अफीम इन्हों को चावल के धोवन जलसे खरल करि गोली बांधैये गोली सर्व अतीसारको हरैं अथवा जीरा, भांग, बेलफल अफीम ये पदार्थ समभागले दही के जलकी संग गोलीबांधे ये गोली सर्व अतीसारको हरे हैं ॥ अंकोलकल्क ॥ अंकोल वृक्षकाकल्क शहद युत चावल धोवन जलके संगलेय अतीसार को व बिषको हरैहै ॥ कपित्थकल्क ॥ कैथकी गिरी, शुंठि, मिरच, पिप्ली, शहत, खांड़ इन्होंका कल्क अथवा कायफलका चूर्ण शहद युत उदरके रोगोंको हरैहै ॥ आर्द्रकुटजावलेह ॥ आली कुड़ाकीछाल १ तोला प्रमाण थोड़ीकूटी एकद्रोण प्रमाण जलमें पकाय चतुर्थांश राखै, पीछे ल-ज्जावंती ४ तोले, धौकेफूल ४ तोले, बेलफल ४ तोले, पाढ़ा ४ तोले

मोचरस ४ तोले, नागरमोथा ४ तोले, अतीस ४ तोले इन्हों को काढ़ामें गेरै पीछे अग्निपै पकावे जब तक दर्वीकचिप तब तकफेर इसको जलके संग वा बकरी दुधके संग अथवा मांड़ के संग पीवे यह सब अतीसारोंको व प्रदरको व बवासीरको व प्रबाहिका को हरैहै ॥ दाडिमपुटपाक ॥अनारके पुटपाक में पकाय रस निचोड़ि शहद संयुक्त पीवे सर्व अतीसार नाशहोवैं ॥ जातिफलादिपुटपाक ॥ जायफल, अफीम, सुहागाखार, गन्धक, जीरा ये समभागले इन्हें को कच्चे अनार के बीजोंसे पीस कल्क करै फेर इस कल्ककोअनार फलमें भरै फेर गेहूंके चूनसे अनारको वेष्टन करि अग्निपै पकावे फेर इसका रसदेवै यह दीपन पाचनहै और अतीसारकोबंधकरैहै ॥ मोचरसादिपुटपाक॥ मोचरस, अफीम, जायफल, बेलफल, गिरी इन्होंका चूर्ण बिजौराफल में भरि पुटपाक विधिसे पकावै यह रस अतीसारको हरैहै ॥ प्रबाहिकासंप्राप्ति ॥ शरीर में बायु कुपित हो और अपथ्यपदार्थ खानेवाला मनुष्य के संचित कफसेमिल अल्प पतला मल ज्यादा गुदासे गिरै तिसे प्रबाहिका कहे हैं और बात जन्य प्रवाहिकामेंशूलहोयहै और पित्तजन्य प्रबाहिकामें दाहहोयहै और कफजन्य प्रबाहिकामें कफयुतहोयहै। रक्तजन्यमें रक्त सहित मलआवै ये प्रबाहिकारुक्षवस्नेह ऐसा पदार्थसेवनसे होयहै इनका चिह्न व चिकित्सा व आमपाक अतीसारके समान जानना योग्यहै॥ अतीसारनिवृत्तिलक्षण ॥ जिसके मलआये बिना मूत्रउतरै और गुदा की पवन अच्छेप्रकारसे चलै और कोठा हलकाहो और अग्निदीप्त हो तिसके अतीसार दूरगया जानिये॥ बालबिल्वयोग ॥ बेलफल कल्क, तिलकल्क इनको दही, स्नेह, अम्लयुत भक्षणकरै यहप्रबा-हिकाको हरैहै॥ मुद्गयूषादि ॥ मूंगकायूष, रस, तक्र, धनियां, जीरा, सेंधा इन्हों को मिलादेवै यह अग्नि को दीप्तकरै है और ग्रहणी, अरुचि ज्वर, प्रबाहिका इन्हों में श्रेष्ठहै॥ बिल्वादि॥ बेलफल, मिरचइन्होंका काढ़ा गुड़ तेलयुत पानकरनेसे ३ दिनतक पुरानी प्रबाहिका नाश होयहै अथवा बेलके पत्तों के तंतू, गुड़, लोध, तेल, मिरच ये सम भाग चूर्णकरि चाटनेसे प्रबाहिका जावै है॥ मुस्तावलकादियोग॥

नागरमोथा, इन्द्रयव, मोचरस, बेलफल, धवकेफूल, लोध इन्होंका चूर्ण रईसेमथा दहीकेसंग लेय नदीबेग समान अतिसारको हरेहै॥ तैलादियोग॥ तेल, घृत, दही, शहद, अतीस, शुंठि, राब इन्हों को मिलाय पीनेसे जल्दी प्रबाहिका नाशहोयहै॥ त्र्यूषणादियोग॥ शुंठि मिरच, पिपली,त्रिफला, चीता, गजपीपली, बेलफल, काकड़ासिंगी जटामांसी, बायबिड़ंग, कटैली इन्होंका काढ़ा एकभाग, गोमूत्र ४ भाग याने ३॥ सेर इन्हों में घृत ६४ तोले सिद्धकरि ८ माशे खावे प्रबाहिका नाशहोवे॥ मुस्तादिवटी॥ नागरमोथा, मोचरस, लोध धवकेफूल, बेलफल, इन्द्रयव, अफीम, पारा, गंधक इन्होंका चूर्ण ३ रत्ती गुड़तक्र के संगखावे यह अतीसार को व प्रबाहिका को व संग्रहणीको हरे है॥ पथ्य॥ वमन, लंघन, सोवना, पुराने साठीधान यवागू, खीलकामांड़, मसूर तथा अरहरकी दालकाजल, शशा, एण हरिण,कपिंजल इन्होंके मांसकारस सबप्रकारकी छांटी मछलीसींग मछली, मधुशालिका, तेल, बकरीकादूध, बकरीका घृत, गौकादही औरमठा, गौ तथा बकरीकादही अथवा दूधकामक्खन, नवीनकेलेके फूलतथाफल,शहद,जामुनफल,गजपीपरी,अदरख,नींब,कमलजड़ बिकंकत, कैथ, मौलसिरी, बेलफल, तेन्दु, दोनोंप्रकार के खट्टे मीठे अनार, तिललक,पाढ़, चूकेकाशाक, भांग,मजीठ,जायफल, अफीम जीरा, कुड़ा, धनियां, बकायन और सब कसायलीरस दीपन तथा हलकी सब खानेकीबस्तु और नाभिके दो अंगुल नीचे तथा रीड़की जड़में अर्द्धचन्द्रके आकार दागना ये सब अतीसारमें पथ्यहैं पाणी दशांश व षोड़शांश,किंवा शतांश ऐसाजलउबालनेमेंशेषरहाशीतल होनेपर पाचनहै व ग्राहकहै व दीपनहै व दोष नाशकहै और जैसा जैसाजलश्रृत अतिसारी को व ज्वरी को दिया जाता है तैसा तैसा गुणदायक होय है॥ अपथ्य॥ स्वेदन, अंजन, रुधिरनिकालना, जल पीना, स्नानकरना, स्त्रीभोग, जागना, धूमकापीना, नासलेना, तेल लगाना सब प्रकारके बेगोंका रोकना, रूखीबस्तु, अहित भोजन यव, बथुईकाशाक, काकमाची, मोठ, मीठारस, सहिंजना, आम्र सुपारी, कोहला, तूंबी, बेर, भारीअन्न, पान, तांबूल, ईष, गुड़, मद्य

पोइकाशाक, दाख, अमलबेत फल, लहसुन, आंवला, बुरा जल दहीकातोड़, घरकापानी, नारियल, स्नेहन, कस्तूरी, सब पत्रशाक खार, सब रेचक वस्तु, सांठी, ककड़ी, नोन, खटाई ये सब पदार्थ अतीसारमें अपथ्य हैं ॥

इतिश्रीवेरीनिवासिकरविदत्तवैद्य रचित निघण्ट रत्नाकरभाषायांअतिसारप्रकरणम् ॥

संग्रहणीकर्म्मविपाक ॥ जो आप विवाहकरि दोष रहित व कटु वचन वर्जितभार्याको कारण बिना त्यागे उसके संग्रहणीरोग पैदा होवै ॥ संग्रहणीशांत ॥ संग्रहणीकी शांतिवास्तेशिवसंकल्पसूक्तकेजप एकहजारआठकरावै और सोना व मधु इनका दानवित्तकेमाफिक करावै और सूर्य्यके मंत्रका जप करवावै औरगौ अच्छीवस्त्र व गहनादिसे शृङ्गारि ज्यादा दूधदेनेवाली और शीलस्वभाववालीकुटुंब वाले ब्राह्मण को दान करिदेवै ॥ दम्भ ॥ नाभि के दो अंगुल नीचे तथा बांसके हाड़की जड़ में अर्द्धचन्द्राकारदाग प्रज्वलित लोहासे देवै ॥ दूसरा प्रकार ॥ नाभिके दो अंगुल नीचे व दोनों बस्तियों के मध्यमें तांबाकी व लोहाकी व सुवर्णकी शलाकाको गरम करि दाग दिवावै और पूपस्त्रावहोइ ऐसे पथ्य करावै और शीतल जल पान करावै यह कर्म सब प्रकार की संग्रहणी को हरै है ॥ गुदरोग कर्मविपाक ॥ देवताके मंदिरको व जलके स्थानको नाशकरै उसकेगुद रोग हो ॥ पापरूपदारुणप्रायश्चित्त ॥ एक मास तक देवपूजा करै पीछे २ गोदानकरै और एकप्राजापत्य दानदेवै इन कर्मोंसे गुदाके रोग नाश होते हैं ॥ संग्रहणीनिदान ॥ प्रथम मनुष्य के अतीसार होके जातारहा हो फिर उस मनुष्य के कुपथ्य करने से मन्द हुई जो अग्नि सो पुरुष के उदर में रहनेवाली जो छठीकला जिसका नाम संग्रहणी कहते हैं इससंग्रहणी कला में अग्निहि का बल है सो वो कला अग्निहि को बिगाड़े है ॥ संग्रहणीलक्षण ॥ प्रथम बात

पित्त कफ सन्निपात इनभेदोंसे संग्रहणी ४ प्रकारकीहै यह जोबात पित्त कफ है सो अधिक कुपथ्य से और अधिक भोजन करने से कच्चेही अन्नको गुदा के द्वारानिकाले हैं अथवा पक्केअन्नको भी निकाले तौ भी कभीपीड़ा और कभीमलपतला कभीबांधाहुआ उतरे और मल दुर्गंधि युत द्रवै बार बार ये लक्षण संग्रहणी के आयुर्वेद केजाननेवाले वैद्यकहते हैं॥ संग्रहणीकापूर्वरूप॥ तृषाबढ़े व आलस्य आवे और बलका नाशहोवे और बिशेषकरि दाहहो और अन्नदेर से पके और शरीरभारीरहै ये लक्षण संग्रहणी पूर्वरूपके हैं॥ वातकी संग्रहणी के उत्पत्तिसमेत लक्षण॥ जो पुरुष बादीवस्तुको अधिक सेवनकरै और मिथ्याहार और मैथुनादिक अधिककरै तिसपुरुषके बात कुपितहोकर जठराग्नि को बिगाड़बातकी संग्रहणीको करै है सो जिस पुरुषके अर्द्धपक्क अन्नपचै और कण्ठसूखै, क्षुधा तृषालगै कानोंमें शब्दहो और पशली जंघा पेडू और कांधोंमें पीड़ाहो और कभी कभी बिशूचिका हो आवे हृदय दूखे शरीरदुर्बल होजाय जिह्वा का स्वादजाता रहै मीठे आदिक रसों के खानेकी इच्छारहै और भोजनकरै तो जिह्वा आनन्द न पावै और उदरमें गोला फिया का आकारहोय पैर दूखनेलगैं और थोड़ासा शीघ्रता समेत पवन सरै बारम्बार दिशाजाय और श्वासकासभी हो ये लक्षण बातकी संग्रहणीके हैं॥ शुंठीघृत॥ शुंठिके कल्कमें सिद्ध घृत खावे तो ग्रहणी पांडुरोग, प्लीहा, कास, ज्वर इन्होंका नाशहोवै॥ पंचमूलघृत॥ पंचमूल छोटीहड़, शुंठि, मिरच, पिपली, पिपलामूल, सेंधानिमक, रास्ना सज्जीखार, यवाखार, जीरा, बायबिड़ंग, कचूर इन्हों के कल्क में घृत सिद्धकरि पीछे बिजौरारस में सिद्धकरि फेर अदरख रस में फेर सुखे पंचमूलकाढ़ामें फेर बेरीछालके काढ़ामें फेर चूका रस में फेर अनार के रसमें फेर दही मस्तु में फेर तक्रमें फेर मदिरामें फेर सौबीर में फेर तुषोदकमें फेर कांजीमें ऐसे सबोंमें सिद्धघृतको करि पीवे यह अग्निको बढ़ावे है और शूल, गुल्म, उदररोग, मलबद्धता कृशता, बातरोग इन्होंको हरैहै॥ संग्रहणीचिकित्सा॥ संग्रहणी में अजीर्ण के समान उपचार करावै। और लंघन व दीपन औषधदेवै

व अतीसार की औषध भी देवे और आमपक्वदेखि इलाजकरे और पेया व हलका अन्न पंचकोलादि युत देवे और दीपनपदार्थ व तक्र ये संग्रहणीमें हितहैं ॥ तक्रसेवन ॥ जो हजारहा औषध देनेसे संग्रहणीमें आराम न होतो तक्रसेवनसे अवश्यआरामहोवे ॥ वातसंग्रहणीचिकित्सा ॥ पकाहुआ वातसंग्रहणी में दीपन औषधसे व घृतसे उपचारकरे ॥ शालिपर्ण्यादि ॥ शालिपर्णी, बला, बेलफल, धनियां, शुंठि इन्होंका काढ़ा आध्मान शूलसहित वातकी संग्रहणीकोहरेहै ॥ तक्रसेवन ॥ संग्रहणी रोगवालोंको गौकातक्र हलकाहै और ग्राहीहै दीपनहै और त्रिदोषको शमनकरेहै और तक्रको मीठेको शुंठीयुतपीवें और शनैःशनैः अन्नकोकमखावे और तक्रको ज्यादापानकरताजाय बल्किन तक्राहारी होजाय अन्नको त्यागदेवे और क्षुधा में व तृषा में तक्र शुंठियुतपीवे और मौनी रहे ज्यादा भाषण करे नहीं और मैथुन व क्रोधको वर्जिदेवे ऐसेप्रकार जो तक्रकोसेवे उसके संग्रहणी रोग नाशहोवे जल्दी ॥ दृष्टान्त ॥ जैसे मिथ्यावादी के लक्ष्मी नाश तैसे ॥ दूसराप्रकार ॥ वातसंग्रहणी में खट्टा तक्र सेंधायुत पीवे और पित्तसंग्रहणी में तक्र मीठा खांड़युतपीवे और कफसंग्रहणी में तक्र खार व शुंठि, मिरच, पीपलीचूर्णयुत पीवे और हिंग, जीरा, सेंधायुत तक्रपीवे यह अर्शको व संग्रहणीको व अतीसारको व वायुकोनाशेहै॥ मधुपक्वहरीतकी ॥ बड़ीहरीतकी १०० दोलायंत्र में गौका गोबर से स्विन्नकरि पसीनाकाढ़ि दे पीछे बारीक शलाकासे सबोंको छिद्रित करै पीछे ४०० तोले शहद वस्त्रसे छनाय मिलावे फेर चिकणपात्र में घाले पीछे शहदसे काढ़ि और शहदमेंगेरे डूबीरहे ऐसीतरह १५ दिन रखिये ताहि पीछे और शहदमें गेरै महीना १ ताईं पीछे हड़ों सहित शहदके वासनमें शुंठि १ तोला, मरीच १ तोला, लवंग १ तोला वंशलोचन १ तोला, पिपली १ तोला इन्होंका चूर्ण वासनमें गेरै ऐसे मधुपक्व हरीतकी सिद्धहोयहै एकरोज प्रभातमेंखावे इससे बल वर्ण अग्नि बढ़ते हैं और सबरोगनको हरैहै विशेषकरिकै दुष्टवात को व संग्रहणीको व आमको व दुष्टलोहूको व जीर्णज्वरको व प्रतिश्यायको व व्रणको व विस्फोटकको व वातशूलको व संग्रहणी

को व सशूलसंग्रहणी को हरैहै ॥ यूष ॥ मूंगकायूष,रस,तक्र, धनियां जीरा, सेंधा इन्होंको मिलाय संग्रहणी में पीवै ॥ कपित्थादियवागू ॥ कैथ, बेलफल, चूक, अनार इन्होंका यवागू आमको पकावैहै और संग्रहणी को हरैहै ॥ पित्तसंग्रहणीनिदान ॥ जो पुरुष मिरचआदि गरमवस्तु अधिकखाय उसकापित्त बिगड़कर जठराग्नि को बुझादे है और नीला पीला पतला जलसहित कच्चामल उतरै और खट्टी डकारआवै और कंठमें दाह और अन्नमें अरुचि और तृषालगै ये लक्षण पित्तकी संग्रहणीके हैं ॥ चन्दनादिघृत ॥ चंदन, पद्माख, वाला पाढ़ा,मूर्वा,शुंठि,मिरच,पिपली,बच,सारिवा,गोकर्णी,सांतण, फालसा परवल, गूलर, पीपल, बड़, पायरी, कैथ, कटुकी, हरीतकी, नागरमोथा, नींव ये प्रत्येक आठआठतोले लेवै जल१०२४ तोलेमें काढ़ा चतुर्थांश रक्खै फेर इसमें घृत ६४ तोले गेर पकावै फेर चिरायता १तोला, इन्द्रयव १ तोला, काकोली १ तोला, पिपली १तोला, कमल१तोला इन्होंका चूर्ण मिलावै घृतको सिद्धकरै इसके खाने से पित्तकी संग्रहणी नाशहोवै ॥ तिक्तादिकाढ़ा ॥ कटुकी,शुंठि,रसौत,धव के फूल, हरीतकी, इन्द्रयव,नागरमोथा, कुड़ाकी छाल, सपेदअतीस इन्होंकाकाढ़ा अनेकप्रकार की संग्रहणीको व गुदशूलको व पित्तकी संग्रहणीको हरैहै ॥ श्रीफलादिकल्क ॥ कोवली,बेलफल इन्होंकाकल्क शुंठि चूर्ण गुड़सहित खाय यह संग्रहणीको नाशै पथ्य तक्रपीवै ॥ नागरादिचूर्ण ॥ शुंठि,अतीस, नागरमोथा, धवकेफूल,रसौत,कुड़ाछाल इन्द्रयव, बेलफल, पाढ़ा, चिरायता, कटुकी ये बराबर सब इन्होंका चूर्ण शहदसंयुक्त चावलधोवनके संगलेय यह पित्तकी संग्रहणीको व रक्तसंग्रहणी को व बवासीरको व हृदयरोगको व गुदरोगको व शूलको व प्रवाहिकाको नाशकरैहै ॥ यवान्यादिचूर्ण ॥ अजवाइन, पिपलामूल,दालचीनी,तमालपत्र,इलायची, नागकेशर,शुंठि,धवकेफूल अमली, पिपली, वाला इन्होंकाचूर्ण एक भाग मिश्री ६ भाग मिलाय १तोला नित्यखावै ऊपर बकरीका दूधपीवै यह पित्तकी संग्रहणीको व पित्त की प्रवाहिकाको हरैहै इसमें संदेह नहीं यह धन्वन्तरिमतहै ॥ चन्दनादिचूर्ण ॥ चंदन,पद्माख,वाला,पाढ़ा,मूर्वा,टेंटु,सौ-

राष्ट्री, अतीस, तमालपत्र, दालचीनी, इलायची, देवदारु, मिरच इन्हों का चूर्ण शहदसंग अवलेहकरचाटै ऊपरआधाजल और आधादूध बकरीका पकाय जलजले दूधरहे वह पीवै राति में और क्षीरिणी शाकखावै और दही भात व खीलकामांड़ खावै ॥ रसांजनादिचूर्ण ॥ रसोत, अतीस, इन्द्रयव, कुड़ा, शुंठि, धवकेफूल इन्होंकाचूर्ण शहदयुत चावल धोवन जलकेसंग खावै यह पित्त संग्रहणीको व बवासीरको व रक्तपित्तको व पित्तातीसारकोहरैहै ॥ भूनिंबादिपुटपाक ॥ चिरायता कटुकी, हरीतकी, परवल, निम्ब, पित्तपापड़ा ये समानभागले माहिषी मूत्रमेंपीस गोलाकरि पुटपाक विधिसेपकाय रसनिचोड़ १ तो० शहद युतखावै यह अग्निको दीपनकरै और पित्तसंग्रहणीको हरै ॥ आम्रादियोग ॥ आमकीगुठली, शुंठि, गोकाशृङ्ग, कुड़ा इन्होंको आमकेरसमें तीनदिन तक खरलकरै फेर मिश्री मिलायपीवै यह पित्तकी संग्रहणी को व ज्वरातीसारको व रक्तस्रावको व शूलको नाशैहै॥ आम्रादिपेया ॥ लालआंब व आम्रतक जामन इन्होंकी जड़का काढ़ा करि पीवै तो संग्रहणी नाश होवै पथ्य सांठीचावलकी यवागूहै ॥ कफसंग्रहणीनिदान ॥ भारी अति चिकनी और शीतल वस्तु को जो मनुष्य भोजन करिके सोयजावै उस मनुष्यके कफ कोप होनेसे अन्नआधा पचै हृदयदूखै बमन और अरोचकताहो मुख मीठारहै खांसी और पीनसहो पेट भारीरहै मीठीडकारआवै और स्त्रीप्यारी न लगै आंव सहित मल उतरै बल बिना शरीर पुष्टदीखै आलस्य अधिकआवै ये लक्षण कफकी संग्रहणीकेहैं ॥ शुंठ्यादिचूर्ण ॥ कचूर, शुंठि, मिरच, पिपली हरीतकी, यवाखार, सज्जीखार, पिपलामूल, बिजौरा इन्हों का चूर्ण लवण, नींबूरसके संगखावै कफकीसंग्रहणी नाशहोवै ॥ रास्नादिचूर्ण ॥ रास्ना, हरीतकी, कचूर, शुंठि, मिरच, पिपली, यवाखार, सज्जीखार सेंधा, सांभर, विड़लोन, पिपलामूल, बिजौरा इन्होंकाचूर्ण गरमजलके संगले यह कफ संग्रहणीको हरैहै ॥ पथ्यादितक्रयोग ॥ हरीतकी, पिपली, शुंठि, चीता इन्होंका चूर्ण तक्रकेसंग अथवा शुंठि, पिपलीचूर्ण तक्रके संगलेय यह शूलसहित संग्रहणी को व कफ संग्रहणी को हरैहै ॥ चतुर्भद्रादिकाढ़ा ॥ गिलोय, अतीस, शुंठि, नागरमोथा इन्हों

का काढ़ा ग्राही है, दीपन है, पाचन है और आम संग्रहणीको हरैहै ॥ कठिनमल चिकित्सा ॥ जिसके मल कठिन हो कष्टकरिकै मलउतरै उसे घृतमें लवण मिलाप्यावे क्लेश शांति के वास्ते ॥ विडंगादियोग ॥ वायविडंग, अजमान इन्होंको पीस गरम जलके संग पीवै विष्टंभ नाश होवै बात कफ संग्रहणी में कुटजावलेह हित है और पर्पटी रस ८ रत्ती शहद घृत युतहित है ऊपर हिंग, जीरा, शुंठि, मिरच पिपली इन्होंका चूर्ण २ माशेखावे अथवा तक्रसेवनसे कफसंग्रहणी कोनाशकरै ॥ कर्चूरादिचूर्ण ॥ कचूर, पांचोलवण, रास्ना, शुंठि, मिरच पिपली, हरीतकी, यवाखार, सज्जीखार, बिजौरा इन्होंका चूर्ण गरम जलके संगखाय यह बल, वर्ण, अग्निको बढ़ावै और कफ वातसंग्रहणी को हरै है ॥ तालीसादिबटी ॥ तालीसपत्र ४ तोले चवक ४ तोले मिरच ४ तोले पिपली ८ तोले पिपलामूल शुंठि १२ तोले चातुर्जात १ तोले बाला १ तोले इन्होंकाचूर्णकरितिगुनागुड़घालि २ तोले की गोलीबनावै नित्यखावै यहगोली कष्टतर संग्रहणी को व छर्दिको व कासको व श्वासको व ज्वरको व अरुचिको व सूजनको व गुल्मको व उदररोगको व पांडुकोनाशै है ॥ कफपित्तसंग्रहणीपर ॥ पाराएकभाग गंधकतीनभाग इन्होंकीकजलीकरि इनकी बराबरशुद्ध शंख, मिरच, शहदयुत करि ४ माशेदेवै यह कफ पित्तकी संग्रहणी को नाशै है ॥ मुसल्यादियोग ॥ मुसलीको तक्र में खरल करै अथवा चावलके धोवन में खरलकरि १ तोले खावै पथ्यतक्र चावलखावै यह संग्रहणी को नाशै है ॥ बात पित्त संग्रहणी पर शुंठ्यादि गुटिका ॥ शुंठी, शतावरी, नागरमोथा, कौंचकेबीज, दूधी, गिलोय, मुलहठी, सेंधा इन्होंका बारीक चूर्णकरि और इसचूर्णके समान भांगकोमलभुनी हुईमिलावै पीछे घृतकरि चिकनेपात्र में गौका दूध दशगुणापकावे फेर द्रव्य को दूध में मेलै जबतक ज्यादाकरड़ा हो तबतक फेर नित्य एक तोला शहद और तीन तोले मिश्री के संग लेवै यह पित्त बात संग्रहणी को व कफ पित्त संग्रहणी को नाशै है॥ सन्निपात संग्रहणी निदान लक्षण कहते हैं ॥ जिसमें बात, पित्त, कफ तीनों के लक्षण मिलैं उसको सन्निपात की संग्रहणी जानिये ॥

औरआमसबातकीसंग्रहणीकालक्षण ॥ पतला सपेद चिकना मलजाय कटिमेंपीड़ाहो और आंवलिये पतलामल उतरै और वायुघनीसरै पीड़ा घनीहोय कभी अच्छा दीखे पीछे पंद्रहवेंदिन महीना में फेर होआवै अथवा रोजीना यह रोगरहै आंतबोलाकरै आलस्यआवै शरीर दुर्बल होजाय पेटमेंपीड़ाहो दिनमेंरहै रातिमें अच्छाहोजाय ये लक्षण आमबातकी संग्रहणीके हैं यह बहुत दिनोंकीअसाध्यहो है ॥ घटीयंत्रसंग्रहणीलक्षण॥ शरीर सुन्नरहै पांशुमें शूलचलै पेटबोला करै और संग्रहणी के लक्षणहों और जलघटीके समान शब्दहो ये लक्षण घटीयंत्र संग्रहणीके हैं यह भी असाध्यहै। जो अतीसारके असाध्य लक्षणहैं वही संग्रहणीके जानो और वृद्धमनुष्यके संग्रहणीरोग प्रकटहुआ अत्यन्त असाध्यहै और अतीसारके जो उपद्रव हैं सो सब संग्रहणीमेंभी होयहैं ॥ ज्वालालिंगरस॥ शुद्धपारा, सुवर्णभस्म, मिरच, तूतिया ये समभाग इन्होंको ज्वालामुखीके रसमें व चीताके रसमें मन्दमन्द पकावै पीछे १ दिन खरलमें मर्दनकरै यह रस ज्वालालिंग सन्निपातकी संग्रहणीको हरै इसमें अनोपान चीता की जड़को १ कर्षभर तक्रमें पीसपीवै पथ्य तक्रचावलखावै ॥ग्रहणीकपाटरस॥ चांदीभस्म, मोतीभस्म, सुवर्णभस्म, लोहाभस्म ये प्रत्येक तोला २ भर गंधक २ तोला पारा ३ तोला इन्होंको मिलाय कैथकेरसमें खरलकरै पीछे द्रव्यको हरिणके सींगमेंभरि पुटदे पुटपाकविधिसे मन्द २ पकावै शीतलहोनेपर द्रव्यको खरैटीके रसमें सातभावना देवै फेर ऊंगाके रसमें तीनभावना देवै ऐसेरस सिद्धहो १ माशा शहद व मरीचचूर्ण के संग खावै यह सम्पूर्ण अतीसारों को व सन्निपातसंग्रहणी को हरै और अग्नि को बढावै ॥ दूसरा प्रकार ॥ पारा १० भाग, गंधक १० भाग, अतीस १० भाग, मोचरस ३ भाग, बच ३ भाग, भांग ३ भाग इन्होंको नींबूकेरसमें खरल करै जब घनहो तब सिद्धजाने यह दूसरा ग्रहणीकपाट रसहै ॥ तीसराप्रकार ॥ कौडियोंको शुद्धकरै फेर कौड़ियों की गिनती समान भिलावा लेवै फेर बब्बुलके कांटासे स्रोतोंकोछेदि तेलचतुर्थांशकाढ़े फेर कौड़ियोंके बराबर तोल गंधकमिला सबकोखरलकरै फेरभांग

के रसकी ७ पुट देवै यह ६ रत्ती औषधोंके अनोपान संग देवै यह महादेवका कहा ग्रहणी कपाट रसहै॥ वज्रकपाटरस ॥ पाराभस्म अभ्रकभस्म, गंधक, यवाखार, सुहागाखार, अरणी, वच ये समान भागले पीछे इन्हों को भांगके रसमें व नींबूके रसमें व भृङ्गराज के रसमें तीन दिन तक खरलकरै पीछे गोलाकरि सुखाय लोहापात्र में वा सकोरा में घालि संपुट दूसरेपात्रसे करि मुद्रितकरै पीछे मन्द २ अग्निसे ४ घड़ीतक पकावै पीछे द्रव्यको काढ़ि पाराके बराबर अतीस व मोचरस मिलावै पीछे सबको कैथाकेरसमें सातभावना देवै पीछेभांग के रसकी सातभावना देवै पीछे धवकेफूल व इन्द्रयव व नागरमोथा व लोध व बेलफल व गिलोय इन्होंके पृथक् पृथक् रसोंमें एक एक भावना देवे पीछे घनरूप करि तैयार करै यहरस १ माशा शहदके संग खावै पीछेअनोपान चीता, शुंठि, वायविड़ंग बेलफल, लवण सबबराबरले चूर्णकरि गरम जलकेसंग खावै यह सन्निपात की संग्रहणी को हरै॥ ग्रहणीकामदवारणसिंह ॥ शुद्ध पारा, सिंगरफ, चीता, अभ्रक, सुहागाखार, जायफल, धतूराबीज अतीस, शुंठि, मिरच, पिपली, हरीतकी, गोसाराख, अजमान बचनागविष, बेलफल, इन्द्रयव, कैथ, बाला, मोचरस, अनार धवके फूल, नागरमोथा, शाल्मली फूल, अफीम सबको धतूरा के पत्तों के रस में खरल करि मरिच समान गोली बांधे एक गोली शहद युत खावैं यह उग्र संग्रहणी को व ज्वर युत संग्रहणी को व बिशूचिका को व अग्निमन्दता को व शूलको व बिबन्ध को व गुल्म को व पांडु को व रक्तस्राव को व आम को हरै है॥ पारदादि बटी॥ पारा, गन्धक, चांदी भस्म, विष बचनाग, तांबाभस्म त्रिफला, त्रिसुगन्धी, चीता, बाला, पित्तपापड़ा, हल्दी, दारुहल्दी ये सब मिलाय बराबर खरल करै ये बटी संग्रहणी को व विष्टम्भ को व आठ प्रकार की संग्रहणी को व शोथातीसार को हरै है॥ सज्जीक्षारादि योग॥ सज्जीखार, यवाखार, भांग, अतीस, अजमान, पारा, गंधक ये सब समान लेवै इन्हों को नींबू के रस में खरल कर आधा माशा शहद में मिलाय खावे घृत खांड़ मिलाय

खावै ऊपर यह संग्रहणी को व ज्वरातीसार को व शोथसंग्रहणी को व शूल संग्रहणी को हरै ॥ वराटादि योग ॥ पीली कौड़ियों को जलाय लेवै और गंधक, पारा बराबर मिलावै इन्हों को, नींबू के रसमें खरलकरै यह १ माशा रसखावै ऊपर मरिचचूर्ण घृत मिलाय चाटै यह संग्रहणीको नाशै पथ्य तक्रचावल खावै ॥ सुवर्णरसपर्पटी ॥ पारा ४ तोले सुवर्ण १ तोला एकत्रकरि नींबूरस में खरलकरै जब तक एकत्वको प्राप्तहो तबतक पीछे गरमजल से क्षालनकरि पीछे ४ तोले गंधकमिलावै फिर सुन्दर लोहे के पात्र में द्रव्य को घालि मंदमंद अग्निसे पकावै बड़बेरीकी जड़रूपी लकड़ियोंसे और लोहा के पलटासे चलाताजावै जब पकजावै तब केलाकापात्र गोबरऊपर रख उसपर द्रव्यकोराखि दूसरेकेला के पत्तासे ढकि पीड़नकरदेवै जब शीतल होजाय तब १ रत्ती क्रमवृद्धि से सेवनकरै यानी रोज १ रत्ती बढ़ाताजावै १ माशासेती ऊपर मात्राको बढ़ावैनहीं शहद शुंठि, मिरच, पिपली चूर्णके संग मिलाय रसको चाटै यह संग्रहणी को व शोषको व क्षयीको व कासको व दमाको व प्रमेह को व शूल को व अतीसार को व पांडुरोग को हरैहै और बल, वीर्य्य, अग्निको बढ़ावैहै ॥ पर्पटी ॥ पारा, गंधक इन्होंकी कजलीकरि शहदमें मिलाय चाटै संग्रहणी नाशहोवै पथ्य से रहै ॥ ग्रहणीगजकेशरीरस ॥ गंधक पारा, अभ्रकभस्म, सिंगरफ, लोह, जायफल, बेलफल, मोचरस वचनागविष, अतीस, शुंठि, मिरच, पिपली, धवकेफूल, अष्टा, हरीतकी कैथ, नागरमोथा, अजमान, चीता, अनार, कुडाछाल की राख १ तोला धतूरा बीज १ तोला अफीम ४ तोला इन सबको धतूरा के पत्तोंके रसमें खरलकरि मरिचके समान गोलीबांधे और एकगोली सेवन करै संग्रहणी को व रक्तशूल को व आमशूल को व पुराने अतीसारको व ज्वरको व विशूचीको व साध्यासाध्य संग्रहणी को हरैहै ॥ अग्निसूनुरस ॥ कौड़ीभस्म १ भाग, शंखभस्म २ भाग, गंधक पारामिलके १ भाग, मिरचचूर्ण ३ भाग इन्होंको नींबूकेरस में खरल करै तैयारहोवै यह अग्निसूनुरस अग्निमन्दता को हरैहै और घृत खांड़ के संगखाय क्षीणनरोंको हितहै और पिपलीचूर्ण घृतमेंमिलाय

रसखाय संग्रहणीकोहरैहै और तक्रके संगखानेसे शोषज्वर, अरोचक, शूल, गुल्म, पांडु, उदररोग, बवासीर, संग्रहणी ये रोग नाश होयँ हैं ॥ ग्रहणीकपाटरस ॥ पारा १ भाग, गंधक २ भाग, त्रिकुटा ३ भाग, जीरा २ भाग, सुहागाखार २ भाग, धनियां २ भाग, हिंग २ भाग, स्याहजीरा २ भाग, अजमान २ भाग, कालानोन ४ भाग सबों के बराबर पीली कौड़ी भस्म मिलावै सबको मिलाय चूर्णकरै यह ग्रहणीकपाटरस २ माशे तक्रके संगखावैतो संग्रहणीनाशहोवै ॥ सूतादिगुटी ॥ पारा, गंधक, लोह, बचनागविष, चीता, तमालपत्र वायबिडंग, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, इलायची, पिपलामूल, नागकेसर, त्रिफला, शुंठि, मिरच, पीपल, तांबाभस्म ये सब बराबरभाग ले इनसबों से दूनागुड़ मिलाय गोली बनावै एकगोली कासको व श्वासको व क्षयीको व गुल्मको व प्रमेहको व विषमज्वरको व लूता को व संग्रहणीको व अग्निमन्दताको व शूलको व कुक्षिरोग को व हाथपैर के रोगोंको हरै ॥ कणादिलेह ॥ पिपली, शुंठि, पाढ़ा, त्रिफला शुंठि, मिरच, पिपली, बेलफल, चंदन, बाला इन्होंकालेह सर्वअतीसार को व सर्वोपद्रवयुत संग्रहणी को व प्रवाहिकाकोहरै है ॥ अभ्रकादि ॥ पारा, गंधक, बचनागविष, शुंठि, मिरच, पिपली, सुहागाखार, लोह भस्म, अजमोद, अफीम ये समभागले सबोंकी बराबर अभ्रकभस्म इन्होंको चीता, दालचीनी इन्हों के काढ़ा में १ पहरतक खरलकरै और मरीचसमान गोली बनावै एकगोली रोजखावै चारबिध की संग्रहणीको हरै ॥ सूतराज ॥ पारा १ भाग, गंधक २ भाग, अभ्रक भस्म ८ भाग इन्हों को चूर्णकरि ६ रत्ती या १२ देवै १ मंडलतक यह संग्रहणीको व क्षय को व गुल्मको व अर्शको व धातुज्वर को हरै है ॥ पूर्णचन्द्ररसेन्द्र ॥ पारा, गंधक, असगंध, गिलोय, मुलहठी इन्होंके काढ़ामें एकदिनतक खरलकरि क्षुद्रशंखकी भस्म व मोती की भस्म व मंडूरभस्म ये तीनोंभस्म पारा बराबर मिलावै सबको कोहलाके रसमें एकदिन खरलकर गोलाबनाय भूधरयन्त्रमें पकावै शीतलहोनेपर पानकीबेलके रसमें १ पहर खरलकरै यह पूर्णचन्द्र रस शहद घृत के संग खाय पुष्टि, वीर्य, अग्नीको बढ़ावै और

प्रायतासे यहतक्र के संगदिया पित्तरोगको व पित्तकी संग्रहणीको व पित्तकी बवासीरको हरैहै और स्त्रियोंकी सन्ताप नाशकरनेके वास्ते शाल्मली रस के संगदेवै किम्बा शतावरी सिद्ध घृतकेसंगदिवावै॥ चित्रांबररस ॥ शुद्धपारा, शुद्धगंधक, अभ्रकभस्म इन्हों को बराबर ले महीनपीसे पीछे लोहेके पात्र घृताभ्यक्त में कोमल २ अग्नि से पकावे और लोहेके पलटासे चलाताजावै पीछे जीराके काढ़ा में ३ दिन खरल करै यह चित्राम्बर रस १ माशा खावै यह सर्वोपद्रव सहित संग्रहणीको व आमशूलको व प्रवाहिकाको हरै है ॥ अगस्ति सूतराज ॥ पारा १ तोला गंधक १ तोला सिंगरफ १ तोला धतूरा बीज २ तोला अफीम २ तोला इन्होंको भृंगराजरस में भावना दे सिद्धकरै यह अगस्तिसूतराज रस १ रत्ती शुंठि, मिरच, पिपली शहद इन्होंके संगखावै यह बात को व शूल को व कफको व बात विकारको व अग्निमन्द को व नींदको हरै और घृत मिरचचूर्ण के संग प्रवाहिका को हरै और जीरा, जायफल के संगखावै तो छः प्रकारके अतीसारनाशहों ॥ कनकसुन्दररस ॥ सिंगरफ,मरिच,गंधक पिपली, सुहागा, वचनाग, धतूराबीज ये बराबर ले भांगके रस में १ पहरतक खरलकरै पीछे चनासमान गोलीबनाय एक गोलीरूप कनकसुन्दर रस खावै तो संग्रहणी को व अग्निमन्दताको व ज्वर को व तीव्र अतीसार को नाशै पथ्य दही चावल अथवा तक्रचावल है ॥ क्षारताम्ररस ॥ शंखभस्म, जवाखार, तांबाभस्म, कौड़ीभस्म लोहभस्म, मंडूर, सुहागाखार, शुंठि, मिरच, पिपली, सेंधा ये सब बराबर लेवै इन्हों को भृंगराजके रस में खरलकरै फेर बासारस में फेर अदरखरसमें भावना दे चना बराबर गोलीकरै यह क्षार ताम्र रस कासको व श्वासको व प्रतिश्यायको व जीर्णज्वरको व मंदाग्नि को व संग्रहणी को यथोक्त अनोपान के संग सेवनकरा सातरात्री में नाशैहै पुरानेरोगमें १५दिनदेवै और व्याधिनाशक पथ्य करावै॥ चित्रकादिगुटी ॥ चीता, पिपलामूल, सज्जीखार, जवाखार, लवण सेंधा, पादलोन,शुंठि,मिरच,पिपली,हिंग,अजमान, चबक इन्होंको कूट बिजौराके रसमें किंवा अनार के रसमें गोलीबनावै यह गोली

भक्षणकरी आमको पकावै और अग्निकोबढ़ावै ॥ शंबूकयोग ॥ शंख-भस्म, सेंधा बराबर भाग शहद में मिलाय तीनमाशे चाटै यह संग्रहणीकोहरै ॥ कांकायनगुटी ॥ हरीतकी २० तोला जीरा ४ तोला मिरच ८ तोला पिपली १२ तोला, पिपलामूल १६ तोला चवक २० तोला चीता २४ तोला शुंठि २८ तोला जवाखार८ तोला भि-लावां ३२ तोला सूरण ६४ तोला सबोंसे दूनागुड़ मिलाय गोली १ तोला की बनावै प्रातःकाल में एकगोली नित्यखावे ऊपर खट्टा तक्रपीवै यह अग्निको बढ़ावै और संग्रहणी व पांडुकोहरै कांकायन ऋषि के शिष्यों के अर्थकही है यह गोली शस्त्र व क्षारादि विना गुदाकेरोगोंको नाशकरनेवालीहै इसमें सन्देह नहींहै ॥ महाकल्याण गुड़ ॥ पिपली १ तोला,पिपलामूल १ तोला, चीता १ तोला,गज-पिपली १ तोला, धनियां १ तोला, बायबिड़ंग १ तोला, अजमान १ तोला,मिरच १ तोला, त्रिफला १ तोला, अजमोद१तोला, क-मलकंद १ तोला, जीरा १ तोला, सेंधा १ तोला, सांभर १ तोला पादनोन १ तोला, विडनोन १ तोला, अमलतास १ तोला, दाल-चीनी १ तोला, तमालपत्र १ तोला, छोटीइलायची १ तोला, बड़ी इलायची १ तोला, शुंठि १ तोला, इन्द्रयव १ तोला, मुनक्कादाख १६ तोला, निसोत ३२ तोला, गुड़ २०० तोला, तिलकातेल ३२ तोला, आंवलारस ६४ तोला सम्पूर्ण एकत्र करि मंद २ अग्निसे पकावै और इसको गूलरफल समान तोल अथवाआंवलाफलस-मान तोल अथवा बेरी फल समान तोल खावै अथवा अग्नि बल को देखिकरि खावै यह संपूर्ण संग्रहणी को व बीसप्रकार की प्रमेह को व उरोघातको व प्रतिश्यायको व दुर्बलताको व अग्निमंदताको व सम्पूर्ण ज्वरोंको नाशैहै और कांति,बल,बुद्धिकोबढ़ावैहै और यह सेवन करनेसे रक्तपित्तको व बिड्बंध को व धातुक्षीणको व अवस्था क्षीणको व स्त्रीक्षीणको व क्षयीको हितहै यह महाकल्याण गुड़है ॥ कूष्मांडगुड़ ॥ पकेहुये कोहलोंको शुद्धकरि त्वचा दूरकरि ४०० तोले गूदालेवै घृत ६४ तोले ताम्रपात्रमेंघालि गूदाको मन्दमन्द अग्नि सेपकावैपीछे पिपली४तोले पिपलामूल४तोले चीता४तोले गजपि-

पली४तोले धनियां ४ तोले वायविड़ंग४तोले शुंठि४तोले मिरच४ तोले त्रिफला ४ तोले अजमोद ४ तोले कूड़ाकी छाल ४ तोले जीरा ४ तोले सेंधा ४ तोले निसोत ३२ तोले तिलतेल ३२ तोले गुड़ ६० तोले आंवलाका रस १६२ तोले इन सबको मिला मन्द मन्द अग्नि से पकावै जब करछी के चिपने लगे तब अग्नि से उतारलेवै इसको आमला तोल समान व बेरतोल समान व गूलर फलतोल समानखावै अथवा अग्निका बलाबल देखि खावै नित्य-प्रति यह संग्रहणी को व कुष्ठको व बवासीर को व भगन्दर को व ज्वरको व आनाहको व हृदय रोगको व गुल्मको व उदर रोग को व विषूची को व कामला को व पांडुको व इक्कीस प्रकार के प्रमेहों को व वातरक्त को व कफको व वातको व रुधिरको व विसर्पको व दद्रू को व क्षयी को व हलीमक को व पित्तको व हरै है और व्याधिक्षीणको व अवस्थाक्षीणको व स्त्रीक्षीणको हितहै और वन्ध्या स्त्रीको पुत्रदेय है बलवीर्य्य को बढ़ावै हैं और बूढ़ापनाको हरै है॥ कल्याणगुड़॥ आमलाकारस४०० तोले गुड़२००तोलेइन्होंका पाक बनायपीछे ये औषध मेलै पाढ़ा४तोले धनियां४तोले अजवाइन४ तोले जीरा ४ तोले शेरणी ४ तोले ४ चवक ४ तोले चीता ४ तोले सेंधा ४ तोले गजपिपली ४ तोले अजमोद ४ तोले वायविड़ंग४ तोले पिपला मूल ४ तोले शुंठि ४ तोले मिरच ४ तोले पिपली ४ तोले हरीतकी ४ तोले बहेड़ा ४ तोले आमला ४तोले तेल १६ तोले निसोत ४ तोले ये सब मिलाय अवलेह समान करै इसको भोजन से पहिले १ तोले खावै यह कल्याण गुड़ संग्रहणी को व बवासीरको व श्वासको व कास को व शोषको व सोजाको व उदर रोगको हरैहै॥ शुंठ्यादिकाढ़ा ॥ शुंठि, नागरमोथा, अतीस, गिलोय इन्होंका काढ़ा मंदाग्नि को व आमबात को व आम संग्रहणी को नाशै है॥ पुनर्नवादि ॥ सांठीजड़, मिरच, बांणपुंखा, शुंठि, चीताजड़ हरीतकी, करंजछाल, बेलफल इन्होंका काढ़ा बवासीर को व गुल्म को व संग्रहणी को हरै है॥ नागरादि काढ़ा॥ शुंठि, बाला, धनियां अजवाइन, अतीस, नागरमोथा, सालपर्णी, पृष्ठपर्णी इन्होंकाकाढ़ा

दीपन पाचन है ॥ अतिविषादि काढा ॥ अतीस, नागरमोथा, वालाधवकेफूल, कूड़ाकीछाल, लोध, पाढ़ा इन्होंकाकाढ़ा संग्रहणीको व सर्ब्ब ज्वरको व अरोचकको व अग्निमांद्य को हरै है और धातु को बढ़ावे है ॥ भूनिंबादिचूर्ण ॥ चिरायता, इन्द्रयव, शुंठि, मिरच, पिपली नागरमोथा, कटुकी ये प्रत्येक एक एक तोले, चीताजड़ २ तोला कूड़ाछाल १६ तोला इन्होंका चूर्णकरि गुड़के शरबतके सङ्गखावे तो संग्रहणी बिकार नाशहोवे ॥ बिल्वादिदुग्ध ॥ बेलफल, नागरमोथा इन्द्रयव, बाला, मोचरस इन्हों करि सिद्ध बकरीके दूधके पीने से तीनदिन तक संग्रहणी बिकार नाशहोय और १ महीना सेवनकरने से असाध्य व दुष्टरक्तबिकार नाशहो ॥ त्योषादि ॥ शुंठि, मिरच, पिपली अजमान, अजमोद, बायबिड़ंग, चीता, हींग, असगंध, सेंधा, जीरा स्याहजीरा, कालालवण, बेरीछाल, धनियां इन्होंकेबराबर भांग चूर्ण लेवे और यहभांगका चूर्ण व लवंग चूर्ण शहद, घृतकेसङ्गखावे माशे ४यहदीप्ति, पुष्टि, कान्ति, बल इन्होंकोबढ़ावेहैऔर संग्रहणीकोहरै है ॥ तालीसादिचूर्ण ॥ तालीसपत्र, बच, हलदी, शुंठि, मिरच, पिपली, पिपलामूल, चीता, चवक, आंवला, हलदी, बेलफल, अजमोद, कचूर, चातुर्जात, लवंग, धव के फूल, अतीस, जायफल, अजमान, पाढ़ा, मोचरस आमसोल, पांचोलवण, जीरा, स्याहजीरा, बायबिड़ंग, अमलबेत अमली, त्रिफला, पलसपापड़ी, जटामांसी, तरवड़, बाला, इलायची ब्राह्मी, जवासा, भूमिआंवला, कुलिंजन ये सब बराबरलेवे और इन सबोंके बराबर खरैटीले और इन सबोंके बराबर जमाले फिर सबों के बराबर मिश्रीले सबको मिला चूर्णकर नित्यखावे यहतालीसादि चूर्णसंग्रहणीको व क्षयीको व कासको व श्वासको व अरुचिको व प्लीहा को व बवासीरको व अतीसारको व ज्वरको व बातको व स्थूलताको व प्रमेहको व अपस्मारको व पांडुको व गुल्मको व उदर रोग को व कफज ब्याधि को व पित्तजब्याधिको व उन्मादको व आध्मानको व बिशूचिका को नाशै और बालकोंको हितहै और बाणीको शुद्धकरै और अग्निमांद्यको व सर्बरोगोंमेंहितहै और पुष्टि, आयुर्बल, क्रांति स्मृति इन्होंको बढ़ावे यह तालीसादि चूर्ण भूमिमण्डल में अमृत

रूप है॥ मसूरादियोग॥ मसूरके काढ़ामें बेलफलकी गिरीको पकाय खावै यह कुक्षिरोगको व संग्रहणी को व पांडुरोग को व कामला को नाशै॥ दशमूलादिकाढ़ा॥ दशमूल, शुंठि इन्होंका काढ़ा सूजनको व आमसंग्रहणीको हरैहै॥ कुटजावलेह॥ ४०० तोले कूड़ाकीछाल को १६३८४ तोले जलमें पका चतुर्थांश राखै इसको वस्त्रसेछानि २०० तोले गुड़ १ टंक घृत मिला कोमल अग्निसे पकावै पीछे ये औषधमेलैलज्जावंती २तोला, बला २तोला, बेलफल २तोला, शिलाजीत २तोला, सांठी ८तोला, नागरमोथा ८तोला, भिलावा ८ तोला धवकेफूल ८तोला, गजपिपली ८तोला, चुका ८ तोला, बाला ८तोला कटैली ८ तोला, बड़ीकटैली ८ तोला, चीताजड़ ८ तोला, भारंगी ८ तोला, पिपलामूल ८ तोला, वायविडंग ८ तोला, छोटी हरीतकी ८ तोला, नागकेशर ८ तोला, मुलहठी ८ तोला, दिंडा ८ तोला, तमाल पत्र ८तोला, शुंठि ८तोला, इन्द्रयव ८ तोला, पाढ़ा ८तोला, इलायची ८ तोला, जीरा ८ तोला, स्याहजीरा ८तोला, जावित्री ८ तोला, जायफल ८ तोला, लवंग ८तोला, तगरचूर्ण ८ तोला सबको मिलाय लेह बनावै इसको तक्रकेसंग देवै यह संग्रहणीको व अनेकविधि अतीसार को व सबरोगों को यह कुटजावलेह हरैहै॥ द्राक्षासव॥ मुनक्कादाख४००तोले ८१९२तोले पानीमें पका चतुर्थांश राख वस्त्रसे छानि शीतलहोनेपर शहद१००तोला मिश्री १०० तोला धवकेफूल ६० तोलामिलावै पीछे कंकोल ४ लवंग ४ जायफल४मिरच४ दालचीनी ४एलाची४तमालपत्र ४ नागकेशर ४ पिपरी४ चवक४चीता४ पिपलामूल ४तोला पित्तपापड़ा ४तोला ये सब चारचार तोले ले मिलाय घृतके चिकने बरतनमें घालि चन्दन अगरकी धूपदे और कपूर की प्रतिबासदे तैयार करै यह द्राक्षासव दीपन है और संग्रहणी को व बवासीरको व उदावर्त्तको व गुल्मको व उदररोगको व कृमि को व कुष्ठको व व्रणको व नेत्ररोगको व शिररोगको व गलरोगको व ज्वरको व आमको व महाव्याधि को व पांडुको व कामला को हरैहै॥ बिल्वादिघृत॥ बेलफल, चीता, चवक, अदरख, शुंठि इन्होंका काढ़ा व कल्क करि सिद्ध बकरी के घृत को बकरी के दूधसंग लेवे

यह संग्रहणीको व सूजनको व अग्निमांद्य को व अरुचिको हरै है॥ चित्रकघृत॥ चीताका काढ़ा व कल्क में सिद्धघृत खानेसे गुल्मको व सूजन को व प्लीहाको व शूलको व बवासीर को हरैहै और दीपनहै॥ चांगेरीघृत॥ पाठा, गोखरू, शुंठि, पिपली इन्हों के बराबर चूर्ण ले सोलह गुणा पानी में काढ़ा चतुर्थांशरक्खै वस्त्रसेछानि इसकीसमान घृतले और घृतके सम तोल चूकाका रसले और चूकारससे तीन गुणा दही ले और गंडाली ८ तोला, पिपलामूल ८ तोला, शुंठि ८ तोला, मिरच, पिपली ८ तोला, चवक ८ तोला, चीता ८ तोला गेरि मिलाय मन्दाग्नि से पकावै जब घृत सिद्धि हो तब उतारे इसको पान करावे किंवा भोजन करावे यह संग्रहणीको व अतीसार को हरै और अग्नि को दीपन करै रुचीको उपजावे॥ दाडिमाष्टक॥ अनार ८ तोला, शुंठि ८ तोला, मिरच ८ तोला, पिपली ८ तोला, त्रिजातक ४ तोला, मिश्री ३२ तोला इनको मिला चूर्ण करि खावै यह दाड़िमाष्टक दीपन है रुचि देयहै और कंठको हितहै और संग्रहणी को हरै है॥ दूसरा प्रकार॥ अनार ३२ तोला त्रिसुगन्धी ४ तोला, जीरा २ तोला, धनियां २ तोला, त्रिकटु १२ तोला, पिपलामूल ४ तोला, दालचीनी १ तोला, बंशलोचन १ तोला, बाला १ तोला, मिश्री ३२ तोला सबको मिला चूर्ण करि खावै यह आमातीसार को व कासको व हृदय पसलीशूल को व अरुचिको व गुल्मको व संग्रहणी को हरै है॥ लाइचूर्ण॥ गन्धक १ भाग पारा आधा भाग इन्होंका कज्जली करे शुंठि, मिरच, पीपल ये मिलाके १ तोला पांचो लवण प्रत्येक डेढ़ डेढ़ तोला हींगभूनी दोनों जीरे १ तोला सबों से आधी भांग मिला चूर्ण करि १ टंक तक्र के संग खावै तो संग्रहणी नाश होवे॥ मुस्तादि॥ नागरमोथा अतीस, बेलफल, इंद्रयव इन्होंका चूर्ण शहद युत खानेसे सन्निपात जनित संग्रहणी को हरै है इसमें सन्देह नहीं धन्वन्तरीका मतहै॥ लवंगादिचूर्ण॥ लवंग, कंकोल, बाला, चन्दन, तगर, नील कमल स्याहजीरा, इलायची, पिपली, अगर, भंगरा, नागकेशर, पिपली शुंठि, जटामांसी, कालाबाला, कपूर, जायफल, बंशलोचन सिद्धार्थ

ये सब बराबर भागले महीन चूर्ण करावे यहचूर्ण रोचनहै व तृप्ति करैहै व अग्निको दीपन करैहै व बल वीर्य्यको बढ़ावैहै और त्रिदोष को व बवासीर को व मल बद्धताको व तमकको व गलग्रह को व कासको व हुचकीको व अरुचिको व क्षयीको व संग्रहणीको व अती-सारको व रक्तक्षयको व प्रमेहको व गुल्मको हरै है ॥ पाढ़ादिचूर्ण ॥ पाढ़ा, अतीस, इन्द्रयव, कूड़ाछाल, नागरमोथा, कटुकी, धवकेफूल रसौत, शुंठि, बेलफल इन्होंकाचूर्ण चावल धोवन जलके सङ्गलिया संग्रहणी को व प्रवाहिकाको व गुदरोगको व अर्शकोहरैहै॥ तक्रसेवन॥ संग्रहणी रोगमें अरुचिहो तो बिजौरा की केशर अदरख अर्क सेंधा निमक मिला तक्रको प्रभात या भोजन कालमेंसेवनकरै॥ चित्रकादि तक्र योग ॥चीता, अजमोद, सेंधा, शुंठि, मिरच इन्होंको खट्टे तक्र के संग सातदिन तक खावै यह अग्नि दीपनहै और संग्रहणीको व अतीसारको हरैहै॥ योगांतर ॥ ७६८ तोले तक्रमें सांभर ३२ तोले हरीतकी ६० तोले घालिपकावे पीछे घृत १६ तोले तिलतेल १६ तोले शुंठि १६ तोले चीता १६ तोले जीरा ४ तोले मिरच ४ तोले पिपली ४ तोले अजमान ४ तोले ये मिला स्नेह सिद्धकरै यह सं-ग्रहणी विकार को नाशैहै॥ शंखवटी ॥ चिरमटी ४ तोले खार ४ तोले सेंधा ४ तोले बिड़लोन ४ तोले संचल ४ तोले इन्होंको नींबूकेरसमें कल्क करि शङ्ख को अग्निमें तपाय भस्मकरि तोले ४ मिलावे पीछे हींग ४ माशे शुंठि ४ माशे मिरच ४ माशे पिपली ४ माशे पारा ४ माशे बच्छनागविष ४ माशे गन्धक ४ माशे इन्होंको मिलाय गोली बांधे यह शङ्खवटी संग्रहणीको व क्षयीको व पंक्तिशूलको नाशैहै॥ जातिफलादितक्र ॥ जायफल, शुंठि, आंवला, वायविड़ङ्ग, हींग, जीरा ये सम भागले और गन्धक २ भाग माठामें पिसीराई व लहसुन मिला और हींगको भूनकर गेरै यह चूर्ण ८ माशेखावे यह आमकी संग्रहणी को नाशै है॥ वार्त्ताकगुटी ॥ १६ तोले थोहरकांटे ३ तोले सेंधा ३ तोला बिड़लोन ३ तोला सांभर बंगनगूदा १६ तोला आंकजड़ ८ तोला चीता ये सब मिलाय बैंगनके रस में मिलावे और पकावे पीछे गोली बांधे एक गोली भोजन करि खाया करै

यह अन्नको पकावै और संग्रहणी को व कास को व श्वास को व अर्शको व बिशूचिकाको व हृद्रोगको हरैहै॥ भल्लातकक्षार॥ भिलावां शुंठि,मिरच,पिपली,हरड़,आंवला,बहेड़ा, सांभर, कालानोन, सेंधा नोन, घरका धूमा ये सब तोले आठले गौके गोबर की अग्नि से जलावै खार सिद्धहो यह खार घृतके सङ्ग पियै अथवा भोजन में मिला खाय तो हृदयरोग को व पांडुको व संग्रहणीको व गुल्म को व उदावर्त्तको व शूलकोहरैहै॥ चवकादिचूर्ण॥ चवक,चीता,बेलफल शुंठि इन्होंका चूर्ण तक्रकेसङ्ग खाय तो दुष्टसंग्रहणीको हरैहै॥ रूच-कादिचूर्ण॥ कालानोन, चीता, मरिच इन्हों का चूर्ण तक्र के सङ्ग खाय तो संग्रहणीको व उदररोग को व गुल्मको व बवासीर को व अग्नि मांद्यको व प्लीहाको हरैहै॥ कपित्थाष्टकचूर्ण॥ कैथा ८ भाग खांड़ ६ भाग, अनार ३ भाग, अमली ३ भाग, बेलफल ३ भाग धवकेफूल ३ भाग, अजमोद ३ भाग, पिपली ३ भाग, मरिच १ भाग, जीरा १ भाग, धनियां १ भाग, पिपलामूल १ भाग, बाला १ भाग, सञ्चरलोन १ भाग, अजमोद १ भाग,दालचीनी १ भाग इलायची १ भाग, तमालपत्र १ भाग,नागकेशर १ भाग,चीता १ भाग,शुंठि१भाग इन्होंकामहीनचूर्णकरै यहकपित्थाष्टकचूर्ण गलके रोगोंको व अतीसारको व क्षयीको व गुल्मको व संग्रहणीको हरैहै॥ लाहीचूर्ण॥ दालचीनी,तमालपत्र,बेला,शुंठि,मिरच,पिपली,त्रिफला पारा, गन्धक, अजमोद, बड़ीसौंफ, बायबिड़ंग, हलदी, दारुहलदी बेलफल,चीता,जीरा,मोचरस,सज्जीखार, जवाखार इनसबकी चौ-गुनीभांग सबकाचूर्णकरै यह संग्रहणीको व सूतिकारोगको व सब रोगोंकोहरैहै और अग्निकोदीपनकरै और तक्रकेसङ्गखाय तो शरीर में कांतिपैदाकरै यहलाहीचूर्ण अनुभवसे लाही नामकदाईको कहा है॥ जातिफलादि॥ जायफल, लवंग, बेला, तमालपत्र, दालचीनी नागकेशर, कपूर, चन्दन, कालेतिल,बंशलोचन,तगर,आंवला,ता-लीसपत्र, पिपली, हरीतकी, स्याहजीरा, चीता, शुंठि, बायबिड़ङ्ग मिरच येसब समानलेवै इनसबोंके समभाग भांगले सबके बराबर खांड़ले सबको मिलाय १ कर्षभर शहदके सङ्ग खावै यहसंग्रहणी

को व कासको व श्वासको व क्षयी को, अरुचि को व बात कफ विकार को हरैहै ॥ ॥ वेलफलादिचूर्ण ॥ बेलफल, नागरमोथा, बाला मोचरस, इन्द्रयव इन्होंकाचूर्ण बकरीके दूधसङ्गखाय तो संग्रहणी को व आंव रक्तको हरै ॥ दूसराजातिफलादिचूर्ण ॥ जायफल, चीता बाला, बायविड़ंग, तिल, कपूर, जीरा, बंशलोचन, त्रिसुगन्ध, बहेड़ा शिवाय त्रिफला, त्रिकटु, गजपिपली, तगर, तालीसपत्र, लवंग इन्होंका चूर्ण सम भागले इससे दूनी मिश्रीले मिलाय खावै यह संग्रहणीको हरैहै ॥ पथ्य ॥ नींद, बमन, लंघन, पुराने साठीचावल खीलोंका मांड़, मसूर, अरहर, मूँग इन्होंका यूष, निःशेषकरि घृत निकला हुआ गौके दूधका दही व मट्ठा अथवा दूधमें से निकाला हुआ बकरीकामक्खन और बकरीका दूध, दही, तिलकातेल, मदिरा शहद, कमलकी जड़, मौलसरी, दोनोंप्रकारके अनार नवीन और सुन्दरवस्तु केलेकाफूल तथा फल तरुण बेलफल, सिंघाड़ा, चूका-शाक, भांग, कैथा, कुड़ा, जीरा, कसेरू, मट्ठा, जल, चौलाई के पत्ते तिलकवृक्षकेपत्ते, जायफल, जामन, धनियां, तेंदु, बकायन, अतीस अफीम, कच्चामांस खानेवाले जीवोंका तथा लवा, तीतर, शशा, एण इन्होंके मांसके रस, सब प्रकारकी छोटी मछली, खुड्डीश, मधुराल खलिस नाम मछली, सबकसायलेरस नाभिसे दो अंगुलनीचे तथा वांसके मूलमें अर्द्धचन्द्रके आकार तपायेहुये लोहसे दागना ये सब संग्रहणीमें पथ्यहैं ॥ अपथ्यम् ॥ रुधिर निकालना, जागना, जलपीना नहाना, स्त्रीसंग, बेगोंकारोकना, नासलेना, अंजन, स्वेदन, धूमपान परिश्रम, विरुद्धभोजन, घाम, गेहूं, मोठ, मटर, उड़द, यव, अदरख धरतीकेफूल, पोयशाक, बथुआ, राजमाष, काकमाची, कोहला, तूंबी मीठारस, सहिंजन, सब प्रकार के कन्द, ताम्बूल, ईष, बेर, आंब ककड़ी, सुपारी, लहसन, अन्नकी कांजी, तुषोदक, दूध, गुड़, दही का तोड़, नारियल, सांठी, कटेलीका फल, बांसकी कोंपल, सब पत्र शाक, बुराजल, गोमूत्र, कस्तूरी, खार, सबरेचक बस्तु, दाख खटाई, खारी रस, भारी अन्न तथा जल, सब प्रकार के पुआ ये सब संग्रहणी में अपथ्य हैं २२५ ॥ इतिसंग्रहणीप्रकरणम् ॥

अर्शयानीनवासीरप्रकार ॥ अर्श रोगी कर्म्मविपाक जो मासिक तनख्वाह देकरि गुरु से पठन करै वा मासिक तनख्वाह थापि शिष्य को पठन करावै तथा ऐसेही प्रकार हवन करै व जपादिक करै व करावै वह बवासीरका रोगीहोवै ॥ सामान्यार्शनिदान ॥ वात १ पित्त २ कफ ३ सन्निपात ४ लोहू ५ एक शरीरके साथ उपजैं ऐसे६ प्रकारकी बवासीर होय हैं गुदाकी तीनों आंटियांमें। और पहली आंटमें बवासीर एक दोष से उपजे और नवीनहो वह सुख साध्य है और दूसरी आंट में यानी बीच की आंट में बवासीर हो तो दो दोषों से उपजी और एक बर्ष से ज्यादह की न हो वह कष्ट साध्य होय है जो तीसरी भीतर की आंटी में शरीर के संग उपजी हुई सन्निपात यानी तीनों दोषों से युत हो वह असाध्य है॥ बवासीर का पूर्वरूप ॥ अन्न का परिपाक अच्छी तरह हो नहीं अन्न कोषही में रहै और बन्ध कोष्ठ हो अग्नि मन्द होजाय और डकार बहुत आवैं शरीर कृश होजाय कोषमें अफरा रहै और अङ्ग में पीड़ाहो ये लक्षण बवासीर के पूर्वरूप के हैं॥ बवासीररूप ॥ मिथ्याहार विहारादिक से कोप को प्राप्त हुये जो बात पित्त कफ दोष सो गुदा की तीनों आंटके ऊपर त्वचा और मांस और मेदाने बिगाड़ि नाना-प्रकार के मांस के अंकुरों को मस्सा के आकार गुदा के ऊपर रहै ताको बैद्य बवासीर कहै हैं॥ चिकित्साप्रक्रिया॥ बवासीर, अतीसार संग्रहणी ये रोग प्रायता से आपस में कारण होके उपजें हैं और अग्नि दीप को नाशै हैं इस वास्ते इन रोगोंमें विशेषकरि अग्नि की रक्षा करनी उचित है बवासीरमें चार उपाय कहे हैं औषध १ खार २ शस्त्र ३ अग्नि ४ इन्होंसे साध्य बवासीर में आराम होय है और इन चारोंमें औषध मुख्यहै और सूजा हुआ कठिनमस्सा हो तो उसे चिरादे किम्बा जोंकलगाय लोहू कढ़ावै बारंबार आरा-महो और जो बायु को अनुलोमन करै और अग्निको दीपन करै ऐसे पान व औषध बवासीरवाले को हित हैं और बायु की बवा-सीर में स्नेह व स्वेदन हित है और पित्तकी बवासीरमें रेचन हित है और कफकी बवासीर में वमन हित है और मिलेहुये दोषों की

संग्रहणी में मिलीहुई चिकित्सा हित है और रक्त की बवासीर में पित्त की ववासीर का इलाज हित है और जो ववासीर में दस्त पतला कईवेर लगे तो वातातीसार का इलाज करै और बवासीर में गाढ़ा दस्त आयाकरे तो उदावर्त्तका इलाज करै और लोहू बहै ऐसे ववासीरमें रक्तपित्त नाशक इलाजकरै और दस्त न आवै तो विड्बन्ध नाशक इलाजकरै॥ वातार्शनिदान॥ कसैला,कड़ुवा,तिक्त रूखा,ठंढा,हलका,कमखाना, ज्यादह खाना,मदिरा,स्त्रीसंभोग इन्हों का सेवन तथा लंघन,ठंढकाल, ठंढदेश दै कुश्ती, दण्ड, शोक, वायु घाम इन्होंका स्पर्श येसव वायुकीववासीरके कारणहैं ऐसे जानो॥ वातार्श लक्षण॥ जिसकी गुदाका मस्सा चिमचिमी को लिहे हो और कालाललाई को लिहे दरदड़ा कठोर और वाका मुंह फटाऐसा हो और छोटाबेर अथवा कपास विंदोला अथवा सरसीम इन्हों के सरीखाहो व कदम्बके फल सरीखा हो और मथवाय हो और पस-लियों में, कांधा में, कटि में, जांघ में, पेडू में, वहुत पीड़ा हो छींक और डकार आवैनहीं हियो दूखे भूँख लगै नहीं और कास, श्वास अग्नि मन्द कानमें शब्द भ्रम, गोला, तिल्ली येभी हों और मुख नेत्र,नख, त्वचा, विष्ठा, मूत्र ये कालेरंगहों ये लक्षणवायुकी बवासीर केहैं॥ अर्कपत्रक्षार॥ ताजे आकके पत्ते लावै, पांचोलक्षण इन्होंको तेल में व खट्टे रसमें मिला अग्नि से दग्ध करि खार वनावै यह गरम जलके संगलेय व मदिराके संगलेय तो बातकी बवासीरको हरैहै॥ विड़ंगादिचूर्ण॥ वायबिड़ंग,त्रिफला,शुंठि,मिरच, पिपलीतिगुनी खांड़, मूषाकरणी, निशोत,कंपिली इन्होंकाचूर्ण बराबरशहदकेसंग अथवा गुड़केसंग व मिश्रीके संगलेय तो वातकी बवासीरको हरै है लवणादिमट्ठा॥ सेंधा, चीता, इन्द्रयव, कालानोन, बेलफल, निम्ब छाल इन्होंका चूर्ण घालिमठाको ७ दिनपीवै तो वायुकी बवासीर जावै॥ मरिचादिचूर्ण॥ मरिच,पिपली,कुलिंजन,सेंधा,जीरा,शुंठि,वच हींग, वायबिड़ंग, हरीतकी, चीता, अजवाइन इन्होंका चूर्ण करि दुगुना गुड़ मिलाय १ तोला खावै ऊपर गरम जलपीवै यह सर्व ववासीरों को नाशै और विशेषकरि वायुकी बवासीरको नाशै॥ सूर

णमोदक ॥ जमीकन्दके रसमें मिरच, पिपली, शुंठि, चीता, श्रेष्ठजीरा हींग, अजवाइन, अजमोद ये सबबराबरमिलाय और इन्होंकाचौथा हिस्सा सेंधानोन डार सुखावै पीछे नींबूके रसमें १ दिन खरल करै पीछे गोलीबनावै यह सूरणमोदक रोगों को हरै और रोगियों को श्रेष्ठहै और बिशेष करि शूलको व संग्रहणी को व अतीसारको व प्रवाहिकाको व गुल्मको व बवासीर को व बायु प्रकोप को नाशै है और अग्निको दीपनकरैहै और बालक वृद्धकोभी हितहै और गार्भिणी को व रक्त पित्त वाले को सूरणमोदक कभी न देवै ॥ बाहुशाल गुड़ ॥ इन्द्रबारुणी, नागरमोथा, शुंठि, जमालगोटाकी जड़, छोटी हरीतकी, निसोत, कचूर, बायबिड़ंग, गोखुरू, चीता, तेजबल, अकरकरा ये प्रत्येक दो दो कर्ष भर लेवै और जमीकन्द ३२ तोला बरधारा १६ तोला भिलावां १६ तोला इन सबों के चूर्णकोद्रोण भर जल में काढ़ाकरि चतुर्थांश रक्खै इस काढ़ासे तीन गुणागुड़ मिलाय फेर पकावै सुन्दर पक जाय तब चीता ४ तोला निसोत ४ तोला दंतीमूल ४ तोला तेजबल ४ तोला शुंठि, मिरच, पिपली चूर्ण ३ तोला इलायची ३ तोला मिरच ३ तोला दालचीनी ३ तोला मिलाय पीछे शहत १ सेर मिलावै ऐसे बाहुशाल गुड़ सिद्ध होय है यह बवासीर को व गुल्मको व बातोदरको व आमबातको व प्रतिश्याय को व संग्रहणी को व क्षयीको व पीनस को व हलीमक को व पांडु को व प्रमेहको हरै है यह रसायन है ॥ पित्तार्शहेतु ॥ कडुवा, खट्टा, लवण, गरम ऐसे पदार्थों का सेवन व कुश्ती, दण्ड अग्नि, घाम इन्होंका सेवन, गरमदेश, गरमकाल, क्रोध, मदिरा दूसरे के उत्कर्ष को नहीं सहना, विदाहि, तीक्ष्ण, गरम ऐसे पान व अन्न ये सब पित्तकी बवासीरके कारणहैं ॥ पित्तार्शलक्षण ॥ मस्सा नीला मुँहहोय और लाल पीला सुपेदाई लियेहो और उस मस्सा में महीनधारा सों गरम २ लोहू जाय और महीन कोमलमस्साहो और जोंक कैसा मुखहो, शरीर में दाहहो, ज्वर भी रहै और पसीना आवै, प्यास बहुत हो, मूर्च्छा हो, अरुचि हो, मोह हो और मल पतला नीला पीला लाल व आम युतहोय व मध्य समान व हल्दी

समान त्वचा, नख, मूत्र हों ये लक्षण पित्त की बवासीर के हैं॥ तिलादिचूर्ण॥ तिलोंका चूर्ण,लालरतालूबीज, नागकेशर इन्हों का चूर्ण खांड़युत खानेसे पित्तकी बवासीर नाशहोवै॥ तिलादिकाढ़ा॥ तिल भिलावां इन्होंका काढ़ा किंवा इन्द्रयवों का काढ़ा शहत युत रात्रिमें पीनेसे पित्तकी बवासीर नाशहोयहै पथ्य मूंगरस सांठीचावल काहै॥ भल्लातामृत॥ गिलोय,कललावी,काकड़ाशिंगी,मुण्डी, चिरमठी,केतकी इन्होंके रसमें भिलावां को १ दिन खरलकर ४ माशे खावै यह भल्लातामृत सर्व बवासीरोंको हरै है॥ धतूरादिचूर्ण॥ धतूरा फल पक्का,पिपली, शुंठि,हरीतकी, नेत्रबाला इन्होंका चूर्ण ८ रत्ती शहत मिसिरी घृत १ तोला सङ्ग खावै पित्त की संग्रहणी को हरै है॥ भल्लातकादिमोदक॥ भिलावां, तिल,हरीतकी इन्हों का चूर्ण गुड़युत करि मोदकबनाय १ तोला खावै यह पित्तकी बवासीरको हरै है॥ वोलबद्धरस॥ गिलोयसत,पारा, गन्धक ये समान भाग इन सबोंके बराबर रक्तबोल लेवै इसको शाल्मली के रसमें खरल करै ऐसे वोलबद्ध तैयार होय है यह शहत संयुक्त ३ माशे खाने से रक्तार्श, पित्तार्श, पित्तबिद्रधि, रक्तप्रमेह, रक्तपित्त स्त्री का रक्त प्रदर नाश होय है॥ लोहादिमोदक॥ लोहभस्म, इन्द्रयव, शुंठि भिलावां, चीता, बेलफलगिरी, बायबिड़ंग, छोटी हरड़ इन्हों को चूर्ण समान ले सबके बराबर गुड़मिलाय १ कर्षभरखावै अर्शनाश होवै॥ तीक्ष्णमुखरस॥ पाराभस्म, अभ्रकभस्म, लोहभस्म, तांबा कांत, मंडूर, गन्धक ये सब बराबर कुमारी रस में खरल करै १ दिन पीछे अंधमूषा यंत्र में ३ दिन तक तुषाग्नि से पकावै इसका चूर्ण मिसिरी संग १ माशा खावै यह पित्त की बवासीर को हरै है इसमें अनोपान घृत, खांड़, शहत का है॥ कफार्शनिदान॥ मीठा चिकना, शीतल, खट्टा, भारी अन्न इन्हों का सेवन व्यायाम न करना दिन में शयन करना सुंदर शय्या व आसन पर सुख से बैठना,पूर्बवायुका सेवन, शीतकाल,शीतदेश,चिन्तारहित,आलस्य में रहना ये सब कफकी बवासीर के कारण हैं॥ कफकीबवासीरका लक्षण॥ गुदामें मस्साकीजड़ बड़ीहो और मस्सा करड़ाहो सपेद हो

मन्द पीड़ा ऊंचा भारी कफ सों लिपटा हो खुजाल हो वह प्यारी लगै और पेड़ूमें अफारा रहै गुदामें खाज बहुतहो और कास,श्वास होय हिया दूखै अरुचि और पीनस भी हो मूत्रकृच्छ्र मथवाय हो शीतलागै अग्नि मन्द और बमन भी हो कफसे लपटो मलजाय और गुदा के मस्से में लोहू जाय नहीं और शरीर का रंग पीला चिकना हो और आमबात भी हो और चरबी व कफ मिला मल बहै और मस्सा न स्रवै न फूटै और त्वचा,मूत्र,मल,नेत्र,नख सपेद रंग हों ये लक्षण कफकी बवासीरके हैं ॥ कफार्शचिकित्सा ॥ कफकी बवासीर में गुदा में व पांशु में जोंक लगाय रक्त कढ़ावै व आक के रसमें औषध मिलाय लेपकरै अथवा दाह करावै ये सब हितहैं॥ सामान्य चिकित्सा ॥ जमीकन्द, कासमर्द, सहिंजन, बैंगन, बालुक इन्होंके शाकको पकायखावै पथ्य गेहूं चावलका अथवा कसुंभाके कोमल पत्तों को कांजीसें पीस खावै अथवा अग्निरस ४माशे खावै अथवा आनन्दभैरवरस १रत्ती खावै अथवा काकमाची, देवडांगरी बीज, गुड़ इन्हों को पीस लेप करने से बवासीर शूल नाश होवै ॥ अर्शभेदललित ॥ गुदा द्वारके पृष्ठ भाग में सपेद अंकुर पैदाहो इसे शूल कहे हैं यहभी कफार्शका भेदहै इसको लेप व रसायनसे शांत करै ॥ देवदाल्यादिलेप ॥ देवडांगरी के बीज, सेंधा इन्हों को कांजी में पीस लेप करने से शूल रोग नाशहो ॥ कांचनीलेप ॥ हलदी,लवंग चूर्ण, लोह, मैनशिल, गजपिपली इन्हों को जलमें पीस लेप करने से बवासीर नाश हो अथवा सीसाकी नलीसे घृत सेंधायुत कडुवा काढ़ा गुदामें चढ़ावै यह बिड्बंधको हरै है॥ सूरणादि लेप ॥ जमीकंद हलदी,चीता,सुहागा,खार,गुड़ इन्होंको कांजी में पीस गुदाके लेप करने से बवासीर जावै ॥ कटुतुंबीलेप ॥ आली कटुतुंबी को कांजीमें पीस लेप करने से बवासीर जड़से नाश होय है ॥ पीलुबर्त्तीतेल ॥ पीलुका तेलमें बत्तीको भिगोय गुदामें चढ़ानेसे बवासीर में आराम हो और बलीमें बेदना होवेनहीं ॥ दंत्यासव ॥ दशमूल ४ तोले चीता४ तोले जमालगोटा जड़ ४ तोले इन्होंको २०४८ तोले पानीमें चतुर्थांशकाढ़ाकरै शीतल होनेपर गुड़ ४ तोले इलायची ४तोले मिलावे

पीछे घृत से चिकने बासन में घालि १५ दिनतक धरा रक्खै पीछे शक्ति अनुसार पीवे यह दंत्यासव बवासीर को व संग्रहणी को व पाण्डु रोगको हरै और सब व्याधिमात्रको हित है ॥ पथ्यादिगुड़ ॥ हरीतकी १२८ तोले आंवला ६४ तोले कैथ ४० तोले इन्द्रायण २० तोले बायविड़ंग ८ तोले पिपली ८ तोले लोध ८ तोले मिरच ८ तोले सेंधा ८ तोले रालबालुफल ८ तोले इन्होंको २०४८ तोले पानी में चतुर्थांश काढ़ा करै शीतल होनेपर गुड़ ८०० तोले धवके फूल २० तोले मिलाय घृतचिकनेबासनमें घालियथाशक्ति पीवै यह बवासीरको व संग्रहणीको व पाण्डुरोगको व हृदय रोगको व प्लीहा को व गुल्मको व मंदाग्निको व उदर सूजनको व कुष्ठको हरैहै और यह परमौषधहै ॥ भल्लातकहरीतकी ॥ भिलावां, छोटीहरीतकी, पाढ़ा कटुकी, अजमान, जीरा, कूट, चीता, अतीस, वच, कचूर, पुष्कर-मूल, हींग, इन्द्रयव, शुंठि, संचलनोन ये सब बराबर ले गौके मूत्र में खरलकरि छायामें सुखाय गोली तैयार करै १ माशाभर गरम जलके सङ्गखावे कफकी बवासीर नाशहोयहै ॥ लांगल्यादिमोदक ॥ कललावी, इन्द्रयव, पिपली, चीता, उंगा, चावल, चिरायता, सेंधा ये सब बराबर ले और दुगुना गुड़ मिलाय १ तोलेकी गोली बांध खावै यह लांगल्यादिमोदक कफकीबवासीरकोहरै ॥ पथ्यादिमोदक ॥ हरीतकी४तोले शुंठि ४ तोले पिपली ४तोलेइन्होंका चूर्ण करिदाल-चीनी १ तोले इलायची १ तोले तमालपत्र १ तोले गुड़ ४० तोले मिलाय १० माशे खावै यह बवासीर को नाशै ॥ यवान्यादिमोदक ॥ अजमान, बहेड़ा, हरीतकी, जीरा, पिपली इन्होंको बराबर ले चूर्ण करै और दुगुना गुड़ मिलाय १० माशेखावै यह बवासीरको हरै है भल्लातकादिलेप ॥ भिलावां, हाथीकाहाड़, जमालगोटाकीजड़, निंब कपोतकी बिष्ठा, गुड़, सौराष्ट्री, माटी, बचनाग बिष इन्हों का लेप कफकी बवासीर को हरै है ॥ शृङ्गबेरक्काथ ॥ अदरखका काढ़ा पीनेसे कफकी बवासीर जावे ॥ रक्तार्श निदान ॥ रक्तबिकार करि उपजी बवासीर में मस्सा पित्तार्श सरीखाहो किम्वा बड़का प्ररोह सरीखा हो किम्वा चिरमठी वा विद्रुम सरीखा हो और उन मस्सों से लोहू

की धार गरम और बहुत पड़े और मल गाढ़ा होकर उतरै और लोहूका बहुत जावा सुंबाका शरीर मेढक का वर्ण सरीखा होजाय और अधोबायु अच्छीतरह सरै नहीं और वर्ण, बल, उत्साह, तेज इन्होंकी हानिहो और इन्द्रियां कृष्ण वर्ण हों और काला, कठिन रूखा ऐसा मल उतरै ये लक्षण रक्तकी बवासीरके हैं ॥ वातादियुक्त रक्तार्शलक्षण ॥ मस्सा में लोहूजाताझाग हो और कटि में गुदा में जंघामें पीड़ाहो, शरीर दुर्बलहो ये लक्षण हों तो लोहूकी बवासीर में बायुका मिलाप जानिये और वाकोमल सुपेद, चिकना भारी ठंढा हो और मस्सामें सुमोटी धार और नमी पड़े और जाकीगुदा के कफ सोही लागा रहै तो बवासीर कफके संबंध को लिये लोहू की जाननी योग्य है ॥ सामान्यचिकित्सा ॥ स्वयमग्नि रस को खाइ ऊपर खांड़, घृत शहत को मिलाय १० माशे अनोपान करै यह बवासीरकोहरै ॥ अश्वगंधादिधूप ॥ असगंध, निर्गुण्डी, कटैली, पीपल इन्होंकी धूप लेनेसे बवासीर नाशहोवै ॥ अर्कमूलादिधूप ॥ आककी जड़, जांटीपान, मनुष्यके बाल, सांपकी कांचली, बिलावकाचाम घृत इन सब को मिला धूप देने से गुदाके बवासीर नाशहोवैं ॥ पिपीलिकातेल ॥ पिपली, मैनफल, बेलफल, बच, मुलहठी, कचूर, शतावरी, पुष्करमूल, कूट, चीता, देवदारु ये सब समान भाग ले कल्क करै और कल्कसे चौगुना तेल और तेलका द्विगुना दूध इन्होंको पकाय तेलमात्र बाकी रक्खै यह बायुकी बवासीर वालेको अनुवासन बस्तीमें श्रेष्ठ है और यह पिपीलिकादि तेल लेपनमें व मलने में हितहै ॥ विषमुष्टिचूर्ण ॥ कुचिला के बीज सात किम्बा ८ किम्बा ६ को पीस मिसिरी मिलाय बलाबल देखि खावै यह रक्तकी बवासीरको व महा प्रमेह को व त्वचा दोषको व कृमि रोग को नाशै है नवनीतादियोग ॥ नूनीघृत, तिल इन्हों को मिला खाने से अथवा नागकेशर, नूनीघृत, खांड़ इन्हों को मिला खाने से अथवा अधबिलोइ दही व तक्र सेवन से रक्तकी बवासीर नाशहोयहै ॥ भल्लातकामृत ॥ भिलावे २५६ तोला दूध २५६ तोला पानी १०२४ तोला सबको मिला अग्निसे पकाय दूधमात्र रहनेदेवै और दूधके

बराबर घृत मिलावे और घृतके चतुर्थांश मिसिरी मिलावे और मिसिरी समभाग आँवला और शहतमिलावे और मिसिरीसे आधा भाग हरीतकीकाचूर्ण मिलावे और हरीतकीसे आधाभाग लोहाकी भस्म व गिलोयसत मिलावे इनसबको चिकने घड़ेमेंघालि अन्नका भराकोठा व खत्तीमें दाबदेवे सात दिन के बाद घड़ा को काढ़ि एक तोलाघृतको रोजखावे यह भल्लातकामृत रक्तकी बवासीरको जल्दी हरे और खारा व तीक्ष्णपदार्थका परहेजरक्खे और तेलशरीरमेंमले नहीं॥सिद्धरस॥घृत १२८तोला बकरीकादूध १२८तोला बकरीकादही १२८ तोला बकरा के मांस का रस १२८ तोला अनाररस १२८ तोला और आंवला १ तोला शुंठि १ तोला मिरच१तोला पिपली १ तोला नागरमोथा १ तोला बेलफल की गिरी १ तोला कैथकी गिरी १ तोला असली १ तोला धवकेफूल १ तोला रक्तचन्दन १ तोला सपेदचन्दन १ तोला वाला १ तोला कालाबाला १ तोला लोध १ तोला राल १ तोला पद्मकेशर १ तोला मजीठ १ तोला बेरीछाल १ तोला चवक १ तोला दालचीनी १तोला इलायची१ तोला पद्माख १ तोला बला १ तोला मुलहठी १ तोला मोचरस १ तोला कमल १ तोला इन सबोंको मिलाय अग्निपै पकावे जब घृतमात्र आयरहै तब उतारले यह बवासीर को व संग्रहणी को व मूत्रकृच्छ्रको व पांडुरोग को व ज्वर को व कटिशूलको व अतीसार को हरै है॥ शिवरस॥ पारा, वैक्रान्तमणि, तांबाभस्म, कांतभस्म अभ्रक भस्म, गंधक येसब बराबर भागले अनारके रसमें इन्होंको खरलकर १ माशा खाने से यह शिवरस बवासीर को नाशै॥ अपामार्गबीजादि॥ उंगाके बीज, चीता, शुंठि, हरीतकी, नागरमोथा, चिरायता ये सब समभागले और सबोंके बराबर गुड़ मिलाय१० मासे रोजखावे औषध के जरा पीछे तक्रभात खावे बवासीर जावे लोहामृतरस॥ लोहभस्म ७२ तोला शुंठि मिरच पीपल मिलाके १ तोला त्रिफला १ तोला दारुहलदी १ तोला चीता १तोला नागरमोथा १ तोला धमासा १ तोला चिरायता १ तोला निम्ब १तोला परवल १ तोला कटुकी १ तोला गिलोय १तोला देवदारु १ तोला

बायबिड़ंग १ तोला पित्तपापड़ा १तोला इन्होंकोमिलाय चूर्णकरि १० माशे घृत शहतमें मिलाय चाटै यह लोहामृत बवासीर को व संग्रहणीको व बात को व पित्तको व कफको नाशै है ॥ बिम्बीपत्रादि लेप ॥ देवदारु के पान, शुंठि इन्हों को पीस लेपन करनेसे बवासीर शांतहो ॥ ज्योतिष्कबीजलेप ॥ मालकांगनी के बीजों को पीस कल्क बनाय लेपकरनेसे रक्तकी बवासीर नाशहोयहै इसमें सन्देह नहीं है यह धन्वन्तरिजी महाराजका मतहै ॥ गुंजाकूष्माण्डलेप ॥ चिरमठी कोहलाकेबीज, जमीकन्द इन्हों को पीस बत्ती को लेपन करै और छायामें सुखावै इसको गुदामें चढ़ाने से बवासीर नाशहो ॥ कनकार्णवरस ॥ नवीन आँवलाचूर्ण ४०० तोले बायबिड़ंग ४ तोला मरिच ४ तोला पाढ़ा ४ तोला चवक ४ तोला चीता ४ तोला बाला ४ तोला मजीठ ४ तोला पिपलामूल ४ तोला लोध ४ तोला सुपारी ४ तोला पिपली २ तोला गजपीपली २ तोला कूट २ तोला दारुहलदी २ तोला नागरमोथा २ तोला शतावरी २ तोला दोनों सारिवा ४ तोला गड़ूभा की जड़ २ तोला नागकेशर १६ तोला सबचूर्णसे आठगुणा जलमें काढ़ापकाय चतुर्थांशरक्खै और बस्त्रसे छानि बराबर तोल दाखकारस मिलावै और ४०० तोले मिश्री ६४ तोले शहत मिलाय तैयारकरै पीछे खांड़ गुड़का धूप दियेहुये चिकने बासनमें पूर्व्वोक्त द्रव्यको घालै पीछे दालचीनी १ तोला इलायची १ तोला तमालपत्र १ तोला नेत्रबाला १ तोला नागकेशर १ तोला कालाबाला १ तोला सुपारी १ तोला इन्होंका चूर्ण घालि बरतनका मुखबन्दकरि १५ दिनतक धरा रक्खै पीछे यह कनकार्णवरसको बलाबल देखि पीवै यह दीपनहै और सब रोगों को हरै है और बिशेषकरि बवासीरको व संग्रहणीको व पांडुरोग को व सूजनकोनाशैहै ॥ योगराजगुग्गुल ॥ पिपली, गजपिपली, चीता बायबिड़ंग, इन्द्रयव, धमासा, कटुकी, पिपलामूल, भारंगी, पाढ़ा अजमान, मूर्वा, शुंठि, हींग, चवक ये सब समान भागले और इन सबोंके बराबरतोल गूगुलइन्होंकाचूर्णकरि शहतसंग १० माशेखावै यह योगराज गुग्गुल रक्तकी बवासीरको व बातकी बवासीर को

व गुल्मको व संग्रहणी को व पांडुकोहरै है अथवा शलके चूर्ण को कडुवेतेलमें मिलाय धूपदेनेसे गुदाके ववासीर मस्साकालोहूबहना वन्दहोवे ॥ कपूरधूप ॥ कपूरकाधूप गुदामें देनेसे मस्सा में से बहता लोहू बन्दहोय है ॥ पयसादियूप ॥ तिल, मूंग, तूरी, मसूर इन्हों का काढ़ा किंवा यूष के संग मीठे चावल कछुक खट्टा व सुगंधयुत को खावै ॥ कालकलांतकवटी ॥ पारा, वंगभस्म, हरताल, सेंधा, कल-लावी, तूरी ये चारचार तोले लहसुन १६ तोले इन्होंको मिलाय करेला के रसमें १ दिन खरलकरै पीछे १ रत्तीखावै और १ रत्ती गुदामेंलेपै ये कालकलांतकवटी रक्तवातको व कफ की बवासीरको हरै इसकेऊपर अनोपानयहहै भिलावां, त्रिफला, जयपाल, चीता ये सब वरावर ले और इनसबोंके बराबर सेंधाले इन्होंका चूर्ण करि खोपरीपर बहुत देरतक मन्दमन्द अग्निसे पकावै पीछे १० माशे तक्र के संगखावै यह अनोपानहै ॥ अपामार्गादिकल्क ॥ उंगाकेबीजों के कल्कको चावल धोवन जलके संगखावै रक्तका बवासीर नाश होवै ॥ पद्मकेशरयोग ॥ कमलकीकेशर, नवनीतघृत, शहत, नागकेशर मिसिरी ये सब समानभाग ले रक्त की बवासीर में खावै आराम हो ॥ समंगादिदुग्ध ॥ लज्जावन्ती, कमल, मोचरस, लोध, तिल, चंदन इन्होंसे सिद्धकरीका दूधपीनेसे रक्तकी ववासीर नाशहोवै ॥ काढ़ा ॥ चन्दन, चिरायता, कटुकी, धमासा, शुंठि, दारुहलदी, दालचीनी बाला, निम्ब इन्होंका काढ़ा रक्त की बवासीर को हरै है ॥ द्राक्षादि योग ॥ दाख, हलदी, महुवा, मंजीठ, नीलकमल इन्होंकेचूर्णको बकरी के दूधके संगखावै रक्तकी बवासीर नाश होयहै ॥ त्रिकट्वादियोग ॥ शुंठि, मिरच, पिपली, त्रिफला, जयपाल, चीता, भिलावाँ, सेंधा, सोरा सांभर, तेल, घृत, बकरीकी मज्जा व चरबी व मूत्र इन्होंको गोमूत्र मनुष्यमूत्र, महिषीमूत्र, गधामूत्र, घोड़ाकामूत्र इन्हों में ३ दिन तक खरलकरै फेर सुखाय गजपुटमें पकावै पीछे ८ माशे यह घृत के संगखावै बात की बवासीर नाशहोवै और यही दूध के व मांस रसके संगखावे तो गुल्म को नाशै ॥ विड्बन्ध ॥ शीशाकी नलीबनाय उसे घृत व सेंधानिमकसे लेपकरि गुदामें रोजचढ़ावै मलरोधनाश

होवै ॥ रक्तस्राव ॥ धूपनसे व लेपसे व अभ्यंगसे मस्सोंमें आराम न हो तो जोंक लगवावे ॥ दूसराप्रकार ॥ विड्बन्ध करनेवाला व ज्यादा खाजकरनेवाला व लोहू बहानेवाला ऐसे तीन प्रकार के बवासीर में जोंक लगवायकरि लोहूकढ़ावना इसके समान कोईउपाय नहीं है ॥ सक्तूपिण्डबन्धन ॥ सत्तू की पिण्डी बनाय तेलसे अथवा घृतसे भिगोय पिण्डीको गुदापैबाँधै तो बवासीरमें आरामहोवै ॥ नाशार्श चिकित्सा ॥ नाकमें व नाभिमें व शिश्नमें व नेत्रमें व कानोंमेंअर्शहो तो जहांजहां की कहीहुई क्रियाकरै ॥ रजनीचूर्ण ॥ हलदीके चूर्णको थोहर के दूधमेंपीस उसमें अस्वार सूत्र को भिगोय मस्सा ऊपर बांधै तो बवासीरअच्छाहो और भगन्दरपै बांधै तो भगन्दरअच्छा हो ॥ चामखील ॥ चामकील को सेंकि खारसे व अग्निसे जलावै ॥ दुग्धिकादिघृत ॥ दूधी, कटैली इन्होंकाकल्क १ भाग दूध ४ भाग घृत १ भाग इन्होंको पकावै जब घृतमात्र बाकीरहै तब अग्निसे तारे यह भोजन में व पीनेमें व लेपमें बवासीर को हरै ॥ व्योषादि मोदक ॥ गुड़, शुंठि, मिरच, पिपली, त्रिफला, मिरिच, तिल, भिलावाँ चीता इन्होंके चूर्णकी गोली खानेसे बवासीरके व त्वचा के विकार को हरैहै ॥ गुडचतुष्क ॥ शुंठि, पिपली, हरीतकी, अनारफलइन्होंको गुड़मेंमिलाय नित्यखानेसे आमको व अजीर्णको व बवासीरको व मलबद्धता को हरै है ॥ कार्पासमज्जागुटी ॥ कपास के बिन्दोला की गिरी, लहसुन, सज्जीखार, हींग इन्होंकीगोली घृतमें बेरकेसमान बनावै यह बवासीरको नाशैहै ॥ त्रिफलादिगुटिका ॥ त्रिफला, पांचो लवण, कोष्ठ, कटुकी, देवदारु, बायबिड़ंग, निम्बोली, चिकनी हलदी दारुहलदी, सज्जीखार ये सब पदार्थ मिलाय करंज की छाल के रसमें घोटै बेरकीगुठली समान गोली बनावै ये गोली अनेकरोगों में अनोपानों के संग सुखदेय हैं सो कहतेहैं तक्र के संग बवासीर को हरै है और खट्टेरसों के संग गुल्म को हरै है और गर्म्मपानी के संग अग्निको दीपन करैहै और बायबिड़ंग के काढ़ा के संग कृमि रोग को हरै है और खैर के काढ़ा के संग त्वचा रोग को हरै है और शीतल पानी के संग मूत्रकृच्छ्र को हरै है और तेल के संग

हृदय रोग को हरैहै और [illegible] किंवा इन्द्रयवरस इन्हीं के संग सर्वज्वरों को हरैहै और बिजौरा के रस के संग शूल को हरैहै कैथा व तिन्दुक रसके संग सब विषोंको हरैहै और इन्द्रगोप कृमिके संग सब कुष्ठोंको हरैहै और पिपलीके काढ़ाकेसंग जलोदर को हरैहै और भोजनके ऊपर खाने मे भुक्तको जरावै है और सब नेत्र रोगों में शहत में घिस अंजन करै और लेप करने से नारी के प्रदर रोग को हरैहै और व्यवहार में तथा द्यूतयानी जूआ खेलनेमें तथा संग्राम में तथा मृगयादि में स्पर्श करने से विजय प्राप्तहोय है॥ गुग्गुलादिवटी॥ गूगुल, लहसुन, निंबोली, हींग, शुंठि इन्होंकी गोली शीतल जल के संग खाइ बवासीरको जल्दी हरैहै॥ चन्द्रप्रभा वटी॥ लोह भस्म८तोला शुद्ध गुग्गुल८तोला खांड़ १६ तोला शि-लाजीत ३२ तोला वंशलोचन ४ तोला वायविड़ंग १ तोला त्रिफ-ला १ तोला शुंठि मिरच पिपली मिल १ तोला चिरायता १ तोला गजपिपली १ तोला हलदी १ तोला दारुहलदी १ तोला पिपला मूल १ तोला देवदारु १ तोला सांभरनोन १ तोला सेंधानोन १ तोला धनियां १ तोला सोनामाखी १ तोला कचूर १ तोला अतीस १ तोला सोना भस्म १ तोला सज्जीखार १ तोला यवाखार १ तोला वच १ तोला नागरमोथा १ तोला तमालपत्र १ तोला जमालगोटाकी जड़ १ तोला इलायची १ तोला इन्होंका चूर्ण करि शहतमें गोली १० माशेकी बांधै १ गोली रोज खावै यह चन्द्रप्रभावटी सब विधिके बवासीरको व पाण्डु रोगको व भगंदरको व मूत्रकृच्छ्र को व प्रमेह को व क्षयीको व कासको हरैहै॥ सूरणपुटपाक॥ जमीकन्दको पुटपाक करि पकाइ रस काढ़ि रस तेल संयुक्त खाने से बवासीर को नाशै है॥ चित्रकादिदधि॥ चीताकी जड़की छालको पीस घड़ाको भीतरसे लेपै उस घड़ा में दही जमावै वह दही वा तक्र सेवन से बवासीर हरैहै॥ कांचन्यादिविषयोग॥ हल्दी, सोमलविष, यवाखार, सिंगरफ इन्होंको पानीमें पीस गोली बांधि मस्साके लेप करने से बवासीर नाश होवै और दूध गरमकी भाफ लेवै और दूधघृत युक्त चावल को सेवन करै यह सिद्धि योग बवासीरको हरैहै॥ वृद्धदारुमोदक॥

बरधारा, भिलावाँ, शुंठि ये सब बराबर ले चूर्ण करि दुगुने गुड़ में मोदक करि खानेसे छह प्रकारकी बवासीरको नाशैहै॥ सूरणबटक॥ सूखे जमीकंदका चूर्ण ३२ तोला चीता १६ तोला शुंठि ४ तोला मरिच चूर्ण २ तोला इन्हों को दुगुने गुड़ में मिलाय गोली बनाय खाने से बवासीर को हरैहै॥ वृहत्सूरणबटक॥ जमीकंद १६ भाग बरधारा १६ भाग मुसली ८ भाग चीता ८ भाग हरीतकी ४भाग बहेड़ा ४ भाग आँवला ४ भाग बायविड़ंग ४ भाग शुंठि ४ भाग पिपली ४ भाग भिलावाँ ४ भाग तालीसपत्र ४ भाग दालचीनी २ भाग इलायची २ भाग मरिच २ भाग इन्होंका चूर्ण करि दुगुने गुड़में मिलाय गोलीबनावै यह गोली खाने से बवासीर को हरै और अग्निको दीपनकरै और बातकफकी संग्रहणी को व श्वासको व कास को व क्षयी को व प्लीहा को व श्लीपद को व सोजा को व हुचकी को व प्रमेहको व भगंदरको व बलीपलितको हरै है और यह गोली स्त्री भोग की इच्छा को पैदाकरैहै और रसायन है॥ कोशातकीघर्षण॥ कड़वी तोरई को मस्साके घिसके लगानेसे गुदा के मस्से नाशहोय हैं॥ निशादिलेप॥ हलदी, कायफल, थोहर का दूध सेंधा इन्हों को गोमूत्रमें पीस लेप करनेसे बवासीर नाशहो॥ अर्कमूलादिलेप॥ आककीजड़ सहिंजनाकी जड़को पीस लेप करने से बवासीर जावै॥ निंबादिलेप॥ निंबपान पीपलपान इन्होंको पीस लेप करने से अथवा कटुतुंबी, गुड़ इन्होंको कांजीमें पीस लेपकरने से बवासीर नाशहोय है॥ एरण्डमूलादि॥ एरण्ड की जड़, देवदारु रास्ना, मुलहठी, नूनी घृत इनको पीस सबों से चौगुणी यवों की पीठी मिलाय और गोके दूध में पकाय सिद्धकरै इससे बवासीरके स्वेदन कर्म्म करि पसीना काढ़नेसे अथवा इसीको बवासीर ऊपर पिण्डीकरि बांधनेसे शूलसहित बवासीर नाशहोयहै॥ स्नुह्यादिलेप॥ थोहर दूध, चीता, लांगली, जमालगोटाकी जड़ इन्हों को पीस लेपनेसे बवासीर नाशहोवै यह कृष्णआत्रेयजीकामतहै ऐसेजानना योग्यहै॥ कृष्णाशिरीषलेप॥ जटामांसी, पिपली, सिरसबीज, सेंधा साबरसींग, रीछकीविष्ठा, चिरमठी, आक दूध इन्हों को गोमूत्रमें

पीस मस्सापर ३ दिनतक लेपकरै जलकी बवासीर नाशहो॥ अर्कादि लेप॥ आकका दूध, थोहरका कांटा, कटुकी, तूंबी के पान, करंजवा इन्हों को बकरा के मूत्रमें पीस लेपकरनेसे बवासीरका नाशहोवे॥ गुंजाकृष्णलेप॥ चिरमठी, कोहला, जमीकन्द इन्हों की बत्ती गुदा में चढ़ानेसे बवासीरशान्तहो॥ गोरीपाषाणलेप॥ शंखिया १० माशे थोहरके कांटे इन्हों को पीस पुटपाक विधान से पकाइ रस काढ़ि स्याहीनी कोलीजन इन्होंको पीस कल्ककरि बवासीरपर लेपकरने से बवासीर हरै है॥ न्यग्रोधपत्रलेप॥ बड़के पत्तोंको अग्निसे जलाइ राखकरि तेलमेंमिला लेपकरनेसे बवासीरशांतहो॥ कटुतुंब्यादिलेप॥ कटुतूंबी के पत्ते जमालगोटाकी जड़ मुरगाकी विष्ठा, सफ़ेद मुसली असगंध, चीता ये समान भागले इन्हों के चूर्ण को आकके दूधमें खरलकरि भावना देवे पीछे थोहरके दूधमें खरलकरि तैयार करै इसको वस्त्रकी बत्ती से चारोंतरफ़ पोते उसबत्तीको प्रभातमें लेप करवावे और शाममें गुदाके अन्दर प्रवेश करै और कछु पीड़ाहो तो अग्निसे सेंककरवावे और जो पीड़ा शांत न हो तो गरमजलमें गुदाको डबोय बैठजावे नसों की पीड़ा शांत होवे और सचिक्कण व मीठा अन्न खवावे और शीतलजलका पान करवावे यहविधि निःशंक मनुष्यको होकरि ७ दिन तक करनी चाहिये इससे निश्चय बवासीर नाशहोवे॥ देवदालीबीजलेप॥ देवडांगरीके बीज सेंधानोन इन्होंको कांजीमें पीस लेपकरनेसे अतिकठोर मस्सा भी नाशहोवें॥ चव्यादिघृत॥ चाव, शुंठि, मिरच, पिपली, पाढ़ा सबतरह के खार धनियां, अजमाइन, पिपलामूल, बिड़लोन, सेंधानिमक, चीता, बेलफल, हरीतकी इन्हों को पीस कल्क करि घृतको सिद्ध करि पीछे चौगुना दही मिला सिद्धकरै जबघृतमात्र रहै तब उतार लेवै इसके खानेसे प्रवाहिका, गुदभ्रंश, मूत्रकृच्छ्र, गुदस्राव, गुदा के समीप का शूल ये सबनाशहोवैं॥ शुंठीघृत॥ शुंठि १२० तोलेको द्रोणतोले भर पानीमें पकाय काढ़ा चतुर्थांशरक्खै इस काढ़ा के सेवन अथवा शुंठिकेकल्कमें घृतको सिद्धकरि सेवनसे बवासीर, कुष्ठ, श्वास, कास प्लीहा, पाण्डु, विषमज्वर, तृषारोग, अरुचि ये रोग नाशहोयहैं यह

शुंठीघृत कृष्णात्रेयको कहाहै और अदरखकेरसमें घृतको सिद्धकरि खाने से कुक्षि रोगजावै ॥ लघुचव्यादिघृत ॥ चाव, कटुकी, इन्द्रयव शतावरि, पांचोंलवण इन्हों में सिद्ध घृत के खाने से बवासीर व संग्रहणी इन्होंका नाशहो और अग्निदीपनहो ॥ ह्रीबेरघृत ॥ बाला कुट, लोध, मंजीठ, चाब, चन्दन, धमासा, अतीस, बेलफल, धवके फूल, देवदारु, दारुहलदी, दालचीनी, शुंठि, जटामांसी, नागरमोथा यवाखार, चींताजड़ इन्हों को चूकाके रसमें खरल करि कल्क को तैयारकरि इसकल्कमें घृतको सिद्धकरि खानेसे ववासीर, अतीसार संग्रहणी, पाण्डुरोग, ज्वर, मूत्रकृच्छ्र, गुदभ्रंश, अरुचि, बस्ति, आनाह प्रवाहिका, रक्तस्राव, मस्साजड़ इन्हों को हरैहै और त्रिदोष को हरैहै ॥ रोहितारिष्ट ॥ रोहितवृक्ष १ तोला भरको चारद्रोणभर जल में पकाय काढ़ा चतुर्थांश रक्खै शीतल होने पर गुड़ ८०० तोले मिलावै औरधवकेफूल६४तोलेपंचकोल४तोलेदालचीनी इलायची तमालपत्र मिलके ४ तोले त्रिफला४ तोले इन्होंकाचूर्णकरि मिलाय बासनमें घालि धरदेवे पीछे १ महीनाके बादपीने से संग्रहणीको व पाण्डुको व हृदय रोगको व प्लीहाको व गुल्मको व उदररोगको व कुष्ठको व सोजाको व अरुचिको यह रोहितारिष्ट नाशैहै ॥ मधुपक्व हरीतकी ॥ कदंब, निंब, चिरमठी इन्होंकी छालका चूर्ण ६४ तोले और बकरी मूत्र गोमूत्र भैंसमूत्र तीनोंमिलाकरि १००४ तोले इन्हों का काढ़ा करि चतुर्थांश रक्खे पीछे हरीतकी बड़ी १०० काढ़ामें गेरि पकावै जब हरीतकी कोमल होजाय तब महीन कांटा से छिद्र हरड़ों में करिदेवै पीछे सज्जीखार और भांगके चूर्ण से हड़ोंको भरिसूतसे लपेट देवै पीछे ३ दिनतक शहदमें हड़ोंको डुबोइ रक्खै नित्यशहद युत हड़ोंकोखावै सन्निपातकी बवासीरको हरैहै ॥ गोजिह्वादिकाढ़ा ॥ गोभी जड़ १ भाग मोरशिखा २ भाग धनियां १ भाग इन्हों को जलमें काढ़ा अष्टमांश में शहद मिश्री मिलायपीने से छह प्रकारकी बवासीरको हरैहै और बवासीरकी खाजको व संग्रहणीको व शूल को हरैहै ॥ कल्याणलवण ॥ भिलावाँ, त्रिफला, जमालगोटाकी जड़ चीताकीजड़ ये सब बराबर ले और सेंधानोन दुगुना ले सकोरा में

घालि कपड़माटी देकरि गोके गोबर के गोसों से फूंक देवै यह कल्याणलवण ववासीर को हरैहै ॥ तक्रादियोग ॥ तक्रमें सांभरनोन मिलाय पीनेसे वायु वमलको अनुलोमन करैहै और इसकेसेवनसे गुदामें ववासीरउत्पन्नहोवे नहीं और वल, वर्ण अग्नि इन्होंकोवढ़ावे हैं और नाड़ीके स्रोतोंको शुद्धकरि रसको अच्छीतरह पकावैहै और शरीरको पुष्टकरैहै और मनकोप्रसन्न करैहै और वातकफके विकार सेकड़ोंनाशैहै॥दूसराप्रकार ॥कब्जियतमेंतक्रअजमानशुंठिमिला हित है और इसतक्रके सेवनसे ववासीर नाशहोवै और गोकेदूधकेतक्रमें चीताके चूर्णकोमिलायरोज़ पीनेसेववासीर नाशहोयहै अथवा नित्य अन्नकोत्यागकरि७दिन व १० दिन व १५ दिन व १ महीनातकतक्रके सेवनकरनेसे अनेकरोग नाशहोय हैं अथवा हरीतकीचूर्ण युततक्र किम्वा त्रिफला चूर्णयुत तक्र पीने से ववासीर जावैहै अथवा हींग हपुंचीता इन्होंसे युत तक्रके पीनेसे अथवा पञ्चकोल युत तक्रपीने से ववासीर नाश होयहै अथवा चीताकी जड़को पीसघड़ाके भीतर लेप करि उस घड़ामें दही जमाय व तक्रकरि पीनेसे ववासीर नाश होयहै अथवा मुसली कटुकी इन्हों के चूर्णको तक्रके सङ्ग खानेसे ववासीर नाशैहै ॥ अरलुत्वक् ॥ अरलू छाल ८ तोला चीता ८ तोला इन्द्रयव ८ तोला करंजवा, सेंधानोन,शुंठि इन्होंके चूर्णको गौकेमट्ठा में घालि ७ दिन पीनेसे जड़ सहित ववासीर को हरैहै ॥ शर्करासव ॥ धमासा १ सेर चीताजड़८तोला वासा८ तोला हरीतकी८तोला आँवला ८ तोला पाढ़ा ८ तोला शुंठि ८ तोला इन्होंको द्रोण तोलाभर पानी में चतुर्थांश काढ़ा करै और शीतल होनेपर खांड़ ४०० तोले मिलाय बासन चिकने में घालि १५ दिनतक मुख को बन्दकरिकै धरा रक्खै पिपली, चाव, कांगड़ी शहद, घृत इन्हों से पहिले पात्र को लेपन करि घालै ऐसे जानो इस शर्करासवकी मात्रा बलाबल देखि पीनेसे ववासीर, संग्रहणी, उदावर्त्त, अरुचि, अग्निमांद्य, हृदय रोग, पाण्डुरोग सर्वरोग नाश होयहैं ॥ द्राक्षासव ॥ मुनक्कादाख ४०० तोला ८१७२ तोले पानी में काढ़ा चतुर्थांश करै शहद ४०० तोला खांड़ ४०० तोलाधवकेफूल २८ तोला इन्होंकोघीके चिकनेबासन में

घालि इसमें जायफल २ तोला लवंग २ तोला कंकोल २ तोला हरपररेवड़ी फल २ तोला चन्दन २ तोला ये सब दो २ तोला घालि २१ दिनतक धरारक्खै पीछे बलाबल देखि खाने से यह द्राक्षासव गुदाके मस्सों को नाशैऔर शोकको व अरुचिको व हृदय रोग को व पाण्डु को व रक्त पित्त को व भगंदर को व गुल्म को व उदर रोगको व कृमि रोग को व ग्रंथिको व क्षतक्षयको व ज्वरको व वातको व पित्तको नाशै है और बलबर्णको बढ़ावैहै ॥सन्निपातार्शधूप॥ गेहूं चून ४ तोला हींग २ माशे भिलावाँ ४ माशे इन्हों की धूप सन्निपातकी बवासीरको हरैहै ॥ हपुषादितक्रारिष्ट॥ हपुषा यानी थोर शेरणी, मेथी, धनियां, जीरा, सौंफ, कचूर, पिपली, पिपलामूल चीता, गजपिपली, अजमाइन, अजमोदइन्होंकाचूर्ण अल्प खट्टातक्र में मिलाय घीके चिकने बरतनमें घालि जब कटुक व खट्टा यहतक्रारिष्ट प्रातःकालमें व भोजनकाल में व तृषाकाल में बलाबल देखि मात्रालेवै यहदीपनहै और रुचिको उपजावैहै और वर्णको बढ़ावै है और कफ बात को अनुलोमन करै और गुद रोग को व गुद सोजाको व गुद खाजको हरैहै और बलको बढ़ावै है ॥ भर्जितहरीतकीयोग ॥ घृत में भूनी हरीतकी किम्बा पिपली गुड़ युत किम्बा निसोत इन्हों के खाने से मलका अनुलोमन करै है ऐसे जानो ॥ पाहाड़मूलयोग ॥ धमासा, बेलफल, अजमाइन, शुंठि इन्हों में एक एक से संयुक्त पाठा बवासीर को हरै है ॥ सन्निपातिकसहजलक्षण ॥ सबों के लक्षणहों तो सन्निपातका अर्श वा सहज अर्शहोयहै और बातादिहेतु और लक्षण दोवोंके हों तो द्वंद्वज बवासीर जानो॥ अजीर्णहरमहोदधिबटी ॥ शुद्ध जेपाल का बीज, चीता, शुंठि, लवंग गन्धक, पारा, सुहागाखार, मिरच, वरधारा, बचनागबिष ये सबबराबर ले इन्हों को दो पहरतक खरलकरि जमालगोटा की जड़के रस से १५ भावनादेकरि पीछे नींबूरसमें ३ भावना देकरि पीछे चीता रस में ३ भावना देकरि पीछे अदरख अर्क में ७ भावना देकरि गोली सूखी मटर के समान बनावै और नित्य खावै यह गोली शूलको व अजीर्णको व ज्वर को व कासको व अरुचिको व पांडुरोग

को व उदररोगको व आमवात को व वस्तीकाआटोप को व पेट के गुड़गुड़ शब्दको व हलीमक को व मंदाग्निको हरैहै और भूख को बढ़ावे है और सब रोगों में हितहै ॥ क्षुधासागरवटी ॥ शुंठि, मिरच पिपली, त्रिफला, पांचों लवण, सज्जीखार, सुहागाखार, जवाखार पारा, गंधक ये सब समान भाग और वचनागविष २ भाग. इन्हों को पीस अदरखके अर्कमें गोली चिरमठीसमान बांधै ये गोली २ अजीर्ण में सात व पांच लवंग चूर्ण के संग खावै येक्षुधासागरनाम की गोली सूर्य्य ने प्रकट करी हैं ॥ अग्नितुंडवटी ॥ शुद्धपारा, वच- नागविष, गन्धक, अजमाइन, त्रिफला,सज्जीखार, जवाखार,चीता सेंधा, जीरा, कालानोन, वायविड़ंग, सांभर, शुंठि, मिरच, पिपली, ये सम भाग ले इनसवोंके समान भाग कुचला के बीज इन्हों को जंबीरी नींबू के रसमें खरलकरि मरिच के तुल्य गोली बनाइखाने से अग्नि मन्दता जावै॥ अनोपान ॥शुंठिगुड़ मिला२तोलाखावैयह अग्नितुंडवटीगोली रोगमात्रको हरैहै ॥ क्षुद्बोधकरस ॥ शुंठि, मिरच पिपली तीनों मिलाय एक भाग सेंधानोन२भाग गन्धक ३ भाग इन्होंको नींबू के रसमें देरतक खरल करे यहक्षुद्बोधक रस है ॥ दू- सराप्रकार ॥ सुहागाखार, पिपली, बचनागविष ये समान भाग मिरच २ भाग इन्हों कोपीस नींबू के रसमें मटर समान गोलीबनावै एक गोली रोज खावै अजीर्ण नाशहो और अग्नि दीपन होऔर कफभी नाश होवै ॥ भस्मवटी ॥ हरीतकीकुचलाकेबीजइन्होंकोशुद्ध करि २० तोला ले बारीक पीस ब्रहेड़ाम्लमें पकावै पीछेहिंग४तोला वायविड़ंग ४ तोला सेंधानोन खारीनोन कालानोन मिलके ४ तोला अजमोद ४ तोलाअजमाइन४ तोला खुरासानी ४ तोला शुंठिमिरच पीपल मिलके ४ तोला गन्धक ४ तोला इन्होंको महीनपीस नींबू के रसकी भावना देवै पीछे बेरकी गुठली समान गोलीबनाइसेवन करनेसे अजीर्ण को व हृदय रोगको व गुल्मको कृमिको व प्लीहा को व अग्निमन्द को आमवात को व शूल को व अतीसार को व संग्रहणीको व जलोदरको व बवासीरको व कृमिजरोगोंको व वात- जरोगको व कफज रोगकोहरैहै॥ शंखवटी॥ अमलीका खार४ तोला

पांचोंनोन ४ तोला इन्होंको छोटेनींबूके रसमें खरलकरि पीछे शंख को अग्निपै तपाय ४ तोले टुकड़े मिलाय ७ दिनतक पूर्वोक्तरस में खरल करैपीछे शुंठि मिरच पीपली इन्होंकाचूर्ण४तोला हींग२तोला पारा४ माशे बचनाग विष ४ माशे गंधक १ माशे मिलाय घोटिकरि बेरकी गुठली समान बनाइ गोली सम्पूर्णकालोंमें सबअजीर्णनाश के वास्तेखावै और यहगोली सर्बज्वरोंको व शूलको व उदररोगको व बिशूचीको व बिड्बन्धको व अग्निमांद्यको व गुल्मकोहरैहै यहशं-खबटीहै ॥ अग्निकुमाररस ॥ पारा,बचनागबिष, गन्धक,सुहागाखारये सब बराबरले मरिच८भाग, शंखभस्म, कवड़ीभस्म, मिलके२भाग इन्होंको पका जंबीरीनींबूकेरसमें खरलकरि७भावनादेवे यहअग्नि-कुमाररस २ रत्तीखानेसे बातज अजीर्ण को विशूचिकाको व क्षयी को जल्दीनाशैहै ॥ दूसराप्रकार ॥ पारा, गन्धक, सुहागाखार येसब समानभागले बचनागबिष ३ भाग, कवड़ीभस्म व शंखकी भस्म मिलके २ भाग,मिरच ८ भाग इन्होंको पीस पकेहुये जंबीरी नींबूके रसमें खरलकरि भावना देनेसे अग्निकुमाररस सिद्ध होय है यह अजीर्ण को व वायुको व गुदबातको व गुल्मबात को व बिशूचीको हरैहै ॥ तीसराप्रकार ॥ सुहागाखार व पारा व गन्धक समानभाग बचनागविष ३ भाग, कवड़ीभस्म, शंखभस्म, मिलकरि २ भाग मिरच ८ भाग इन्होंको जंबीरीनींबू के रसमें १ दिन खरल करे पीछे नागरपानकी बेलिकेरसमें १ दिन खरलकर पीछे चीतारसमें १ दिन खरलकरि पीछे सहिंजनेकी जड़के रसमें १ दिन खरलकरे पीछे बिजौराकेरसमें १ दिन खरलकरि अग्निकुमार तय्यार होवेहै यह अजीर्णको व शूलको व मंदाग्निको व प्लीहाको व पांडुको व सब बातरोगोंको व मूत्ररोगको व खांसीको व बवासीरको व अती-सारको व संग्रहणीको व सन्निपातको हरैहै ॥ चौथाप्रकार ॥ गंधक पारा समानभाग,बचनागविष आधाभाग,तांबाभस्म १ भाग इन्हों को पीस हंसपक्षीरसमें खरलकरि कांचकी शीशीमेंघालि बालुका यंत्रमें तीनप्रहरतक पकावै शीतलहोनेपरकाढ़ि बचनाग आधाभाग मिलावै पीछे १ रत्तीरस और शुंठि मिरच पिपली सेंधानोन इन्हों

करि युत अदरखअर्कके संग खानेसे मंदाग्निको व सन्निपातको व धनुर्वातको व अजीर्णको व शूलको व क्षयीको व कासको व गुल्मको व प्लीहाको हरैहै ॥ वृहत्क्रव्यादिरस ॥ गंधक ८ तोला लोहेके पात्रमें शुद्धकरि और पतलाकरि पारा ४ तोला तांबा ४ तोला लोहा ४ तोला मिलाय बारीक पीस लेवे पीछे लोहेके पात्रमें घालि दूसरे पात्रसे ढकि देव पीछे वस्त्रसे छानि लोहेके पात्रमेंघालि एरंडपत्र ४ तोले मिला कोमल अग्निसे पकावै उसे बारम्बार लोहाकी पलटी से चलाताजावै पीछे ४ तोले नींबूको रस मिलावै पीछे पंचकोलके काढ़ामें ५० भावनादेवे पीछे अम्लवेतसकेकाढ़ामें ५० भावनादेवे पीछे द्रव्यकेबराबर १ तोला सुहागा भुनाहुआमिलावै और द्रव्यसे आधाभागकालानोन मिलावै और इन सबोंके बराबर मरिचमिलावै पीछे चनेके खारके जलमें ७ भावना देवै पीछे सुखाय कांच की शीशीमें घाले ऐसे रस सिद्ध होयहै इसको १२ रत्ती खानेसे अतिकठोर व भारी अन्नादि खायापचे है और इसरस को कडुवारस व खट्टातक्रके संगखावै और कंठतकभोजन अड़ामेंखानेसेरसकोजल्दी भस्मकरि फेर भूखलगैहै और अग्निमंदताको हरैहै यह रस मंथान भैरव ने सिंहलदेशके राजा के वास्ते कहाहै और गलकेरोग को व कुष्ठको व आमको व कंधःकेसोटापनको व शूलको व गुल्मकोवप्लीहा को व सबरोगों को व बातग्रंथीको व उन्मादको हरैहै ॥क्रव्यादिरस॥ तक्र मस्तु व नींबूरस ६४ तोला अदरख रस २१ तोला त्रिफला १६ तोला इलायची ४ तोला लवंग १५ तोला चीता १ तोला सुहागा १ तोला शुंठि ६ तोला मिरच ६ तोला पिपली ६ तोला इन्होंको पीस वस्त्रसे छानि रसक्रव्यादि सिद्धहोयहै यह राम राजा ने कहाहै ॥ बड़वानलचूर्ण ॥ पारा १ भाग गन्धक२भाग शीशाभस्म १ भाग व बंगभस्म १ भाग मिरच १६भाग इन्होंको मिलाय बड़वानल चूर्ण होयहै ॥ अग्निदीपनिवटी ॥ गन्धक, मिरच, शुंठि,सेंधानोन इन्द्रयव इन्होंको नींबूकेरसमें खरल करि चने समान गोली बनाइ खानेसे अग्नि दीपन होताहै ॥ अग्निकुमार ॥ पारा,गन्धक,बचनाग विष ये समान भाग कवड़ी भस्म ३ सज्जीखार १ भाग पिपली १

भाग शुंठि ८ भाग मिरच ८ भाग इन्होंको जबतक काजल सरीखा हो तबतक खरल करै पीछे जंबीरी नींबूके रसमें सात भावना देइ पीछे अदरख के अर्कमें ७ भावना देइ यह अग्निकुमाररस २ रत्ती खाने से आम संचयको व अग्नि मंदता को व अजीर्णको व कफको हरै है ॥ लघुपानीयभक्तबटी ॥ पारा आधाभाग वायबिड़ंग १ भाग मिरच १ भाग अभ्रक १ भाग इन्हों को चावलके माड़माहिं खरल करि चिरमटी समान गोली बनाइ मांड़के संगखावै यह अग्निको बढ़ावैहै इसपै पथ्य नहीं है ॥ राजवल्लभरस ॥ पारा ४ तोला गन्धक १ तोला चीता ४ तोला नसदर ६ तोला इन्होंको महीन पीस वस्त्रमें छानि १ माशा खानेसे यह राजवल्लभरस अजीर्णको व त्रिदोषको हरै है ॥ लब्धानन्दनरस ॥ पारा, गंधक, लोहाभस्म, अभ्रकभस्म, बचनाग बिष ये समानभागले और मिरच ८ भाग सुहागाखार ४ भाग इन्हों कोपीसभृङ्गराजके रसमें ७ भावना देवै पीछे खट्टाअनारके रस में ७ भावना देवै यहरस २ रत्ती पानके टुकड़ाके संग खानेसे बात व कफसे उपजे रोगोंको व मन्दाग्निको व संग्रहणी को ज्वर को व अरुचिको व पांडुरोगको जल्दीहरैहै ॥ महोदधिबटी ॥ बचनागबिष १ भाग, पारा १ भाग, जायफल २ भाग, सुहागाखार २ भाग, पिपली ३ भाग, शुंठि ६ भाग, कौड़ी भस्म ६ भाग, लवंग ५ भाग इन्हों को पीस मिलाय गोलीबनावै यह महोदधिबटी नाशहुये अग्निको दीपनकरैहै ॥ सूरणचूर्ण ॥ जमींकंद, नागकेशर, चिरमिटी, मिश्री इन्हों को शहद युतकरि अथवा नोणीघृतयुतकरि खानेसे बवासीरनाश होवै ॥ वैक्रांताख्यरस ॥ पाराभस्म, अभ्रकभस्म, वैक्रांतभस्म, कांतभस्म, तांबाभस्म ये समान भाग ले इन सबोंके बराबर गन्धकले और भिलावां मिलाय १ दिनतक खरल करावै पीछे भिलावां को तेलमेंगोली २ रत्तीकीबनाइ खानेसे गुदाके रोगोंको व द्वंद्वजअर्शको व सन्निपातजअर्शकोहरै और मुसलीचीतामिलके ८ भाग, कुट १६ भाग, पिपली २ भाग, पिपलामूल २ भाग, बायबिड़ंग ४ भाग, मिरच १ भाग, कटु १ भाग, शुंठि १ भाग, ब्रह्मदंडी १ भागइन्होंकाचूर्णकरि दुगनागुड़मिला गोली १ तोलाकी बनाइखावै पीछे यह अनुपानके

संग वैक्रांतरस साध्य व असाध्य व ववासीरकोहरैहै ॥ पर्प्पट्यादियोजना ॥ पर्प्पटी रस ८ रत्ती गोमूत्रके संग लेनेसे किम्वाताम्रपर्प्पटी रस गुड़,शुंठि,हरीतकीके संगलेनेसे ववासीरनाशहोयहै औरइसपर अनुपानकहतेहैं। जीवंती४तोला,पुष्करमूल ४ तोला,चीता४तोला वेलफलकीगिरी ४ तोला, कचूर ४ तोला कनेर की अथवा अर्जुन वृक्षकी छाल ४ तो० जवाखार ४ तो० जीरा४ तो० अमली८तो० धानकीखील १६ तो० तिलतेल ८ तो० घृत ८ तो० इन्होंका चूर्ण १० माशे अनोपानहै इस नुसखा में वहुतसी औषध भू नकरिगेरे ॥ कुटजाघलेह ॥ कूड़ाकी छाल १ तोलाभरि इसको थोड़ी कूटकरि द्रोणभरिपानीमेंपकाइ चतुर्थांश काढ़ारक्खै पीछेइसको वस्त्रमेंछानि इसमें गुड १२० तोले मिलाय पकावै जव कछुक करड़ाहोजाय तव रसोत ४ तो० मोचरस ४ तो० शुंठि मिरच पिपली मिलाके ४ तो० त्रिफला ४ तो०लज्जावंती४तो० चीता ४ तो० पाढ़ा ४ तो० वेलफल४तो० इन्द्रयव ४ तो० वच ४ तो० भिलावाँ ४ तो० अतीस४ तो० वायविड़ंग ४ तो० वाला ४ तो० ये सव मिलावे और एक कुड़वघृत मिलावे जव शीतल होजाय तव एककुड़वप्रमाणशहद मिलाइ अवलेहकरि बकरीके दूध व तक्रकेसंग अथवा बकरीकेदही के संग व घृतके संग अथवा जलके संग यह अवलेह खानेसे सव ववासीरों को व भगंदरादि रोगों को व अतीसारको व अरोचक को व संग्रहणी को व पांडुको व रक्तपित्तको व कामलाको व अम्लपित्तको व सोजनको व कृशताको व प्रवाहिका को हरैहै इससेवन में हलके पथ्यखावै ॥ कूष्मांडावलेह ॥ कोहला के टुकड़े व जमींकंद को युक्तिसे पकाइ देनेसे ववासीर व गुड़ वात व मंदाग्नि नाशहोवै ॥ भल्लातकावलेह ॥ पकेहुये भिलावां की दोदा फाड़करि १०२४ तोले लेवै पानी ४०९६ तोले में काढ़ा चतुर्थांश करि चौगुनादूध मिलाय फेर पकाइ जबतक घनरूप हो तबतक और मिश्री ६४ तोलामिलाइइसकोबरतनमेंघालि ७ दिनतक धरारक्खे पीछे बलाबलदेखि खानेसे गुदाके सब बिकार नाशहोयहैं और केशोंकोकाले करै है और दृष्टि गरुड़ की सरीखीहोय है और चन्द्रमाकीसी

कांतिहोयहै और घोड़ाकेसरीखा बलहो और मयूरकेसेस्वरको पैदा करैहै और अग्निकीसी दीप्तिकरै है और स्त्रियोंको प्यारदेयहै और आरोग्यता को प्राप्तकरै है और इसका सेवने वाला ३०० वर्ष अथवा २०० वर्ष तकजीवै और इसमेंकोई पथ्यनहींहै और अन्न व पान व स्त्रीसंग वर्जित नहींहै ॥ स्नुहिक्षीरलेप ॥ थोहरका दूध हलदी इन्होंको गोमूत्रमें मिला लेपकरनेसे और गौकेदूधमें चीता का चूर्ण मिलाय रोज़ पीनेसे बवासीर नाशहोवै पथ्य दूधकाहीकरे॥ कोकम्बादिचूर्ण ॥ कोकंबवृक्षका पंचांग ८० माशे भिलावाँगिरी ४० माशे इन्होंको महीन पीस १० माशे खानेसे गुदाके अंदर के व बाहिरकेमस्से नाशहोवैं ॥ समशर्करयोग ॥ शुंठि६भाग,पिपली५भाग मिरच ४ भाग, नागरपान २ भाग, दालचीनी १ भाग, इलायची१ भाग इन्होंका चूर्णकरि बराबर खांड़ मिलाय खाने से बवासीर को व अग्निमंदता को व गुल्मको व पेटरोगको व सूजनको व पांडुरोग को व मस्साको नाशैहै ॥व्योषादिचूर्ण॥ शुंठि,मिरच, पिपली, भिलावां बायबिड़ंग, तिल, हरीतकी इन्होंका चूर्ण गुड़युत खाने से बवासीर को व सूजनको व बिषको व कुष्ठको व विड्बंधको व अग्निमंदको व कृमिको व पांडुरोगको हरैहै ॥ करंजादिचूर्ण ॥ करंजवा, शुंठि, इंद्रयव अरलु,सेंधानोन,चीता इन्होंकाचूर्ण तक्रकेसंग खानेसे बवासीरको व रक्तकीबवासीरकोनाशैहै॥विजयाचूर्ण॥त्रिफला,त्रिकुटा, त्रिसुगंध,बच हींग, पाढ़ा, सज्जीखार, जवाखार, हलदी, दारुहलदी, चाव,कटुकी इंद्रयव, शतावरि, पांचोंलवण, पिपलामूल, बेलफल, अजमोद यह अट्ठाईस औषधोंकागणहै और येसब समान भागलेके महीनपीस इसको एरंडतेलमें मिलाय१०माशेगरमजलकेसंग खानेसे बवासीर कोवश्वासको व शोषको वभगंदरको व हृदयशूलको व पसलीशूलको व बातगुल्मको व उदररोगको व हुचकीको व प्रमेहको व पांडुरोग कोव कामलाको व आमबातको व उदावर्त्तको व अंत्रवृद्धिको व गुदा के कृमिको व संग्रहणीको हरै है और यह विजयाचूर्ण सबरोगोंको नाशैहै और महाज्वरवालों को व भूतबाधावालोंको व बंध्यास्त्रियों को हितकारक हैं ॥ देवदाल्यादियोग ॥ देवदाली के काढ़ासे गुदा

शौच लेनेसे अथवा ढेवढालीके हिमसे शौचलेने से गुदाके मस्से नाश होजायँ हैं इसमें संदेह नहीं ॥ मरीचादिमोदक॥ मिरच, शुंठि चीता,जमीकंद इनको यथोत्तर दुगुनालेकर गुड़सबकेसमान मिला मोदक बनाइ खानेसे बवासीर को हरे है ॥ प्राणदमोदक ॥ तालीस-पत्र, चीता, मिरच, चवक ये बराबरले पिपली २ भाग पिपलामूल १२ तो० शुंठि १२ तो० दालचीनी ४ तो० तमालपत्र ४ तो० नाग-केशर ४ तोला इन सबका तिगुना गुड़मिलाय मोदक बनावै यह कासको व श्वास को व मंदाग्निको व बवासीरको व प्लीहाको व प्र-मेहको नाशैहै ॥ कांकायनीगुटी ॥ वड़ीहरीतकी की छाल २० तोला मिरच ४ तोला जीरा ४ तोला पिपलामूल ४ तोला चाव ४ तोला चीता ४ तोला शुंठि ४ तोला भिलावां ३२ तोला तेलिया देवदारु ६४ तोला जवाखार ८ तोला इनसबोंका दुगुना गुड़मिला गोली बनावै ये गोली कांकायन मुनीने प्रजाके कल्याणके वास्ते कही है गुदाके रोगोंको हरैहै और जो खार व शस्त्रसे बवासीर अच्छा नहो वह कांकायन गुटीसे होताहै ॥ सूरणमोदक ॥ चीताकीजड़ ४ तोला जमीकन्द ८ तोला शुंठि २ तोला मिरच ८ माशा भिलावां १ तोला पिपलामूल १ तोला बायविड़ंग १ तोला त्रिफला १ तोला पिपली १ तोला तालीसपत्र १ तोला वरधारा ८ तोला ताड़मूल १ तोला दालचीनी ८ माशे इलायची ८ माशे मिरच ८ माशे इनसबों को मिला चूर्णकरि दुगुना गुड़ मिलाय मोदक बनावै यह सूरणमोदक १० माशे खानेसे बवासीर को हरैहै और अग्नि को उपजावे है लघुसूरणमोदक ॥ पिपली, मिरच, शुंठि, चीता, जमीकंद ये समान भाग ले और दुगुने गुड़ में गोली बनाय खाने से बवासीरको हरै और दीपन पाचनहै॥ अर्शकुठार ॥सीठातेलिया शोधापारा येसमभाग ले इन दोनोंके समान गन्धक ले इन्हों को कलहारीकी जड़के रस में खरलकरि पीछे जमीकन्द सपेद रंगके संग खरल करि गोला बनाइ बरतनमें घालि चुल्हीपर चढ़ाइ अग्नि समान अच्छा पके तबतक पकाइ शीतल होनेपर यह अर्शकुठार रससिद्ध होयहै यह रक्तबातको व बवासीर को नाशैहै ॥ अभ्रकहरीतकी ॥ अभ्रक भस्म

८० तोला गंधक २० तोला लोहभस्म २० तोला और सोनामाखी इनतीनोंसे दुगुना हरीतकी ४०० तोला आंवला ८०० तोला इन्हों के चूर्णको जंबीरी नींबूके रसमें १ दिन खरल करै पीछे भृङ्गराज के रसमें १ दिन खरल करै पीछे सांठीके रसमें १ दिन खरल करै पीछे पातालगारुड़ी के रसमें १ दिन खरल करै पीछे भिलावां के रसमें १ दिन खरल करै पीछे चीताके रसमें १ दिन खरलकरै पीछे कोरांठके रसमें १ दिन खरल करै पीछे हस्तशुण्डीके रसमें १दिन खरल करै पीछे कलहारी के रसमें १ दिन खरल करै पीछे खीरनी के रसमें १ दिन खरल करै पीछे जलकुंभी के रसमें १ दिन खरल करै पीछे शहद व घृतमिलावै पीछे चिकने बरतनमें घालि रक्खै पीछे १ तोला रोज़ खाने से सन्निपातज बवासीर को हरै॥ मंत्र॥ कंकर कुरंतरंकरकंताहिलतिरी ये राजकरंतर आरक्तासारक्ता जोजाएइह-मंत्राताके बस न होय अरिसाजाए बुझप्रकट न करिताकेसप्तकपिला गाकी हत्या इस मंत्रका जप रोज़ करनेसे बवासीर शांतहो॥ सूरण पुटपाक॥ ज़मीकंद के ऊपर माटी लगाइ पुटपाककी समान पकाइ लवण तेलसंयुत करि खानेसे बवासीरजावै॥ कासीसादितेल॥ हिरा कसीस, कलहारी, कूठ, शुंठि, पिपली, सेंधा, मैनसिल, कनेर, बायबिडंग चीता, वासा, जमालगोटाकी जड़, कड़वीतोरीके बीज, चोक, हरताल ये सब प्रत्येक कर्ष कर्षभरिले तिलका तेल १ प्रस्थभर मिला पकाइ पीछे थोहरका दूध ८ तोला आकका दूध ८ तोला मिलावै तेलसे चौगुना गोमूत्र मिलाके पकाइ जब तेलमात्र आयरहै तब उतारलेइ यह खरनाद ऋषीने कहाहै यहतेल खारकी तरह बवासीरको लगाने से नाशै है॥ जाप्यलक्षण॥ बवासीरकी बीमारी में जो उमर बाक़ी हो और अच्छा वैद्य, अच्छा औषध, अच्छा परिचारक, समझवान पथ्य करनेवाला रोगी और अग्नि दीपन ये सब जिसके हों वह बवा-सीर वाले के जाप्य हैं और इससे विपरीत हो तो असाध्य जानो॥ उपद्रवोंसेअसाध्यलक्षण॥ हाथ, पैर, नाभि, गुद, मुख इन्हों में सूजन हो ऐसा बवासीर वाला असाध्यहोयहै और हृदयमें शूल व पसली में शूल हो ऐसा बवासीरवाला भी असाध्यहोयहै॥ दूसरेअसाध्यलक्षण॥

हृदयमें शूलहो और पसलीमें शूलहो और मोहहो और छर्दिहो अंग में पीड़ाहो ज्वरहो, तृषाहो गुदा पकजावै ये लक्षण असाध्य ववासीर केहैं अथवा तृषा, अरुचि, शूल येहों और मस्सामें लोहू बहुतस्रवै और सोजाहो व अतीसारहो ऐसा ववासीर मनुष्यको मारदेयहै और अर्शरोग लिंगमें और सुंडीमें और नाकमें भी होयहै ॥ चर्मकीलसंप्राप्ति ॥ व्यानवायु कफको ग्रहणकरि खालके वाहिर अर्शको पैदाकरैहै वह अर्श कीलासरीखाहो और खरधराहो उसे चर्मकील कहते हैं ॥ वातादिभेद लक्षण ॥ वाताधिक चर्मकीलमें सुई चुभनेसरीखी पीड़ाहो और कर्कशपनाहो और पित्ताधिक चर्मकीलका रंगकाला व रक्तहो और कफाधिकमें मस्से चिकने और गठीलेहों और खाल सरीखा वर्णहोयहै ॥ दोषकोपअर्शरोग ॥ पांचप्रकारका वायु और पांचप्रकारका पित्त और पांचप्रकारका कफ ये सवगुदाकी तीनोंवलियोंके माहिं कोप को प्राप्तहोयहैं ववासीर रोगमें इसवास्ते ववासीर रोग अनेक रोगों को प्राप्तिकरैहै और दुःखदेनेवालाहै और संपूर्णदेहको उपतापकरैहै और प्रायता करिकै कष्टसाध्य होयहै ये सब लक्षण ववासीरके हैं असाध्यलक्षण ॥ सन्निपातक व सहजन्मा ववासीर भीतरकी वली में कोपको प्राप्तहुआ मोटे पेटवाले के और पैर, हाथ, गुदा, पेट आंड़ इन अङ्गों में से सोजावाले के और पसली, हृदय इन्होंमें शूलवाले के असाध्य है और हृदयमें शूलहो, पसलीमें शूलहो, वमनहो, ज्वरहो, मोहहो, तृषाहो, गुदाकापाकहो, अग्निमन्दहो, अरुचिहो, अङ्गभङ्गहो, ये लक्षण वाला ववासीररोगी अवश्यमरै और नेत्रोंमें अंधताहो, पेट, नेत्र, हाथ, पैर, गुद, आंड़ इन्हों में सूजन और तृषाहो शूलहो, श्वासहो, शोषहो अतीसारहो, ज्यादह रक्तमस्सा से निकस जाय ऐसा ववासीर वाला अवश्य मरै है ॥ ववासीरपथ्य ॥ विरेचन लेपन, रुधिरकाढ़ना, खारलगाना, अग्नि से दागना, शस्त्र से काटना, पुराने लालधान, सांठीचावल, यव कुलथी, और गोह, मूसा हाथी, ऊंट, कछुवा, भेड़, कुलिङ्ग, बकरा, गधा, बिलाव, बंदर, तरषू पपैया, गीदड़, काक, इन्हों के मांस, और थोड़े मांसवालों का मांस और बाजआदिका मांस, परवर, शालिंचशाक, लहसन, चीता

सोंठी, बथुआ, जमीकन्द, जीवंतीशाक, करौंदा, मदिरा, छोटी इला-यची, हरीतकी, गौका मक्खन व मट्ठा, कंकोल, आमला, काला-नोन, कैथ, ऊंटकामूत्र, घृत, दूध, भिलावां, सरसोंका तेल, गोमूत्र कांजी, तुषोदक, और बातका नाशक तथा अग्नि का वढ़ानेवाला अन्न व पान ये सब बवासीर में पथ्यहैं ॥ अथ अपथ्यम् ॥ कच्छदेश का मांस, मछली, पिण्याक अर्थात् खलीदही व पिसीबस्तु, उड़द करेला, बांसकी कोंपल, निष्पाव, बेल तूंबी, पोइशाक, आमका फल सब प्रकार के आलू, बिष्टम्भी, और भारी वस्तु, घाम ज्यादह जलपान, बमन, वस्तिकर्म्म, स्नेहका पीना, रुधिरका निकालना नदियों का जल, सब बिरुद्ध वस्तु, पूर्वके पवन का सेवन, वेग का रोकना, स्त्रीकासंग, पीठकी सवारी, अधिक खांसना और यथायोग्य दोषकीबढ़ाने वालीबस्तु इनसबों को बवासीर वाला त्यागदेवै और रक्तपित्तके रोगियों को जो पथ्य तथा अपथ्य कहेंगे वही चर्मकीलमें व खूनी बवासीर वालेको भी जानिये पान, यान, दिन में शयन भारीअन्न, ज्यादह भोजन, व्यायाम, कलह, तीक्ष्णखारबिधि इन्हों को त्यागै और जो पथ्य बवासीर में है वही चर्म्मकीलमें भी और औषध भी बवासीर और चर्मकील की समानहै ॥

इतिश्रीवेरीनिवासकवैद्यरविदत्तविरचितनिघण्टरत्नाकर भाषायां बवासीरप्रकरणम् ॥

अथअजीर्ण कर्मविपाक ॥ जो द्रव्यवाला होके बलिबैश्वादिकर्म्म न करै। उसके मंदाग्नि होयहै ॥ प्रायश्चित्त ॥ वह मनुष्यतीन प्राजापत्यकृच्छ्रव्रतकरके १०० ब्राह्मणको भोजन करावै ॥ पाराशर ॥ जो मनुष्य गौकेमांसको भक्षणकरै उसके मन्दाग्निरोगहोय ॥ प्रायश्चित्त ॥ वह मनुष्य प्राजापत्य कृच्छ्र को वा कृच्छ्रातिकृच्छ्रव्रत करै और अग्निके मन्त्रको जपकरै और श्रीसूक्तका पाठ करै ॥ और कर्मपाक संग्रह ॥ जो मनुष्य कारण बिना दूसरे मनुष्य को जहर देवै उसके मंदाग्नि रोग कल्पपर्य्यंतहोयहै ॥ प्रायश्चित्त ॥ इसपापके

नाशकेवास्ते यातेरुद्र इसमंत्रसे १०८ वार अग्निमें घृतकी आहुति देवै और तामग्निवर्णाम् इससूक्तके जाप १००० करावे और ४० ब्राह्मणोंको भोजनदेवै इससे आरामहोय ॥ अजीर्णउत्पत्ति ॥ प्रथम मनुष्यके मंदाग्नि १ तीक्ष्णाग्नि २ विषमाग्नि ३ समाग्नि ४ इनभेदोंसे जठराग्नि ४ प्रकारका होताहै और जिसकी कफप्रकृति होय उसके मंदाग्नि होयहै और जिसकी पित्तप्रकृतिहोय उसकेतीक्ष्णाग्नि और जिसके वातप्रकृतिहोय उसके विषमाग्नि और जिसके वातपित्त कफतीनोंसे मिलीहुई प्रकृतिहोय उसके समाग्नि होयहै ॥ विषूच्यादिनिदान ॥ अजीर्ण, आम, विदग्ध ऐसे तीनप्रकारका अजीर्णहोयहै और अजीर्ण के कोपसे विषूची, आलसिका, विलंबिका ये होयहैं ॥ चारोंअग्नियोंकेकार्य ॥ विषमाग्नि वायुके रोगों को पैदाकरै है और तीक्ष्णाग्नि पित्तके रोगोंको पैदाकरै है और मन्दाग्निकफके रोगोंको पैदाकरै है और समाग्निमें भोजनकिया अच्छी तरह पचैहै और मंदाग्निमें थोड़ा भोजनभी खायानहीं पकेहै और विषमाग्नि में भोजन कभी पके कभी न पके है और तीक्ष्णाग्नि में ज्यादह भोजनकिया भी सुखसे पके है इनसबों में समाग्नि श्रेष्ठहै ॥ हिंग्वष्टक ॥ शुंठि, मिरच, पिपली, अजमाइन, सेंधा, जीरा, स्याह जीरा, हींग ये सबबराबर भाग ले इन्होंका चूर्णकरि घृतके संगभोजन के पहिली ग्रासमें खानेसे जठराग्निको बढ़ावै और वात गुल्म को नाशैहै ॥ विडंगादिचूर्ण ॥ वायविडंग, भिलावां, चीता, हरीतकी शुंठि इन्होंके चूर्णमें बराबरभाग गुड़ घृतमिलाखानेसे मंदाग्निको हरैहै और वड़वाग्निके समान जठराग्निकोहरैहै ॥ जीरकादिचूर्ण ॥ जीरा, कालानोन, शुंठि, पिपली, मिरच, वायविडंग, सेंधा, अजमोद हरीतकी ये सब प्रत्येक तोला तोलाभर और निसोत ४ तोला इन्होंका चूर्ण जठराग्निको पैदाकरै और रोचन पाचनहै ॥ वड़वानलचूर्ण ॥ सेंधा १ भाग, पिपलामूल २ भाग, पिपली ३ भाग चवक ४ भाग, चीता ५ भाग, शुंठि ६ भाग, छोटी हरीतकी ७भाग इन्होंकाचूर्णकरै यह वड़वानलचूर्ण अग्निको दीपनकरैहै ॥ वह्निनामकरस ॥ जाविन्त्री १॥ तोला, जायफल १॥ तोला, मिरच४तोला

गन्धक ६ माशे, पारा ६ माशे, लवंग ६ माशे, बच नागविष ६ माशे इन्होंको अमलीके रसमें खरलकरि उड़दसमान खानेसे अग्निको बढ़ावै और शूलको व बायुकोहरै यह बह्निनामक रसहै ॥ कर्मबिपाक ॥ अन्नकी चोरी करने हारेके अजीर्णरोग होयहै ॥ प्रायश्चित्त ॥ तीनब्रत करके प्राजापत्य प्रायश्चित्त करै और अग्निरश्मी, इस मंत्रसे १००८ आहुति चरु घृतकी अग्निमेंदेवै अथवा जपकरै ॥ दूसराप्रकार॥दूसरेको अन्नभोजन करनेमें विघ्नकरै वह अजीर्णीहोय वह अग्नि में लक्ष १००००० आहुति दिवावे ॥ भस्मकनिदान ॥ जिसके तीक्ष्णाग्नि जठरमेंहोय वह पथ्य अपथ्य को न जानै और रूखा, कड़ुवारस नित्यखावै और दूध घृत बर्जितअन्नको नित्यखावै इन्होंसे कफघटि और पित्त बायुका सहायकारीहोय अपने स्थान में अत्युग्र अग्निको पैदाकरैहै तब वह बायुयुक्त पित्त देहको रूखा करदेयहै तब तीक्ष्णतासे बारम्बार अन्नको पकावेहै और अन्नपाक के अनन्तर रक्तादि धातुको पकावेहै तिससे दुर्बलता, रोग, मृत्यु इन्होंको प्राप्तकरै है इस रोगवाला अन्नका भोजन करते शांतिको प्राप्तहोय और अन्नजीर्ण होनेपर ब्याकुलहोय और तृषा, कास दाह, मोह ये रोगभस्मक के उपद्रवसे पैदाहोयहैं ॥ भस्मकलक्षण॥ कफ क्षीण मनुष्य के अपने स्थान में पित्त बायुका सहायकारी हो तीब्र अग्नि को पैदाकरै है उसे भस्मक कहै हैं यह तिस, दाह मूर्च्छा, श्वासको प्रकट करि अन्नके भोजन व शरीरके धातुओं को खाय शरीरको मारदेयहै और खायाहुआ भोजन तो क्षणभरमें भस्मकरदेयहै इसवास्ते यहरोग भस्मकनामहै ॥ चिकित्साक्रम॥ भारी चिकना, सांद्र, हिम, मण्ड, स्थिर ऐसेअन्न, पान पित्तनाशक औषध बिरेचन इन्होंसे भस्मकको शान्तकरै ॥ भस्मक चिकित्सा ॥ भस्मक रोगमें पहिले कफको जीतै पीछे पित्तको जीतै पीछे बायु को जीतै समधातु वाले मनुष्यके समाग्नि अन्नको पकावै और बल, पुष्टि आयु इन्हों को बढ़ावे है और अग्नि भोजन को पकावे है और वक्त ऊपर भोजन न मिले तो बातादि दोषों को पकाइ खावे है और दोष नाशहुये पर धातुओंको पकाइखावेहै और धातुका नाशकरि

प्राणोंको पकाइ नाशै है और भस्मक रोगवाले को अजीर्ण में भी वारम्बार भोजनदेवै क्योंकि भोजनरूप इंधन न मिलने से अग्नि रोगीको मारदेहै ॥ शमन ॥ भस्मक अग्निके शांतिवास्ते भैंसकादूध व दही व घृतका सेवन करै अथवा यवागूमें घृत व मोम मिलाइ सेवन से भस्मक नाश होवै ॥ विरेचन ॥ वारम्वार दूध का सेवन पित्तके नाशकरने वास्ते करावे अथवा काले व सपेद निसोत में पकाय दूध प्याइ रेचन कराना अच्छा है अथवा कफकारक व भारी व मीठे भोजनकरि दिनमें शयनकरै यहभी भस्माग्नि में हित है ॥ कोलास्थियोग ॥ वेरकी गुठलीकी गिरीका कल्ककरि जलके संग सेवन करनेसे वहुत जलदी भस्मक नाशहोयहै अथवा गूलर की छालको नारीके दूधमें पीस खानेसे अथवा इन दोनोंमें गौकेदूधको सिद्ध करके पीनेसे भस्मक नाश होवै अथवा सपेद चावल, सपेद कमल इनको वकरीके दूधमें खीरवनाइ और घृतमिलाइ १२ दिन तक खानेसे भस्मक नाशहोवै ॥ विदारीकल्क ॥ भूमिकोहलाका रस ८ भाग, दूध ११ भाग, भैंसघृत १ भाग, हरणवेल, मुलहठी, रान मूंग, रानउड़द, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, जीवक, ऋषभ इन्होंका कल्क १ भाग इन सबोंको मिलाय पकाइ घृत को सिद्ध करि खानेसे भस्मक नाशहोवै अथवा त्रिफला, नागरमोथा, वायविडंग, पिपली, खांड़, ऊंगाकेवीज सपेद इन्होंका लेह भस्मकको नाशैहै॥ अपामार्गादियोग ॥ ऊंगाके वीजों को पीसि दूधमें खीर वनाइ सेवन करनेसे उग्रभस्मक रोगनाशहोवै। ककेलाकी घड़पकीहुई २४ तोले और घृतमें मिलाइ प्रभातमें खाने से ४१ दिनतक यह अग्निकी तीव्रताको व भस्मक रोगको नाशै और अग्निको मंदकरै यहअनुभवसे कहाहै ॥ अजीर्णके भेद ॥ कफसे आमाजीर्ण १ पित्तसे विदग्धाजीर्ण २ वायुसेविष्टब्धाजीर्ण ३ रसशेष अजीर्ण ४ कोईके मतमेंवातादिदोषरहित दिनपाकी यहप्रतिबासर ६ ऐसे ६ प्रकारका अजीर्ण होयहै ॥ अजीर्णनिदान ॥ ज्यादह जलके पीनेसे वा अकालमें भोजन करनेसे वा मलमूत्रादिवेगके रोकनेसे वा समयमेंशयनका विपर्यय होनेसे हितकारक व थोड़ाभी अन्न भोजनकिया पकैनहीं है अथवा

ईर्षा, भय, क्रोध, लोभ, शोक, दीनतापना, वैरभाव इन्होंके सेवनसे संयुक्त मनुष्य के अन्नपके नहींहै ॥ आमाजीर्णलक्षण ॥ शरीर भारी रहै, बमनकीइच्छारहै, गालपै व नेत्रकूटपैसोजाहो जैसाभोजनकिया हो वैसा कच्चामलजावै, डकारआवै ये लक्षण आमाजीर्णकेहैं ॥ वचाविबमन ॥ आमाजीर्णमें बच, सेंधानोन इन्होंका चूर्ण गरम जल में मिलायपानकरि बमनकरना श्रेष्ठहै पीछे धनियां, शुंठि इन्होंका काढ़ा करिदेवै यह आमाजीर्णको व शूलको नाशै और वस्तिको शोधनकरै॥ लवंगादिकाढ़ा ॥ लवंग व हरीतकी इन्होंकेकाढ़ामें सेंधानोन मिलाय पीनेसे अजीर्णको नाशै और यहरेचनकरैहै ॥ वैश्वानरक्षार ॥ थोहर आक, चीता, एरंड, लवण, सांठी, तिल, ऊंगा, केला, ढाक, अमलीइन्हों को भस्मकरि राख ६४ तोले लेवै और २५६ तोले पानी में मिलाय चतुर्थांश काढ़ाकरि ६४ तोले लवणघालि निधूमकठिन खारहो तब बारीक पीसि अजमाइन २ तोले जीरा २ तोले शुंठि२तोले मिरच २ तोले पिपली २ तोले स्थूलजीरा २ तोले हींग २ तोले इन्होंका चूर्ण मिलावै । पीछे सबको अदरकके अर्कमें भावना देवै पीछे सुखावै पीछे प्रभातमें अग्नि बलाबलदेखि इसको शीतलजलके संगखावै और जब यह औषध जीर्णहोजाय तब जांगल देशके जीवोंकेमांस का रस व यूषइन्होंमें कटुक अम्ल व लवणमिलाय मन्दमन्दगरम गरम पीवै व अग्निको दीपन करनेवाले पदार्थ खवावै यहअग्निको व बलको व आरोग्यको बढ़ावै और तक्रका अनोपान करावै अथवा तक्रके सङ्ग अन्न खवावै इससे मन्दाग्नि, बवासीर, बायु, कफ, सर्वांग सोजा, शूल, गुल्म, उदररोग, आम, पथरी, मलमूत्र संबंधी बायुके रोग नाशहोवैं ॥ सामुद्रादिचूर्ण ॥ खारी नोन, कालानोन, सेंधानोन, जवाखार, अजमान, हरीतकी, पिपली, शुंठि, हींग, बायबिड़ंग ये सबबराबर ले चूर्णकरि घृतमें मिलाय भोजनसे पहिले पांचग्रास चूर्णकेकरै यह अजीर्ण को व बातको व गुदबात को व गुल्मबात को व प्रमेहको व बिषमबातको व बिशूचिका को व कामलाको व पाण्डुको श्वासको व ासको हरै है ॥ हरीतक्यादियोग ॥ हरीतकी अथवा शुंठि, गुड़केसंग खाने अथवा सेंधानोन युत खानेसे निरंतर अग्निको दीपन करै है

आमाजीर्णादिपरगुड़ादि ॥ गुडकेसंगमिली शुंठिको अथवा गुड़,पिपली को अथवा गुड़हरीतकी को अथवा गुड़ अनारके खानेसे आमाजीर्ण ववासीर,मलावष्टंभ नाशहोयहै॥ गुड़ाष्टक ॥शुंठि,मिरच,पिपली,जमालगोटाजड़, निसोत, चीता, पिपलामूल इन्होंके चूर्ण में गुडमिलाय खानेसे प्रभात में यह गुड़ाष्टक बलको व अग्निको व वर्णको बढ़ावै है और सूजनको व उदावर्त्त को व शूल को व प्लीहा को व पांडु को हरै है ॥ पथ्यादिचूर्ण ॥ हरीतकी, पिपली, कालानोन इन्हों के चूर्ण को मस्तुकेसंग अथवा गरमजलकेसंग खानेसे और दोषोंको बिचार देखिकर वैद्यके वर्त्तावनेसे ४ प्रकारके अजीर्ण को व मन्दाग्नि को व अरुचिको व आध्मान वायुको व वात गुल्मको व शूलको जल्दी नाशै है॥ वृहच्छंखवटी ॥ थोहरखार ४ तोला आकका खार ४ तोला अमली खार ४ तोला ऊंगाखार ४ तोला केलाखार ४ तोला तिलकाखार ४ तोला पलाशका खार ४ तोला खारीनोन ४ तोला सांभर नोन ४ तोला सेंधानोन ४ तोला कालानोन ४ तोला मनयारीनोन ४ तोला और सज्जी का खार, जवाखार, सुहागाखार तीनों मिलके ४ तोला इन्हों का बारीक चूर्णकरि इसको ६४ तोले नींबू के रसमें गेरै पीछे अग्निपैतपाये शंखके टुकड़े ४ तोले गेरै ऐसे ७ वार तपाय तपाय द्रव करै पीछे शुंठि १२ तोला मिरच ८ तोला पिपली ४ तोला भुनीहींग २ तोला पिपलामूल २ तोला चीता २ तोला अजमान २ तोला जीरा२तोला जायफल२तोला लवंग २ तोला पारा १ तोला गंधक १ तोला बचनागविष १ तोला सुहागा १ तोला मैनसिल १ तोला इन्होंका चूर्णकरि पूर्वोक्त चूर्णमें मिलावै पीछे १६ तोला चूकाके रसमें खरलकरि १ माशाकी गोली बनावै यह वृहच्छंखबटी सब प्रकार के अजीर्णों को व सब शूलोंको व बिशूची को व आलसिका को नाशैहै॥ लघुक्रव्यादिरस ॥ पारा १ भाग गन्धक २ तोला लोहाकी भस्म ६ माशे पिपलामूल ६ माशे पिपली ६ माशे चीता ६ माशे शुंठि ६ माशे लवंग ६ माशे काला नोन १ तोला सुहागा २ तोला मरिच २ तोला इन्होंका चूर्णकरि खट्टेरस में ७ भावना देवै यह १ माशा तक्र के संग खाने से खाये

भोजन को जीर्णकरै और अग्नि को दीपनकरै औ यहलघुक्रव्यादिरस सब प्रकार के अजीर्णों को नाशै है॥ बिदग्धाजीर्णलक्षण॥ भ्रमहो, तृषालगै, गरमी के नानाप्रकार के रोगहों, धूमानेलीया खट्टीडकारआवै दाह अरु पसीनाहो ये बिदग्धाजीर्ण के लक्षणहैं॥ बिदग्धाजीर्ण निदान॥ इस अजीर्ण में अन्नको शीतल जल को पान करिके पकावै तब शीतलता से पित्तका नाशहोके आलापना से गुदाद्वारा निकाले है॥ निद्रानियम॥ भोजनके पहिले दिनमें शयन करनेसे पाषाणसमान अन्नभी जीर्णहो और भोजनके अंतमें शयन करने से दिनमें बात पित्त कफ ये कोपैहैं अथवा हींग, शुंठि, मिरच पिपली, सेंधा इन्हों के पानीमें पीस पेटके लेपकरि दिनमें शयन करने से सब प्रकार के अजीर्ण नाशहोय हैं॥ दिवानिद्रा॥ कसरत करिके व स्त्रीसंग करिकै व गमन करिके व सवारीपै फिरिकै इन्हों के सेवनसे थकेको व अतीसारवालेको व शूलवालेको व श्वासवाले को व तृषावालेको व हुचकी वालेको व बायुरोग वालेको व क्षय वालेको व कफक्षीण को व बालक को व मद वालेको व वृद्धको व अजीर्णवालेको व रात्रिमें जागेहुयेको व उपवास ब्रत करनेवालेको दिनमें यथेच्छ शयन करवावै॥ विष्टब्धाजीर्णलक्षण॥ शूलहो पेट में अफराहो बायुकी नानाप्रकारकी पीड़ाहों और मल व अधोवायु रुकजाय और शरीर जकड़बंध होजाय और मोहहो अंगमेंपीड़ाहो ये बिष्टब्धाजीर्णके लक्षण हैं॥ शास्त्रार्थ॥ बिष्टब्धाजीर्ण में स्वेदन कर्म करावै और लवण युत पानीपीवै॥ रसशेषाजीर्णलक्षण॥ हिया दूखै और अन्नमें अरुचिहो शरीरभारीरहै ये लक्षण रसशेषअजीर्ण केहैं॥ शास्त्रार्थ॥ रसशेषमें दिनमें शयन करावै और पवन बर्जित स्थानमेंरक्खै॥ अजीर्णकारण॥ बिनाबिचारेखानेकेलोभी पशुकेसमान भोजन करैं उनको अनेक रोगोंका मूल अजीर्ण प्राप्तहो॥ अजीर्ण कासामान्यलक्षण॥ ग्लानिहो, शरीरभारीहो व बिष्टंभहो, भ्रमहो अपानबायु सरैनहीं ये सामान्याजीर्णके लक्षणहैं॥ अजीर्ण के उपद्रव॥ मूर्च्छाहो, प्रलाप, छर्दि, मुखसेपानीपड़ै, ग्लानि हो भ्रमहो ये उपद्रव होवैं तो वह मरजाय अल्पआमसोदोषोंसे बंध होय वह

अग्नि का मार्ग रोंकेनहीं तव अजीर्णमें भी भूखलागे वा कच्चीभूख में जो खावै सो विषके समान मारदेयहै और प्रायतासे भोजनकी विषमता होने से मनुष्योंके अजीर्ण होयहै वह अजीर्ण अनेक प्रकारके रोगों को उपजावैहै और जव अजीर्ण का नाशहो तभी वह रोगभी नाश होवै ॥ भास्करलवणचूर्ण ॥ पिपली ८ तोला पिपलामूल ८ तोला धनियां ८ तोला स्याहजीरा ८ तोला सेंधानोन ८ तोला मनयारी नोन ८ तोला तालीस पत्र ८ तोला नागकेशर ८ तोला कालानोन ८ तोला मरिच ४ तोला जीरा ४ तोला शुंठि ४ तोला दालचीनी २ तोला इलायची २ तोला सामुद्रनोन ३२ तोला अनारदाना १६ तोला अम्लवेतस ८ तोला इन्होंकाचूर्णकरै और घृतसे चिक्कना और कलुक मदिरा गंधयुत अमृत के समानहै यह लवणभास्कर भास्कर यानी सूर्य्य ने जगत्‌के कल्याण वास्ते प्रकट कियाहै और यह चूर्ण वातरोगको व कफरोगको व आमरोग को व वातगुल्म को व वातशूल को हरैहै और तक्र व मस्तु व मदिरा व सिंधु व कांजी इन्होंके संग खानेसे मंदाग्निको व हृदयरोग को व आमदोष को व उदर रोगोंको व अनेक प्रकारके रोगोंको लवणभास्कर नाशै है ॥ अग्निमुखचूर्ण ॥ हींग १ भाग, वच २ भाग पिपली ३ भाग, अदरख ४ भाग, अजमान ५ भाग, छोटी हरीतकी ६ भाग, चीता ७ भाग, कुट ८ भाग इन्हों का चूर्ण करि खाने से मदिराके संग व दही के मस्तुके संग व गरम पानीके संग उदावर्त्तको व अजीर्ण को व प्लीहाको व उदर रोगको व अंगगलताको व विषखाने को व ववासीर को व शूलको व गुल्मको व कास को व श्वास को व क्षयीको यह अग्निमुख चूर्ण हरैहै और दीपन है ॥ वृद्धाग्निचूर्ण ॥ सुहागाखार, जवाखार, चीता, पाढ़ा, करंज, सेंधानोन, सांभर नोन, कालानोन, मनयारी नोन, खारीनोन, छोटीइलायची, तमालपत्र, भारंगी, वायविड़ंग, हींग, पुष्करमूल, कचूर, दारुहलदी, निसोत, नागरमोथा, वच, इन्द्रयव, आमला, जीरा, आमसोल, धमासा, कलौंजी, अम्लवेतस, अमली, अनारदाना, शुंठि, मिरच पिपली, भिलावां, अजमोद, अजमान, देवदारु, नेत्रवाला, अतीस

हपुषा अमलतास,सपेदनिसोत, तिल, सहिंजन,घंटापाटलीबृक्षयानी लोध्रविशेष, कोकिलाक्ष, पलाश इन्होंका दूध गोमूत्रमें भावनादिया लोहमंडूर ये सब बराबर भागले महीनचूर्णकरै इसचूर्णको विजौरा के रसमें ३ दिन भावनादेवै पीछे ३ दिन कांजीमें भावनादेवै पीछे ३ दिन अदरख के रसमें भावना देवै यह बृद्धाग्नि चूर्ण अग्निको बढ़ावैहै और बिधिसे खायाहुआ जल्दी रोगोंको हरैहै और बिशेष करि अजीर्ण को व गुल्मको व प्लीहाको व उदर रोगको व संग्रहणी को व पांडुरोग को व श्वासको व कासको व प्रतिश्याय को व क्षयको व शोषको व कफजविद्रधिको अंत्रबृद्धिको व अष्ठीलाको व बातरक्तको व उल्वण बातादिदोषोंको हरैहै और अग्निकोबढ़ावै और इसमें सब तरह के पदार्थ पथ्यहैं इसचूर्ण के खानेकीमात्रा १ तोलाहै और जो सूखे औषधहैं उनको इसीसेंकहे द्रव औषधोंसें गो दोहन काल तक पकावै यह बृद्धाग्निसुखचूर्णराजब्रह्माजी का बनाया अश्विनीकुमारों का प्रकट किया है ॥ यावशूकादिचूर्ण ॥ जवाखार, शुंठि, हरीतकी इन्होंका काढ़ा अथवा चूर्ण अजीर्णसे उपजे रोगको हरैहै ॥ लघुचित्रकादिचूर्ण ॥ चीता, अजमोद, सेंधानोन, शुंठि मिरच इन्होंके चूर्ण को खट्टे तक्रके संग खानेसे ७ दिन तक यह अग्निको बढ़ावै और बवासीरको नाशैहै ॥ शुंठ्यादिचूर्ण ॥ शुंठि,जवाखार इन्होंका चूर्ण घृतयुत खानेसे अथवा गरम पानीकेसंगखानेसे भूंख लगावै है ॥ कणादिचूर्ण ॥ पिपली, सेंधानोन, हरीतकी, चीता इन्हों का चूर्ण गरम जलके संगखानेसे प्रभातमें भूखलगावै और अग्नि को बढ़ावै है ॥ कपित्थादियोग ॥ कैथा, तक्र, चूका, मिरच, जीरा, चीताकी जड़ इन्हों का चूर्ण कफ बात को हरै है और ग्राही है और बलको बढ़ावैहै और दीपन पाचनहै ॥ ज्वालामुखचूर्ण ॥ हींग १ तोला अम्लबेतस १ तोला शुंठि मिरच पीपल १ तोला चीता १ तोला जवाखार १ तोला गुड़ ४ तोला इन्हों को मिलावै यह ज्वालामुख चूर्ण अग्निको बढ़ावैहै और अजीर्ण मात्रको नाशैहै ॥ व्योषादिचूर्ण ॥ शुंठि, मिरच, पिपली, इलायची, हींग, भारंगी, खारी नोन, जवाखार, पाढ़ा, अजमान, अमली, दालचीनी, चाव, चीता

गजपिपली, सालीभस्म, पिपलामूल, जीरा, सांभरनोन ये सब्बबरा-
वर ले चूर्णकरै और घृत युत करि खानेसे ३ दिनमें सम रोगों को
हरैहै और यह अग्निरूप चूर्ण अजीर्णकोतो उसीवक्तहरै॥ शुंठ्यादि
चूर्ण॥ शुंठि५भाग,पिपली४भाग,अजमोद३भाग,अजमाइन२भाग
सांभर नोन १ भाग, हरीतकी १६ भाग इन्हों के चूर्ण को खाने से
पेटके गुड़गुड़ शब्द को व आमको व गुल्म को व मलकोहरै और
यह चूर्ण पाषाणको भी भस्मकरै और अजीर्णकातो क्याकहनाहै॥
विश्वादिचूर्ण॥ शुंठि १ तोला मिरच २ तोला पिपली ३ तोला नागर-
पान ४ तोला दालचीनी ५ तोला छोटी इलायची ६ तोला ये पदार्थ
क्रम वृद्धिसे लिये चूर्ण करि और बराबर की खांड़ मिलाय खानेसे
अरुचि को व श्वास को व बवासीर को व गुल्मको व छर्दिकोहरै॥
चित्रकादिचूर्ण॥ चीता, चाव, मिरच, पिपली, हींग, गजपिपली,कचूर
अजमान, शुंठि, जवाखार, पांचोतरह के नोन इनसबों को बराबरले
बिजौराकेरसमें भिगोवे अथवा अनारकेरसमें भिगोवे पीछे यह चूर्ण
खानेसे आमरोगको व संग्रहणीको व कफको व वायुको व अग्नि म-
न्दताको नाशैहै॥ लवणादिचूर्ण॥ मनयारीनोन, चीता, जीरा, स्याह
जीरा,अजमान,हरीतकी,शुंठि,मिरच, पीपल, कालानोन, दालचीनी
अमली,अजमोद,अम्लवेतस,वायविड़ंग यह चूर्ण सम्पूर्ण अजीर्णों
को नाशैहै॥ बड़वानलचूर्ण॥हरीतकी,करंजवाकीछाल,चीता,पिपला-
मूल, शुंठि, मिरच, पिपली, खांड़ इन्हों को बराबर भाग मिलाइ
खानेसे यह बड़वाग्नि चूर्ण अजीर्णको हरैहै॥ पञ्चाग्निचूर्ण॥ अम्ल-
वेतस, अर्जुनवृक्ष, थोहर, मूर्वा, जमींकंद इन्होंके चूर्ण को तक्र के
संग खानेसे जठराग्नि बढ़े॥ विश्वभेषजचूर्ण॥ शुंठि,हींग,सुहागाखार
पिपली, कालानोन इन्होंके चूर्ण को सहिंजन के रसकी भावना दे
खानेसे शूलको हरै और भूखको बढ़ावै॥ संजीवनीगुटी॥वायविड़ंग
शुंठि, पिपली,हरीतकी,चीता,बहेड़ा, बच,गिलोय,भिलावाँ, अतीस
इनको बराबर भाग ले गोमूत्रमें खरल करि १ रत्तीकीगोली बांधै
यहगोली अदरख के अर्कके संग खाइ और अजीर्ण में १ गोली देवै
और विशूचीमें२गोलीदेवै औरसांपडसेको३ गोलीदे और सन्निपात

में४गोलीदेवै यह संजीवनी गोली मनुष्यको जिवावेहै ॥ धनंजयवटी ॥ जीरा१तोला चीता१तोला चाव१तोला कालानोन १ तोला बच १ तोला दालचीनी १ तोला इलायची १ तोला कपूर १ तोला हंस-पादी १ तोला अजमोद १ तोला नागकेशर १ तोला अजमान ८ माशे पिपलामूल ८ माशे सज्जीखार ८ माशे हरीतकी ८ माशे जायफल२तोला लवंग २ तोला धनियां३तोला तमालपत्र३ तोला पिपली४तोला सांभरनोन४तोला मिरच ७तोला निसोत ८ तोला खारीनोन १० तोला सेंधानोन १० तोला शुंठि १० तोला चूका ३ २ तोला अमली १६तोला इन्होंको पीस गोली बनावै यह धनंजयबटी धनंजय अग्निको वढ़ावै और अजीर्ण को जरावै और शूलकोशरीर से बाहरकरै और बिड्बंधको व अफराको व संग्रहणीकोनाशै और रुचि को उपजावै ॥ शंखबटी ॥ अमलीखार, पीपलखार, थोहरखार ऊंगाखार, आकखार, पांचोनोन ये सब प्रत्येक आठआठ तोले शंखभस्म २ तोला त्रिफला १ तोला लवंग २ तोला इन्होंका चूर्ण करि निम्बूके रसमें ७ भावना देइ यह शंखबटीरस १ रत्ती खाने से अग्नि को दीपन करै और पाचनहै और यह बातके अजीर्ण को व पित्ताजीर्ण को व कफाजीर्णको व विशूचीको व शूलको व आनाहको हरै इसमें सन्देह नहीं ॥ लवंगामृतबटी ॥ मिरच ३ तोला पिपली ३ तोला अजमाइन ८ तोला चीता ८ तोला सांभरनोन सेंधानोन कालानोन मिलके ४ तोला पिपलामूल७तोला शुंठि हरीतकी १० तोला बहेड़ा६तोला आमला ६तोला भिलावाँ ६तोलाजीरा६ तोला चाव६तोला इन्द्रयव२० तोला लवंग ४५ तोला लेवै इन्होंका चूर्ण करि बस्त्रमें छानि अदरखकेरसमें३ भावनादेवै पीछे चूकाकेरसमें ३ भावना देवै पीछे २ माशाकी गोली बांधै ये लवंगामृत गोली खाने से अग्निको दीपन करै और बल, आयु को बढ़ावै और रजस्वला नारी सम्बन्धी रोगों को हरै ॥ व्योषादिगुटी ॥ शुंठि, मिरच, पिपली पिपलामूल, इलायची, पांचोनोन, जीरा, स्याहजीरा, धनियां, नाग-केशर, कैथा, दालचीनी, चूका, अमली, सेंधानोन इन्होंकाचूर्णकरि अदरखके रसमें व नींबूके रसमें भावना देइ खानेसे रोगों को हरि

अग्निको दीपनकरै ॥ हरीतक्यादिवटी ॥छोटीहरीतकी६ भाग पिपली ४ भाग गजपिपली ४ भाग चीता १ भाग सेंधानोन १ भाग इन्हों को महीन पीस गोली बनाइ खाने से अग्नि को दीपन करै ॥ तक्रहरीतकी ॥ शत १०० बड़ी हरीतकियों को तक्रमें उबालि अग्नि से बीज काढ़ै पीछे पिपली १ तोला पिपलामूल १ तोला चवक १ तोला चीता १ तोला शुंठि १ तोला मिरच १ तोला पिपली १ तोला खारीनोन १ तोला सेंधानोन १ तोला मनयारीनोन १ तोला कालानोन १ तोला सांभरनोन १ तोला हींग १ तोला जवाखार १ तोला जीरा १ तोला अजमोद १ तोला निसोत ८ माशे इन्होंका चूर्ण करि कपड़ा माहँ छानि चूका के रसकी भावना देइ इस द्रव्य को पूर्वोक्त १०० हरीतकियों का गर्भ में स्थापन करि भरै पीछे सुखाय एक हरीतकी नित्य सेवन करने से अजीर्ण को व मन्दाग्निको व पेट रोगको व शूलको व संग्रहणीको व बवासीरको व विड्बन्धको व अफराको व आमबातको यह अमृत हरीतकीनाशै है ॥ चित्रकगुड ॥ चीता, दशमूल इन्होंका काढ़ा ८०० तोला गिलोय कारस २५६ तोलाहरीतकी २५६ तोलागुड़ ४०० तोला इन्होंका पाक अग्निपै बनाइ दुसरेदिन शीतल होनेपर ३२ तोलाशहद जवाखार २ तोलामिलाइ एकत्रकरै यह अश्विनीकुमारोंने अग्निकीवृद्धिकेवास्ते कहाहै और यह खानेसे अजीर्णको व श्वासको व खांसीको व कृमि रोगको व क्षयरोगको व गुल्मको व पेटकेरोगों को व बवासीरको व सबतरह के कुष्ठ को व अंत्रवृद्धिको नाशै है और सैकड़ों दवाइयों से जो पीनस अच्छा न हुआहो उसकोभी ३ दिनमें चित्रक गुड़नाशै है ॥ द्राक्षादियोग ॥ जिसके पेट में दाहहो और भोजनकिया पदार्थ भी शरीरको जलावै और हृदयके व कोठाके मलभीजलै उसमनुष्य को मुनक्का, दाख, मिश्री, शहदमें मिलाय देवै अथवा हरीतकी मिश्री शहदमें मिलाय खवावै सुखप्राप्तहोवै ॥ यवागू ॥ चीता १ भाग चवक २ भाग, शुंठि ३ भागले यवागू बनाय खानेसे गुल्मको व बायुशूलको हरै है और आश्चर्यरूप अग्निको पैदाकरैहै॥ कव्यादिकल्क ॥ इलायची, लवंग, मिरच, सीपीभस्म, चूका, शुंठि, सेंधानोन, भटोरा

पांचोनोन इन्होंका चूर्णकरि कपड़ामेंछानि यह क्रव्यादिरस अजी-र्णको हरैहै ॥ क्षारयोग ॥ सज्जीखार ४ तोला जवाखार ४ तोला सुहागाखार ४ तोला पारा ४ तोला लवंग ४ तोला सेंधानोन ४ तोला मनयारीनोन ४ तोला कालानोन ४ तोला पिपली ४ तोला गंधक ४ तोला शुंठि ४ तोला मिरच ४ तोला बचनागविष १ तोला इन्होंको महीन चूर्णकरै पीछे इसको आक के दूधमें ७ दिन तक खरलकरि अंधमूषा यंत्रमें धरि गजपुटमें फूंकदेवै स्वांगशीतलहोने पर काढ़ै पीछे लवंग ४ तोला मरिच ४ तोला फटकड़ी ४ तोला इन्होंका चूर्ण करि पूर्वोक्त में मिलाय महीनपीसि सुन्दर बर्त्तन में घालिरक्खै पीछे २ रत्ती रोजखाने से भुक्तको जीर्णकरै और भूखको जगावै और आम को व कफरोग को नाशै ॥ अग्निमुखरस ॥ पारा गंधक, बचनागविष इन्होंको बराबर भागले अदरख के अर्क में खरलकरिऔर पीपलकाखार, अमलीकाखार, ऊंगाकाखार, जवाखार सज्जीखार, सुहागाखार, जायफल, लवंग, शुंठि, मिरच, पिपली त्रिफला ये सब बराबर भागलेवे औ शंखभस्म, जवाखार, पुष्कर-मूल, सज्जीखार, पलाशखार, तिलकाखार ये सबभी बराबर भाग ले जीरा २ भाग हिंग २ भाग इन्होंको नींबूकेरस में खरल करि १ रत्ती की गोली बनायखावै ये गोली पाचनी हैं दीपनी हैं और अजीर्णको व शूलको व विशूचीको व हुचकीको व गुल्मको व उदरके रोगोंको नाशै है यह बह्निमुखरस है ॥ अजीर्णारिरस ॥ शुद्धपारा ४ तोला, शुद्धगन्धक ४ तोला, हरीतकी ८ तोला, शुंठि १२ तोला पिपली १२ तोला, मिरच १२ तोला, सेंधानिमक १२ तोला, भांग १६ तोला इन्हों को चूर्ण करि नींबूकेरस में ७ भावना देवै और बारम्बार धूपमें सुखावै यह अजीर्णारिरस दीपन पाचन है और हमेशका भोजन से दुगुना भोजन कियेको पचावै अथवा रेचन करिशुद्धकरै ॥ पाशुपतरस ॥ पारा १ तोला, गंधक २ तोला, क्रांतभस्म ३ तोला इनसबोंके समान भाग बचनागविष लेवै इन्होंको चीता के रसमें खरल करैपीछे शुंठि, मिरच, पिपली २ भाग लवंग २ भाग इलायची २ भाग जायफल १ भाग जावित्री १ भाग पांचोनोन १

तोला थोहरकाखार २ तोला आककाखार २ तोला अमली का खार २ तोला ऊंगाकाखार २ तोला पिपलकाखार २ तोला सुहागाकाखार १ तोला जवाखार १ तोला हींग १ तोला जीरा १ तोला हरीतकी १ तोला येलै पीछे इन्होंको नींबूके रसमें खरल करै और धतूराके वीजोंकी भस्म ७ भाग मिलाय यह पाशुपतरस है इसकी गोली चिरमटी समान बनावै और खाने से सब अजीर्णों कोनाशै और तालमूल तक्रकेसंग गोली खानेसे पेटकेरोगोंकोनाशैं है और मोचरसके संग गोली खानेसे अतीसारको नाशैहै और तक्र सेंधानोनके संग गोलीको खानेसे संग्रहणीको नाशैं और शुंठि,हींग कालानोन इन्होंके चूर्णके संग गोली खानेसे शूलको नाशै और तक्र के संग गोली खानेसे ववासीर को नाशै और पिपली चूर्णके संग गोलीखानेसे क्षयीको नाशै और शुंठि, कालानोनके संग गोलीखाने से वायुके रोगको नाशै और गिलोयरस खांड़ के संग गोली खाने से पित्तकेरोगको नाशै और पिपली,शहदकेसंग गोली खानेसे कफ रोगको नाशै इस गोलीसे अच्छी और गोली धन्वन्तरि के मत में नहीं है॥ आदित्यरस॥ सिंगरफ,वच, नागविष गन्धक, शुंठि, मिरच पिपली,त्रिफला,जायफल,लवंग,सेंधानोन, कालानोन, मनयारीनोन खारीनोन, सांभरनोन इन्होंका चूर्णकरि निम्बूके रसमें ७ भावनादेइ पीछे आधीरत्तीकी गोलीबनाइ खानेसे यह आदित्यरस अजीर्णको नाशै और खायेपदार्थकोपकावै और जठराग्निकोवढ़ावै॥ हुताशनरस॥ वचनागविष १ भाग सुहागाखार ८ भाग मिरच १२ भाग इन्हों का चूर्णकरि खानेसे यह हुताशनरस अग्निको वढ़ाइ वातकफको नाशैहै॥ अजीर्णकंटकरस॥ पारा,गंधक,वचनागविष येसमानभागले और मिरच ३ भागले इन्होंको वड़ी कटैलीकेरसमें २१ भावनादेइ ३ रत्तीखावै यह कंटकरस जलदी जठराग्निको बढ़ावै और विशूची को व अजीर्णको व वायुके रोगोंको नाशै॥ रामबाणरस॥ पारा १ भाग,वचनागविष १ भाग गंधक १ भाग मिरच २ भाग जायफल आधाभाग इन्होंको अमलीकेरसमें खरलकरि तय्यारकरै यह राम वाणरस रावणरूपअजीर्णको नाशै और संग्रहणी को व आमवात

को व मन्दाग्निको व कफको व श्वासको व खांसीको व छर्दिको व कृमिको नाशै इसकीगोली चनासमान बरतै और यह अग्निको भी दीपनकरैहै॥ दूसराप्रकार॥ शुद्धजयपाल ४ माशे वचनागविष १माशे पारा १ माशे गंधक१माशे सुहागा १ माशे इन्होंको भृंगराजकेरसमें बारम्बार खरलकरि २ रत्तीकेप्रमाण गोली बनायखानेसे यह रामबाणरस कफ, बात, अजीर्ण, विष्टम्भ, आध्मान, शूल, श्वास, कास इन्होंको हरै॥ ज्वालानलरस॥ इलायची १ तोला दालचीनी २ तोला अभ्रकभस्म ३ तोला लवंग ४ तोला मिरच ४ तोला पिपली ५ तोला शुंठि ६ तोला और इन सबों के समान मिश्रीले और इसमें सज्जीखार, सुहागाखार, जवाखार, पारा, गन्धक, पिपली, पिपलामूल, चवक, चीता, शुंठि, चीताजड़ येसमान भागले इन्होंकाचूर्ण ३॥ तोला ले और भूनीभांग ३॥ तोला सांहिंजनकीजड़ १॥। तोला इन्होंको पूर्वोक्तमें मिलावे पीछे अरणीकेरसमें खरलकरै पीछे सांहिंजन के रस मेंखरलकरै पीछे चीता के रसमें खरल करै पीछे अदरखके रसमें खरलकरि ऐसे ३ भावना धूपमें देइ लघुपुटमें फूंकदेवे शीतल होने पर काढ़ि अदरखके रसमें७भावनादेनेसे ज्वालानलरस सिद्धहोवै है इसको ४ माशेशहद मिलायखाइके ऊपर शुंठियुत गुड़का अनोपान करै यह अजीर्णको व अतीसारको व संग्रहणीको व मन्दाग्निको व कफरोगको व हल्लासको व छर्दिको व आलस्यको व अरुचिकोनाशै है॥ चिन्तामणिरस॥ पारा, गन्धक, तांबाकीभस्म, अभ्रकभस्म, त्रिफला, शुंठि, मिरच, पिपली, जयपाल येबराबरभाग ले इन्होंको कुम्भीके रसमेंखरलकरि सुखाइ कपड़ामें छानि सिद्धकरै यहचिन्तामणिरस अजीर्णको नाशै और आठप्रकारके ज्वरको व सबतरह के शूलोंको व आमवातको हरै इसकी मात्रा १ रत्ती अथवा२ रत्ती है॥ पंचमूलादिघृत॥ पंचमूल, हरीतकी, शुंठि, मिरच, पिपली, पिपलामूल, सेंधानोन, रास्ना, जवाखार, सज्जीखार, जीरा, बायबिड़ंग इन्हों का करि और बिजौरा रस, अदरख रस, तक्र, मस्तु, माड़ कांजी तुषोदक ये सब मिलाय घृतको मिलाय पकाइ सिद्धकरै यह घलअग्नि को बढ़ावै और गुल्मको व शूल को व पेटके रोगोंको व

कासको श्वास को व वायु को व कफको हरै है॥ दशमूलादिघृत॥ मिरच २ तोला पिपलामूल २ तोला शुंठि २ तोला पिपली २ तोला भिलावां २ तोला अजमान २ तोला वायविडंग २ तोला गजपिपली २ तोला हींग २ तोला काला नोन २ तोला जीरा २ तोला खारीनोन २ तोला धनियां २ तोला सांभर २ तोला सेंधा-नोन २ तोला जवाखार २ तोला चीता २ तोला वच २ तोला इन्हों का काढ़ा करि घृत ६४ तोला दशमूलकारस दूध आठगुणा मिलाय घृत को सिद्धकरि खानेसे मन्दाग्नि को व संग्रहणीको व विष्टंभ को व आम को व दुर्बलपना को व प्लीहा को व श्वास को व कासको व क्षयी को व बवासीर को व भगन्दर को व कफ रोगको व बातरोग को व कृमि रोग को नाशै दृष्टान्त जैसे सूखे काष्ठ को दावाग्नि तैसे॥ धान्यादिघृत॥ धनियां, जीरा इन्हों के कांढ़ा में घृत को सिद्ध करि खाने से जठराग्निबढ़ै और रुचिउपजै और दोषोंकोहरै और वातपित्त को हरै॥ अग्निघृत॥ पिपली २ तोला पिपलामूल २ तोला चीता २ तोला गजपिपली २ तोला हींग २ तोला चवक २ तोला अजमोद २ तोला पांचोनोन २ तोला सज्जीखार २ तोला जवाखार २ तोला हंसपदी २ तोला इन्हों का काढ़ा अथवा कल्ककरि दही ६४ तोला सूक्त ६४ तोला घृत ६४ तोला अद-रखकारस ६४ तोला इन्होंको मिलाइ मंदाग्निसे पकावै यहअग्नि घृत मन्दाग्निको व बवासीरको व गुल्मको व पेटके रोगको व संग्र-हणीको व सूजनको व भगन्दरको व बस्तिकर्म को व कुक्षिरोगको हरै दृष्टान्त जैसे सूर्य अंधेराको तैसे॥ शार्दूलकांजिक॥ पिपली, अद-रख, देवदारु, चीता, चवक, बेलपत्र, अजमोद, हरीतकी, शुंठि, अज-मान, धनियां, मिरच, जीरा ये बराबर भागले इन्हों की कांजीबनाय पीनेसे यह शार्दूलकांजि अग्निको बढ़ावै और इन्हों को सिरसोंके तेलमें भूनि कांजीकरि पीनेसे दशरोगोंको हरै कासको व श्वासको व अतीसारको व पांडुरोगको व कामलाको व आमको व गुल्मको व शूलको व बायशूलको व पेटकी पीड़ाको व बवासीरको व सोजा को व भुक्तवांति को हरै और क्षीरपाक के समान इसकांजी को

सिद्धकरै ॥ विशूचिकादिसंप्राप्तिनिदान ॥ जो पुरुष के मन्दाग्नि में प्रथम आमाजीर्ण हुआ और पीछे वह पशुकी भांति अधिक गरिष्ट वस्तुखाय तो उसके बिशूचिका,मूर्च्छा, अतीसार,बमन, भ्रम,पीड़ा हड़फूटन, जम्हाई, दाह और शरीरका बर्ण और का और होजाय कम्प हृदय और मस्तकमें पीड़ा और शरीर में सुईचुभेकैसे लक्षण हों उसको वैद्य वैद्यबिशूची कहतेहैं ॥ आलसकनिरुक्ति ॥ भोजनकिया हुआपचैनहीं और ऊपरनीचेजावे और आमाशयमें अलसीभूतरहे इसवास्ते इसको आलसक कहते हैं ॥ आलसक व दंडालसकलक्षण ॥ जिसकी कुक्षिमें ज्यादह अफरा हो और शब्दहो कुक्षिमें और नि-रुद्धहुआ पवन कुक्षिकानीधावनकरै और मल मूत्र व गुदाकी वायु रुकजावे और तृषालगे और डाकलगेयह अलसकके लक्षणहैंऔर बायुकोपीहुई कंपको,भ्रम, अफरा, शूलादिकको करै और पित्तकोप हो ज्वरको,अतीसारको,दाहको,पसीनाकोकरै और कफकोपि अंग भारीपनाको, छर्दिको, गुंगपनको, ज्यादहथूकनाराहै और आलसक में बातादि दोष छर्दि अतीसार को वर्जिकरि तीव्रशूल को पैदाकरै है और नाड़ियोंके मार्गोंको रोकि तिरछेहो शरीरमें जाय शरीर को स्तंभनकरै दण्डके समान ये लक्षण दण्डालसकके हैं यह जल्दी देहको नाशकरै है इसमें वैद्य इलाज करे नहीं ॥ बिलंबिकालक्षण ॥ जिसका भोजनकिया अन्नकफ व पवनसेदुष्टहोइनीचे व ऊपर न जावे वह बिलंबिका होवैहै वैद्यलोग इसको असाध्य कहै हैं और जिस मनुष्यके दांत व ओष्ठ व नख ये काले रंगहों और थोड़ी संज्ञाहो और छर्दि बहुत आवे और गड़े हुयेहों और स्वर बहुत हलकाहो-जाय और सम्पूर्ण शरीरकी संधि शिथिलहों ये लक्षण बिशूचीमें व अलसकमेंहों तो वहरोगी निश्चयमरै ॥ जीर्णआहारलक्षण ॥ डकार शुद्ध आवै और शरीर में उत्साहहो और मल मूत्र और पवन की अच्छी तरह प्रवृत्तिहो शरीर हलकाहोय भूख प्यास अच्छी तरह लगै तो अजीर्ण गया जानिये बिशूचीके उपद्रव नींदकानाश, सब पदार्थोंमें अरति,कंप, मूत्रनिरोध, मूर्च्छा ये पांच उपद्रव बिशूचीमें असाध्यहैं ॥ बिशूचिकाचिकित्सा ॥ ज्यादह जो बढ़जावे तो पार्ष्णियानें

पैर के पीठाको दागदेवै अथवा गंधक किंवा केशर निंबूके रस में मिलायखानेसे त्रिशूची जावै ॥ लशूनादिचूर्ण ॥ लशून,जीरा, सेंधानोन कालानोन,शुंठि, मिरच, पीपल, हिंग इन्हों को बराबरभागले निम्बू के रसमें खाने से विशूचिका को हरे ॥ अपामार्गादियोग ॥ ऊंगा की जड़को जलमें पीसि पीने से विषूचीका नाशहोवे अथवा करेला का रस तेलयुत पीनेसे विषूची जावे ॥ विलंबिकावअलसककीचिकित्सा ॥ विलंबिका व अलसकमें वमन व रेचन हितहै और नलीसे वा फल की वत्तीसे वा शोधन औषधसे दंडालसकमेंभी यही कर्मकरे और फलवत्ती, वमन स्वेदन, लंघन, अपतर्पण,ये सब आलसकमें हितहैं और विषूचीमें अतीसारोक्त उपचार करे ॥ बालमूत्रादिकाढ़ा ॥ बाल मूलाका काढ़ा पिपली चूर्णयुत पीनेसे विसूचीको नाशै और अग्नि को बढ़ावै ॥ तक्रयोग ॥ यव के सत्तू को तक्र में मिलाय और जवा-खार युतकरि अग्निमें गरमकरि पसीना लेनेसे किंवा वाफ लेनेसे किंवा सेककरनेसे किंवा हातगरम करि सेकनेसे विसूचिकाको नाशै है ॥ बिल्वादिकाढ़ा ॥ बेलफल, शुंठि इन्हों का काढ़ा छर्दि को व वि-सूचिकाको हरे है अथवा बेलफल, शुंठि, कायफल इन्होंका काढ़ा पीनेसे विसूचिकाको हरैहै ॥ यवपिष्टलेप ॥ यवांकी पीठी, जवाखार इन्हेंको तक्रमें मिलाय गरमकरि लेपकरनेसे उग्रभी पेटके शूलको हरैहै ॥ कुष्ठादिलेप ॥ कूट, सेंधानोन इन्होंको आंमसोलके तेल मेंमि-लाय गरमकरि मलनेसे विषूची को व शूलको हरैहै ॥ साधारणलेप ॥ दारुहलदी, हरीतकी, कूट, शतावरि, हिंग,सेंधानोन, इन्होंको खट्टा रसमें पीसिलेप करनेसे पेटका शूल व अफारा नाशहोवेहै ॥ लवंगा-दिचूर्ण ॥ लवंग ८ माशा, इलायची ६ माशा, जायफल ६ माशा, अफीम १ माशा इन्होंका चूर्णकरि ४ माशेचूर्ण गरमजलकेसंगखाने से दारुण विषूची को व शूल को व अतीसार को व छर्दि को हरैहै पथ्यादिचूर्ण ॥ हरीतकी, बच, हींग, कूड़ाकी छाल, भृङ्गराज, काला नोन, अतीश, इन्होंका चूर्णकरि गरमजल के संग खानेसे अजीर्ण को व शूलको व विषूचीको व कास को हरैहै ॥ शंखद्राव ॥ सेंधानोन ५ भाग कालानोन ५ भाग सांभरनोन ५ भाग,मणयारीनोन ५ भाग

खारीनोन ५ भाग, जवाखार ५ भाग, हीराकसीस ४ भाग, सुहागाखार ४ भाग तूतिया ४ भाग गंधक ४ भाग नींबूकारस ४ भाग तिलकाखार ४ भाग, उंगाकाखार ४ भाग नौसादर २ भाग, सौराष्ट्री २ भाग, साजीखार २ भाग, इन सबों को जंभीरी नींबू के रसमें खरलकरि नलिकायंत्र में २ पहरतक अग्निमें पकावै ऐसे शंखद्राव सिद्ध होवे है यह सब दोषों को हरै और लोह व पाषाण को भी द्रवकरै अजीर्ण का तो कहना क्या है इसमें संशय नहीं दालचीनीतैल॥ दालचीनीतमालपत्र, रास्ना, अगर, सहोंजनाकीजड़ कूट, बच, शतावरि इन्होंको नींबूकेरसमेंपीसि शरीरमें मलनेसेकिंवा इन्हों में तेल को पकाय मलनेसे वायुशूलको व विषूचिकाकोनाशैहै ॥ चुक्रतैल ॥ चूका ४ तोला कूट २ तोला नींबछाल २ तोला सेंधानोन १ तोला पिपली १ तोला जायफल १ तोला कडुवातेल १६ तोला इन्हों को मिलाय तैलको सिद्धकरै यह चुक्रादि तैल विषूचीको हरै और सेंधानोन, कूट इन्हों को कल्क में चूकाके तैल को मिलाय इस की मालिस से विषूची व शूल नाशहो॥ अर्कादितैल॥ आकंकारस६४ तोला धतूरा का रस ६४ तोला सफेद थोहरका रस ६४ तोला सहोंजनाका रस ६४ तोला कुटकल्क ८ तोला सेंधाकल्क ८ तोला तेल ६४ तोला कांजी ६४ तोला इन्होंको मिलाय कोमल अग्नि परि पकाय तेलको सिद्धकरै यह तेल खल्लीबात को व विषूचीको व पक्षाघात को व गृध्रसीको नाशै है॥ तक्र॥ विषूची ज्यादह बढ़ जावे तो तक्र पानी मिलाय पीने से किंवा दही पानी मिलायपीने से अथवा नारियल के जलको पीनेसे आराम होवे॥ पानी॥ विषूची में तृषा लगे अथवा ग्लानि हो तो लवंगका पानी अथवा जायफलका पानी अथवा नागरमोथाका पानी पकाय शीतल करि पियाने से आराम होवै॥ बिलंबिका व आलसिकाचिकित्सा॥ बिलंबिका में व आलसिकामें भी विषूचीनाशक औषध करै अलग चिकित्सा नहीं है॥ हस्तिकर्णयोग॥ एरंड की जड़, थोरमुला, पिपली कन्द इन्होंमें पानीको पकायपीनेसे विषूचिकानाशहोवै॥ निंबुरसयोग॥ नींबू के रसमें अमली को मिलाय पीने से विषूची को व

शोष को व कफको हरैहै अथवा सुहागाखार को दूधके संग पीनेसे विषूची व छर्दिको नाशैहै ॥ करंजादिकषाय ॥ करंजकीछाल निंबु उंगाकीजड़, गिलोय, कूड़ाकीछाल, अर्जुनवृक्षकी छाल इन्हों का काढ़ाकरि पीनेसे वमन लागि विसूची को हरैहै ॥ उत्क्लेशलक्षण ॥ ग्लानि को प्राप्तहोइ अन्न शरीरके वाहर निकसे नहीं मुखमें पानी भरारहे ज्यादहथूके और हृदयमें पीड़ा होय येउत्क्लेशके लक्षणहैं ॥ कटुत्रयरस ॥ शुंठि, मिरच, पीपल, जीरा, हींग, सेंधानोन, गन्धक इन्होंको नींवूके रसमें खरलकरि खानेसे विषूची को व उग्र विलंबिकाको हरै है ॥ व्योषादिअंजन ॥ शुंठि, मिरच, पीपल, करंजफल दारु हल्दी हलदी, बिजौराकीजड़ इन्होंको पीसि गोलीबांधि छायामें सुखावै पीछेगोलीको पानीमेंघिस नेत्रोंमें अंजन करनेसे विषूचिका जावै ॥ अपामार्गांजन ॥ उंगाके पत्ते, मिरच बराबरभागले घोड़ाकी लारमें पीसिअंजनकरनेसे विषूचिको हरै ॥ विल्वादिअंजन ॥ वेलपत्र की जड़, शिरसकी जड़, करंजके बीज, तगर, देवदारु, त्रिफला, शुंठि, मिरच, पिपली, हलदी, दारुहलदी, ये सब समानभागले बकरा के मूतमें महीन पीस अंजन करने से सांप के विष को व लूता व बिच्छूके विषको व पेट रोगको व बिषूचीको व अजीर्णको व तापको हरैहै ॥ मन्दाग्नि ॥ अजीर्ण विषूचीका, अलसक में पथ्य, कफ के अजीर्णमें प्रथमवमन और पित्तकेअजीर्णको मलविरेचन और वायु के में स्वेदन और भाफ, तथा हितकारी पथ्यापथ्य वस्तु अनेक प्रकारके व्यायाम, दीपन तथा हलके पदार्थ, पुरानीमूंग, लालधान विलेपी, खीलोंका मांड़, मूंगका पानी, मदिरा, और हरिण, मोर, शशा, लवा इन्होंका मांस और सब प्रकारकी छोटी मछली, शालिंचशाक, बेंतकी कोपल, बथुआ, कोमलमूली, लहसुन, बड़ा कुह्मड़ा, नवीन केलेकाफल, अदरक, पसरनी, काकमाची, चूकेका शाक, विसखपरेका शाक, आंवले, नारंगी, अनारखार, पित्तपापड़ा अमल, वेत, जंभीरीनींबू बिजौरा, शहत, नोनीघृत, मट्ठा, कांजी, तुषोदक, धान्याम्ल, कडुआ तेल, हींग, और नोनके साथ अदरख, अजवाइन, मिरच, मेथी, धनियां, जीरा, दही, पान, गरम पानी कडुवे

तथा चिरपरेरस ये सब मन्दाग्नि और अजीर्णमें पथ्यहैं॥ अपथ्यम्॥ बिरेचन,विष्ठा मूत्र, वायु इन्होंके वेगोंका रोकना अनेकबार अथवा बहुत खाना जागना विषम भोजन रुधिरका निकलना शमीधान्य कहे फलीमें उत्पन्न अन्न जैसे उड़द,मूंग,मटर,आदि मछली मांस पोइशाक, जलकापान, पिसाअन्न, जामुन सबप्रकारके कन्दमिलाय लड्डू, दूधकी लाट अर्थात् फटा दूधका खोया, पन्ना, ताड़फल की मींगी, छोटा ताड़काफल, स्नेहन, बुराजल, बिरुद्ध तथा अहित भोजनका खाना तथा बिरुद्ध अहित पीना विष्टंभी तथाभारीबस्तु ये सब अजीर्ण में अपथ्यहैं॥ नित्यादित्यरस॥ बच नागबिष, तांबा अभ्रक,लोह,पारा,गन्धक,येसबसमानभागले इन्होंको चीताकेरसमें ७ भावना देवै यह एक माशा खानेसे बवासीर के मस्साको व मल बंधको नाशै इसरसको गौके घृतकेसङ्ग खावै यह नित्यादित्यरसहै दूसराप्रकार॥ पाराभस्म, अभ्रक, लोह, तांबा, बचनागबिष, गन्धक ये सब समानभागले और इन सबों के बराबर भिलावां ले इन्होंकाचूर्णकरै पीछे इन्होंको जमीकन्दके रसमें ३ दिनतक खरल करै यह रस १ माशा घृतके सङ्ग खानेसे बवासीर को व हाथ पैर नाभि, मुख, गुदा, वृषण, इन्होंकी सूजन को व हृदय व पसुली के शूलको व असाध्य अर्शको व अजीर्णको यह नित्योदितरस नाशैहै॥ अर्शकुठाररस॥ शुद्धपारा १भाग,शुद्धगन्धक २ भाग,लोह, व अभ्रक भस्म६भाग बेलफल१भाग चीता१भाग शुंठि मिरच पीपल१ भाग, जयपाल १ भाग हरीतकी १ भाग सुहागाखार, जवाखार, सेंधालोन ये मिलके ५ भाग, इन्होंका चूर्णकरि ३२ भाग गोमूत्रमें पकावै पीछे थोहरका दूध ३२ तोला मिलाय फेर पकावै जब जला जलिकर पिंडीरूपहो तब २ माशे की गोली बनाय खानेसे बवासीरको हरै यह अर्शकुठार रस है॥ षडाननरस॥ बैक्रान्तिमणि, तांबा, अभ्रक, गन्धक, पारा, कांत इन्होंको समान भागले ३ रत्ती खानेसे बवासीर को नाशैहै॥ पीयूषरस॥ शुद्धपारा, षड्गुण गन्धक जारणला काच पात्रमें बालुकायंत्रमें बनायाहुआ, सोनाकी भस्म लोहा का भस्म, अभ्रकभस्म, गन्धक ये सब बराबर भागले जमीं

कन्दके रसमें खरलकरि ७ भावनादेइ पीछे जमालगोटा की जड़ के रसमें ७ भावना देइ पीछे शुंठी के रसमें ७ भावना देइ पीछे काकमाची के रसमें ७ भावना देइ पीछे मदिरामें ७ भावना देइ पीछे भृंगराज के रसमें ७ भावनादेइ पीछे आकके रसमें ७ भावना देइ पीछे चीताके रसमें ७ भावनादेइ गोलाकरि शाली अन्नकी राशिमें ३ दिनदवाय काढ़ै पीछे चूर्णकरि १ माशा देने से उग्रबवासीर को व संग्रहणी को व शूलको व पांडुको व आम्लपित्त को व क्षयी को नाशै शहद में मिलायदेवै और यहरस छःमहीने निरंतर खानेसे और यथारोग अनुपान करनेसे सम्पूर्ण रोगोंको हरैहै और इसरसको २ वर्षतक सेवन करने से बुढ़ापा हटै और इसका खाने वाला खटाई को और स्त्री संगको त्यागै और यह सेवन करने से पुष्टि, कांति, वीरज इन्होंको बढ़ावैहै ॥ चक्रबंधरस ॥ पारा गंधकइन्हों को सफेद सांठीके रसमें ३ दिन खरल कराय पीछे तांबाकी भस्म मिलाय खरल करावै पीछे इन्होंको चीताके रसमें पीछे हरीतकीयों के रसमें पीछे भृंगराजके रसमें खरलकरै पीछे शुंठिके रसमें पीछे मिरचके रसमें पीछे पीपलके रसमें खरलकरि २ रत्ती देनेसे वायु के बवासीर को हरै और यह चक्रबंधरस के गंधक की पुटलगाय बरतनेमें सब रोगों को हरैहै ॥ पर्पटीरस ॥ पारा, गन्धक इन्होंकी कज्जलीकरि घृत मिलाय और दुगुनाबोल मिलाय लोहाके पात्रमें घालि अग्निपर चढ़ाय पातलकरि उतार केलाके पत्तामेंधरि ऊपर दूसरे केलाके पत्तासे ढकि पीड़नकरै यह पर्प्पटीरस रत्ती १२ खाने से सम्पूर्ण प्रकारकी बवासीरको व सूजनको व अतीसारको व छर्दिको व अंगकीपीड़ाको व तृषाको व ज्वरको व अरुचिको व अग्नि मंदताको व गुदापाकको व हियाकी शूलको हरैहै ॥ भल्लातकलेह ॥ चीता १६ तोला, त्रिफला १६ तोला, नागरमोथा १६ तोला, पिपलामूल १६ तोला, चवक १६ तोला, गुलवेल १६ तोला, गजापिपली १६ तोला, ऊंगाकीछाल १६ तोला, सहदेइजड़ १६ तोला, आजबला १६ तोला, पानी २००४ तोलेमें २००० भिलावेकोछेदि उसीमेंदेवै और पकाइ काढ़ाचतुर्थांशरक्खै लोहेके पात्रमें तीक्ष्ण लोहाकीभस्म

२००तोला, घृत ३२तोला, शुंठि४ तोला, मिरच४तोला, पिपली ४ तोला, त्रिफला४तोला, चीता४तोला, सेंधानोन ४ तोला, मणयारी नोन४तोला, शोरा४तोला, कालानोन ४ तोला, बायबिडंग ४ तोला बरधरा १६ तोला, तालमूल १६ तोला, जमींकन्द ३२ तोला इन्होंका चूर्णकरि पूर्वोक्तमें मिलाय शीतलहोनेपर शहद ३२ तोले मिलावे पीछे बरतनमें घालिरक्खै दिनका भोजनकालमें अग्निका बलाबल देखिके खावै यह बवासीरको व संग्रहणीको व पांडुको व अरुचिको व कृमिको व गुल्मको व पथरीको व अफाराको व शूल को नाशै और शुका सरीखे नेत्र होय और बली व पलितको नाशै यह रसायनहै इसके सेवनसे सबतरहके रोगनाशहोवैं १२१०॥

इतिश्रीबेरीनिवासकवैद्यरविदत्तविरचितनिघण्टरत्नाकर भाषायांअजीर्णविषूचिकादिप्रकरणम्॥

कृमिनिदान॥ प्रथम कृमिरोग २ प्रकारकाहै १ बाहिरली में २ भीतरली और बाहरलीको जन्मतो चारजगहहै। मलसूंउपजे लट १पसीने सूंउपजीजुम २ लीख ३ जमजूम४और इन्होंकेनामबीस २० हैं॥ बाह्यकृमिलक्षण॥ बाहिर के कृमि मलसे पैदा होतेहैं और तिलके सरीखे कृमि होवेहैं और वे केशों में व कपड़ों में रहते हैं वेकृमि सूक्ष्म रूपहो और वहुत पैरों वालेहों उन्हों को यूका व लीख कहतेहैं और दोनोंप्रकार के कृमिकोठा के रोगको व खाज को व गांठको पैदा करतेहैं॥कृमिकाकारण॥ अजीर्ण में भोजन करनेवाले को मीठा व खट्टा व द्रवरूप व पीठी व गुड़ इन्हों के खानेवालेके और व्यायाम कहेकसरत नहीं करनेवाले को और दिनमें शयन करने वाले के और बिरुद्ध भोजन करने वाले को कृमिरोग प्राप्त होवे है॥ पुरीषकफरक्तजकृमिकारण॥ उड़द पिठी अन्न, नोन, गुड़, शाक इन्हों के खाने से बिष्ठा में कृमि पैदा होतेहैं और मांस, उड़द, गुड़, दूध, दही, कांजी इन्हों के खाने से

कफोत्पन्नकृमि पैदाहोवेहैं औरविरुद्धअन्न, अजीर्णमेंअन्न, शाकभाजी इन्होंके खानेसे रक्तजकृमि पैदा होवेहैं ॥ पेटमेंकृमिवालेकेलक्षण ॥ ज्वरहो, रंग बदलजाय और शूलहो, हृदय में रोगहो औरग्लानि हो और भ्रमहो और अन्नमेंरुचि नहींहो और अतीसारहोयेपेटमें कृमिवालेके लक्षणहैं ॥ कफजकृमिलक्षण ॥ कफ से कृमि उत्पन्न हो आमाशयमें बढ़करि सब शरीरअंगोंमें प्रवेशकरे हैं और कितनेतो मोटी बध्नी सरीखे होवेहैं और कितनेक गिंडोआ सरीखे होवेहैं और कितनेक नाजके अंकुर सरीखे होवे हैं और कितनेक लम्बे व कितनेक सूक्ष्म रूप कृमिहोते हैं और इन्हों का रंग सफेद और कितनेक तांबाके रंग होवेहैं और ७ सात इन्हों के नामहैं अंत्राद १ उदरावेष्ट २ हृदयाद ३ महारुज ४ चुरव ५ दर्भकुसुम ६ सुगन्ध ७ ये नामहैं और ये सब नामों के अनुसार फल देतेहैं और ये कृमि का उपद्रव मुखसे पानीबहै और छर्दि हो और ज्यादाथुकथुकी हो और अन्न पचेनहीं और अरुचिहो औरमूर्च्छा, तृषा, अफरा, कृशपणा, सोजा, पनिस येभीहो हैं ॥ रक्तजकृमिलक्षण ॥ लोहूकीबहनेवाली शिरामें उपजे कृमि रक्तज सूक्ष्म रूपहों और पैरोंकरि वर्त्तित हों और इन्होंका रंग लालहो और कितनेक दोष नहीं और इन्हों के ६ नाम हैं केशाद १ रोमविध्वंस २ रोमद्वीप ३ उदुंबर ४ सौरस ५ मातर ६ ये नामहैं येसब जलदी कुष्ठ रोगको पैदा करेहैं ॥ पुरीषजकृमिलक्षण ॥ पक्वाशयमें पुरीषज कृमि उपजेहैं औरनीचेकेअंगोंमें जाइ प्रवेश करतेहैं बढ़िकरि डकारको और श्वासोश्वासकोवविष्ठाकी गन्धको पैदाकरेहैं और येकृमिशूलके सरीखे चारोंतरफसे गोलरूप व मोटेहोवेहैं कितनेक कालरंग व पीले व सफेद रंगके होवेहैंइन्हों के नाम ५ हैंककेरुक १ मकेरुक २ सौसुराद ३ मलूना ४ लेलिहा ५ ये नामहैं येसब विड्भेद को व शूलको वविष्टंभको व कृशताको व खरखरी तपनको व निस्तेज पनको व रोमहर्षको व मन्दाग्नि को व गुदामें खाजरोग को और मार्गगये पैदा करतेहैं ॥ कृमिचिकित्सा ॥ पुरीषज व कफज कृमियों की औषध इसी प्रकरण में कहेंगे और रक्तज कृमिकी औषध कुष्ठके औषध समान याने एक

सोहै और कृमिरोग वालेको निर्गुंडी आदिक घृतसे स्निग्ध करि पीछे बमन कराइ पीछे रेचन कराइ पीछे पिचकारी कर्मकरै और चावलोंकी पीठी, पिपली, सेंधानोन, बायबिडंग इन्हों को भोपनी के रसमें पोली बनाइ पकाइ शहद के संग खाने से कृमिको पातन करै अथवा हमेशह कटु व तिक्तरस भोजनकरनेसे कफको व कृमि कोनाशैहै और रुचिको उपजावे है और अग्निको दीपनकरैहै अथवा हरीतकी, आरतुपर्णी, गेहूं चून इन्हों की रोटी बनाइपकाइ शहद के संग खानेसे कृमिको नाशै॥ कृमिलेप॥ माशे३ पाराकोनागरपानकी बेलके रसमें खरल करै किंवा कालेधतूरा के रसमें खरल करै पीछे इसद्रव्यको कपड़ेपर लगाइ उसकपड़ाको मस्तक ऊपर ३ पहरतकबांधै इससे जूम व लीख शरीरसे झड़ैं यहनुसघा परीक्षा कियाहुआहै इसमें संशय नहींहै॥ यवागू॥ बायबिडंग, चावल, शुंठि, मिरच, पीपल, सहोंजनाकीछाल, तगर इन्होंके तक्रमें यवागू बनाइ कालानोन मिलाइखानेसे कृमिरोग नाशहोवै॥ त्रिवृतादिकल्क॥ निशोत, पलाश, पापड़ी, खुरासानीजमाइन, कपिला, बायबिडंग इन्हों के चूर्ण में बराबर का गुड़ मिलाइ खाने से तक्रके संग कृमिके कोटि गणको नाशै अथवा पलाशबीज के रसमें शहद मिलाइ पीनेसे अथवा इसीके कल्कको तक्रके संग खाने से कृमिरोग नाशहोवेहै अथवा निंबके पत्तोंके रसमें शहद मिलाइ पीनेसे अथवा धतूराके रसमें शहद मिलाइ पीनेसे कृमिजावैं अथवा वायविडंग, मनशील इन्हों का कल्क व गोमूत्र व सिरसमका तेल इन्होंको सिद्धकरि यहतेल १ दिनमेंलीखोंको व जूमोंको हरै॥ विडंगादितेल॥ वायविडंग, मनशील, गोमूत्र, निर्गुंडीरस इन्हों में तैलको सिद्धकरि मलनेसे लीखको व जूमको नाशै॥ धतूरपत्रतैल॥ धतूराके पत्तों के रसमें सिद्ध तैलके मलनेसे जूम नाशहोवेहैं॥ दाड़िमादिकाढ़ा॥ अनार की छाल के काढ़ामें तिलका तेल मिलाइ ३ दिन तक पीनेसे कोठा सेती कृमिगण को पातनकरै॥ नियमनादिकाढ़ा॥ निंब, त्रिफला, कूड़ाकीछाल, शुंठि, मिरच, पिपली, खैरकी छाल, निशोत इन्होंको गोमूत्रमें काढ़ाकरि ७ दिन पीने से कृमि

नाश करै ॥ विडंगादि ॥ वायविड़ंग के काढ़ामें वायविड़ंग का चूर्ण मिलाय पीनेसे कृमिरोगको हरै ॥ मुस्तादिकाढा ॥ नागरमोथा, मूषापर्णी, इन्द्रयव, देवदारु, सहोंजना इन्होंके काढ़ामें पिपली, वायविड़ंग चूर्ण मिलाय पीनेसेदोनों मार्गोंके रस्ते कृमियोंको काढ़ैहै ॥ खदिरादिकाढा ॥ खैर, कूड़ा, निंब, वच, शुंठि, मिरच, पिपली, त्रिफला, निशोत इन्होंका चूर्ण किंवा काढ़ा गोमूत्रमें पकाय ७ दिनतक देनेसे कृमिगणोंकोनाशैहै ॥ रस ॥ सिंगरफ १ तोला जैपाल६ माशे इन्होंका चूर्णकरि आक के रसकी १० भावना देवै पीछे एकमाशा रसको आककेदूध व हींगके साथदेवै यह कृमिगणकोनाशै ॥ पारदादियोग ॥ पारा, इंद्रयव, अजमान, मनशील, पलाशपापड़ा ये समान भागले चूर्णकरि देवडांगरीके रसमें १ दिनतक खरलकरि पीछे ४ माशे रसको मूषापर्णीका काढ़ा मिश्रीयुत के संगखावै यह कृमिके गणोंको नाशै है ॥ कृमिकुठार ॥ कर्पूर ८ भाग कूड़ाकीछाल १ भाग त्रायमाण १ भाग अजमान १ भाग वायविड़ंग १ भाग सिंगरफ १ भाग वचनागविष १ भाग केशर १ भाग पलसपापड़ी १ भाग इन्होंका चूर्णकरि भृंगराज के रसमें भावनादेय पीछेमूषापर्णी के रस में भावना देय पीछे ब्राह्मी के रसकी भावना देवै यह कृमि कुठार रस ३ रत्ती धतूरा के पत्ता के संग खानेसे सर्वप्रकारके कीरमोंको नाशकरै ॥ कृमिमुद्गररस ॥ पारा १ भाग गन्धक २ भाग अजमोदा ३ भाग बायबिड़ंग ४ भाग ब्रकायण ५ भाग पलसपापड़ी ६ भाग इन्हों का चूर्ण १ तोला शहद के सङ्ग खाने से कृमि रोगको हरै ॥ बिड़ंगादिचूर्ण ॥ बायबिड़ंग, सेंधानोन, हींग, हरीतकी कपिला, कालानोन, पिपली इन्होंके चूर्णको गरमजलके संगखाने से कृमिको व छर्दि को हरै ॥ दूसराप्रकार ॥ बायबिड़ंगका चूर्ण १ तोला वा ६ माशे शहदसे खानेसे कृमि कोटिगणों को हरै ॥ यवानीचूर्ण ॥ खुरासानी अजमान चूर्णको नागरपानके संग खानेसे अथवा नींबके रसको पीनेसे कृमिजाल नाशहोवेहै ॥ निम्बादिचूर्ण ॥ निम्ब, अजमोद खुरासानीअजमान, हींग ये समान भागले चूर्णकरि गुड़में मिलाय खानेसे जल्दी कृमि नाश होवेहै अथवा बायबिड़ंग, शुंठि, मिरच

पीपल इन्होंकाचूर्णसंयुक्त चावलका मण्डपीनेसे कृमिरोग नाशहोवे और जठराग्निवधे ॥ त्रिफलादिघृत ॥ हरड़,बहेड़ा, आमला, जमालगोटेकेबीज, निशोत, कपिला, गोमूत्र इन्हों में घृतको पकाइ खाने से कृमिरोग नाशहोवे ॥ विडंगघृत ॥ त्रिफला १६२ तोला बायबिडंग ६४ तोला और दीपनीयगण और दशमूल जिलनामिले और योग्यहो इन्होंका २०४८ तोलेपानीमें काढ़ा चतुर्थांश रक्खे पीछे ६४ तोला घृत और ६४ तोला सेंधानोन मिलाय पकाइ घृत को सिद्धकरै पीछे इसघृतको खांडमें मिलाय खानेसे सबप्रकारके कृमिरोगोंको नाशैहै,दृष्टांत । जैसे वज्र राक्षसोंको तैसे ॥सारनालयोग॥ कांजी, मूषापर्णी मिलाय पीनेसे किम्बा पलसपापड़ी तक्रसंग पीनेसे किम्बा हींग, अजमान को तक्रके संग पीनेसे कीरम नाशहोवैं भल्लातकयोग ॥ भिलावां को दही के संग खाने से किम्बा भिलावां अमली मिलाय खानेसे कृमिरोग नाश होवै ॥ विडंगादियोग ॥ बायविडंग किम्बा नींबके पत्ते किम्बा पलसपापड़ी इन्हों को अलग अलग शहद में मिलाय खाने से कृमि जावें ॥ पलाशबीजयोग ॥ पलाशके बीज रत्ती ३ थोहर के दूध के संग खाने से कृमि रोग जावे ॥ खुरासानीओवाकल्क ॥ खुरासानी अजमाइन को बासी पानीमें पीस कल्ककरि खानेसे पेटके कोठाका कृमिजालको नाशै ॥ निशोत्तरादियोग ॥ सफ़ेद निशोत को कांजीमें पीस खानेसे किम्बा टेमूरणीको गोमूत्रमें पीस खानेसे किम्बा मनशीलको कडुवा तेलमें पीसि मलने से कृमिरोग का नाशहोवे ॥ पिप्पल्यादिचूर्ण ॥ पिपली ८ तोला पिपलामूल ८ तोला सेंधानोन ८ तोला स्याहजीरा ८ तोला चब्य ८ तोला चीता ८ तोला तालीसपत्र ८ तोला नागकेशर ८ तोला कालानोन ५ तोला मिरच ४ तोला शुंठि ४ तोला जीरा ४ तोला अनारकीछाल १६ तोला अम्लवेतस ८ तोला इन्हों का चूर्ण करि खावे यह पिपल्यादि गणनाशहुआ अग्निको फेरजगावे और बवासीरको व संग्रहणीको व गुल्मको व पेटकेरोगोंको व भगंदरको व कृमिको व खाजको व अरुचिकोनाशै और इसचूर्णको मदिरा के संग किंवा गरमपानीकेसंग खावै और इसचूर्णके उपरांतआमशोथ

का नाशकरनेवाला औषध और नहीं है ॥ आंखुपर्ण्यादिचूर्ण ॥ मूषा-पर्णीको कूटि पीठीमें मिलाय पुआबनाइखानेसे कृमिको नाशै इसके ऊपर कांजीको पीवे ॥ सुवर्चिकादिचूर्ण ॥ साजीखार,हींग,जावित्री,वायविडंग,केशर,पिपली,चीता,शुंठि,अजमान,पिपलामूल,नागरमोथा इन्होंकेचूर्ण को तक्रकेसंगखावै यह कृमिकोंटिगणकोहरै है ॥ निम्बादि चूर्ण ॥ निम्बु,कूड़ा,वायविडंग,हींग इन्होंकेचूर्णमेंनिम्बकेपत्ते व अज-मोदमिलायशहदकेसंगखानेसेकृमिरोगकोनाशैहैइसमेंसंशयनहींहै॥ तैल ॥ चीता, जमालगोटा की जड़, कड़ी तोरई इन्हों के कल्क में कड़ुवा तैलको पकाय मलनेसे कृमि रोग को हरै अथवा बायबिड़ंग शिलाजीत, गोमूत्र इन्हों में तैलको पकाय शरीरमें मालिश करने से जूम व लीख नाश होवेहैं ॥ कपिलाचूर्ण ॥ कपिलाकाचूर्ण माशा८ गुड़में मिलाय खानेसे पेटके कृमियोंको नाशै ॥ निंबादिरस ॥ निंबके पत्तों के रसमें शहद मिलाय पीनेसे किम्बा धतूराके पत्तोंके रसमें शहद को मिलाय पीने से कृमि रोग नाश होवे है ॥ हरीतकीचूर्ण ॥ हरीतकी, हलदी, कालानोन ये समान भाग ले चूर्ण करि इसको गडूंभाकेरसमें भावनादेइ खानेसे कृमिके समुदायकोनाशै॥ साबित्र वटक ॥ पलाशबीज८तोला लोहभस्म८तोला हड़४तोला गिलोय ४ तोला बहेड़ा ४ तोला आंवला ४ तोला करंज २ तोला चव्य २ तोला शुंठि मिरच पीपल २ तोला चीता२तोला अजमाइन२तोला वायबिड़ंग२तोला इन्होंकाचूर्णकरै पीछे तिलकातैल८तोलात्रिफला कारस६४तोला खांड़१२८तोला इन्होंकोपकावैजबतककड़छीचिपे तबतकपीछेदालचीनी,तमालपत्र,इलायची,नागकेशर इन्होंकाचूर्ण मिलाय गोली बांधे ये साबित्र गोली खानेसे अग्नि को व बल को वढ़ावेहैं और कृमि रोग को व अग्निकी मन्दता को व पाण्डु को व बवासीर को व भगंदर को व बिषको व घाव को व कामला को व दुर्बल पनाको व गुल्म को व शोथको व उदर रोग को नाशैहै और बल को व उमर को बढ़ावे है और गुद रोग को व प्रमेह को हरै है और नेत्रों को हितहै और इस पर स्निग्ध भोजन करै और बात घामको सेवै ॥ अष्टसुगन्धधूप ॥ लाख, भिलावाँ, धूप, सफ़ेद बिष्णु-

कांताकी जड़ अर्जुनवृक्ष का फल व फूल, बायबिड़ंग, राल, गूगल इन्हों की धूप देने से सांप, ससे, डांस, बारीक कीड़े मच्छड़ ये सब शान्त होवेहैं॥ ककुभादिधूप॥अर्जुनवृक्षके फूल,बायबिड़ंग, पृष्ठिपर्णी भिलावाँ, बाला, कलहारी, राल, चन्दन, कूट इन्हों की धूप देनेसे शय्याके खटमलों को नाशै और यहीधूप शरीरके देनेसे जूओंको व लीखों को नाशै॥ कृमिरोगमेंपथ्य॥ आस्थापन तथा शिरका बिरेचन धूमा, कफनाशक बस्तु, शरीर का शोधन, पुराने साठीधान तथा धानलाल, परवर, बेतकीकोंपल, लहसुन, बथुवा, चीता, आक के पत्ते, नयाकेला, कटेली के फल, चिरपरीबस्तु,तालीसपत्र, मूषाका मांस, बायबिड़ंग, नींबके पत्ते, हड़, तिल तथा सरसों का तैल कांजी, खट्टा, पानी, तुषोदक,शहद,पकाहुआ ताड़काफल,भिलावां गोमूत्र, घृत, दूध, हींग, खार अजमोद, कत्था, कूड़ा, जंबीरीनींबू का रस, स्याहजीरा, अजमान, देवदारु, अगर, सीसमका खार चिरपरे तथा कडुवे कसायले रस ये सब कृमि रोगवालेको पथ्यहैं॥ अथअपथ्य॥ बमन और बमनके बेगोंको रोकना, बिरुद्धखाना पीना दिनमें सोना, पतली बस्तु पिसाहुआ अन्न, अजीर्णमें भोजन,घृत उड़द, दही, पत्रशाक, दूध, मांस, खटाई, मीठारस जो कृमि रोग को दूर किया चाहे तो इन ऊपर लिखीहुई बस्तुओंको त्यागकरे॥ दूसरा प्रकार॥ शीतलपानी, मीठारस, दूध, दही, खार, घृत, कांजी पत्तोंवाले शाककीभाजी इन्होंको कृमिवाला त्यागे॥ बिशालादिधूप॥ कडु बृन्दाबन के पके हुये फलको गरम तवा पर गेरि धूप लेने से दांतों के कीडे झड़पड़ैं॥

इतिश्रीवेरीनिवासकवैद्यरविदत्तविरचितनिघंट
रत्नाकरभाषायांकृमिप्रकरणम्॥

अथपाण्डुकर्म्मविपाक॥ देवताके द्रव्यको व ब्राह्मणके द्रव्यको हरै वह पाण्डुरोगी होवै॥ प्रायश्चित्त॥ वह पुरुष कृच्छ्र चान्द्रायण व कृच्छ्राति कृच्छ्र चान्द्रायण व्रतकरै और कोहलाको अग्नि में होम करि पीछे सुवर्ण का चांद व अच्छे कपड़ों का शक्ति के अनुसार दान करै इस कर्म्मसे पाण्डुरोग शान्त होवै शिरकी पीड़ा सहित पाण्डुरोग हरै जो अग्निष्टोमादि कर्म्म को आरम्भन करि समाप्त न करै उसके कपाल शूलयुक्त पाण्डुरोग होवै॥ प्रायश्चित्त॥ कृच्छ्र चान्द्रायण व कृच्छ्राति कृच्छ्र चान्द्रायण व्रतकरि अन्तमें मिष्ठभोजनसे १०० ब्राह्मणों को भोजन करवावै॥ पाण्डुरोगनिदान॥ प्रथम पांडु रोग पांच प्रकार सूं उपजैहै वायुको १ व पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४ मट्टी खानेसे ५॥ निदानपूर्वकसंप्राप्ति॥ घनाखेद करनेसे व घनी खटाई खानेसे व दिनके शयनसे और घनी तीखी वस्तु को खानेसें वातपित्त कफ मनुष्य के लोहू को बिगाड़ि करि शरीरमें त्वचा को पीली करदे हैं॥ पूर्वरूप॥ त्वचा फटने लगजाय अंगमें पीड़ा हो और माटी खानेकी इच्छारहै आंखोंकेऊपर सूजन होवे और मलमूत्र पीलारङ्ग हो, अन्नपचे नहीं तबवैद्य कहै कि तेरे पाण्डु रोग होगा सो इसको लौकिकमें पीलिया कहै हैं॥ पाण्डुरोगचिकित्सा॥ साध्यपाण्डु रोगीको स्निग्ध करि बमनकरै पीछे रेचन करवावै और हड़का चूर्ण घृत, शहद युत खाने से आराम हो अथवा हलदीचूर्णयुत घृत प्यावै अथवा त्रिफला, हिंगण इन्हों में सिद्ध घृतप्यावै अथवा रेचन देवै और बायका पाण्डुमें स्निग्धकर्म करै और पित्तके पाण्डु रोग में तिक्त व शीतल उपचारकरै और कफके पाण्डुमें कडुवा, रूखा, गरम उपचारकरै और मिश्र पाण्डुमें मिश्र उपचार करै॥ वातपाण्डुनिदान॥ जिसके त्वचा, मूत्र नेत्र रूखे हों अथवा काले अथवा लालहों और शरीरमें कम्पहो और अफरा हो और भ्रमादिक हों ये लक्षणबायुके पाण्डु रोगके हैं॥ मण्डूराद्यरिष्ट॥ शुद्धमण्डूर २०० तोला लोहा के टुकड़े तिल सरीखे २०० तोला पुरानागुड़ २९२ तोला जलबेत ८ तोला चीता ८ तोला पिपली १६ तोला बायबिड़ंग १६ तोला हड़ ६४ तोला बहेड़ा

६४ तोला आमला ६४ तोला पानी १०२४ तोला इन्होंको बर्त्तन में घालि १५ दिनतक अन्नके कोठामें धरै पीछे अरिष्टका प्रमाण माफ़िक़ पीवै यह दोनों द्वारों से स्रावद करि पाण्डु रोग को नाशै है और कृमिको व बवासीरको व कुष्ठको व कासको व श्वासको व कफके रोगोंको व सब प्रकारके पाण्डु रोगोंको हरैहै ॥ पित्तकापाण्डु लक्षण ॥ मल मूत्र नेत्र जाके पीलेहों शरीर में दाहहो और तृषा व दाह व ज्वरभीहो और मल पतला होजाय और शरीर की त्वचा पीली होजाय ये लक्षण पित्तके पाण्डुके हैं आमलाका रस स्वच्छ १०२४ तोला इसको मन्दमन्द अग्निमें पकाय येऔषधगेरै पिपली ६४ तोला मुलहठी ८ तोला मुनक्का दाख ६४ तोला शुंठि ८ तोला बंशलोचन ८ तोला खांड़ २०० तोला मिलाय घनरूपकरि शहद ६४ तोला मिलाय यह पाण्डुको व हलीमकको व कामला को हरै है ॥ दुग्धयोग ॥ लोहके बर्त्तनमें दूध को गरम करिपीवै ७ दिन तक और पथ्यसेरहै तो पाण्डुको व क्षयीको व संग्रहणीको हरैहै ॥ कफ-पाण्डुलक्षण ॥ मुखसे थूक निकले शरीर में सूजन हो और तन्द्राहो आलस्य आवै और शरीर भारी हो, त्वचा, नेत्र, मूत्र सफ़ेद रङ्ग होयँ तो कफ को पाण्डु रोग जानिये ॥ दशमूलादिकाढ़ा ॥ दशमूल शुंठि इन्होंका काढ़ा कफयुक्त पाण्डुको व ज्वरको व अतीसारको व सूजनको व संग्रहणीको व कासको व अरुचिको व कण्ठरोगको व हृद्रोगकोहरै ॥ नागादियोग ॥ नागरपान शुंठि लोहाकी भस्म इन्होंको मिलाय खानेसे अथवा पिपली, हड़, लोहभस्म, शिलाजीत इन्होंको मिलायखानेसे अथवा गुग्गुलको गोमूत्रकेसङ्ग खानेसे कफका पांडु रोग नाशहोवै ॥ लोहभस्मयोग ॥ अति उत्तम लोहभस्म, घृत, शहद मिलाय खानेसे पांडुरोगको व कामलाकोनाशै ॥ मधुमण्डूर ॥ लोहका कीट ६४ तोला त्रिफलाकेकाढ़ामें १ पहरतकखरलकरि पीछेगजपुट में दो पहरतक पकाय इसीतरह २१ बारपुटदेवै पीछे गोमूत्रमें २१ पुटदेवै पीछे गवार पट्ठाके रसमें २१ बार पुट देवै ऐसे मधुमण्डूर सिद्धहोवेहै इसमें ६४ पुटदीजाती हैं पीछे शुंठि, सफ़ेद मुसली, गिलोय, शतावरि, गोखुरू इन्होंके चूर्णको मिलाने से पञ्चामृत कहे हैं

इसको शहद व पिपलीके चूर्णकेसङ्ग खानेसे पुरातनपाण्डुको हरै है और लोहूको बढ़ावे है और अनुपानोंके सङ्ग अनेक रोगोंको हरैहै॥ मण्डूरवटक॥ देवदारु, नागरमोथा, दारुहल्दी, शुंठि, मिरच, पिपली चवक, चीता, पिपलामूल, सोनामाखीकीभस्म, वायविड़ंग; त्रिफला येसब समानभागले और मण्डूरभस्म २भाग इन्होंको आठसूत्रोंमें पकाय पीछे गोलीबांधि गोके तक्रकेसङ्ग खानेसे कामलाको व पांडु रोगको व प्रमेहको व ववासीरको व सोजाको व कुष्ठको व कफरोग को व उरुस्तंभको व अजीर्णको व प्लीहाकोनाशै और आठसूत्रयेहैं गौका १ भैंसका २ बकरीका ३ भेंड़का ४ गधाका ५ घोड़ाका ६ ऊँट का ७ हाथीका ८ ऐसेहैं॥ मंडूरलवण॥ लोहकेकीटको अग्निकेसमान लालरङ्गकरि वारम्वार गोमूत्रमें बुझावे पीछे सेंधानिमक वरावर भाग मिलाय बहेड़ाकी अग्निसे पकावै पीछे इसको तक्रकेसङ्गअथवा शहदकेसंग खानेसे पांडुरोगको हरैहै॥ सन्निपातपांडुलक्षण॥ ज्वरहो, अरुचिहो, हियादूखै, छर्दिहोवै, प्यासहोवै और वलजातारहै इन्द्रियोंका ऐसा त्रिदोषका पांडुरोगी त्यागना वैद्योंकोयोग्यहै॥ सन्निपात पांडुनिदान॥ नानाप्रकारके अपथ्य अन्नको भक्षण करने से मनुष्यके शरीरमें वातादिदोष कुपितहोके अतिभयंकर सन्निपातके पांडुरोगको पैदाकरै है॥ असाध्यलक्षण॥ नेत्रगोलक, कपोल, भृकुटी पैर, नाभि, लिङ्ग इन्होंमें सूजनहो और कोठा में कृमि पड़िरक्त व कफयुत मलद्रवै वह असाध्यहै और पांडुरोग पुरानाहो और आप बढ़िजावै और शरीरकेअंगोंमेंसूजनहो और सबपदार्थपीलेरङ्गदीखै और मलथोड़ा व हरा व कफरूप और बँधाहुआ द्रवै और गरीब होजाय और शरीरमेंसफ़ेदाईज्यादाहो औरछर्दि, मूर्च्छा, तृषा येभीहों ऐसा पांडुरोगी असाध्यहै॥ दूसराप्रकार॥ जिसरोगीका लोहू ऊपर नीचेके अङ्गोंमें चलाजाय तब शरीर सफ़ेदरङ्ग होजाय और दन्त नख, नेत्र ये जिसके सफ़ेदरङ्गकेहों और सबपदार्थ सफ़ेदरङ्ग दीखै वह पांडु रोगी निश्चय मरै॥ तीसराप्रकार॥ जिसके बाहु, जंघा शिर इन्होंमें सूजन हो और मध्य कहे बीचका देह दुर्बलहो ऐसा पाण्डु रोगी असाध्य होवैहै। और जिसके बाहु, जांघ, शिर ये

दुर्बलहो और बीच के शरीर में सूजनहो और गुदा में, लिङ्ग में अण्डकोश में सूजनहो और अंधेरी आवै और मृतप्राय हो अथवा ज्वरहो, अतीसारहो ऐसे पाण्डु रोगीको वैद्य चिकित्सा नकरै और जो इलाज करै तो यश मिलै नहीं ॥ त्रिफलादिलेह ॥ हड़ १ भाग बहेड़ा १ भाग, आमला १ भाग, शुंठि १ भाग, मिरच १ भाग, पिपल १ भाग, चीता १ भाग, बायबिडङ्ग १ भाग, शिलाजीत ५ भाग, चांदीभस्म ५ भाग, मंडूर ५ भाग, लोहभस्म ८ भाग, सोनामाखी ८ भाग इन्होंको कूटि चूर्णकरि शहद मिलाय लोहा के बर्त्तनमें घालि धरै पीछे १ तोला रोज खावै अग्निका बलदेखिकै और यह चूर्ण जीर्ण होने पर भोजनकरै और इसपर कुलथी, काकमाची, कपोत का मांस इन्होंको बर्जिदेवै यह पाण्डुरोग को व विष को व कासको व श्वासको व क्षयीको व राजयक्ष्माको व विषमज्वरको व कुष्ठको व पेट के रोगको व प्रमेहको व सूजनको व अरुचि को व मृगीरोगको व कामलाको व गुदाके रोगोंको नाशैहै ॥ फलत्रिकादिकाढ़ा ॥ त्रिफला गिलोय, बासा, कटुकी, चिरायता, निम्बछाल इन्होंके काढ़ा में शहद मिलाय पीनेसे पाण्डु को व कामलाको हरै ॥ पुनर्नवादिकाढ़ा ॥ सांठी, निम्ब, कडूपरवल, शुंठि, कटुकी, गिलोय, दारुहलदी, हड़ इन्हों का काढ़ा सर्वांगकी सूजनको व पेटके रोगको व पाण्डुके रोगको व स्थूलताको व मुखसे पानीपड़ना को व कफके रोगको हरैहै ॥ बासादिकाढ़ा ॥ बासा, गिलोय, निम्ब, चिरायता, कटुकी इन्हों के काढ़ा में शहद, घृतमिलाय पीनेसे कामलाको व पाण्डुरोगको व रक्तपित्त को व हलीमकको व कफरोगको हरैहै ॥ दार्व्यादि ॥ दारुहलदी, दालचीनी, माखीभस्म, पिपलामूल, देवदारु इन्होंको प्रत्येक आठआठ तोले लेवै मंडूर १६ तोला इसको महीन पीसि आठगुणा गोमूत्र में पकाय पूर्वोक्त औषध मिलाय तोला भरकी गोलीबांधि तक्र के सङ्गखावै और जीर्णहोनेपर भोजनकरै येमंडूरबटक पाण्डुरोगीको हितकारी है और कुष्ठको व सूजन को व उरुस्तंभको व कफरोगको व बवासीरको व कामला को व प्रमेहको व प्लीहाको नाशैहै ॥ किराताद्मिण्डूर ॥ चिरायता, देवदारु, दारुहलदी, नागरमोथा, गिलोय

कटुकी,परवल,धमासा,पित्तपापड़ा,निम्ब,शुंठि,मिरच,पिपली,चीता हड़, बहेड़ा, आँवला,वायबिड़ङ्ग,ये समान भागलेवै इन सबोंके समान लोहाभस्मले मिलाय घृत शहद में गोली बांधै अनुपान से खावै ये गोली पांडुको व हलीमकको व सूजनको व प्रमेहको व संग्रहणीको व श्वासको व कासको व रक्तपित्त को व बवासीर को व उरुग्रहको व आमबातको व घावको व गुल्म को व कफको व बिद्रधीको व सफ़ेद कुष्ठको नाशैहै ॥ अयादिमोदक॥ लोह भस्म, तिल शुंठि,मिरच,पिपली, बड़बेरीफल ये समान भागले और इनसबोंके समान सोनामाखी भस्मले इन्होंको मिलाय शहद में गोली बांधि खानेसे दारुण पांडुरोगको हरै ॥ पांड्वरिरस॥ पारा,गन्धक,अभ्रक भस्म,लोहभस्म ये समानभागले चूर्णकरि इसको कुमारपट्ठाके रस की ३ पुट देइ यह प्रांड्वरिरस रत्ती १२ खानेसे पांडु रोग को व कामलाको नाशैहै इसमें संशयनहींहै यहधन्वन्तरिकामतहै ऐसेजानो ॥ पुनर्नवादिवटक॥ सांठी ४ तोला निशोत ४ तोला शुंठि४तोला मिरच ४ तोला पिपली ४ तोला बायबिड़ङ्ग ४ तोला देवदारु ४ तोला चीता ४ तोला कूट ४ तोला हल्दी ४ तोला दारुहल्दी ४ तोला हड़४तोला बहेड़ा ४ तोला आँवला४ तोला जमालगोटाकी जड़४तोला चबक ४ तोला कूड़ाकेबीज ४ तोला कटुकी ४ तोला पिपलामूल ४ तोला नागरमोथा ४ तोला काकड़ासिंगी ४ तोला सौंफ ४ तोला कायफल ४ तोला मण्डूर ८ तोला इसको आठ गुणा गोमूत्रमें पकाय गुड़ सरीखा पाक बनावै पीछे गोली बांधि खावै तक्रके सङ्ग यह पुनर्नवादि मण्डूर बटक अश्विनीकुमारों का रचाहै यह पाण्डुको व कामलाको व हलीमकको व श्वासको व कास को व क्षयको व ज्वरको व सूजनको व पेटके रोग को व शूलको व प्लीहाको व आध्मानको व बवासीरको व संग्रहणीको व कृमिको व बातरक्तको व कुष्ठको सेवन करनेसे नाशैहै ॥ लोहासव॥ लोहभस्म १६ तोला शुंठि १६ तोला मिरच १६ तोला पिपली १६ तोला हड़ १६ तोला बहेड़ा १६ तोला आँवला १६ तोला अजमोद १६ तोला बायबिड़ंग १६ तोला नागरमोथा १६ तोला चीता

१६ तोला धौकेफूल ८० तोला इन्होंका चूर्णकरि शहद २५६ तोला मिलाय और गुड़ एक तोलाभर मिलाय और पानी २ द्रोण तोलभर मिलाय इसको घीके चीकने बर्त्तन में घालि १ मास तक धराराखै पीछे इस लोहासवको पीने से पांडुरोगको व सूजन को व गुल्मको व पेटके रोगों को व बवासीर को व कुष्ठको व प्लीहा को व खाजको व कासको व श्वासको व भगंदरको व अरोचक को व संग्रहणी को व हृद्रोगको नाशकरै है ॥ गोमूत्रलोह ॥ लोहके चूर्ण को ७ रात्रितक गोमूत्र में भिगोइ पीछे दूधके संग खाने से पांडुरोग नाशहोवे ॥ गोमूत्रसिद्धमंडूर ॥ गोमूत्रमें मंडूरको पकाइ पीछे गुड़के संगखाने से पांडुरोगको व शूलकोनाशकरै ॥ नवायसादिचूर्ण ॥ चीता हड़, बहेड़ा, आँवला, नागरमोथा, बायबिड़ंग, शुंठि, मिरच, पिपली ये समान भागलेवे और ९ भाग लोहकी भस्म इन्हों को मिलाय शहद घृतके संग अवलेह करि खावे ऊपर गोमूत्र अथवा तक्रका पानकरै यहपांडु रोगको व सन्निपातको व भगंदर को व सोजा को व कुष्ठको व पेटके रोगको व बवासीर को व मंदाग्नि को व अरुचि को व कृमिरोगको नाशै है ॥ दूसरानवायसचूर्ण ॥ शुंठि, मिरच, पिपली हड़, बहेड़ा, आँवला, नागरमोथा, वायबिड़ंग, चीता, ये सम भाग ले और लोह चूर्ण ९ भागले इन्हों को कूटि चूर्ण करि घृत शहद में मिलाय खानेसे, पांडुरोगको व हृदयरोगको व बवासीर को व कामलाको हरैहै और इस चूर्णको गोमूत्र संगपीने से बायुकापांडुरोग नाश होवै है और सूजन को व हृद्रोगको व उदर रोगको व कृमिरोगको व कुष्ठको व भगंदरको व अग्निमंद को व बवासीर को व अरुचिको नाशैहै और इसी चूर्णको अदरखके अर्क के संगखावे तो कफके रोग नाश होवैं इसकी मात्रा १ रत्ती से लगाय ९ रत्ती तक खावे अथवा १८ रत्ती चूर्णको घृत शहदके संग मिलाय तक्र के संगखावे पांडुरोग नाशहोवै ॥ लोहादिचूर्ण ॥ लोहभस्म, शुंठि, मिरच पिपली, कंकोल, तिल, ये समान भागले और इनसबोंके समानभाग सोनामाखी की भस्मले मिलाय शहद युतकरि तक्रके संगखाने से पुराना पांडुरोगको हरै है ॥ शिलाजीतादियोग ॥ शिलाजीत, शहद,

बायविड़ंग, घृत,हरीतकी,खांड़,ये बराबर भागले चूर्णकरै पीछे १५ दिनतक खानेसे दुर्बलदेहवाला चंद्रमा पूर्णमासीकेसरीखा होजाय मंडूरवज्रवटक ॥ पिपली,पिपलामूल, चव्यक,चीता,शुंठि,मिरच,देवदारु,हड़,बहेड़ा,आंवला,बायविड़ंग,नागरमोथा येसमभागले औरइन सबों से दुगुना मंडूरले पीछे इन्हों को आठगुणा गोमूत्र में पकाय गोलीबांधे १ तोला भरकी पीछे तक्रके संगखाने से पांडुरोग को व अग्निमंदताको व अरुचिको व ववासीरको व संग्रहणीको व सूजन को व उरुस्तंभको व हलीमकको व कृमिको व प्लीहाको व उदररोग को व गलरोगको नाशै है ॥ हंसमंडूर ॥ मंडूरका चूर्ण करि आठगुना गोमूत्रमें पकावै पीछे पिपली ४ तोला पिपलामूल ४ तोला चव्यक ४ तोला चीता ४ तोला शुंठि ४ तोला देवदारु ४ तोला नागरमोथा ४ तोला मिरच ४ तोला पीपल ४ तोला हड़ ४ तोला बहेड़ा ४ तोला आंवला ४ तोला बायविड़ंग ४ तोला इन्होंकाचूर्णकरि पूर्वोक्त पाकमें मिलावै पीछे १ तोला रोज़ तक्र के संग खावै ऊपर पथ्य चावल तक्रलेवै यह पांडुरोगको व सूजनको व हलीमक कोव उरुस्तंभको व कामलाको व ववासीरको हरै है ॥ सिद्धमंडूर ॥ मंडूर ३२ तोला गोमूत्र २५६ तोला एकत्रकरिपकावै पीछे सांठी १ तोला निशोत १ तोला शुंठि १ तोला मिरच १ तोला पिपली १ तोला बायविड़ंग १ तोला देवदारु १ तोला हल्दी १ तोला दारुहल्दी १ तोला पोहकरमूल १ तोला चीता १ तोला जमालगोटाकी जड़ १ तोला चव्यक १ तोला हड़ १ तोला बहेड़ा १ तोला आँवला १ तोला इन्द्रयव १ तोला कटुकी १ तोला पिपलामूल १ तोला नागरमोथा १ तोला अतीश १ तोला इन्हों का चूर्णकरि मंडूरके पाक में मिलाय १ तोला भरकी गोली बांधे यहसिद्धमंडूरबटक पांडुरोग को व सूजनको व उदररोगको व अफाराको व शूलको व कृमिरोग को व गुल्मको व सर्वरोग मात्र को नाशै है इस में सन्देह नहीं है ॥ अमृतहरीतकी ॥ शतावरि २८ तोला भंगराज २८ तोला सांठी २८ तोला कुरंटक २८ तोला इन्होंका चूर्णकरि चौगुणापानी मेंकाढ़ा करि चतुर्थांशरक्खै और कपड़ा माहँ छानै पीछे हड़ १४४० तोला

मिलाय दूध १२० तोले मिलाय पकावे पीछे हड़ों को कांटासे वेध करि गिरीको काढ़े पीछे पारा २४ तोला, गंधक २४ तोला पात्रमें क्षणमात्र पकाइ पात्रको अग्नि से उतारि द्रव्यको पलटा से चलाइ कठिन रूप करि चूर्णकरि पीछे गिलोय का शत २८ तोले मिलाय और शहद मिलाय गोली ३६० करि पीछे एक एक गोली हड़ोंका पेटमें घालि ऊपर सूतसे बांधि शहदसंयुक्त बर्तनमें घालि धरै पीछे एक गोली को रोज़ खाने से सूका पाण्डुरोग जावै ॥ पंचकोलघृत ॥ पिपलामूल, चीता, चवक, शुंठि, जवाय, दूध, दही, घृत, भारंग-मूल, कूट, पोहकरमूल, ये सम भाग ले और २०० हड़ ले इन्हों को चौगुने पानी में काढ़ा मंद मंद अग्नि ऊपर करावै पीछे घृतको उतारि ५ खानेसे किंवा नस्यलेनेसे किंवा बस्ति कर्मकरने से मनुष्यों को बहुत गुण दे है और पांडुको व हलीमकको व क्षयीको व राजयक्ष्माको हरै हैं ॥ साधारणयोग ॥ चीताके चूर्णको आँवलाके फलको कादामें भिगोय गौ के घृतकेसंग रात्रि में खाने से पांडुरोग नाशहोय है ॥ देवदालीयोग ॥ देवदाली के पंचांग का चूर्ण ४ माशे दूध के संग अथवा पानीके सङ्ग खाने से १ महीनातक पाण्डुरोग को नाशै गोमूत्रहरीतकीयोग ॥ हड़ोंको गोमूत्रमें २१ दिनतक भिगोय पीछे एक हड़ रोज़खाने से पाण्डुरोगको नाशै अथवा जड़सहित कांसालुका चूर्णको खाने से पाण्डु रोग नाश होवै ॥ भूनिंबादि बटी ॥ चिरायता नागरमोथा, कडूपरवल, निम्ब, कटुकी, दारुहलदी, बायबिडंग, धमासा बहेड़ा, आंवला, हड़, शुंठि, पित्तपापड़ा, चीता, लोहभस्म ये सब समान भाग ले चूर्णकरि अदरखके रसमें गोलीबांधे पीछे १ गोली शहदके सङ्ग रोज़खानेसे उग्रपाण्डु रोग को नाशै ॥ मदेभसिंहसूत ॥ पारा, गन्धक हड़, बहेड़ा, आंवला, तांबा, शंख, लवंग, अभ्रक कांत, तीक्ष्णलोह, मंडूर, सिंगरफ, सुहागा ये सब समानभाग लेइ और इनसबोंसे तिगुना पुराना मंडूरलेइ पीछे इन्होंको गोमूत्रमें शुद्ध करि पीछे अग्निमें भूनि पीछे त्रिफलाकेरसमें खरलकरि पीछे भंगराजकेरसमें खरलकरि पीछे अदरखके रसमें खरलकरि सुखाय पीछे त्रिफलाके रसमें भावनादेइ पीछे गिलोयके रसमें भावनादेइ पीछे

आठगुणा वासाके रसमें भावना देइ पीछे सांठीके रसमें अग्नि पर गरम करि करड़ा करै पीछे एक रत्तीकी गोली बनाइ रोग नाशक अनुपानके सङ्ग खावै ये गोली ज्वरको व पाण्डुको व तृषाको व रक्त पित्तको व गुल्मको व क्षयकोवकासको वस्वरभंगको वअग्निमांद्यको वमूर्च्छाको व वातव्याधिको व आठप्रकारकी महाव्याधि को व पित्त की महाव्याधिको व उन्मादकोहरै और ज्यादहकहने से क्याहै यह मदेभसिंह सकल रोगोंकोहरै॥ त्रैलोक्यनाथरस॥ पारा १६ तोला गन्धक२० तोलागिलोयकासत१२तोलाशुंठि १२तोला मिरच १२ तोला पिपली १२ तोला तालमूल १२ तोला मोचरस १२ तोला अभ्रक २४ तोला लोह ३२ तोला इन्होंको मिलाय त्रिफलाके रसमें ६४ भावनादेवै पीछे अदरखकेरसमें ३२ भावनादेवै पीछेसहोंजना के रसमें १६ भावना देवै पीछे चीता के रसमें ८ भावना देवै पीछे कुवारपट्ठा के रसमें ८ भावना देवै पीछेअदरखके रसमें ८ भावना देवै इसकोमाशे६खावै खांड़ घृत के सङ्ग यहपाण्डुरोगको व क्षयीको व श्वासको हरै॥ उदयभास्कर ॥पारा १ भाग गन्धक२भाग तांवा ८ भाग शिलाजीत ३भाग हरताल २भाग त्रिकटु ४ भाग बचनागविष २ भाग इन्होंको महीन पीसिनिर्गुण्डीके रसमें ७ भावना देइ पीछे अदरखके अर्कमें ७भावनादेइपीछे भृङ्गराजके रसमें ७ भावना देइ पीछे अरणीके रसमें ७ भावनादेइ और धूपमें सुखाताजावै और इसको अदरखकारस व शुंठि मिरच पीपल चूर्णकेसङ्ग खानेसेपाण्डु रोगको व कामलाको व सूजनको व अग्निमन्दताको व त्रिदोष ज्वर को व प्रमेहको व प्लीहाको व जलोदरको व संग्रहणीको व कुष्ठ को व धनुर्वातको नाशै और इसमें पथ्य चावल तक्रहै यह उदय भास्कर रस रोगरूपी अँधेराको हरैहै॥ कामेश्वररस ॥ पारा४तोला गन्धक४ तोला चीता १२ तोला हड़ १२तोला नागरमोथा २तोला इलायची २तोला पत्रज २ तोला त्रिकुटा ४ तोला पिपलामूल ४ तोला बच-नागविष ४ तोला नागकेशर १ तोला रेणुकबीज २ तोला इन्हों को आधातोलाभर पुरानेगुड़के पातमेंमिलाय पीछे अदरखके रसमें १पहरतक खरलकरि पीछे एकपहरतक घृतमें खरलकरि गोलीबर

समानबनाइ खानेसे सूजनको व पाण्डुको हरैहै ॥ कालविध्वंसकरस ॥ पारा, सोना, रूपा, तांबा ये समान भागले नींबूके रसमें १ दिन खरल करि धूपमें सुखाय और इन सबों के समान पारा मिलाय कज्जली करै पीछे द्रव्यको बस्त्रमें बांधि इष्टिका यंत्रमें पकाय और नींबूरसमें गन्धक पीसि नीचेऊपर देवै पीछे गन्धक, देवारनारलघु गजपुटमें फूंकदेइ पीछे रसकेसमान लोहभस्म मिलाय दोनोंकटैली के रसमें पीछे निंबरस में एक एक दिन खरलकरै पीछे पांचगोसों में फूंकदेइ ऐसे नवपुटदेइ पीछे चीताके रससें व आकके रसमें व करंजवाके रसमें पुट देइ पकावै मूषायंत्र में बार २ पकाय पीछे चूर्णकरि दशमांश बचनागविष मिलाय पीछे १ रत्ती रोज खावै यह कमल बिध्वंसक रस पांडुरोग को हरैहै इसमें संशय नहीं है यह धन्वंतरिका मत है ॥ पांड्वरीरस ॥ पारा,गन्धक, लोह यें समान भागले कुवार के पट्ठा के रसमें ३ भावना देइ गजपुटमें फूंकदेवै पीछे रत्ती १ २देवै पांडुको व कामलाको नाशकरै ॥ पांडुसूदन ॥ पारा गंधक, तांबाकीभस्म, जैपाल, गूगल ये समान भागले गौके घृत में गोली बनाय एकगोली रोज खाने से सूजनको व पांडुको हरै और इस रसपर शीतल जल व खटाईका त्यागकरै ॥ बंगेश्वर ॥ बंग,पा-रा इनको बराबर भागले कुवारपट्ठाके रसमें खरलकरै पीछे गोला बनाय कांचके बर्त्तनमें पकाय सफदरंग चन्द्रमा सरीखाहो तब तक यह बंगेश्वररस पांडुको व प्रमेह को व दुर्बलताको व कामलाको नाशै है ॥ पांडुनिग्रहरस ॥ अभ्रकभस्म, पाराभस्म, गंधक, लोहभस्म मूसलीचूर्ण ये समानभागले पीसि मोचरसके पानी में १ दिन तक खरलकरि पीछे गिलोयके रसमें एकदिनतक खरलकरि पीछे त्रिफला के रसमें ७दिनभावनादे पीछेअदरखके रसमें १ दिन भावनादेइ पीछे कुवारपट्ठाकेरसमें ७ दिन भावनादेइ पीछे चीताकेरसमें ७ दिन भा-वनादेइ पीछे सहोंजनाके अर्कमें ७ दिन भावनादेइ ऐसे पांडुनिग्रह रसहोवैहै यह रत्ती६ घृत व शहदमें मिलायखानेसे सूजनको व पांडु-रोगको हरै इसपै यव,अमली,शुंठि,चीता, जैपाल, गरमदूध, चीकना अन्न, नवीन अन्न इन्होंको वर्ज्ज देवै ॥ अनिलरस ॥ तांबाभस्म,पारा

भस्म, गंधक, वच नागविष ये समानभागले इन्होंको चीताके रसमें खरल २ घड़ी तक करें पीछे मन्दाग्नि ऊपर पकाय पीछे रत्ती २ की गोली बनाय खाने से सूजनको व पांडुरोगको नाशै॥ लोह सुन्दर॥ पाराभस्म १ भाग लोहभस्म २ भाग गन्धक भस्म ३ भाग महीन पीसि कांचकी शीशीमें भरि चुल्ही ऊपर बालुका यंत्र में १ दिन तक मन्दाग्नि से पकावे और पकाने से प्रहिले शीशीके मांह द्रव्यके ऊपर मोचरस, त्रिफलारस, गिलोयरस देइ पकावे पीछे शीतल होनेपर अदरख रसमें व शुंठि रसमें व मिरचरसमें व पीपल रसमें भावनादेइ यह लोह सुन्दररस शुकापांडुको नाशै है॥ चंदनादितैल॥ रक्तचंदन, सरला, देवदारु, दारुहल्दी, मुलहठी, एलाची, नेत्रवाला, कचूर, नख, शिलाजीत, पद्माख, नागरमोथा, केशर, कंकोल मूर्वा, जटामांसी, शिलाजीत, दगड़फूल, छोटीबहेड़, दालचीनी, रेणुकबीज, चिरायता, सारिवा, कटुकी, अगर, नलिका, बाला, दाख इन्हों का काढ़ा करि पीछे तेलतिलोंका, मस्तु, लाखकारस ये तीनों बराबर भाग मिलाय मन्द मन्द अग्निपर पकाय तेलकोसिद्धकरै इसतेल को पीनेमें व बस्तिकर्ममें व नस्य में व मालिश में योजना करनेसे पांडुरोगको व क्षयको व कासको व ग्रहबाधाको व मन्दज्वरको व अपस्मारको व कुष्ठको व पामको नाशै और बल, पुष्टि, बुद्धि, स्मृति वीरज इन्होंको बढ़ावै यह चंदनादितैल रूपको व सौभाग्य को बढ़ाय संपूर्ण मनुष्योंको वशीभूत करै॥ मृत्तिकाभक्षणज पांडुनिदान॥ माटीको खानेसे वातादि दोष कोपको प्राप्तहोवे हैं और कसायली माटीखावै तो वातकोपहो और खारी माटीकोखानेसे पित्तकोपहो और मीठी माटीको खाने से कफका कोप होता है पीछे वही माटी सातधातुओंको और खाये हुये भोजनको रूखा व कडुआकरदेइहै फिर वही माटी पेट में बिगड़ करि पक्कीहुई नसों को फुला देइहै अथवा रस बहनेकी नसोंकोरोकदेइहै तो सबइंद्रियों का बलजाता रहैहै और शरीर का बीर्य्य और पराक्रम भी जाता रहता है फिर वहीमाटीशरीरकी खालको पीली करके बलबर्णअग्नि इन्होंको नाश करैहै तबउसको तंद्रा, आलस्य, श्वास, कास, शूल, बवासीर, अरुचि

और नेत्र, पांव, उदर, लिंग इन्होंमें सूजनहो और पेटमेंकृमि अतीसार, मल, कफ, रुधिर आदिसे मिलेहोयँ ये लक्षण मृत्तिकाखाने के पांडुरोगकेहैं ॥ केशरादि ॥ नागकेशर, मुलहठी, पिपली, निसोत इन्हों के काढ़ासे माटी खानेका पांडुरोग नाशहोवैहै ॥ घृत ॥ शुंठि, मिरच पिपल, बेल, हल्दी, दारुहल्दी, हड़, बहेड़ा, आमला, दोनोंसांठी, नागरमोथा, लोहभस्म, पाढ़ा, बायविड़ंग, देवदारु, मेढ़ासिंगी, भारंगी इन्हों का कल्क दूधमें घृतको सिद्धकरि खानेसे माटी के खाने से उपजा पांडु रोगका नाश होवै ॥

इतिश्रीबेरीनिवासकरविदत्तवैद्यविरचितनिघण्टरत्नाकर
भाषायांपांडुप्रकरणम् ॥

कामलाकर्मविपाक ॥ मनुष्यचावलों की चोरीकरै वहकामलारोगी हो ॥ प्रायश्चित्त ॥ वहमनुष्य गरुड़ की मूर्त्ति अपनी शक्ति माफ़िक सोनाकी बनवाइ और दोनोंपंखोंपर मोती जड़ाइ और मूर्त्तिके नाक में बज्ररत्न जड़ाइ चांदीकेघोटोंके बस्त्रउढ़ाइ ऐसीमूर्त्तिको घृतद्रोणपै रक्खै पीछे सफ़ेद कपड़ासे वेष्टनकरि सफ़ेदमाला पहनाइ पूजा करावै पीछेवेदज्ञ, धर्म शास्त्रज्ञ व बैष्णव व धर्मज्ञ ऐसे पण्डित को षोड़शोपचार से पूजि पूर्वोक्त मूर्त्ति दान करिदेवै ॥ औरप्रतिमादान ॥ पीलिया व कामलावालेको आतंकदेवीकी मूर्त्तिबनाय औरकपाल व मूसल उस मूर्त्तिके हाथोंमें देइ ऐसी मूर्त्तिकी पूजाकरि ब्राह्मणोंको दानदेवै ॥ कामलानिदान ॥ जो पांडुरोगी अत्यंत पित्तकारी पदार्थों को सेवनकरै वह भोजन उस मनुष्यका पित्तको व लोहूको व मांस को दग्धकरि कामलारोगको पैदाकरै है ॥ लक्षण ॥ जिसके नेत्र खाल, नख, मुख ये अंग हलदीके समान पीले होजायँ और रक्त मिश्रित पीले रंगका मल व मूत्र उतरै और इंद्रियोंका बल जातारहे दाहहो अन्न पकेनहीं दुर्बलता और अरुचिहोइ ये लक्षण कामला रोगके हैं और यह रोग पित्ताधिकसे कोठा व रक्तादिधातुओंके आश्रय हो ॥ कामलाचिकित्साक्रम ॥ इस रोगमें वैद्य पहिले दूध, घृत

देइ स्निग्ध करि रेचन देवै पीछे रोगनाशक चिकित्सा करै ॥ नस्य व अंजन॥ हिंगको पीसि नेत्रमें आंजेसे कामलारोग नाशहोइ अथवा एरंडके रसमें पिपलीका चूर्ण मिलाय नस्य लेने से कामला जावै अथवा जालिनीफलकै नस्य लेने से चावल धोवन के संग अथवा इसी फलकी गिरी सफ़ेद निसोत सिरसम इन्होंका नस्य लेने से कामला नाश होवै ॥ कुमारीकंदनस्य ॥ कुवारपट्ठा के रस में घृत मिलाय नस्यलेनेसे कामलारोग नाशहो । और यव, गेहूं, चावल, जांगलदेशके पशुका मांस, मूंग, मसूर, तूरि ये सब पांडु में व कामलामें भोजनहित हैं ॥ काढा ॥ हड़, बहेड़ा, आंवला इन्होंका काढ़ा किंवा गिलोयकाकाढ़ा किंवा दारुहल्दीका काढ़ा किंवा निम्बका काढ़ा ये सबकाढ़े शहदसंयुतकरै प्रभातमें पीनेसे कामलाको नाशै हैं॥पुनर्नवादिकाढा॥ सांठी, निंब, परवल, चिरायता, शुंठि, हड़, दारुहल्दी, गिलोय इन्होंकाकाढ़ा पांडुरोगको व कामलाको व श्वासको व कासको व पेटरोगकोवशूलकोवसूजनकोनाशै ॥ त्रिफलादि ॥ त्रिफला निम्ब चिरायता कटुकी वासा गिलोय इन्हों काकाढ़ाशहदसंयुतपीनेसे कामलाको व पाण्डुकोनाशै है ॥ गोदूधपान ॥ गौकेदूधमें शुंठिमिलायपीनेसे कामलारोग नाशहोवै ॥ हरीतक्यादिअंजन ॥ हड़, वच आंवला, सोनागेरु इन्होंका अंजन नेत्रमें आंजेसे कामला जावै ॥ खरविट्स्वरस ॥ गधाकी लीदको पीसिदहीमें मिलाय पीनेसे पित्तके रोगको व कामलाको नाशै ॥ गुडूचीकल्क ॥ गिलोयके पत्तोंका कल्क बनाय पीनेसे कामलाजावै ॥ धात्र्यादिचूर्ण ॥ आंवला, लोहकी भस्म शुंठि, मिरच, पिपली, हल्दी, शहद, खांड़ ये सब मिलाय खानेसे उग्रकामलाको भी नाशैहै ॥ अयोरजादिचूर्ण ॥ लोहकीभस्म, शुंठि मिरच, पिपली, वायबिड़ंग, हल्दी, हड़, बहेड़ा, आंवला इन्हों के चूर्णको खानेसे किम्बा निसोत खांड़ मिलाय खानेसे किंवा वृन्दावनदवाइका मगज़ शुंठि, गुड़ इन्होंको मिलाय खानेसे कामला रोग का नाशहोवै है ॥ व्योषादिचूर्ण ॥ शुंठि, मिरच, पीपल, चीता, मिरच हड़, बहेड़ा, आंवला, नागरमोथा ये समान भाग लेइ और इन सबोंके समान लोहभस्म मिलाय तक्र, शहद, घृत मिलाय गरम

पानीके संग खानेसे कामलाको व पाण्डुरोगको व हृद्रोगको व कुष्ठ को व बवासीरको व प्रमेहको हरेहै ॥ अथोरजादियोग ॥ लोहभस्म हड़, हल्दी इन्होंको समान भागले शहदमें मिलाय खानेसे अथवा हड़के चूर्णका गुड़ शहदमें मिलाय खानेसे कामला जावै अथवा सफ़ेद गोकर्णीकेरसको अंजनकरनेसे अथवा दारुहल्दी, सोनागेरु आंवला इन्होंके चूर्णको खानेसे कामलाजावे अथवा देवडांगरीके फलके स्वच्छरसकी नस्यलेनेसे कामला जावे॥लोहादिचूर्ण॥ लोह-भस्म, हल्दी, दारुहल्दी, हड़, बहेड़ा, आमला, कटुकी इन्होंके चूर्ण में घृत शहद मिलाय खानेसे कामलाजावे ॥ एलादिचूर्ण॥ इलायची जीरा, भूमिआंवला, खांड़, दूधमें मिलाय प्रभातमें पीनेसे कामला को नाशैहै ॥ हरिद्राचूर्ण ॥ हल्दीचूर्ण १ तोला दही ४ तोला मिलाय प्रभात में सेवन करनेसे कामला को नाशै है ॥ दार्व्यादिचूर्ण ॥ दारु-हल्दी, हड़, बहेड़ा, आंवला, शुंठि,मिरच, पीपल, बायबिडंग, लोह-भस्म ये समानभागले पीछे शहद घृत संयुतकरि खाने से काम-लाको व पाण्डुकोनाशैहै अथवा हलदी, हड़, बहेडा, आमला, निम्ब चिकनीमुलहठी इन्होंकाकल्क व भैंसकादूध व भैंसकेघृतको मिलाय घृतको सिद्धकरे पीछे इसको खानेसे कामलाकोहरै इसमें संशय नहीं है ॥ एरंडस्वरस ॥ एरंडकीजड़कारस ६ माशे दूधमेंमिलाय रोज़ पीने से ३ दिनतक कामलाको नाशैहै ॥ पथ्य ॥ दूध, चावल, घृतहै और नोनको खावेनहीं, दृष्टांत जैसे बायु बदलों को तैसे ॥ कटुकीयोग ॥ कटुकीके चूर्णको खांडमें मिलाय १ तोला भर खानेसे अथवा हड़ के चूर्णको शहदमें मिलाय खानेसे कामलाको नाशैहै ॥ कुंभकामला निदान ॥ बहुत दिनसे कामलारोग वालेको कोप होइ कुंभकामला पैदाहोवे है यह कष्ट साध्य है ॥ असाध्य लक्षण ॥ जिसका मल कृष्ण वर्णहो और मूत्र पीलावर्णहो और शरीरमें सूजनहो तो असाध्य कामलावालाहो अथवा जिसकामलावालेकाविष्ठा, मूत्र, नेत्र, मुख ये लालवर्ण हों और छर्दि आवे और शरीर माड़ाहो वहभी असाध्य है ॥ दूसराप्रकार ॥ जिस कामला रोग वालेके दाह, अरुचि, तृषा अफारा, पेटमें तंद्रा, मोह, नष्टअग्नि ये उपद्रवहों वह निश्चय

मरै॥ कुंभकामलाका असाध्यलक्षण॥ छर्दिहो, अरुचिहो, हल्लास हो ज्वरहो, ग्लानिहो, श्वासहो कासहो, अतीसारहो इनउपद्रवों सहित कुंभकामलावाला भी निश्चयमरै। कुंभकामलामें भी कामलानाशक औषधकरै॥ शिलाजीतयोग॥ शिलाजीतको गोमूत्रमें मिलाय पीने से कुंभकामला जावै॥ मंडूर॥ बहेड़ाके काठमें लोहके कीटको जलाय पीछे गोमूत्रमें पकाइ आठवार पीछे महीन पीसि शहदमें मिलाय खानेसे कुंभकामलाको व पांडुरोगको नाशकरै॥ नस्यादियोग॥ आककीजड़को महीन पीसि चावल धोवनके संग इसका नस्यलेने से कामलाको हरै अथवा एरंडकी जड़को शहदके संग खाने से कामला जावै अथवा ऊंगाकीजड़को तक्रके संग पीनेसे कामलाको हरैहै अथवा विष्णुक्रांताकीजड़को तक्रकेसंग पीनेसे कामला जावै अथवा कलिहारी के पत्तोंके चूर्णको तक्रके संग पीने से कामला जावै अथवा त्रिफला, अदरख, गुड़ इन्होंको मिलाय खानेसे कामलाजावै॥ हलीमकनिदान॥ जिस पांडुरोगीके वात पित्तवढ़ै और त्वचा हरी पीली काली होजाइ और बल, उत्साह जातारहै और तंद्रा, मंदाग्नि, सूक्ष्मज्वर, दाह, तृषा, चित्तभ्रम येसबहोयँ और स्त्री का संग प्यारा न लगै और अंगमें पीड़ाहोय येलक्षण हलीमकके हैं यह बात पित्तसे उपजै है॥ पानकीलक्षण॥ शरीरमें दाहहो और अतीसार हो और शरीर पीलावर्णहो और नेत्रोंमें रोगहो येलक्षण पानकी के हैं॥ हलीमकपरिभाषा॥ जो पांडुरोगमें व कामलामें चिकित्सा कही है वही हलीमक में भी करनी उचितहै॥ अथवा अयो भस्म योग॥ लोहेकी भस्म, नागरमोथा इन्होंके चूर्णको खैरकेकाढ़ा के संग पीनेसे हलीमक को नाशै है॥ सितादिलेह॥ मिश्री, कटुकी चिकनी, मुलहठी, त्रिफला, हल्दी, दारुहल्दी इन्होंको शहद व घृत के संग खानेसे हलीमकको नाशै है॥ अमृतादिघृत॥ गिलोय रस अथवा कल्क इसमें भैंसकादूध चौगुणा मिलाय पीछे इन्हों में भैंसके घृतको सिद्धकरि खानेसे हलीमकको नाशैहै॥ गुडूचीस्वरस॥ गिलोयकारस चौगुणा भैंसके दूधमें भैंसके घृत को पकाय खाने से हलीमक को हरैहै॥ पांडुकामला कुंभकामला हलीमकमें

पथ्य ॥ छर्दि, विरेचन, जीर्णयव, जीर्ण गेहूं, जीर्ण चावल, मूंग अरहर, तथा मसूर का रस व यूष, जंगलमें उत्पन्न रस, परवर पुराना कोइला, नवीन केलाके फल, जीवंतीशाक, तालमखाना मत्स्याक्षी, गिलोय, चौराई, सांठी, गोमा, बैंगन दोनों प्रकार के लहसुन, पका आम, हड़, कंदूरी का फल, सींगमछली, गोमूत्र आमला, मट्ठा, घृत, तेल, कांजी तथा जोकीकांजी मक्खन, चंदन हलदी, नागकेशर, जवाखार, लोहेकी भस्म, कसायलेरस, केशर और चरणोंकी संधिमें तथा नाभिके दोअंगुलनीचे और मस्तकमें तथा हाथों की कलाई में और स्तन तथा कांखके बीचमें दागना ये बस्तु दोषके अनुसार पाण्डुरोगके आदिमें पथ्यहैं ॥ अथअपथ्य ॥ रक्तनिकालना,धुआंपीना, वमन, बेगोंकारोकना,स्वेदन, स्त्रीसंग, फली, पत्र, शाक, हिंग, उड़द, जलपीना, तिलकीखल, पान, सरसों मदिरा, मट्टीखाना, दिनमें सोना, तीक्ष्ण तथा नमकीनवस्तु, सह्याचल और विंध्याचल की नदियोंकाजल और सबभांतिकी खटाई बुराजल, विरुद्ध तथा अधिक भोजन, भारीअन्न, दाहकरनेवाली बस्तु ये सब पांडुरोगवालोंको विषके समानहैं ॥ कामलारोगमेंदम्भ ॥ कामलामें हाथके पृष्ठभागमें और कूर्पर भागमें तांबेकी शलाईको गरम करि दागना १५५० ॥

इतिबेरीनिवासकवैद्यरविदत्तविरचितनिघण्टरत्नाकर भाषायांकामलाहलीमकप्रकरणम् ॥

रक्तपित्तीकर्मविपाक ॥ मदिराको सेवन करनेवाला रक्तपित्तीहोवेहै ॥ प्रायश्चित्त ॥ घटमें घृतभरि सोनाघालि दान करै अथवा छोटे घटमें शहदभरि सोनाघालि दान करै इससे रोगका नाश होवै ॥ज्योतिःशास्त्राभिप्राय ॥ जिसके जन्मकुण्डलीमें चन्द्रमाके क्षेत्र में मंगल ग्रहहो वह रक्तपित्त वाला अथवा बवासीर युतहो ॥ दूसरा प्रकार ॥ लग्न और चन्द्रमा के बीच में मंगल हो तोरक्तपित्तज्वर दाह,पित्त,वायुरोग ये उपजें ॥ उपाय ॥ मंगलका जप करावै और खैरकी लकड़ियों मेंअग्नि जलाइ घृत तिलों को होमकरै औरलाल बैलका दानकरवावै अथवा बेलफल, चन्दन, चिकणा, शण, सिंगरफ, कालागूलर, बकुल इन्होंको कूटि जलमें उबालि स्नान करवानेसे मंगलका दोष निवारणहोवै ॥ रक्तपित्तनिदान ॥ बहुत धूपमें रहने से घणा मैथुनकरने से घणा शोच करने से गरम तीखी खारी वस्तु, खटाई कडुवी बस्तुको खानेसे पित्तदाह होइ शरीरके लोहूको दग्धकरैहै तब उसका लोहू दोतरहसे प्रवृत्त होइहै एक ऊपर एक नीचे ऊपर तो नासिकामें,नेत्रोंमें,कानोंमें,मुखमेंप्रवृत्ति होवे है। और लिंगमें गुदा में योनि में इनके द्वारा नीचे प्रवृत्त होवे है और घणा लोहू कुपित हो तो बालों में प्रवृत्तहो है ॥ रक्तपित्तकापूर्वरूप ॥ अंगों में पीड़ाहोइ और ठंढा सुहावै मुँह में धुआं निकले बमनहोइ और लोहूकी बास मुखमें आवै तो जानिये रक्तपित्त होगा ॥ असाध्यलक्षण ॥ जिस रक्त पित्त बर्ण मांस धोवन सरीखा हो किंबा गाढ़ाहो किंबा कीचड़ सरीखा हो किंबा मेदसरीखा हो किंबा रांधसरीखा हो किंबा लोहू सरीखा हो किंबा यकृत सरीखाहो किंबा पकाहुआ जामनकेफलसरीखाहो किंबा कालानीलाहो किंबा प्रेतसरीखी दुर्गंधि हो अथवा इन्द्रका धनुष आकाशमें निकलताहै तिससरीखा हो ऐसेबर्णका रक्तपित्तवालारोगी असाध्यहोवे है इसमेंसंदेहनहीं है॥ वातिकरक्तपित्तनिदान ॥ काला झागों समेत महीन धारको लिये सूखोलोहूहोय तो बायुका रक्तपित्त जानिये ॥ भोजन ॥ चावलसांठी चावल नाचणी, चणा, मूंग, मसूर, सांवा ये अन्न रक्तपित्त में हित हैं ॥ रक्तपित्तशास्त्रार्थ ॥ जिसके वातादिदोष बढ़ेहुयेहों पहिले लोहू

व पित्त शरीर में ज्यादहहोय और बल, मांसक्षय नहीं हो उसका उपचार करनाहित है। और ऊपर के छिद्रों में लोहू निकसा हो तो रेचनदेवै। और नीचे के छिद्रों में लोहू निकसताहो तो बमन करवावै। और रक्तपित्त में बलवान् मनुष्यको आदिमें चिकित्सा न करे तो इतनेरोग उपजते हैं हृदयरोग, पांडु, संग्रहणी, प्लीहा, गुल्म पेटकेरोग ऐसेजानो और इसरोग में बालकको व बलमांस रहित को व बूढ़ाको व शोषवालेको न वमनदेवै और न रेचनदेवै तिसको शमनीय औषधोंसे शांतकरै रोगको। और नीचरले छिद्रों में प्राप्त रक्तपित्तहो तो शालिपर्णी दवाई में सिद्ध यूषदेवै और रक्तातीसार नाशक औषध करै और रक्तपित्त में शीतलजल, जांगलदेशके मांस कारस, सांठीचांवलका मांड़ और पित्तनाश करनेवाले पदार्थ येसब हितहैं। और मसूर, मुंग, चना, मटर, तूरीअन्न इन्होंकी दालबनाय खाना व मांड़बनाय पीना रक्तपित्तमें हितहै। और रक्त पित्तवाला खट्टे फलोंको इच्छाकरै तो अनार, आमला, बेलफल ये देने हित हैं रक्तपित्त वाला तर्कारीके खानेकी इच्छाकरै तो परवल, निंब, बेतपान पिलषण, जलवेतस इन्होंके शाककी भाजी देनीहितहै॥ कामदेवघृत॥ असगन्धएकतोलाभर गोखुरूआधातोलाभर चिकनामूल ४० तोला गिलोय ४० तोला शालिपर्णी ४० तोला बिदारीकन्द ४० तोला शतावरि ४० तोला सांठी ४० तोला पिपलामूल ४० तोला शुंठि ४० तोला काश्मरी ४० तोला कमलबीज ४० तोला उड़द ४० तोला इन्होंको कूटि चार ४ द्रोणभर पानीमें काढ़ा चतुर्थांशरक्खे पीछे मुलहठी, बिदारीकंद, असगंध, हरणबेल, रानमुंगी, रानउड़द कूट, पद्माख, रक्तचंदन, तमालपत्र, पिपली, दाख, कवांचबीज, नीले कमल, नागकेशर, दोनोंसारिवा, चक्रभेड़, नागवला ये सब एक एक कर्ष प्रमाणलेइ खांड़ ८ तोला सफेद ईखकारस १०२४ तोला घृत १०२४ तोला ये काढ़ामें मिलाय कोमल २ अग्निसे पकाय घृतको सिद्धकरै इसघृतको खानेसे रक्तपित्तको व उरक्षत रोगको व हलीमकको व स्वरक्षयको व बातरक्तको व मूत्रकृच्छ्रको व मगरशूलको व कामलाको व धातुक्षय को व छातीकी दाहको व कृशपणाको व

बलक्षयको नाशकरै और वन्ध्यास्त्रीको गर्भदेवै और पुरुषके वीर्य्य को बढ़ावै यह कामदेव घृत बलको बढ़ावै है और रसायन है॥ दूर्वादिघृत॥ दूब १ तोला कमलकेशर १ तोला मजीठ १ तोला एलवालु १ तोला हड़ १ तोला लोध १ तोला कालाबाला १ तोला नागरमोथा १ तोला चन्दन १ तोला पद्माख १ तोला घृत ६४ तोला चावल का धोवन २५६ तोला बकरी का दूध २५६ तोला मिलाय मन्द २ अग्निसे पकाय सिद्धकरै इस घृतके खानेसे लोहछर्दि जावै और इसकी नस्यलेने से नकसीर जावै और इस घृत को कानोंमें पूरनेसे कानोंमें निकसता रक्त बन्दहोय और नेत्रों से लोहू झिरताहोतो इस घृत को नेत्रों में आंजने से आरामहो। और लिङ्ग व गुदाद्वारा लोहू निकसताहो तो वस्तिकर्म करवावै इसीघृतसे और रोमवालों में लोहू झिलके तो इसी घृतकी मालिश करनेसे आराम होवै सब्रप्रकार के पित्तमें यह घृत श्रेष्ठहै॥ शतावर्यादिपेय॥ शतावरि, बाला, रास्ना, सिवनी, फालसा इन्होंका काढ़ाकरि पीनेसे रक्त पित्तको व शूलको जल्दी नाश करै॥ पित्तका रक्त पित्तका निदान॥ खैरकेकांटेसमान और काला व गोमूत्रसरीखा और स्याहीके समान चिकना होय तो पित्तका रक्तपित्तजानिये॥ त्रिफलादि॥ त्रिफला, अमलतास इन्होंके काढ़ामें खांड़ शहद मिलाय पीने से अनेक प्रकारके रक्तपित्त को व दाहको व पित्तशूल को नाशै॥ अगस्त्यादिकाढ़ा॥ अतीसके फूल, मजीठ, बड़कारोह रोहिष तृण इन्होंका काढ़ा रक्तपित्तकोहरै और इसको चावल मूँग के यूषके सङ्गखावै॥ वासादिलेह॥ हड़को बासाके रसमें ७ भावना देइ खानेसे अथवा पिपली चूर्ण शहदमें मिलाइ खानेसे रक्तपित्त कोहरै॥ कूष्मांडावलेह॥ साफकिया छीलाहुआ कोहलाकेटुकड़े ४०० तोला और २ तोलाभर पानीमें सिजाइ आधा जल रक्खे पीछे उनको हलाके टुकड़ोंको दृढ़ कपड़ामें घालि निचोड़िलेवै पीछे धूप में सुखाइ शूलोंसे टुकड़ोंमें बहुत छेककरै पीछे उन टुकड़ोंको तांबा की कड़ाहीमें चढ़ाय घृत ३२ तोला मिलावै उस घृतमें कछुकभूनि करि पीछे पूर्वोक्तजलमिलावै पीछेअच्छीतरहपकाय पिपली ८ तोला

शुंठि ८ तोला जीरा८तोला धनियां२तोला तमालपत्र२तोला इला-यची २तोला मरिच२तोला दालचीनी२तोला इन्होंकाचूर्णकरि मि-लावै पीछे शहद१६तोलामिलाय अग्निबलाबलदेखि खानेसे रक्त-पित्त व क्षयको व ज्वरको व तृषाको व शोषको व अँधेरीको व छर्दिको व कासको व श्वासको व उदरक्षतको नाशकरै यह कूष्मांडावलेह बालक व बूढ़ेकोभीहितहै और यहस्त्रीसङ्गकीइच्छा उपजावैहै और बलकरैहै ॥ कफयुक्तरक्तपित्त निदान ॥ गीला पीला चिकना मोरकेचंदा कैसा काला लोहूहोय तो कफका रक्तपित्त जानिये ॥ अभयाभक्षण ॥ हड़के चूर्णमें शहदमिलाय खानेसे दीपन व पाचनकरै है और कफ से युक्त रक्तपित्त उपरले अङ्गोंमें झिलकेहै और बायुयुक्त रक्तपित्त नीचरले अङ्गोंपर झिलकेहै ॥ आज्यपान ॥ बकरीकेदूधमें घृतको व केशरको मिलाय पकाय पीनेसे उपरले अङ्गोंकी रक्तपित्तजावै और इसपै भोजन इसी दूध में मिलाय करै ॥ ह्रीवेरादि ॥ बाला, चन्दन कालाबाला, नागरमोथा, पित्तपापड़ा इन्होंका काढ़ा अथवा केवल जल देनेसे रक्त पित्तमें तृषा दूर होवै ॥ मृद्विकादिगुटी ॥ रक्तपित्त में लोह गन्ध सरीखा श्वास आवै और रक्त गन्धवाली डकार आवै तो मुनक्का दाख मिरच इन्होंके चूर्णमें दूनीखांड़ मिलाय खाने से आराम होवैहै ॥ पारावतादियूष ॥ पारावत, कबड़ा,लावा, कबूतर, ब-तक, शशा, कपिञ्जल, मृग, हरिण इन पशुओंके मांसकारस पीने से रक्तपित्तको हरैहै ॥ घृतसैंधवयोग ॥ कफजरक्तपित्तमें कटुक खट्टे घृतमें भुना हुआ सेंधानोन संयुक्त पदार्थ देवै और बायुके रक्तपित्त में यूष शाक भाजी मांस रस ये पदार्थ देवै औ रस तीन अन्नका यूष व धानकी खीलोंको सत्तूमें मिश्री मिलायदेवै अथवा खजूर मुनक्का मुलहठी,फालसा इन्होंका जल ये रक्तपित्तमेंहितहै ॥ द्वंद्वजसन्निपात रक्तपित्तलक्षण ॥ जिसमें दोदोषोंकेलक्षणमिलैं वह दोदोषका रक्तपित्त जानिये और जिसमें तीनोंदोषोंके लक्षण मिलैं वह सन्निपात का रक्तपित्त जानिये ॥ असाध्यरक्तपित्तकालक्षण ॥ कफ व बात संयुक्त रक्त पित्त ऊपरले व नीचरले रस्तोंसे निकसैहै और ऊपरगत रक्तपित्त साध्यहोवै है और नीचे अङ्गों में गत रक्तपित्त जाप्यहोवै है और

दोनों रस्तोंसे निकसता याने उपरले व निचरले लेनेसे वह रक्तपित्त असाध्य होवेहै और एक रस्तेसे प्रवृत्तहो और उसमें मन्दपीड़ाहो और नया उत्तंभितहो और उपद्रवरहितहो ऐसा रक्त पित्त सुसाध्य होवेहै और एकदोषका रक्तपित्त साध्य होवेहै और दोदोषों का रक्तपित्त जाप्य होवेहै और तीनदोषों का रक्त पित्त असाध्य होवे है और मन्दाग्नि वाले के मन्द वेग रक्त पित्त हो तोभी असाध्य जानो और जिसका शरीर अन्य रोगोंसे क्षीणहो उसके रक्त पित्त उपजा असाध्य होवे है और वृद्ध मनुष्य के उपजा रक्त पित्त असाध्य होवैहै और उपवास करने वालेके उपजा रक्त पित्त असाध्य होवै है ॥ रक्तपित्तकेउपद्रव ॥ दुर्बलपना, श्वास, कास, ज्वर, छर्दि, उन्माद, पाण्डुरोग, दाह, मूर्च्छा, भोजन किया पीछे ज्यादह दाह, अधीरपना, सुखकारक पीड़ा, तृषा, अतीसार, शिरमें गरमी थूकमें दुर्गन्धि, अरुचि अजीर्ण, ये रक्तपित्तके उपद्रव हैं ॥ असाध्य लक्षण ॥ जिस रक्तपित्त वालेको आकाशभी लालदीखै सो असाध्य और लालजाके नेत्रहोइँ और लोहू जिसकी डकारमें आवै और सर्वत्र लोहू दीखै सो अवश्य मरै ॥ वृषादिस्वरस ॥ वासाके पत्तोंके रसमें शहद, खांड़ मिलाय पीनेसे दारुण रक्तपित्त भी नाशहोवै ॥ मातुलिंगादि पेय ॥ बिजौराके फूल व जड़को चावल के धोवन के सङ्ग पीनेसे अथवा इसीके रसमें दूध व खांड़को मिलाय नास लेनेसे नकसीर बन्दहोवे ॥ उदुम्बरादियोग ॥ गूलरके पकेहुये फलों कोगुड़केसङ्गअथवा शहदकेसङ्गखानेसे नकसीर बंदहोइ॥ अश्वत्थपत्र योग ॥ पीपलका पानका अभागका रस १ भाग, वेल ६ भाग, दुगुने शहदमें मिलाय खानेसे रक्तके प्रवाहको व हृदयके रक्तपित्त को हरै। दृष्टान्त जैसे बादलोंको पवन तैसे॥ चित्रकचूर्णयोग ॥ चीता को शहदमें मिलाय खानेसे नकसीर बन्दहोइ ॥ गन्धकादिप्राशन ॥ गन्धक, पारा, सोनामाखीकीभस्म, इन्होंको लोहाके पात्र में त्रिफला के रसमें खरलकरि गौके दूधके सङ्ग राति में प्यावै यह रक्तपित्त को हरैहै ॥ दुग्धादियोग ॥ गौके दूध में अथवा बकरी के दूध में मुलहठी, महुआ, अर्जुनछाल मिलाय गरमकरि शीतल होने पर

मिश्रीमिलाय पीनेसे अथवा मुनक्का दाखको दूधमें मिलाय पीने से अथवा गोखुरूको दूधमें पकाइ पीनेसे अथवा खरैटी, शुंठि इन्हों को दूधमें मिलाय पकाय पीने से अथवा गोखुरू शतावरि इन्होंको दूध में पकाय पीने से रक्तपित्त नाशहोइ ॥ वासास्वरस ॥ बासाकारस पीनेसे रक्तपित्तको व क्षयी को व कासको नाशै ॥ लाक्षादियोग ॥ गौके दूधमें लाखका चूर्ण व शहद मिलाय पीवै पीछे जीर्ण होनेपर दूधमें मदिरा मिलाय पीवै यह क्षतोत्थ लोहूविकार को जल्दी नाशै अथवा लोहकान्तका भस्म, अर्जुनवृक्ष की छाल इन्होंका चूर्णकरि खाने से रक्त पित्त जावै ॥ मध्वादिपेय ॥ बासा के रसमें शहद मिलाय प्रभातमें हमेशह पीनेसे रक्तपित्तको नाशै, दृष्टान्त, जैसे अग्निको जल नाशकरै तैसे ॥ मधुकादिकल्क ॥ मधुका, हड, बहेडा, आंवला, अर्जुनकीछाल इन्होंको घृतमें रातिमें लोहाके पात्रमें अवलेहकरि धरै पीछे प्रभातमें खानेसे रक्तपित्त को नाशै अथवा बकरीके दूधमें खांड मिलाय गरमकरि शीतल होने पर पीनेसे रक्तपित्त जावै ॥ ह्रीबेरादिकाढा ॥ बाला, कमल, लोध, धनियां, लालचन्दन, मुलहठी, गिलोय, कालाबाला, बासा इन्हों का काढा करि शहद खांड मिलाय पीनेसे उग्र रक्तपित्तको व तृषाको व दाह को व ज्वर को नाशकरै ॥ पद्मोत्पलादिकाढा ॥ पद्मकेशर, कमलकेश, पृष्ठिपर्णी, राल, बासाके रसमें मिलाय शहद खांड युतकरि पीनेसे दारुण रक्तपित्त नाशहोवै अथवा जहां बासा रस न मिले वहां काढासे कामलेवै ॥ इक्ष्वादिकाढा ॥ ईखके गांडाका मध्य भागका टुकड़ा कन्दसहित नीलाकमल, सफेद कमलकेशर, मोचरस, मुलहठी, पद्माख, बड़का प्ररोह, शुंग, दाख, खजूर ये समानभागले काढाकरि शहद खांड मिलाय पीने से रक्तपित्तको नाशै और प्रमेहकोभीनाशै चन्दनादिकाढा ॥ रक्तचन्दन, इन्द्रयव, पाढा, कटुकी, धमासा, गिलोय बाला, लोध, पिपली, इन्हों के काढामें शहद मिलाय पीने से कफको व रक्तपित्तको व तृषा को व कासको व ज्वर को नाशै ॥ उशीरादिकाढा ॥ कालाबाला, चन्दन, पाढा, दाख, मुलहठी, पिपली इन्हों के काढा में शहद मिलाय पीने से रक्तपित्त विकार जावै ॥ अमृतादि-

काढ़ा ॥ गिलोय,मुलहठी,खजूर,गजपिपली,इन्हों के काढ़ा में शहद मिलाय पीने से रक्तपित्त विकार नाश होइ ॥ ह्रीवेरादिकाढ़ा ॥ नेत्रवाला,धनियां,शुंठि,रक्तचन्दन,मुलहठी, बासा, कालाबाला इन्हों के काढ़ा में खांड़ शहद मिलाय पीनेसे रक्तपित्त को व तृषा को व दाह को व ज्वरको हरे ॥ मुद्गादिकाढ़ा ॥ मूंग,धानकी खील, यवसत्तू, पिपली,वाला,नागरमोथा,चन्दन,खरैटी इन्हों को राति में जल में भिगोइ दूसरे दिन काढ़ाकरि पीने से रक्तपित्तको नाश करै ॥ यष्ठ्यादि काढ़ा ॥ मुलहठीको दूधमें मिलाय काढ़ाकरि शीतल होने पर खांड़ शहद मिलाय पीने से रक्त पित्त को हरै ॥ पलाश काढ़ा ॥ पलाश के काढ़ा में शहद खांड़ मिलाय पीने से रक्त पित्त जावै अथवा शहद घृत मिलाय पीने से रक्तपित्त जावै अथवा गौ के गोबर के रस में शहद घृत मिलाय पीने से रक्तपित्त जावै अथवा घोड़ा की लीद के रसमें शहद घृत मिलाय पीने से रक्तपित्त जावै ॥ आठरुषादि काढ़ा ॥ बासाकारस,सांवा,तुरटीमाटी, रसोत,लोध, इन्होंके काढ़ा में शहद मिलाय पीने से रक्तपित्त जावै ॥ बासादिकाढ़ा ॥ बासा, कमल तुरटीमाटी, लोध, रसोत, कमलकेशर, इन्हों के काढ़ा में शहद खांड़ मिलाय पीनेसे रक्तपित्त को हरै ॥ उशीरादिचूर्ण ॥ वाला, दारुहल्दी लोध, पद्माख, राल,कायफल,शंख, गेरू, ये समान भागले और इन सबोंके बराबर चन्दनले खांड़मिलायचूर्णकरि चांवलके धोवनके सङ्ग खानेसे रक्तपित्तको व तमकको व तृषाको व दाहको नाशकरै ॥ मृद्विकादिचूर्ण ॥ मुनक्कादाख, चन्दन, लोध, कटुकी इन्होंके चूर्णको शहद व बासाके रसमें मिलाय खानेसे नाकके लोहूको व मुखके लोहूको व गुदाके लोहूको व लिङ्गके लोहूको व हथियार से कटे हुये अङ्ग में लोहू निकसताको नाशै और जो लिङ्गमें ज्यादह रक्तपित्तहो तो उत्तर वस्ति करवावे ॥ चन्दनादिचूर्ण ॥ चन्दन, जटामांसी,लोध,वाला,कमलकेशर,नागकेशर,बेलफल,भद्रमोथा,खांड़,काला,बाला,पाठा,कूडा छाल,कमल,शुंठि,अतीश,धोकेफूल,रसोत आंबकीगुठली जामनकी गुठली,पाचरस,नीलाकमल,मजीठ,एलाची,अनारकी छाल ये सब समान भागलेइ चूर्ण करि शहद मिलाय चांवलके धोवन के संग

खाने से संपूर्ण अतीसारोंको व छर्दिको व स्त्रियों के रजोग्रह को हरै और पड़ताहुआ गर्भ को स्थापन करै यह रक्त पित्तको नाश करने वाला चूर्ण अश्विनीकुमारोंने कहाहै॥ पत्रकादिचूर्ण॥ तमालपत्र १ भाग दालचीनी ४ भाग एलाची ६ भाग तगर ८ भाग चन्दन १० भाग श्यामक १२ भाग शुंठि १४ भाग मुलहठी १६ भाग कमल १८ भाग आंवला २० भाग बासा २२ भाग ये सब औषध ले चूर्णकरि मिश्री शहद मिलाय खानेसे ज्वरको व रक्तपित्तको व कास को व क्षयीको व रक्तको व मूत्रकृच्छ्रको व रक्तकी छर्दिको व अङ्ग पीड़ा को व दाहको व स्मृति विभ्रम को व ऊर्ध्वबात को व श्वास को व हृद्रोगको व मनके सन्तापको व योनिरोगको व प्रदररोगको व हुचकीको व मुख, गुदा, नाक, लिङ्ग इन्होंसे पड़ते लोहूकोनाशै कर्पूरादिचूर्ण॥ कर्पूर १ भाग कंकोल २ भाग जायफल ३ भाग जावित्री ४ भाग लवँग ५ भाग मिरच ६ भाग पिपली ७ भाग शुंठि ८ भाग इन्होंका चूर्णकरि सबोंके बराबर खांड़ मिलाय खावै यह चूर्ण दीपन है और अग्निको बढ़ावै है और रक्तपित्त को व प्रतिश्यायको व दमाको व कासको व अरुचिको व हृद्रोगको जल्दीहरै दृष्टांत जैसेबज्रशत्रुओंकोनाशै तैसे॥ बासापुटपाक॥ बासाकेपत्तोंको पीसि पुटपाक करि रसनिचोड़ि शहद मिलाय पीनेसे रक्तपित्त को व कासको व ज्वरको व क्षयीको नाशकरै॥ एलादिगुटी॥ एलाची २ तोला तमालपत्र २ तोला दालचीनी २ तोला दाख २ तोला पिपली २ तोला शिलाजीत ४ तोला मुलहठी ४ तोला खजूर ४ तोला मुनक्कादाख ४ तोला इन्होंका चूर्णकरि शहद मिलाय गोली बांधै १ तोलाभरकी १ गोली रोज़ खानेसे कासको व श्वासको व ज्वरको व हुचकीको व छर्दिको व मूर्च्छाको व मदको व भ्रमको व रक्तकी छर्दिको व तृषाको व पसुली शूलको व अरोचकको नाश व शोष को व मूढ़बात को व प्लीहाको व स्वरभेदको व क्षतक्षय को व रक्तपित्त को नाशकरै और ये गोली तृप्तिकर हैं और बल बीर्य्यको बढ़ावैहैं॥ हरीतक्यादिनस्य॥ हड़, अनारकेफूल, दूब, लाखकारस इन्होंकानस्यलेनेसेजल्दी नकसीर बंदहोवै॥ मस्तकलेप॥ आंवलाको बा-

रीक पीसि घृत में भूनि मस्तकमें लेपकरनेसे नकसीर बन्दहोइ ॥ कल्कवघृत ॥ शीतल जलसे आंवलाका कल्ककरि १००बार पानीसे धोया हुआ घृतमें मिलाय रक्खे पीछे शिरके बालोंको मुंड़वाय पूर्वोक्त बारम्बार लेपकरै यह नकसीर को जल्दी बंदकरै ॥ नस्य ॥ अनार के फूलोंके रसकी नासलेने से अथवा दूबके रसकी नास लेनेसे अथवा आंबकी गुठली के रसकी नास लेनेसे अथवा प्याजके रसकी नासलेने से अथवा पानी के नासलेने से नकसीर बन्दहोवै इसमें संशय नहींहै यह धन्वन्तरिका मतहै ऐसे जानो ॥ दूसराप्रकार ॥ कुँभारीके घरकी माटीको स्त्री के दूध में पीसि नास लेनेसे रक्त नाकसे पड़ता बन्दहोय अथवा लोहके भस्मको खैरसारमें मिलाय खानेसे नकसीर बन्दहोवै ॥ आर्द्रकादिनस्य ॥ अदरख गेरू धौकेफूल मुलहठी इन्होंका चूर्ण करि स्त्रियोंका दूध मिलाय नस्य लेनेसे नकसीर बन्द होवै ॥ हरीतक्यादिनस्य ॥ हड़ अनारके फूल कलहारी इन्होंको पानीमेंपीसि नासलेनेसे नकसीर बन्दहोवै अथवातीनदिनतक गेहूंकेचूनमेंखांड़दूधमिलायनासलेनेसे नकसीर बन्दहोवै ॥ कूष्माण्डावलेह ॥ खांड़ १२८ तोला आंवलाकारस १२८ तोला कोहलाके टुकड़ोंके अग्निमें तपाय शुद्धरस निचोड़ि वहरस २०० तोला घृत६४तोला छिलेहुयेकोहलाकेटुकड़े ४०० तोला बासाकारस२५६ तोला इन्होंको मिलायपकाय पीछेहड़१ तोला आंवला १ तोला भारंगी १ तोला तज १ तोला तमालपत्र १ तोला इलायची१तोला तालीसपत्र४तोला शुंठि४ तोला धनियां४तोला मिरच ४तोला पिपली १६ तोला शहद ३२ तोले मिलाय खानेसे कासको व श्वासको व ज्वरको व हुचकी को व रक्तपित्त को व हलीमक को व हृद्रोगको व आम्लपित्तको व पीनसकोनाशै ॥ दूसराप्रकार ॥ पुराना कोहला लेय छील उसके बीज काढ़ि टुकड़े करि वह टुकड़े ८०० तोला पानी २ द्रोण भरमें मिलाय काढ़ाकरि आधा पानी रक्खै पीछे शीतल होनेपर कोहला के टुकड़ों को नवीन कपड़ामें घालि रस निचोड़ि लेवै पीछे टुकड़ों को धूपमें सुखाय तांबाके पात्रमें ६४ तोला घृत घालि टुकड़ों को पकावै पीछे जब टुकड़े लाल रंग हो-

जायँ तब पूर्वोक्तजल मिलावैपीछे मिश्री १ तोलाभरि मिलायअव-लेहसा पकावे पीछे पिपली ८ तोला शुंठि ८ तोला जीरा ८ तोला धनियां२तोला तमालपत्र२तोला इलायची २ तोला मिरच २ तोला दालचीनी २ तोला शहद ३२ तोला किसी मुनिके मतमें खांड़ शहद से अधिक भाग मिलावे और किसी मुनिके मत में शहद से आधी मिलावे दाख १ तोला लवंग १ तोला कपूर १ तोला मिलाय घीके चिकने बासनमें घालि धरै पीछे जठराग्निका बला-बल देखि खानेसे यह कूष्माण्डावलेह रक्तपित्तको व क्षतक्षय को व कासको व श्वासको व छर्दि को व तृषा को व ज्वर को नाश करै और वीर्य को बढ़ावे और बूढ़ाको जवान करै और बलवर्ण को बढ़ावे और उरक्षतको संधानकरै पुष्टिकरै और स्वरको बधावै यह अश्विनी कुमारोंने कहाहै ॥ तीसराप्रकार ॥ पुराना मोटा कोहला लेय छील बीज काढ़ि शुद्धकरि टुकड़े महीन करि ४०० तोलालेवे दूध ८०० तोलामें मन्दाग्नि पर पकावै पीछे खांड़ २०० तोला गौका घृत ६४ तोला शहद ३२ तोला गोला मेवा १६ तोला चिरौंजी ८ तोला गोखुरू ४ तोला सौंफ१ तोला जीरा २ तोला अजमान२ तो-ला गोखुरू२ तोला तालमखाना २ तोला हड़२ तोला कोचकाफल २तोलादालचीनी२तोलाधनियां४तोलापिपली ४ तोलानागरमोथा ४ तोला आसगन्ध४ तोला शतावरि ४ तोला तालमूली ४ तोला नागबला ४तोला बाला४तोला पत्रज४तोला कचूर४तोला जायफल ४तोला लवंग४तोला छोटीइलायची४ तोला बड़ीइलायची४ तोला पित्तपापड़ा ४ तोला चंदन ८ तोला शुंठि ५ तोला आंवला५तोला नागकेशर५तोलानेत्रबाला८तोलामिरच८तोला मिलायकूष्मांडाव-लेह ४ तोला रोज खानेसे अथवा जठराग्नि बलदेखि करि खानेसे रक्तपित्तको व शीतपित्तको व अम्लपित्तको व अरुचिको व अग्नि-मांद्यको व दाहको व तृषाको व प्रदरको रक्ताशको व पित्तज छर्दिको व पाण्डुरोगको व कामलाको व उपदंशको व बिसर्पको व अजीर्ण को व जीर्णके ज्वरको व बिषमज्वरको नाशकरै और यह बृंहण है व बलको बढ़ावेहै इसको विशेषकरि माटीकेपात्रमेंधरै ॥ चौथाप्रकार॥

कोहलाका रस ४०० तोला गौका दूध ४०० तोला आंवला का चूर्ण ३२ तोला इन्होंको मिलाय मन्दाग्नि पर पकावै घन रूपहो जबतक पीछे मिश्री ३२ तोला मिलाय पीछे २ तोला रोज़खानेसे यह कूष्माण्डावलेह रक्तपित्त को व आम्लपित्त को व दाह को व तृषाको व कामलाको हरैहै ॥ वासाखण्ड ॥ वासाकेपत्ते ४०० तोला पानी ३२०० तोलेमें मिलाय काढ़ाकरि चतुर्थांशरक्खै पीछेहड़ोंका चूर्ण १०२४ तोला मिश्री ४०० तोला मिलाय पकावै पीछे शीतल होनेपर शहद ३२ तोला वंशलोचन १६ तोला पिपली ८ तोला नागकेशर तमालपत्र इलायची दालचीनी इन्होंका चूर्ण ४ तोला इन्होंको पूर्वोक्तमें मिलाय खाने से रक्तपित्तको व कासको व श्वास को व क्षतक्षयको व विद्रधिको व पेटके रोगोंको व गुल्मको व तृषा को व हृद्रोगको व पीनस को हरै इसकी खानेकी मात्रा २ तोला है और इसपरभोजन यथेच्छकरना चाहिये ॥उसीरासव॥ वाला४तोला नेत्रबाला ४ तोला लालकमल ४ तोला सिवनी ४ तोला नीला-कमल ४ तोला धवकेफूल ४ तोला राल ४ तोला पद्माख ४ तोला लोध ४ तोला मंजीठ ४ तोला धमासा ४ तोला पाढ़ा ४ तोला चिरायता ४ तोला कटुकी४तोला बड़कीछाल४ तोला गूलर४तोला कचूर ४ तोला पित्तपापड़ा ४ तोला सफ़ेदकमल ४ तोला परवल ४ तोला कांचन वृक्षकी छाल ४ तोला जामन की छाल ४ तोला मोचरस ४ तोला दाख ८० तोला धवके फूल ६४ तोला इन्होंका चूर्णकरि २द्रोणभरि पानीमें मिलाय पीछे खांड ४०० तोला शहद ४०० तोला मिलाय पीछे बरतनके भीतर जटामांसी मरीच इन्हों केचूर्णसे धूपदेइ पीछे आसवको घालिधरै पीछेपीनेसे यहउसीरादि आसवरक्तपित्तको व पाण्डुको व ववासीरको व कृमिको व शोथको हरै है॥ वमन॥ नागरमोथा,इन्द्रयव,मुलहठी,मैनफल,दूध,शहद,शीतल गार इन्होंको मिलाय पानकरि वमन करनेसे रक्तपित्तको नाशकरैहै अथवा मुलहठीमें शहद मिलाय पीकरि वमन करनेसे रक्त पित्त जावै ॥ आरग्वधादिरेचन ॥ अमलतास, आंवला इन्होंके रेचनसे अथवा निसोत हड़ोंकेकाढ़ामें शहद खांड मिलाय पीनेसे रेचनहोय

रक्तपित्तजावे अथवा मुलहठी, सिवनी इन्होंकीबराबरि खांड़मिलाय खानेसे दस्तहोय रक्तपित्त जावे अथवा बाला, खजूर, मुनक्का दाख मुलहठी, फालसा इन्होंके काढ़ा में खांड़ मिलाय पीने से रक्त पित्त जावै अथवा धानकी खीलोंका चूर्णकरि शहद घृत मिलाय खानेसे ऊर्ध्वगत रक्तपित्तको व तृषाको नाशै अथवा गांठवाला रक्त पित्त में परेवा की बीटमें शहद मिलाय खानेसे आरामहो और जिसके बहुत ज्यादह लोहू निकसे वह शहद में केशर को मिलाय खावे॥ खदिरादिलेह॥ खैर शाल करेल सांवरी इन्होंके फूलोंकेचूर्ण में शहद मिलाय खानेसे रक्तपित्तजावे॥ उदुम्बरादिलेह॥ पक्केगूलरके फल काश्मरीहड़ खजूरकेफल मुनक्कादाखइन्होंकाचूर्णकरि शहदमिलायखाने से पृथक्पृथक् रक्तपित्तको हरैहै इसमें संशयनहीं ऐसे जाननायोग्य है॥ खंडकादिअवलेह॥ शतावरि ४ तोला मुंडी ४ तोला खरैठी ४ तोला गिलोय ४ तोला दालचीनी ३० तोला पुष्करमूल ३० तोला भारंगी ३० तोला बासा ३० तोला छोटी कटैली ३० तोला बड़ी कटैली ३० तोला खैरकीजड़ ३० तोला इन्होंकोकूटि १०२४ तोले पानीमें काढ़ाकरि अष्टमांश रक्खे पीछे सोनामाखी की भस्म ४८ तोला सोनाभस्म ४८ तोला लोहाभस्म ४८ तोला खांड़ ६४ तोला घृत६४ तोला इन्होंको मिलायलोहा के कराहमें पकावे गुड़के पाक सरीखा हो तब बंशलोचन ४तोला बायविड़ंग ४ तोला पिपली ४ तोला शुंठि ४ तोला जीरा ४ तोला स्याहजीरा ४ तोला ककड़ीके बीज ४ तोला हड़ ४ तोला बहेड़ा४तोला आंवला४तोला धनियां ४ तोला मिरच ४ तोला पिपली४तोला नागकेशर ४ तोला मिलाइ चिकनेबर्त्तनमें घालिरक्खे पीछे १ तोला रोज़ दूधकेसंग प्रभात में खावे ऊपर भारी अन्नका भोजन करै यह खंडाद्यवलेह रक्तपित्तको व रक्तप्रवाहको व रक्तशूल को व रक्तातीसार को व रक्तप्रमेहको व भगंदरको व बवासीर को व सूजनको व अम्लपित्तको व क्षयको व कुष्ठको व गुल्मको व वातरक्तको व प्रमेहको व शीतपित्तको व छर्दि को व कृमिको व पांडुरोगको व प्लीहाको व पेटकेरोगोंको व अफराको व मूत्रकृच्छ्रको नाशकरै और यहनेत्रोंको हितहै औरबलको व वीर्य्य

को बढ़ावेहै और मंगल रूपहै प्रीतिको बढ़ावेहै बंध्याको पुत्रदेइ है कामदेवको व जठराग्निको बढ़ावेहै लक्ष्मीको बढ़ावेहै शरीर को हलका करैहै और इसपर बकरा, परेवा, तीतर, ककेरा, शशा, मृग कृष्णहरिण इनजीवोंका मांसखाना हितहै और गोला, दूध, कुरडू चाकवत्, सूकामूल, जीवंती, परवल, बैंगन, आंब, खजूर, अनार ककारादि५ जलजन्तुओंका मांस ये पदार्थ और अनूपदेशका मांस इन्होंको वर्जिदेवै ॥ रक्तपित्तकुठाररस ॥ पारा, गंधक, मूंगा, सोनामाखी, सीसाभस्म ये समान भागले पीछे चन्दनके रसमें ३ भावनादेइ पीछे कमल के रसमें ३ भावनादेइ पीछे मालती के रसमें ३ भावनादेइ पीछे बासाके रसमें ३ भावनादेइ पीछेधनियां के रसमें ३ भावनादेइ पीछेगजपिपलीकेरसमें ३ भावनादेइ पीछे शतावरीके रसमें ३ भावनादेइ पीछे शाल्मलिकेरसमें ३ भावनादेइ पीछेबड़की जड़के रसमें ३ भावना देइ पीछे गिलोयके रसमें ३ भावनादेइ ऐसे रक्तपित्त कुठाररस सिद्धहोवैहै यह १ माशा बासाकेरसमें व शहद में मिलाइ खाने से रक्तपित्त को नाशकरै इसके समान भूतल में कोई औषध रक्तपित्तनाशक नहीं है ॥ वासासूत ॥ बासाके पत्तोंका रस ४ तोला, पाराकी भस्म ३ रत्ती मिलाइ १ तोला शहद मिलाय खानेसे रक्तपित्तजावै ॥ बोलपर्पटीरस ॥ पारा, गंधक, बोल ये बराबर भागले चूर्णकरि लोहके पात्रमें तपाइ गोबर ऊपर केलाका पत्ताधरि उसपर द्रव्य गेरि दूसरे केलाके पत्तेसेढांकि पीड़न करै पीछे यहरस ६ रत्तीले शहद खांड़में मिलाइ खानेसे रक्तपित्तको व बवासीरको व रक्तस्रावको व योनिस्रावको नाशकरै ॥ सुधानिधिरस ॥ गन्धक, पारा, सोनामाखी, लोह ये सब समान भाग लेइ पीछे लोहाके पात्रमें त्रिफलाके रसके संग इन्होंको खरलकरै पीछे गोलीबांधि रात्रिमें खावै यह रक्त पित्तको नाशकरै ॥ आटरूषाद्यक ॥ वासाके अर्कमें दाख, हड़, खांड़मिलाइ पीनेसे अथवा बासा के रसमें शहद मिलाइ पीनेसे अथवा बासा के रसमें लोध, राल मुनक्कादाख, चन्दन मिलाइ पीनेसे अथवा अनारके फूलोंके रस को पीनेसे अथवा मुनक्का दाखके रसको पीनेसे अथवा आम

कीगुठली के रसको पीनेसे रक्तपित्त सब तरहका जावै॥ शतावरि घृत॥ शतावरि, अनारफल, अमली, कंकोल, मुलहठी, भूमि कोहला, त्रिजौराका पंचांग इन्होंका कल्ककरि चौगुना दूध मिलाय घृतको सिद्धकरि खानेसे कासको व ज्वरको व उन्मादको व मलबद्धताको व शूलको व रक्तपित्त को नाशकरै॥ दूर्वादितैल॥ दूव नींबफल, मजीठ, दाख, ईखकारस, चन्दन, सफेदसारिवा, नागरमोथा, हलदी ये समान भागले तेल ६४ तोला, दूध २५६ तोले मिलाइ तेलको सिद्धकरि मालिश करने से रक्त पित्तको हरै और बलबढ़ावै, बातकोहरै और यहदूर्वातैल शरीरको सोनासमान कांतिवालाकरै॥ दूसराप्रकार॥ दूब, निंबोली, उड़द, कुलथी, बंशलोचन मोचा, अघाड़ा, खरमंजरी, सहदेईकी जड़ इन्होंको कूटि अठगुना पानीमें काढ़ाकरि चतुर्थांश तैल मिलाय तैलको सिद्धकरि मालिश करनेसे अफारा को नाशकरै॥ रक्तपित्तमेंपथ्य॥ जो नीचेले होयके जायतो वमन करावै और जो ऊपर अर्थात् मुख आदि में होकरि निकले तो विरेचन अर्थात् दस्त कराना योग्य है और जो दोनों मार्गों से निकले तो लंघन कराना उचितहै पुराने साठीधान, कोदो कंगुनी, समा, यव, तृणधान्य, मूंग, मसूर, चना, अरहर, बनमूंग ये सब पुराने पथ्यहैं चिंकुट और वर्म्मीनाम मछली, शशा, पिंडकी हरिण, एण, लवा, बगला, कबूतर, बटेर, मुरगा, कालपुच्छ, श्वेत तीतर इन्होंकामांस और कसायली बस्तु, गौ और बकरीका दूध तथा घृत, भैंसका घृत, कटहर, चिरौंजी, केलेकेफल, जल चौराई तथा चौलाई, परवर, बेतकीकोंपल, अदरख, पुराने कुम्हड़ेका फल पकाताड़काफल, ताड़फल के बीजकाजल, बासा, स्वादु तथा तीखे रस, अनार, छुहारा, आमला, सौंफ, नारियल, कसेरू, सिंघाड़ा पुष्करमूल, कैथ, कमलकीजड़, फालसा, चिरायताशाक, नींबकी पत्ती, तूंबी, इन्द्रयव, धानकी खीलोंकासत्तू, दाख, मिश्री, शहद ईखके रसकी बस्तु, शीतलजल झरणा आदिकाजल, जलका छिड़कना, न्हाना, सौबारका धोयाघृत, तैललगाना, शीतललेप शीतलपवन, चन्दन, चन्द्रमाकी किरण, मनको सुहावनी अच्छी

कथा, फूहारोंकोघर, अच्छीशीतल भूमिमेंघर, वैडूर्य्य मोतीआदि मणियोंको पहिरना, केला, नीलकमल और कमलके पत्तोंकीसेज,रेशमी कपड़ा, अच्छा शीतलवायु, प्रियंगु, चन्दनचर्चित अंगवाली सुंदर स्त्रियोंका आलिंगन, तलाव, नदी, कुंड, चन्द्रोदय, तुषार के कण और अच्छे शीतल पहाड़ी झरनों का कानों में सुखदेनेवाला कीर्त्तन, नदीके तटकाजल, कपूर येसब पदार्थ रक्तपित्तमें पथ्य हैं॥ अथअपथ्य॥ दण्डकरना, मार्गचलना, सूर्य के किरण, तीक्ष्णकाम क्षोभ, वेगकारोकना, चंचलपन, हाथी घोड़ेका चढ़ना, स्वेदन, रुधिर निकालना, धुवांपीना, मैथुन, क्रोध, कुलथी, गुड़, बैंगन, तिल, उड़द सरसों, दही, खार, कुएंकापानी, पान, खस, मदिरा, लहसनसेभी विरुद्ध भोजन, कडुये, खट्टे, खारी और विदाही पदार्थ ये सब रक्तपित्त में अपथ्य हैं॥

इतिश्रीवेरीनिवासकरविदत्तवैद्यविरचितानिघंटरत्नाकर भाषायांरक्तपित्तप्रकरणंसमाप्तमगात्॥

क्षयीमें कर्मविपाक॥ ब्रह्महत्या करनेवाला व खेत, बाग, स्त्री इन्हों का नाश करनेवाला क्षयरोगी होवे॥ प्रायश्चित्त॥ कदली दान। रोगी अपने वित्तके अनुसार सोनाको केलाके वृक्ष पत्तों व फलों सहित बनवाइ पीछे कपड़ा व सूत्रसे लपेटि तैयार करे अथवा ४ तोले सोनेका केलाका वृक्ष बनावे पीछे नानाप्रकार के पकान्नों से ब्राह्मणों को भोजन करवाइ पीछे दरिद्री ब्राह्मण जो ब्रह्मज्ञान में भी निष्ठहो व धर्मका जाननेवाला व शांतरूप ऐसे शुद्ध ब्राह्मणकोपूजाकरिपीछे। हिरण्यगर्भपुरुष परात्परजगन्मय। रंभादानेनदेवेश क्षयंक्षपयमेप्रभो॥ इस मंत्रको पाठकरि सोनेके केला को दान देवे पीछे पुण्याहवाचन करावे पीछे मित्र व बंधुजनों के संग आप भोजनकरे॥ ब्रह्मचर्यादियोग॥ जो धर्मशास्त्र को जाने विना लोभसे किसी का प्रायश्चित्त करावे उसके राजयक्ष्मा रोग होवे॥ प्रायश्चित्त॥ रोगी अपने शरीर के समान सोनाकी मूर्त्ति राजय-

क्ष्माकी बनाइ शरीर कृशहो और तर्जनीमें उस मूर्त्तिके शंखधारण करावे और ३ नेत्र व २ जाड़करावे पीछे उस मूर्त्तिकोब्राह्मण को दानदेवै ॥ ज्योतिःशास्त्रभिप्राय ॥ ब्रह्मचर्य्य को रखनेसे व दानकरनेसे व तपकरनेसे व देवताका पूजन करने से व सत्य बोलने से व आचार करनेसे व सूर्य्यकी पूजादि करने से व वैद्य व ब्राह्मणों की पूजन से राजरोग जावै ॥ दूसराप्रकार ॥ जिसके जन्मपत्र में सूर्य्य क्षेत्रमें बुधहो अथवा सूर्य्य के संगहो उसको कुष्ठ, क्षयी कंडू, भगंदर ये रोगहों और हाथीआदि से भयहो देवपूजादि योग से सुखहोइ अथवा जिसकी जन्मपत्रीमें चंद्रमाके क्षेत्रमें बुधहो उसको क्षयीरोग कुष्ठ पांडु ये उपजें ॥ शास्त्रार्थ ॥ इसरोगवाला देवताकी पूजा हमेशह करि वैद्य गुरुओं में भक्ति रक्खै औरबकरी के मांस व दूधको हमेशह खानेसे बहुत कालतक धीरजवान् जीवै । और जो वैद्य उपद्रवको देखि शास्त्रके अनुसार इलाजकरै वहइस रोगमें श्रेष्ठ है और कुत्सित वैद्यकी औषध लेवे नहीं औ विरुद्ध औषध भी रोगीलेवे नहीं ॥ गीतादिउपाय ॥ गीत बाजा इष्ट पदार्थ प्रियस्तुति आनंददायक पदार्थ आश्वासन वचनगुरुसेवा येसब राजरोग को हरैहैं ॥ राजयक्ष्मानिदान ॥ मल मूत्र अधोवायु को रोकनेसे और वीर्य्यके क्षीणपनेसे और घना साहसके करनेसे और बिना समय घना भोजन करनेसे यह उपजे है सो इस रोगमें कफ प्रधानहोवैहै सो वह कफ बहुत स्त्रीसंगकरने से यह त्रिदोष राजरोग पैदा होय है यह बहने वाली नाड़ियोंको रोकि वीर्य को नाश करिधातुओं को नाशैहै तब वहमनुष्य दिनादिन सूखता जावै ऐसे राजरोगकी उत्पत्तिहै और यहरोग पहिले चन्द्रमा के हुआथा इस वास्ते इसको राजयक्ष्मा कहते हैं ॥ पूर्वरूप ॥ खांसी श्वास अंगमें पीड़ा कफकाथूकना नासिका व तालुवाका शोष वमन अग्निकी मन्दता पीनस येहों और नींद बहुत आवै और नेत्रसफ़ेद रंगहोजावैं और मांसखाने की इच्छाहो और स्त्रीसंग करनेकीइच्छा बनी रहै और स्वप्नमें काक तोता शाल शिदरी मयूर गीध बानर कीरल काठ इन्होंपै आपाको चढ़ा मालूमकरै और सूखीनदी स्वप्नमें दीखे

और स्वप्न में सूखे वृक्षोंको दावाग्नि से जलते हुये देखे ये लक्षण राजयक्ष्माके पूर्वरूपके हैं॥ राजयक्ष्माकालक्षण॥ कंधा व पसवाड़ा में संतापहो और हाथपैर जलें और सर्वांगमें ज्वररहै तौ जानिये राजरोग है॥ वायुकेराजरोगकालक्षण॥ स्वरभेदहो और पसवाड़ा व कांधा में संकोचहो तो राजरोग वायु का जानिये॥ पित्तकेराजरोगकालक्षण॥ ज्वरहो, दाहहो, अतीसार हो और मुखमें लोहूआवै तो राजरोग पित्तकाजानिये॥ कफकेराजरोगकालक्षण॥ माथाभारीरहै और भोजनमें अरुचिहो खांसीहोय और कंठसे बोलाजावे नहीं तो राजरोग कफकाजानिये। और ये एकादश उपद्रवोंसहित राजरोगहो अथवा कास अतीसार पसुली शूल अरुचि ज्वर इनछः उपद्रवों सहित राजरोग हो अथवा कासज्वर, लोहूविकार इनउपद्रवों सहित राजरोगहो ऐसे रोगी का इलाज वैद्य यश चाहनेवाला करे नहीं॥ पुनःअसाध्यलक्षण॥ जो एकादश उपद्रवों सहित वा ६ उपद्रवों सहित वा ३ उपद्रवों सहित राजरोगमें मांस बलनाशहो ऐसे को असाध्य जानो अथवा जो राजरोगी भोजन खावै और दिन २ सूखताजाय और अतीसारयुतहो और पेट में और अंडकोशमें सूजनहो ऐसा राजरोगी महाअसाध्य होवै है॥ साध्यलक्षण॥ जो राजरोगी के ज्वर नहींहो और बलवान्‌हो और चिकित्साको सहनकरै व विचारवान्‌हो और जठराग्नि जिसकी दीपनहो वह साध्य जानिये॥ असाध्यलक्षण॥ नेत्र सफेदहों और अन्न में अरुचिहो और श्वासरोग बढ़ाहुआहो। और कष्टकरि बहुत मूत्रकरै ऐसा राजरोग वाला निश्चयमरै। इसमें संशयनहीं है यह धन्वंतरिजी महाराजजी को मतहै ऐसेजानो॥ क्षयहारकपदार्थ॥ बैंगन करेला तेल बेलफल राई स्त्रीसंग दिनमेंशयन कोप ये सब क्षयवाला त्यागदेवै। और चावल यवका सत्तू गेहूं मूंग और चार पैरोंवाले जानवरों में स्त्रीजाति और पक्षियोंमें पुरुषजाति पक्षी इन्होंका मांस ये सब क्षयवालेको हित हैं और बकरीका मांस व बकरीका दूध व बकरीका घृत खांड सहित व बकरीकी सेवा व बकरियों के मध्यमें रहना ये सब राजयक्ष्मा को नाश करते हैं। और रागके गावनों से व बाजा बजाने व सुनेसे

व अच्छे शब्दको सुननेसे व अपनी स्तुति सुनने से व प्रियवचन सुनने से व हर्ष देनेवाले बचनोंको सुनने व आश्वासनसे व गुरुकी पूजाकरने से राजरोग जावे है॥ षडंगयूष॥ औषध से दुगुणा मांस पानी आठगुणा पकाया घृत चतुर्थांश ये मिलाय यूषकरि पीने से राजरोग जावे॥ ज्वरदाहीक्रिया॥ जो ज्वरनाशक क्रिया पीछे कही हैं वही क्रिया राजरोगमें ज्वर व दाहहो तो करै॥ वर्कभक्षण॥ सोना के वर्क १ नोनीघृत मिश्री शहद इन्होंको मिलाय खानेसे क्षयीरोग नाशहो इस प्रयोगके समान और कोई प्रयोग नहीं है और ग्रन्थ-कार शिवजीकी सौगन्दखाइ कहताहै कि यह प्रयोग कभी भी नि-ष्फल होवे नहीं॥ च्यवनप्राश्यावलेह॥ पाटला ४ तोला अरणी ४ तोला सिवनी ४तोला बेलमूल ४ तोला सहोंजना ४ तोला गोखुरू ४ तोला शालपर्णी ४ तोला पृष्ठिपर्णी ४ तोला छोटीकटैली ४ तोला बड़ीकटैली ४ तोला पिपली ४ तोला काकड़ासिंगी ४ तोला मुनक्का दाख ४ तोला गिलोय ४ तोला हड़ ४तोला चिकणामूल ४तोला भूमि आंवला ४ तोला बासा ४ तोला ऋद्धि ४ तोला वृद्धि ४ तोला जीवक ४ तोला ऋषभ ४ तोला हरणबेल ४ तोला नागर-मोथा ४ तोला पोहकरमूल ४ तोला काबलीमूल ४ तोला रान-मूंगी ४ तोला रानउड़द ४ तोला सांठी ४ तोला काकोली ४ तोला क्षीरकाकोली ४ तोला कमल४तोला मेदा ४तोला महामेदा ४ तो० इलायची ४तोला कालाअगर४तोला ये सबलेइ मोटाचूर्णकरिपीछे बड़े पात्रमें घालि और ५०० आमले मिलाय १ द्रोणभरि पानी मिलाय पकाय अष्टमांश रक्खै पीछे आंवलों को छीलि साफकरि नवीन कपड़ामें घालि मर्दनकरै पीछे घृत२८ तोलामें आंवलों को भूनि पिछलाकाढ़ामिलावे पीछे२००तोला खांड मिलावे पीछे अव-लेह सरीखा पाकबनाय पिपली८तोला बंशलोचन१६तोलादाल-चीनी १ तोला इलायची १ तोला तमालपत्र१तोला केशर१तोला ये मिलाय शहद २४ तोला मिलावे ऐसे च्यवनप्राश्यअवलेह बनैहै यह च्यवनमुनिने कहाहै इस अवलेहको जठराग्निका बल देखि खावे यह रसायनहै और यहबालकको व वृद्धको व क्षतक्षीणको व

नारीक्षीणको व शोषीको व क्षयरोगीको व स्वरक्षीण को हितहै और कासको व श्वासको व पिपासाको व वातरक्त को व उरोग्रह को व वातपित्तको व धातुविकारको व मूत्रदोषकोहरै और बुद्धि व स्मृतिको बढ़ावै और स्त्रीसङ्गकी इच्छाउपजावै और कांति प्रसन्नताको बढ़ावै और इसके सेवनसे अजीर्ण होनेदेनहीं ॥ एलादिचूर्ण ॥ एलाची तमालपत्र नागकेशर लवंग ये सब १ भाग खजूर २ भाग मुनक्का दाख मुलहठी खांड़ पिपली ये सब ४ भाग इन्होंका चूर्ण करि शहद में मिलाय खानेसे क्षयीको नाशकरै ॥ अश्वगन्धादिचूर्ण ॥ असगन्ध ४० तोला शुंठि २० तोला पिपली १० तोला मिरच ५ तोला चातुर्जात १ तोला दालचीनी १ तोला भारंगीकी जड़ १ तोला तालीसपत्र १ तोला कचूर १ तोला जीरा १ तोला अजमान १ तोला कायफल १ तोला जटामासी १ तोला कङ्कोल १ तोला नागरमोथा १ तोला रास्ना १ तोला कुटकी १ तोला जीवंती १ तोला कूट १ तोला इन्होंका चूर्णकरि और इनसबोंकी बराबर खांड़मिलाय इसचूर्ण को प्रभातमें गरम जलकेसङ्ग खावै वातक्षयको व पित्तक्षयको नाशकरनेवास्ते इसचूर्णमें बकरी व गौका घृत मिलायखावै और शहदयुत चूर्णको खानेसे कफक्षय जावै और नोनीघृत युत चूर्ण को खानेसे प्रमेह जावै और शिरके भ्रमणमें व पित्तके रोगमें गोखुरू मिलाय चूर्णको खानेसे सुखहोवै और यह चूर्ण विशेषकरि क्षतक्षीणको व क्षीणदेहको बलदेयहै और मेदरोगको व पेटके रोगोंको व मन्दाग्नि को व कुक्षि शूलको व पेट शूलको नाशै और यह चूर्ण यथोक्त अनुपानोंकेसङ्गखानेसे सब रोगोंकोहरै ॥ द्राक्षादिचूर्ण ॥ मुनक्का दाख, धानकीखील, मिश्री, मुलहठी, खजूर, सारिवा, वंशलोचन, वाला, आंवला नागरमोथा, चंदन, तगर, कङ्कोल, जायफल, दालचीनी, तमालपत्र एलाची, नागकेशर, पिपली, धनियां ये सबबराबरलेइ और इनसबों के बराबर खांड़ मिलाय चूर्णकरि प्रभात कालमें खानेसे पित्तको व पित्तदाहको व मूर्छाको व छर्दिको व अरुचिकोहरै और शरीरकी कांतिको बढ़ावै और पांडुको व कामला को व रक्त पित्तको व उदर रोगको व दाहको व अरुचिको व राजयक्ष्मा को व रक्तप्रमेहको व

योनिदोषको व रक्तकी बवासीरको व अन्तर्वृद्धिको व बिद्रधिकोहरै और यह द्राक्षादिचूर्ण सबचूर्णोंमें उत्तमहै॥ यवादिचूर्ण॥ यवगेहूंइन्हों के चूर्णको दूधमें पकाइ पीछे घृत खांड़ शहद मिलाय खानेसे क्षयी रोगजावै॥ कर्पूरादिचूर्ण॥ कर्पूर दालचीनी कङ्कोल जायफल जावित्री ये सम भाग लेइ पीछे लवंग १ भाग जटामांसी २ भाग मिरच ३ भाग पिपली ४ भाग शुंठि ५ भाग लेइ चूर्णकरि पीछे सबों के बराबरकी खांड़ मिलाय खानेसे दाहको व क्षयीको व कास को व बिवर्णताको व पीनस को व श्वासको व छर्दि को व कण्ठरोग को नाशै यह अनुपानोंके सङ्ग औषधको नहीं खानेवाला रोगीको हित है॥ त्रिकट्वादिचूर्ण॥ शुंठि मिरच पिप्पल त्रिफला एलाची जायफल लवंग इन्होंके चूर्णके बराबर पोलादकी भस्म लेइ पीछे शहद में मिलाय हमेशह खानेसे कासको व श्वासको व क्षयीको व प्रमेहको व पांडुरोगको व भगंदरको व ज्वरको व मन्दाग्निको व सूजन को व मोहको व संग्रहणीको नाशकरै॥ शंखपोटलीरस॥ पारा १ भाग गन्धक १ भाग शंखकीभस्म ४ भाग कौड़ीकी भस्म ६ भाग मिरच १२ भागसुहागाखारचौथाईभागइन्होंकामहीनचूर्णकरि १॥ माशाघृतके संग खानेसे क्षयीको नाशकरै॥ शिलाजतयोग॥ ॥ त्रिफला के काढ़ामें शिलाजीत को सिद्धकरि पीछे गिलोयके रसमेंसिद्धकरि पीछे दश-मूलकेकाढ़ामें सिद्धकरि पीछे स्थिरादि काढ़ामें सिद्धकरि पीछे काको-ल्यादिकाढ़ामें सिद्ध करि ऐसे शिलाजीतकेखानेसे क्षयीको नाशकरै है॥ पिप्पल्यासव॥ पिपली ४ तोला मिरच ४ तोला चबक ४ तोला हल्दी ४तोला चीता४तोला नागरमोथा४तोला बायबिड़ंग४तोला सुपारी ४ तोला लोध्र ४ तोला पाढ़ा ४ तोला आंवला ४ तोला राल ४ तोला वालुक ४ तोला नेत्रबाला ४ तोला सपेद चन्दन ४ तोला कूट ४ तोला लवंग ४ तोला तगर ४ तोला जटामांसी ४ तोला दालचीनी ४ तोला इलायची ४ तोला तमालपत्र ४ तोला धौकेफूल अथवा राल ४ तोला नागकेशर ४ तोला इन्होंका चूर्ण करि २ द्रोणभर पानीमें पकाय पीछे ३ तोलाभर गुड़ मिलावै पीछे धौकेफूल ४० तोला दाख २४० तोला मिलायपीछे माटीके बासन

में घालिरक्खे कईदिन पीछे जठराग्निका बलदेखिकै पीनेसे क्षयी को व गुल्मको व उदररोगको व शरीरकी कृशताको व संग्रहणी को व पांडुरोगको व बवासीरको यह पिप्पल्यादि आसव इन्होंको नाशकरै है ॥ कृष्णाद्यवलेह ॥ पिपली, मुनक्का,दाख, मिश्री, शहद तेल इन्हों को मिलाय खाने से क्षयी रोग नाश होय है अथवा असगन्ध, पिपली, खांड़, शहद इन्होंका लेह करि खानेसे क्षयी रोग जावे ॥ रास्नादि चूर्ण ॥ रास्ना, कपूर, तालीसपत्र, मंजीठ,शि-लाजीत, शुंठि, मिरच, पिपली, त्रिफला, नागरमोथा, बायविड़ंग चीता ये समभागले और लोहभस्म १४ भागले चूर्णकरि घृत शहदमें मिलाय खानेसे खांसी को व ज्वर को व श्वासको व राज-यक्ष्माकोनाशै। और बल वर्ण अग्नि इन्होंकोबढ़ावै और दोषोंको नाश करै ॥ अगस्त्यहरितकी ॥ बड़ीहड़ १००लेवै और यव १ आ-ढ़कभरले पानीमें काढ़ाकरै पीछे दशमूल ८०तोला चीता ८ तोला पिपलामूल ८ तोला ऊंगा ८ तोला कचूर ८ तोला कोचकेबीज ८ तोला शंखपुष्पी ८ तोला भारंगी ८ तोला गजपिपली ८ तोला खरैटी ८ तोला पुष्करमूल ८ तोला इन बीस औषधोंको कूटि और ५ आ-ढ़क पानी में काढ़ाकरि चतुर्थांश रक्खै पीछे इसकाढ़ाको पूर्वोक्तकाढ़ा में मिलाय पीछे १०० हड़ोंको काढ़ामें पकाय पीछे तेल ३२ तोला घृत ३२ तोला गुड़ ४०० तोला मिलाय पाकबनाय पिपली १६ तोला शहद १६ तोला मिलावे पीछे २ हड़ इसपाक के संग खाने से क्षयीको व कासको व ज्वरको व श्वासको व हुचकी को व बवासीर को व अरुचिको व पीनसको व संग्रहणीको व बलीपलितको नाशै और बलवर्णको बढ़ावैहै यह अगस्त्यमुनिने सब रोगोंके नाशवास्ते कहीहै ॥ आटरूषादिकषाय ॥ बासा, असगंध, शिरसकीजड़, सांठी इन्होंके काढ़ामें दूधको सिद्धकरि पीनेसे क्षयीरोग जावै ॥ अश्वत्थ वल्कलादिलोह ॥ पीपलकीछाल, शुंठि, मिरच, पिपली, मंडूर इन्हों के चूर्णमें गुड़मिलाय खानेसे क्षयीरोग नाशहोवै ॥ अश्वगंधादिचूर्ण॥ असगन्ध, गिलोय,शतावरी, दशमूल, बाला, गंगेरन, पुष्करमूल इन्होंका चूर्ण दूधके संग खाने से क्षयीको हरै है ॥ ककुभादि

चूर्ण ॥ ककुभ की छाल, शुंठि, खरेटी, आंवला, एरंडबीज इन्हों के चूर्णसें शहद घृत मिलाय खानेसे क्षयीको हरैहै ॥ तालीसादिचूर्ण ॥ तालीसपत्र १ भाग मिरच २ भाग शुंठि ३ भाग पिपली ४ भाग दालचीनी आधा भाग इलायची आधा भाग पिपली ८ भाग इन सबों के समान मिश्री मिलाय चूर्णकरि खानेसे खांसीको व श्वास को व अरुचिको व पांडुको व हृद्रोगको व संग्रहणीको व प्लीहाको व शोषको वज्वरको हरै और अग्निको दीपन करै ॥ नवनीतयोग ॥ खांड, शहद, नोनीघृत इन्हों को मिलाय खानेसे अथवा दूध शहद, घृत इन्होंको मिलाय खानेसे क्षयीजावै ॥ सितोपलादिचूर्ण ॥ मिश्री १६ तोला बंशलोचन ८ तोला पिपली ४ तोला इलायची २ तोला दालचीनी १ तोला इन्होंका चूर्णकरि शहद घृत मिलाय खानेसे यह सितोपलादि चूर्ण कासको व श्वासको व क्षयी को व हाथ,पैर, अङ्ग इन्होंके दाहको व मन्दाग्निको व स्पर्शज्ञान को व पसली शूलको व अरोचक को व ज्वरको व ऊर्ध्वगत रक्तविकार को व पित्तको हरै है ॥ तवराजादिचूर्ण ॥ मिश्री, पिपली, दाख, खजूर, मुलहठी, छोटी इलायची, लवंग, तमालपत्र, नागकेशर इन्हों के चूर्ण में शहद मिलाय खानेसे भ्रमको व दाहको व मस्तक की पीड़ाको व क्षयी रोगको नाशकरै इसमें संशय नहींहै ॥ बासायोग ॥ जो मनुष्यों की उमर बाकीहोय तो बासा अकेला शहदमें मिलाय खानेसे रक्त पित्तको व श्वास को व क्षयी को नाश करैहै ॥ द्राक्षादिचूर्ण ॥ दाख, खजूर, पिपली इन्होंके चूर्णमें घृत, शहद मिलाय खानेसे ज्वरको व कासको व सूजनको हरैहै ॥ स्वर्णमाक्षिकादिचूर्ण ॥ सोनामाखी, बायबिडङ्ग, शिलाजीत, लोह इन्होंके चूर्णमें घृतशहद मिलाय खानेसे उग्र क्षयीको नाशकरै इसपै पथ्यसे रहै ॥ शिलाजीतादिचूर्ण ॥ शिलाजीत, शुंठि, मिरच, पिपली, सोनामाखी, लोह भस्म इन्होंके चूर्ण में शहद, खांड, दूधके सङ्ग खानेसे क्षयी रोग श्वास जावै ॥ लाक्षाकूष्माण्डरस ॥ कोहलाकी गिरीके रसमें लाख २ तोले पीसि पीने से रक्तक्षय का नाशहो ॥ मार्कवादिचूर्ण ॥ भृंगराज ८ तोला आंवला ८ तोला सोनामाखी ८ तोला सोंठी ८ तोला

वंशलोचन ८ तोला लज्जावन्ती ८ तोला शालिपर्णी ८ तोला बासा ८ तोला धमासा ८ तोला इन्हों से आधा भाग दालचीनी तमालपत्र, इलायची, मिरच, तालीसपत्र, पिपली इन्हों का चूर्ण ले और इससे आधाभाग शिलाजीत लेइ और इससे आधाभाग पाषाणभेद लेइ मिलाय चूर्णकरै पीछे सब चूर्णके बराबर तिलका चूनले पीछे सारोंके बराबर खांड़ मिलाय खावै ऊपर दूधमें घृत मिलाय पीवै यह क्षयीको व राजयक्ष्माको व कामलाको व बवासीर को व पथरीको व मूत्रकृच्छ्रको व महारोगोंको हरै और बलवीर्यको बढ़ावै॥ बलादिचूर्ण॥ खरैटीजड़,बिदारीकन्द,लघुपञ्चमूल,बड़कीछाल पीपलकीछाल,गूलरकीछाल,पापरीछाल,नांदरूखीछाल,सांठी,नागरमोथा,बंशलोचन,भृङ्गराज,जीवनीयगण मुलहठी येसब समान भागलेइ औरपिपली १०० तक्रमेंपीसिमिलावैपीछेसबचूर्णसेपांचवां हिस्सा गेहूंका चून व यवकाचून मिलावै और बंशलोचनके समान सफेद चावलोंका चूनमिलावै औरइतनाही सिंघाड़ाका चूनमिलावै पीछे इस चूर्णको खरैटीसे आदि मुलहठी पर्य्यंत औषधों के काढ़ा में भावनादेवै पीछे आंवलाके रसमें ३ भावना देवै पीछे गौके दूध में ३ भावनादेवै पीछे सबचूर्णकेसमान खांड़ मिलाय घृतमें भिगोय पीछे चूर्ण २ तोला शहदके संगखानेसे राजरोग को नाशै और यह चूर्ण जब जीर्ण होवै तब भोजनकरै और कड़ुआ खट्टा पदार्थ को त्यागै और दूध,घृत,खांड़,गेहूं, यव, चावल, मदिरा यपदार्थखावै॥ जातीफलादिचूर्ण॥ जायफल १ तोला बायबिड़ंग १ तोला चीताकी जड़ १ तोला तगर १ तोला तिल १ तोला तालीसपत्र १ तोला चन्दन १ तोला शुंठि १ तोला लवंग १ तोला इलायची १ तोला कपूर १तोला हड़ १तोला आंवला १तोला मिरच १तोला पिपली १तोला बंशलोचन १तोला दालचीनी १ तोला नागकेशर१तोला इलायची १तोला तमालपत्र १तोला भांग २८ तोला सबोंकेसमान खांड़मिलायखानेसे राजरोगको व श्वासको वकासको व संग्रहणीको वअरुचिकोवपीनसको वअग्निमन्दकोनाशकरै दृष्टान्तजैसेवृक्षोंको इन्द्रकावज्रकाटैतैसे रोगोंको यह चूर्णकाटैहै॥ शिवगुटी॥ शुद्ध शिला-

जीतको पहिले त्रिफलाके काढ़ामें ३ भावना देवै पीछे दशमूल,गि-
लोय, नेत्रबाला,परवल,मुलहठी,गोमूत्र,गौका दूध, दाख, शतावरी
बिदारीकन्द, पृष्ठिपर्णी, शालिपर्णी, स्थिरा, पुष्करमूल, पाढ़ा, कुड़ा
कीछाल, काकड़ी, कटुकी, रास्ना, नागरमोथा, बाला, जमालगोटेकी
जड़, चवक, गजपिपली, भूमिआंवला, जीवक, ऋषभ, मेदा,महा-
मेदा,ऋद्धि,वृद्धि,काकोली,क्षीरकाकोली ये सब प्रत्येक चारचारतोले
लेइ इन्होंका अलग अलग रसमें शिलाजीतकी तीनतीन भावना
देइ पीछे आंवला ८ तोला मेढ़ासिङ्गी ८ तोला शुंठि८तोला मिरच८
तोला पिपली ८ तोला भूमिकोहलाका चूर्ण ४ तोला तालीसपत्र
१६ तोला घृत १६ तोला तेल २ तोला शहद ३२ तोला खांड़
६४ तोला वंशलोचन ४ तोला तमालपत्र ४ तोला नागकेशर ४
तोला दालचीनी ४ तोला छोटी इलायची ४ तोला ये सब शिला-
जीतमें मिलाय पीसि १ तोला की गोली बनावे पीछे १ गोली रोज़
प्रभातकालमें व दिनको भोजनसे पहिले खावै ऊपर पथ्य मूंग की
दाल मूंगका यूष जांगलमांसका रस शीतल जल गरमजल शहद
मदिरा भारीअन्न गौकादूध इन्होंको खावे यह कामदेवको जगावे और
सूजनको व ग्रंथिको व बिडबंधको व कफको व छर्दिको व पांडुको व
श्लीपदको व प्लीहाको व बवासीरको व प्रदरको व प्रमेहपिटिकाको व
प्रमेहको व मूत्राश्मरीको व हृद्रोगको व अर्बुदको व अण्डवृद्धिको व
बिद्रधिको व यकृत्को व योनिरोगको व बातरोगको व उरुस्तंभ को
व भगंदरको व ज्वरको व तूणीवायुको व प्रतूणीवायु को व बातरक्त
को व उदर रोगको व कुष्ठको व किलासकुष्ठको व कृमिको व कास
को व श्वासको व उरक्षतको व क्षयीको व रक्तपित्तको व उन्मादको
व मदको व अपस्मार को व अति स्थूलताको व अति कृशताको व
आलस्यको व हलीमकको व मूत्रकृच्छ्रको व वलीपलितकोनाशैहै॥
लघुशिवगुटी॥ शुद्धशिलाजीत ३२ तोलालेइ पीछे कुड़ाछाल त्रिफला
निम्ब कडुपरवल नागरमोथा शुंठि इन्होंके काढ़ामें १ महीना तक
खरलकरि खांड़ ३२ तोला बंशलोचन ४ तोला पीपल ४ तोला आम-
ला ४ तोला काकड़ीबीज ४ तोला कटेलीका पंचांग ४ तोला दाल-

चीनी ४ तोला तमालपत्र ४ तोला इलायची ४ तोला शहद १२ तोला मिलाय गोली १ तोला तोलाभरकी बनावे और १ गोली रोज खावे ऊपर अनार दूध घृत यूष मदिरा आसव ये पीवे यह पांडुरोगको व कुष्ठको व ज्वरको व प्लीहाको व तमकको व बवासीरको व भगंदरको व सूत्ररोगको व मूत्रबंधी विकारोंको हरै और कोइक वैद्यों के मतमें इस नुस्खामें लोहभस्म ४ तोला अभ्रकभस्म ४ तोला मिलाय गोली बनाय खानेसे उग्रपांडु को व प्रमेहको व राजरोग को हरै है ॥ सूर्यप्रभागुटी ॥ दारुहल्दी १ तोला शुंठि १ तोला मिरच १ तोला पिपली १ तोला वायविडंग १ तोला चीता १ तोला वच १ तोला करंज १ तोला गिलोय १ तोला देवदारु १ तोला अतीस १ तोला निसोत १ तोला कटुकी १ तोला कोथिम्बर १ तोला अजमान १ तोला जवाखार १ तोला सुहागाखार १ तोला सेंधानोन १ तोला बिड़नोन १ तोला कालानोन १ तोला गजपिपली १ तोला चवक १ तोला भिलावा १ तोला तालीसपत्र १ तोला पिपलामूल १ तोला पुष्करमूल १ तोला चिरायता १ तोला भारंगी १ तोला पद्माख १ तोला जीरा १ तोला जायफल १ तोला कुड़ाकी छाल १ तोला जमालगोटाकी जड़की छाल १ तोला नागरमोथा १ तोला त्रिफला २० तोला शिलाजीत २० तोला गुग्गुल ८ तोला दालचीनी ४ तोला तमालपत्र ४ तोला इलायची ४ तोला लोहभस्म ८ तोला तांबाभस्म ८ तोला इन्हों के चूर्णमें शहद घृत मिलाय १६ माशाकी गोलीबनाइ खानेसे शोषको व कासको व उरक्षतको व तमकको व पांडुको व कामलाको व गुल्मको विद्रधिको व पसलीशूलको व उदर रोगको व स्त्री क्षयको व कृमिको व कुष्ठको व बवासीरको व विषमज्वरको व संग्रहणीको व मूत्रग्रहको नाशै और इन गोलियोंके ऊपर यथेच्छ भोजन करै इसके समान त्रिभुवनमें औषधनहीं है यह सूर्यप्रभागुटी ब्रह्माजी ने कही है ॥ गुडूच्यादिमोदक ॥ गिलोय के बारीक टुकड़े करि कुटवावे पीछे कपड़ामें घालि रस निचोड़े शनैःशनैः पीछे सुखाय शुद्ध शंख सरीखा चूर्णकरि बाला पीतबाला तमालपत्र कूट आंवला मुसली इलायची पित्तपापड़ा दाख केशर नागकेशर कमलकन्द

कपूर चन्दन रक्तचन्दन शुंठि मिरच पिपली मुलहठी धानकीखील असगन्ध शतावरी गोखुरू कौंचकेबीज जायफल कंकोल खुरासानी अजमान घृत पारा बंग लोह ये सम्पूर्ण समभाग लेइ दुगुनीखांड़ मिलाय प्रभातमें शहद शबके संग खानेसे क्षयीको व रक्तपित्तको व पाददाहको व रक्त प्रदरको व मूत्राघातको व मूत्रकृच्छ्रको व बात-कुंडली को व प्रमेहको व सोमरोगको नाशकरै और यह रसायन है व अमृत समानहै ॥ इक्ष्वादिमोदक ॥ लालईखका रस ६४ तोला शहद ६४ तोला बंशलोचन ६४ तोला खांड़ २०० तोला कुहिली १६ तोला मरीच १६ तोला दालचीनी १६ तोला तमालपत्र १६ तोला इलायची १६ तोला ये सब मिलाइ मंथानसे बिलोडनकरै पीछे चारमोदक चारचार तोलाके बनाय सुन्दर बरतनमें घालिधरै लड्डू दोनों बेले में अथवा एक मोदक हमेशा खानेसे हृद्रोग को व प्लीहाको व संग्रहणी को व मूत्रकृच्छ्रको व अपतंत्रको व अपस्मार व विषके उन्मादको नाशै और इसमें ब्रह्मचर्य्यसेरहै और राजयक्ष्मा को अवश्य हरैहै और बल पुष्टिको बढ़ावै और कृशशरीरवालों को बाजीकरणहै रसायन है ॥ द्राक्षासव ॥ मुनक्का दाख २०० तोला लेइ पानी ४०९६ तोलेमें पकाय चतुर्थांश काढ़ारक्खै पीछे शीतल होनेपर गुड़ ८०० तोला धव के फूल ८०० तोला बायबिड़ंग ४ तोला त्रायमाण ४ तोला पिपली ४ तोला दालचीनी ४ तोला इला-यची ४ तोला तमालपत्र ४ तोला नागकेशर ४ तोला मिरच४तोला ये मिलाय घृतकेचिकने बरतनमें घालि अग्नि बलदेखि पीनेसेका-सको व श्वासको व कंठरोगको व राजरोगको हरै और छातीफटीहुई कोजोड़ै और कोइक वैद्यके मतमें मुनक्का दाखसे चतुर्थांश धवके फूल मिलावै जब बीर्य बधै है ॥ खजूरासव ॥ खजूर ३२० तोला पानी २०४८ तोला लेइ काढ़ा चतुर्थांशकरै पीछे बरतनमें धूप देइ रसकोघालै पीछे थोर शेरणी धवकेफूल इन्होंका काढ़ाकरि मिलावै पीछे बरतनका मुखबंदकरि घड़ाको धरतीमें गाड़देवै १४ दिनपीछे काढ़ि रसकोपीनेसे राजरोगको व सूजनको व प्रमेह को व पांडुको व कामला को व संग्रहणीको व पांचप्रकार के गुल्मको व बवा-

सीर को नाशकरै ॥ दशमूलासव ॥ दशमूल २०० तोला पुष्कर-मूल १०० तोला हड़ ८० तोला आंवला १२८ तोला चीता १०० तोला धमासा ५० तोला गुडूच्यादि ४०० तोला विशाला २० तोला खैरसार ३२ तोला बिजौरा १६ तोला मजीठ ४ तोला मुलहठी ४ तोला कूट ४ तोला कैथ ४ तोला देवदारु ४ तोला वायविडंग ४ तोला चवक ४ तोला लोध ४ तोला जीवक ४ तोला ऋषभक ४ तोला मेदा ४ तोला महामेदा ४ तोला ऋद्धि ४ तोला वृद्धि ४ तोला काकोली ४ तोला क्षीरकाकोली ४ तोला पिपली ४ तोला जीरा ४ तोला गजपिपली ४ तोला चिकनी सुपारी ४ तोला पद्माख ४ तोला कचूर ४ तोला राल ४ तोला कावली ४ तोला जटामासी ४ तोला पित्तपापड़ा ४ तोला नागकेशर ४ तोला निसोत ४ तोला हल्दी ४ तोला रास्ना ४ तोला मेढ़ासिंगी ४ तोला सांठी ४ तोला शतावरी ४ तोला इंद्रयव ४ तोला नागरमोथा ४ तोला और इन सबोंसे चौगुने पानीमें काढ़ाकरि चतुर्थांश बाकी रक्खै पीछे दाख २४० तोला धवके फूल १२० तोला गुड़ १६ तोला शहद १२८ तोला मिलाय घीके चिकने बरतनमें घालि पहिले बरतनमें जटा-मांसी मरीचके चूर्ण की धूप देवै पीछे पिपली ८ तोला चन्दन ८ तोला बाला ८ तोला जायफल ८ तोला लवंग ८ तोला दालचीनी ८ तोला इलायची ८ तोला तमालपत्र ८ तोला नागकेशर ८ तोला कस्तूरी १ तोला धतूराबीज ४ तोला ये सब मिलाय बरतन को धरती में गाड़ै पीछे १५ दिन पीछे काढ़ि अग्नि बलदेखि रोजपीने से धातुक्षयको व पांचप्रकारके कासको व छःप्रकारके बवासीर को व आठप्रकारके पेटरोगको व प्रमेहको व महाव्याधिको व अरुचि को व पांडुरोगको व सम्पूर्णबातके रोगोंको व शूलको व श्वासको व छर्दि को व रक्तप्रदर को व अठारहप्रकार के कुष्ठको व मूत्रशर्करा को व मूत्रकृच्छ्रको व अश्मरीकोनाशकरै और कृशमनुष्यको पुष्टकरै और पुष्टको बलवान्‌करै और तेज बल कांति इन्होंको बढ़ावै और बंध्याकोपुत्रदेइ॥ कुमारीपाक॥ कुमारीकन्द ८० तोला गौकादूध ३२० तोलालेइ जबतकजीर्णहोतबतकपकावै पीछेछायामेंसुखाइ चूर्णकरि

पिपली १ २तोला मरीच १ २तोला शुंठि १ २ तोला जायफल ४ तोला जावित्री४तोला लवंग ४तोला गुखुरू ४ तोला काकडीबीज४तोला दालचीनी४तोला इलायची ४ तोला तमालपत्र ४ तोलानागकेशर ४ तोला चीता ४ तोला इनसबोंकाचूर्णकरि मिश्री ८० तोला घृत ४० तोला भैंसकादूध४० तोला शहद ४० तोला येसबलेइ लोहाके बरतनमें मन्दमन्द अग्निसे अच्छीतरहपकाय पीछेलोहभस्म १ तोला सोनाभस्म १ तोला रससिंदूर १ तोला मिलाय गोली तोलेतोले भरकी बनावे पीछे खानेसे जीर्णज्वरको व राजरोगको व कासको व श्वासको व संतापको व शूलको व अजीर्णको व आमवातको वप्रदरको नाशकरे और बंध्यास्त्रीखावे तो पुत्रहोवे और अंडवृद्धिकोनाशै और इसकाखानेवाला १०० स्त्रियोंकोभोगकरै यहगुप्तकरनेकेयोग्यहै यह अश्विनीकुमारोंका रचा परमोत्तम है॥ धात्रीपाक॥ आंवला के फलों को सुईसेती बेधनकरि पीछे अदरखके संग पानीमें सिजाइ पीछे गौके दूधमें सिजावे पीछे केवल पानीमें सिजावे पीछे उनफलोंको शहदभरे बरतनमें डारै २० दिनतक राखै पीछे वहशहद दूरकरि दूसरा शहद मिलावै पीछे मिश्री गजापिपली इलायची बंशलोचन लोहभस्म बंग इन्होंके चूर्णमेंमिलाय आंवला १ तोला प्रभातमेंखाने से बलक्षय को व राजरोग को नाशकरनेवास्तेदेवै तो मधुर पथ्य खवावै और यह पाकप्रमेहको व मूत्रकृच्छ्र को व कुष्ठको व पित्त-प्रकोपको व पित्तजन्य सर्वरोगको व रक्तविकारको नाशकरै और बल बीर्यको बढ़ावे यह बाजीकरण उत्तम है(श्लोक २०००) शेवंतीपाक॥ सफ़ेद शेवतीकेफूल १००० एकहजारलेइ इन्होंका घृत ६४ तोले में पकाय पीछे मिश्री २५६ तोला दालचीनी ४ तोला नागकेशर ४ तोला इलायची ४ तोला तमालपत्र ४ तोला मुनक्कादाख २४ तोला शहद३२तोला गिलोयकासत२ तोला बंशलोचन २ तोला सफ़ेद जीरा२तोला सीसाकी भस्म२तोला बंग२तोला कपूर ३ रत्ती येसब मिलाय सुन्दरबरतनमें घालिधरे पीछे प्रभातमें ६ माशाखावे और पथ्यसेरहै यहपाक जीर्णज्वरको व क्षयीको व कासको व अग्निकी मंदताको व प्रमेहको व दिनज्वरको व रात्रिज्वरको व मस्तकरोगको

व रक्तप्रदरको व रक्तकेरोगको व कुष्ठको व ववासीरको व नेत्रकेरोग को व मुखकेरोगको नाशकरै इसको १५ दिनतक सेवनकरै ॥ महाकनकसुन्दररस ॥ पारा, गन्धक, सीसाभस्म, खपरिया, सोनामाखी भस्म, अभ्रकभस्म, लोहभस्म, विद्रुमभस्म, मोतीभस्म, बंगभस्म हरतालभस्म ये सब प्रत्येक२ एक तोला और इनसबों के समान भाग सोनाकीभस्मले पीछे इनसबों को ३ दिनतक हंसपदीके रस में खरल करै पीछे गोलाबनाय कांचकी शीशी में घालि शीशी को ७ कपड़ों में वेष्टितकरि वालुकायंत्र में पकाइ पीछे शीतलहोनेपर हंसपदीके रसमें खरल करै पीछे करंडमें भरिरक्खै यह महाकनकसुन्दररस खानेसे राजरोगको व पांडुको व श्वास को व कासको व कामलाको व संग्रहणीको व कृमिरोगको व सूजनको व पेटके रोग को व उदावर्त्तको व गुल्मको व प्रमेहको व बवासीर को व अग्निमंदताको व छर्दिको अरुचिको व आमशूलको व हलीमकको व सर्वज्वरको व द्वंद्वजज्वरको व १३ प्रकारके सन्निपातोंको व पित्तरोग को व मृगीरोगको व बातरोगको व रक्तपित्तको व प्रमेहको व रक्तप्रदरको व २० प्रकारके कफरोगोंको व मूत्ररोगको नाशकरै और शरीरको तपायाहुआ सोना के रंगके समानकरै और बल वीर्य्यको बढ़ावै यह महाकनकरस काश्यपमुनि ने कहा है ॥ क्षयकेशरीरस ॥ मिरच २ भाग फटकड़ी २ भाग बचनागविष १ भाग नसदर १ भाग इन्होंकाचूर्णकरि मिश्री मिलाय आधीरत्ती खानेसे यह क्षयकेशरीरस जल्दी क्षयीको नाशैहै ॥ शंखेश्वररस ॥ शंखकाटुकड़ा आधा तोला कौड़ी ४ तोला नीलातूतिया आधातोला इन सबोंके समान गंधक और गंधकके बराबर सीसाकी भस्म और इतनीही पाराकी भस्म और इतनीही सुहागाकी भस्म इन सबोंको मिलाय गजपुट में फूंकदेवै शीतलहोनेपर ६ रत्ती पिपलीचूर्ण व शहदके संग रस को खावै अथवा मिरच घृतके संगखावै यह शंखेश्वररस राजरोग को नाशै ॥ हररुद्ररस ॥ पोलादभस्म १ भाग तांबाभस्म २ भाग सीसाभस्म ३ भाग चांदीभस्म ४ भाग सोना भस्म ५ भाग पारा भस्म ६ भाग इन्होंको चूकके रसमें १ दिन तक खरल करि पीछे

गोलाबनाइ बालुका यंत्रमें पकाइ पीछे शीतल होनेपर चूर्णकरि खानेसे यह हररुद्ररस क्षयीको नाशैहै इसकी खानेकी मात्रा मृगांक रसके समान है॥ नीलकंठरस ॥ बचनागबिष कटैली नेत्रबाला हल्दी कूडाकीछाल इन्हों का चूर्ण करि १ माशा रोज शहददूधके संग खानेसें यह नीलकंठरस राजयक्ष्माको हरैहै॥ शंखगर्भपोटली रस॥ शंखकी नाभि ८ तोले लेइ गौकेदूधमें खरलकरि इसका मूषा सरीखा बनाइ तिसके मध्यमें पाराकी भस्म घालि और गंधक १॥ तोला भर घाले पीछे मूषाका मुखबन्दकरि कपड़माटीमें लिप्तकरि सुखाइ गजपुटमें फूंकदेइ यहशंखगर्भपोटलीरस १ रत्तीखानेसेराजरोगको व बातपित्तको नाशकरैहै और इसऊपरपथ्य मृगांकके समान है॥ हेमगर्भरस॥ पाराकी भस्म १ तोला सोनाकी भस्म ६ माशा शुद्धगंधक १ तोला इन्होंको चीताके रसमें २ पहरतकखरलकरावै पीछे सुखाइ द्रव्यको कवडीमें घालि पीछे सुहागाको गौके दूधमें पीसि इससे कवडीके मुखको बंदकरै पीछे कवडीको माटी के बरतनमें घालि गजपुटमें फूंकदेवै पीछे शीतल होनेपरचूर्णकरि यह हेमगर्भरस ४ रत्ती खानेसे राजरोगको हरैहै और इसपै पथ्य मृगांक के समान है॥ नागेश्वररस॥ पाराभस्म १॥ तोला सीसाभस्म १॥ तोला गंधकभस्म १॥ तोला तूतिया १॥ तोला सुहागा १॥ तोला ये सब डेढ़ डेढ़ तोला लेइ और तांबाकीभस्म १ तोला शंखचूर्ण १ तोला कवड़ी ४॥ तोला लेइ पीछे पूर्वोक्त चूर्णको कवड़ियोंमें भरि लोकनाथ रसके समान पुटद्यावै पीछे आकके दल के रसमें खरल करि बरतनमें घालि गजपुटमें फूकदेवै पीछे महीन पीसि बराबरकी मिरचमिलावै पीछे चूर्णसे चौगुना गंधकमिलाय चूर्णकरै पीछेयह ५ माशे घृतके संगखावै यह असाध्य राजरोगकोभी हरै और सूजन को व पेटके रोगको व बवासीरको व संग्रहणीको व ज्वरको व गुल्म को नाशै है॥ कालांतकरस॥ लोहाकी १२ अंगुल ऊंची मूषिका कहे बरतन बनवावै पीछे धतूराको बाराहीकंद में २ पहरतक घोटै पीछे घीकुवारके पट्ठाके रसमें घोटि पीछे लहसुन के रस में एक पहरतक घोटि गोलाकरि पूर्वोक्त मूषामें भरि और धतूरासे चौथाई

पारा गंधक इन्होंको निर्गुण्डीके रसमें खरलकरि मूषामें भरै पीछे लोहकेचक्रसे मूषाकेमुखकोबन्दकरि रुद्रयंत्रमेंपकाय ऐसे आठपुटदे जलाय पीछेचूर्णकरि ५ रत्ती रोज़खानेसे यहकालांतकरस राजरोग को हरैहै इसमें पथ्य मृगांक के समान है॥ चंद्रायतनरस॥ शुद्धपारा शुद्धगंधक,सेंधानोन येसमान भागलेय इन्होंकोसपेदजांठीके पत्तोंके रसमें खरलकरि गोलाबनावै पीछेनागरपान, शुंठि, मिरच, पिपली इन्होंके संगडमरुयंत्रमें पकाय १ दिनतक जबश्यामहो तबऊपरला बरतनमें उड़करि लगाहुआको खुरचि ३ रत्ती पानके टुकड़ाके संग १ महीनातक खानेसे राजरोगको हरै यह चन्द्रायतन रसहै इसमें अनोपान मृगांक के समान है॥ प्राणनाथरस॥ लोहभस्म ४ तोले को भृंगराज के रसमें खरलकरि पीछे गिलोयरस ४ तोला भारंगी रस ४ तोला त्रिफलाकाकाढ़ा ४ तोला इन्होंको मिलायरक्खै पीछे पूर्वोक्त द्रव्य को खोपरी में पकाय शुद्ध सोनामाखी ४ तोला लेय पूर्वोदित रसोंमें खरलकरि ३ पुटदेय बारबार पकावै पीछे पाराभस्म ६ माशे वंगभस्म ६ माशे शुद्धगन्धक १ तोला कवड़ी २ तोला लेय पूर्वोक्तमें मिलाय गजपुटमेंपकाय पीछे पूर्वोक्तरसोंमें खरलकरि फेर पकायपीछे मिरचचूर्ण ३ तोला तूतिया ५ तोला सुहागा ५ तोला मिलाय ६ रत्तीभरखावै यहप्राणनाथरस असाध्य राजरोगको नाशकरै है और सूजनको व पेटरोगको व बवासीरको व संग्रहणीको व ज्वरको व गुल्म को नाशैहै॥ सुवर्णपर्पटीरस॥ सोनाके वरक १ भाग शुद्धपारा ८ भाग लोह ८ भागलेय पीछे लोहाके पात्रमें गंधकको गरमकरि सिंगरफ १ तोला चीता १ तोला पूर्वोक्त औषधोंमें मिलाय लोहाके पात्रमेंघालि लोहाकी सलाईसेचलाय पीछे गौकागोबर ऊपरकेला केपत्ताधरि तिसपर द्रव्यको धरि ऊपर केलाकेपत्ता से ढकि गोबर धरि पीड़न करै पीछे शीतल होनेपर काढ़ि बरतै यह सुवर्णपर्पटी रस है इसको मिश्री वंशलोचन के संगखाने से पित्ताधिक व्याधि नाशहोवै और बातकफाधिक व्याधिमें वंशलोचन,शहद,पिपलीचूर्ण इन्होंमें मिलाय खावै और क्षीणको व दस्तको व शोषको व मंदाग्नि को व पांडुरोगको व प्रमेहको व पुरानेज्वरको व संग्रहणी को नाश

करै और यह वृद्धको व बालकको व सुखी राजाको हितहै ॥ प्राणदापर्पटी ॥ पारा, अभ्रक, लोह, बंग, मिरच, बचनागबिष ये बराबर भागलेय और सबोंके बराबर गंधकलेय पीछे इन सबोंको लोहाके पात्रमें घालि बड़बेरीकी लकड़ियों से पकाय गौके गोबर के ऊपर केलाके पत्ताकोरखि तिसपर द्रव्य को धरि ऊपर केलाके पत्ता से ढकि गोबरदेय पीड़नकरै पीछे शीतलहोनेपरखावे यह प्राणदापर्पटीरस पांडुको व दस्तको व संग्रहणीको व ज्वर को व खांसी को व राजरोगको व प्रमेहको व अग्निमन्दताकोहरै है यहरसमहादेवजीका कहाहै और यह यथोक्त अनुपानोंकेसंग रोगमात्रको हरैहै ॥ कुमुदेश्वररस ॥ शोधापारा, शोधागंधक, शोधाअभ्रक इन्होंको बराबर भागलेइ और सिंगरफआधाभागले और मनशिलचौथाई भागले औरसबोंसे आधा लोहाभस्मले इन्हों को महीनपीसि शतावरि के रसमें १४ भावनादेनेसे कुमुदेश्वर रस सिद्ध होयहै इसको २ रत्ती अथवा ३ रत्ती मिरचचूर्ण व मिश्रीकेसंग खावे और प्रभात में इष्टदेवताको पूजिकर सेवन करने से यह राजरोगको व बातको व पित्तको व कफको व ज्वरको व रोगमात्रको हरै दृष्टांत जैसे दैत्योंको भगवान्नाशैं तैसे और इसको निरंतर सेवन करनेसे बुढ़ापा को नाशकरै ॥ पंचामृताख्यरस ॥ सोनाकी भस्म १ भाग रूपा की भस्म २ भाग तांबाकी भस्म ३ भाग पाराका सत ४ भाग अभ्रक का सत ५ भाग बायबिड़ंग ३ भाग नागरमोथा ३ भाग कायफल ३ भाग इन्होंको मिलाइ पीछे निर्गुण्डी के रसमें भावना देइ पीछे दशमूलके रसमें भावनादेइ पीछे चीताके रसमें भावनादेइ पीछे हल्दीके रसमें भावनादेइ पीछे शुंठि मिरच पीपल इन्हों के रसमें भावनादेइ पीछे अदरखके रसमें भावनादेइ गोलाबनाइरक्खै और इस रसके समान तीनलोकों में कोई रस नहीं है यह पंचामृत रस खानेसे सबरोगोंको हरैहै दृष्टांत जैसे रुद्रज्वरको बैष्णवज्वर हरै तैसे और यह पंचामृतरस मनुष्योंको अमृत समानहै ॥ स्वयमग्नि रस ॥ शोधापारा १ भाग गन्धक २ भागलेइ कजलीकरै पीछे पोलाद का चूर्ण ३ भागलेइ सबोंका गुवारपट्ठाके रसमें २ पहरतक खरल

करि पीछे गोला बनाइ तांबेके पात्रमें घालि एरंडके पत्तोंसे ढांकि ४ घड़ीतक रक्खै पीछे अन्नका कूढ़ामें दावै ८ पहरतक राखि पीछे काढ़ै पीछे महीनपीसि कपड़ामें घालि छानि तैयारकरै पीछे इसको गुवारपट्ठाके रसमें ७ भावनादेइ पीछे भंगराके रसमें ७ भावनादेइ पीछे काकमाची के रसमें ७ पुटदेइ पीछे कुरंड के रसमें ७ पुटदेइ पीछे कांगनी के रसमें ७ पुटदेइ पीछे मुंडीके रसमें ७ पुटदेइ पीछे सांटीके रसमें ७ पुटदेइ पीछे सहदेवीके रसमें ७ पुटदेइ पीछे गिलोयके रसमें ७ पुटदेइ पीछे नीलीके रसमें ७ पुटदेइ पीछे नि- र्गुण्डीके रसमें ७ पुटदेइ पीछे चीताके रसमें ७ पुटदेइ और धूपमें सुखाता जावै यह सिद्धयोग सिद्धोंके मुखसे निकला सब रोगोंको हरैहै और इस रसको त्रिफला शहदके संगखावै अथवा शुंठि, मि- रच, पिपली, हड़, बहेड़ा, आमला, इलायची, जायफल, लवंग येसब बराबरलेइ और सबोंकी बराबर स्वयमग्निरस लेइ १ तोला भर शहद में मिलाइ खाने से राजरोग को व खांसी को हरै है॥ राजमृगांक॥ पाराका भस्म ३ भाग सोनाका भस्म १ भाग तांबा का भस्म १ भाग मैनशिल २ भाग गन्धक २ भाग हरताल २ भाग इन्होंको महीनपीसि कौड़ियों में भरै पीछे सुहागा को बकरी के दूधमें पीसि इससे कौड़ियोंके मुखको बन्दकरि माटी के बरतन में कौड़ियों को घालि बन्द मुखको करि सुखाइ गजपुटमें पकावै पीछे शीतल होनेपर काढ़ि महीन पीसि ४ रत्ती खानेसे राजरोगको हरै और इसीको २९ मिरच चूर्ण घृतके संगखावै अथवा १० पिपलीके चूर्णके संग खावै यह राजमृगांकरस राजरोग को व खांसी को व ज्वरको व पाण्डुको व संग्रहणीको व अतीसारको हरैहै॥ दूसराप्र- कार॥ पारा १ भाग सोना १ भाग नये मोती २ भाग गन्धक १ भाग सुहागा ३ भाग इन्होंको चावलोंके तुषके कषायमें खरलकरि कपड़ा में मलि गोला बनाय पीछे नोनसे पूर्ण माटीके बरतन में घालिगजपुटमें १ दिनतक पकाय पीछे इस राजमृगांक को खाने से दारुण राजरोगको व मन्दाग्निको व संग्रहणी को नाशै है और इस रसको घृत, मिरच, शहद, पिपली इन्हों के संग खावै रत्ती ३

ऊपर पथ्य शीतलखावे और सबगर्मपदार्थोंकोत्यागै ॥ लोकेश्वररस॥ कौड़ीकीभस्म ४ तोला पारा ४ तोला गन्धक ४ तोला सुहागा १ माशा इन्होंको जँभीरी नींबूके रसमें खरल करि गजपुट में पकाय खावै यह लोकनाथ रस सब रोगों को हरै है और पुष्टि वीर्य्य बलकान्ति सुन्दरपना इन्हों को पैदा करै और इसको रक्त पित्तमें वर्तैनहीं और इस रसके समान दूसरा रस नहीं है ॥ नवरत्नराज-मृगांक ॥ पारा, गन्धक, सोने की भस्म, खपरिया, बैक्रांत भस्म कांलसोहाकाभस्म, बंगभस्म, शीशाकाभस्म, पन्नाकाभस्म, मूंगा का भस्म, हीराकाभस्म, सोनामाखीकाभस्म, मोतीकाभस्म, पुख-राजकाभस्म, बिमलमणीकाभस्म, माणिकका भस्म, शंखका भस्म बैडूर्य्यकाभस्भ, तांबाकाभस्म, सीपीकाभस्म, हरतालका भस्म, अभ्र-ककाभस्म, सिंगरफकाभस्म, मैनाशिल गोमा गोमेदभस्म नीलमणि काभस्म येसबबराबरभागलेय पीछेइन्होंको गोखुरू नागबेल बासा गोरखमुण्डी पिपली चीता ईखरस गिलोय धतूरा भांग मुनक्का दाख शतावरि कंकोल कस्तूरी नागकेशर इन्हों के रसमें अलग २ सात भावना देय पीछे गोलाबनाय सेंधानोन से पूर्ण माटीके बरतन में घालि मृगांक तुल्य कोमल अग्निसे व मध्यम अग्निसे व तेजअग्नि से १ दिनतक पकाय पीछे गोखुरू आदि अर्कोंमें फेरभावनादेयफेर पूर्वोक्तरीतिसे पकावे पीछे कपूर कस्तूरीबराबर भागलेय भावनादेवै यह गोप्य करने लायक रस है श्रीमहादेवजी ने कहा है और यह रस १ रत्तीभर सेंधानोनके संग खानेसे सूजनको हरै और पिपली शहदके संग खाने से पाण्डुको व उपद्रवसहित बायुके रोगको व २० प्रकारके प्रमेहोंको हरै और गुड़ हड़केसंग इस रसको खानेसे बातरक्तको हरै और इसको गिलोयसत पिपली शहद इन्होंके संग खानेसे आध्मानको व अरुचिको व शूलको व मन्दाग्निको व खांसी को व मृगीरोगको व बातोदरको व श्वासको व संग्रहणीको व हलीमक को व ज्वरको व क्षयको व राजरोगको हरै और धातुको पुष्टकरै जवान अवस्थाकोप्राप्तकरै यहराजमृगांक रोगोक्त अनुपानोंकेसंगखाने से रोगमात्रकोहरै ॥ मृगांकरस ॥ पारा गन्धक सोना ये बराबरभाग मोती

२ भाग जवाखार १ भाग इन्होंको चावलोंके तुषके पानीमें १ दिन तक खरलकरि गोलाबनाय खारीनोनसे पूर्णमाटीकेबर्तन में घालि कपड़ा से लपेटि ऊपर गाशलेपि १ दिनतक चूल्हे ऊपर पकाय पीछे यह मृगांकरस खानेसे मन्दाग्निको व संग्रहणीको हरै इसको ३ रत्ती खावै और इसको शहद पिपली के संगखावै और इस में गरसमस्तु वर्जिदेवै और पथ्यलोकनाथरसकेसमानहै ॥कनकसिंदूर॥ पारा सोना सोनामाखी हरताल मैनशिलखपरिया गन्धकलूतिया थे बराबर भागलेय पीछे पारा गन्धककी कजलीकरि सबऔषधों को आककेदूधमें १ दिनतक खरल करि पीछे अरणी हातगा बहेड़ा चीता भँगरा बासा इन्होंके रसमें अलग २ दिन एकएक खरलकरि गोलाबनाय भूधर यंत्रमें मृगांक समानपकाइ पीछे अदरखकेरसमें ७ भावनादेइ पीछे त्रिकुटाके रसमें ७ भावनादेय यह कनकसिंदूर रसराजरोग को हरै है और इसको अदरख के रसके संग खाने से सन्निपात को हरै है और शुंठि घृतके संग खानेसे बायु रोगको हरै और गुल्ममें व शूल में भी शुंठि घृत के संगदेवै। और इसमेंपथ्य मृगांकके समान है और इसको ज्यादह भक्षण करे नहीं॥ हेमाभ्रक रससिंदूर ॥ अभ्रकभस्म, रससिंदूर, सोनाकाभस्म ये सब बराबर भागलेय अदरख के रसमें खरलकरि २ रत्ती खानेसे राजरोगको व क्षयको व पाण्डुको व क्षयीकी खांसी को व कुंभकामला को हरै इसको पूर्वकर्मविपाक का जाननेवाला १५ दिनतक सेवनकरै॥ सुवर्णभूपति ॥ पारा १ भाग गन्धक १ भाग तांबाका भस्म २ भाग अभ्रकभस्म १ भाग लोहभस्म १ भाग कांतलोहभस्म १ भाग चांदीभस्म १ भाग सोनाभस्म १ भाग बचनागबिष १ भागलेय इन्होंको हंसपदीकेरसमें १ दिनतक खरलकरि पीछे गोला बनाय कांचकी शीशीमें घालि मुख बन्दकरि कपड़ा माटी लगाय सुखाय वालुकायंत्र में कोमल अग्निसे पकाय पीछे ४ रत्ती रसको पिपली का चूर्ण व अदरखके रसमें मिलाय खानेसे त्रिदोष के राजरोगको व १३ प्रकारके सन्निपातों को व आमबात को व धनुर्वात को व श्रृङ्खलाबातको व आढ्यबातको व पंगुबातको व कफको व मंदाग्नि

को व कटिबात को व सबप्रकार के शूलको व गुल्मको व उदावर्त्त को व संग्रहणी को व प्रमेहको व पेट के रोगको व सब प्रकारकी पथरी को व मूत्रग्रह को व विड्बंधको व भगंद्र को व कुष्ठ को व विद्रधिको व श्वास को व खांसी को व अजीर्ण को व आठप्रकारके ज्वरको व कामला को व पांडु को व शिर के रोगको नाशकरै और रोगोक्त अनुपानोंकेसंग खानेसे रोगमात्रको हरै दृष्टान्त जैसे सूर्य्य का उदय अंधेराकोनाशै तैसे यह स्वर्ण भूपति रोगमात्रोंको नाशैहै॥ लक्ष्मीविलासरस ॥ सोना, चांदी, अभ्रक, तांबा, बंग, लोहा, शीशा बच्चनागबिष, मोती ये सब बराबर भाग लेय और सबोंके बराबर भाग पाराकीभस्म लेय पीछे कजलीकरि पूर्वोक्त औषधों में मिलाय शहदमें खरलकरि पीछे २ वा ३ दिनतक धूपमें सुखाय कल्क को- बर्त्तनमें घालि तार्क्ष्यपुटमें पकाय पीछे चीताके रसमें ८ पहरतक खरल करनेसे लक्ष्मी विलासरस सिद्धहोय है इसको खानेसे त्रि- दोषके राजरोगको व पांडुको व कामलाको व सब बायुके रोगोंको व सूजनको व पीनसको व नष्टवीर्यको व बवासीरको व शूलको व कुष्ठको व मन्दाग्निको व सन्निपातको व श्वासको व खांसीकोहरैहै और यह जवान अवस्थाको व लक्ष्मी को बढ़ावे है ॥ शिलाजत्वा दियोग ॥ लोहभस्म ३ रत्ती शिलाजीत ३ रत्ती मिलाय खाने से राजयक्ष्माको हरैहै और इसमें पथ्यको सेवै ॥ पंचामृतरस ॥ पारा अभ्रक, लोह इन्होंकी भस्म, शिलाजीत, बच्चनागबिष ये बराबर भागलेय इन्होंको त्रिफला, गिलोय इन्हों के काढ़ामें पकाय गुग्गुल मिलाय पीछे तांबाकाभस्म, पाराभस्म बराबरभाग मिलाय २ रत्ती खानेसे राजरोगको हरै इस पंचामृत रसमें अनुपान । पूर्वकीसमान है ॥ अमृतेश्वररस ॥ पराभस्म, गिलोयसत,लोहाभस्म बराबरभाग मिलाय पीछे शहद घृतमिलाय ६ रत्तीभर खानेसे यह अमृतेश्वर रस राजरोगको हरैहै॥ चिंतामणिरस ॥ पारा,वैक्रांतभस्म,चांदीभस्म तांबाभस्म, लोहाभस्म, मोतीभस्म, गंधक, सोनाभस्म ये बराबर भागलेय इन्होंको अदरखके अर्कमें ३ भावनादेय पीछे भँगराकेरस में ३ भावना देय पीछे चीताके रसमें ३ भावना देय पीछे बकरीके

दूधमें ३ भावनादेय पीछे गौके दूधमें ३ भावनादेय पीछे १रत्तीभर शहद पिपलीके संगखानेसे ववासीरको व राजरोगको व खांसीको व अरुचिको व जीर्णज्वर को व पाण्डुको व प्रमेहको व विषमज्वर को व वायुको हरै यह चिंतामणिरस पार्वतीजीने कहा है॥ त्रैलोक्य चिंतामणि॥ पारा,अभ्रक,सोना,चांदी,माणिक,हीरा,मैनशिल,सोना माखी,गंधक,मूंगा, लोहा,मोती,शंख,हरताल इन्होंको बराबर भाग ले भस्मकरै पीछे पारा,गंधककी कजली करै मिलाय इन्होंको चीता के काढ़ामें ७ भावनादेय पीछे निर्गुंडीके रसमें ३ भावनादेय पीछे ज़मींक़न्द के रसमें ३ पुट देय पीछे थोहर के दूधमें ३ पुट देय पीछे आकके दूधमें३ भावनादेय कल्ककरि कौड़ियोंमेंभरि मुखको सुहागा के आकके दूध से पीसि बन्दकरि माटी के वर्त्तनमें घालि कौड़ियों को पीछे वर्त्तनके मुखको बन्दकरि कपड़ा माटी लपेटि गजपुट में पकाय पीछे महीन पीसि बराबर भाग पाराकीभस्म मिलाय पीछे वैक्रांतकीभस्म पारासे चौथाई मिलावै पीछे द्रव्यसे ७ भाग सहों-जनाकीजड़का चूर्ण मिलावै पीछे दालचीनी ५ भाग बोल ५ भाग मिरच ५ भाग चीता ५ भाग सुहागा ५ भाग हड़ द्रव्य से चौथाई भाग जायफल चौथाई भाग लवंग चौथाई भाग पिपली चौथाई भाग शुंठि चौथाई भाग बचनागविष चौथाई भागलेय मिलायपीछे इन्होंको विजौराके रसमें १ दिन तक खरल करि तय्यार करै यह त्रैलोक्यचिंतामणिरस ४॥ रत्तीखानेसे संपूर्णरोगोंकोहरै हैं। रोगोक्त अनुपानोंके संग। और यह विशेषकरि बातव्याधिको व आमबात को व ज्वरको व उदरशूल को व कृमि को व श्वासको व शूलको व रक्त बातको व रक्तपित्तको व क्षीणताको व खांसी को व राजरोगको व कफरोगको व उरःक्षतको व अजीर्णको व प्रमेहको व कुष्ठको व अतीसार को व पांडु को व संग्रहणी को व तमकश्वासको व व्रणको व बबासीर को व पंगुबातको व आढयबात को व कानरोगको व यो-निरोगको हरै है॥ वसंतकुसुमाकर॥ मूंगा ४ तोला पारा ४ तोला मोती ४ तोला अभ्रक ४ तोला चांदीभस्म २ तोला सोना भस्म २ तोला लोहभस्म ३ तोला शीशाभस्म ३ तोला रांगभस्म ३ तोलाले

इन्होंको मिलाय बासाके रसमें ७ भावनादेय पीछे हल्दी के काढ़ा में ७ भावनादेय पीछे ईखके रसमें ७ भावनादेय पीछे कमलके रस में ७ भावनादेय पीछे मालतीके रसमें ७ भावनादेय पीछे केलाके रसमें ७ भावनादेय पीछे कालाअगरके काढ़ामें ७ भावनादेय पीछे सफेदचंदनके काढ़ामें ७ भावनादेय तय्यारकरै इस बसंत कुसुमाकर रसको रोगोक्त अनुपानों के संग ६ रत्ती खाने से सब रोगों को हरै है और इस रसको शहद मिर्चके संगखाने से क्षयीरोग नाश होवे और इस रसको हल्दीका चूर्ण शहद खांड़के संगखानेसे प्रमेह को नाशकरै है और चंदन का काढ़ा मिश्री के संगइसको खाने से रक्तपित्त जावे और बासाका रस शहद मिश्री इन्होंके संग अथवा दालचीनी, तमालपत्र, इलायची इन्होंको चूर्ण केसङ्ग इसको खाने से तुष्टि पुष्टि होवै। और कामदेव को उत्पन्न करै और इस को शंख पुष्पीकी रसके संग खाने से छर्दि नाशहोवै। और इसको शतावरि रस, शहद, खांड़केसंग खानेसे अम्लपित्त जावै॥ लोकेश्वरपोटली॥ पाराभस्म ४ भाग सोनाभस्म १ भाग गंधक ८ भाग इन्होंको चीता के रस में खरलकरि द्रव्य को कौड़ियों में भरि कौड़ियों के मुखको सुहागाको पीसि बंदकरै पीछे चूनासे लिपा माटी के बर्त्तन में कौड़ियोंको धरि बर्त्तनके मुख को बंदकरि सुखाइ रत्नीमात्रगर्त्त में पकायतीसरे पहरतकपीछेशीतलहोनेपरकाढ़ि चूर्णकरिबरतै यहलोके श्वररसवीर्यपुष्टिकोबढ़ावैइसरसको४रत्तीखावै पिपली शहदकेसङ्ग। यहरस सुखदहै और इसको शरीरका माड़ापनमें व मन्दाग्निमें व खांसीमें व पित्तमें घृत मिर्च चूर्णकेसङ्ग ३ दिन तक खावै सुखहोय और इस पर नोन खावै नहीं और दही घृतखावै अथवा इसपर २१ दिनतक मिरच घृतकोपीवै और इसपर पथ्य मृगाङ्ककेसमान है और उत्तानपादकरिके सोयाकरै और यह विषमभोजनसे उपजे रोगको व शोषको व राजरोगको व कुष्ठको व पाण्डुको व कुत्सित वैद्यके हाथसे बिगड़ी बीमारी को और अनेकप्रकार के ज्वरों को व दाह व उन्मादको व भ्रमको हरै॥ लोहरसायन॥ शोधापारा १ भाग शोधा गन्धक २ भाग इन्हों की कजली करि पीछे लोहा का

भस्म ३ भाग मिलाय १ पहरतक खरलकरि पीछे कोरफड़ीके रसमें ३ दिनतक खरलकरि जब धुवां गरमगरम निकसे तब गोलाबनाय तांबेके पात्र में घालि सांठी चावलों की राशि में वर्त्तनको दाबै ३ दिनतक पीछे चौथेदिन काढ़ि खरलमें पीसि धूपमेंधरि रानतुलसी के रसमें ३ भावनादेय पीछे शुंठि, मिरच, पीपल इन्हों के काढ़ा में अलग अलग ३ भावनादेय पीछे द्रव्यको लोहेके पात्र में घालि त्रिफलाके पानी में ३ भावना देय पीछे निर्गुण्डी, अनारकीछाल कमल, भँगरा, कुरण्टक, पलाश, केला, बिजौरा, निली, मुण्डी, कीकर कीफली इन्होंके रस में अथवा काढ़ा में तीन तीन भावना अलग अलगदेय तय्यार करै पीछे ८ माशा औषध शहद घृतके सङ्गखावै ऊपर त्रिफला का काढ़ा ४ तोले पीवै इसको ३ महीने तक सेवन करने से बुढ़ापाको हरै और मन्दाग्निको व श्वासको व खांसीको व पाण्डु को व कफ को व बातको हरै पिपली शहदके संग खाने से और यहरस गिलोयसत शहदके संगखावै तो वातरक्त को व मूत्र दोषको व संग्रहणीको व जलके रोगको व अण्डवृद्धि को हरै और यह बलवीर्यको बढ़ावै और आयुको बढ़ावै औ इसपै कोहला, मीठातेल, उड़द, राई, मदिरा, खट्टारस इन पदार्थों को लोहका खाने वाला त्यागै ॥ रत्नगर्भपोटली ॥ पारा, वज्र, सोना, चांदी, शीशा, लोहा, अभ्रक, मोती, सोनामाखी, विद्रुम, राजावर्त्त, वैक्रान्त, गोमेद पुखराज, शंख इन्होंकी भस्मको बराबर भागलेय पीछे चीताकेरस में ७ दिनतक खरल करै पीछे द्रव्य को कौड़ियों में भरि कौड़ियों के मुखको सुहागा को आकके दूधमें पीसि बन्द करै पीछे कौड़ियों को माटीके वर्त्तनमें घालि कपड़ा माटी लेपि गजपुटमें पकाय पीछे चूर्णकरि निर्गुण्डी के रसमें ७ भावना देवै पीछे अदरख के रसमें ७ भावनादेय पीछे चीताके रस में २१ भावनादेय पीछेसुखाय ४ रत्तीभर खानेसे राजरोगको हरै दृष्टान्त जैसे शिव जी अंधदैत्यको तैसे और इसरत्न पोटली रसको शहद पिपलीके संग खानेसे अथवा घृत मिरच के संग खाने से रोग मात्र नाश होवै ॥ हेमगर्भ पोटलीरस ॥ शोधापारा १ भाग इससे चौथाई महीन पीसा सुना

काचूरा गन्धक ३ भाग पीछे इन्होंको धतूरा के रसमें खरल करि गोला बनाय माटी के सकोरा में घालि दूसरे सकोरे से संपुटित करि पीछे कपड़ा गारा लपेटि भूधर यंत्रमें ३ दिनतक पकाय पीछे काढ़ि बराबरका गन्धक मिलावै पीछे अदरखके रसमें खरल करि पीछे चीताके रसमें खरलकरि पीछे मोटी पीली कौड़ियों में भरि पीछे इसद्रव्यसे अष्टमांश सुहागालेय और सुहागासे आधा बच्छ-नागबिष लेय इन्हों को थूहर के दूधमें पीसि इससे कौड़ियोंके मुखको बन्दकरि पीछे कौड़ियोंको चूनासे लिपा माटीके बर्तन में घालि ऊपर सराई देय गारा से बन्दकरै पीछे १ हाथ गढ़ाखोदि गजपुट में धरि पकावै पीछे शीतल होनेपर लोकनाथ के समान बरतै और इसपर पथ्य मृगांक के समान है और ३दिन तक नोन को खावै नहीं और रस खाये बादि छर्दि आवै तो गिलोय के काढ़ा में शहद मिलाय पीवै आराम हो और जो कफ को कोप हो तो गुड़ अदरख मिलाय खावै और दस्त आने लगें तो भूनी भांग में दही मिलाय खावै यह रस खांसीको व राजरोगको व श्वासको व संग्रहणीको व अरुचिकोहरै और जठराग्निको दीपन करै और कफ बात को हरै इसका नाम हेम गर्भ पोटली रसहै ॥ दूसराप्रकार ॥ पारा ४ भाग सोना ४ भाग इन्होंको महीनपीसि जब तकपीठिबनै तबतक खरलकरै पीछे गन्धक १२ भाग मिलाय क-जली करै पीछे मोती १६ भाग शंखके टुकड़े २४ भाग सुहागा१ भाग इन्होंको एकत्रकरि पकेहुये नींबूके रसमें खरलकरै पीछेगोला बनाय मूषापुट में धरि मुखको बन्दकरि १ हाथ मात्र गर्त्तमें गौका गोबरके गोसोंसे गजपुटमें पकावै पीछे शीतल होनेपर काढ़ि महीन पीसि ४ रत्ती खावै गौके घृतमें स्याहमिरच २९ का चूर्ण मिलाय चांदीके पात्रमें अथवा माटीकेपात्रमें अथवा कांचकेपात्रमें मिलाय खानेसे श्वासको व राजरोग को व बायुके विकारको व कफको व संग्रहणीको व अतीसार को हरैहै इसमें पथ्य लोकनाथ के समान है और मनुष्य पवित्रहोकरिखावै ॥ लोकनाथरस ॥ शोधा व खाने-वाला ऐसा पारा २ भाग शोधागंधक २ भागलेय कजलीकरै पीछे

पारासे चौगुनी कौड़ियोंमें कजलीको भरि मुखको बन्दकरै सुहागा को गौके दूधमेंपीसि इससे कौड़ियोंका पीछे शंखके टुकड़े ८ भाग लेय पीछे चूनासे लिप्त सिकोरामें आधे टुकड़े घालि तिसपर कौ-ड़ियाँ धरि ऊपर आधे शङ्खके टुकड़े धरि दूसरे सिकोरासे सम्पुट करे पीछे कपड़ा लपेटि गारासे लेपि धूपमें सुखाय पीछे १ हाथका गड़हा खोदि गौके गोबरके गोसों से बीचमें सकोरा को धरि ऊ-पर गोसोंलगाय गजपुट में फूँके पीछे शीतल होनेपर काढ़ि महीन पीसि ६ रत्तीभर खावे २९ मिरच के चूर्ण के सङ्ग और इस लो-कनाथ रसको वायुके रोग में गौके घृतमें मिलाय खावे और पित्त के रोगमें नोनी घृतके सङ्ग खावे और कफरोग में शहद के संग खावे और यह लोकनाथरस अतीसारको व राजरोगको व अरुचि को व संग्रहणीको व कृशताको व मंदाग्निको व खांसीको व श्वास को व गुल्मको हरै और इस रसको खायके घृतयुत अन्नके ३ ग्रास लेवे पीछे २ घड़ीतक विनाकपड़ा विछाये पलँगमें सोवे सीधाहोके और खटाई वर्जित अन्नको घृतयुतकरि भोजनकरे और मीठादही खावे और जांगल देशके जीवके मांसको घृतमें पकाय खावे और संध्या कालमें भूँखलगे तो दूध चावलको मिलाय खावे और मूँग के बरेबनाय घृतमें पकाये खावे और लिज आवँला इन्होंका कल्क करि पानी में मिलाय स्नान करै अथवा घृतसे मालिश करि गरम जलसे स्नान करावे और कडुआ तेल बेलफल करेला बैंगन छोटी मछली, इमली, दण्ड, कुश्ती, मैथुन, मदिरा संधान हींग शुंठि उड़द मसूर, कोहला, राई, कांजी इन्होंको खावे नहीं और दिनमें सोवैनहीं और कांसीके पात्रमें भोजनकरेनहीं और ककार जिसके आदिमेंहो ऐसेशाकफल इन्होंको खावेनहीं और इसरसको शुभनक्षत्र व शुभ वारमें व पूर्ण तिथिमें व शुक्ल पक्षके व चन्द्रमाके बलमें ऐसे मुहूर्त्तमें लोकनाथको पूजि पीछे कुमारीकन्या को पूजनकरि पीछे सोनाका दानब्राह्मणों को देय २ घड़ीके बीचमें रसकोखावे और जो रसखाने से गरमी उपजे तो गिलोयका सत खांड़ वंशलोचन मिलाय खावे और खजूर अनार मुनक्कादाख ईख येभीखवावेऔरअरुचिमें धनि-

यां को कूटि घृत में भूनि खांड़ मिलाय खावै और ज्वरमें धनियां को गिलोयके काढ़ामें मिलाय पीवै और नेत्रबाला बासा इन्होंके काढ़ा में खांड़ मिलाय इसके संग रसको खानेसे रक्त पित्त कफ खांसी श्वास स्वरनाश ये सब नाशहों और भूनी भांगके चूर्ण को शहद में मिलाय इसके संग रसको खानेसे निद्रानाश अतीसार संग्रहणी ये जावैं और मंदाग्नि में कालानोन हड़ पिपली गरम जल इन्हों के संग रसको खावै और शूलरोग में भी इसी तरह खावै और जीर्ण ज्वरमें पिपली शहदके संग रसको खावै और इसरसको अनार के पुष्पों के रसके संग खानेसे प्लीहा उदर रोग बातरक्त छर्दि गुदांकुर कहे बवासीर नकसीर इन रोगोंको नाशै और दूबके रस में खांड़ मिलाय रसकोखानेसे नकसीर बन्दहोवै और बेरकी मज्जा पिपली मोरकीपांखकाभस्म खांड़ इन्होंको शहद में मिलाय खानेसे छर्दि हुचकी जावै और यही विधि पोटली रसमें व मृगांकमें व हेमगर्भ में व मौक्तिक रसमें भी करनी योग्यहै यह लोकनाथ रस सब रोगों को हरैहै॥ लघुलोकनाथरस॥ कौड़ियों की भस्म १ भाग मंडूरभस्म १ भाग मिरच २ भाग लेय घृतमें पकाय पीछे नागरपान की बेल के रसमें भावना देय सुखाय पीछे चूर्णकरि शहदमें मिलाय अथवा नोनी घृतमें मिलाय ३ मासाभर खाने से राजरोग को नाशै और इस लघु लोकनाथको एक एक पहरमें खाता जावै और १५ दिन तक सेवै॥ मृगांकपोटलिरस॥ सोनाके पत्रे यानेमहीन वर्क १ भाग पारा १ भाग इन्होंको धतूराके रसमें खरल करि अथवा ज्वाला-मुखीके रसमें खरलकरै जबतक मिलै तबतकअथवा कलहारी के रसमें खरल करै पीछे सोनाके वर्कोंसे चौथाई सुहागा मिलावै पीछे सोना से दुगुना मोती का चूर्ण मिलावै पीछे सब चूर्ण के समान गन्धक मिलाय खरल करि गोलाबनाइ ऊपर कपड़ा लपेटि गारा से लीपि सुखाय सकोरा में घालि दूसरे सकोरा से संपुटित करि कपड़ा माटी लपेटि पीछे नोनसे पूर्ण माटीके बर्तन में संपुट को घालि सराईसे मुख बन्दकरि कपड़ा माटी लगाय सुखाय बहुत से गोसोंके बीचमें धरि फूंकिदेवै पीछे शीतल होने पर काढ़ि पारा के

बराबर गन्धक मिलाय खरल में पीसि गजपुट में पकाय शीतल होनेपर २ रत्तीभर आठ मिरच के चूर्ण के संग खावे अथवा तीन पिपलीके चूर्णके संग खावे और दोषका बलाबलदेखि १ रत्ती देवे अथवा दोषोंको देखि घृत शहदके संगदेवे और इसमें पथ्य लोक-नाथ रसके सरीखे हैं और इस रसको स्वस्थमन होकरि खावे यह रस कफ रोगको व संग्रहणीको व खांसीको व श्वासको व राजरोग को व अरुचिको व माड़ापनाको व बलहानिकोहरै ॥ गोक्षुरादिघृत ॥ गोखुरू ४ तोला धमासा ४ तोला चारोंपर्णी ४ तोला बलिया ४ तोला पित्तपापरा ४ तोला इन्होंको द्रव्यसे दशगुने पानीमें पकाय दशमांश रक्खे पीछे कचूर पुष्करमूल पिप्पली बनपसा हड़ चिरा-यता तेजबल कटुकी सफ़ेद सारिवा येसब एकएक तोला अलग २ लेय कल्क करि मिलावे पीछे घृत ६४ तोला दूध १२८ तोला मिलाय घृतको सिद्धकरि खानेसे ज्वरको व दाहको व तमक श्वास को व खांसी को व पसली शूलको व शिरके शूलको व तृषाको व छर्दिको व अतीसार को नाशकरै इसमें सन्देह नहींहै ऐसे जानो ॥ जीवंत्यादिघृत ॥ गिलोय, कुड़ाकी छाल, मुलहठी, पुष्करमूल, गो-खुरू, खरैटीलाल, सफेदखरैटी, नीलाकमल, भूमिआवँला, धमासा बनपसा, पिपली, कूट, मुनक्का इन्होंका रस ६४ तोला बकरीका दूध १२८ तोला दही ६४ तोला घृत ६४ तोला इन्होंको मन्दाग्निसे पकाय घृतको सिद्धकरि पानकर्म में व नस्यमें व बस्तिकर्ममें बरते यहघृतपीनेसे राजरोगको व हलीमकको व कामलाको व पांडुकोहरै और इस घृतको पिचकारीमें चटानेसे गुदाके रोगोंको हरै और इस घृतको मालिश करनेसे विसर्प, विस्फोटक और यह घृत सबरोगों को हरैहै ॥ बलादिघृत ॥ बलिया, गोखुरू, पृष्ठिपर्णी, दोनों कटेली शालिपर्णी, निम्ब, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, बनपसा, धमासा, हड़ कचूर, दाख, पुष्करमूल, मेदा, आवँला इन्होंका काढ़ा दूध, घृत मिलायघृतको सिद्धकरिखानेसे राजरोगको व खांसीको व शिरशूल को व पसली शूलकोहरै ॥ कोलादिघृत ॥ बेरीफल, लाख इन्होंके काढामें अष्टमांश दूधमिलाय और गोखुरू, दारुहलदी, दालचीनी

मुनक्का, दाख, खरोट, घृत, खजूर, दाख, फालसा, पिपली इन्होंका कल्क मिलाय घृतको सिद्धकरि खाने से खांसी, श्वास जावै ॥ कणादिघृत ॥ पिपली २० तोला गुड़का शर्बत २० तोला घृत २० तोला मिलाय पकाय पीनेसे अथवा भोजनके संग खानेसे क्षयको व राजरोगको हरै ॥ पाराशरघृत ॥ मुलहठी, खरीया, गिलोय, पंचमूल इन्होंको बराबरले काढ़ाकरै पीछे काढ़ाकेबराबर आवँलारस इतनाही ईखकारस भूमिकोहलाका रस घृत, दूध, दही, नोनीघृत दाख, तालीसपत्र, हड़ ये बराबर भागलेय घृतको सिद्धकरि पीनेमें व नस्यमें व बस्तिकर्म में बर्त्तने में राजरोगको व पांडुको व हलीमकको व बवासीरको व रक्तपित्तको हरै और इसकी मालिश करने से बिसर्परोग दग्धघाव ये अच्छेहोवैं ॥ जलादिघृत ॥ एकद्रोणभर पानी में पिपली २ तोला चन्दन २ तोला लोध २ तोला बाला २ तोला कालाबाला २ तोला पित्तपापड़ा २ तोला पाढ़ा २ तोला चिरायता २ तोला मुलहठी २ तोला मेहँदी २ तोला नीलाकमल २ तोला नागरमोथा २ तोला इन्द्रयव २ तोला शुंठि २ तोला कटुकी २ तोला धमासा २ तोला दालचीनी २ तोला बांसाकीजड़ २तोला बकरीका गरमदूध घृत ६४ तोला मिलाय पकायखानेसे राजरोगको व रक्तपित्तको व त्रिदोषकाको व श्वासको व खांसीको व क्षीणता को व दाहको व शोकको हरै है ॥ बासादिघृत ॥ बासा गिलोय निंब कटैली असगन्ध गंगेरन अर्ज्जुनवृक्ष इन्होंके काढ़ामें घृत शुंठि मिरच पीपल चवक पिपलामूल पुष्करमूल इन्होंकाकल्क मिलाय और बकरी का दूध मिलाय घृतको पकाय खानेसे राजरोग नाशहोवै ॥ खर्जूरादिघृत ॥ खजूर दाख मुलहठी फालसा पिपली इन्होंमें घृतको सिद्धकरि खानेसे स्वरभंगको व खांसी को व श्वास को व ज्वरको हरै ॥ पिप्पल्यादिघृत ॥ पिपली गुड़ बकराका मांस इन्होंमें घृतको सिद्धकरि खाने से कासको व राजरोगको हरै और अग्निको बढ़ावै ॥ दूसराप्रकार ॥ पिपली पिपलामूल चवक चीता शुंठि जवाखार इन्हों में घृतको सिद्धकरि खावै अथवा इन्होंके कल्कको चौगुना दूधमें मिलाय चतुर्थांशरहै तबघृतको खानेसेराज-

रोग जावै ॥ दशमूलादिघृत ॥ दशमूल का काढ़ा दूध नोनीघृत शहद पिंपली इन्होंको मिलायखाने से स्वरभंग को व शिरके शूलको व पसली के शूल व खांसी को व श्वासको व ज्वर को हरैहै। तिलातिलका तेल १२८ तोला गौकादूध ५१२ तोला मुलहठी४तोला इन्होंको मिलाय। तेलको सिद्धकरि पीनेसे व नस्य लेनेसे राजरोग को व पांडुको व ऊर्ध्वजत्रु रोगको व विषको वउन्मादको वरक्तपित्तको हरै और बिसर्प्पकोभी हरै॥ चन्दनादि तेल ॥ चंदन, नेत्रबाला नख, सफेदचंदन, शिलाजीत, पद्माख, मजीठ, सरलवृक्ष, देवदारु, कालाबाला, नागकेशर, केसर, हल्दी, सारिवा, कटुकी, लवंग, अगर, दालचीनी, रेणुकबीज, नीली येसमान भागलेइ और तिलका तेल द्रव्यसे चौगुना और दहीकामस्तु चौगुना और सबोंकेबराबर लाख का रस मिलाय तेलको सिद्धकरि मालिश करनेसे ग्रह दोषको हरै और बलके बढ़ावै और मृगीरोगको व ज्वरको व उन्माद को व कृत्याको व अलक्ष्मीको नाशकरै और आयुको बढ़ावै और शरीर को पुष्टकरै और वशीकरण है। और विशेषकरि राजयक्ष्मा रोगको व रक्तपित्तकोहरै॥ लक्ष्मीविलासतेल ॥ इलायची, चंदन, रासना, लाख नख, कपूर, कंकोल, नागरमोथा, बलिया, दालचीनी, दारुहल्दी पिप्पली, अगर, तगर, जटामांसी, कूट ये समान भागलेइ और इन सबोंसे तिगुना राललेइ पीछे इन सबोंको डमरूयंत्रमें घालि तेल कढ़ावै पीछे तेलको गंध व फूलोंसे सुबासितकरै इसको गंधतेल व लक्ष्मीविलास तेल कहते हैं यह तेल मालिश करनेसे राजोंसे मुलाक़ात करावै और युक्तिपूर्वक मालिश करनेसे संपूर्णरोगोंको हरै है और इस तेलको नागरपानकी बेलका ५। रसमें मिलाय पीनेसे जठराग्निको दीपन करैहै और अंगोंके मालिश करनेसे बवासीर को व क्षयीको हरैहै व्यवायशोष, शोकशोष, बुढ़ापाशोष, कसरत शोष, अध्वशोष, घावशोष क्षतिक्षत शोष इन्होंके संयुक्त मनुष्यों के लक्षण सुनि। व्यवायजन्य शोषकहे बहुत मैथुन करनेसे उपजा शोष ताकालक्षण। लिंगमें व फोतोंमें पीड़ाहो और मैथुन करनेकी शक्ति नहींहो और थोरा लोहू व वीर्य्यझरै चिरकालमें मैथुन के

बखत। और पांडु शरीरहो और सब धातु क्षीणहों ये लक्षण हैं॥ चिकित्सा॥ इस रोगवालेको दूध, मांस, घृत इन्होंसे संयुक्त भोजन खवावै और मीठा प्रिय उमरको बढ़ानेवाले ऐसे उपचार करावै॥ शोकशोषीकेलक्षण॥ इसकेवही लक्षणहैं परंतु इसमें वीर्य्यक्षीणनहींहो और अंग सब गीले व ढीले रहैं॥ चिकित्सा॥ हर्ष करनेवाले व आश्वासन करनेवाले ऐसे औषध, दूध, चिकना, मीठा, शीतल, दीपन, हलका, अन्नपान ये सब शोकशोषीको हितहैं॥ बुढ़ापाशोष लक्षण॥ इसमें शरीर माड़ाहोजाइ और बल वीर्य बुद्धि जातेरहैं और शरीर कांपै, भोजनमें अरुचिहो घोंघों वोलै और कफ बहुत थूकै शरीर भारीरहै पीनसहोइ और रूखा शरीरहोजाइ और नेत्र नाक, मुख ये बहतेरहैं और मल सूखा व रूखा उतरै ये लक्षण बुढ़ापाके शोषीके हैं॥ मार्गशोषीकालक्षण॥ बुढ़ापा शोषीके लक्षणों से मिलतेहैं परंतु उसके हियेमें पीड़ा नहींहो और अंग ढीले रहैं और शरीरका वर्ण खरधराहो और सब अंग सोतेरहैं और तृषा का स्थान व कंठ व मुख ये सूखे रहैं॥ चिकित्सा॥ वसनाका सुख से दिनके सोनेसे शीतल, मीठा पौष्टिक ऐसे अन्न व मांसोंके सेवन से मार्गशोषींसो आरामहोवै॥ कसरतशोषलक्षण॥ इस शोषमें भी मार्गशोषीके लक्षण मिलतेहैं परंतु हियमें पीड़ा नहींहो॥ चिकित्सा॥ इसमें सचिक्कण पदार्थ और क्षतक्षयमें हितकरनेवाले और जीव-नीय गणोक्त और कफपैदाकरनेवाले ये सबहितहैं॥ व्रणशोषलक्षण॥ लोहूके क्षयसे व घावोंकी पीड़ासे व भोजनके बंदहोनेसे व्रणशोष होयहै यह महाअसाध्य होयहै॥ चिकित्सा॥ व्रणशोषको सचिक्कण दीपन स्वाद, शीतल कटुक खट्टा, मीठा, मांसके रसका यूष इन्हों से शांतकरै॥ रसबर्धन॥ गिलोय, अदरख, यव इन्होंकाकाढ़ा अथवा मिरचके चूर्णको दूधमेंघालि पकाय रात्रिमें पीनेसे रसकी वृद्धिहोय और क्षय नाशहो॥ रक्तवर्द्धन॥ गेहूं, यव, सांठीचावल, जांगलदेश के जीवोंका मांस, घृत, खांड़ दूध शहद मिरिच पिपली इन्होंकाखाना व पीना लोहूकोबढ़ावैहै॥ मांसवर्द्धन॥ अनूपदेशके मांस अनूप देश के अन्न लसूण हरण दोड़ाघृत दूध मीठापदार्थ इन्हों के सेवन से

मांस वृद्धिहोवै ॥ मेदवर्द्धन ॥ तालीसादि चूर्ण मीठारस जांगलदेशके मांसकारस इन्होंको सेवन करनेसे मेदबढ़े ॥ दूसराप्रकार ॥ सितोपलादि चूर्ण बकरीका दूध जांगलदेश के बकराका मांस इन्हों के सेवनसे मेदबढ़े ॥ हाड़वर्द्धन ॥ घृतमें पकेहुये पदार्थ नानाप्रकार के दूध चन्दनादि दाषादि चूर्ण जांगलदेश मांसकारस मीठे अन्न व पान इन्होंके सेवनसे हाड़ वृद्धिहोवै ॥ शुक्रवृद्धि ॥ खट्टे रसमें सिद्ध किये पदार्थ दस्तावर रस नोनीघृत दूध मीठारस इन्हों के सेवन से वीर्य बढ़े ॥ दूसराप्रकार ॥ काकड़ीकी जड़ दूध विदारीकंद सांवरीका कंद इन्होंमें खांड़ शहद मिलाइ पीनेसे वीर्य्य बढ़े ये सब नुसखे क्षयीमेंउपजे उपद्रवोंको हितहैं और क्षयीमें छर्दि उपजे तो गिलोयके रसमें शहद मिलाइ पीवै अथवा विजौराकी जड़ धान की खील, सेंधानोन, पिपली शहद इन्होंको मिलाय खानेसे छर्दि जावै ॥ दूसराप्रकार ॥ हलदी, सुपारी, खांड़ इन्होंका १ तोला चूर्ण खाने से छर्दि जावै अथवा सुहागा ६ माशा लेय काकमाची के रस में खरलकरि पीने से छर्दि मिटै ॥ अथवा सुगन्ध पदार्थ के खानेसे छर्दिमिटै॥ रक्तछर्दिपर ॥ लाखके रसमें शहद मिलाइ पीने से अथवा कावली की जड़को पुष्यार्क योग में लाइ पीछे गौ के दूधमें पीसि पीने से रक्तकी छर्दि मिटै और १ तोला सुंठी दूध में पीवै ॥ उसीरादिचूर्ण ॥ बाला, तगर, शुंठि, कंकोल, चन्दन, लाल चन्दन, लवंग, पिपलामूल, पिपली, इलायची, नागकेसर, नागरमोथा, आँवला, कपूर, वंशलोचन, तमालपत्र, कालाअगर ये सब बराबर भागलेय खांड़इससे अष्टमांशलेय इसको खानेसे हृदयके तापको व लोहूकी छर्दिको हरे और जो क्षयीमें कफका कोपहो तो केलाकीघड़को भूनि शहद मिरचमें मिलायखावै सुखहोवै और जो क्षयीमें अरुचिहो तो धनियां इलायची मिरच इन्होंके चूर्ण में खांड़ घृत मिलाय खाने से रुचि उपजै ॥ दूसरा ॥ अदरख के रसमें शहद मिलाय खाने से अरुचि मिटै ॥ दाहपर ॥ कचनारकीछाल के रसमें जीराका चूर्ण कपूर मिलाय पीनेसे क्षयीमें उपजा दाहमिटै ॥ शोषपर ॥ कोलिकिलाक्षके बीजोंको जीरा जायफल गुड़मेंमिलाय खानेसे

अथवा मत्स्याक्षी पाडला तांडुलजा जड़ इन्होंको खानेसे शोषमिटै
उरःक्षतक्षयनिदान ॥ बहुत तीरंदाजी करनेसे और ज्यादाभार उठाने
से और ज्यादा बलवान् के संग कुश्ती करनेसे और बिषम स्थान
से व ऊंचेस्थानसे पड़नेसे और बैलके व घोड़ाके संगभाजनेसे और
भैंसा आदि को बशमें करनेसे और भारीपाथर भारीलाकड़ इन्हों
को उठाय दूर गेरनेसे और दूसरोंको मारनेसे और ऊंचे स्वरसेपाठ
करनेसे और ज्यादे मार्गमें गमनकरनेसे और चौड़ी लम्बीनदीको
तरनेसे और बैल घोड़ा भाजताहुआ कोपकड़डाटनेसे और ज्यादे
कूदनेसे और ज्यादे नाचनेसे और अनेकतरहके कर्म्म करनेसे और
चोट लगनेसे बहुत मैथुनकरनेसे और रूखाखानेसे औरकमभोजन
करनेसेछातीमें रोगहोयहै तबहियादूखै और दोनोंपसलियों में दरद
होवै और अंग सूखेरहैं और शरीरकांपै और बीर्य्य, बल, अग्नि,
बर्ण रुचि ये घटजांय और लोहू थूकै लोहूजाड़ै लोहूमूतै पसवाड़ा
कटिमें दरदहोय और ज्वरहो और गरीबसा होजाय और अतीसार
खांसी होय अग्निका नाशहोय और खाँसते हुये काला पीला गां-
ढिल ऐसा कफथूकै और कफभ्रमै और बल बीर्य्यकाक्षय होनेसेऐसा
रोगी दिन दिन क्षयहोय॥ उरःक्षतकापूर्वरूप ॥ जब ये सब अब्यक्त हों
वह पूर्बरूप होयहै ॥ असाध्यलक्षण ॥ जिसकी छातीमें शूल हो और
लोहूकीछर्दिहोय और खांसीज्यादाहोय और मूत्रलोहूके समानहो
और पसली मगर कटि इन्होंमेंदुःखहो ऐसाहो तो असाध्य जानिये
असाध्यलक्षण॥ और यह रोग थोरे लक्षणों युतहो और अग्नि दी-
पन हो और बलवंत मनुष्य के उपजे और नयारोगहो तो साध्य
जानो और यही रोग १ बर्षसे उपरान्त जाप्य होयहै और जो अ-
च्छा बैद्य इलाजकरै और रोगी की जवान अवस्थाहो तोभी एक
हजार १००० दिनतक जीवै ॥चिकित्सा॥ तृप्तिकरने वालेशीतल बि-
दाही नहो हलका ऐसेअन्न पान सेवनेसे क्षीणमें सुखहोय॥चिकित्सा॥
इसरोगवाला शोक स्त्रीसंग क्रोध असूया कहेदूसरेके गुणोंमें दोषों
का आरोपण करना इन्होंकोत्यागे और कथापुराण इत्यादि बिषयों
को सेवन करावै और देवता, ब्राह्मण, गुरू इन्होंकी सेवा करावै

और ब्राह्मणोंके मुख सुपुण्याहवाचन को सुनै ॥ दशमूलादिकाढा ॥ दशमूल, बलियार, रास्ना, पुष्करमूल, देवदारु, नागरमोथा इन्हों का काढ़ा करि पीनेसे पसलीशूल, उरक्षत, क्षय, कास, श्वास, मस्तकशूल, कांधाकाशूल ये सब जावै ॥ बलादिकाढा ॥ बलिया, विदारीकंद, श्रीपर्णी, बहुपत्री, सांठी इन्होंको दूधमें पीसि काढ़ाकरि शहद मिलाइ पीनेसे क्षयीरोग नाशहोइ ॥ एलादिगुटिका ॥ इलायची, तमालपत्र, दालचीनी, दाख, पिपली ये प्रत्येक २ तोलेलेइ मिश्री ४ तोला खजूर ४ तोला फालसा ४ तोला मुनक्का दाख ४ तोला इन्होंको महीन पीसि शहदमें गोली बनाइ १ तोला भर की शुभदिन देखिखावै रोज खानेसे क्षतक्षयको व ज्वरको व खांसी को व श्वास को व हुचकी को व छर्दि को व भ्रमको व मूर्च्छा को व मद को व तृषाको व शोषको व पसली को व शूलको व अरुचिको व प्लीहाको व आढ्यवातको व रक्तपित्तको व आढ्य राजरोगको हरै और एलादिगोली यहवीर्य्यको बढ़ाइतृप्ति करै ॥ द्राक्षादिघृत ॥ दाख ६४ तोला मुलहठी ३२ तोला पानी २५६ तोला लेइ मिलायकाढ़ा करि चतुर्थांश रक्खै पीछे मुलहठी चूर्ण ४ तोला दाख ४ तोला पिपली ८ तोला घृत ६४ तोलालेइ पीछे इनसबोंके चौगुना दूध मिलाय पकाय पीछे शीतल होने पर खांड़ ३२ तोले मिलावै यह द्राक्षादिघृतखाने से क्षतक्षीणको व बातपित्तको व ज्वरको व श्वास को व विस्फोटक को व हलीमकको व प्रदरको व रक्तपित्तको हरै और मांस बलको बढ़ावै ॥ बलादिघृत ॥ बलिया, मोटीबलिया, अर्जुनवृक्ष इन्होंके काढ़ामें मुलहठी का कल्क मिलाय घृतको सिद्धकरि खाने से हृदयके रोगको व शूलको व उरःक्षतको व रक्तपित्त को व खांसी को व बवासीरको व बायुरोगकोहरै ॥ पथ्यादिघृत ॥ हड़, मोटीबलिया इन्होंके काढ़ामें बराबरका दूध मिलाय और पिपली बासा इन्हों का कल्क मिलाय घृतको सिद्ध करने से और खाने से उरःक्षतक्षय को हरै ॥ गोक्षुरादिघृत ॥ गोखुरू ४ तोला बाला ४ तोला मजीठ ४ तोला बलियार ४ तोला काश्मरी ४ तोला डाभकी जड़ ४ तोला पृष्ठिपर्णी ४ तोला गंगेरन ४ तोला शिरस ४ तोला शालिपर्णी ४

तोला इन्होंको चौगुना ईखके रसमें काढ़ा करि पीछे सफ़ेद लज्जा-वंती,ऋषभ, मेदा,जीवंती, जीवक, शतावरी, दाख, खांड़,मुंडी, बासा इन्होंका कल्क मिलाय पीछे घृत ६४ तोला मिलाय पकाय खाने से बालको व पित्तको व हृद्रोगको व गुल्मको व मूत्रकृच्छ्रको व प्रमेह को व बवासीर को व खांसीको व शोषको व क्षयीको हरै और धनुष स्त्रीसङ्ग,भार,मार्गगमन इन्होंसे खिन्न मनुष्योंको बल,मांस बढ़ावै॥ अमृतप्राश्यावलेह ॥ दूध, आंवलाकारस, बिदारीकंदकारस, ईखका रस,क्षीरवृक्षोंकारस इन्हों में घृत ६४तोला मिलायपकाय पीछे मुल-हठी,ईख,दाख,चंदन,लालचंदन, बाला,खांड़,कूठ,पद्माख,महुआ के फूल,धमासा,कटूतृणइन्होंकाचूर्ण मिलायलेहबनायशहद३२ तोला खांड़ ४०० तोला दालचीनी २ तोला तमालपत्र २ तोला नागके-शर २ तोला मिलाय रक्खै पीछे अग्निके बलकोदेखि खावै यह अ-मृतप्राश्यावलेहरक्तपित्तको व क्षतक्षयको व तृषाको व अरुचिको व श्वासको व कासको व छर्दिको व हुचकीको व मूत्रकृच्छ्रको व ज्वर को हरै और बल को बढ़ावै और स्त्रीसंग की इच्छा बढ़ै और यह महादेवजीने कहाहै॥ रसराज॥ मोतीकीभस्म, मूँगाकीभस्म, पारा कीभस्म, सोनाकीभस्म, कालाअभ्रक, कांतलोहाकी भस्म, रांगकी भस्म ये सब बराबर भाग लेइ पीछे इन्हों को गिलोय के रसमें ७ भावनादेय पीछे शतावरिके रसमें ७ भावनादेइ पीछे १माशा रसको शहद मिरचोंके चूर्णके सङ्ग खानेसे यह रसराज उरःक्षतक्षयको व कामलाको हरै। और इसरोगमें धानकी खील,दूध,शहद इन्होंको मिलाय खावै और यह जीर्ण होनेपर खांड़ दूधमें मिलाय पीवै और मदिराके सङ्ग धानकी खीलोंको खानेसे पसली शूल, वस्ति-शूल, मंदाग्नि, पित्त इन्होंकोहरै। और धानकी खीलोंका चूर्णकरि घृत,शहद,दूध इन्होंमें मिलाय खानेसे बमन होइ शोषकोहरै॥ क्ष-यीरोगमेंपथ्य॥ रोगी बलवान् हो और दोष अधिक हो तो पहिले जुल्लाबदेकरि शुद्धकरना योग्यहै गेहूँ,मूँग, चना,लालरङ्ग के चावल बकरीका मांस, मक्खन, दूध तथा घी, कच्चेमांसखानेवाले जीवोंका मांस, जङ्गली जीवों के मांसकारस। सूर्यकी तेज किरणों से सुखाये

हुये महीन पीसेहुये वेरोंका चाटना, रागोंका सुनना, कांवलिकखांड़ व चूर्णके मसाले, चंद्रमाकेकिरण, मीठारस, केला, कटहर, आम इन्होंके पकेहुये फल, आमला, छुहारा, पुष्करमूल, फालसा, गोलासहोंजना, मोलसिरी, नवीनताड़काफल, दाख, सौंफ, मणिमंथ, वासाके पत्ते, वकरी, गौ, भैंस इन्होंकाघृत, वकरेकीलेंड़ी और मूतका लेप मत्स्यंडी, शिखरणि, मदिरा, रसाला, कपूर, कस्तूरी, सफ़ेदचन्दन, तेल इन्होंकालगाना, सुगंधितलेप, न्हाना, वेपवनाना, गोतामारकेन्हाना महल, माला, कामकीकथा, मंदपवन, गाना, नाचना, चंद्रमाकीकांति वीनकावाजा, मृगनयनी स्त्रियोंकादर्शन, सोनेकाचूर्ण, मोती वहुत सी मणियोंसे जड़ेहुये गहनोंका पहिरना, होम, दान, देवपूजा, ब्राह्मणपूजा, हृदयकाहित अन्न तथा पान येसव क्षयरोगमें पथ्यहैं ॥ अथअपथ्य ॥ विरेचन, वेगकारोकना, श्रम, स्त्रीसङ्ग, स्वेदन, अंजन, वहुत जागना, साहसकर्म्म, रूखाअन्न, पान, विषमभोजन, तांवूल, कोहला कुलथी, उड़द, लहसन, वांसकेअंकुर, हिंग, खट्टाचर्परा कसायलारस सवप्रकारकी कड़वीवस्तु, पत्तों का साग, खार, विरुद्ध भोजन, सेमि ककड़ी, सवविदाहीपदार्थ, कालाकरेला येसव क्षयरोगमें त्यागदेवे ॥

इतिवेरीनिवासकरविदत्तविरचितनिघण्टरत्नाकर भाषायांक्षयीरोगप्रकरणम् ॥

कासीकर्म विपाक ॥ जो दुर्बल मनुष्यों के धन को नवीन वेष धारणकरि चोरै वह कासरोगी होवै ॥ प्रायश्चित्त ॥ कृच्छ्र चान्द्रायण व्रत करनेसे कास मिटै ॥ दूसराप्रकार ॥ रांगकी चोरीकरनेवालाकफ रोगी होयहै ॥ प्रायश्चित्त ॥ १ दिन व्रतकरि पीछेरांग ४०० तोलाभर दानदेवै ॥ तीसराप्रकार ॥ जो नित्यकर्म्मकहे संध्याआदि न करे वह कफ रोगीहो अथवा वैरियोंसे पीड़ा पावै ॥ प्रायश्चित्त ॥ १ महीना तक यवका भोजनकरै और सहस्र नाम का पाठसुनै और अग्नि में चरु घृत की १०८ आहुति देवै ॥ ज्योतिःशास्त्राभिप्राय ॥ जिसके जन्मपत्रमें कर्क राशिपै सूर्य्यहो और बुध की दृष्टिहो वह अंधाहो और कफ बात रोगीहो किंवा चोरीकरै और चंचलकर्म्मवालाहो॥ कारणसंप्राप्ति ॥ मुँहमें धूमाजानेसों और मुँहमेंधूलिकेजानेसों कसरत सों और रूखे अन्नके खानेसों भोजनकेकुपथ्यसों और मलमूत्र छींक इन्होंके वेगके रोकने सों कास पैदाहोयहै पीछे वह हियाका प्राण पवनसों मिलै और वह प्राण पवन कण्ठ के उदान पवनसों मिलि उन दोनों पवनों को पुष्टकरि कांसीका फूटा बरतन सरीखा शब्द करै मुँहमेंसे बारबार निकसै दोषों सहित तिसे वैद्यजनकास कहै हैं ॥ संख्यारूपसंप्राप्ति ॥ कासरोग ५ प्रकारकाहै बायुका १ पित्त का २ कफका ३ चोटलगनेका ४ क्षयीरोगका ५ ये उत्तरोत्तर क्रम पेबलवान्हैं ॥ पूर्व्वरूप ॥कंठमेंकांटासा पड़िजाइ और कण्ठमेंखाज चलै भोजनकराजावैनहीं तब जानिये खांसी होगी॥ बायुकेकासका लक्षण ॥ हियामें माथामें कनपटीमें उदरमें पसवाड़ा शूलचलै और मुँह उतरजाइ और बल पराक्रम स्वर ये क्षीण पड़िजाइँ और सूखा खांसै ये लक्षणवायुकीखांसीके हैं॥ चिकित्सा ॥ रूखाकासवालारोगी को आदिमें स्नेहपानादिकरावै पीछेघृत, बस्ति, पेया, दूध, यूषरस ग्राम्य व अनूपउदक, साठीचावल, यव, गेहूँ, मांसरस इन्होंका भोजन देवै ॥ रुद्रपर्पटी ॥ शोधापारा १ भाग गन्धक २ भाग लेय पीछे एरण्डकीजड़ काकड़ासिंगी कावली अरणी इन्होंके अर्कमें १ दिनतक खरलकरै अग्निसे पकाय पीछे दोनुओंका चतुर्थांशतांबा की भस्म मिलाय कोमलअग्निसे पकाय जब लालरङ्गहो तब ताईं

पीछे गौ गोबर ऊपर केला के पत्ता को धरि तिस पर द्रव्य धरि दूसरे पत्तासे ढकि ऊपर गोबर धरि पीड़न करै पीछे शीतल होनेपर द्रव्यको काढ़ि महीनपीसि चौथाहिस्सा बचनागविष मिलाय तैयार करै पीछे २ रत्ती खाय ऊपर निर्गुण्डीके रसकोपीवै २ तोले अथवा भँगराका रस व शहदके सङ्गखावै यह रुद्रपर्पटीरस बातकी खांसी कोहरै ॥ भूतांकुश ॥ शोधापारा १ भाग गन्धक २ भाग तांबाभस्म ३ भाग मिरच १० भाग अभ्रक भस्म ४ भाग बचनागविष १ भाग नाकछिकनी १ भाग इन्होंको निंबूके रसमें खरलकरि १ माशाभर खानेसे यह भूतांकुश रस बायुकी खांसीको हरैहै इसपर अनूपान वहेड़ाकीछालके काढ़ामें शहदमिलाय पीनाहै ॥ सठनादिलेह ॥ कचूर काकड़ासिंगी, पिपली, भारंगी, गिलोय, नागरमोथा, धमासा इन्हों के चूर्णमें तेल मिलाय खानेसे बायुकी खांसीजावै ॥ भारंग्यादिलेह ॥ भारंगी, दाख, कचूर, काकड़ासिङ्गी, पिपली, शुंठिइन्होंके चूर्ण में गुड़ तेलमिलाय चटनीकरि चाटनेसे बायुकी खांसीजावै ॥ विश्वादिलेह ॥ शुंठि, भारंगी, पिपली, कायफल, दाख, कचूर इन्होंके चूर्ण में तेल मिलाय चाटनेसे बायुकी खांसीजावै ॥ दशमूलीघृत ॥ दशमूलकेकाढ़ा में भारंगीका कल्क मिलाय और तीतरका मांस व घृत मिलाय पकाय खानेसे बायुकी खांसीजावै ॥ कटूफलादिपेय ॥ कायफल, रोहिषतृण, भारंगी, नागरमोथा, वच, धनियां, शुंठि, पित्तपापड़ा, काकड़ासिंगी, देवदारु इन्होंकेकाढ़ामें शहद हींगमिलाय पीनेसेवातकीखांसीको व कफकीखांसीको व कंठरोगको व मुखरोगको व शूलरोगको व हुचकी को व श्वासको व ज्वरकोहरै ॥ शुंठ्यादिचूर्ण ॥ शुंठि, धमासा, एरण्ड की जड़, काकड़ासिंगी, चचुंदर, देवदारु येसब बराबर भागलेय चूर्ण करि गरम पानीकेसङ्ग अथवा तेलकेसङ्ग खानेसे बातकी खांसीको व पित्तकी खांसीको हरैहै ॥ चित्रकादिलेह ॥ चीता, पिपलामूल, शुंठि मिरच, पिपली, नागरमोथा, धमासा, कचूर, पुष्करमूल, हड़, तुलसी बच, भारंगी इन्होंकीराख ८० तोला और ८०० काढ़ामें ४० तोला खांड़, घृत १६ तोला मिलाय पकावै पीछेशहद १६ तोला पिपली १६ तोला बंशलोचन १६ तोला मिलाय चाटनेसे खांसीको व श्वास

को व गुल्म को हरै और हृद्रोगको भी हरैहै ॥ शृंग्यादिलेह ॥ शुंठि धमासा, काकड़ासिंगी, मुनक्का, कचूर, मिश्री इन्होंको पीसि तेल में मिलाय चाटनेसे दारुण वातकी खांसीको हरै ॥ दशमूलादिकाढ़ा ॥ दशमूल, शुंठि इन्होंका काढ़ाकरि पीनेसे हुचकीको व खांसीको हरैहै और इनोंहीकी यवागू दीपनी है और कामदेवको पैदा करैहै और बायुकेरोगोंकोहरैहै ॥ पंचमूलकाढ़ा ॥ शालिपर्णी, पृष्ठिपर्णी, दोनोंकटैली, गोखुरूइन्होंकेकाढ़ामें पिपलीकाचूर्णमिलायपीनेसे बायुकीखांसी जावै और इसपररससंयुक्त भोजनकरावै ॥ कर्कटकरस॥काकड़ासिंगी के रसको घृतमेंभूनि शुंठि संयुक्तकरि खानेसे बातकी खांसीजावै अथवा शिंगीमछलीको घृतमेंभूनि शुंठिमिलाय खानेसे बायुकीखांसी जावै ॥ शुंठ्यादिचूर्ण॥ शुंठि,धमासा,दाख,कचूर,जवासा इन्होंकेचूर्णमें तेलमिलाय चाटनेसे बायुकीखांसीजावै॥ पित्तकेकासकालक्षण ॥ हिया में दाहको ज्वरहो और मुखमें शोषहो ज्यादहप्यासलगे और कडुआ मुखरहै और पीला व कडुआ बमनकरै और पीला शरीरहो जाय और सब अङ्गोंमें आगसीलगीरहै येलक्षण पित्तकीखांसीकेहैं॥ सिंहास्यादिकाढ़ा ॥ बासा,गिलोय,कटैली इन्होंकेकाढ़ामें शहदमिलाय पीनेसे पित्तकी खांसीको व कफकी खांसीको व श्वासको व ज्वरको हरै॥ बलादिकाढ़ा ॥ बलिया,दोनों कटैली, दाख, बासा इन्होंकेकाढ़ा में खांड़ शहद मिलाय पीनेसे पित्तकी खांसीजावै॥ साठ्यादिकाढ़ा॥ कचूर, बाला, कटैली, शुंठि इन्होंके काढ़ामें घृत मिलाय पीनेसे पित्तकी खांसी जावै ॥ शरादिकाढ़ा ॥ शर, ईख, डाभ, कसइ, साठीचावल, पिपली, दाख इन्होंको दूधमें काढ़ाकरि पीनेसे पित्तकीखांसी जावै और इस काढ़ामें शहद खांड़भी मिलावै ॥ त्वक्क्षीरिलेह ॥ तवाखीर, पिपली, धानकीखील, दाख, नागरमोथा, खांड़, घृत, शहद इन्होंको मिलाय चटनीकरि चाटनेसे पित्तकी खांसीजावै ॥ कंटकार्यादिकाढ़ा ॥ दोनों कटैली, दाख, बासा, कचूर, बाला, शुंठि, पिपली इन्होंके काढ़ामें खांड़ शहद मिलाय पीने से पित्तकी खांसी जावै॥ पिप्पल्यादिचूर्ण ॥ पिपली,तवराज,बंशलोचन ये सब बराबर भाग लेइ शहद घृत मिलाय चाटने से पित्तकी खांसी जावै ॥ मधुकादि

चूर्ण ॥ मुलहठी,पिपलामूल,दूब,दाख, पिपली ये समान भाग लेइ घृत शहद मिलाय चाटनेसे पित्तकी खांसी जावै ॥ अर्धावर्तितकाढ़ा॥ सेरका आधासेररहा पानीमें धानकीखील,पिपली, शहद,घृतमिलाय पीनेसे पित्तकी खांसी जावै ॥ मातुलिंगादिलेह ॥ बिजौराकारस, हिंग त्रिफला इन्होंके काढ़ामें खांड़ शहद घृत मिलाय पीने से पित्तकी खांसीको हरै ॥ खर्जूरादिलेह ॥ खजूर,पिपली,दाख, मिश्री, धान की खील इन्होंको बराबर भागलेइ शहद घृत मिलाय चाटने से पित्त की खांसीको हरै ॥ द्राक्षामलादिलेह ॥ दाख,आंवला,खजूर, पिपली मिरच इन्होंके चूर्णमें घृत,शहद मिलाय खाने से पित्त की खांसी जावै ॥ क्षीरामलकघृत ॥ भैंसकादूध,बकरी का दूध, भेड़का दूध, गौ कादूध,आंवलाकारस येसब बराबर भागलेइ घृत ६४ तोले मिलाय अच्छी युक्तिसे घृतको पकाय खानेसे पित्तकी खांसीजावै॥ रसराज॥ तांबाकीभस्म, अभ्रक भस्म,कांत भस्म इन्हों को बराबर भाग लेइ पीछे कासिवदारसमें खरलकरि पीछे शतावरिके रसमें खरल करि पीछे हातगाबुंटीके रसमें खरलकरि पीछे अम्लवेतसके रसमें खर-लकरि पीछे मदिरा में खरलकरि इसको २ माशे खाने से पित्त की खांसीजावै। इसमें संशय नहींहै ॥ लोकेश्वररस ॥ लोकेश्वर रस,पि-पली,शहद इन्होंको खानेसे दारुणभी पित्तकी खांसी नाशको प्राप्त हो इसमें संशय नहीं है यह धन्वंतरिका मत है ॥ कफके कासका लक्षण ॥ कफसे मुख लिपटा रहै और मथवायहो और भोजन में अ-रुचिहो शरीर भारी कंठमें खुजली और कफकी गांठे थूकै ये लक्षण कफकी खांसीके हैं ॥ चिकित्सा ॥ कफकी खांसीमें प्रथम वमन करावे पीछे लंघन कराय पीछे औषधोंसे बात रहित प्रकृतिको करै और कडुआ,तिक्त ऐसा यूषदेवै ॥ नवांगयूप ॥मूंग, आमला, यव, अनार बेर,सूकामूला,शुंठि,पिपली,कुलथी इन्होंका यूषबनाय खाने से कफ की खांसीजावै ॥ पिप्पल्यादिकाढ़ा ॥ पिपली, कायफल,शुंठि,काकड़ा-सिंगी,भारंगी,मिरच,अजमान, कटैली, निर्गुण्डी, अजमोद, चीता बासा इन्होंके काढ़ा में पिपली के चूर्णको मिलाय पीने से कफकी खांसीजावै ॥ पित्तकफकासपर ॥ बासा के रसमें शहद मिलाय पीने

से कफकी खांसी जावै अथवा तालीसादि चूर्ण के खाने से कफ की खांसी जावै अथवा कचूर, अतीस, नागरमोथा, काकड़ासिंगी कांकड़ाकेझाड़,हड़, अदरख, शुंठि ये समान भाग लेइ पीछे हींग सेंधानोन, तक्रमें मिलाय चूर्ण घृतकरि बारम्बार पीने से कफकी खांसी जावै ॥ बिभीतकधारण ॥ बहेड़ाके दलके चूर्णको घृतमें मलि ऊपर पत्ते बांधि गौका गोबर लपेटि अग्नि में पकाय पीछे मुखमें लेनेसे कफकी खांसी जावै ॥ भद्रमुस्तादिचूर्ण ॥ नागरमोथा, पिपली ये समान भाग ले चूर्ण करि शहद में मिलाय खानेसे जल्दी कफकी खांसी जावै ॥ पथ्यादिचूर्ण ॥ हड़, शुंठि, पिपली,नागरमोथा, देवदारु इन्होंको बराबर भाग लेय शहद में मिलाय खाने से कफकी खांसी जावै ॥ चित्रकादिचूर्ण ॥चीता, पिपलामूल,पिपली, गजपिपली इन्हों को बराबर भागलेय चूर्णकरि शहदमें मिलाय खानेसेकफकीखांसी जावै ॥ शिलादिलेह ॥ मनशिल,शुंठि, मिरच,पिपली,हड़, हिंग,बाय-बिड़ंग, सेंधानोन ये सब बराबर भागलेय शहद घृतमें चटनीबनाय चाटनेसेश्वासकोव हुचकीकोवखांसीकोहरै॥व्योषादिघृत॥शुंठि,मिरच पिपली,अजमोद,चीता,जीरा,बच,चाब इन्होंके कल्कमें घृतको सिद्ध करिबासाकारसशहदमेंमिलाय खानेसेकफकीखांसीकोवश्वासकोहरै कटुत्रयादिचूर्ण ॥ शुंठि,मिरच, पिपली, चीता, चबक, देवदारु,रासना बायबिड़ंग,हड़,बहेड़ा, आंवला इन्होंके चूर्णमें खांड़मिलाय खानेसे कफकीखांसीकोहरैदृष्टान्त जैसेविष्णुकीगदादैत्योंकोनाशैतैसे ॥ बोल बद्धरस ॥पाराभस्म,बचनाग ये बराबरभागलेय और बोल,हरताल पाढ़ा,काकड़ाकेझाड़,सोनामाखी,हल्दी, कटैली, जवाखार,कलहारी जीरा,सेंधानोन,मुलहठी इन्होंके चूर्णको अदरखके रसमें७दिनतक खरलकराय छायामेंसुखाय पीछे चीताकेरसमें७दिनतकभावनादेइ गोली बेर समानकराय खावै यह बोलबद्धरस कफकी खांसीको व श्वासको व पाण्डुकोहरै॥ दन्तीधूम ॥ जमालगोटाकी जड़के धुवांसे किंबा निर्गुण्डीकेधुवांकेपीने से कफकीखांसीकोहरै इसमेंसंशयनहीं उरःक्षतकासनिदान ॥ बहुतस्त्रीसंगकरनेसों मार्गमें चलनेसों ज्यादह भारउठानेसों युद्धकरनेसों घोड़ाहाथीकेनिग्रहकरनेसों रूखाखानेसों

वायु हियेमें जाय खांसना प्रकटकरे प्रथम सूखाखांसे पीछे लोहूथूके कंठघणादूखे शूल चले सन्धिसन्धिमें पीड़ा चले ज्वरहोय श्वासप्यास होय स्वरघोंघोंबोले और कबूतरकी भांति बोलबाकरे ये क्षतकी खांसी के लक्षणहैं ॥ क्षयकासनिदान ॥ कुपथ्य और विषम भोजनकरे बहुत मैथुनकरे और मलमूत्र रोके बहुतसोवे तबमनुष्यके मन्दाग्निहोय वात पित्त कफ तीनोंको कोपै तब क्षयीरोग की खांसीको पैदा करै तब वह खांसी शरीरको क्षीणकरे और ज्वर दाह मेह इन्होंको करै तब वह प्राणों को नाश करै सूखा खांसे दुबला होताजाय और रुधिर मांस शरीरका सूखजाय लोहू राद थूके तब असाध्य जानिये यह खांसी सम्पूर्ण लिंगों सहित असाध्य होयहै और यह क्षयीकी खांसी नवीन हो और बलवान् के शरीर में उपजै तो जाप्य है व साध्य है और पुरानी असाध्य है और नवोत्पन्न क्षय कास रोगी को अच्छा वैद्य अच्छा टहलुआ द्रव्य मिलै तबभी कोइक साध्य जानो और बूढ़े मनुष्यों की खांसी सब जाप्य होय है और वात पित्त कफ की खांसी साध्य होय है और जाप्य खांसी को पथ्यों से जीते ॥ चिकित्साप्रक्रिया ॥ क्षत की खांसी को पाचन, पौष्टिक, पित्त कासको हरनेवाले व मीठे औषधोंसे जीते अथवा क्षत खांसीवाला ईख, कसईबीज, कमल, चन्दन इन्होंकी यवागूबनाय शहद मिलाय पीनेसे क्षतसन्धानहोय ॥ इक्ष्वादिलेह ॥ ईखकारस, छोटीकसई, कमल बिस, कमल, सफेदचन्दन, मुलहठी, पिपली, दाख, लाख, काकड़ा-शिंगी, शतावरि ये समान भाग लेय और वंशलोचन २ भागलेय और सबोंसे चौगुनी मिश्री मिलाय शहद घृतमें चटनीकरि चाटने से क्षतकी खांसी जावे ॥ मंजिष्ठादिचूर्ण ॥ मजीठ, मूर्वा, तगर, चीता पाढ़ा, पिपली, हल्दी इन्होंके चूर्णको शहदमें मिलाय चाटनेसे अथवा ईखकेरसमें घृतमिलाय पकायपीनेसे क्षतकी खांसीजावे ॥क्षुद्रावलेह॥ कटेलीकापंचांग, पिपली, पिपलामूल, ऊंगाके बीज, जीरा, सेंधा-नोन इन्होंको पीसि शहदमें चटनीकरि चाटनेसे सबतरहकी खांसी को व श्वासको व छातीके क्षतसे उपजी खांसीको व कफकी छर्दिको व लोहूकी छर्दिकोहरै ॥ तारकेश्वररस ॥ पारा १ भाग चांदीका भस्म

पारा के चौथाई भाग मैनशिल व सोनामाखी ये पारासे चौगुनेलेय पीछे बासा व ईख इन्होंके रसमें २ पहरतक खरलकरि बालुकायंत्र में २ पहरतक पकाय पीछे चूर्णकरि २ रत्तीभरखानेसे क्षतकी खांसी को निश्चयहरै इसपर अनुपान अनार, त्रिफला, शुंठि, मिरच, पिपली इन्होंके बराबर गुड़मिलाय १ तोलाभर खावै यह तारकेश्वररसहै॥ सूर्य्यरस ॥ पारा १ भाग गन्धक १ भाग सोनामाखी ३ भाग हरताल ५ भाग अभ्रकभस्म १ भाग बच्च १ तोला कूट १ तोला हल्दी १ तोला चीता १ तोला सुहागा १ तोला सेंधानोन १ तोला बच्चनागबिष १ तोला पाढ़ा १ तोला कलहारी १ तोला शुंठि १ तोला मिरच १ तोला पीपल १ तोला इन्होंको भंगरा के रस में १ दिन खरल करि पीछे १ माशाभर इस सूर्य्य रसके खानेसे हुचकी को व स्वरभंगको व खांसी को हरै अथवा ८ रत्ती रस पर्पटी को खावै ऊपर रात्रिमें गोखुरू, शुंठि, बकरीके दूधमें पानीमिलाय दूधमात्र गरम करनेसे रहै तब पिपली के चूर्णको मिलाय पीवै॥ पिप्पल्यादि लेह ॥ पिपली, पद्माख, लाख, पकीहुई बड़ी कटैलीके फल इन्होंको पीसि घृत शहदमें चटनी बनाय चाटनेसे क्षयकीखांसीकोहरै॥ कुलथीगुड़॥ कुलथी ४०० तोला दशमूल ४०० तोला भारंगी ४०० तोला लेय १६०० तोला पानीमें काढ़ा करि चौथाई भाग रक्खै पीछे गुड़ २०० तोला मिलाय पाकबनाय शीतल होनेपर बंशलोचन २४ तोला पिपली ८ तोला मिलाय शहद १६ तोलामिलाय बरतन में घालिधरै पीछे अग्निके बलकोदेखि खानेसे जल्दी रोगोंकोहरै और विशेषकरि राजयक्ष्माको व पित्तकी खांसीको व श्वासको व अजीर्णको व जीर्णज्वरको व पाण्डुको व हृदयरोगको व कफको व वायुको हरै और उपद्रवोंकोहरै यह कुलथीगुड़है॥ बासाकूष्मांडावलेह॥ कोहला के टुकड़े २०० तोला अग्निसे सिझाये हुये लेय घृत ६४ तोला मिलाय पकाय पीछे बासाके काढ़ा २५६ तोले भरमें कोहला के टुकड़ोंको मिलाय पकाय पीछे बंशलोचन १ तोला आंवला १ तोला नागरमोथा १ तोला भारंगी १ तोला तज १ तोला तमालपत्र १ तोला छोटी इलायची १ तोला बड़ी इलायची ४ तोला अतीस ४

तोला धनियां ४ तोला मिरच ४ तोला पिपली १६ तोला शहद ३२ तोला मिलाय खानेसे खांसीको व श्वासको व क्षयीको व हुचकीको व रक्तपित्तको व हलीमकको व हृदयरोगको व अम्लपित्तको व पीनसको हरै ॥ ककुभलेह ॥ अर्जुनवृक्षकी छालको महीन पीसि पीछे वासाके रसमें घनीसे घनी भावनादेय पीछे घृत,शहद,मिश्री इन्हों को मिलाय चटनी करि चाटनेसे क्षयीकी खांसीको व पित्तको हरै ॥ पिप्पल्यादिघृत ॥ पिपली, गुड़, बकरीका दूध इन्होंमें घृतको सिद्ध करि खानेसे क्षयीकी खांसीवालेकी जठराग्निको दीपनकरै ॥ पिप्पल्यादिलेह ॥ पिपली, मुलहठी इन्होंके काढ़ामें मिश्री मिलाय गौका दूध ६४ तोला घृत ६४ तोला यवकी पीठी ८ तोला गेहूंकी पीठी ८ तोला मुनका दाखका चूर्ण ८ तोला आमलकारस ८ तोला सिरसमका तेल ८ तोला इन्होंको कोमल अग्निसे पकाय घृत शहद में मिलाय चाटनेसे श्वासको व खांसीको व क्षयीको व हृद्रोगको हरै और वृद्ध अलपवीर्य्यवालों को हितकारक है इसमें संशय नहीं ॥ स्वयमग्निरस ॥ शोधा पारा १ भाग गंधक २ भाग इन्हों को खरलमें कजली करै पीछे दोनों के समान पोलाद का चूर्ण मिलाय कुवारपट्टा के रसमें २ पहरतक खरलकरि पीछे गोला बनाय तांबाके पात्रमें घालि अरण्डके पत्तों से लपेटि ४ घड़ीतक राखै संपुटमें पीछे गरम होनेपर चावल अन्नके कोठा में गाड़ि २ दिनतक राखैपीछे महीनपीसि कपड़ा माहँकेछाने पीछे शुंठि, मिरच, पीपल त्रिफला, इलायची, जायफल, लवंग इन्होंका चूर्ण द्रव्यसे आठगुना मिलाय और शहदमें मिलाय ८ माशेभर रोज खानेसे यह स्वयमग्नि रस क्षयीकी खांसीको हरैहै अथवा गडूंभाकी जड़, भांग पिपली, तिल इन्होंके चूर्णको ४ माशे भर खाने से क्षय की खांसी जावै ॥ सन्निपातकास ॥ जो सन्निपातकी दारुण खांसी होतो सन्निपातमें हितकारक उपचार करै ॥ अमृतादिकाढ़ा ॥ गिलोय, शुंठि फंजी, कटैली, शालिपर्णी इन्होंके काढ़ामें पिपली के चूर्णको मिलाय पीनेसे कास को व श्वास को हरै ॥ भारंग्यादिकाढ़ा ॥ भारंगी, शुंठि कटैली, कुलथी, मूला इन्होंके काढ़ामें पिपली का चूर्ण मिलायपीने

से कासको व श्वासकोहरै ॥ स्वरसादियोग ॥ अदरखके रसमें शहद मिलाय पीनेसे खांसीको, श्वासको, कफको, खरको, पीनसको हरै ॥ मरिच्यादिचूर्ण ॥ मिरचके चूर्णको खांड शहद में मिलाय खाने से श्वास खांसीजावे ॥ कुलित्थादिकाढ़ा ॥ कुलथी, कटैली, भारंगी, शुंठि शाल इन्होंका काढ़ा पीनेसे खांसीको, श्वासको, ज्वरको हरै ॥ पुष्कराद्दि काढ़ा ॥ पुष्करमूल, कायफल, भारंगी, शुंठि, पिपली इन्हों का काढ़ा कफाधिक श्वासको, खांसीको, हृद्रोगको हरै ॥ कुनट्यादिलेह ॥ मैनशिल, सेंधानोन, शुंठि, मिरच, पिपली, वायविड़ंग, असरु, हिंग इन्होंके चूर्णमें शहद घृत मिलाय चाटनेसे खांसीको, श्वासको, हुच-कीको नाशै ॥ बहिर्थादादिलेह ॥ पीलेसहोंजना के चूर्णको शहद घृतमें मिलाय चाटनेसे अथवा मरीचके चूर्णको घृत शहदमें मि-लाय चाटनेसे श्वासको खांसीको हरै ॥ भारंग्यादि चूर्ण ॥ भारंगी शुंठि, पिपली इन्होंके चूर्णको गुड़में मिलाय खानेसे अथवा शुंठि मिरच, पीपल इन्होंके चूर्णको शहद घृतमें मिलाय चाटनेसे श्वास खांसीजावे ॥ घनादिगुटी ॥ नागरमोथा, शुंठि, हड़ इन्होंका चूर्णकरि गुड़में मिलाय गोलीबांधे पीछे ३ दिनतक मुखमें रखने से श्वास को खांसीको हरै दृष्टांत जैसे स्त्री संगमें सोने से जाड़ाको हरै तैसे निर्गुण्ड्यादिघृत ॥ निर्गुण्डीकारस १ भाग रससे चौगुना घृतमिलाय पकाय घृतको बाक़ी रक्खे पीछे चवक, चीता, वायविड़ंग, दालचीनी इलायची, तमालपत्र, नागकेशर, कटुकी, कूट इन्होंकाचूर्ण अष्टमांश मिलाय पकावे पीछे काले शामकीये चावल इन्होंके यवागू के संग घृतको खानेसे खांसीको श्वासको हरै ॥ धूमपान ॥ ऊंगा के पंचांग को नालिकाके रसमें पीसि मैनशिल हरताल मिलाय घोटि कपड़ा पर लेपकरै पीछे सुखाय चिलममेंधरि अग्निके संग धुवांको पीनेसे ७ दिनतक खांसीको श्वासको हरै ॥ वारुणीपत्रधूम ॥ गंडूभा के पत्ते सांठीचावल, हरताल इन्होंको पीसि बेरके प्रमाण गोली बनाय पीछे चावलोंके चूनकी चिलम बनाय ऊपर आगधरि नीचे गोली धरि अरंडीकी नलीसे धुवांकोपीवै भोजनकरै पीछे और बादमें ता-बूल खाइ और दूध चावलका पथ्यकरै यह सिद्धयोग जल्दीखांसी

को हरै ॥ हेमगर्भपोटली ॥ पारा ८ भाग सोनाकाचूरा ४ भाग लेइ दोनों को एकजगह पीसे जबतक मिलै तबतक पीछे गंधक ॥ १२ भाग मिलाय पीसि पीछे मोती १६ भाग मिलाय पीसै पीछे शंख २४ भाग सुहागा १ भाग इन्होंको पके हुये नीबू के रस में खरल करि गोला बनाय मूषा संपुटमें घालि कपड़ माटी करि १ हाथ मात्र काढ़ामें गौके गोबरके उपलोंमें गजपुटमें पकाय शीतल होने पर काढ़ि महीन पीसि ४ रत्ती रसको गौके घृत में मिलाय और २९ मिरचोंके चूर्णसहित चांदीके पात्रमें किंवा चीनीके पात्रमें किंवा कांचके पात्रमें घालि मिलाय चाटने से खांसी को व श्वास को व क्षयीको व वातविकारको व कफको व संग्रहणीको व अतीसारको यह हेमगर्भ पोटली हरै और इसपर पथ्य लोकनाथ के समान है॥ कालविधूननरस ॥ पारा १ भाग गंधक २ भाग जवाखार ३ भाग कालानोन ४ भाग मिरच ५ भाग इन्होंको अदरख के रसमें खरल करि खानेसे ५ प्रकारकी खांसी को व ५ प्रकारके श्वासको हरै ॥ ताम्रपर्पटी ॥ तांबाकी भस्म ३ भाग पारा ३ भाग गंधक ३ भाग वचनागविष १ भाग इन्होंकी कज्जली करिगौके घृतमें कल्ककरि लोहाके पात्रमें पकाय आक के पत्तोंपर उतारि रक्खे पीछे २ रत्ती वा ३ रत्ती पिपली शहदकेसंग २१ दिनतक खानेसे राजरोग कोहरै और इसको अदरखके अर्कके संग खानेसे सन्निपात को हरै और त्रिफला खाड़के संग इसको खानेसे पांडुको हरै और अरंडके तेल के संग इसको खानेसे सबतरहके शूलजावैं। और इसको कुवारप- ट्ठाके रसकेसंग खानेसे बालपित्त रोग जावे। और इसको बावची के रसके संग खानेसे सबदाद रोग जावै। और इसको त्रिफला शहदके संग खानेसे सबप्रमेह जावें। और इसको खैर के काढ़ाके संग खानेसे १८ प्रकारके कुष्ठको नाशै यह मंथान भैरवने संसार के कल्याण के वास्ते कहा है। कण्टकार्यादिचूर्ण ॥ कटैली, पिपली इन्होंके चूर्णमें शहद मिलाय खानेसे खांसीजावे ॥ लवंगादिचूर्ण ॥ लवंग जायफल पिपली ये १तोला बहेड़ा ३ तोला मिरच २तोला शुंठि १६ तोला इन सबोंके समान खांड़ मिलाय खानेसे खांसीको

व श्वास को व ज्वरको व गुल्मको व अग्निमंद को व संग्रहणी को हरै ॥ बिभीतकादिचूर्ण ॥ बहेड़ा २ भाग पिपली १ भाग इन्होंका चूर्ण करि शहद में मिलाय खानेसे खांसी को हरै ॥ पंचकोलादिचूर्ण ॥ पिपली, पिपलामूल, शुंठि, बहेड़ा इन्होंको शहदमें मिलाय खानेसे सन्निपात की खांसी को हरैहै ॥ बदरी कल्क ॥ बड़बेरी के पत्तों के कल्कको घृत में भूनि सेंधानोन मिलाय खाने से स्वरभंग को व श्वासको व खांसीकोहरै ॥ कर्पूरादिचूर्ण ॥ कपूर, बाला, कंकोल, जायफल, जावित्री इन्होंको समान भागलेय लवंग १ भाग नागकेशर २ भाग मरिच ३ भाग पिपली ४ भाग शुंठि ५ भाग लेय चूर्णकरि मिश्री में मिलाय खानेसे रुचिको उपजावै औरक्षयीको व स्वरभंग को व श्वास को व खांसी को व छर्दिको व तृषा की हरै है ॥ त्रिकटुकादिचूर्ण ॥ शुंठि, मिरच, पीपल, गिलोय, चीता, हड़, बहेड़ा आंवला, मरिच, रास्ना इन्होंके चूर्णमें खांड़ मिलाय खानेसे खांसी कोहरै दृष्टांत जैसे अग्नि बनकोनाशै तैसे॥देवदार्वादिचूर्ण ॥ देवदारु बलिया, रासना, हड़, बहेड़ा, आंवला, शुंठि, मरिच, पिपली, पद्माख बायबिडंग, इन्होंके चूर्णमें खांड़ मिलाय खानेसे सबतरहकी खांसी जावै ॥ द्विक्षारादि ॥ जवाखार, सज्जीखार, पंचमूल, कालानोन, सांभरनोन, खारीनोन, मणयारीनोन, सेंधानोन, कचूर, शुंठि, कालाबाला इन्होंको महीन पीसि कपड़ामें छानि घृतमें मिलाय खानेसे सब प्रकार की खांसीको हरै ॥ ग्रंथिकादि ॥ पिपलामूल, पिपली, बहेड़ा शुंठि इन्हों के चूर्णमें शहद मिलाय खानेसे अनेकप्रकारकी खांसी को हरैहै ॥ कटुत्रिकादि ॥ शुंठि, मिरच, पिपली इन्हों के चूर्णमें गुड़ घृत मिलाय खाने से खांसी को हरैहै ॥ हरीतक्यादिगुटी ॥ हड़, पीपल, शुंठि, मरिच इन्हों के चूर्ण में गुड़ मिलाय गोली बांधि खाने से कास रोग जावै और अग्निदीपन होय ॥ त्रिजातादि ॥ दालचीनी तमालपत्र, इलायची ये आधा तोला पिपली २ तोला मिश्री ४ तोला दाख ४ तोला मुलहठी ४ तोला खजूर ४ तोला इन्हों कोपीसि शहदमें गोली बनाय खानेसे पुष्टिकरै और रक्तपित्तको व खांसीको व श्वासको व अरुचिको व छर्दिको व मूर्च्छाको व हुचकीको व मद

को व भ्रमको व क्षतक्षयको व स्वरभ्रंशको व प्लीहाको व शोष को व आढय वातको व रक्तकी छर्दिको व हृद्रोग को व पसलीके शूल को हरे ॥ मरिच्यादिगुटी ॥ मिरच १ तोला पिपली १ तोला यवाखार आधा तोला अनारकीछाल २ तोला इन्होंको महीन पीसि गुड़ ८ तोलामिलाय ४ माशाकी गोली बनाय मुखमें रखनेसे सबप्रकार की खांसी जावे ॥ लवंगादिगुटी ॥ लवंग, मिरच, बहेड़ाकी छाल ये समान भागलेय और इन सबों के समान खैरसार मिलाय पीछे बबूलके काढ़ामें खरलकरि मुखमें रक्खे ८ घड़ीके बीचमें खांसीको हरे ॥ खदिरादिगुटी ॥ खैर २ तोला पुष्करमूल २ तोला काकड़ाशिंगी २ तोला कायफल २ तोला भारंगी २ तोला हड़ २ तोला लवंग २ तोला शुंठि२ तोला मिरच २ तोला पिपली २ तोला अतीस २ तोला अजमान २ तोला धमासा २ तोला गिलोय २ तोला छोटीकटेली २ तोला बड़ी कटेली २ तोला बहेड़ा की छाल २ तोला इन्होंको महीनपीसि पीछे सबोंके समान खैरसार मिलाय पीछे इसको अनारकीछालके रसमें खरल करे पीछे कटेलीके रसमें भावना देइ पीछे खैरकी छालके रसमें भावना देय पीछे अदरखके अर्कमें भावनादेय पीछे बबूलकीछालके काढ़ामें भावनादेइ पीछे बासाकेरसमें ७ भावना देय गोलीबनाय खानेसे चिरकालके खांसी व श्वास को हरे ॥ धनंजय वटी ॥ अर्जुनवृक्ष, दालचीनी, तमालपत्र, इलायची, पिपलामूल, शुंठि मिरच, पीपल इन्हों के चूर्ण को अदरखके रस में भिगोय खाने से खांसी जावै॥ व्योषादिगुटी ॥ शुंठि १ तोला मिरच १ तोला पीपल १ तोला अम्लबेतस १ तोला चवक १ तोला तालीसपत्र १ तोला चीता १ तोलाजीरा १ तोलाअमली १ तोला तज ४ माशातमालपत्र ४ माशा इलायची ४ माशा गुड़ २० तोलामिलाय गोलीएकतोलेकीबनायखाने से अभ्यासमें यहसबप्रकारकेकासोंको व पीनसको व श्वासको व अरुचिको व स्वरभेदको हरे ॥ पिप्पल्यादिगुटी ॥ पिपली, पुष्करमूल, हड़ शुंठि, कचूर, नागरमोथा इन्होंको बारीकपीसि गुड़मेंमिलाय गोली बनाय खानेसे श्वासको व खांसी को हरे और छींक आनेमें व गन्धके नाश में धुवां पीवे ॥ अर्कमूलादिधूम ॥ आककीजड़, मैनशिल येबराबर

भागले शुंठि, मिरच, पिपली ये आधाभाग लेय इन्हों का चूर्णकरि अग्निमें डालि धुवांकोपीवै ऊपर पानखावै अथवा दूधकोपीवै इस से ५ प्रकार की खांसी जावै॥ मनःशिलादिधूम॥ मैनशिल, मिरच जटामांसी, नागरमोथा, नींबपत्ती इन्होंके धुवांकोपीवै ऊपर गुड़का गरम शरबतपीवै यह ५ प्रकारकी खांसीकोहरै इसके समान और औषधनहींहै॥ दूसराप्रकार॥ बड़बेरीकीछालको मैनशिलकेकल्कमें लेपि धूपमें सुखाय चिलममें धरि धुवांको पीवै ऊपर दूधपीवै, यह महाकासको हरै॥ धत्तूरादिधूम॥ धतूराकीजड़, शुंठि, मिरच, पीपल मैनाशिल इन्होंको पीसि कपड़ापै लेपि बत्तीबनाय अग्निसे जलाय धुवांको पीने से ३ दिनतक खांसी जावै॥ जातिपत्रादिधूम॥ जावित्री मैनशिल, राल, गुग्गुल ये समान भागलेय पीछे इन्होंको बकरीके मूत्रमें पीसि चिलममें धरि धुवांको पीनेसे खांसी जावै॥ जातिमूलादिधूम॥ जाइजड़, जावित्री, मसूर, मैनाशिल, गुग्गुल इन्होंकोपीसि बड़बेरीकीजड़को लेपकरि बत्तीबनाय अग्निमें जलाय धुवांकोपीले से खांसीको हरै॥ हरिद्राधूम॥ हल्दी, दारुहल्दी, मैनशिल इन्होंके धुवांकोपीनेसे अथवा रात्रिके अन्तमें पानीको पीनेसे खांसीजावै॥ विभीतकावलेह॥ बकरीका मूत ४०० तोला बहेड़ाकीछाल ४०० तोला इन्होंको अग्निपर पकाय अवलेहकरि शहदमिलाय खानेसे खांसीको व श्वासकोहरै॥ कंटकार्यवलेह॥ कटैली ४०० तोला पानी २०४८ तोला इन्होंको पकाय चतुर्थांश काढ़ा रक्खै पीछे धमासा ४ तोला गिलोय ४ तोला चव्यक ४ तोला चीता ४ तोला नागरमोथा ४ तोला काकड़ाशिंगी ४ तोला शुंठि ४ तोला मिरच ४ तोला पीपल ४ तोला भारंगी ४ तोला रासना ४ तोला कचूर ४ तोला खांड़ ८० तोला घृत ३२ तोला लोह ३२। तोला मिलाय पकाय शीतल होनेपर शहद ३२ तोला मिलाय, बंशलोचन १६ तोला पिपली १६ तोला मिलाय अवलेह करि सुन्दर माटी के बरतन में घालि रक्खै पीछे इसको खाने से खांसी व हुचकी व अनेक प्रकारके श्वास रोगों को नाशकरै इसमें संशय नहींहै ऐसेजानो॥ अगस्त्यहरितक्यवलेह॥ दशमूल ८ तोला कपास के बिनोलकीगिरी

८ तोला शंखाहोली ८ तोला कचूर ८ तोला बलिया ८ तोला गज-पिप्पली ८ तोला ऊंगा ८ तोला पिपलामूल ८ तोला चीता ८ तोला भारंगी ८ तोला पुष्करमूल ८ तोला यव १०२४ तोला हड़ ४०० तोला पानी ५१२० तोला मिलाय पकावै पीछे हड़ बड़ी १०० मिलावे और गुड़ ४०० तोला घृत १६ तोला तेल १६ तोला पि-पलीका चूर्ण १६ तोला मिलाय पकावै पीछे शीतलहोनेपर शहद १६ तोला मिलाय रक्खै पीछे २ हड़ रोज़ खाने से बलीपलित को व पांचप्रकारकी खांसी को व क्षयको व श्वासको व हुचकी को व विषमज्वरको व संग्रहणी को व बवासीरको व अरुचि को व खेहर को नाशकरै और बल, वर्ण, उमरकोबढ़ावै॥ व्याघ्रिआदिघृत॥ कटैली के रसमें रासना, कायफल, गोखुरू, शुंठि, मिरच, पीपल, घृत इन्होंको मिलाय सिद्धकरने से स्वरभंगको व पांचप्रकारकी खांसीको हरै॥ गुडूच्यादिघृत॥ गिलोय, बासा, कटैली इन्हों के कल्क में घृत को सिद्धकरि खानेसे पुराने ज्वरको व खांसीको व शूल को व प्लीहाको व मंदाग्निको व संग्रहणी को हरै॥ त्र्यूषणादि घृत॥ शुंठि १ तोला मिरच १ तोला पीपल १ तोला हड़ १ तोला बहेड़ा १ तोला आंवला १ तोला दाख १ तोला काश्मरी १ तोला बासा १ तोला पाढ़ा १ तोला पाडला १ तोला देवदारु १ तोला नागरमोथा १ तोला बिनो-लागीरी १ तोला चीता १ तोला कचूर १ तोला कटैली १ तोला भूमि आंवला १ तोला मेदा १ तोला कावली १ तोला शतावरि १ तोला गोखुरू १ तोला बिदारीकंद १ तोला घृत ६४ तोला दूध २५६ तोला मिलाय घृतको सिद्धकरि खाने से खांसीको व ज्वरको व गुल्म को व अरुचिको व प्लीहाको व मस्तकशूल व हृदयशूलको व पसली शूलको व कामलाको व बवासीरको व बाताष्ठीला को व क्षतक्षयको व क्षयीको हरै यह त्र्यूषण घृतहै और बहुत उत्तमहै॥ कंटकारि घृत॥ कटैलीके पंचांगकारस १०२४ तोला घृत ६४ तोला और बलिया शुंठि, मिरच, पीपल, बायविडंग, कचूर, अनार, कालानोन, जवाखा-र, शुंठि, आंवला, पुष्करमूल, लालसांठी, कटैली, हड़, अजमान चीता, दाख, चव्यक, सफ़ेदसांठी, धमासा, अमलबेतस, काकड़ासिंगी

भूमिआंवला, भारंगी, रासना, गोखुरू इन्हों का कल्क मिलाय घृत को सिद्धकरि खानेसे पांच प्रकारकी खांसीको व श्वासको व हुचकी को हरै ॥ दूसरा प्रकार ॥ कटैली ४०० तोले कूटि पानी २०४८ तोले मिलाय पकाय आधा बाक़ी रक्खै पीछे घृत ६४ तोला रासना १ तोला धमासा १ तोला पिपलामूल १ तोला पिपली १ तोला गजपिपली १ तोला चीता १ तोला कालानोन १ तोला जवाखार १ तोला पिपलामूल १ तोला इन्होंका कल्क मिलाइ घृतको सिद्धकरि खानेसे खांसीको व श्वासको व कफकीछर्दि को व हुचकीको व अरुचिको व स्वरभेदको व पीनसकोहरै ॥ भार्गोत्तरवटी ॥ पारा १ भागगन्धक २ भाग पिपली ३ भाग हड़ ४ भागबहेड़ा ५ भाग वासा ५ भाग भारंगी ६ भाग इन्होंको जंबीरी नींबूके रसमें खरलकरै पीछे शहद मिलाय एक एक तोला की २८ गोली बनाइ १ गोली प्रभात में खाने से ऊपर कटैलीका काढ़ा पीवै पिपली १० का चूर्ण मिला यह खांसी को व श्वासकोहरै इसको ३ महीनेतक सेवै ॥ पर्पटी ॥ पारा १२ भाग लोहा १२ भागलेय इन्होंको कोमल अग्निपरपकाय पीछे गौकेगोबर के ऊपर केलाका पत्तारखि तिसपर द्रव्यको उतार घालि ऊपर केला पातदेय गोबरधरि पीड़नकरै पीछे इसको भारंगीके रसमें ७ भावना देइ पीछे शुंठिके काढ़ा में ७ भावनादेइ पीछे पुंडरीक वृक्षके रसमें ७ भावनादेइ पीछे अरणीके रसमें ७ भावनादेइ पीछे निर्गुंडीके रसमें ७ भावनादेइ पीछे शुंठि मिरच पीपल इन्होंके काढ़ामें ७ भावनादेइ पीछे वासाके रसमें ७ भावनादेइ पीछे कुवारपट्ठाके रसमें ७ भावना देइ पीछे अदरख के रसमें ७ भावनादेइ लघुपुटमें पकाइ वरतै यह अगन्ध खर्पररसखाने से सब रोगोंको हरै और इस रसको २ माशे पानके संग खानेसे खांसीको व श्वासको हरै इसपर अनुपान तुलसी के रसमें पिपलीका चूर्ण मिलाइ पीवै अथवा गोमूत्रपीवै ॥ कास श्वास विधूननरस ॥ पारा १ भाग गन्धक २ भाग जवाखार ३ भाग कालानोन ४ भाग मरीच ५ भाग इन्होंको पारामें खरलकरि खाने से पांचप्रकारकी खांसीको व श्वासकोहरै ॥ गुरुपंचमूलीकाढ़ा ॥ पंचमूलकेकाढामें पिपलीका चूर्णमिलाइ पीनेसे खांसीको व श्वासकोहरै ॥

वासादिकाढ़ा॥ वासा, हलदी, धनियां, गिलोय, भारंगी, पिपली, पुष्करमूल, कटैली इन्होंके काढ़ामें मिरचका चूर्ण मिलाय पीनेसे खांसी जावै॥ सिंहकीकषाय॥ कटैलीके काढ़ामें पिपलीका चूर्णमिलाय पीनेसे खांसीजावै॥ वृषादिकाढ़ा॥ वासाके काढ़ाको पीनेसे खांसी जावै दृष्टान्त जैसे पवन सर्प तैसे॥ आर्द्रकावलेह॥ अदरख २०० तोला गुड़ २०० तोला धनियां २ तोला अजमान २ तोला लोह २ तोला जीरा २ तोला दालचीनी २ तोला तमालपत्र २ तोला इलायची २ तोला कटुकी २ तोला इन्हों को पकाइ लेहकरि खानेसे खांसी को व बवासीरको व ज्वरको व पीनसको व सोजाको व गुल्म को व क्षयको हरै॥ व्याघ्रीहरीतक्यवलेह॥ कटैलीका पंचांग ४०० तोला हड़ ४०० तोला इन्होंका पानी २०४८ तोले में काढ़ाकरि चतुर्थांश रक्खै पीछे गुड़ ४०० तोला मिलाइ पकाइ अवलेहकरै पीछे शीतल होनेपर शुंठि ४ तोला मिरच ४ तोला पीपल ४तोला शहद २४ तोला दालचीनी १ तोला तमालपत्र १ तोला इलायची १ तोला नागकेशर १ तोला मिलाय खाने से बातको व पित्तको व कफको व द्विदोषको व सन्निपातको व क्षतकी खांसीको व क्षयी की खांसीको व उरःक्षतकहे छाती फटजानेको व पीनस को व एकादशरूप क्षयीकोहरै॥ कासदण्डनावलेह॥ बकरीका मूत ४०० तोला लेइ मन्दअग्निपर पकाइ गुड़कीपात सरीखाकरि बहेड़ा का चूर्ण ८ तोला पिपली ४ तोला लोहभस्म ४ तोला कटैली के फलों का चूर्ण ८ तोला मिलावै इसकासकंडन अवलेह को खानेसे २ माशा किम्बा ४ माशा किम्बा १ तोला खावै अथवा शहद व केला के पानीके संगखावे यह असाध्य खांसीको हरै इसके समान पुरानी खांसीको व महाअसाध्य खांसी को हरनेवाला औषध नहीं है यह आत्रेय मुनिने कहाहै॥ हेमगर्भपोटली॥ शोधापारा ३ भाग लोह भस्म ३ भाग गन्धक १ भाग सोना आधाभाग मिलाइ ७ दिनतक निर्गुण्डी के रसमें खरलकरै पीछे धतूरा के रसमें खरलकरि गोला बनाइ कपड़ा में घालि पोटली बांधै पीछे माटी के बरतन में गन्धक को घालि तिसमें पोटलीधरि मुखबन्दकरि १ बिलस्तभरि

गढ़ाखोदि तिसमें पोटली सहित बरतनकोधरि १ अंगुलमाटीदेइ अंगुली मुद्रिका से अग्निको जलाइ १ पहरतक पीछे इस हेमगर्भ पोटली को अनुपानों के संग सब रोगोंमें देवै ॥ हेमगर्भ ॥ पारा ४ भाग सोना २ भाग तांबा की भस्म १ भाग मोती ११ भाग गन्धक १ भाग विद्रुम १ भाग इन्होंको खरल में पीसि गोलाबनाइ भूधर यंत्रमें कोमल अग्नि से पकाइ शीतल होनेपर काढ़ि गन्धक के संग खरल करावै ऐसे ६ बार गन्धक में खरलपुटदेइ षड्गुण गन्धक जारणकरै यह हेमगर्भरस त्रिलोकी में विख्यात है इसको खानेसे खांसीको व श्वासको व शूलको हरै और रोगोक्त अनुपानों के संग सबरोगोंको हरै ॥ दूसराप्रकार ॥ शोधापारा ४ तोला शोधा सोना १ तोला शोधागन्धक १ माशा इन्हों को मिलाइ चूर्णकरि कपड़ा में बांधि पोटलीकरै और पारा गन्धक पीसि दूसरी पोटली बांधै ये दोनों पोटली सकोरामें धरि दूसरे सकोरासे संपुटदेइ कपड़-माटीदेइ भूधर यंत्रमें गजपुट में पकाइ शीतलहोनेपर काढ़िगन्धक के संग पीसि पुटदेइ ऐसे ७ बार पुटदेइ यह हेमगर्भरस खांसीको व श्वासको व शूलको हरै और रोगोक्त अनुपानों के संग सब रोगों कोहरै ॥ कालकेशरी ॥ सिंगरफ, मिरच, नागरमोथा, सुहागा, अतीस ये समान भागलेइ जंबीरी निंबूके रसमें खरलकरि मूंग के समान गोली बनाइ अदरख के रसके संग खाने से खांसी को व श्वासको हरै ॥ रसेंद्रबटी ॥ शोधापारा १ तोला गन्धक १ तोला अभ्रक १ तोला तांबा १ तोला हरताल १ तोला लोह १ तोला वचनागविष १ तोला मिरच १ तोला इन्होंका चूर्णकरिनिर्गुण्डी, भंगरा, कावली नीला भंगरा इन्होंके रसमें अलग अलग भावनादेइ मटर समान गोली बनाइ पीछे शिवजीको पूजनकरि और ब्राह्मणों को दानदेइ गोलीको खावै और अन्नजीर्ण होनेपर मांस रस दूध को पीवै यह महा असाध्य अम्लपित्त को व पांचप्रकार की खांसी को व दुर्जय श्वासको हरै ॥ नीलकंठरस ॥ पारा, गन्धक, लोह, वचनागविष चीता, तमालपत्र, दालचीनी, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, पिपलामूल नागकेशर, त्रिफला, सुंठि, मिरच, पिपली, तांबा ये समानभाग लेइ

इन्होंसे दुगुणा गुड़ लेइ मिलाइ चनाके समान गोलीबनाइ खाने से खांसीको व श्वासको व गुल्मको व प्रमेहको व विषमज्वरको व मूत्रकृच्छ्रको व मूढ़गर्भको व वातरोगको हरै यह नीलकंठरस महादेवनेकहाहै॥ लोकनाथपोटली ॥ गन्धक, पारा इन्होंकी कजली करि जंबीरी नींबूके रसमें खरलकरि पीछे इसको तांबेके बरतन में नोन घालि तिसपर कज्जलिधरि मुखबन्दकरि कपड़ा माटी लगाइ अग्नि में शनैः २ पकाइ ८ पहरतक पीछे शीतल होनेपर काढ़ि कवड़ी की भस्म मिलाइ चीता के रसमें भावनादेइ पकाय काढ़ि वचनाग मिरच मिलाइ पीसि खानेसे लोकनाथ के समान यह दुर्बलताको व कृशताको व सूजन को व आमवातको व गुल्मको व शूलको व खांसीको व श्वासको व संग्रहणीको व बवासीरको व क्षयीको व पांडु रोगको व संतापको व मन्दाग्निको व अरुचिको हरैहै संशयनहींहै॥ अमृतार्णवरस॥ पारा, गंधक, लोहभस्म, सुहागा, रासना, बायविडंग त्रिफला, देवदारु, शुंठि, मिरच, पीपल, गिलोय, पद्माख, शहद, वचनागविष ये समान भाग लेइ चूर्णकरि ३ रत्तीभर खानेसे सब प्रकार की खांसीको हरै॥ अग्निरस॥ पारा, गंधक, पिपली, हड़, बहेड़ा, बासा मुलहठी, गुड़इन्होंको बराबर भागलेइ बबूलके काढ़ा में २१ भावना देइ चूर्णकरि शहदमें मिलाय खानेसे यह अग्निरस खांसी को हरै॥ कासकर्तरी॥ लवंग १ भाग पिपली २ भाग हड़ ३ भाग बहेड़ा ४ भाग बासा ५ भाग भारंगी ६ भाग इन सबोंके समान खैरसारलेइ मिलाय बबूलके काढ़ामें २१ भावनादेइ पीछे शहदके संगखाने से यह कासकर्तरी रस खांसीको व श्वासको व क्षयको व हुचकीको हरै इसमें संशय नहींहै॥ कफाग्निबटी॥ कपूर आधातोला कस्तूरी ६ माशा लवंग २ तोला मिरच आधातोला पिपली ६ माशा बहेड़ा ६ माशा कोलिंजन ६ माशा अनारकीछाल ४ तोला खैरसार ४ तोला इन्होंको पीसि मूंगके समान गोली बनाय मुखमें रखने से कफको हरै॥ कासमेंपथ्य॥ चावल, साठीचावल, गेहूं, उड़द, मूंग, कुलथी, बकरीकादूध व घृत, बथुआ, बैंगन, कोमलमूली, कटैली, जीवंती, बिजौरा, मुनक्कादाख, लसून, धानकीखील, शुंठि, मिरच, पीपल, गरमजल

शहद ये सब खांसीमें पथ्यहैं ॥ अपथ्यम् ॥ मैथुन, चिकना मीठा पदार्थ दिनमें शयन, दूध, दही, पिठी, दूधकी व चावलकी खीर, धूमा ये कासरोगमें अपथ्य हैं ॥

इतिबेरीनिवासकवैद्यरविदत्तविरचितनिघण्टरत्नाकर भाषायांकासप्रकरणम् ॥

हुचकी कर्मविपाक ॥ जोब्राह्मण स्नान, होम, जप इन्हों के बिना करे भोजनकरै उसके हुचकीरोग होवे ॥ प्रायश्चित्त ॥ वह ३ कृच्छ्र चान्द्रायणकरि रोग को नाशै ॥ हिक्का निदान ॥ गरम व भारी रूखी सलोनी व अभिष्पंदी पदार्थोंके खानेसे और शीतलबस्तुके पीनेसे व शीतल जलसे न्हानेसे व मुखमें रजको जानेसे व बैठक करने से व बोझा के उठाने से व मार्गके चलने से व मलमूत्रके वेगको रोकनेसे व भूखके रहनेसे हुचकी, खांसी, श्वास पैदाहोयहैं ॥ संप्राप्ति ॥ वायुहै सोदोनोंपसवाड़ा और आंतोंको दुःखदेइ मुखमें होकरि बड़े शब्दको लिये प्राणको नाशकरनेवाला मुँहमें सूं भयंकर शब्द को काढ़ैहै तिसे हुचकीकहतेहैं ॥ हुचकीकेभेद ॥ अन्नजा १ यमला २ क्षुद्रा ३ गंभीरा ४ महती ५ ऐसे पांचप्रकारकीहै ॥ पूर्वरूप ॥ कंठ व हिया भारीहोय और मुंह कसायला होइ कूष में अफारा होइ तब जानिये इसके हुचकी होगी ॥ सामान्यचिकित्सा ॥ जो कफवात को हरनेवाला व गरम व बायुका अनुलोमन करनेवाला ऐसा औषध व अन्नपान हुचकीमें व श्वासमें हितहै और हुचकी व श्वासवाले के शरीरमें तेलमलि स्वेदनकर्मकरै और यही रोगी बलवान्हो तो वमन व रेचन करावै और दुर्बलको हितकारक द्रब्यदेइ शांतकरै और प्राणोंके रोकने से व डरावनेसे व आश्चर्यकी बस्तु दिखावने से व शीतलपानी के सेकसे व नानाप्रकारकी कथाको सुनने से व मनको दुःखदेनेवाली बातोंको सुनाने से हुचकीबंदहोवै ॥ त्याज्यहिक्का ॥ वायुसे पांचप्रकार हुचकीहोय हैं उन्होंमें जो असाध्य हों वह कहतेहैं गंभीरा महती ऐसे जानो । और कास प्रकरण में कहे सब

औषध हुचकी में भी वरतै अथवा क्षयी रोग में व वातकास में कही औषध हुचकी व श्वास में वरतै ॥ अन्नजाहिक्कानिदान ॥ अन्न घनोंखाय और पानी वहुत पीवे सो वायुकोपै तव वह ऊर्ध्वगामी होइ मनुष्यके अन्नजा हुचकीको पैदाकरै ॥ यूष ॥ कटैलीके पत्तों का किंवा सहोंजनकी जड़का किंवा सूखीमूली का मण्ड देने से हुचकी व श्वासजावे और बैंगनके मांड़में दही, शुंठि, मिरच, पिपली, घृत मिलाय पीनेसे हुचकीजावै ॥ कुलित्थादिकाढ़ा ॥ कुलथी, शुंठि, कटैली वासा इन्होंके काढ़ामें पुष्करमूल का चूर्ण मिलाय पीने से हुचकी श्वासजावै ॥ हरिद्रादिलेह ॥ हल्दी, मिरच, दाख, गुड़, रासना, पिपली कचूर इन्होंको तेलमें मिलाय चाटनेसे श्वासको व हुचकीकोहरै ॥ अभयादिकल्क ॥ हड़, शुंठि इन्होंकाकल्क किंवा यवोंकाकूस, मरीच इन्हों का कल्क इन्होंको गरम पानी के संग पीने से हुचकी को व श्वासको हरै ॥ चंद्रसूरकाढ़ा ॥ नागरमोथा के वीजको अष्टगुनापानी में भिगोइ वस्त्रमें घालि छानै इस पानीको ४ तोलेभर पीनेसे वारम्वार हुचकी जावे और कटुकीके चूर्ण को शहदमें मिलाय खाने से हुचकी जावे ॥ यमलाहिक्कानिदान ॥ देरदेर में हिचकीचलै और देर देर में शिर कांधाकम्पै तिसको यमला हिचकी कहै हैं ॥ दशमूली यवागू ॥ दशमूल, कचूर, रास्ना, पिपली, शुंठि, पुष्करमूल, काकड़ासिंगी, भूमिआमला, भारंगी, गिलोय, नागरमोथा इन्हों में सिद्धकरि यवागूको पीने से खांसी, हुचकी, श्वास पसलीशूल, हृद्ग्रहकोहरै अथवाहिंग, कालानोन, जीरा, बिड़नोन, पुष्करमूल, चीता, काकड़ासिंगी इन्होंकी यवागूबनाय पीनेसे हिचकी श्वासजावै ॥ क्षुद्रहिकालक्षण ॥ और कंठ हियाकी सांधिसूं हिचकी देरदेरमें मंदमंद चलै तिसे क्षुद्रा कहतेहैं ॥ दशमूलीकाढ़ा ॥ दशमूलीके काढ़ाको पीने से हिचकी श्वास खांसीजावै ॥ धात्र्यादिकाढ़ा ॥ आंवला, पिपली, शुंठि इन्हों के काढ़ामें मिश्री मिलाय पीनेसे प्राणों की नाश करने वाली औषध जावै ॥ गंभीराहिकानिदान ॥ नाभि से भयंकर उठै और कंठ मुख सूखेरहैं और जीभ भी सूखीर है और खांसी श्वास को पैदा करै और जिसमें वहुत पीड़ा हो और अनेक उपद्रवोंको करै तिसे गं-

भीरा हिचकी कहते हैं ॥ पाटल्यादियोग ॥ सोना के भस्मको पाटली के रसमें व शहदमें मिलाय पीने से पांचप्रकारकी हिचकी जावै ॥ दशमूलीकाढ़ा ॥ दशमूलके काढ़ामें शहद लोहाका भस्ममिलाय पीनेसे पांचप्रकारकी हिचकीजावै ॥ छागदुग्धयोग ॥ बकरीकेदूधमें शुंठि मिलाय पीनेसे अथवा अम्लवेतस के काढ़ामें खट्टेरसको मिलाय पीनेसे अथवा धानकी खीलोंके चूर्णमें सेंधानोन मिलाय खाने से हिचकी रोगजावै ॥ मधुसौवर्चलयोग ॥ बिजौराके रस में शहद कालानोन मिलाय पीनेसे अथवा शुंठि, पिपली, आंवला, शहद मिलाय पीनेसे हिचकी जावै ॥ शिखिलेह ॥ मोर की पांख की राख, पिपली चूर्ण इन्होंको शहदमें मिलाय चाटनेसे हिचकी, श्वास, छर्दि जावै॥ पिप्पल्यादिलेह ॥ पिपलामूल, मुलहठी, गुड़, गौ का गोबर, घोड़ाकी लीद इन्होंका काढ़ाकरि शहद घृत मिलाय पीने से हिचकी, अंगफूरणा, कास ये जावै और कैथ के रसमें पिपली घृत मिलाय पीने से अथवा आमला के रस में पिपली शहद मिलाय पीने से हिचकी, श्वास जावै। और खजूर, पिपली, दाख, खांड़ ये समान भाग लेइ शहद घृत मिलाय पीनेसे हिचकी, श्वासजावै ॥ कटुकादिभस्म ॥ कटुकी, सोनागेरू, मोती भस्म, तांबा, शहद इन्हों को बिजौरा के रसमें मिलाय पीने से हिचकी जावै ॥ कोलमज्जालेह ॥ बेर की गुठली, सुरमा, धानकी खील इन्होंके लेहसे अथवा कटुकी नागकेशर सोनाका भस्म इन्होंके लेहसे अथवा पिपली आंवला मिश्री शुंठि इन्हों के लेह से अथवा हीराकसीस कैथ इन्होंके लेह से अथवा पाटलीकाफूल फलकेलेहसे अथवा पिपली खजूर नागरमोथा इन्हों के लेहसे हिचकीजावै परंतु इन्होंको चतुर्थांशरूप काढ़ाकरि शहद मिलायपीवै॥ हेममात्रा ॥ सोनाभस्म मोतीभस्म तांबाभस्म कांतलोह भस्म ये २ रत्तीभर लेय शहद कालानोन मिलाय बिजौराके रसमें मिलाय पीनेसे सबप्रकारकी हिचकीको नाशकरै ॥ पिप्पल्यादिलेह ॥ पिपली, आंवला, दाख, बेरकीगुठली, शहद, खांड़, बायबिड़ंग पुष्करमूल, लोहका भस्म इन्हों को मिलाय खाने से छर्दिको व हिचकीको व तृषाको हरै ३ रात्रिमें इसमें संशय नहीं है ॥ शंखचूल

रस॥ पारा भस्म, अभ्रक भस्म, सोना भस्म ये बराबर भाग लेय पीछे सबोंसे पांचगुनी शंख की भस्म लेय पीछे इन्हों को सुखाय पीसै पीछे ४ चारमाशे रसको शहदके संग व यथोक्त अनुपानों के संग खाने से मरनेवालाकी भी पांचप्रकार की हिचकी जावै॥ मेघडम्बररस॥ पारा गन्धक इन्हों को बराबर लेय चांवलों के रस में खरल करि पीछे बज्रमूषा यन्त्रमें रखि भूधर से भस्मकरै पीछे दशमूल के रसमें २ पहर तक भिगोय पीछे २ रत्ती भर खाने से हिचकीको व श्वासको व ज्वरको हरै और इस मेघडम्बर रस को अनुपानके सङ्गखावे॥महाहिक्कालक्षण॥ सब मर्मस्थानमें पीड़ाकरती हुई और सबगात्रको कँपातीचलै और निरन्तरचलै इसको महती हिचकीकहतेहैं॥ कटुत्रिकलेह॥ शुंठि, मिरच, पिपली, धमासा, कायफल, अजमान, पुष्करमूल, काकड़ाशिंगी इन्होंमें शहदमिलायलेह करि चाटनेसे हिचकीको व खांसीको व कफको व श्वासको हरै है अथवा सेंधालोनको पानीमेंमिलाय नस्यलेनेसे सबप्रकारकीहुचकी जावै॥असाध्यहिक्कानिदानलक्षण॥ जिसकादेह हिचकीलेते तनजावै और जिसकी दृष्टि ऊर्ध्वगत होय संकुचित होवै और क्षीण होय और भोजनमें अरुचिहोय और ज्यादह छींकआवैं ऐसेलक्षणवाली हिचकी और गँभीरा महती ये ३ हिचकी असाध्यहैं और ज्यादह दोष कोपयुतको व बहुत दिनों से अरुचियुत कृश शरीरवाले को और व्याधिसे क्षीणको व बूढ़ाको व ज्यादह स्त्रीके संग करनेवाले को और आयाससेउपजी हिचकीवालेको हिचकीनिश्चयनाशै और यमिका हिचकी प्रलाप, पीड़ा, मोह, तृषा इन्होंसे युतहो तोभी असाध्य है॥ असाध्यलक्षण॥ जो क्षीण न हो व ग्लानि युत न हो व जिसकी इन्द्रियां स्थिरहों ऐसे की यामिका हिचकी साध्य है और बाकियोंकीअसाध्यहै॥ यष्ट्यादिचूर्ण॥ मुलहठी शहद अथवा पिपली खांड़ अथवा गरमघृत अथवागरमदूध अथवा ईखकारसयेपांचोंपीनेसे हिचकीको नाशकरै है॥बिल्वादिचूर्ण॥ शुंठि, हड़, पिपली इन्होंके चूर्णमें शहद खांड़मिलायपीनेसे अथवा गिलोयकेरसमें शुंठिमिलाय नस्यलेनेसे हिचकीजावै॥ रक्तचन्दनयोग॥ स्त्रीके दूधमें लालचन्दन

को पीसि कल्लुक गरमकरि और सेंधानोन मिलाय नस्यलेनेसे अ-थवा पानीमिलाय नस्यलेनेसे हिचकीजावै ॥ कृष्णाचूर्ण ॥ पिपली शुंठि इन्होंके चूर्णमें शहद खांड़मिलाय चाटनेसे हिचकी व श्वासको नाशकरै ॥ शृंग्यादिचूर्ण ॥ काकड़ाशिंगी, शुंठि, मिरच, पिपली, हड़ बहेड़ा, आमला, कटेली, भारंगी, पुष्करमूल, सेंधानोन इन्होंके चूर्ण को गरमपानीकेसङ्ग खानेसे हिचकीको व श्वासको व ऊर्ध्ववातको व खांसीको व अरुचिको व पीनसकोहरै ॥ भारंग्यादिचूर्ण ॥ भारंगी शुंठि इन्होंके चूर्णको गरमपानीकेसङ्ग खानेसे अथवा भारंगी शुंठि मिश्री कालानोन इन्होंके चूर्णको खानेसे हिचकीजावै ॥ हिक्कानस्य ॥ निर्गुंडीकाकाढ़ा अथवा पिपलीके काढ़ामें हिंग मिलाइ पीनेसे अ-थवा आलका नस्यलेनेसे अथवा स्त्रीके दूधमें शहद मिलाइ नस्य लेनेसे पांचप्रकारकी हिचकीजावै ॥ मधुकनस्य ॥ मुलहठीके रसमें शहद मिलाय नस्यलेनेसे अथवा पिपली खांड़ मिलाइ नस्यलेने से अथवा शुंठि गुड़ मिलाइ नस्यलेनेसे हिचकीरोग जावै ॥ नस्य॥ माखीकी बीठको स्त्रीके दूधमें मिलाइ नस्यलेनेसे अथवा आलके रसकी नस्यलेनेसे अथवा स्त्रीके दूधमें चन्दन मिलाय नस्यलेनेसे हिचकीजावै ॥ शिलाजीतधूम ॥ शिलाजीत, मूलाके पान अथवा क-स्तूरी, बब्बूल अथवा कूट, शाल अथवागुड़गड़ीकाधूमा अथवा डाभ की जड़, घृत इन्होंका नस्यलेनेसे हिचकीमिटै ॥ श्वासावरोधयोग ॥ श्वासके वेगको रोकनेसे हिचकीमिटै अथवा चुल्लूभरिवारम्बारपानी को पीवै पीछे श्वासको रोकनेसे हिचकी मिटै ॥ माषादिधूम ॥ उड़द हल्दी, शणकीछाल इन्होंके धुवांको पीनेसे श्वास हिचकी ऊर्ध्ववात खांसी गलरोग सबप्रकार की हिचकी जावै ॥ हिंग्वादिधूम ॥ हिंग उड़द इन्होंके चूर्णको निर्धूम अंगारके ऊपर बुरकाइधुवांको पीनेसे पांचप्रकारकी हिचकीमिटै ॥ हिचकीमेंपथ्य ॥ स्वेदन बमन नासलेना धूमापीना विरेचन सोना चिकने और हलके अन्न सब प्रकार के नोन कुलथी गेहूँ धान सांठी ये सब पुराने और एण तीतर लवा आदि मृग तथा पक्षी पकाकैथा लहसन परवर कोमलमूली पुष्कर-मूल श्यामा तुलसी मदिरा खस गरमपानी बिजौरा शहद गोमूत्र

और वातकफके नाशक अन्नपान शीतल जलका छिड़कना एका-एकी भय अचंभेमें होना क्रोध हर्ष पियारी वस्तुसे घबड़ाना प्राणायाम आगमें जलजाकर पानीसे छिड़कीहुई मिट्टीका सूँघनेवालोंसे जलकीधार छोड़ना नाभिके ऊपर दबाना और गुदाके ऊपर व नाभिसे २ अंगुल ऊपर दीपकसे जलाईहुई हल्दीसे दागना ये सब हिचकीमें पथ्यहैं ॥ अथअपथ्य ॥ पवन मूत्र डकार विष्ठा इन सबोंके वेगका रोकना धूलि पवन घाम शीत बिरुद्धभोजन पिसाअन्न उड़द तिलकी खली अनूपदेशका मांस भेड़का दूध दंतून वस्तिकर्म मछली सरसों खटाई नींबूका फल तेलकी भूनी पोइका शाक भारी तथा शीतल अन्न व पान इन सबोंको हिचकीवाला त्यागकरै ॥

इतिवेरीनिवासिरविदत्तविरचितनिघण्टरत्नाकरभाषायांहिचकीप्रकरणम् ॥

श्वासकर्मविपाक ॥ जो कृतघ्नी मनुष्यहो वहखांसीको व श्वासको व कफको व गरमीके ज्वरको व पित्तरोगको प्राप्तहोवै ॥ प्रायश्चित्त॥ व ३ चांद्रायणव्रतकरि ५० ब्राह्मणोंको भोजन जिमावै और सहस्र नामके पाठ कराइ ब्राह्मणोंकी भक्तिसे पूजाकरै ॥ दूसराप्रकार ॥ जो कुरुक्षेत्र देशमें सूर्य्यग्रहण आदि पर्वकालमें महादानोंको अंगीकार करै व निषिद्धदानोंकोलेवै वा अपात्ररूप ह्वै दानकोलेइ उसकेपाम रोग श्वास खांसी कूषमें कृमिरोग खाज ये रोग उपजकरदुःखपावै॥ प्रायश्चित्त ॥ वह मनुष्य रोगोंकी शांति वास्ते भैंसको दानकरै धर्मराजकेनामसे और काम्यकर्म्म करावै और अनेक तरहके सुखदेने वाले दानकरै और विष्णुसहस्रनामके पाठकरावै और सोना लाल कपड़ा इन्होंका दानकरि पचास ५० ब्राह्मणोंको अच्छे भोजनोंसे तृप्तकरै और सहस्रधारा के कलशसे स्नान करै ऐसे रोग जावैं ॥ तीसराप्रकार ॥ निन्दक मनुष्य नरकमेंजाइ पीछे श्वासी व कासीहो है॥ प्रायश्चित्त॥ वह घृत४००० तोलेभर दानकरनेसे आरामपावै ॥ श्वासनिदान ॥ जिनवस्तुओंके खानेसे हिचकीहोहै उनहीं पदार्थोंके खानेसे श्वासपैदाहोहै वहश्वास ५ प्रकारकाहै महाश्वास १ ऊर्द्ध-

श्वास २ छिन्नश्वास ३ तमकश्वास ४ क्षुद्रश्वास ५ ऐसे जानों ॥ पूर्वरूप ॥ हियादूखै शूलहोइ अफाराहोइ मलमूत्र उतरैनहीं और मूखमें रसको स्वादआवैनहीं कनपटीदूखै तबजानिये श्वासरोगहोगा ॥ संप्राप्ति ॥ सब शरीरमें जो बायुसे कफसेमिल सबनसोंको रोकै तब वह बायु फिरनेसे रहै श्वासको प्रकटकरै ॥ सामान्यचिकित्सा ॥ जो द्रव्य कफ वातकोहरै और बातको अनुलोमनकरै वह औषध व अन्न व पान हिचकी व श्वासमेंहितहै और इनरोगवालोंको पहिले तेलसे मालिशकरि पीछे स्वेदनकर्म करै और बलवन्तको बमन व रेचनकरावै और निर्बलकों शमनरूप औषध देवै ॥ दूसराप्रकार ॥ कोइक वैद्य स्नेहवस्तिको बर्ज्जिकर बमन व रेचनदेयहै व कोमल स्वेदकरैहै और सबतरहके श्वास रोगियोंको आदिमें कोमलपहसीनादेइ बातकफ नाशक औषधदेवै ॥ महाश्वासलक्षण ॥ जबमनुष्य श्वाससे दुःखीहो तब ऊँचेप्रकार मस्त बैलकी नाईं श्वासनिरंतर लेइ और नष्टहुई है संज्ञाजिसकी और नष्टहुआ है ज्ञान जिसका और जाके नेत्रतरतराट करैं और श्वासलेते मुँहकटजाय व फटजाय और बोलाजावे नहीं गरीबसा होजाय और जिसका स्वर बहुतदूर सुनाईदेइ ये लक्षणहोयँ तबमहाश्वास जानिये यहश्वास वाला तुरंत मरजावै ॥ शृंग्यादिचूर्ण ॥ काकड़ाशिंगी, शुंठि, मिरच पीपल, हड़, बहेड़ा, आँवला, कटैली, भारंगी, पुष्करमूल, पांचोनोन इन्होंकाचूर्णकरि गरमपानीके संगखानेसे हिचकीको व श्वासको व ऊर्ध्ववातको व खांसीको व अरुचिकोनाशकरै ॥ शुंठ्यादिचूर्ण ॥ शुंठि ६ भाग पिपली ५ भाग मिरच ४ भाग नागरपान ३ भाग दालचीनी २ भाग इलायची १ भाग इन्होंका चूर्णकरि खांड़मिलाय खाने से बवासीरको व खांसीको व मंदाग्निको व अरुचिको व कंठरोगको व हृद्रोगकोहरै ॥ मर्कटीचूर्ण ॥ कोंचके बीजोंको पीसि शहद घृत में चटनी बनाय चाटनेसे प्रभातमें श्वासरोगजावै ॥ शुंठ्यादिचूर्ण ॥ कचूर, भारंगी, बच, शुंठि, मिरच, पीपल, छोटीहड़, कालानोन, कायफल तेजबल, पुष्करमूल, काकड़ाशिंगी इन्होंकोपीसि शहद मिलायचाटनेसे श्वास व खांसीको हरै ॥ गुडादिलेह ॥ गुड़ मिरच हल्दी रास-

ना मुनक्का पिपली ये समभागलेय पीसि तेलमें मिलाय चाटने से तीव्रश्वासकोनाशकरै ॥ भारंग्यादिचूर्ण ॥ भारंगी, नागरशुंठि इन्होंको पीसि अदरखकेरसमें मिलाय चाटनेसे श्वासकोहरै दृष्टांतजैसेसिंह हाथियोंको तैसे ॥ ऊर्ध्वश्वासकालक्षण ॥ ऊँचीश्वासले नीचेआवैनहीं कफसे मुँहभरिजाय ऊँचीदृष्टिहोजाय नेत्रतरतरहोइ इस श्वास में दुःखीहो तब भ्रमता होइ मोहहोय ग्लानिहोय और मुखसूखा हो ये ऊर्ध्वश्वासकेलक्षणहैं यहअवश्यमरै ॥ श्वासखालीनहिकारण ॥ ऊर्ध्वश्वासकोप को प्राप्तहुये नीचाश्वास रुकै है और मोह व ग्लानि प्राप्तिकरि मनुष्यकोमारैहै ॥ दुल्हरीचूर्ण ॥ दुल्हरी, सेंधानोन, जटामासी कालानोन, शुंठि, मिरच, पिपली, ब्रह्मदण्डी, त्रिफला, अरंडकीजड़ इन्होंकेचूर्णको गरमपानीके सङ्गखानेसे अथवा पांचौनोन लेयचूर्ण करि गरमपानीके संगखानेसे ऊर्द्धश्वासकोहरै ॥ शुंठ्यादिचूर्ण ॥ शुंठि देवदारु पिपली इन्होंकेचूर्णको अथवा शुंठि पिपली इन्होंके चूर्णको गरमपानीके संगखानेसे ऊर्द्धश्वासकोहरै ॥ शिलाद्यवलेह ॥ शिलाजीत हिंग वायविड़ंग मिरच कूट सेंधानोन इन्होंकाचूर्ण १ तोला भरशहद घृतमेंमिलाय चाटनेसे श्वासको व खांसीको हरै ॥ विडंगादिचूर्ण ॥ वायविड़ंग १ तोला पिपली १ तोला इलायची १ तोला दालचीनी १ तोला मिरच २ तोला शुंठि १६ तोला इन सबों के समान खांड़ मिलाय १ तोला भर नित्यखाने से श्वास को व खांसी को व हृद्रोग को हरै ॥ दाड़िमादिचूर्ण ॥ अनार हिंग शुंठि पिपली नोन आम्लबेतस ये समान भागलेय चूर्णकरि खाने से श्वासको व हृद्रोगको हरै ॥ विड़ंगादिचूर्ण ॥ वायविड़ंग, पिपली, हींग अजमान, सेंधानोन, शुंठि, रास्ना ये समान भागलेय घृतमें मिलाय १ तोलाभरखानेसे कफको व श्वासकोहरै यहविड़ंगादिचूर्ण है ॥ आर्द्रकस्वरस ॥ अदरखके रसमें शहद मिलाय चाटनेसे खांसी व श्वास जावै ॥ अक्षकवल ॥ बहेड़ाकोमुखमें धारणकरनेसे श्वास व कासजावै ॥ आठरुषरस ॥ बासाका रस गौका नोणीघृतको मिलायपकाय पीछे त्रिफलाका चूर्ण मिलाय खाने से श्वास को हरै ॥ छिन्नश्वासलक्षण ॥ सर्व शरीरके पांचों पवनोंसे पीड़ित मनुष्य टूटित श्वासलेवै अथवा

दुःखितहोके श्वास नहीं ले जिसके मर्मस्थान टूटिजावैं तब अफारा होय आवै प्रस्वेद होय नेत्र फटजायँ श्वासलेता लालनेत्रहोयँ चैन जातीरहै शरीरकावर्ण औरहोजाय वहप्राणी जल्दीमरै॥ तमकश्वास लक्षण ॥ शरीरकी पवन उलटी फिरनेसे रोकदे तबकांधा और शिर को पकड़ कफको प्रकटकरै तब वह कफ कण्ठमें जाय घुर २ शब्द करै प्राणके हरनेवाले श्वासको प्रकट करै तब मनुष्य श्वासकेवेग कर ग्लानि प्राप्तहोय और उसकी अग्निरुकजाय तबवह खांसते मोहको प्राप्त हो और कफछूटै तब दुःखीहोय और मुखमाहींसे कफ निकल जाय तबवह घड़ी दो एकदुःखपावै तबवासे बोलाजाय और वह सोवे तब श्वास होयआवै नींद आवेनहीं बैठेंही चैनपड़ै और गरमी सुहावे और आंखोंपर सोजन होय ललाटमें पसीना आवै मुंहसूखे और धवकनीकी भांति श्वासले मेहके पवनसे शीतलबस्तु सों वहबढ़ै और मधुरबस्तुसेबढ़ै ये लक्षण तमकश्वासके हैं और यह श्वास जाप्यहै और नयाउपजाश्वास साध्यहै॥ प्रतमकनिदान॥ ज्वर मूर्च्छा इन्होंके संबंधसे प्रतमक उपजे और उदावर्त्त, धूलि, बिदग्धा जीर्ण मूत्र पुरीषादि बेगादि रोकना इन्होंसे प्रतमकउपजे यहताम-सिक गुण मनमें उपजि बधै और शीतल पदार्थोंसे शांतहोवै इसमें अंधेरासा आय प्राप्तहोवै॥ शुंठ्यादिचूर्ण ॥ कचूर, कमलकंद, गिलोय दालचीनी, नागरमोथा, पुष्करमूल, तुलसी, भूमिआमला, इलायची पिपली, कालागर, शुंठि, भीमसेनी कपूर ये सबसमान भागलेय चूर्ण करि दुगुनी खांड़ मिलाय खानेसे हिचकी व श्वासको हरै॥ व्याघ्री जीरकादिगुटिका॥ कटैली, जीरा, आंवला इनतीनोंऔषधोंकाचूर्णकरि शहदमिलाय चाटनेसे ऊर्ध्व बातको व महाश्वासको व तमश्वासको नाशकरै॥ क्षुद्रावलेह॥ कटैली १०० तोला हड़ १०० तोला इन्होंकोएक द्रोणभर पानीमें मिलाय काढ़ाकरावे पीछेगुड़ ४०० तोला मिलाय फिर पकाय हड़ोंसमेत पीछेशीतलहोनेपर शहद २४ तोला शुंठि ४ तोला मिरच ४ तोला पिपली ४ तोला दालचीनी १ तोला तमाल-पत्र १ तोला इलायची १ तोला नागकेशर १ तोला मिलाय लेह करि खावै यह ब्रिदेहको पहिले प्राप्तभया है यह क्षुद्रावलेह कफके

रोगोंको व श्वासको व शोषको व खांसीको व हिचकी को व छाती के रोगको व मृगीरोग को हरे। ॥ कंटकार्यावलेह ॥ कटैली ४०० तोला पानी एकद्रोणभरमें काढ़ाकरि चौथा हिस्साराखे पीछे गिलोय ४ तोला चव्वक ४ तोला चीता ४ तोला नागरमोथा ४ तोला काकड़ाशिंगी ४ तोला शुंठि ४ तोला मिरच ४ तोला पिपली ४ तोला धनियां ४ तोला धमासा ४ तोला भारंगी ४ तोला रासना ४तोला कचूर ४ तोला खांड़ ८०तोला घृत ३२ तोला तेल३२तोला मिलायपकाय शीतलहोनेपर शहद ३२ तोला वंशलोचन १६तोला पिपली १६ तोलामिलाय सुन्दरमाटीके वरतनमें घालिरक्खे पीछे खानेसे हिचकीको व श्वासको व खांसीकोनाशकरै इसमें संशयनहीं है॥ क्षुद्रश्वासनिदान ॥ सूखीवस्तु खानेसों खेदकरनेसों कोठामें पवन क्षुद्रश्वासको प्रकटकरै तब वह मनुष्यों को बहुत दुःख देवे नहीं और मनुष्योंकी खान पानकी गति को रोके नहीं और इन्द्रियोंको पीड़ाकरै नहीं ये लक्षण क्षुद्रश्वासकेहैं यह साध्यहै और सबश्वासों में क्षुद्रश्वास सुसाध्यहै महोर्ध्वादि ३ श्वास असाध्य हैं दुर्बल को तमकश्वास मारदेयहै और सन्निपातादिक रोगजैसे तुरंतप्राणों को हरैं नहीं तैसे हिचकी व श्वास जल्दी मारे है ॥ सामान्यउपचार ॥ श्वास व हिचकी वालेको सच्चिक्कण पहसीना दिवावै और तेल व नोनमिलाय पहसीना देवै इससे कफरोग व श्वासजावै और वायुरोगशांतहोयहै और इसको स्निग्धकरि रसओदन खवावै ॥ शृंगवेररस ॥ चोखी अदरखके रसमें शहद मिलाय चाटनेसे खांसीको व श्वासको व पीनस को व कफको हरै ॥ विभीतकावलेह ॥ बहेड़ा की छाल १ सेर लेइ बकरीके मूत्रमें सिद्धकरि पीछे शहद मिलायचाटनेसे खांसी व श्वासकोहरै ॥ द्राक्षादिलेह ॥ दाख मुनक्का,हड़,नागरमोथा,काकड़ाशिंगी,धमासा इन्होंकेचूर्णमें शहद घृतमिलाय पीनेसेश्वासकोहरै ॥ दशमूलाद्यवागू ॥ दशमूल,कचूर,रासना,पिपली,शुंठि पुष्करमूल,काकड़ाशिंगी, भूमिआंवला,भारंगी,गिलोय,शुंठि,चीता इनऔषधोंमें सिद्धकरि यवागूको व काढ़ाकोपीनेसे श्वासको व हृद्रोगको व पसलीशूलको व हिचकीको व खांसीकोहरै ॥दशमूलकाढ़ा॥

दशमूलके काढ़ामें पुष्करमूल का चूर्णमिलाय पीनेसे खांसीको व श्वासको व पसलीके शूलकोहरै ॥ रंभादिकुसुमपान ॥ केलाके फूल कुंदाकेफूल, सिरसकेफूल, पिपली इन्होंको चावल के पानी से पीसि पीनेसे श्वासकोहरै कडुआतेलमें गुड़कोमिलाय पीनेसे श्वासजावै और इसपर यवकोखावे ॥ शृंग्यादिचूर्ण ॥ काकड़ाशिंगी, शुंठि, पिपली नागरमोथा, अरंडकीजड़, कचूर, मिरच इन्होंकाचूर्णकरै और गिलोय बासा, पंचमूलइन्होंकाकाढ़ाकरि पिछलेचूर्ण व खांडकोमिलाइपीने सेदारुणश्वासको ३ दिनमेंनाशै ॥ शृंग्यादिकाढ़ा ॥ भारंगी, शुंठि इन्होंका काढ़ाबनाइ पीनेसे श्वासजावै ॥ पंचमूलीयोग ॥ लघुपंचमूलकाकाढ़ा पित्ताधिकरोगमें बरतै और बाताधिकमें व कफाधिकमेंबृहत्पंचमूल को बरतै ॥ कूष्मांडशिफाचूर्ण ॥ कोलहाकी जड़के चूर्णको गरमपानीके संग खानेसे खांसीको व श्वासको जल्दीनाशकरै ॥ हरिद्राद्यवलेह ॥ हल्दी, मिरच, दाख, पिपली, रासना, शुंठि, गुड़ इन्होंको कडुआ तेलमें मिलाइ चाटनेसे प्राणहारी श्वासको भी हरै ॥ भारंगीगुड़ ॥ भारंगी १०० तोला दशमूल १०० तोला हड़बड़ी १०० तोला लेइपानी १२०० तोलाभरमें पकाइ चतुर्थांशरक्खे पीछे कपड़ामाहिं रसको छानि गुड़ ४०० तोला मिलाइ फेर पकाइ तय्यार करै पीछे शीतल होनेपर शहद २४ तोला मिलाइ शुंठि ४ तोला मिरच ४ तोला पिपली ४ तोला दालचीनी ४ तोला इलायची ४ तोला तमालपत्र ४ तोला जवाखार २ तोला इन्होंका चूर्णकरि १ हड़ और अवलेह २ तोलाभर खावै यह श्वासको व पांचप्रकारकी खांसीको व बवासीर को व अरुचिको व गुल्मको व अतिसारको व क्षयीकोहरै और स्वर बर्ण अग्नि इन्होंकोबढ़ावै यह भारंगीगुड़ संसारमें विख्यातहै ॥ द्राक्षादिकाढ़ा ॥ दाख, गिलोय, शुंठि इन्होंके काढ़ामें पिपलीकाचूर्ण मिलाय पीनेसे श्वासको व शूलको व खांसीको व मंदाग्नि को व जीर्णज्वरको व तृषाको नाशकरै ॥ कुलित्थादिकाढ़ा ॥ कुलथी, शुंठि कटैली, वासा इन्होंके काढ़ामें पुष्करमूलका चूर्ण बुरकाइ पीनेसेखांसीको व श्वासकोहरै ॥ देवदार्व्यादिकाढ़ा ॥ देवदारु, बच, कटैली, शुंठि कायफल, पुष्करमूल इन्होंका काढ़ाबनाइ पीनेसे श्वासको व खांसी

कोहरै ॥ सिंह्यादिकाढ़ा ॥ कटेली, हल्दी, वासा, गिलोय, शुंठि, पिपली भारंगी, नागरमोथा इन्होंके काढ़ामें पिपली मिरच चूर्ण मिलाय पीनेसे श्वासको हरै ॥ वासादिकाढ़ा ॥ वासा, हल्दी, पिपली, गिलोय भारंगी, नागरमोथा, शुंठि, कटेली इन्होंके काढ़ामें पिपली मिरचोंका चूर्ण मिलाइ पीनेसे श्वास जल्दीजावै ॥ भारंग्यादिलेह ॥ भारंगी, मुलहठी, हड़, पिपली, कटुकी, शुंठि, मिरच, पीपल इन्होंके चूर्णमें घृत शहद मिलाय पीनेसे श्वासकोहरै ॥ गुडाद्यवलेह ॥ गुड़, अनार, दाख पिपली, शुंठि इन्होंके चूर्णको बिजौराके रसके व शहदसङ्ग खानेसे श्वासको नाशकरै ॥ वासादिलेह ॥ वासा ४०० तोला पानी ३२०० तोला मिलाय पकाय चतुर्थांश रक्खै पीछे हड़का चूर्ण २५६ तोला मिलाय फेर पकाय पीछे खांड़ ३८५६ तोला मिलाय पाक बनाइ शीतल होनेपर शहद ३२ तोला वंशलोचन ८ तोला पिपली २ तोला नागकेशर १ तोला तमालपत्र १ तोला दालचीनी १ तोला इलायची १ तोला मिलाइ रोज़ २ तोलाभर खाने से श्वासको व खांसीको व क्षयीको व रक्तपित्तको व कफको व पीनसको व हृद्रोगको व कृशताको व विद्रधिको व छाती फटजाने को व रक्तकी छर्दि को हरैहै ॥ सितादिचूर्ण ॥ मिश्री, दाख, पिपली ये समभागलेइ तेल में पकाइ खाने से श्वास जावै ॥ शिलादिअवलेह ॥ मैनशिल, शुंठि मिरच, पिपली, हड़, हिंग, सेंधानोन, वायबिड़ंग इन्होंके चूर्णमें शहद घृत मिलाइ खानेसे हिचकी व श्वास जावै ॥ राजिकादिगुटी ॥ राई पांडरा, भूमिकोहला, पिपली, लहसन, मिरच, अतीस, लवङ्ग इन्हों का चूर्णकरि भँगराके रसकी भावनादेइ पीछे आकके दूधकीभावना देइ पीछे गुकुवारपट्ठाके रसकी भावनादेइपीछे निर्गुण्डी के रसकी भावना देइ पीछे मुंडीकेरसकी भावनादेइ पीछे चीताकेरसकीभावनादेइ खानेसे श्वासको व खांसीकोहरै ॥ सूर्यावर्त्तरस ॥ पारा १ भाग गन्धकआधाभागइन्होंको एकपहरतकघोटि बराबरकातांबामिलाइ नागरमोथाके कल्कसे लेपनकरि घटीयंत्रसे १ दिनतक पकाइकाढ़ि १ वालभर गन्धक व मिरच चूर्णकेसङ्गखानेसे कफको व श्वासको हरै ॥ अमृतार्णवरस ॥ पारा, गन्धक, लोहभस्म, सुहागा, रासना, बाय-

बिड़ंग, हड़, बहेड़ा, आमला, देवदारु, शुंठि, मिरच, पीपल, गिलोय बचनाग, पद्माख, शहद ये बराबर लेइ ३ रत्ती खानेसे खांसीको व श्वासको हरैहै इसकानाम अमृतार्णव रसहै ॥ श्वासहेमाद्रिरस ॥ मैन-शिलको दूना तांबेके गोलामेंभरि बालुका यन्त्रमें पकायगोलासमेत चूर्णकरि पारा गन्धककी कज्जलीकरि मिलाय फेर पकाय दुपहर तक यह श्वासहेमाद्रि रस महाश्वासको हरैं और वर्णको बढ़ावै ॥ उदयभास्कररस ॥ धान्याकअभ्रक, पारा, गन्धक इन्होंको सफेदऊंगा केरसमें खरलकरै लोहाके पात्रमें पीछे डमरुयन्त्र में घालिपकाय ऊपरके बरतनमें लगाहुआ द्रव्यको खुरचि पीछे यह उदयभास्कर रस २ रत्ती खानेसे पांचतरहके श्वासको हरै इसपै अनुपान कटुकी के चूर्णमेंशहदमिलाय खावै ॥ श्वासकालेश्वर ॥ लोहभस्म, तांबाभ-स्म, अभ्रकभस्म, पारा, गन्धक, धतूराकेबीज, जैपाल, हल्दी, कचूर ये समानभागलेइ और मरिचका चूर्ण३ भागलेइ इन्होंको खरलमें घालि लोहाके दण्डासे पीसै जब तक पारादीखैनहीं पीछे इन्द्रयव काढ़ामें २१ भावनादेइ पीछे २ रत्ती किम्बा १ रत्तीरसमें अदरख का रस मिलायखावै जवानको २रत्ती और बालवृद्धको १रत्ती देवै पथ्यसेरहै यह ५ प्रकारके श्वासको व क्षयीरोगको व खांसीको व राजयक्ष्माकोहरै यहरस देवताओंको भी दुर्लभहै ॥ पारदादिगुटी ॥ पारा, गन्धक, शीशा, तांबा, शुंठि, मिरच, पीपल, चीता, राल ये समानभागलेइ चूर्णकरि पानकीबेलके रसमें १० भावनादेइ पीछे अदरख के रसमें १० भावनादेइ मरीचके तुल्यगोली बनाय खाने से मंदाग्नि को व कफरोगको व श्वासको व खांसीको व पेटके अ-फारा को हरै ॥ लवंगादिगुटी ॥ लवंग, मिरच, त्रिफला इन्होंको स-मान भाग लेइ पीछे बबूलके रसमें गोली बनाय खानेसे श्वासको व कफको हरै है ॥ दूसराप्रकार ॥ लंवग, शुंठि, मिरच, पिपली, ब-चनाग, भंगरा, कटैली, बहेड़ा ये समान भागलेइ पीछे इन्हों को कुवारपट्ठा के रसमें खरलकरि गोली बनाय खानेसे श्वासकोनाश करै संशय नहीं ॥ त्रिकटुवटी ॥ शुंठि, मिरच, पीपल, सुहागा इन्हों को नागरपान के रसमें पीसि मरीच के समान गोली बनाय खाने

से कफ को हरै यह त्रिपुरभैरवी है ॥ फलत्रयगुटी ॥ हड़, बहेड़ा आमला, शुंठि, देवदारु, पिपली, बच्चनाग, वाला, मिरच इन्हों को धतूराके रस में व भङ्गरा के रस में ३ दिन तक भिगोय पीसि गोली बनाय खानेसे श्वासको व कफको नाशकरै ॥ स्नुहीदुग्धयोग ॥ थोहरके दूधमें गुड़मिलाय ६ रत्तीभर खाने से खांसीको व श्वास को व हृद्रोगको व क्षयरोग को हरै ॥ श्वासकुठार ॥ पारा १ तोला गन्धक १ तोला मीठा तेलिया १ तोला सुहागा १ तोला मैन-शिल १ तोला मरीच ८ तोला पीपल शुंठि मिरच मिल करि २ तोला इन्होंको मिलायखानेसे यह श्वासकुठाररस सबप्रकारके श्वासरोगोंको हरैहै ॥ दूसराप्रकार ॥ पारा १ तोला गंधक १ तोला मी-ठातेलिया १ तोला सुहागा १ तोला मिरच ८ तोला शुंठि २तोला मिरच २ तोला पीपल २ तोला इन्होंको बारीक पीसि कपड़छान करि कांचकी शीशीमें भरि पीछे १ रत्तीभररोज़खानेसे श्वासको व खांसीको व मंदाग्निको व बातकफ संबंधी रोगको नाशकरनेवास्ते पानके टुकड़ाके संगदेकै और सन्निपात में व मूर्च्छामें व मृगीरोग व ज्यादह मोहवाले रागमें इसरसकी नस्यदेनेसे आराम होवै यह श्वासकुठार रस सब प्रकारके श्वासरोगोंको हरै ॥ मरिच्यादिगुटी ॥ मिरच १ तोला पिपली १ तोला जवाखार ८ माशा अनारकीछाल २ तोला इन्होंका चूर्णकरि गुड़ ८ तोलाभर मिलाय ४ माशेकीगो-लीबनायखानेसे सब प्रकारकी खांसीजावै ॥ श्वासमेंपथ्य ॥ विरेचन स्वेदन, धुआंपीना, बमन, दिनमेंसोना, साठीचावल, लालधान, कु-लथी, गेहूँ, यव येसब पुरानेपथ्यहैं शशा, मोर, तीतर, लवा, मुरगा तोताआदि मरुदेशके मृगतथापक्षी, पुरानाघृत, बकरीकादूध तथा घृत, मदिरा, शहद, कटेली, बथुआ, चौराई, जीवंती शाक, मूल, पो-तिकाशाक, सौंफ, परवर, बैंगन, लहसन, हड़, जंबीरीनींबू, कंदूरी फल, बिजौरा, दाख, छोटीइलायची, पुष्करमूल, गरमपानी, शुंठि मिरच, पीपल, गोमूत्र, कफबात के नाशक अन्नपान तथा औषध छातीके दोनोंओर और हाथोंकी दोनों बीचकी अंगुलियों तथाकंठ में गरमलोहसे दागना येसब श्वासकेरोगमें पथ्य हैं ॥ अथअपथ्य ॥

मूत्र, डकार, बमन, प्यास, काम इन्हों के बेगको रोकना नासलेना वस्तिकर्म, दतून, श्रम, रस्तामें चलना, बोझाउठाना, धूलि, सूर्य्यके किरण, बिष्टंभीबस्तु, स्त्रीसंग, बिदाहिबस्तु, अनूपदेशकामांस, तेल में भुनी वस्तु, दलिया, कफके बढ़ानेवाली बस्तु, उड़द, रुधिर निकालना, पूर्बदिशाकापवन, जलका पीना, भेड़कादूध और घृत बुरापानी, मछली, कन्द, सरसों, रूखाभारी तथा शीतल अन्नपान ये सब श्वासरोगमें अपथ्यहैं॥

इतिबेरीनिवासकरंबिदत्ताबिरचितनिघण्टरत्नाकरभाषायांश्वासप्रकरणम्॥

अथस्वरभेदनिदान॥ मनुष्यके बहुतबोलनेसे और बिषआदिकेखानेसे उच्चस्वरके बढ़नेसे कंठमें किसीतरहकी चोटलगनेसे कोप को प्राप्तभया जोबायु पित्तकफसो कंठकेस्वरमें बहनेवाली जो नसें तिन पित्तमेंरहे स्वरभंगकरेहैं सो वह स्वरभेद ६ प्रकारकाहै बायुका १ पित्त का २ कफका ३ सन्निपातका ४ शरीरके भंगपनाका ५ क्षयीरोगका ६॥ चिकित्साप्रक्रिया॥ बायुके स्वरभेदमें तेलमें नोनमिलाय पीवै और पित्तके स्वरभेदमें घृतमें शहदमिलाय पीवै और कफकेस्वर भेदमें खार, कटुआ, शहद इन्होंकोपीवै और कंठ, तालु, जीभ, दंत मूल इन्होंमें औषधदेनेसे कफनिकसै और स्वरस्वच्छहोवै॥ स्वर भेदसामान्यचिकित्सा॥ जो बातादि जनित श्वास व खांसीको हरने वाले योगहैं तिन्होंके सेवनेसे स्वरभेदजावै। और मेदसेउपजे स्वर भेदमें कफके औषधकरै और त्रिदोषके स्वरभेदको असाध्यजाने और क्षयीके व त्रिदोष के स्वरभेदमें योग्य क्रियाकरै॥ वातिकस्वर भेदनिदान॥ जिसका नेत्र मलमूत्र कालाहोइ टूटाशब्द बोलै गधे कैसा शब्दहोय तो बायुका स्वरभेद जानिये॥ मरिचघृतपान॥ बायु के स्वरभेद में भोजनकरि ऊपरघृतमें मरीचका चूर्ण मिलायपीवै॥ घृतगुड़ोदन॥ पहिले मीठे चावलखाय ऊपर गरमपानीको पीवै पीछे भंगराके रसमें घृतको सिद्धकरि खानेसे स्वरभेद जावै॥ कासमर्दादि घृत॥ कासाविंदीकारस, भारंगीकी जड़का कल्क इन्होंमें हलवे २

घृतको सिद्धकरि खानेसे व वायुके स्वरभेदको हरै॥ व्याघ्रीघृत॥ कटेलीके रस में रास्ना, वलिया, गोखुरू इन्हों का कल्क मिलाय घृतको सिद्धकरि खानेसे व स्वरभेदको पांचप्रकारकीखांसीकोहरै॥ पैत्तिक स्वरभेद निदान॥ जिसके नेत्र मुख मलमूत्र पीले रङ्ग हों और बोलने के समय में गले में दाह होय तो पित्तका स्वरभेद जानिये॥ सामान्यचिकित्सा॥ पित्तके स्वर भेद में रेचन देवै और मीठामिलायगरम दूधको पीवै अथवा मीठे पदार्थोंके चूर्णमें शहद मिलाय पीने से सुख होवै॥ ज्येष्ठीमधुकाढ़ा॥ मुलहठीके काढ़ा में घृतको मिलायपीने से पित्तकास्वरभेदजावै॥ पयःपान॥ खांड़शहद मिलाय दूधकेपीने से ऊँचे प्रकारके पढ़ने से उपजा स्वरभेदजावै॥ शतावरी चूर्ण॥ शतावरी, बलिया इन्हों का चूर्ण अथवा धान की खीलके चूर्ण में शहद खांड़ मिलाय खानेसे पित्त स्वर भेद स्वच्छ होवै॥ शुंठीघृत॥ शुंठि, दालचीनी इन्होंके चूर्णको बड़आदि वृक्षके दूधमें सिझाय घृतको पीनेसे अथवा मुलहठी के चूर्ण को खांड़ घृतकेसंग खानेसे पित्तका स्वरभेदजावै॥ पित्तस्वरभेद॥ कासाबिंदी बैंगन, भंगरा इन्हों के रसमें घृतदूध मिलाय पीने से पित्तका स्वर भेद जावै॥ कफ स्वरभेदनिदान॥ सदाही कण्ठ कफसे रुको रहै और मन्द २ दुहरो बोलाजाइ रातिमें बढ़िजाइ तब कफका स्वर भंगजानिये॥ पिप्पलीयोग॥ पिपली, पिपलामूल, मिरच, शुंठि इन्होंके चूर्ण को गोमूत्रमें मिलाय पीने से कफका स्वरभेद जावै॥ अम्लवेतसादि चूर्ण॥ चाब, अम्लबेतस, शुंठि, मिरच, पीपल अमली, तालीसपत्र, जीरा, बंशलोचन, चीता, दालचीनी, तमाल-पत्र, इलायची इन्होंके चूर्ण में गुड़मिलाय खाने से स्वरभेद को व पीनस को व कफको व अरुचिको नाशै॥ गंडूष॥ अदरख के रसमें सेंधानोन, शुंठि, मिरच, पीपल, बिजौरा रस इन्होंको मिलाय कुरुला करने से कफकोहरै जैसे सिंहहाथीको तैसे॥ कटुकादिकाढ़ा॥ कटुकी अतीस, पाढ़ा, देवदारु, नागरमोथा, इन्द्रयव इन्होंका गोमूत्र में काढ़ाबनाय पीने से कंठरोग नाशहोवै॥ सन्निपात स्वरभेदनिदान॥ जिसमें बायु, पित्त, कफ तीनों के लक्षणहों वह सन्निपातका है परन्तु

यह असाध्य है ॥ अजमोदादिचूर्ण ॥ अजमोद, हलदी, आंवला जवाखार, चीता इन्हों के चूर्ण में शहद घृत मिलायखाने से सन्निपातका स्वरभेदजावै ॥ फलत्रिकचूर्ण ॥ हड़, बहेड़ा, आमला, शुंठि मिरच, पीपल, जवाखार इन्होंकाचूर्ण, अथवा कुलथीका चूर्ण अथवा पुष्करमूल के चूर्ण को मुंहमें रखने से स्वरभेद जावै ॥ निदग्धिकावलेह ॥ कटैली ४०० तोला पिपलामूल २०० तोला चीता १०० तोला दशमूल १०० तोला इन्होंको २०४८ तोले पानीमें काढ़ा बनाय २५६ तोलेभर बाक़ी रक्खै तब १२८ तोला पुरानागुड़ मिलाय फेर मन्दअग्निसे पकाय अवलेह सरीखा बनावै पीछे पिपली ३२ तोला दालचीनी इलायची तमालपत्र तीनोंमिलके ४ तोला मिरच ४ तोला कूटिकर मिलावै पीछे शहद १६ तोलेभर मिलाय अग्नि बलबिचार खावै यह निदग्धिकावलेह वैद्योंने मानाहै यह स्वरभेद को व खेहरको व खांसीको व श्वास को व मन्दाग्नि को व गुल्मको व प्रमेहको व कंठरोग को व अफारा को व मूत्रकृच्छ्र को व ग्रन्थि को व अर्बुद रोग को हरै ॥ क्षयकृत स्वरभेद निदान ॥ बोलने में मुंहमें से धूमा निकलै सो क्षयी रोग का स्वरभेद जानिये ॥ शरीर के मोटापनसे उपजा जो स्वरभेद ताको लक्षण ॥ गले के भीतरही बोले मोटा शब्द बोलै और देरसों बोलै गला जलै प्यास बहुत लगै ये लक्षण शरीर के मोटापन के स्वर भेद के हैं यह भी असाध्य है ॥ असाध्य लक्षण ॥ क्षीण के व बूढ़ा के व माड़ा के उपजा स्वर भेद व बहुत दिनों का व जन्मकाल का व मोटापन से उपजा व सन्निपात का ये स्वर भेद असाध्य हैं ॥ चिकित्सा ॥ क्षयी के स्वर भेद में क्षयीरोगमें कहे औषध देवै और मोटेपन के स्वरभंगमें कडुआ, कसैला, तिखट इस भांतिके रस देवै ॥ जातिफलावलेह ॥ जायफल, इलायची बिजौरा, तमालपत्र, धानकी खील, पिपली इन्हों के चूर्ण में शहद मिलाय चाटनेसे किन्नर सरीखी कंठ में ध्वनि उपजै ॥ काकजंघादि धार्य ॥ छोटीकाबली, बच, कूट, पिपली इन्होंके चूर्णको शहदमें मिलाय गोली मुखमें रखने से ७ दिनतक वह मनुष्य किन्नरोंके संग गावै ॥ जातिफलादिलेह ॥ जावित्री, इलायची, पिपली, गांडरजड़, बि-

जीरा, तमालपत्र इन्होंका चूर्णमें शहद मिलाय चाटनेसे निरन्तर किन्नरके समान स्वर प्राप्तहोवे॥ गुडूच्यादिलेह ॥ गिलोय, अपामार्ग बायविडंग,जयतिक्ता,वच,शुंठि,शतावरि इन्होंकेचूर्णमेंघृतमिलाय३ दिनतक खानेसे एकहजार१०००श्लोकोंको कंठ करै ॥ बदरीकल्क॥ बडबेरी के पत्तोंका कल्क सेंधानोन इन्हों को घृत में भूनि खाने से स्वरभंगको व खांसीको हरै ॥ आरनाल चूर्ण ॥ बहेडा, पिपली, सेंधानोन इन्हों का बारीक चूर्णकरि कांजी के संग खाने से स्वरभेद हरै। गौके दूधमें आमलाका चूर्णमिलाय पीनेसे स्वर भेद जल्दी जावै॥ खादिरधार्य ॥ खैर के चूर्णको तेलमें मिलाय मुँहमें रखने से अथवा हड़ पिपली इन्होंका चूर्ण मिलाय खानेसे अथवा शुंठि मिलाय खानेसे स्वरभेद जावै॥ गोरक्षवटी ॥ पाराभस्म, तांबाभस्म लोहभस्म इन्होंको कटेलीके फलों के रस में २१ भावना देइ मूंग सरीखी गोली बनाय मुँहमें रखनेसे स्वरभंग को हरै इसमें संशय नहींहैयेगोलीगोरखनाथनेस्वरभंगवालेमनुष्योंपरदयाकरिकेकही है ब्राह्म्यादिचूर्ण ॥ ब्राह्मी, मुंडी, वच, शुंठि,पिपली इन्होंकेचूर्ण में शहद मिलाय चाटनेसे किन्नरोंके संग गानकरै ॥ दुग्धामलकपान ॥ आंवलाके चूर्णको दूधमें मिलाय पीने से स्वर भेद जावै दृष्टांत जैसे मृगाक्षी स्त्री कामदेव को तैसे ॥ स्वरभेदमें पथ्य ॥ स्वेदन, बस्तिकर्म धूमाकापीना,बिरेचन,औषधियोंका कवल मुँहमें रखना, नासलेना माथेकी फस्तको खुलाना, यव, लालधान,हंस, बनमुरगा तथा मोर के मांसका रस, मदिरा, गोखुरू, केवैया, जीवंतीशाक, कोमलमूली दाख,हड़,बिजौरा,लहसन,नोन,अदरख,पान, मिरच,घृत ये स्वरभेदके रोगमें पथ्यहैं ॥ अथअपथ्य ॥ कच्चाकैथा,मौलसिरी,कमलकीजड़ जामुनकेफल,तेंदूकेफल,कसायलीवस्तु,बमन,सोना,बकना, विरुद्ध अन्नपान ये सब स्वरभेद रोगमें अपथ्य हैं॥

इतिबेरीनिवासकरविदत्तविरचितनिघण्टरत्नाकर भाषायांस्वरभेदप्रकरणम्॥

अरुचिकर्मविपाक॥ जो द्रव्यपात्र होइ श्रद्धाहीन व दान करे नहीं और करे तो तमोगुण से युतहोइ दानकरै वह मनुष्य अरुचिको वा शूलको प्राप्तहो॥ प्रायश्चित्त॥ इसरोगकी शांतिवास्ते कृच्छ्रचान्द्रायणव्रतकरि अथवा कृच्छ्रचान्द्रायणव्रतको करै। और व्रतकरनेकी सामर्थ्य नहो तो धनाढ्य पुरुष ५० ब्राह्मणों को मीठे पदार्थोंसे रोज़ भोजन करवावे जबतक रोगकी शांतिनहो और इसकीभी करनेकी सामर्थ्यन होतो जप,होम,तीर्थमें स्नानकरै और तीव्ररोगमेंतो ब्रह्मभोज्यहिदेवे॥ ज्योतिषशास्त्रका अभिप्राय॥ जिसका जन्मकाल में सहज स्थान कहे तीसरे भवन में क्रूरग्रहहो अथवा तीसरे भवन में वृहस्पति के संगक्रूरग्रहहो तो भी मंदाग्नि व पाप करनेवाला और वैरियों से हारै और चित्तमें संकट रहै॥ प्रायश्चित्त॥जप, होम तीर्थके स्नानसे शांतिहोवै॥ अरोचकनिदान॥ सुन्दर प्रकारसे परीक्षा करि अन्नको बारंबार मुंहमें घालै और स्वाद लगे नहीं इसको अरोचक कहेहैं। और अन्नको सुनि और स्मरण करि व देखि व स्पर्शकरि भोजन करने की इच्छा न उपजै इसको भक्त द्वेष कहे हैं और जिसकी अन्नमें बिलकुल बासना होवे नहीं इसको भक्तच्छंद कहेहैं यहरोग कोपवालेके व भयवालेके व ज्वरवालेके असाध्यहोय है॥ अरोचककारण॥ वायुका १ पित्तका २ कफका ३ सन्निपात का ४ शोकका ५ भयका ६ अतिलोभका ७ क्रोधका ८ ऐसे अरोचक८ प्रकारके होयहैं॥ वायुकाअरोचक लक्षण॥ कडुआ खट्टा मुंह होय हियामें शूल चले भोजनमें अरुचिहो और दांत आंवलजाइँ येलक्षण बायुकी अरुचिके हैं॥सामान्यशास्त्रार्थ॥वायुकी अरुचिमें बस्ति कर्मकरै और पित्तकी अरुचिमें रेचनदेवैऔर कफकी अरुचिमेंवमन करावै और सन्निपातकी अरुचिमें त्रिदोष का नाश करने वाली व मनको हर्षकरनेवाली औषधीदेवे और अरुचिमें औषधोंकागोला बनाय मुंहमेंधरै और धूमाको पीवै और औषधों के पानी से मुंहमें कुरलेकरै और सुंदर स्वच्छ अन्नको खावै और उत्तम पानीको पीवै और आनन्द देनेवाले व आश्वासन देनेवाले इलाजकरै। और अरुचिमें अपनी प्रकृतिको श्रेष्ठहो वह भोजन करै और अपने देशके

बनेहुये नानाप्रकारके भक्ष्य पदार्थ लड्डूआदि खावै और आंवटी सांभरी, भाजी, कोसंबरी, चटनी इत्यादिक पानकरै और पंचामृत गुलाबअर्कफल, श्रीखंड, राब, पन्नाइत्यादि रसोंको सेवै और रूखे हलके पदार्थको खावै और अन्तःकरणको सुखदेनेवाले पदार्थोंको सेवै ॥ वचादिस्नेहपान ॥ वायुकी अरुचिमें बचका काढ़ादेइ छर्दिदेवे पीछे स्नेहके संग अथवा खट्टे रसके संग अथवा मदिरा के संग पिपली, वायविड़ंग, जवाखार, रेणुक, भारंगी, रासना, इलायची हिंग, सेंधानोन, शुंठि इन्होंके चूर्णकोखावै और पित्तकीअरुचिमें गुड़ मुलहठी पानी इन्होंको मिलाय पीने से छर्दि करै पीछे सेंधा नोन खांड़ शहद घृत इन्हों की चटनी खवावै। और कफकी अरुचिमें निंबके रसको पिवाय बमनदेइ पीछे अमलतास के काढ़ा में शहद अजमान बुरकाइ पीवै अथवा वायुकी अरुचिमें कहे चूर्णको खावै और सबदोषों की अरुचि में सब औषधदेवै ॥ सामान्यचिकित्सा ॥ इच्छा की नाश से उपजी अरुचि में और भय से उपजी अरुचि में सुख देनेवाले पदार्थ व मनोवाञ्छित पदार्थ देवै। और द्रव्य के नाश से उपजी अरुचिमें पुराणों के वाक्यों से व वेदके वाक्योंसे ज्ञान उत्पन्न करावै ॥ पित्तकीअरुचिकालक्षण ॥ कडुआ खट्टा गरमवि-रस सलोना जिसका मुंहहोय और शरीरमें दाहहो मुखशोषहो तो पित्तकी अरुचि जानिये ॥ कफकी अरुचिका लक्षण ॥ मुख मीठा हो और चिकना भारी शीतलहो और मुंहसें बुलबुला होइ ये लक्षण कफकी अरुचिके हैं। और इसमें आंत कफोंसे लिप्तहोयहै। शोक भय, अतिलोभ, क्रोध, भय, अमंगल, गंध इन्होंके सम्बन्धसे अरो-चकहोयहै तिन्होंके स्वाभाविक लक्षणकहेहैं और त्रिदोषकी अरुचि में अनेकभांतिके रसोंसेयुत मुखहोयहै और वायुकी अरुचिमें हृदय में शूल चलै और पित्तकी अरुचिमें तृषा, दाह, शोष येउपजै और कफकी अरुचिमें मुंहसेकफपड़ै और सन्निपातकी अरुचिमें अनेक तरहकीपीड़ा, मोह, जड़पना, मनमें ग्लानि येउपद्रव होयहैं ॥ गंडूष ॥ थोड़ासा नोन मिलाय कांजीको गरमकरि कुरलेकर वा सूं मुंहका बिरसपना जावै ॥ कवलग्रह ॥ मिश्री, शुंठि, मिरच, पीपल, कैथ इन्होंके

चूर्णमें शहद मिलाय गोली बनाय खानेसे सब प्रकारके अरोचक जावें ॥ विडंगचूर्ण ॥ बायबिडंगकाचूर्ण १ तोला शहद ४ तोला इन्हों कीगोली बनाय मुखमें रखनेसे असाध्यभी अरुचिजावे ॥ अम्लिका कवल ॥ अमलीके शरबतमें गुड़,दालचीनी,इलायची,मिरच मिलाय पीनेसे अन्न खानेकी रुचि उपजे ॥ कुष्ठादि कवल ॥ कूट,कालानोन जीरा,खांड़,मिरच,मणयारीनोन इन्होंका चूर्ण अथवा धनियां,इलायची,पद्माख,बाला, पिपली,चन्दन, कमल, लोध, मालकांगणी, हड़ शुंठि, मिरच,पीपल,जवाखार इन्होंका चूर्ण अथवा अदरख, अनार का रस,जीरा,खांड़ इन्होंका चूर्ण ये चार योग तेल व शहदके सङ्ग खाने से ४ प्रकारके अरोचक रोगों को हरे ॥ नींबूकापना ॥ नींबूकारस १भाग खांड़का शरबत ६ भाग और लौंग मिरच इन्हों का चूर्ण मिलाय पीवे यह सब पानोंमें उत्तम पानहै और यह नींबूका रस ज्यादै खट्टाहै और बायुको हरैहै और जठराग्नीको दीपनकरैहै और रुचि को उपजावे है और सबप्रकार के भोजनोंको पकावेहै ॥ मुखधावन ॥ जीरा,मिरच,कूट,खारीनोन,कालानोन,मुलहठी,खांड़, सिरसकातेल इन्होंसे मुंहमें कुरले करने से अरोचक जावे ॥ दूसराप्रकार ॥ करंजवाकी दतून करनेसे पीछे कछुक नोन मिलाय कांजी में पकाय कुरले करनेसे मुंहका बिरसपना जावे और रुचि उपजे ॥ तीसरा प्रकार ॥ दालचीनी,इलायची,तमालपत्र,शुंठि,मिरच,पीपल,हड़,बहेड़ा,आमला, हल्दी, दारुहल्दी, यवकासत्तू, शहद इन्होंका जल मुंहमें रख कुरले करनेसे और तिक्त व कडुवी औषधों के खाने से अरुचि का नाश होवै ॥ शर्करादिभक्षण ॥ खांड़, अनारकीछाल, मुनक्का, खजूर बिजौराकी केशर इन्होंको सेंधामें अथवा शहदमें मिलाय १ तोला भर खानेसे मुंहका बिरसपना जावे और रुचि उपजे। और पकी हुई अमलीको कूटि शीतलपानी मिलाय कपड़ा से छानि इलायची लौंग, कपूर, मिरच इन्होंका चूर्ण बुरकाय पना बनाय मुखमें धारण करि कुरला करनेसे अरुचिको हरै और पित्तको शांतकरै॥ तालीसादिचूर्ण ॥ तालीसपत्र १ तोला मिरच २ तोला शुंठि ३ तोला पिपली ४ तोला वंशलोचन ५ तोला इलायची ६ माशा दालचीनी ६

माशा रांगकी भस्म ८ हिस्सा तांबाकी भस्म ८ हिस्सा खांड़ ३२ तोला मिलाय चूर्णकरै यह तालीसादि चूर्ण रुचिको उपजावे पाचकहै और कास, श्वास, ज्वर, अतीसार, छर्दि, शोष, अफारा, पांडु संग्रहणी, तिल्ली रोगों को हरै ॥ यवानी खांड़ व चूर्ण ॥ अजमोद १६ माशा अनारकी छाल १६ माशा शुंठि १६ माशा अमलीकी छाल १६ माशा अम्लबेतस १६ माशा खट्टाबेर १६ माशा मिरच १० माशा पिपली ४० माशा दालचीनी ८ माशा कालानोन ८ माशा धनियां ८ माशा जीरा ८ माशा खांड़ २५६ तोला इन सबों को मिलाय चूर्णकरै यह यवानी खांड़ व चूर्ण खानेसे पांडुको व हृद्रोग को व संग्रहणीको व ज्वरको व छर्दिको व शोषको व अतीसारको व तिल्लीको व पेटके अफाराको व अरुचिको व शूलको व मंदाग्नि को व बवासीरको व जीभके रोगको व कंठके रोगको हरै ॥ कारव्यादिगुटका॥ सौंफ, अजमान, जीरा, मिरच, दाख, अमली, अनार, कालानोन, गुड़, शहद इन्होंको पीसि बेरकी गुठली सरीखी गोली बनाय खानेसे अरोचकको हरै ॥ खंडार्द्रकयोग ॥ अदरख, ६४ तोला मिश्री ६४तोला मिरच ४ तोला पिपली२ तोला पिपलामूल ३ तोला शुंठि १॥ तोला जायफल १॥ तोला इलायची १॥ तोला चीता १॥ तोला वंशलोचन १॥ तोला इन्होंको सुखाय अलगअलग चूर्णकरि अदरखके टुकड़े बनाय गौ के घृत ३२ तोले में पकाय सबोंके बराबर खांड़ मिलाय १५ दिनतक खानेसे महापित्तको व अम्लपित्त को व सब पित्त विकारोंको व सब अरुचिको व बातरोगको व मंदाग्नि को हरै ॥ राजिकादिशिखरिणी ॥ राई जीरा कूट भुनाहिंग शुंठि सेंधानोन गौकादही इन्होंको मिलाय कपड़ा मांहकेछानि रुचि माफिक पीनेसे रुचिको उपजावै और अग्नि को दीपनकरै ॥ आर्द्रक योग॥ अदरखको पानीसे धोइ टुकड़ेकरि पीछे घृतको गरमकरि टुकड़ोंको भूनि सेंधानोन मिरच जीरा स्याहजीरा इन्हों का चूर्ण मिलाय कछुक पकाय पीछें भुनेहुये यवोंका सत्तू घृत हिंग मिलाय पकाय ऐसे अदरखको शुद्धकरि स्वादुबनाय खानेसे अरुचिदोषमिटै ॥ ताक्राशिखरिणी ॥ गौकादूध भैंसकादही इन्हों को मिलाय कपड़ा में

घालि और सफ़ेद खांड़युत करि छानि इलायची लौंग कपूर मिरच इन्होंके चूर्णकी प्रतिबासदेइ पीनेसे रुचीको उपजावै यहताम्राशिखरिणीहै ॥ आमलकादिचूर्ण ॥ आंवला चीता छोटीहड़ पिपली सेंधानोन इन्होंका चूर्ण भेदी है और सब ज्वरोंको व कफको नाशै और दीपन पाचनहै ॥ खांड़ व चूर्ण ॥ तालीसपत्र १ भाग चाव १ भाग मिरच १ भाग सेंधा १ भाग नागकेशर २ भाग पिपली २ भाग पिपलामूल २ भाग जीरा २ भाग अमली २ भाग चीता २ भाग दालचीनी ३ भाग नागरमोथा ३ भाग बेर ३ भाग धनियां ३ भाग अजमोद ३ भाग अम्लबेतस ३ भाग खांड़ १६ भाग अनारकी छाल ८॥ भाग इन्होंका चूर्णकरि खानेसे अतीसारको व कृमिको व छर्दिको व अरुचिको व अजीर्णको व गुल्मको व पेटके अफाराको व मंदाग्निको व मुखरोगको व पेटरोगको व गलरोगको व बवासीरको व हृद्रोग को व माटीसे उपजे रोगको व श्वासको व खांसीको हरै ॥ कर्पूरादिचूर्ण ॥ कपूर १ तोला दालचीनी १ तोला कंकोल १ तोला जायफल १ तोला तमालपत्र १ तोला लौंग २ तोला नागकेशर ३ तोला मिरच ४ तोला पिपली ५ तोला शुंठि ६ तोला मिश्री सबोंके बराबर मिलाय खानेसे रुचिको उपजावै और क्षयी की खांसीको व स्वरभेदको व श्वासको व गुल्मको व बवासीरको व छर्दिको व गलके रोगको हरै इसपै अन्नपान पथ्यसे रहै ॥ चव्यादिचूर्ण ॥ चाब अम्लबेतस शुंठि मिरच पीपल अमली तालीसपत्र जीरा बंशलोचन चीता दालचीनी तमालपत्र इलायची इन्होंके चूर्णमें गुड़ मिलाय खानेसे स्वरभेद को व पीनसको व कफको व अरुचिको हरैहै ॥ आर्द्रकमातुलिंगादिलेह ॥ अदरख ६४ तोला गुड़ ३२ तोला बिजौराकारस १६ तोला इन्होंको मंदाग्नीसे पकाय पीछे दालचीनी १ तोला तमालपत्र १ तोला इलायची १ तोला शुंठि १ तोला मिरच १ तोला पीपल १ तोला हड़ १ तोला बहेड़ा १ तोला आमला १ तोला धमासा १ तोला चीता १ तोला पिपलामूल १ तोला धनियां १ तोला जीरा १ तोला स्याहजीरा १ तोला इन्होंके चूर्णमें मिलाय खानेसे अरुचि को व क्षयी को व मंदाग्नि को व कामला को व पांडु को व सोजा को व

खांसीको व श्वासको व अध्मान को व पेटके रोगको व गुल्मको व प्लीहा को व शूलको हरै॥ जीरकादिघृत॥ जीरा धनियां इन्हों के कल्कको ६४तोले घृतमें पकायखानेसे कफको व पित्तको व अरुचि को व मन्दाग्निको व छर्दि को हरै है॥ सूतादिवटी॥ पारा, गंधक अभ्रक भस्म, पिपली, अमली, पीपल, सेंधानोन इन्होंकी गोली बनायखानेसे अरुचिकोहरै और जीभ व मुखकी शुद्धिकोकरै है॥ लघुचक्रसंधान॥ गुड़१भाग शहद२भाग कांजी४भाग इन्होंको माटी के वरतनमेंघालि अन्नके कोठामेंगाड़ै ३ दिनबाद काढि वरतै यह अरुचिको नाशै॥ केसरादिलेह॥ विजौराकी केशर को सेंधानोनमें शहदसें मिलाय १तोलाभर चाटनेसे मुंहका विरसपनाजावै। विजौराकी केशर, सेंधा, घृत इन्होंको मिलायखाने से अथवा अनारदानाको खानेसे अरुचि नाशहोवै यह चरकका मतहै॥ आर्द्रकदाड़िमयोग॥ पहिले जीभ व कंठको शुद्धकरि पीछे अदरख सेंधानोन को खावै अथवा अनार के रसमें शहद मिलाय चाटै यह अग्नि को दीपनकरै और अजीर्णको व अरुचिको नाशै॥ दाड़िमचूर्ण॥ अनार ८तोला खांड़ ३२तोला शुंठि ४तोला मिरच ४ तोला पीपल ४तोला दालचीनी तमालपत्र इलायची मिलके ४ तोला इन्हों का चूर्णकरिखावै यहचूर्ण दीपनहै और रुचिकोपैदाकरैहै और पीनस को व श्वासको व खांसीको हरैहै॥ पिप्पल्यादिचूर्ण॥ पिपली १तोला पिपलामूल १तोला चाव१तोला चीता१तोला शुंठि १तोला मिरच १तोला अजमान १तोला अमली १ तोला अम्लवेतस १ तोला इलायची १तोला जायफल १तोला कैथ१ तोला मिश्री १६तोला इन्होंका चूर्णकरिखावै यहअग्निकोदीपनकरै और रुचिकोउपजावै। और प्लीहाको व माड़ापनाको व ववासीरको व श्वासको व शूल को व ज्वरको नाशै और वायुको अनुलोमनकरै और आनन्दको बधाइ कंठ जीभकोशुद्धकरै॥ छत्रादिचूर्ण॥ आमला, अमली, दाख अनार, जीरा, कालानोन, गुड़, शहद इन्होंको मिलायखानेसे सब प्रकारके अरोचकरोग जावैं॥ अम्लिकादिपेय॥ अमली, कालानोन गुड़, शहद इन्हों को मिलाय पीनेसे अरुचि जावै॥ शुंठ्यादिचूर्ण॥

छोटी इलायची, दालचीनी, नागकेशर, लौंग, मिरच, पिपली, शुंठि येसब एकोत्तरवृद्धिसेलेइ सर्वकेबराबर खांड़ मिलाय गोली बनाय खानेसे श्वासको व खांसीको व मुंहसे पानी पड़ने को व हृद्रोगको व पसलीरोगको व अरुचिको व कंठरोगको व मुखपाककोहरै ॥ त्र्यूषणदिवटी ॥ शुंठि, मिरच, पीपल, कैथ, खांड़, कालानोन इन्होंकी गोली बनाय खानेसे रुचि उपजि भीमसेनके समान भोजनकरे ॥ अमृतप्रभावटी ॥ मिरच ४तोला पिपलामूल४तोला लौंग४तोला हड़ ४ तोला अजमाइन४ तोला अमली४तोला अनारदाना ४ तोला खारीनोन ४ तोला कालानोन ४ तोला सांभर नोन ४ तोला पिपली ८ तोलाजवाखार ८ तोला चीता ८तोला जीरा ८ तोला शुंठि ८ तोला धनियां ८ तोलाइलायची ८ तोला आमला ८ तोला इन्होंका चूर्ण करि बिजौराके रसमें ३ भावनादेइ गोली बनाय छाया में सुखाय खानेसे अजीर्णको हरै और जठराग्नीको बढ़ावै इसका नाम अमृतप्रभागोली है॥ आकल्लकादिचूर्ण ॥ अकरकरा,सेंधानोन, चीता, शुंठि आमला, मिरच, पिपली, अजमाइन, हड़ ये सब बराबरभाग लेइ बिजौराके रसमें गोली बनाय खानेसे खांसी को व कंठरोग को व श्वासको व पीनसको व खेहरको व मृगीरोग को व उन्माद को व सन्निपातको नाशकरै ॥ लवणार्द्रकयोग ॥ भोजन की आदि में नोन अदरख का खानारुचि को उपजावै है और जठराग्नी को दीपन करै है और जीभको व कंठ को शुद्धकरै है॥ शृङ्गवेरादिलेह ॥ अदरखके रसमें शहद मिलाय खानेसे अरुचिको व श्वासको व खांसी को व खेहरको व कफकोहरै ॥ त्वङ्मुस्तादिचूर्ण॥ दालचीनी, नागरमोथा,इलायची, धनियां अथवा नागरमोथा, आमला,दालचीनी दारुहल्दी, अजवाइन अथवा पिपली गजपिपली अथवा अजमान अमली येपांचोचूर्ण अलग२सबतरहकीअरुचिकोहरैं॥ दाड़िमरस॥ अनारके रसमें बायबिडंगकाचूर्ण मिलाय खानेसे असाध्य अरुचिकोहरै॥ जीरकादिचूर्ण ॥ जीरा६माशा खांड़१ तोला शहद४ तोला मिलाय मुंहमें रखनेसे रुचिको पैदाकरै॥ कपित्थादिचूर्ण ॥कैथ की गिरी, शुंठि,मिरच, पीपल इन्होंकेचूर्णमें शहद खांडमिलायखाने

से मुहमें सबतरहके अरोचक जावें ॥ शुंठ्यादिगुटी ॥ शुंठि १ भाग पिपली २ भाग निशोत ३ भाग हड ४ भाग आंवला १॥ भाग मिरच ४ भाग सेंधानोन ४ भाग इन्होंको नींबू के रसमें खरलकरि ४ माशेकी गोलीबनाय खाने से मंदाग्नि को हरै ॥ अरुचिमेंपथ्य ॥ वस्तिकर्म विरेचन बलके अनुसार वमन धूमा का सेवन कवलग्रह चरपरे वृक्षकी दतून नानाप्रकारके अन्न पान गेहूं मूंग लालधान साठीचावल सुवर बकरा शशा हिरन इनकेमांस और चेंकुऋसांड़ मधुरालिका इल्लीश प्रोष्ठीखलेशकवयी रोहू इतने प्रकारकी मछली कोहलावेतकी कोंपल नवीनमूली वैंगन सहिंजना सेमल अनार गजपिपली परवर कालानोन घृत दूध कोमलताड़ लहसन ज़मीं-कन्द दाख आंब नींब कांजी मदिरा शिखरणी दही मट्ठा अदरख कंकोल छुहारा चिरौंजी तेंदू का फल पका कैथा बेर विकंकत ताल फलकी मींगी कपूर मिश्री हड़ अजमायन कालीमिरच हींग मीठी खट्टी चर्परी वस्तु देहका धोना ये सब अरुचि में पथ्य हैं ॥ अथ अपथ्य ॥ खांसी डकार नींद वमन इन्हों के वेगका रोकना अहित अन्न रुधिर निकालना क्रोध लोभ भय शोक दुर्गंध सूर्यकी सेवा ये अरुचिमें अपथ्य हैं ॥

इतिवेरीनिवासकरविदत्तविरचितनिघंटरत्नाकर
भाषायांअरुचिप्रकरणम् ॥

छर्दिकर्मविपाक ॥ जोमनुष्य ब्राह्मणोंको केश, कीड़, काक, कुत्ता इन्होंसे दूषित अन्न से भोजन करावै वह दूसरे जन्समें छर्दिको प्राप्तहोवै ॥ ज्योतिषशास्त्राभिप्राय ॥ जिस के जन्मकाल में षष्ठ स्थान में चन्द्रमा व शुक्र हो अथवा छठास्थान पै इन्होंकी दृष्टि होवै वह छर्दिवाला अथवा तृषावाला हो अथवा छठे स्थानपै बुध हो और क्षीण चन्द्रमाकी दृष्टि हो तो छर्दि वा तृषा रोगी होवै ॥ प्रायश्चित्त ॥ इन ग्रहों की शांतिके वास्ते पूर्वोक्त जपादिक करावै ॥ छर्दिनिदान ॥ बहुत चिकनी वस्तुके खानेसे भयसे और अजीर्ण से और आमके दोष से और प्यास लगनेसे दुर्गंधि देखे से सुगली वस्तु के खानेसे पेटमें कीड़े पड़नेसे खेदकरनेसे स्त्री के गर्भरहनेसे अतिशीघ्र भोजन करने से वायु पित्त कफ दुष्टहोय अंगों को पीडा करि मुख के द्वारा खाया पीयाको कढ़ायदे है इसको मनुष्य छर्दि कहतेहैं वह ५ प्रकारकीहैं वातकी १ पित्तकी २ कफकी ३ सन्निपात की ४ सुगली वस्तु आदि खाके दवाकी ५ ॥ पूर्वरूप ॥ हियासूखै और मुंहसे पानी पड़ै और डकार नहीं आवै मुंह कड़ुवाहोय अन्न पान ऊपर रुचि जातीरहै तब जानिये वमनहोगी ॥ वायुकी छर्दिकालक्षण ॥ हिया और पसवाड़ा में पीड़ाहो मुंहमें शोषहो मथवाय होय नाभि दूखै खांसी और स्वरभेद होय डकार का शब्द ऊंचा होय वमन में झाग आवै और वमन का रंगकालाहोय व कसायला हो बहुत वमन से वेगसे वमनथोड़ा होय दुःखबहुतपावै ये लक्षणवायुकी छर्दि के जानिये ॥ सैंधवयोग ॥ घृत में सेंधानोन को मिलाय पीने से बातकी छर्दिजावै ॥ लवणत्रययोग ॥ दूधपानी को मिलाय सेंधानोन, खारीनोन, कालानोन इन्होंको घालिपीने से अथवा सांभरनोन घालिपीनेसे बातकी छर्दि जावै ॥धान्याकयूष॥ धनियां, शुंठि, दशमूल इन्होंकाकाढ़ा अथवा रस अथवा यूष इसके पीनेसेबातकी अरुचिजावै अथवा शंखाहोलीके रसमें शहद व मिरचोंके चूर्णको मिलाय पीनेसे वायुकी छर्दि जावै ॥ पित्तछर्दि लक्षण ॥ मूर्च्छाहो प्यासहो और मुखशोष होय माथो तातोरहै तालुवा और नेत्रगरमहों अंधेरीआवै भौरआवै और गरम हरोलाल कड़ुवा धूम्र-

वर्ण और दाहसहित वमनकरै येलक्षण पित्तकीछर्दिकेहैं॥ तंडुलजल॥ पान वृक्षको चावलोंके पानीसे पीसि पीनेसे अथवा धानकी खीलों को आंवला के रसमें पीसि मिश्री मिलाय खानेसे पित्तकी छर्दि जावे॥ लाजादियूष॥ धानकीखील, मसूर, सत्तू, मूंग इन्होंकी यवागूमें शहद मिलाय पीनेसे पित्तकी छर्दि जावे अथवा सुगन्धित पदार्थ और मीठा कडुवा रस इन्होंका यूष बनाय पीनेसे अथवा माटीका गोला बनाय अथवा लोहेका गोला बनाय अग्निमें तपाय पानीमें बुझाय उस पानीको पीनेसे पित्तकी छर्दि व तृषा जावे॥ परपटादि काढ़ा॥ पित्तपापड़ा के काढ़ाको ठंढाकर शहद मिलाय पीनेसे पित्त की छर्दि को व शिरके तापको व नेत्रोंकी दाह को हरे॥ मक्षिकाविड्वलेह॥ खांड़, चन्दन, शहद इन्हों में माखी की बीट को मिलाय पीनेसे उपद्रव सहित पित्तकी छर्दि जावे॥ गुडूच्यादिकाढ़ा॥ गिलोय त्रिफला, निंब, परवल इन्होंके काढ़ामें शहद मिलाय पीनेसे पित्तकी छर्दि को हरे॥ लाजशक्तुपान॥ धानकी खीलों को सत्तू में घृत खांड़ शहद मिलाय पीनेसे पित्तकी छर्दिको हरै॥ कफकी छर्दिका लक्षण॥ तंद्रा मुखमीठा होय कफपड़े नींदआवै भोजनमें अरुचिहो शरीर भारीरहै चिकनो मीठोजाड़ो कफजाड़े रोमांचहो और थोड़ीपीड़ाहो ये लक्षण कफकी छर्दिकेहैं॥ सामान्यचिकित्सा॥ कफकी छर्दिमें वमन करावै सिरस, सेंधानोन, मैनफल, निंब, पिपली इन्होंकेकाढ़ासे और चावल, गेहूं, मूंग, सत्तू, मटर, साठीचावल, परवल इन्होंका यूष व भोजन बनाय देवै॥ शालिभक्त॥ लाल साठी चावलोंको गौके दही अरु खांड़ में मिलाय भोजन करनेसे कफकी छर्दि जावे॥ विड़ंगादिचूर्ण॥ बायबिड़ंग, त्रिफला, शुंठि, मिरंच, पीपल इन्होंके चूर्ण में शहद मिलाय चाटनेसे उपद्रव सहित कफकी छर्दि जावे॥ जाम्बवादियोग॥ जामन, बेर, बिजौरा, नागरमोथा इन्होंके चूर्णको शहद में मिलाय चाटने से अथवा काकड़ासींगी धमासा इन्होंको शहद में मिलाय चाटनेसे कफकी छर्दिजाय॥ अथसन्निपातकीछर्दिका लक्षण॥ शूलहोय अन्न पचेनहीं अरुचिहोय दाहहोय प्यासहोय श्वासहोय मोह होय ऐसा रोग घना निरन्तर रहै सालोन खाटो नीलो जाड़ो

गरम लाल वमनकरै तो सन्निपात की छर्दि जानिये ॥ विल्वादिकाढ़ा ॥ बेलपत्रकी छालके काढ़ामें व गिलोयके काढ़ामें शहद मिलाय पीनेसे सन्निपात की छर्दि जावै.व पित्तपापड़ा का काढ़ा पीने से पित्तकी छर्दि जावै ॥ कोलाद्यवलेह ॥ बेरकी गुठलीकी गिरी आंवला की गिरी माखीकी बीट खांड़ शहद पीपली येसब चावलोंके धोवन के पानीमें मिलाके पीनेसे छर्दि को हरै ॥ सुरसापान ॥ तुलसीकेरस में इलायचीका चूर्ण मिलाय पीनेसे सन्निपातकी छर्दि जावै ॥ मनसिलादियोग ॥ मनसिल १ भाग पीपल १ भाग धानकीखील ३ भाग इन्होंको कैथकेरसमें मिलाय शहद घालि पीनेसे छर्दिजावै ॥ अश्वत्थवल्कलादियोग ॥ पीपलकी छालको सुखाय अग्निमें जलाय फिर राख को पानी में मिलाय पीनेसे भयंकर छर्दिभी जावै ॥ लाजादियोगत्रय ॥ धानकीखील, कैथ, शहद, पिपली, मिरच इन्होंकालेह व शहद, हड़, शुंठि, मिरच, पीपल, धनियां, जीरा इन्होंका लेह व हड़ गिलोय, मिरच, शहद, पिपली इन्होंका लेह सवप्रकार की छर्दिको व अरुचिकोहरै ॥ धात्रीफलपान ॥ आमला ४ तोला दाख ४ तोला खांड़४तोला शहद४तोला पानी६४ तोला इन्होंको मिलाय कपड़ासे छानिपीनेसे सन्निपातकी छर्दिजावै ॥ मसूरसत्तू ॥ मसूर सत्तू, शहद इन्होंको अनार के रसमें मिलाइ पीनेसे सन्निपातकी छर्दि जावै ॥ एलादिचूर्ण ॥ इलायची, लौंग, नागकेशर, बेरकीगुठली, धानकीखील कांगनी, नागरमोथा, चन्दन, पिपली इन्होंके चूर्ण में मिश्री शहद मिलाइ पीनेसे सन्निपात की छर्दिजावै ॥ पद्मकादिघृत ॥ पद्माख कैथ, निंब, धनियां, चन्दन इन्हों का काढ़ा व कल्क में ६४ तोला घृतको पकाइ खानेसे छर्दिकोहरै ॥ चन्दनादिपान ॥ चन्दन, कमलकी डांडी, बाला, शुंठि, बासा, शहद इन्होंको चावलोंके धोवनमें पीनेसे छर्दिजावै ॥ उदीच्यजल ॥ बाला, गेरू इन्होंको चावलके धोवनसे पीसि शहद मिलाइ चाटनेसे व जावित्री के रसमें पिपली मिरच का चूर्ण व शहद खांड़को मिलाइ पीनेसे चिरकालकी छर्दिजावै ॥ चंदनपान ॥ चन्दन १ तोला आमलाका रस.शहद मिलाइ पीनेसेछर्दि जावै ॥ मुग्दकाढ़ा ॥ भूनीमूंगों का चूर्ण, धानकी खीलों का चूर्ण

शहद, खांड़ इन्हों को मिलाइ पीनेसे छर्दि को व अतीसार को व दाहको व ज्वरकोहरै ॥ कोलमज्जा ॥ वेरकी मींगी, पिपली, मोर के पंखकीराख,खांड़,शहद इन्होंको मिलाइ चाटने से हिचकी को व छर्दिको हरे ॥ बीजपूरादिपुटपाक ॥बिजौराकेपत्ते, आंवकेपत्ते,जामनकेपत्ते और इन तीनोंकी जड़ इन्होंको पुटपाककी विधिसेपकाइ रस निचोड़ि शहद मिलाइ चाटने से सबप्रकार की छर्दि जावै ॥ हरीतकी चूर्ण ॥ हड़के चूर्णमें शहद मिलाइ चाटनेसे छर्दि जावै ॥ माटी के गोला को लोहासे मढ़ितपाइ पानी में बुझाइ पानी पीनेसे छर्दि जावै ॥ जंवाम्रपल्लवरस ॥ जामनके पत्ते, आंबके पत्ते, वाला वड़कापारंवा व पान इन्हों के काढ़ाको ठंढाकरि शहद मिलाइ पीने से छर्दि को व अतीसारको व मूर्च्छाको व तृषाको हरै ॥ हिंग्वादि पान ॥ छोटिसारिवाकी जड़के काढ़ा में हिंगमिलाइ पीने से सब प्रकार की छर्दि जावै व जायफल को खाने से छर्दि व शोष व जागणा इन्होंको हरै ॥ उग्रगंधादियोग ॥ बचको कांजी के संग पीने से छर्दि जावै ॥ सामान्य चिकित्सा ॥ आमाशय में ग्लानिहोने से छर्दि उपजे है इसवास्ते लंघनकरावै वायुकीछर्दिको वर्जिकरि और रेचन देनेसे भी कफपित्तकी छर्दि को नाश होहै। और पहिले वायु की छर्दि में लंघन हितनहींहै परंतु वमनकराइ जुल्लावदेवै ॥ जातिपत्रचूर्ण ॥ जावित्रीके रसमें पिपली, मिरच, खांड़, शहद मिलाइ चाटने से बहुत दिनों की छर्दि जावै ॥ असाध्य छर्दिलक्षण ॥ मल पसीना, मूत्र, पानी इन्होंको प्राप्त करनेवाला वायु नाड़ीके स्रोतों को रोंकि ऊर्ध्वगत होहै और उत्पन्न वातादिदोषों के संचयको मनुष्यके कोठासेउठाइ और विष्ठा मूत्रकेसमान गंधवाला और श्वास खांसीयुत ऐसा छर्दनकरै बहुत वेग से इस असाध्य छर्दि से संयुक्त जल्दी मरै ॥ आगंतुकछर्दिलक्षण ॥ बात पित्त कफकी छर्दि कहचुके हैं और भयादि से उपजी छर्दि को भी कहचुके परंतु कृमि से उपजी छर्दिमें शूलहो और मुंहसे लार बहुत पड़े और कृमिरोग और हृद्रोग युत होयहै। और क्षीण मनुष्यकी छर्दि ज्यादा वेगवाली और उपद्रवों सहित और लोहू राध से संयुक्त हो और व-

मन में चन्द्रिकासी मिली दीखै वह असाध्य होय है और जो छर्दि साध्यहो और उपद्रवों से रहित हो उसकी चिकित्सा करै॥ उपद्रव॥ खांसी, श्वास, ज्वर, हिचकी, तृषा, चिंता, हृद्रोग, तमक ये छर्दि के उपद्रव हैं॥ सामान्यचिकित्सा॥ भय से उपजी छर्दि को भयनाशक पदार्थोंसे हरै और खोटी दुर्गंधसे उपजी छर्दिको सुगंध के पदार्थोंसे जीतै व मनोवांछित पदार्थोंसे जीतै। और अहितपदार्थ से उपजी छर्दिको लंघनसे व वमनसे व हितकारक भोजन से हरै और कीड़ोंसे उपजी छर्दिको कृमिरोग व हृद्रोग के औषधों से जीतै। जैसा दोष देखै तैसी विधिकरै और बहुत दिनोंकी छर्दि में वायुको हरनेवाली क्रियाकरै॥ आम्रास्थिकाढ़ा॥ आंब की गुठली बेल इन्होंके काढ़ामें खांड़ शहद मिलाइ पीनेसे छर्दिको व अतीसार को हरै दृष्टांत जैसे अग्निआहुतीको॥ जम्बूपल्लवादिकाढ़ा॥ जामन के पत्ते, आंबकेपत्ते १०० लेइ ठंढेपानीमें मिलाइ शहद व धानकी खील मिलाइ पीनेसे छर्दिको व अतीसारको हरै॥ मयूरपक्ष भस्मावलेह॥ मोर के पंखकी राख में शहद मिलाइ चाटने से उपद्रव सहित छर्दिको हरै॥ गोण्यादि भस्मयोग॥ पुरानी गोणीकी राख को पानीमें मिलाइ शहदयुत करिपीनेसे छर्दिकोहरै जैसे अग्नि तृणों को तैसे॥पटोलादिघृत॥ परवल, शुंठि इन्हों के कल्कमें ६४ तोला घृतको पकाइ खानेसे कफ पित्तकीछर्दिजावै॥ रंभाकंदयोग॥ केला का काढ़ा व रसमें शहद मिलाइ पीनेसे छर्दि जावै॥ दधित्थरसादिलेह॥ कैथा के रसमें शहद पिपली मिलाइ बारंबार पीने से छर्दि रोग जावै॥ करंजादिलेह॥ करंजके कोमल पत्तोंका, बिजौरा, सेंधा इन्हों का कल्क करि खट्टेरस के संगखाने से छर्दिजावै॥ करंजबीजादियोग॥ करंज के बीजों को कछुक भूनि टुकड़े करि बारम्बार खाने से छर्दिको हरै॥ शंखपुष्पीरसादिपान॥ शंखपुष्पी का रस ८ माशा मिरंच शहद मिलाइ पीने से छर्दि जावै॥ जीरकादिधूम॥ रेशमी पीतांबरमें जीराघालि बत्ती बनाइ धूपदेइ आगके संयोग से यह सबप्रकार की छर्दिको हरै॥ वांति हृद्रस॥ लोहकाचूर्ण, शंख चूर्ण, गंधक, पारा ये समानभागलेइ खरलमें महीनपीसि घीकुवार-

पट्टाके रसमें खरलकरि पीछेधतूराके रसमें खरलकरि पीछे चूका के रसमें खरलकरि गोला बनाइ कपड़माटिदेइ गजपुटमें पकाइ पीछे रसको अजमोद वायविड़ंगके संग ६ रत्तीभर खानेसे कृमिरोगजावै और यह रस शहद पिपलखिार पानी के संग खाने से छर्दि जावै यह वांतिहार मुनिने कहाहै ॥ जातिरसपान ॥ जावित्रीकारस, कैथा कारस, पिपली, मिरच, शहद मिलाइ चाटने से बधीहुई छर्दि भी जावै ॥ यष्ट्यादिपान ॥ मुलहठी, चंदन इन्हों को दूधमें पीसि दूधमें मिलाइ पीनेसे लोहूकी छर्दिजावै ॥ गुडूच्यादिरस ॥ गिलोयको रातिमें भिगोइ प्रभात पानी में पीसि शहद मिलाइ पीने से सन्निपात की छर्दिजावै ॥ पारदादिचूर्ण ॥ पारा, गंधक, कपूर, बेरकीगिरी, लौंग नागरमोथा, कांगनी, धानकीखील, कालाअगर, पिपली, दालचीनी इलायची, तमालपत्र इन्होंके चूर्णको चंदनके काढ़ामें भिगोइ शहद मिरचमिलाइ १ माशाभर खानेसे प्रबलछर्दिभीजावै ॥ जीरकादिरस ॥ जीरा, धनियां, हड़, शुंठि, मिरच, पीपल, शहद इन्हों के संग पारा कीभस्म को मिलाइ खाने से जल्दी छर्दि जावै ॥ वमनामृतयोग ॥ गंधक, कमलाक्ष, मुलहठी, शिलाजीत रुद्राक्ष, सुहागा, हिरनका सींग, चंदन,बंशलोचन, गोरोचन इन्होंको समान भागलेइ बेलकी जड़के काढ़ामें १ पहरतक खरलकरि पीछे ३ रत्तीभर खानेसे नानाप्रकार के अनुपानों के संग सान्निपातकी छर्दि को हरै यह वमनामृत योग कमलाकर वैद्यराजने अपने मुखसे कहा है विरेचन वमन लंघन नहाना शुद्ध खीलों का मांड़ साठी चावल तथा धान मूंग मटर गेहूं ये सब पुराने पथ्य हैं शहद शशामोर तीतरलवा आदि जंगली मृग और पक्षी नानाप्रकारके मनोहर रूपरस, गंध खांड़काजूस, रागखंड कांवलिक, मदिरा, बेतकी कोंपल धनियां नारियल, जंभीरीनींबू, आंवला, आम, बेर, दाख ये सब पकेहुये हड़, अनार, बिजौरा, जायफल; नेत्रबाला, नींब, अड़ूसा, मिश्री, सौंफ नागकेशर हित तथा मनके प्रसन्न करनेवाले भोजन भोजनकेपीछे मुखमें शीतल जलका डालना कस्तूरी चन्दन चन्द्रमा के किरण मनोहरगंध तथा लेप सुगन्धित फूल तथा पीनेकी बस्तु और लेप

मनके अनुकूल रूप गंध रस शब्द और स्पर्श नाभिसे तीनयवके प्रमाण ऊपर दागदेना ये सब्बवमनसे व्याकुलरोगी को पथ्यहैं॥ अथ अपथ्य नासलेना ॥ बस्तिकर्म स्वेदन स्नेहपान फस्त खुलाना दतून पतला अन्न भयवाली वस्तुकी इच्छा भय उद्वेग गरम चिकने अयोग्य अहित और चिकने अन्न केला सेमि तोरि महुआ मजीठ इलायची सरसों देवदाली कसरत अहित तथा दुष्टजलकापीना इन सबोंको छर्दिरोगमें सावधानीसे त्यागकरै॥

इतिवेरीनिवासिरविदत्तविरचितनिघंटरत्नाकर
भाषायांछर्दिप्रकरणम्॥

तृषाकर्मविपाक॥ जो मार्ग में गौ व ब्राह्मणों को पानी न प्यावै वह तृषारोगी होवै॥ प्रायश्चित्त॥ पक्की खीर बनाय ब्राह्मणों को जेवांय पानी से भरे कलशों का दान देने से तृषा शान्ति होवै॥ तृष्णानिदान॥ भयसों खेदसों बलके नाशसों बँधो जो पित्त सो वायुसे मिल तालुवामें प्राप्तहोय तीसके रोगको उत्पन्नकरैहै॥ तृषास्वरूप॥ निरन्तर पानी पीतोजाय और तृप्ति होवैनहीं फेर पानी पीने की इच्छाहीबनीरहै और पानीमेंही मनरहै यह तीसका स्वरूपहै॥ तृषा संप्राप्ति॥ वातादि दोषोंसे जल के बहनेवाली नसें रुकी ७ प्रकार की तीसको पैदाकरैहैं वायुकी १ पित्तकी २ कफकी ३ शस्त्रादिक्षत की ४ क्षयकी ५ आमकी ६ भोजनकरवाकी ७ इन्होंके लक्षण क्रम से कहे हैं॥ वातजतृषालक्षण॥ मुंह उतरजाय कनपटी और शिर में पीड़ा हो आवे नसें रुकजावैं मुखमें से रसका स्वाद जाता रहै ठण्ढा पानीपीनेसे तीसबधै तब जानिये वायुकी तीसहै॥ पूर्वरूप॥ तालु, ओठ, कण्ठ इन्होंमें शूल व दाहहो और सन्ताप, मोह, भ्रम प्रलाप ये तृषाके पूर्वरूपहैं॥ वाततृषाचिकित्सा॥ वातनाशक और हलके अन्नपान और शीतल और जीवनीयगण में व दूधमें सिद्ध किया घृत ये हित हैं॥ दूसराप्रकार॥ सोना व चांदी के बुझा पानी को पीने से बालकी तृषा जावै॥ तेल॥ सुगन्धित तेल को शिर में

और सब अंगों में मालिश करने से तीसजावै॥ पानी ॥ वालूरेतको गरमकरि पानीमें बुझाय छानि कछुकगरम पीनेसे व पानीमें शहद खांड़मिलाय पीने से तीसजावै ॥ पित्तकी तृषालक्षण ॥ मूर्च्छा होय भोजन प्यारालगै नहीं दाहहो नेत्रलाल मुखमें घृणाशोषहोय ठंढा सुहावै मुंहकड़ुआहोय शरीरमें ताप रहै मल मूत्र नेत्र पीलाहोय ये लक्षण पित्तकी तीसके हैं ॥ चिकित्सा ॥ इसतीस में पकेगूलर के फलके रसमें मिश्री मिलायपीवै और स्वाद, कडुआ, पतला, ठंढा ये पित्त की तृषाकोहरै हैं पानी में धानकी खीलका चूनमिलाय धूप में धरि पीनेसे पित्तकी तीसजावै ॥ तंडुलोदकपान ॥ भोजन जीर्ण हुये बाद तीसलगे तो चावलों के धोवन में शहद मिलाय पीवै ॥ मधूकादिफांट ॥ मौहाकेफूल, गंभारी, चन्दन, वाला, धनियां, मुनक्का इन्होंके फांटबनाय ठंढाकरि खांड़मिलाय पीने से तृषाको व पित्त को व दाहको व मूर्च्छाको व भ्रमको हरै इसमें संशय नहीं ॥ कफ कीतृषाकालक्षण ॥ जठराग्नि कफरोकै तब अग्निकी गरमी जल के वहनेवाली नसोंको सुखाइ कफकी तीसको उपजावै है तब वह तीसकरि मनुष्य पीड़ितहो शरीरमें भारीतपनि प्राप्तहोय है और उस का मुँह मीठारहै और शरीर सूखताजाय ये कफकी तीसके लक्षण हैं॥सामान्यचिकित्सा॥ कडुआ,पतला,कछुकगरम,ऐसेअन्न,पान,औषध कफकीतीसको नाशैहैं ॥विल्वादिकाढ़ा॥ बेलफल,तूरी, धवकेफूल शुंठि,मिरच,पीपल,चाव,चीता, डाभजड़,तिलकांड इन्होंकाकाढ़ादेइ वमन कराय व निंबका काढ़ादेइ वमनकरावै॥ कफतृषाप्रयोग ॥ कफ की छर्दिमेंकहे औषध कफकी तीसमेंबरत्ते और स्तंभ, अरुचि, अजीर्ण, आलस्य, छर्दि इन्होंसे मिली कफकी छर्दिहो तो शहद दही मिलाय पीछे पानी में नोनमिलाय पानकरि वमनलेवै पीछे अनार निंबु, कोकंव, विजौरा इन्होंकाकाढ़ा व खट्टेपदार्थ देवै व दूधमें खांड़ शहद मिलाय पीवै ॥ क्षतजतृषालक्षण ॥ शस्त्रादिक के लागे सों शरीरका लोहू निकलताहोय तासों पीड़ाहोय तीस बहुतलगै यह चौथी तृषा है ॥ क्षतजतृषाचिकित्सा ॥ इसमें क्षतको दूर करनेवाले और तृषाको हरनेवाले औषधोंके रसको पिवाय लोहूको बंधकरै॥

क्षयजतृषालक्षण ॥ रसके नाशहोने से दिनमें औ राति में पानी को पीवै औ सुखको प्राप्त न होवै और कोई कोई वैद्य ऐसी तीस को सन्निपात से उपजी कहैंहैं। और हियादूखै कंपहोय मुखसूखै शरीर में शून्यताहो प्यास बहुतलागै पीवता धायेनहीं ये लक्षण क्षयकी तीसके हैं ॥ चिकित्सा ॥ क्षयकी तृषाको दूधपानी से व मांसके रससे व मुलहठी के काढ़ासे दूरकरै ॥ आमजतीसलक्षण ॥ तीनों दोषों के लक्षणहों और हृदयमें शूलहो वमनकरै और शरीर माड़ाहो ये लक्षण आमकी तीसके हैं। वेलफल बच इन्हों से युत दीपने काढ़ाको पिवाय आमकी तीसको जीतै व भारी अन्नखाने से उपजी तीसको लेखन कर्मसेजीतै और क्षतकी तीसमें लेखनकर्म नकरै ॥ अन्नजातृषालक्षण ॥ बहुत चीकनो खाटो सलोनो भारीअन्न खायेहोय तबजल्दी तीसलगै इसेअन्नकी तीसकहैं हैं ॥ चिकित्सा ॥ सचिक्कण भोजन खानेसे तृषा उपजैतो गुड़के शरबतसे शांतकरै और दुर्बलमनुष्योंकी तीसको बालाका काढ़ादेइ शांतकरै ॥ उपद्रव व असाध्य लक्षण तृषा ॥ माड़ास्वरहो मोह हो माड़ा मुँह उतरा रहै हृदय कंठ तालुआ ये सूखेरहैं ये उपद्रवयुत तृषाहोतो कष्टरूपहै व ज्वर, मोह, क्षय, श्वास खांसी इन उपद्रवों युत तीसहो तो असाध्य जानो व शरीरमाड़ाहो और छर्दिहोवै घोर उपद्रवों युत तीसहोय तो अवश्य रोगी मरै ॥ जलपाननियम ॥ हितकारक अन्न पान औषध देइ तीसको नाशै और इसको शांतकरै बाद अन्यब्याधिभी चिकित्सा करने योग्य है तीसवाला मोहको प्राप्तहो और मोहवाला प्राणों को त्यागै इसवास्ते सब अवस्थाओं में पानीको बंधनकरै पीने से अन्न के बिनाभी मनुष्य बहुत दिन जीवैहै और पानी के बिना तत्काल मरजायहै ॥ गंडूष ॥ परवलजड़, अदरख, तुरी, मुलेठी, चिकनीसुपारी, तहानवेल काकंद, खैर इन्होंके काढ़ाको ठंढाकरि कुरलेकरनेसे दारुणगलशोष जावै गंडूष, चन्दन, पद्माख, नागरमोथा, धनियां, निंबकीछाल, कोहला खैरसार, दूब सफ़ेद धतूरा इन्होंका अष्टमांश काढ़ाकरि ठंढाकरिकुरले करनेसे कंठके शोषकोहरै ॥ लेप ॥ बाला, सफ़ेदचन्दन, कमलकेशर कालाबाला इन्होंकालेप माथेपर करनेसे तृषारोगजावै ॥ चूर्ण ॥ पि-

पत्री, जीरा, खांड़, नागकेशर, अनार इन्होंको शहद में मिलाइ खानेसे तीसरोग जावै ॥ कुष्ठादिचूर्ण ॥ कूटका, सांत्रिंदीकीजड़, मुलेठी इन्होंकोपानीमेंपीसि खानेसे बहुतदिनों की तीसजावै॥ चूर्ण॥ डाभकी जड़, कूट, लाख, मुलेठी इन्होंके चूर्णको गरम पानी के संग खानेसे शोक संतापकी तीस मिटै॥ वटादिलेह॥ बड़का पान हड़, पिपली, मुलेठी इन्होंकेलेहमें शहदमिलाइ चाटनेसे तीसरोग जावै ॥ दूसराप्रकार ॥ बड़कापारंवा, खांड़, लोध अनार, मुलेठी शहद इन्होंको चावलोंके धोवनके संग खानेसे तीसजावै ॥अवलेह॥ सेरका आधसेर पानी रहै तब धानकी खील, शहद, बंशलोचन मिलाइ पीवै व दाख खांड़ मिलाइ खाने से तीस रोग मिटै॥ ताम्रादिरस॥ तांबा का भस्म, पारा, हरताल, तूतिया इन्हों को बड़के अंकुर के रसमें खरलकरि इसके लवमात्र खाने से तीसरोगजावें ॥ श्रीखंडयोग ॥ बासी चक्कादही २ सेर मिश्री १ सेर घृत ४ तोला शहद ४ तोला मिरच २ तोला शुंठि २ तोला इलायची २ तोला इन्होंको पात्रमें स्त्रीके हाथोंसे मर्दन करि बारीक कपड़ा माहिं छानि पीछे सुन्दर बरतनमें कपूरकी धूपदेइ तिसमें द्रव्यको घाले यह सुरसा शिखरिणी भीमसेन की बनाई और श्रीकृष्ण की खाईहै यह तृषा आदिरोगको हरै ॥आमलक्यादिगुटिका॥ आमला, कमल, कूट, धानकी खील, बड़काअंकुर, शहद इन्होंकीगोली बनाइ खानेसे तृषा को नाशै और मुखशोषको हरै॥ गुटी ॥ खजूर ४ तोला मुनक्का ४ तोला मुलेठी ४ तोला मिश्री ४ तोला पिपरी २ तोला दालचीनी २ तोला तमालपत्र २ तोला इलायची २ तोला इन्होंकी शहदमें बांधि गोलीखानेसे तृषाको व मोहको व रक्तपित्त को हरै है॥ काश्मर्यादिकाढ़ा॥ लघुकाश्मरी, खांड़, चन्दन, बाला पद्माख, मुनक्का, मुलेठी इन्होंकाकाढ़ा पित्तकी तीसको हरै है॥ जीरकादिचूर्ण॥ जीरा, धनियां, अदरख, कालानोन इन्हों को कल्कुक भिगोइ मदिरा अच्छेरस सुगन्धित द्रव्य इन्होंको पीनेसे तृषा को हरै ॥ आम्रादिकाढ़ा ॥ आंबकीछाल, जामन की छाल इन्हों के काढ़ामें शहद मिलाइ पीनेसे सबतरहकी छर्दिको व तीसको हरै॥

द्राक्षादिनस्य ॥ मुनक्का, दाख, ईखकारस, दूध, मुलेठी, शहद, कमल इन्होंका नस्य लेनेसे तृषाको हरै ॥ जीरकादियोग ॥ जीरा, धनियां, मुनक्का, चंदन, कपूर, कमल इन्हों को ठंढे पानीके संग पीनेसे तृषा जावै ॥ कोष्ठादियोग ॥ कूट, धानकीखील, नागरमोथा बड़काअंकुर, मुलेठी, शहद इन्होंकोपीसि गोलीबनाइ मुँहमें रखनेसे तीसको हरै ॥ तप्तलोष्ठादियोग ॥ लोह बालूरेत, खोपरी इन्हों में एक को तपाइ पानीमें बुझाइ पीनेसे व दही गुड़ पीनेसे बमन मिली तीसभी बंधहो ॥ मंथादियोग ॥ मठामें खांड़, सत्तू, बेरकाचूर्ण इन्होंको मिलाइ पीनेसे व तिलकी मीठी कांजीमें मिलाइ सब अंगों पर मालिस करनेसे तृषा रोग जावै और रोगोंके संबन्ध से उपजी तृषा में पानी में धनियां शहद खांड़ मिलाय पीवै व बड़के अंकुर मुलेठी पिपली इन्होंकी शहद में गोली बनाइ खावै तो असाध्य तृषा रोग जावै ॥ रसादिगुटी ॥ पारा चांदी इन्होंको मिलाइ गोली बनाइ मुहँमें रखनेसे तृषाको हरै जैसे पापोंको गंगाकाजल ॥ रसादि चूर्ण ॥ पारा १ भाग गंधक २ भाग कपूर ३ भाग शिलाजीत ४ भाग बाला ५ भाग मिरच ६ भाग खांड़ सात भाग इन्हों का बारीक चूर्णकरि प्रभात में ३ रत्तीभर खानेसे तृषाको हरै इस पै अनुपान बासी जलका है यह अश्विनीकुमारों का कहा है ॥ लेप ॥ लालचंदन, चंदन, बाला, कालाबाला, कमल ये समानभाग लेइ पानीमें पीसि मस्तकपर लेपकरनेसे तृषारोग जावै संशयनहीं है ॥ गुटी ॥ नीलाकमल, नागरमोथा, शहद, धानकीखील, बड़का अंकुर इन्होंकी गोली बनाइ मुहँमें रखने से तृषाको हरै जैसे संन्यासी की परमार्थ चिंता मृत्युको निवारण करे तैसे ॥ उपसर्गतृषासामान्य विधि ॥ जो पेटमें मलहो और ज्यादह प्यासलगै तो पानी में पिपलीका चूर्ण मिलाइ पिलाइ बमन कराइ पीछे वायु का अनुलोमन कारक अनार, आंब, बिजोरा इन्हों को देवै ॥ मीठसंजीवनीयगण ॥ शीतल पदार्थ, कटुकी इन्हों का काढ़ामें दूध शहद मिलाइ पीने से व व्यंजन से व सेक से तृषा जावै और इस नुसखामें पीने के वक्त खांड़ शहद मिलाइ पीवै ॥ कसेर्वादिकाढ़ा ॥ कचूर, सिंघाड़ा, कमलाक्ष

कमल का बीज इन्होंको इस के रस में काढ़ाकर मिश्री मिलाइ पीने से चोटलगी की तीस व पित्त की तीस मिटै शहद व पानी दोनुओं को मिलाय कंठ पर्यंत पीवै पीछे आगलिमुखमदे के छर्दि करने से तीस रोग जावे ॥ क्षुद्रादिगंडूप ॥ आंबकी जड़ जामनकी जड़ इन्हीं के काढ़ा को शीतल कर शहद मिलाइ पीने से व पानी शहद मिलाइ पीने से कुरला करै तो तीसरोग मिटै और दूध इसका रस सुनक्का शहद सेंधानोन गुड़ अवलि इन्होंको मिलाइ कुरले करने से तालु का शोष व तृषारोग जावे ॥ लेप ॥ अनार, दही, कइथा लोध्र,बिदारीकंद,बिजोरा, कमलकेशर,आमला इन्होंको कांजीमेंपीसमस्तकपर लेप करने से तृषारोगमिटै ॥ दूसराप्रकार॥ अनार, बेर लोध,कइथा,बिजोरा इन्होंको पीस मस्तकपर लेप करनेसे तृषा व दाह जावे पारातेज तृष्णा बकराके मांसकेरसमें घृत खांड़ शहदमिलाइ पीनेसे भयंकर दाह को व मूर्च्छाको व छर्दिको व मदात्ययरोगको नाशै शोधन वमन नींद न्हाना कवलका धारण दीपकमें जलाई हल्दीसे जीभके नीचेकी दो नसों का दागन पेपा अर्थात् सोथोंसमेत मांड़े बिलेपी खीलों के सत्तू भात का मांड़ मरुदेशके मांस का रस शक्कर राबा खांड़ व भूंजे हुये मूंग मसूर तथा चनों का बना हुआ जूस केले का फूल, तेल, कूर्च, पित्तपापड़े के पत्ते, कैथ, बेर, अमिली, कुम्हड़ा पोईशाक, छुहारा, अनार, आमला, ककड़ी, खस, जंभीरीनींबू, करौंदा, बिजौरा गौ का दूध, महुआफल, हाऊबेर, चपरा और मीठी बस्तु बालतालका यानी शतावरी नागकेशर इलायची जायफल हड़ धनियां चंदन कपूर घिसाहुआ चंदन चांदनी शीतल पवन चंदन से गीली प्रियाका आलिंगन रत्नोंसे जड़ेहुये गहनोंकापहरना पाले का लेप ये सब प्यास के रोग में पथ्य हैं ॥ अपथ्यलेहअंजन ॥ धुवांका पीना कसरत करना नासलेना आम दतून भारी अन्न खटाई नोन कसायला और कडुआरस स्त्रीसंग बुराजल तीक्ष्ण बस्तु जोअपना भलाचाहै तो प्यास का रोकना इन सबों का कभी सेवन न करै ॥

इतिबेरीनिवासकरविदत्तविरचितनिघण्टरत्नाकरभाषायां तृषारोगप्रकरणम् ॥

मूर्च्छाभ्रमनिद्रासंन्यास ॥ क्षीण मनुष्यके बहुत कुपथ्य करनेवाले के मलमूत्रके रोकने से चोट के लगनेसे पुरुष की बाहर इंद्री जो नेत्र कान आदिले उनमें वायु पित्त कफ घुसकरि संज्ञा बहने वाली जो नसें तिन्हें वह वायुपित्त कफरोक अंधकार ततकाल प्राप्तहोइ मनुष्य को काष्ठकी भांति ऊपर डालिदे सो उसे सुखदुःखकाज्ञानरहे नहीं तिसको मोह मूच्छी कहे हैं वह मूर्च्छा ६ प्रकार की है वायु की १ पित्तकी २ कफकी३ लोहूकी४ मद्यकी५ विषकी६॥ संप्राप्ति॥ कुपथ्य को सेवा वालों और हीन है पराक्रम जिस का और क्षीण और मद्यादिक पीनेवाले के ऐसे पुरुष के अज्ञान होतजोतमोगुण पित्तसो बढ़िकर ज्ञानरूप जो सतोगुण और रजोगुणतिसे आच्छा-दनकरि दशों इंद्रियोंके स्थानविषे वायु पित्तकफहै सो इन्होंकोबहने वाली जो नसें तिन्हें आच्छादन करि वह सुखदुःख का नाश को हरवावाला अज्ञान सो हेतु जो तमोगुण से बढ़ वेगकर मनुष्य को पृथिवीपर काष्ठकीसी भांतिनाखदे है वाको वैद्य मूर्च्छा कहे हैं॥ पूर्व रूप॥ हियादूखे जँभाई आवे मनमें ग्लानिहोइ संज्ञा घटजाइ तब जानिये इसपुरुषके मूर्च्छाका रोगहोगा॥ वायुकीमूर्च्छालक्षण॥ काला व लाल जाको दीखे पाछे अन्धकारमें प्रवेशहोइकर ज्ञानहोइ पीछे शरीरकांपे अंगमें फूटनीहोइ हियोदूखै शरीरकृशहोजाय लालकाली छायादीखै ये लक्षण जिसकेहों तिसके वायुकीमूर्च्छा जानिये॥ पित्त कीमूर्च्छालक्षण॥ आकाश जिसे लालपीला हरादीखे पाछे मूर्च्छाहो-य पसीनाआवै तब ज्ञानहोइ तब प्यासलगै शरीरमें सन्तापहो और लाल पीले जाके नेत्रहों मुखमें से टूटा अक्षर निकले शुद्ध निकले नहीं और पतला मलउतरै शरीरकी क्रांति पीलीहोजाइ तब पित्त की मूर्च्छाजानिये॥ अथ कफकीमूर्च्छाका लक्षण॥ मेघकी घटानेलिये आकाश जीने दीखे पाछे उसे मूर्च्छा आवे देर में ज्ञानहोय और जाड़े पसीनेसे व्याप्तहोय और लाल जिसमें बहुतपड़े तो वो कडुआ गरम थूके तो कफकी मूर्च्छा जानिये और सर्व लक्षणमिलें तो स-न्निपातकी मूर्च्छा जानिये यह मूर्च्छा मृगी की तुल्य है सूंगली वस्तु देख्याही बिन आवे॥ लोहूकी मूर्च्छाको लक्षण॥ मनुष्यके लोहूकी

गंध आय पृथ्वी और आकाश अंधकाररूप दीखे और सर्वत्र लोहू की बास आवे निश्चल दृष्टि होय श्वास अच्छी तरह आवे नहीं पाछे मूर्च्छा होय तब लोहूकी मूर्च्छा जानिये इसी तरह चम्पा के फूलों आदि सूंघने से मूर्च्छा होय यह इसको स्वभाव है॥ मद्यकी मूर्च्छाकोलक्षण॥ बहुत मद्य पीवे मनुष्य बहुत बके और सोजाय पाछे संज्ञा जाती रहै और पृथ्वी पर हाथ पटके तब तक शरीर में मद्यका अमल रहै शरीर कांपे बहुत सोवै प्यास घनी लागे यह लक्षण मद्यकी मूर्च्छा को जानिये॥ विषकी मूर्च्छाको लक्षण॥ विष खायो होय तिसका शरीर कांपे और नींद बहुत आवे संज्ञा जाती रहै मुख कालो पड़जाय अतीसारहोय भोजनमें रुचि जातीरहै ये लक्षण विषकी मूर्च्छाके जानिये तमोगुण और पित्त की अधिकता सों मूर्च्छाहोय॥ अथभ्रमको लक्षण॥ रजोगुण और बायु पित्त मिले तब भ्रमहोयहै॥ तन्द्राके लक्षण तमोगुण और बायुकफ मिलै तन्द्रा नाम आधे नेत्र खुलेरहैं॥ निद्राकालक्षण॥ तमोगुण अरु कफमिले तब मनुष्य को मन खेदको प्राप्त होय और दशों इन्द्री भी खेदको प्राप्त और वह अपने विषको ग्रहणकरै नहीं तब पुरुष सोवै॥ अथ संन्यासको लक्षण॥ हियो में रहता जो बायुपित्त कफ यह दोष तो बाणी देह मनको चेष्टा को ग्रहण करै। निर्मल पुरुष को काष्ठ की भांति मूर्च्छित करै है तिन्हें संन्यास कहिये और संन्यास औषधों बिना शान्त होवे नहीं ऐसे जानो॥ मूर्च्छाभेद॥ मूर्च्छा १ मोह २ सहजा ३ और आगंतुक भेदसे विषकी १ मदिराकी २ लोहूकी ३ और सहजा मूर्च्छा में पित्त प्रधानहोयहै और बातादि दोष भेद से ३ प्रकार की और दो दोषोंसे द्वंद्वजा और सब दोषोंसे सन्निपातजा होयहै॥ चिकित्साक्रम॥ पानीकेछिड़के रत्नोंकाधारण मणियों के हार का पहिरना ठंढा लेप बीजनाकी पवन शीतल बरफ आदिका पीना और सुगंधि वस्तु ये सब मूर्च्छा को हरैहैं॥ दुरालभादिकाढ़ा॥ धमासा के काढ़ामें घृत को मिलाइ पीने से भ्रमकी शांतिहो जैसे गोविंदके चरणारविंदों के स्मरण से पाप॥ पंचमूलादि काढ़ा॥ पंच-मूलकाकाढ़ामें शहदमिश्री मिलाइ पीनेसे मूर्च्छा जावै व ज्वरना-

शाक काढ़ा के पीने से भी मूर्च्छा जावे और दोषों को देखि पीवै ॥ क्षुद्रादिकाढ़ा ॥ कटैली गिलोय पिपलामूल शुंठि वायवर्णा इन्हों का काढ़ा पीनेसे मूर्च्छा जावै ॥ द्राक्षादिकाढ़ा ॥ दाख खांड़ अनार लज्जावंती लालकमल नीलाकमल इन्होंके काढ़ासे व पित्तज्वर में कहे काढ़ों से मूर्च्छा जावै ॥ शास्त्रार्थ ॥ लोहू की मूर्च्छा में ठंढी औषध हितहै और मदिराकी मूर्च्छामें बमनकरि सुखसेसोवै। और विषकी मूर्च्छामें विषनाशक औषध देवै ॥ कोलादियोग ॥ बेरी की गीरी पिपली बाला नागकेसर इन्होंको ठंढापानी से पीसि खाले से व पिपली के चूर्णको शहद में मिलाइ चाटने से मूर्च्छाजावै ॥ त्रिफ-लादि योग ॥ त्रिफला के चूर्ण में शहद मिलाइ राति को चाटने से व अदरख गुड़ प्रभातमें खानेसे मदको व मूर्च्छाको खांसीको व मोह को व कामलाको हरै इस में सातदिन तक पथ्यसे रहै। और शुंठि गिलोय मुनक्का पोकरमूल पिपलामूल इन्होंका काढ़ामें पिपली का चूर्ण मिलाइ पीनेसे मूर्च्छाको व मद को हरै ॥ दुरालभादिकाढ़ा ॥ धमासा के काढ़ामें घृत मिलाइ पीनेसे व अंजन से व पीड़ा देने से धमासे व अवमन से मूर्च्छाजावै ॥ सामान्य ॥ पैरआदिमें सुई से छेदै व दाहदे व पीड़ादेइ नखोंमें व नोहको व बालोंकोतोड़े व दंत से काटै ये सब मूर्च्छा को हरै ॥ आत्मगुप्तादियोग ॥ कुहिली कहे कौंचकी फली शरीर में लगाने से मूर्च्छाजावै ॥ नारिकेलादियोग ॥ नारियल के पानी में सत्तू खांड़ मिलाय पीनेसे पित्त को व कफ को व तृषाको व भ्रमको हरै। और कौंचकी फली कोअंडकोशपै झा-ड़ने से व मिरचकानस्यदेनेसे मूर्च्छामिटै जागै ॥ मृणालाद्यवलेह ॥ ठंढेपानी में कमलकाविसा, पिपली, हड़ इन्होंको पीसि शहद मिला-इ चाटने से व नाककी व मुखकी पवनको बंद करनेसे व स्त्रियों की चूंचीका दूधको पीनेसे मूर्च्छा बंदहोइ ॥ अंजन ॥ शिरसकाबीज, पिप-ली, मिरच, सेंधानोन इन्हों के अंजन से व लहसण मनशिल बच इन्होंका अंजन करनेसे मूर्च्छा जावै ॥ दूसरा प्रकार ॥ शहद सेंधा मनशिल शुंठि इन्होंका अंजनकरनेसे मुर्च्छाकोहरै ॥ सामान्यउपचार ॥ धूमा अंजन नस्य पीड़ा दाह नख लोम काटना दंत से काटना कौं-

च की फली का लगाइना ये सब मूर्च्छाको हरेंहै॥ स्विन्नामलकादिले-
ह॥ स्विन्नआंवला को पीसि दाख शुंठि इन्होंको शहदमेंमिलायचा-
टनेसे मूर्च्छा खांसी श्वासको हरे॥ पथ्यादिघृत॥ हड़के काढ़ामें व आँ-
वला के रसमें घृतको सिद्धकरि खानेसे व कल्याणघृतको खानेसे
मदकी मूर्च्छा को हरे॥ रस॥ पिपली शहद पारा इन्होंको मिलाइ
खाने से व ठंढापानीकी सेंक से मूर्च्छाजावे॥ ताम्रादिचूर्ण॥ लाल
चंदन बाला नागकेसर इन्होंका चूर्ण को शीतल पानीके संग पीने
से मूर्च्छा जावे जैसे वृक्षको इन्द्रका वज्र तैसे॥ शुंठ्यादिगुटी॥
शुंठि ४ तोला पिपली ४ तोला शतावरी ४ तोला हड़ ४ तोला
गुड़ २४ तोला इन्होंकी गोली बनाय खानेसे भ्रमको हरे मूर्च्छापथ्य
जलका छिड़कना न्हाना मणिहार शीतल लेप पंखेकापवन शीतल
तथा सुगंधित पीने की वस्तु फुवारों का घर चन्द्रमा की किरण
धुआं अंजन नासलेना रुधिर निकालना दागना सुई से छेदना
रोमोंका तथा बालोंका नोचना नखों का दबाना जीभका काढ़ना
नाक तथा मुखकी पवन रोकना विरेचन वमन लंघन क्रोध भय
दुखदायी सेज विचित्र मनोहर कथा छाया आकाशका जल सौबार
का धोया घी कोमल तथा तेज वस्तु खीलों का माँड़ पुराने तथा
लालधान पुराना घी मूंग तथा मटर का जूस मरु देशके मांसका
रस राग खांड़ व गौका दूध मिश्री पुराना कोहला परवल सेवल
हड़ अनार नारियल मुहुयेका फूल चौराई तुषोदक हलकेअन्ननदी
आदिके तटका जल कपूर बहुत ऊंचा शब्द अद्भुत बस्तुकादेखना
उत्कट गाना तथा बाजाभूलना शोचना अपना ज्ञान धीर्य्य ये सब
मूर्च्छाके रोगीको पथ्य हैं पान पत्तों का साग दतूनकरना घाम वि-
रुद्ध अन्न स्त्री संग स्वेदन कडुई बस्तु श्वास तथा नींदका रोकना
महामूर्च्छा रोगमें इन सबको त्याग करे॥ मदात्ययरोगकी उत्पत्ती
लक्षण॥ जो गुण विष भक्षण में है सोई गुण मद्य के पीनेमें है बुरी
तरह घनी कुपथ्य के साथ जो पुरुष मद्य पीवे उसके मदात्ययले
आदिले बहुत रोग होय है इस लिये मद्य कुपथ्य से पीना बुरा है
अच्छी तरह पीवे तो अमृतका गुण करे है और बुरी तरह पीवे

तो रोगीने उपजाय विषकी तरह मार डारे है यहां दृष्टांत जैसे मनुष्य अच्छी तरह भोजन करे वाकूं ऊपर और प्रमाण पूर्वक तो अन्न अमृतके तुल्यतुल्य गुण करैहै और शरीरको नीरोगराखे और वही अन्नभोजन पशुकीसी नाई खाय और थोड़े बहुत का ज्ञान न रखकेखाय तो वही भोजन बासीका आदिले अनेक रोगों को उपजावैहै और तत्काल मारैहै ऐसीही मद्य और बिष ये दोनों प्राण के हरताहैं परंतु युक्तिपूर्वक करैतो ये दोनों अमृतके तुल्य गुण करै है और सर्वरोग मात्रको दूरकर सदैव पुरुषको तरुण रक्खै है ॥ अथबिधिसेमद्यपीनेकालक्षण ॥ प्रात समय शौचादिक करके स्नान संध्यासे ब्रत भोजन साथ २ टके भर पीवे । रीती से मथकर और मध्याह्न समय सचिक्कण भोजन साथ ४ टकेभर पीवे और सायंकाल को प्रहरभर रात्रिका भोजनके समय ८टकेभर मद्य पीवे यह मद्य अमृतकासा गुणकरके क्षुधाको अधिक करै है रोगको समीप नहीं आनेदेती और भोजनके साथ प्रसन्न चित्तहोकर पीवे तो जैसा मद्यका गुण कहा है वैसाही करै है सो वह लिखते हैं प्रथम ॥ मदलक्षण ॥ काम बढ़ावे चित्त प्रसन्न रक्खे और तेज बुद्धि पराक्रम सुरत हर्ष सुख भोजन निद्रा इन सबको मद्य बढ़ावै है और अन्यथा पीवे तो मदात्ययको आदिले अनेक रोगों को उत्पन्न करैहै यह ८ तोला मद्य पीनेसे होताहै ॥ मध्यममद लक्षण ॥ बकने लगे स्मरण जातारहै बाणी और शरीरकी चेष्टा बिक्षिप्त कीसी करनेलगे आलस्य आवे नहीं अनकहनेकी बातकहै और काष्ठकी सदृश पड़ारहै यह १६ तोला मद्य पीनेसेहोहै ॥ तृतयिमद लक्षण ॥ अगम्यागमन करै बड़ोंको माने नहीं अभक्ष्या भक्ष्य करै संज्ञा जातीरहैगुप्तबातको प्रकट करके और रोगोंको उपजाकर शरीर को निर्बलताकरैहै यह २४तोला पीनेसे होहै ॥ चतुर्थ मदलक्षण ॥ चौथा मदमें मनुष्यमूढ़हो टूटा काठकी समान पड़ारहै और ज्ञान करके शून्य औ कार्य्याकार्य्य बिभाग रहितहो और मरासरीखा दीखै ऐसामद को त्याग देवै उन्माद की नाईं दृष्टांत जैसे कांटोंवाले बनको बुद्धिमान त्यागै तैसे मद्य से अन्यविकार जो मनुष्य सब कालमें मदिरापीने जावै अरु

अन्नादिक को त्यागै उसके नानाप्रकारके विकारहोवें शरीरका भी विकार होजावै तो आश्चर्य नहीं। और जैसे पिये सो लिखते हैं भोजनकरे पीछे पीये बार बार पीयाहीकरे क्रोधकर पीये भयकर पीये तृषायुक्त होकर पीये खेदयुक्त होकर पीये मलमूत्रकावेगयुक्त होकर पीवै बहुत खटाई के साथ पीये निर्बलता में पीये किसी प्रकारकी गरमीसे पीड़ित होकर पीवे तो उस पुरुषको मदात्यय का आदिले बहुतरोग होते हैं॥ अथवातके मदात्यय का रोगलक्षण॥ हिचकी और सांसहोय मस्तक कांपै पसुली में शूलहोय निद्राआवै बहुत बकै ये लक्षण होयँ तो वात का मदात्यय जानिये॥ अथपित्तके मदात्ययका लक्षण॥ तृषा बहुत लगे दाह और ज्वरहो पसीना मोह अतीसार हो घूमनीआवै शरीर का हरित वर्णहोय तो पित्तके मदात्ययका लक्षण जानिये॥ अथ कफकेमदात्ययकालक्षण॥ वमन और अरुचि होय सलोना खट्टा अच्छालगै तंद्राहोय शरीर भारीरहै ये लक्षणहोयँ तो कफका मदात्यय जानिये और यह सबलक्षण मिलै तो सन्निपात का मदात्यय जानिये॥ अथपरममदकालक्षण॥ पीनस मस्तक दर्द अंगमें पीड़ा शरीर भारी रहै मुखका स्वाद जाता रहै मलमूत्र रुकजाय तंद्रा अरुचि तृषा ये लक्षण हों तो परममद जानिये॥ वातमदात्ययमें सौवर्चलादि॥ मदिरा कालानोन शुंठि मिरच पीपल इन्हों में कछु पानी मिलाय पीने से बायु का मदात्यय रोग जावै॥ सूक्ष्मशृंग्यादि॥ कांजी कालानोन काकड़ाशिंगी शुंठि मिरच पीपल अदरख चीता इन्होंके चूर्णके संग मदिराको पीनेसे बायुका मदात्ययरोग जावै॥ आम्लस्निग्धादि॥ खट्टा चिकना गरम नोन जांगलदेश के मांसका रस पने मदिरा ये सब बायुके मदात्यय को नाशकरै॥ पित्तमदात्यय पर॥ बड़के अंकुरको ठंढेपानीमें पीसिखाइ ऊपर खांड़ पानी युत मदिरा को पीनेसे पित्तका मदात्यय जावै॥ क्षुद्रामलकादिपान॥ छोटा आँवला खजूर फालसा कपूर खांड इन्हों को मिलाय पीनेसे पानात्यय बिकार जावै॥ सामान्य॥ मदिरा में मीठी औषध मिलाय पीनेसे व मदिरा में ईषका रस मिलाय पीने से पित्तका मदात्यय जावै॥ कफमदात्ययसामान्य॥ मदिराको पी

वमन कराय पीछे लंघन व अग्नि दीपन औषध देवै॥ अष्टांगलव-
ण॥ कालानोन जीरा अमली अम्लबेतस दालचीनी इलायची
मिरच इन्होंसे दुगनी खांड़ मिलाय खाने से जठराग्नी को बढ़ावै
और कफकेमदात्यय को हरै और नाड़ियोंके स्रोतोंको शुद्धकरै इस
का नाम लवण अष्टांगहै॥ सुपारीआदि॥ सुपारी के चूर्णकोखाने
व शंखकी रजको व नखके चूर्णको सूंघनेसे व ठंढानदी के पानीको
पीनेसे व ठंढा बीजनाकी पवनसे सुपारीका मदजावै॥ दूसराप्रकार॥
धूमाको नाकमें चढ़ानेसे व मिश्री नोनको खानेसे व अकेली खांड़
को खानेसे सुपारी खानेके मद को हरै॥ कोद्रव धतूर॥ कोहला के
रसमें गुड़को मिलाय पीनेसे कोदूकामदजावै व दूधमें खांडमिलाय
पीनेसे धतूराके मदका नाशहोवै॥ जायफलकादिमदपर॥ नोनीघृत
में खांड़ जावित्री मिलाय खानेसे व नोनीघृत चंदन खांड़कोमिलाय
खानेसे जायफलके मदको नाशै व केलाके पानीको पीनेसे मदिरा
के मदको नाशै व गौके घृतको खानेसे कुचला का मद जावै इन्हों
को जल्दी योजना करै॥ दूसरा प्रकार॥ हड़के चूर्ण को खाने से व
ठंढा जलमेंन्हानेसे व दही में खांड़ मिलाय पीनेसे जायफल के
मदको नाशै॥ कज्जलीरस॥ आँवला के रसमें पारा गंधक के काज-
लि और मिश्री को मिलाय पीनेसे मदात्यय को नाशै जैसे गरुड़
सर्प्पों को॥ सामान्य॥ ये सब दोषोंको मदात्ययमें सबही कर्म करै
इनहीं कर्मों से मदात्यय शांत होहै॥ पानाजीर्णलक्षण॥ अत्यंत
अफारा बमन दाह अजीर्ण ये लक्षण होयँतो पानाजीर्ण जानिये॥
अथ पान बिभ्रमका लक्षण॥ हृदय दूषै अंगों में पीड़ा कफ थूकै
मुखसे धुआं निकले मूर्च्छा ज्वर बमन मस्तक में दर्द मिठाई
और मद्यमें अरुचि ये लक्षण होयँ तो पानबिभ्रम जानिये॥ अथ
मदात्ययका असाध्य लक्षण॥ नीचे का ओष्ठ लटका जाय शरीर ऊप-
रसे ठंढा लगै भीतर दाहहोय मुखमें तेलकी बास आवै जीभ ओष्ठ
दांत कालेहोयँ और नेत्र नीले पीले लाल होजायँ हुचकी ज्वर बमन
पसुलीमें शूल खांसी घुमनी ये लक्षणहोयँ तो मदात्ययअसाध्य जा-
नियेे॥ पानोपद्रव॥ हिचकी १ ज्वर २ कम्प ३ बमन ४ पसुलीशूल ५

खांसी ६ भ्रम ७ इन उपद्रवों सहित पानात्ययवाला निश्चयमरै॥ मथित तेल॥ गौके दहीमें तेलको मथि कपूर मिलाय पीने से पानात्ययको नाशै॥ मद्योपशम॥ मदिरा पीइ ऊपर खांड़ घृत को मिलाय खानेसे नशीली दारूकाभी मद नाशहोय॥ कृष्णादिपना॥ पिपली धनियां फालसा देवदारु इलायची जीरा नागकेशर मिरच खांड़ मुलेठी कैथकारस इन्होंका पना बनाये कपूरकी प्रतिवास देइपीने से मदात्ययों को हरै और रुचिको उपजाय जठराग्नीको दीपनकरै और हृदयमें आनन्दकरै॥ त्रिफलादिपान॥ त्रिफला को शहदमें मिलाय रातिको खाय प्रभात में गुड़ अदरख को खाने से मदको व मूर्च्छाको व कामलाको व उन्मादकोहरै॥ दुःस्पर्शादियोग॥ धमासा नागरमोथा इन्होंकाकाढ़ा व नागरमोथा पित्तपापड़ा इन्होंकाकाढ़ा व नागरमोथा का काढ़ा इनतीनों काढ़ोंको पीनेसे मदात्यय को व पिपासा ज्वरकोनाशै॥ चव्यादिचूर्ण॥ चाव कालानोन हिंग विजौरा शुंठि इन्होंके चूर्णको मदिरा के संग पीने से पानात्ययजावै॥ शतावरीपुनर्नवाघृत॥ शतावरी का काढ़ा दूध मुलेठी इन्हों में घृतको पकाय खानेसे व सांठी के रसमें दूधको पकाय पीनेसे मदात्यय रोगजावै॥ माषघृत॥ जायफल १ भाग नागरमोथा २ भाग गिलोय ३ भाग उड़द ४ भाग लेइ इन्होंमें घृत पकाइ खाने से मदिरा की गंधको दूरकरै॥ सामान्यशास्त्रार्थ॥ मनुष्यों के पानात्यय ७ दिन व ८ दिनतकहोयहै इससे उपरान्त पानाजीर्ण होजायहै उसके नाशके अर्थ कफ हरनेवाली विधि करावै॥ खर्जूरादिमंथ॥ खजूर दाख अमली जलबेतस अनार फालसा आँवला इन्होंका मंथ बनाय पीनेसे मदिरा के बिकार को हरै॥ मदात्ययमें पथ्य॥ संशोधन संशमन सोना लंघन श्रम एकवर्ष के पुराने धान सांठी जौ मूंग उड़द गेहूं और मटर रागखांड़ व मृग तीतर लवा बकरा मुरगा मोर शशा इन सबोंका मांस मशाला विचित्र अन्न हृदय के हित मद्य दूध मिश्री चौराई परवर बिजौरा फालसा छुहारा अनार आमला नारियल दाख पुराना घी कपूर नलका तट शीतल पवन फुहारों का घर चन्द्रमा के किरण मणि मित्रका मिलन रेशमकपड़ा प्रिया का

आलिंगन उद्‌व्रत गानाबजाना शीतलजल चन्दन न्हाना मदात्यय रोग में ये सब सेवन करने योग्य हैं। श्वेत अंजन धूमपान नास लेना दतून करना पान खाना ये सब मदात्यय रोग में अपथ्य हैं॥

इतिश्रीबेरीनिवासकरविदत्तविरचितायांनिघण्टरत्नाकरभाषायां मूर्च्छा मदात्ययंप्रकरणम्॥

दाहरोगकर्मविपाक॥ जो मनुष्य अग्निमें थूके तिसको कपिल-नामग्रहग्रहणकरै इससे ज्वरशूल सर्वांगदाह पीलेनेत्रहोवै॥ उपाय॥ रात्रि चौरहा पै जाय धानकी पीठी रुधिर तिल असगंध फूल इन्हों को मिलाय बलिदान करै इस मंत्र से॥ मंत्र॥ गृहीष्वचबलिंचेमंकपिलाख्यमहाग्रहा। आतुरस्यसुखंसिद्धिप्रयच्छत्वंमहाबल॥ इति॥ ज्योतिषशास्त्राभिप्राये॥ जिसके जन्मकालमें लग्नमें मंगलहो और अष्टमस्थानमें सूर्यहो वह दाहज्वर युक्तहो॥ दाहनिदान॥ मद्य पान सम्बन्धी ऊष्मा पित्त व लोहू इन्होंकी वृद्धि होय त्वचा में प्राप्त होय उग्रदाह को उत्पन्न करैहै इसमें पित्तज्वर सरीखे औषध करै॥ सामान्यचिकित्सा॥ ऊंची चूंचियांवाली और मृगाक्षी और बीणा बजाती हुई ऐसी सुकुमारी स्त्रियों का गायन सुनने से दाह मिटै जल्दी। यही रस औषध से उपजा दाहमें भी हितहै। व बड़बेरी पान आमला धान्याम्ल इन्होंसे व कांजीमें वस्त्रको भिगोय शरीर ऊपर ओढ़नेसे व रोहिष तृण चन्दन इन्होंके लेपसे व चन्दन पानी में मिलाय पंखापै छिड़कि ऐसा ताड़रुखका पंखाकी हवाको सेवन से दाह का नाश होवै ऐसे जानो॥ दूसराप्रकार॥ केलाके पत्तों की शय्यापै सोनेसे कमल के पत्तों की शय्या पै सोने से व अंगोंपर ठंढा पानी के सेंकसे व ठंढा पानी में गोतामारि न्हाने से व ठंढापानी के पीने से बीजना की पवनसे दाह व तृषा नाश होवै॥ रक्तजदाहलक्षण॥ सब शरीरमें दाह लगिजाय व सब शरीर में धूमासा निकसै और शरीर की तांबाकीसी आकृतिहोइ और तांबासरीखानेत्रहोय मुखमें लोहूकीसीदुर्गंधि आवै और तृषितरहै और सबअंग अग्नि

की भांति जलें ये लक्षण लोहूके दाहके हैं इसमें औषध पित्तज्वर के समान करै ॥ रसादिगुटी ॥ पारा गंधक कपूर चन्दन कालाबाला नागरमोथा इन्होंकी घृतमें गोली बनाय खानेसे त्रिदोषकी दाहको नाशकरै ॥ चन्द्रकलारस ॥ अभ्रकभस्म सिंगरफ पारा गंधक इन्हों को शहद में १ पहरतक खरलकरि २ वालभर खावै और यह अदरख के रसके संग ज्वरकी दाह को हरै व तातंभातके संग खाने से दाहरोगको हरै ॥ तृष्णानिरोधजदाहलक्षण ॥ प्यासके रोकने से शरीर का जल धातुक्षीणहोय तब शरीर में गरमी बंधे तो शरीर को दग्धकरै तब उसका पित्त मंदहोय उसका गला तालुवा दूखै जीभ बाहिर काढ़ि कांपवालगै ॥ दाहपर ॥ खांड़ कपूर शिलाजीत इन्होंके चूर्णको ठंढा पानीके संगलेनेसे तिसरोधका दाहमिटै जैसे अग्निको जल तैसे ॥ यवादिमंथ ॥ भूने यवोंका सत्तू घृत ठंढा पानी इन्हों का मंथ बनाय खाने से तृषाको व दाहको व पित्तको हरै ॥ मृतसंजीवनीगुटी ॥ मुलेठी लौंग शिलाजीत इलायची इन्हों के चूर्णको नये चावलोंके धोवनकी १००० भावना देइ एकपहरतक खरल करि बेर समान गोली बनाय कालीकपास के रसके संग खाने से तृषाको व दाहको व ज्वरको व मूर्च्छा को व उग्ररोग को व बातपित्तको हरै ये मृतसंजीवनी गोली है पूज्यपाद हकीम ने कहीहै ॥ रक्तपूर्णकोष्ठजदाह ॥ लोहूसे कोठा भर जाय और दाहलगिजायसो असाध्यहै ॥ चिकित्सा ॥ धनियां आमला दाख पित्तपापड़ा इन्होंका हिम रक्तपित्तको व ज्वरको व दाहको व तृषाको व शोषको नाशकरै ॥ दूसराप्रकार ॥ बांसकी छालके काढ़ा को ठंढा करि शहद मिलाय पीनेसे रक्तकोष्ठकी दाहमिटै ॥ दशसारचूर्ण ॥ मुलेठी आंवला वासा दाख इलायची चन्दन बाला मौहा का फूल खजूर अनार ये समानभाग लेइ और सबोंके बराबर मिश्री मिलाय २ तोला रोज़खावै यह दशसारचूर्ण सब पित्तबिकारोंको हरै ॥ धातुक्षयजन्य ॥ धातुक्षयके दाह से मूर्च्छा होइ तीसलागै मुखका स्वर बैठिजाय शरीरकी सामर्थ्यजातीरहै यहअसाध्यहै ॥ खजूरादिचूर्ण ॥ खजूर आमला पिपली शिलाजीत इलायची मुलेठी पाषाणभेद चंदन ककड़ी

बीज धनियां खांड़ इन्होंके चूर्णमें मुलेठी के काढ़ा के संग खाने से अंगदाहको व लिंगदाह को व बवासीर को क्षीणवीर्य्यको व शर्करा-प्रमेहको व पथरीको व शूलकोनाशै औरपुष्टकरै और बलकोबढ़ाय मूत्ररोगको व शुक्ररोग को नाशै इसदाहको इष्ट प्राप्ति से व दूध मांसके रस इत्यादि बिधिकरि जीतै ॥ पित्तदाह ॥ पित्तकी दाहमें पित्तज्वर में कही सब बिधि बरतै। गिलोयके सतमें मिश्री मिलाय खानेसे पित्तकी दाह व ज्वरजावै ॥ क्षतजदाह ॥ शिरसे पेड़ने आदि ले मर्मस्थानमें चोटलागै वासों उपजा जो दाह असाध्यजानिये ॥ चन्दनादिचूर्ण ॥ चन्दन बाला कूट नागरमोथा आमला गठोणा कमल मुलेठी मौहा फूल दाख खजूर इन्होंके चूर्णमें खांड़ मिलाय प्रभातमें ठंढेपानीके संग खानेसे रक्तपित्तको व श्वासको व पित्त-गुल्मको व अंगदाह को व शिरके दाहको व शिरके भ्रमण को व कामलाको व प्रमेहको व पित्तज्वर को हरै यह चन्दनादिचूर्ण पूज्य-पाद वैद्यनेकहाहै ॥ रक्तजदाहावर ॥ हाथकीनसका व रोहिणी शिराको वेधनकरै इससे रक्तकी दाहमिटै॥ चंदनादिकाढ़ा॥ चन्दन पित्तपापड़ा डाभकीजड़ काला नागरमोथा कमल बड़ीसौंफ धनियां पद्माख आम-ला इन्हों का काढ़ा आधाराखि मिश्री शहद मिलाय पीनेसे दारु-णदाहभीजावै ॥ योग ॥ रसऔषध इन्होंसेउपजेदाहमें पानी आमला दाख नारियल ईखरस खांड़ काकड़ी ये हितकारकहैं॥ लाजादि काढ़ा॥ कालाबाला लालचन्दन बाला इन्हों के काढ़ा में खांड़ मिलाय ठंढा करि पीने से दाहको व पित्तज्वरको हरै ॥ ठंढापानी ॥ चन्दन सुगंध पदार्थ इन्हों के काढ़ा से भीजे कपड़े का शरीर पर रखने से दाह मिटै। व पानीमें मौहा के फूल चन्दन कपूर इन्हों को बड़ेमट्टी के बरतनमें घालि स्नान करनेसे दाहमिटै॥ कमलादिपान ॥ कमल का पानी व दूध पानी व खांड़ का शरबत व ईख का रस इन्हों के पीने से दाह शांत होवै ॥कोष्ठपूर्णरक्तदाह ॥ रोगी की नाभि के ऊपर तांबे का व कांसे के पात्र को रखि ऊपर से ठंढे पानी की धारा गिरे इस से कोष्ठ की दाह मिटै ॥ दाहरोगतैल ॥ कुशादिगण शालिपर्णी जीवक ऋषभक इन्होंमें तेलको व घृतको पकाय खानेसे बातपित्तको

हरै॥ तिलतैल॥ तिलकातेल६४तोला लेइ सोलहगुणे कांजीकेपानी में सिद्धकरि बरतने से दाह को व ज्वर को नाशै॥ पुनर्नवादितैल॥ सफेद सांठीकीजड़४००तोला कालीगौंकेदूधमें व घृतमें २५६तोले में खरलकरि तिलकातेल ४०० तोला धूप १६ भाग मिरच८भाग राल ८ भाग कचूर ४ तोला बाला ४ तोला कालावाला ४ तोला मजीठ ४ तोला कैथ ४ तोला चंदन ४ तोला लालचन्दन ४ तोला काला अगर ४ तोला रुद्राक्ष ४ तोला इन्होंको तेलमें घालि पकाय मेहारी काठकी कोमल अग्निसे पकाय तय्यारकरै इस तेलको अंग पै मालिश करनेसे रात्रिमें अंगशूलको व अंगदाह को व नेत्ररोग को व खेहरको व पांडुको व कामलाको व उष्णताको व सूतिकारोगको व सन्निपातको व हाथ पैरोंकी दाहको व तंद्राको व कटिकी बातको व क्षयको व कुष्ठको व खाजको व गजकर्ण को व मस्तकरोगको व भ्रमको व नेत्ररागको व दृष्टिरोग को व जीर्णज्वरको व अस्थिज्वर को व मेहज्वरको हरै इसका मर्दनकरि मंगल स्नान करावै और यह तेल महादेवजीने कहाहै और अश्विनी कुमारों ने प्रगट किया है और पृथिवीमें दुर्लभहै और इसको गुरुमुखसे सिद्धकरै अन्यथा सिद्धहोवेनहीं॥ तंडुलियादिपान॥ चावलोंकीजड़ जीरा पानी धनियां तुलसीका रस इन्होंको मिलाय ४ माशे खानेसे दाहकोहरै। और हल्दी लोध कालावाला बाला धतूराकेपत्ते धानकी खील नागरमोथा पीतचंदन इन्होंका लेप दाहको शांतकरै। और बाला कमल कालावाला चन्दन इन्होंको पानीमें पीसि माटीके बड़े कलशमें पानी में मिलाय न्हानेसे दाहमिटै। बड़बेरीके पत्तोंका रस नींबके पत्तोंका रस सुरामंड दहीका पानी बिजौराकारस ये सब दाहको शांतकरै हैं। जिसमें कमलोंके फूल फूलेहों ऐसी बावड़ी के समीप बसना फुहारा चन्दन से लिप्त अंगवाली स्त्री का आलिंगन ये सब दाह को नाशैं। व रातिमें धनियांको पानीमें भिगोइ प्रभात में मथि मिश्री मिलाय पीने से अंतर्दाहकोहरै जैसे महादेव दुःख को हरें व हजार बेर घृतको पानीमें धोइ शरीरके ऊपर मालिश करने से दाह शांत हो जैसे अन्यस्त्रियों में आसक्तका मनोरथ अपनी स्त्रियोंमें शांतहोय

तैसे। निंबकेपत्ते बाला इन्होंके फेनके लेपनसे मोह दाह तीस ये शांतहों जैसे धनाढ्योंका धन वेश्या के सङ्गसे शांत हो तैसे। व ठंढे पानीके पीनेसों व शीतल औषधसों दाह मिटै। व कपूर चन्दन कस्तूरी इन्होंके लेपसे दाह मिटै व सफ़ेद कमल के लेप से दाह मिटै व फुहारावाले घर में बसने से दाहमिटै व अतिप्रिय उत्साहवाले बालकोंके बोलने व आलिंगनसे दाहमिटै। व बालकोंके मकानमें बसना व सोना व ताड़के पंखाकी पवन और साहित्य शास्त्रयुत बाणी व सुरसक त्रिजनोंकी बाणी ये तीनोंदाह को हरैहैं। व आमला दाखकारस व नारियलके पानीमें खांड़ मिलाय पीना व कुमारी स्त्रियोंका गायन ये दाहको व मूर्च्छाको नाशैहैं॥ दूसराचंद्रकलारस॥ पारा १ तोला तांबाभस्म १ तोला अभ्रक भस्म १ तोला गंधक २ तोले इन्होंकी कजली करै पीछे नागरमोथा अनार दूब केतकी बड़काअंकुर सहदेई कुमारपट्ठा पित्तपापड़ा शीतलचीनी शतावरि इन्होंके रसमें एक एक दिन अलग भावनादेइ पीछे कटुकी पित्तपापड़ा बाला मधुमालती चन्दन सारिवा इन्हों का समान भाग बारीक़ चूर्ण करि मिलाय पूर्वोक्त में पीछे द्राक्षादि काढ़ा में ७ भावना देइ पीछे बरतनमें घालि अन्नके कोठामें गाड़ि काढ़ि चना समान गोली बनाय खावै यह चन्द्रकला रस सब पित्तरोगों को व बातपित्तरोगों को व सबप्रकार की दाहको हरै और बिशेष करि ग्रीष्मऋतुमें और शरदऋतुमें बहुत गुणदेयहै और मंदाग्निको व महादाह ज्वर को व भ्रमको व मूर्च्छा को व स्त्री रक्त को व नकसीर को व अधोरक्तपित्त को व रक्तकी छर्दि को व मूत्रकृच्छ्रको हरै संशय नहीं है॥ मर्माभिघातजदाह॥ मर्मस्थान में चोट लगने से उपजा दाह भी असाध्य होयहै॥ असाध्य लक्षण॥ ठंढेशरीरवालेके सबप्रकारकी दाह असाध्य होयहै इसमें संशय नहीं है॥ दाहरोगमें पथ्य॥ धान सांठी मूंग मसूर चना जौ मरुदेशके मांसकारस खीलों का मांड़ सत्तू मिश्री सौबारका धोया घी दूध दूधसे निकला मक्खन कुम्हड़ा ककड़ी केला कटहर मीठा अनार परवर पित्तपापड़ा दाख आमला फालसा सेमि तुंबी दूधका पेड़ा छुआरा धनियां सौंफ

कामलताल चिरौंजी सिंघाड़ा कसेरू महुआका फूल हाऊबेर हड़ सब चर्फरी वस्तु शीतल लेप पृथ्वी में घर सींचना तेल लगाना गोतामारकेन्हाना कमल वा नील कमलकी तथा रेशम की सेज शीतलबन विचित्र कथा शीतल वस्तु मीठा बोलना खस तथाचंदन का लेप शीतलजल शीतलपवन फुवारोंका घर प्रियाका स्पर्श नदी का तट कपूर चन्द्रके किरण न्हाना घिसाचन्दन मीठा रस ये सब तथा और जो वस्तु पित्तकी नाशक कही हैं वे सब वैद्यों ने दाह में पथ्य कहीहैं दाहवाले मनुष्योंका यह पथ्य कहागयाहै विरुद्ध अन्न पान क्रोध वेगका रोकना हाथी घोड़े की सवारी मार्गमें चलना खारपित्त बढ़ानेवाली वस्तु कसरत करना घाम मट्ठापान शहद हींग स्त्री सङ्ग कडुआ चर्फरा तथा गर्म पदार्थ इन सबोंको दाहका रोगी त्यागकरै ॥

इतिबेरीनिवासकरविदत्तविरचितनिघण्टरत्नाकर
भाषायांदाहप्रकरणम् ॥

उन्मादरोगकर्म्मविपाक ॥ अन्योंको मोहको प्राप्तकरके और आप निंदित बस्तुको भोजन करे वह उन्मादरोगी व वातरोगी होय ॥ प्रायश्चित्त ॥ वहपुरुष कृच्छ्र चांद्रायण व्रतकर सरस्वतीमंत्रको जपै और ब्राह्मणों को भोजनकरावे उन्मादबातादि दोष अपने मार्गको छोड़ मनोबाहिनी धमनीमेंजाय तोचित्तमें भ्रमपैदाकरै इसको मनो- व्याधि व उन्मादकहे हैं ॥ उन्मादकीउत्पत्तिलक्षण ॥ विरुद्ध भोजनसे अपवित्रभोजनसे दुष्टभोजनसे और देवता गुरु ब्राह्मण तपस्वीराजा इनकेतिरस्कारसे और किसीप्रकारकेभय और हर्षसेभी और धतूरा भांग आदिखानेसे मनुष्योंका चित्तबिगड़े है फिर वह बिगड़ाहुआ चित्त बात पित्त कफ इनतीनोंसेमिलकर पुरुषको मदयुक्त करदेयहै अर्थात् मनुष्यकोदहलमेंकरदेते हैं उसकोलौकिकमें हौलदिलीकह- तेहैं वहहौलदिलीबात से १पित्तसे २ कफसे ३ सन्निपातसे ४ मनके दुःखसे ५ विषखानेसे ६ प्रकारसे होतीहै ॥ अथउन्मादकास्वरूप ॥ क्षीण

पुरुषके विरुद्ध भोजन करनेकेपीछे बातपित्त कफदुष्ट होकर बुद्धिको नष्टकरैहैं फिरउसके हृदयमें पीड़ाकरके मनकेचलनेवाली नसोंको मोहितकरैहैं तब मनुष्यका चित्त डामाडोलहोकर थिरनहीं रहता इसकोहोलदिलीकहतेहैं ॥ अथउन्मादकापूर्वरूप ॥ बुद्धि स्थिर रहै नहीं शरीरका पराक्रमजाता रहै चित्तचंचलहो दृष्टि व्याकुलहो धीरज पना जातारहै अवद्ध भाषणकरै हृदय शून्यरहै येलक्षणहोयँ तो जानिये कि पुरुषके उन्मादहोगा ॥ अथबातकेउन्मादकालक्षण ॥ रूखी और ठंढी अधिकबस्तुखाने और अधिक जुलाबलेने और धातुकी क्षीणतासेबात बढ़ै है फिरवह बातहृदय को बिगाड़कर बुद्धि और स्मरण को तत्कालनष्टकरैहै तब मनुष्य बिनाही कारणहँसागावा नाचा अथवाहाथमुखसे बन्दरकीसी चेष्टाकरने लग जाय और रोनेलगजाय शरीर कठोर काला लालपड़ जाय और भोजन पचनेकेपीछे येरोगअधिक बढ़ैं येरोगहोयँ तो बातका उन्माद जानिये ॥ अथपित्तके उन्मादका लक्षण ॥ अजीर्णमें भोजनकरनेसे और कड़ुवाखट्टागरम भोजनखानेसे पित्तबढ़के मनुष्यके हृदयको बिगाड़कर उन्मादको करैहै तब पुरुष किसीकी बातकोमानैनहीं और नङ्गाहोकर सबको मारनेलगजाय और शरीर गरमहोजाय और शीतलवस्तु खानेकी इच्छारहै और शरीर पीलाहोजाय ये लक्षणहोयँ तो पित्तका उन्मादजानिये ॥ अथकफके उन्मादकालक्षण ॥ क्षुधामन्दहोजाय और बहुतखाय कामकरनेमें आलस्यआवै उसकापित्त कफसेमिलकर मर्मस्थानोंकोबन्धावै है तब पुरुषकी बुद्धि और स्मरणकोनाशकरके उसकेचित्तको विखण्डउन्मत्त करैहै तब वह पुरुष कमबोलताहै और क्षुधा जातीरहै स्त्रियां प्यारीलगैं एकान्तस्थान प्यारालगै नींदघनीआवै छर्दिहोय बलजातारहै नखादिक श्वेतहोजायँ येलक्षणहोयँ तो कफका उन्माद जानिये और ये सब लक्षणहोयँ तो सन्निपातका उन्मादजानिये ॥ अथमनकेदुःखके उन्मादकालक्षण ॥ निशिचर के भयसों राजाके भयसों प्रबलशत्रुके भयसों कर्मकेभयसों डरो जो पुरुषतिसके अथवाधन के नाशसों वा पुत्रादिकके नाशसों इन सबवस्तुसों पुरुषके मनमें चोटलागै औघनो मैथुनकरै जीकै तब उसको मन बिगड़ पुरुषको

उन्मादकरदे तब वह मनमेंआवै सोबकै और संज्ञाजातीरहै और गाने लगजाय हँसने लगजाय ये लक्षणहोयँ तो मनमेंदुःखकाउन्मादजानिये ॥ विषखानेके उन्मादका लक्षण ॥ लालनेत्ररहैं शरीरका बल जातारहै सब इन्द्रियोंकी कांती जातीरहै गरीबहोजाय मुंहकाला पड़जाय ये लक्षणहोयँ तो विषखानेका उन्माद जानिये इसउन्मादवाला मरजाय ॥ अथउन्माद मात्रको असाध्यलक्षण ॥ कैतोनीचोमुख राखै कैऊंचोही मुखराखै शरीर का बल मांस जातारहै नींदआवै नहीं जागबोही करै ये लक्षणहोयँ तो वह पुरुषमरजाय इसमें संशयनहीं ऐसे जानो ॥ उन्माद शास्त्रार्थ ॥ काम क्रोध शोक भय हर्ष ईर्षा लोभ इन्होंसे और दोदोओंसे उपजा उन्माद इन्होंकी शांति से शांतहोयहै ॥ सामान्यउपचार ॥ वायुके उन्मादमें स्नेहपान और पित्तके उन्मादमें विरेचन और कफके उन्माद में बमन करावै व वस्तिकर्म करावै ॥ सामान्य चिकित्सा ॥ जो अपस्मार रोग में औषध कहाहै वही दोषदूष्यको सामान्य होने से उन्माद में करै ॥ सामान्य उपचार ॥ स्नेहपानादि क्रमकरि व स्नेह कल्क से व स्नेह की वस्तिसे व निरूहण वस्तिसे व स्वेदनसे व अञ्जन से उन्माद शांत होवै ॥ शास्त्रार्थ ॥ उन्मादवाले को प्रियवचनों से आश्वासन करै और इष्टपदार्थ का नाशसुनावै और अद्भुतकर्म दिखावै और कोलड़ासे ताड़नकरै व उन्मादरोगीको एकांतस्थान में बांधि सर्प दिखाइ डरावै व कडुआतेलमें नहवाइ सीधाभूपमें सुवावै व उन्माद रोगीको कोंचकी फली व तपायेलोह से स्पर्श करावै और गरम पानी व तेलसेस्पर्शकरावै व मुंहमें तपायालोहा देनेका भयदिखावै व निरंतर कूपमेंनिवेशनकरै। व उन्मादवालेको गोमांसकीधूनि देइ काम शोक भय क्रोध हर्ष ईर्षा इन विकारोंको मनसे पैदाकरावै और इन्होंसे प्रसन्नकरै और पानीसे व अग्निसे व वृक्षसे व पर्वत से व बिषमजगाहों से उन्मादवाले की रक्षाकरै नहीं तो प्राणनाश होजायँ तो कछु आश्चर्य नहीं॥ लशुनादिघृत ॥ सुन्दर लहसन २०० तोला दशमूल १०० तोला इन्होंको १०२४तोला पानी में चतुर्थांश काढ़ा रखि घृत ६४ तोला लहसनरस ६४ तोला बड़बेररस ३२

तोला आमलारस ३२ तोला अमलीरस ३२ तोला बिजौरारस ३२ तोला अदरखअर्क३२तोला अनाररस ३२तोला मदिरा ३२तोला मस्तु३२ तोला कांजी३२ तोला त्रिफला २ तोला देवदारु २ तोला नोन२तोला शुंठि मिरच पीपल२तोला अजमोद२तोलाअजमान२ तोला चाव२तोला हींग२तोला अम्लवेतस २ तोला मिलाय घृतको सिद्धकरिखानेसे=शूलको व गुल्मको व बवासीरको व उदररोगको व घावको व पांडुको व प्लीहाको व योनिदोषको व कृमिको व ज्वरको व बातकफरोगको व उन्मादको हरै ॥ चन्दनादितेल ॥ चन्दन बाला नख जवाखार मुलेठी शिलाजीत पद्माख मजीठ सरल देवदारु षट्ठुवला जवाद नागकेशर तमालपत्र लोध सुरा जटामांसी कंकोल गहुला नागरमोथा दाहललेदि हल्दी सारिवा कटुकी लौंग अगर केशरदाल-चीनी पित्तपापड़ा नलिका तेल और चौगुनादहीका पानी लाखका रस इन्होंकोमिलाय तेलको सिद्धकरि मालिशकरनेसे ग्रहको अप-स्मारको उन्मादको कृत्याको दरिद्रताको नाशै और उमर पुष्टि को बढ़ावै व बशीकरणहै ॥ अंजन ॥ शुंठि मिरच पीपल हींग नोन बच कटुकी सिरस करंजबीज सफ़ेद सिरसम इन्होंको गोमूत्रमें खरल करिबत्तीबनाय नेत्रमें व नाकमें देनेसे चातुर्थिकज्वरको व अपस्मार को व उन्मादकोहरै ॥शिरीषादिनस्य॥ सिरसलसूण हींग शुंठि मुलेठी बच कूट इन्होंको बकराके मूतमेंपीसि नस्य व अंजन करने से उ-न्मादजावै ॥ व्योषाद्यंजन ॥ शुंठि मिरच पीपल हल्दी दारुहल्दी मजीठ सफेदसिरसके व कालेसिरसके बीज सफेद सिरसम इन्हों का अंजन व नस्य ग्रहको व अपस्मार को व उन्मादको हरै ॥ धूप ॥ बिंदोलागिर मोरपांख कटैली गंगाजल मैनफल दालचीनी जटा-मांसी बिलायकी बिष्ठा तुसबच मनुष्यकेबाल सांपकी कांचली हा-थीदांत साबरसिंगहींग मिरच ये समानभागलेय धूपकरिखानेसेस्कं-दोन्माद अपस्मार उन्माद पिशाच राक्षस देवसंचार ज्वरजावैं॥ पर्पटी रस ॥पिपली धतूराकेबीज घृत इन्होंमें पर्पटीरसको देनेसे उन्मादजावै शिरीषाद्यंजन ॥ सफ़ेद सिरसम बच हींग करंजवाकीछाल देवदारु मजीठ हड़ बहेड़ा आमला तुरटी कांगनी दालचीनी शुंठि मिरच

पीपल राल शिरीष दारुहल्दी हल्दी इन्हों को वकराके मूत्रमें खरलकरि इसको अंजनमें व स्नानमें नस्यमें व लेपमें वरतनेसे व उबटना लानेमें वरतनेसे अपस्मारको व विषको व उन्मादको व कृत्याको व दुर्दशाको व ज्वरको व भूतबाधाकोहरै और राजद्वारमें वशीकरण है और इन्होंमें घृतको पकाइ गोमूत्र के संग सेवनेसे भी पूर्वोक्त रोगोंको हरै ॥ ब्राह्म्यादिरस ॥ ब्राह्मी कोहला वच शंखाहूली इन्होंके अलग अलग रसोंमें कूट शहद मिलाइ पीनेसे उन्मादको नाशैहै ॥ ब्राह्म्यादिकल्क ॥ ब्राह्मीरस वच कूट शंखाहूली नागकेशर इन्हों का नस्य व अंजन करनेसे उन्मादको व भूतोन्मादको व अपस्मार को हरै ॥ सितकुसुमवलादियोग ॥ सफ़ेद फूलोंकी बाला २॥ तोला लेइ चूर्णकरि दूधमें घालि ऊँगाकी जड़ मिलाइ अच्छीरीतिसे पकाइ ठंढाकरि रोज प्रभातकालमें पीनेसे उन्मादरोग को नाश करै जल्दी ॥ दशमूलादियोग ॥ दशमूलके काढ़ामें घृत मिलाइ व मांसका रस मिलाइ पीनेसे व सफ़ेद सिरसम राईका चूर्णमें घृत मिलाइ नस्यलेनेसे उन्मादजावै। व शंखपुष्पीके रस के पीने से व कडुआ तेलके नस्य व मालिश करनेसे उन्मादरोग जावै ॥ भूतोन्माद लक्षण ॥ पुरुषके भूतादिक लाग्योहोय तौ तिसपुरुषकी बाणी बिचित्र अलौकिकहोय उसके शरीरकी चेष्टा भी बिचित्रहोय और उसकापराक्रमभी बिचित्रहोय और उसकाज्ञान बिज्ञानभी बिचित्र होय यह लक्षणहोय तो भूतादिकका लक्षण वाके उन्मादजानिये॥ अथ जिसके शरीरमें कोई देवता प्रवेशहुआहोय ताकेउन्माद का लक्षण ॥ सब बातोंसे वह हँसे तुष्टरहै और आप पवित्ररहै सुंदर पुष्पादिक की माला धारण करै और सुंदर इतर सूंघाकरै और उसकी आंख मीचैनहीं और बिगरपढ़े संस्कृत बोलै अरु शरीरमें तेजबढ़ै और जो मांगे तिसे बरदे अरु ब्राह्मणहोजाय ये लक्षण जिसमेंहोयँ तामें देवता प्रवेश उन्माद जानिये ॥ अथ जिसके शरीर में असुर प्रवेश होय तिसके उन्माद का लक्षण ॥ पसीनाआवे ब्राह्मण गुरु देवताओंमें दोष काढ़ै कुटिलदृष्टि होय किसीतरह का भय होय नहीं खोटे मार्गमें दृष्टीहोय किसीतरह तृप्ति होय नहीं भोजनादिक में दुष्टा-

त्माहोय ये लक्षण जिसमें होयँ तिसमें असुर प्रवेश जानिये ॥ गंधर्बप्रवेश हो जिसके ताके उन्माद का लक्षण॥ दुष्टात्मा होय और मलिन बन में रहै सोराजी रहै आचारमें मनरहै गावनानाचना सुहावैथोड़ा बोलै ये लक्षण होयँ तो गंधर्ब लागो जानिये ॥ अथ यक्षग्रस्त उन्माद लक्षण ॥ लालनेत्र हो और अच्छे बारीक लालकपड़ोंको धारणकरै गम्भीर हो तीव्रबुद्धिहोय कमबोलै सबबातोंको सहै तेजस्वीहोय जो मांगे सो देवै ये यक्ष ग्रस्त उन्मादके लक्षण हैं ॥ अथ पितरोंका दोष होय तिसके लक्षण ॥ डाभके ऊपर पिंड २ धरै सतोगुणी होय तर्पण करता रहै मांसमें व गुड़में व खीरके भोजन में रुचि रहै ये लक्षण होयँ तो पितरों का दोष जानिये ॥ सर्प ग्रह ग्रस्त उन्माद लक्षण ॥ जो कभी कभी सर्पकी नाईं पृथ्वी में लम्बा पसरै और सर्पकेसमान जीभ से मुखको चाटै अरु क्रोधकरै गुड़ शहद दूध खीर इन्हों के खाने की बारबार इच्छा करै वह सर्प्प ग्रह ग्रस्त उन्माद जानिये ॥ अथराक्षसप्रवेशका उन्माद लक्षण ॥ जिसके राक्षस उन्मादहोय तिसकी मांस और लोहूमें रुचिरहै बचन दुष्टपनेसे बोलै घना शूरबीरपना करै क्रोध बहुत करै बहुत बलवान् होय रात्री में बहुत फिरै शुद्धि हीन होय ये लक्षण राक्षस उन्मादके हैं ॥ अथब्रह्मराक्षसप्रवेशउन्माद लक्षण ॥ देवता ब्राह्मण गुरु इनसे बैर राखै वेद और वेदान्तका जाननेवाला आप होजाय और अपने शरीरमें आपहीपीड़ाकरै और मारैनहीं ये लक्षणहोयँ तो ब्रह्मराक्षस प्रवेश लक्षणहै ॥ औरपिशाच लगाहोय ताकोलक्षण ॥ ऊंचाहाथराखै शरीरकृश होजाय कुछ कुछ मिथ्या बकै शरीर में दुर्गंधिआवै अपवित्र रहै चंचल होजाय बहुत खाय अरु बनमें रहनेको मनकरै भ्रमै बहुत रोवै ये लक्षणहोयँ तो पिशाच उन्मादलक्षणहै ॥ अथ उन्माद का असाध्य लक्षण॥ आंख मोटीरहै बहुत डोलबोकरै झाग मुखमें आवै नींद बहुत आवै बारम्बार ओष्ठ चाटै गिर गिर पड़ै कांपै और जो वह पर्वत हाथी आदि से बचै तो १३ बर्षतक जीवै। देवता संबंधी उन्मादों के ग्रहणकाल और पूर्णमासीको अजार घनाहोय तो देवता दोष जानिये और सांझको कोई दुःखहोय तो असुरदोष जानिये प्रतिपदा

को यक्ष दोष प्रकटहो है ८ कोगंधर्वदोष प्रकटहो है ३० अमावसको पितृदोष ५ सर्पदोष प्रकटहोहै १४ को पिशाचदोष होहै ॥ अथ इन सब के प्रवेशकी रीति ॥ जैसे मनुष्यादिकों को प्रतिबिम्ब दर्पणादिक में प्रवेश होहै तैसेही प्राणीमात्र में शीत उष्ण धँसिजाय है जैसे आतशीकांचमें सूर्यकी किरण प्रवेशकर अग्निको उपजावै है तैसेही मनुष्यादिकन के शरीर में भूत प्रेतादिक प्रवेश करजाय है ॥ निशादि घृत ॥ दारुहल्दी हल्दी त्रिफला सारिवा बच सफ़ेद सिरसम हिंग शिरस मालकांगणी सफ़ेद कचनार मजीठ शुंठि मिरच पीपल देवदारु ये समानभाग लेइ घृत गोमूत्र इन्हों में सिद्धकिया घृतको खानेसे उन्माद जावै ॥ कल्याणकघृत ॥ कडूंभा त्रिफला रेणुका देवदारु एलवा सालिपर्णी धमासा दारुहल्दी हल्दी सफ़ेद सारिवा सारिवा धवकेफूल कालाकमल इलायची मजीठ जमालगोटाकीजड़ अनारकीछाल वायविड़ंग पृष्ठिपर्णी कूट चन्दन पद्माख तालीसपत्र कटैली तमालपत्र जावित्री इन्हों को प्रत्येक तोला तोला भरलेइ कल्क बनाय चौगुना पानीमें कल्क घृत ६४ तोला मिलाय पकाय खानेसे अपस्मार को व ज्वर को व शोष को व खांसी को व मन्दाग्निको व क्षय को व वातरक्त को व खेहरको व तृतीयक ज्वर को व चातुर्थिकज्वरको व ज्वरको व वायुकी बवासीर को व मूत्रकृच्छ्र को व बिसर्प को व कंडूको व पांडु को व उन्मादको व बिषको व प्रमेह को व भूतोन्माद को हरै है और वंध्या स्त्री के पुत्र पैदा करै और उमर बल को बढ़ाय दरिद्रता को व राक्षसादि सबग्रहों को नाशै इसका नाम कल्याण घृत है यह नपुंसकपना को नाशैहै ॥ हिंग्वादि घृत ॥ हींग कालानोन शुंठि मिरच पीपल ये ८ तोले इन्होंमें चौगुना दूध घृत मिलाय पकाय घृत को खाने से उन्माद जावै ॥ सारस्वत घृत ॥ त्रिफला सफ़ेद कटैली धमासा मजीठ सारिवा बच ब्राह्मी पाढ़ा कटैली रानमूंग रानउड़द लालसांठी सफ़ेद सांठी सहदेई सूर्य्यफूल बेल आंवली सफ़ेद गोकर्णी ये प्रत्येक चार चार तोलेलेइ इन्होंको १ द्रोणभर पानीमें पकाय चतुर्थांशकाढ़ा रक्खै तिसमेंतगर रेणुकाबीज बच कूट पिपली संधानोन ये मिलाय और निरोगी

समान बर्ण बच्छावाली गौका दूध मिलाय घृत ६४ तोला मिलाय घृतको सिद्धकरि पुष्ययोगमें चिकना बरतन में घालि पीने से व मालिशसे बुद्धिको व स्मृति को व उमर को व पुष्टि को बढ़ावै और राक्षसादि व बिषको हरै इसका नाम सारस्वत घृतहै ॥ उन्मादगजकेशरी ॥ पारा गंधक मनशिल इन सबों के बरोबर धतूराकाबीज इन्होंको पीसि बचके काढ़ामें ७ भावनादेइ पीछे रासनाके काढ़ामें ७ भावनादेइ चूर्ण करनेसे उन्माद गजकेशरी रस सिद्धहो है इस रस को १ माशा भर लेइ घृत में मिलाय खानेसे उन्माद को व अपस्मारको व भूतोन्माद को व ज्वर को नाश करै। पर्पटी रसकोभेड़ के दूधमें मिलाय खानेसे उन्माद को व अपस्मार को हरै यह पाराशरमुनिने कहा है ॥ बिगतोन्माद लक्षण ॥ मन बुद्धि इंद्रियां धातु प्रकृति ये स्वच्छहों तो उन्माद गया जानिये। और जो अपस्मार रोगमें औषध कहे हैं वही उन्माद मेंभी बरतै ॥ भूतोन्माद में अंजन ॥ शिरसकाफूल लहसुन शुंठि सफ़ेद सिरसम बच मजीठ हल्दी पिपली इन्हों को बकराके मूत्र में पीसि गोली बनाय छाया में सुखाय इसगोलीको पानीमें घिस नस्यलेने से उन्मादरोग जावै ॥ भूतभैरव रस ॥ पारा हरताल मनशिल लोहभस्म सुरमा तांबा भस्म गंधक ये समान भागलेइ बकराके मूत्रमें पीसि पीछे सबोंसे दुगुना गंधक मिलाय लोहाके पात्र में घालि पकाय पीछे १ माशाभर खावै घृत के सङ्ग यह अपस्मार को व उन्मादको हरै और इसको खाय शुंठि मिरच पीपल हींग इन्होंके चूर्णके सङ्ग घृत को खावै व मनुष्य के मूत्रमें कालानोन मिलाय पीवै यह भूतभैरव रस भूतोन्मादको हरै और भूतोन्मादमें रसको खाय धतूराके ५ बीजों में घृतमिलायखावै ॥ भूतरावघृत ॥ हड़ बहेड़ा आमला शुंठि मिरच पीपल इन्द्रयव बच हल्दी दारुहल्दी इलायची चाब देवदारु नीलातूतिया कटुकी कूट मजीठ मनशिल पद्माख कटैली धमासा मुलहठी परवल केशर बाला रीठा सिरसम आपटा रसोत पिपलामूल मौहा के फूल कैथ बलिया लसूण तगर ये समान भाग लेइ बकरीका मूत्र दहीमिलाय घृतको सिद्धकरि पानमें व मर्दनमें व नस्यमें बरतने से भूतोन्माद

को व भूतभयको व ग्रहपीड़ाको व राक्षसको व डाकिनीको हरै यह जगत्के कल्याणके वास्ते रचाहै जैसे मंत्र तारकोंको॥ धूप॥ ऋच्छ के बाल गीदड़केबाल सेहकेबाल हींग इन्होंको बकराके मूत्रमें पीसि धूप देनेसे बलवान् भी ग्रह शांतहोय और गुह्यक व प्रमथ इन्हों के आराधनसे व देव ब्राह्मणोंके पूजनसे आगंतुक उन्माद शांत होवै व सिरस करंजकेबीज इन्होंको शहद घृतके सङ्ग और भक्ष्यपदार्थों से भूतादिपीड़ा शांतहोय॥ भूतोन्मादचिकित्साशास्त्रार्थ॥ दोष अवस्था प्रकृति देश काल बल असक्तपना इन्हों को देखि चिकित्सा करनेसे भूतोन्माद जावै। देवगंधर्व पितर इन्होंकेदोषसे उन्मत्तहो तो बुद्धिमान् नस्य अंजन तेजरूप और क्रूरकर्म करै नहीं और घृत का पानकरै व सूर्यके जप व होम आदिकरै। देवकीपूजाबलि नैवेद्यशान्तिनिमित्त होम मंत्र दान पुण्याहवाचन ब्रतानियम जप मंगल प्रायश्चित्त मणि औषधि इन्होंको धारण नमस्कार महादेव व विष्णुका पूजन इन्होंसे भूतोन्मादजावै॥ महापैशाचिकघृत॥ जटामांसी सुगंधजटामांसी लघुनीली कोंच वच वनप्सा सेवती भूमि आमला गठोणा कटुकी हड़ डुकरकंद बड़ीसोंफ शाक गोखुरू महाशतावरि ब्राह्मी दोनों प्रकारकी नाकुली कुटकी थोहर सालपर्णी मूषाकर्णी इन्होंके कल्कमें घृतको पकाय खाने से चातुर्थिक ज्वर व उन्माद व ग्रहबाधा व अपस्मारको हरै यह महापैशाचिक घृत अमृतके समानहै और बुद्धिको स्मृतिको व बालकोंके अंगोंको बढ़ावे है॥ कल्याणकघृत॥ कल्याण घृतसे व नारायण तेलसे व वृहन्नारायण तेलसे उन्माद रोगजावे॥ उन्मादमें पथ्य॥ गेहूं मूंग लाल चावल जलकीधारा गरमदूध सौबार धोया घृत पुराना वा नया घृत कछुआका मांस खांड़ रसाला पुराना कोहला परवल ब्राह्मी बथुआ धानकीखील दाख कैथ फणस ये उन्मादके रोगमें पथ्यहैं॥ अथअपथ्य॥ मदिरा विरुद्ध भोजन गरम भोजन और नींद भूख तीस छींक इन्होंके वेगोंको रोकना तीक्ष्ण व कडुवी बस्तुका खाना इन्होंको बैद्य उन्माद रोगमें त्यागकरवावै॥

इतिश्रीरविदत्तवदरीनिवासिनाकृतंनिघण्टरत्नाकरभाषायांउन्मादप्रकरणम्॥

अपस्मारकर्मविपाक ॥ गुरु व ऽवडाको धनकोचारै व प्रतिकूल वरतै वह अपस्मार कहे मृगी रोगीहो प्रायश्चित्त। चांद्रायण व्रत को करनेसे आरामहोवै व ब्राह्मणोंका श्वासके रोकनेसे अपस्मार रोगीहोवै प्रायश्चित्त। दान होम जपादिकरनेसे शांतहोय॥ ज्योतिषशास्त्राभिप्राय॥ जिसके जन्मकाल में ८ स्थान पर शनि मंगल सूर्य्यहोवैं उसके नानाप्रकारकी पीड़ायुत अपस्मार रोगहोवै इन्हों की शांति वास्ते पूर्वोक्त जपादिकरावै॥ अपस्मार निदान॥ चिंताशोकादिकरके कोधहुये जो बातपित्तकफ सो हृदयकी नसोंमें बैठिस्मरण मात्रको नाशकरि मृगीकेरोगोंको उत्पन्नकरैहै वह मृगीरोग चारप्रकारकाहै वातका १ पित्त का २ कफका ३ सन्निपातका४॥ मृगीरोग का पूर्वरूप अरु लक्षण॥ हियोकांपै अरु सूनाहोजाय पसीनाआवै ध्यानलगजाय मूर्च्छाआवै ज्ञानजातारहै नींद आवै नहीं ये लक्षण होयँ तो जानिये इसके मृगीरोग होयगा उसे सर्वत्र अंधकारहीदीखैऔर स्मरणजातारहै और हाथपांवको आदिले सबअंगोंकोपृथ्वी ऊपर पटकाकरै तब जानिये मृगीरोग अबहोगा। वायुकी मृगी का लक्षण। कंपहोय दांतचाबै मुखमेंझागआवै अतीसारहोय कालापीलादीखै ये लक्षण बातकी मृगीकेहैं॥ पित्तकी मृगीकालक्षण॥ मुख में पीड़ा झाग आवै और शरीरकी त्वचाअरुमुख पीलापड़जाय ये लक्षण पित्तकी मृगीकेहैं॥ कफकी मृगीकेलक्षण॥ मुखमें सफेद झाग आवै शरीर की त्वचा में यह रोग सदाहीहै परन्तु रोगोंका समय आवै तौ कोपकरै अरुमुख नेत्र यह सब सुफेद पड़जायँ शीतलागे रोमांचहोय और उसे सफेदही सफेद दीखै ये लक्षण कफकी मृगी केहैं॥ सन्निपातकी मृगीका लक्षण। ये पीछे कहे जो लक्षण सो सब जिसकेहोंतो सन्निपातकी मृगीजानिये। अथमृगी केअसाध्यलक्षण। जिसका शरीर बहुतफरकै और क्षीणहोजाय और भृकुटी चढ़वालगजाय और नेत्रोंकी प्रकृति और होजाय ऐसामृगीवाला मरजाय। अथमृगीको समय॥ १२ दिनमें आवेतो बायुकीजानो १५ दिनमें आवे तो पित्तकी जानिये १ महीना में आवेतो कफकीजानिये यहां दृष्टान्तहै जैसे इन्द्रजलको बरसै है तब सभीवस्तुउगै परन्तु यवगेहूं

चना आदि पृथ्वी ऊपर शरद् ऋतुही में ऊगें तैसे शरीर मधुक घृत मुलहठी ८ तोला लेइ कल्ककरि २०४८ तोला आमलाकें रस में ६४ तोला घृतको सिद्धकरि खाने से पित्तके अपस्मार को हरै॥ कासघृत ॥ कासतृणका काढ़ा ईषकारस शिवणीका रस ८ गुणामें जीवनीय गणकी औषध प्रत्येक तोलातोलाभरलेइ घृत ६४ तोला मिलाइ पकाइ खानेसे वातपित्तके अपस्मारकोनाशै ॥ वचादिघृत ॥ वच अमलतास करंज आमला हींग गठोणा लघुगोखुरू इन्होंका कल्क में सिद्धकरि घृतको खानेसे बात कफ के अपस्मार को हरै॥ मधुवचायोग ॥ दूध चावल को खानेवाला मनुष्य बचकेचूर्णमें शहद मिलाय चाटनेसे बहुतदिनोंका घोररूप अपस्मारजावै॥ मुस्तकमूल ॥ योग ॥ उत्तरदिशा में गया नागरमोथा की जड़ को गौकेदूधमें पीसि खानेसे अपस्मारको नाशकरै और इस में समानवर्ण बच्छावाली गौके दूध को वरतै ॥ कूष्मांडकादियोग ॥ मुलहठीके चूर्णको कोहला की गिरी के रसमें खरलकरि पीनेसे ३ दिनतक अपस्मारकोनाशै॥ भैरवरसायन॥ वच। गिलोय शुंठि मिरच पीपल मुलहठी सतरुद्राक्ष ॥ सेंधानोन कटैलीकाफल समुद्रफल लसूण इन्होंको पीसि नस्यलेने सें अथवा कल्ककरि नाकके पुटमें देनेसे अपस्मारको व कफको व वायुको व मस्तक पीड़ाको व वड़को व तंद्राको व भ्रम को व जाड्यको व मोह को व सन्निपात को व कर्णरोग को व अक्षिभंग को व पीनसको व हलीमककोनाशै यहभैरवरसायनरस विट्ठल वैद्यने प्रगट किया है ॥ स्मृतिसागररस॥ पारा गंधक हरताल मनशिल तांबा भस्म इन्होंकोशुद्धकरि व मूर्च्छितकरि चूर्णको बचकेरसमें २१ बार भावना देइ पीछे ब्राह्मीके रसमें २१ भावनादेइ पीछे ज्योतिष्मतीके रसमें १ भावनादेइ यह स्मृति साररसहै इसको घृतकेसंग १ माशा खानेसे अपस्मार को हरै ॥ पानीयेकल्याणघृत ॥ हड़ १ तोला बहेड़ा १ तोला आमला १ तोला हलदी १ तोला दारुहलदी १ तोला पित्तपापड़ा १ तोला दोनोंसारिवा २ तोला धौकेमूल व शाल १ तोला सालपर्णी १ तोला पृष्ठपर्णी १ तोला देवदारु १ तोला रालवाल १ तोला तगर १ तोला कुड़ंभा १ तोला जमालगोटा की जड़ १

तोला अनारछाल १ तोला नागकेशर १ तोला नीलाकमल १ तोला इलायची १ तोला मजीठ १ तोला बायबिड़ंग १ तोला कूट १ तोला पद्माख १ तोला जावित्रीफूल १ तोला सफ़ेदचंदन १ तोला तालीस पत्र १ तोला कटेली १ तोला इन्हों का कल्क करि चौगुनापानी मिलाइ घृत ६४ तोला गेरि सिद्ध करि खाने से ज्वरको व क्षयको व उन्मादको व बातरक्तको व खांसीको व मंदाग्निको व खेंहरको व कमरके शूलको व तृतीय चातुर्थिक ज्वरको व मूत्रकृच्छ्रको व पांडुको व सांपआदि के जहरको व मीठातेलिया आदि बिषोंको व बिसर्पको व प्रमेहको नाशकरै और बंध्याखाइ तौ पुत्रहोवै और भूत यक्ष राक्षसादिको हरै॥ शंखपुष्पीघृत॥ शंखाहूली बच कूट ब्राह्मी रस इन्होंमें घृतको सिद्धकरि खानेसे बहुत दिनोंका अपस्मार व उन्मादजावै॥ सैंधवादिघृत॥ घृत १ तोला सेंधा १ तोला हींग १ तोला गोमूत्र १२ तोला इन्होंमें घृतको सिद्धकरि खानेसे अपस्मार व हृद्रोगजावै॥ ब्राह्मीघृत॥ ब्राह्मीके रसमें बच कूट शंखपुष्पी पुराना घृत इन्होंमें घृतको पकाइ खानेसे अपस्मार जावै॥ कूष्मांडघृत॥ एकभागघृत १८ भाग कोहलाके रसमें पकाइ पीछेमुलहठीके चूर्ण के संग खानेसे अपस्मारजावै॥ पंचगव्यघृत॥ गौके गोबरका पानी दही बिजौरा दूध गोमूत्र इन्होंमें घृतको सिद्धकरि खानेसे चातुर्थिक ज्वरको व उन्माद को व अपस्मारकोनाशै॥ अपस्मारनस्य॥ राल कंवडल इन्होंका नस्यलेनेसे अपस्मार जावै व निर्गुंडीके रसमेंअक्रोड़को पीसिनस्य व अंजनलेनेसे अपस्मारजावै कुत्ता गीदड़ बिलाव कपिलागौइन्होंकेपित्तोंकी अलग २नस्यलेनेसे अपस्मारजावै॥ अंजन॥ पुष्यनक्षत्रमें कुत्ताका पित्तकाढ़ि अंजन करनेसे व इसमें घृत मिलाय धूपलेनेसे अपस्मार जावै व मनशिल रसोत कबूतरकी बीट इन्होंकेअंजनसे अपस्मार व उन्मादजावै। व मुलहठी हींग बच थोहरदूध सिरस लहसुन कूट इन्होंके नस्य व अंजनकरनेसे उन्माद व अपस्मारजावै परन्तु इन्हों को बकराके मूत्रमें पीसिबरतै। व करंज देवदारु सफ़ेद सिरसम कांगनी बच हींग मजीठ त्रिफला शुंठि मिरच पीपल राल इन्होंको बकराके मूतमें पीसि पान में व अंजनमें व

नस्यमें बरतनेसे उन्माद व अपस्मार व भूतबाधा जावै व नौला उ-ल्लू बिलाव गीध किड़ाड़ासांप काक इन्होंकातुंड पांख बिष्ठाकी धूप-लेनेसे अपस्मार जावै और अपस्मार बहुतादिनोंका हो तो कष्टसाध्य जानिये तिसे इन रसोंसे शांतकरै और इसरोगमें हियाकांपै और नेत्रों में पीड़ाहोइ पसीनाआवै और हाथपैर शीलेहों तब दशमूल का काढ़ादेइ कल्याण घृतका पानकरावै॥ त्रिकत्रयलेह ॥ हड़ बहेड़ा आमला शुंठि मिरच पीपल दालचीनी इलायची तमालपत्र। जी-वनीयगण इन्होंकालेह बनाय चाटने से अपस्मारको व उन्माद को व वातव्याधि को नाशै ॥ कल्याणचूर्ण ॥ शुंठि मिरच पीपल चवक चीता मिरच त्रिफला सेंधानोन पिपली वायविड़ंग करंज अज-मान जीरा धनियां इन्हों का चूर्ण गरमपानी के संग खाने से वात कफ को व अपस्मार को व बवासीर को व संग्रहणी को नाशकरै इसका नाम कल्याण चूर्ण है यह जठराग्नि को दीपन करै है॥ लेप व दाग॥ सिरसम को गोमूत्र में पीसि इस का लेप व उबटना हित है और धूमा व तेज नस्य देने से व दाहसे व कपोलों में सूई के छेदन से अपस्मारजावै व अंतवारको २ भौंवर कीड़े लाय कंठ व भुजामें धारणकरै तो उग्र अपस्मारजावै ॥ चन्दनादिअवलेह ॥ चन्दन तगर कूट दालचीनी इलायची तमालपत्र बथुआ मजीठ शतावरि दाख पाढ़ा हड़ राल कौंचबीज मूर्वा अतीश रासना कडूंभा कंकोल जीवक मेदा पुष्करमूल नागरमोथा वाला मोचरस वंश-लोचन दारुहल्दी अमली हड़ बहेड़ा आमला बायबिड़ंग कटुकी दालचीनी तमालपत्र नागकेशर निंब कचनार तालीसपत्र महा-मेदा देवदारु कमल बलिया भारंगी बेर अनार शिवणी सिंघाड़ा हल्दी कपूर छोरताग कटैली ये समान भाग लेय खांड़ घृत शहद इन्हों को मिलाय लेहकरि १ तोला रोज खाने से अपस्मार को व उन्माद को व क्षय को व गुल्म को व पाण्डुको व खांसी को व श्वासको व प्रदरको व पेटको व बालकों के रोगकोहरै और स्त्रियों कोहितहै ॥ शास्त्रार्थ ॥ अपस्मार में पहिलेवमनकराय पीछे बातिक अपस्मारमें बस्ति कर्म करै और पित्तके अपस्मारमें रेचनदेवै और

कफके अपस्मार में बमनदेवे ॥ पलंकषातैल ॥ रास्ना बच हड़ थोर आग आक शिरस जटामांसी सुगन्ध जटामांसी कलहारी हींग कालानोन लहसुन मूर्वा चीता कूट पक्षियों का मांस चौगुनाबकरा मूत्र इन्हों में तेल को पकाय मालिशकरने से अपस्मार को नाश करे ॥ कटभ्यादितेल ॥ मालकांगनी निंब मीठासहिंजना दालचीनी इन्होंके काढ़ा में गोमूत्र मिलाय तेलकोसिद्धकरि मालिश करने से अपस्मार जावे ॥ शिग्रुतेल ॥ सहिंजना कूट बच जीरा लहसुन शुंठि मिरच पीपल हींग ये समभाग लेय बकराके मूत्रमें मिलाय तेलको पकाय मालिश करने से व नस्यलेनेसे अपस्मारजावै। तेल व घृत ६४ तोला जीवनीयगणके औषधों का चूर्ण मिलाय और २०४८ तोला दूधमें पकाय बरतनेसे अपस्मार जावे व कडुआतेल १ भाग बकराकामूत्र ४ भाग इन्हों को पकाय तेलकी मालिश से व गौ के गोबरकेपानी व गोमूत्र पानी इन्होंमें तेलको पकाय मालिशकरनेसे अपस्मारजावे ॥ अपस्मार में पथ्य ॥ लालधान मूंग गेहूं पुरानाघी कछुयेका मांस मरुदेशके मांसकारस दूध ब्राह्मीकेपत्ते बच परवल बड़ाकोहला बथुआ मीठाअनार सहिंजना दूधकापेड़ा दाख आमला फालसा तेल और गधा घोड़ा गौ इन्होंकामूत्र आकाशकाजल हड़ ये मृगीरोगमें मनुष्योंको पथ्यकहेगयेहैं ॥ अथमृगीरोगमेंअपथ्य॥ चिन्ता शोक भय क्रोधअशुद्ध भोजन मद्य मछली विरुद्ध अन्न तेज गरमतथा भारीभोजन बहुत स्त्रीसंग श्रम पूजनेयोगकी पूजा न करना पत्तोंकाशाक कंदूरी आषाढ़फल भूख प्यास नींद इनकेबेग इनसबोंको मृगीरोगवाला त्यागकरे॥ वातव्याधिकर्मविपाक ॥देवका व ब्राह्मण का धनचोरानेसे व इन्होंको पीड़ादेनेसे व गुरु से द्रोहकरने से बातरोगीहोय है इसमें उपाय से आराम होइ ॥ बातहर ॥ जो गुरूसे बैरराखे वह बातरोगीहो। प्रायश्चित्त। गोविंदइत्यादि नाम मन्त्र से जप व होम करावे ॥ धनुर्वातहर॥ जो इच्छाहीन व अक्षत योनि ऐसी स्त्री से बलकरि समागमकरे उसकी सबसंधियोंमें पीड़ा होय और मन्दाग्नियुत धनुर्वात रोगीहोवै व ज्वरीहोय। प्रायश्चित्त। इसकीशांति के वास्ते भैंसकादानकरै औ कृच्छ्रातिकृच्छ्र चान्द्राय-

णका व्रतकरै और सूर्यनामसे जपकराय वित्त माफिक ब्राह्मणोंको भोजन कराय गोविंद अनन्त अच्युत इन तीनों नामोंकोजपै और विष्णु सहस्रनाम का पाठ विधि से करावे और अच्युत अनन्त गोविंद इस मन्त्र का तीसहजार जप करावे ॥ पक्षवातहर ॥ सभा में मिथ्या पक्षपात करनेवाला अर्धंगी होयहै। प्रायश्चित्त। सोना नवमाशा ब्राह्मणको दानदेइ वैष्णवश्राद्धकरावे और सतनजाका दान करि गोदानकरै इससे शांतिहो ॥ रक्तवातहर ॥ जो लालकपड़े मूंगा इन्हों को चोरावे वह रक्तवात रोगीहोवै। प्रायश्चित्त। पद्मराग कपड़े इन्हों सहित भैंसका दान करै ॥ रक्तवातपित्तहर ॥ अन्यकी सवर्ण स्त्री से भोगकरने से बातरक्त व वातपित्त रोगहोय हैं। प्रायश्चित। ४ तोला व २ तोला व १ तोला सोनाकी लक्ष्मीनारायण की मूर्त्ति वनाय दान देवै यह लक्ष्मीनारायण की मूर्त्ति सबकामना देइहैं ॥ वातपित्तहर ॥ जो ब्राह्मण क्षत्री वैश्य हो के लहसुन गाजर तालफल इन्होंकोखावै वहबातपित्तरोगीहो। प्रायश्चित्त। चान्द्रायण व्रत के करने से शांति होवै ॥ ज्योतिषशास्त्रकाअभिप्राय ॥ जिसकी जन्मपत्रीमें कर्कराशिपै सूर्य्यहों तो बात रोगीहो व चोरीकरै व चंचलमतिवाला होय और शनिकी दृष्टिभीहो तो निन्दकहोवै और जन्मकालमें शनि केतु एकराशिपै हों तो वात पित्तरोगीहो व हीन मनुष्यों के संग उग्रविग्रह हो और विदेशमें गमनकरै और ॥ वायु प्रशंसा ॥ वायुजीवों को जिवावे है और वायुबलरूप है और वायु मनुष्यों का आधार व पोषक है और यह संसार वायुरूप है और वायु प्रभु है जिसके कोप से ८० प्रकार के बात रोग पैदाहोय हैं औरइन्होंकी औषध सामान्यहै स्नेहन स्वेदन से आरामहोय है परन्तु विस्तारपूर्वक कहतेहैं ॥ बातव्याधिनिदान ॥ कषायलीतीखी कडुवीबस्तु खायेसों निर्बल बस्तुके भोजनसों रूखी बस्तुके खानेसे खेदसूं शीतल भोजन से घने मैथुन से धातुके क्षीणपने से मलमूत्र के रोकने से भयसे घने लोहू के निकलने से मांसके क्षीणपने से घना बमन बिरेचनसे आम के दोष से वृद्धावस्था से मनुष्यों को बर्षा ऋतुमें तीसरे पहर अथवा पहरके तड़के बलवान् वायुमनुष्य

के घुसके नानाप्रकार का रोग सबअंगमें अथवा एक २ अंगमें करै है ॥ बायुकापूर्वरूप ॥ इनवायुरूपरोगोंका नहीं प्रकटहोना यहीपूर्वरूप बायुरूप बायुका प्रकटरूप यह है अंगकानाश शरीर का हलकापन संधियों का संकोच हाड़ और संधियों का फरकनसे बंदहोना व टूटनारोमांचहोना व प्रलाप पसली पीठ व शिर इनमें पीड़ा गंजापन पागलपन कुबड़ापन शोजा नींदकानाश गर्वकानाश व वीर्यकानाश व स्त्रीकी रजका नाशहोना कंप व अंगोंका सोना शिर नाक नेत्र गल इन्होंका मुड़जाना शरीर का टूटना शूल व आक्षेपक व मोह व आयास यानी परिश्रम इनको आदिले रूपको कुपितहुआ वायु प्रकट करैहै और हेतु विशेष व स्थान विशेषहोके अन्य रोगोंकोभी उत्पन्न करैहै ॥ बातचिकित्सोपक्रम ॥ तेलकी मालिशसे वस्वेदनसें व वस्तिकर्म से नस्यलेनेसे अवलेहसे जुलाबसे चिकना खट्टा सलोना मीठा पुष्ट ऐसे पदार्थोंके खानेसे बातरोग शांतहोवै और पित्तयुक्त वायुमें शीत अरुगरम औषधदेवै और कफयुक्तवायुमें रूखा व गरम ऐसा औषध व भोजन देवै और एकला वायु में चिकना व गरम भोजन तथा औषधदेवै और जो बातका रोग चिकना गरम रूखा शीतल इन्हों से शान्त न हो तो वह रोग कुपित लहू का जानना ॥ दूसरा प्रकार ॥ मीठा व सलोना खट्टा चिकना गरम इन पदार्थों के खाने से और नींद और सूर्यकी किरणसे व वस्तिकर्म्म से स्वेदनसे तृप्त करनेसे गरमपानीसे मालिशसे अंगोंको दाबनेसे कुपितवायु शांत होय ॥ तीसराप्रकार ॥ वातरोग असाध्य है दैव योगसे आराम होता है इसमें वैद्यजन अनुमान चिकित्साकरै प्रतिज्ञा से नहीं ॥ कोष्ठगत बातलक्षण ॥ उदरमें रहता जो दुष्टवायु सो मलमूत्र रोकदेयहै और हियारोग गुल्मरोग बवासीर पसली और अंडवृद्धि इन रोगों को उपजावैहै ॥कोष्ठलक्षण॥ आमाशय पक्वाशय अग्न्याशय मूत्राशयरुधिराशय हृदयउदक याने पेटफेफड़ा इन्होंकी कोष्ठसंज्ञाहै ॥ आमाशयोक्त ॥ दूसरे दिनसेले छहदिन पर्यंत आमाशयोक्त षट्चरणयोग देवै ॥ कोष्ठबातचिकित्साक्रम ॥ कोष्ठगत बातविकार में दूधको पीवै । और शुंठि मिरच पीपल कालानोन जीरा हड़ नोन सुहागा खारी

नोन सैंधानोन मनयारीनोन सारिवा कटैली पाठा इन्द्रयव चीता इन्होंका चूर्ण दही मदिरा मस्तु कांजी इन्होंको खानेसे मंदाग्निको व कोष्ठवातको नाशकरै ॥ चिकित्सा ॥ पाचनीय रस व अन्य पाचक औषध खाइ मलोंको पकावै परंतु बिशेषकरि कोष्ठगत बात में दूध को पीवै ॥ आमाशय गतवात लक्षण ॥ हिया में पसवाड़ा में पेट में नाभिसें पीड़ाहोय प्यास लागै डकार बहुत आवैं बिशूचिका और खांसीहोय कंठमुख सूखजाय श्वासहोय ये लक्षण आमाशयमें प्राप्त वायुके हैं ॥ आमाशय लक्षण ॥ नाभि व स्तन कहे चूँचियां इन्हों के बीचमें मनुष्यके आमाशय होय है ऐसेशारीरकके जाननेवाले महा निपुण वैद्य कहते हैं ॥ आमाशय गत वातचिकित्सा ॥ इसमें भोजनसे पहिले दीपनपाचन औषध देवै और बमन व तीक्ष्ण रेचनदेवै और पुराने मूंग चावल यव इन्हों को खावै ॥ आमाशय बात ॥ इसमें छर्दि निंद ये उपचारकरै और ७ राततक पानीकेसंग षट्चरणयोग देवै ॥ षट्चरण योग ॥ चीता इंद्रयव पाठा कटुकी अतीश हड़ इन्हों का चूर्ण महाव्याधि बातकोहरै इसका नाम षट्चरणयोगहै ॥ तीनकाढ़े ॥ अजमोद हड़ कचूर पुष्करमूल इन्हों का काढ़ा व बेल फल गिलो-य शुंठि देवदारु इन्होंका काढ़ा व बच अतीश पिपली मनयारी नोन इन्होंका काढ़ा ये आमबातको हरते हैं। व गिलोय मिर्च इन्हों के चूर्णको गरमपानी के संग खानेसे व शुंठि देवदारु इन्होंके चूर्णमें गुड़ मिलाइ खानेसे कोष्ठ की बायुका नाशहोवै ॥ पक्काशयस्थ वायु लक्षण ॥ आंत बोलै पेटमें शूल और अफारा मलमूत्र कष्टसेउतरै पीठ व शिर व कण्ठ इन्होंमें पीड़ाहोय ये पक्काशय गतवायुकेलक्षण ॥ चिकित्सा ॥ पक्काशय गतवायुमें अग्निकी दीपनकरावै और उदा-वर्त्त की कही सब क्रियाकरै और साचिकूण जुलाबदे और जो बायु पेटमें होय तो खार व चूर्णसे अग्निको दीपनकरै और कुक्षिमें बायु हो तो शुंठि इन्द्रयव चीता इन्हों का चूर्ण गरम पानी के सङ्गदेवै और पक्काशय में बायु हो तो स्नेहन व रेचन वस्तिकर्म सलोने भोजन देवै। हृदय बात गिलोय मिरिच इन्हों को पीसि प्रभातमें गरम पानी में मिलाय कलुगरमकर पीनेसे हियाकी बात दूरहो

व असगन्ध बहेड़ा गिलोय इन्हों को गरमपानी में पीसि गुड़मि-
लाय खानेसे हियाकी बात दूर होय व देवदारु शुंठि इन्होंकेचूर्ण
को गरम पानी के सङ्ग खाने से हियाकी बात दूरहोय॥ सर्वांगबात
लक्षण॥ अंग फुरै व मुड़जाय और शरीर में पीड़ा बहुत होय ये
सर्वांगबायुके लक्षणहैं॥ चिकित्सा॥ सर्वांगगत बायुको व एकअंगमें
बायुको तेलकी मालिशकर गरम जलसे न्हाना दूरकरै है अवशि-
ष्टबात प्रलापवायुमें व भीरुतापबायुमें व प्रसुप्तिवायुमें चित्त विभ्र-
मवायुमें स्वेदनाशवायुमें बल क्षीण बायुमें घृत गुग्गुल देनाश्रेष्ठ
है शब्दकी अज्ञानता बायुमें कल्याण लेहहितहै और शीतरूपबायु
में व रोमहर्षबायुमें नसोंगतवायुमें कड़ुवा चिकना स्वेदन मर्दन ये
सबहित हैं और बायु गुदा से न सरता हो व डाकर आती हो व
आंत बोले तो निरूह बस्ति देवै और अंगों को कठिन करनेवाले
स्निग्ध पदार्थों से स्नान करावै॥ कुरंटकादि काढ़ा॥ पीलाबांसा
शुंठि देवदारु इन्हों के काढ़ा में अरण्ड का तेल मिलाय पीने से
बायु पीड़ित मनुष्य बहुत जल्दी अच्छा हो॥ महारास्नादि॥
रास्ना अरण्डजड़ गिलोय बच पीलाबासा चाव कोंचके बीज
नागरमोथा भारंगी अजमोद अजवाइन पाठा देवदारु बाय-
बिड़ंग काकड़ाशिंगी शुंठि बाला मूर्बाकटुकी मजीठकाला व सफेद
अतीश कचूर हड़ बहेड़ा आमला पिपली जवाखार लालचन्दनअ-
मलतास कायफल कूड़ा ये समानभागलेइ अष्टमांश काढ़ा रक्खै
यह महारास्नादि कौशिकमुनिने कहाहै यहसर्वांगबातको व एकांग
बातको व श्वासको व खांसीको व पसीनाको व शीतको व तन्द्राको व
शूलको व तूनीको व प्रतूनीको व गलरोगको व एकांग बात को व
कंपको व खल्लीबातको व बिश्वाचीको व श्लीपदको व आमबातको
व सूतिका रोगको व सुप्तिबातको व जिह्वास्तंभ को व अपतान को
व स्फोटनको व मथनबातको व क्लीव बातको व आक्षेपकको व कुब्ज
बातको व सूजनको व अफाराको व अपतंत्रको व अर्दितको व खुंड़
बातको व हनुग्रहको व गृध्रसीको व पादशूलको व बातकफब्याधि
को हरै यह महादेवजीने कहाहै॥ दूसरा प्रकार॥ रास्ना २भाग धमा-

सा १ भाग वाला १ भाग अरण्डजड़ १ भाग देवदारु १ तोला कचूर १ तोला बच १ तोला बासा १ तोला शुंठि १ तोला हड़ १ तोला चाव १ तोला नागरमोथा १ तोला सांठी १ तोला गिलोय १ तोला वरधारा १ तोला सौंफ १ तोला गोखुरू १ तोला असगंध १ तोला अतीश १ तोला अमलतास १ तोला शतावरि १ तोला पिपली १ तोला पियावासा १ तोला धनियां १ तोला दोनों कटैली २ तोला इन्होंका काढ़ाकरिशुंठिका चूर्ण मिलाय पीनेसे व जोगराज गुग्गुल के सङ्गपीने से व अजमोदादि चूर्ण के सङ्गपीने से व अरण्ड तेलके सङ्गपीने से सर्वांग कंपको व कुब्जकबातको व पक्षाघातको व अपबाहुकको व गृध्रसी को व आमवात को व श्लीपद को व अपतान को व अन्तर्वृद्धि को व आध्मान को व जंघावात को व जानु वातको व अर्दित को व शुक्रदोष को व लिंगवातको व बन्ध्यापना को व योनिरोग को हरै और गर्भ को धारण करावै॥ महाबलादिकाढ़ा॥ गंगेरणजड़ शुंठि इन्होंके काढ़ामें पिपलीकाचूर्ण मिलाय पीनेसे शीतको व कंपको व दाहको हरै इसको २ दिन व ३ दिन तक पीवै॥ पंचमूलादियोग॥ पंचमूलका काढ़ा व दशमूल का काढ़ा व रूक्षस्वेद व नस्य इन्होंसे मन्यास्तंभ वायु जावै॥ बाजिगन्धादि काढ़ा॥ आसगंध बला मोटीबला लघुबला दशमूल शुंठि नखी बेर रास्ना इन्हों के काढ़ासे बायुका नाशहोय॥ समीरदावानल॥ भिलावाँ के टुकड़े १॥ तोला पानी ४ तोला इन्हों का काढ़ाकरि चतुर्थांश राखै इस में खांड़ ॥ तोला घृत २ तोला दूध ४ तोला मिलाइ पीनेसे यह बात रोगोंको हरै॥ गुदास्थित वायुकार्य॥ गुदा में बायु हो तो मल मूत्र अपान बायु इन्हों का प्रतिबंध हो औरशूल व आध्मान व पथरी व जंघा गोड़ा कंठ पीठ मस्तक हिया इन्होंमें शूल व सोजा को पैदाकरै॥ चिकित्सा॥ गुदाश्रित बायु दुष्टहो तो उदावर्त्त में कहे औषधादि करै॥ चिकित्साक्रम॥ दशमूल के काढ़ा में व बिजौरा के रस में एरंडके तेलको मिलाय पीनेसे बस्ति व कूष गुदा इन्हों की दुष्ट बायु जावै॥ श्रोत्रादि गतलक्षण॥ कान आदि इंद्रियोंमें बायु कुपित होतो उन्हीं इंद्रियोंको नाशै॥ चिकित्सा॥ इन्हों

में बातनाशक इलाजकरै और स्नेह पान मालिश मर्दन लेप ये करावै ॥ जृम्भा ॥ मुहँका एकश्वास प्रथम मुहँ में पीजाइ पीछे वह श्वास उलट काढ़िदे आलस और नींद ये लिये आवै तिसे जँभाई कहते हैं ॥ चिकित्सा ॥ शुंठि पिपली मिरच अजवाइन सेंधा ये सब अलग २ पीसिखानेसे जँभाई को नाश करते हैं और सुन्दर पलँग ऊपर शयन करनेसे जँभाई बेग शांतहोवै ॥ चिकित्सा ॥ कडुवातेल की मालिश से व स्वाद भोजनके खानेसे व नागरपान के खाने से जँभाई बेग शांत हो वै ॥ प्रलापक ॥ आपका कुपथ्यसे कुपित बायु अर्थ रहित क्युंका क्यूं बचनबोलै तिसे प्रलापक कहते हैं ॥ चिकित्सा ॥ तगर पित्तपापड़ा अमलतास नागरमोथा कटुकी बाला आसगंध ब्राह्मी मुनक्का चंदन दशमूल शंखाहूली इन्होंकाकाढ़ाकरि देनेसें प्रलाप शांतहोवै ॥ रसाज्ञाननिदान ॥ जो मीठा रस आदि ले छह रसों के खाने में यथार्थ ज्ञान जाता रहै तिसे रसाज्ञान हो वै ॥ चिकित्सा ॥ सेंधा शुंठि मिरच पीपल फालसा आम्लवेतस व इमली इन्हों का चूर्ण इस से जीभ को घर्षणकरै व चिरायता कटुकी इन्द्रयव कूड़ाछाल ब्राह्मी पलाश राई कालाजीरा पिपली पिप्पलामूल चीता शुंठि मिरच इन्होंका अदरखके रसमेंकल्ककरि जीभ ऊपर मलनेसे रसाज्ञान दूरहोवै ॥ किरातादि कल्क ॥ चिरायताके कल्क को जीभपर मलनेसे जीभकी शून्यता को हरै ॥ त्वक्शून्यतालक्षण ॥ जिसको शीत गरम कोमल कठिन को ज्ञान जातारहै तिसे त्वचा शून्य कहते हैं ॥ चिकित्सा ॥ इस में फस्त करावै और नोन घरका धूमा इन्हों का लेपकरै ॥ रक्तबायु लक्षण ॥ शरीर में पीड़ा घनी हो और बर्ण बदलजाइ शरीर माड़ा होजाइ अरुचि हो और अंगपर कील पैदाहों भोजन किया नाद अंगोंका स्तंभहो ये रक्तगत बायुके लक्षण हैं ॥ मांसगत बायु ॥ शरीरभारीहो पीड़ाहो और स्तंभित हो और शरीर मुष्टि व दंडसे हत सरीखा होजाय ये लक्षण मांस गत बायु के हैं ॥ मेदगत बायुलक्षण ॥ यह बायु शरीर में गांठोंको पैदाकरै और कम पीड़ावाले ब्रणहों ॥ अस्थिगत बायुलक्षण ॥ संधियों में पीड़ाहोय मांस जलजाइ नींद आवै नहीं निरंतर पीड़ारहै ये हाड़

गतवायुके लक्षण हैं॥ मज्जागत वायुलक्षण ॥ इसमेंपीड़ानिरंतरबनी रहे ॥ शुक्रगत वायुलक्षण ॥ स्त्रीसंङ्ग करने में जल्दी वीर्य्य गिरपड़ै व वीर्य्यको व गर्भको बांधे व गर्भको विकृतरूप पैदाकरै ये लक्षण हैं॥ त्वक्धातुगतवायुचिकित्सा ॥ त्वचामें वायुहोतो स्नेहपानमालिश स्वेदकरावे और रक्तमें वायु होतो शीतल लेप जुल्लाव रक्तमोक्ष ये करावे और मांसमेद में वायुहोतो जुल्लाव निरूहण वस्ति देवै और हाड़मज्जा में वायु होतो स्नेहपान व स्नेहकी मालिशकरावै॥ केतकादितैल ॥ केवड़ा वाला गंगेरण इन्होंका रस तुषका पानी इन्होंमें मीठेतेल को पकाय मालिशकरनेसे हाड़ की वायु को दूर करै। शुक्रगतवायुमें आनंद देनेवाले अन्नपानादि देवै॥ शिरगतवायु॥ नाड़ियोंमें शूलचले नाड़ी कड़ीहोजाइ और बाह्यायाम अंतरायाम खल्लीवात कुब्जवात इन विकारोंको पैदाकरै॥ चिकित्सा ॥स्नेहपान तेलकी मालिश मर्दनलेप पीड़ाबन्धना फस्त ये नाड़ियों के वायु को नाशैं ॥ स्नायुगतवायुलक्षण ॥ शूल आक्षेपकवात कंप स्तम्भ ये नसोंके वायुकेलक्षणहैं और नसों में गत वायु सर्वाङ्ग में व एकांगमें वायुको पैदा करैहै ॥ चिकित्सा ॥ स्वेद पिंडी बांधना दाग देना बांधना मलना ये कर्म नसोंकीवायुको हरैं ॥ संधिगतवायुलक्षण॥ यह संधिमें जाय संधिको नाशकरि शूलसोजा को पैदाकरै ॥ सामान्य चिकित्सा ॥ इसमें दाह स्वेद पीड़ाबन्धन ये हितहैं ॥ इन्द्रवारुणीचूर्ण ॥ कडुंभा की जड़ में पिपली गुड़ मिलाइ एक तोला भर के खाने से सन्धि की वायु दूरहोवै ॥ पित्त कफाश्रितप्राण ॥ पित्त से प्राणवायु दुष्ट हो तो छर्दि दाहको पैदा करै और प्राणवायु कफ से युत दुष्टहो तो दुर्बलता तन्द्रा गिला अंगपना मुंहबिरसपना इन्हों को पैदा करे हैं ॥ पित्तकफाश्रितउदान ॥ पित्तसे उदान वायु दुष्टहो तो दाह मूर्च्छा भ्रम ग्लानि इन्होंको पैदाकरै है और कफसे उदान वायु दुष्ट हो तो पसीना नहीं आवै रोमावली खड़ी हो मन्दाग्नि शीत इन्हों को पैदाकरै है ॥ पित्तकफाश्रित समान ॥ पित्तसे समान वायु दुष्टहो तो स्वेद दाह गरमी मूर्च्छा इन्हों को पैदा करै और कफसे समान वायु दुष्टहो तो मलमूत्र रुकै रोमावली खड़ीहोशीत

को पैदाकरै॥ पित्तकफाश्रितअपान॥ पित्तसे समान वायु दुष्टहो तो दाह अंगफरकना परिश्रम इन्हों को उपजावै। और समान वायु कफसे युत दुष्टहो तो शरीरको स्तंभनकरै दण्डक सोजाशूलइन्हों को उपजावै॥ चिकित्सा॥ बातपित्त में बातपित्त नाशक क्रियाकरै और वातकफमें बातकफ नाशक क्रियाकरै॥ आक्षेपकलक्षण॥ धमनीनाड़ियों में रहता जो बायुसो कुपित हो बारम्बार शरीर को कंपावै इसवास्ते इसको आक्षेपक कहते हैं। आक्षेपकके ४ भेदहैं पित्त बातका १ कफबात २ केवल बात ३ अभिघातजवात ४ ऐसे हैं॥ केवलबातजाक्षेपक॥ हाथ पैर माथा पीठ कटितट इन्हों को बायु स्तंभितकरि दण्डकीसीभांति करदेयहै इसवास्ते दण्डककहै हैं यह असाध्य है॥ सामान्य चिकित्सा॥ इसमें शिराको बेधै व बातनाशक क्रियाकरै और तेज औषधोंको नाकमें फूकनेसे चढ़ावै व नस्यदेवै इन्हों से संज्ञा प्राप्त करै॥ आक्षेपक चिकित्सा॥ बालिया का काढ़ा दशमूलका काढ़ा यव कुलथी बेर इन्होंका काढ़ा दूध ये आठआठ भागलेइ मीठा तेल १ भाग मधुरगण १ तोला सेंधा १ तोला अगर १ तोला राल १ तोला शुंठि १ तोला देवदारु १ तोला मंजीठ १ तोला पद्माख १ तोला कूट १ तोला इलायची १ तोला नागबला १ तोला सारिवा १ तोला जटामांसी १ तोला शिलाजीत १ तोला तमालपत्र १ तोला तगर १ तोला लघुसारिवा १ तोला बच १ तोला शतावरी १ तोला आसगन्ध १ तोला सौंफ १ तोला सांठी १ तोला इन्होंको मिलाय काढ़ाकरि सोनाके व चांदीके व चीनीके बरतनमें घालि रक्खै पीछे मालिश से यह महाबला तेल बहुत जल्दी सब तरहके आक्षेपकोंको व बातव्याधिको हरै और हिचकीको व श्वास को व अधिमंथको व गुल्मको व खांसीको हरै और ६ महीने लाने से अण्डवृद्धिको हरै और बलको देखि बिचार बरतनेसे सूतिकारोग को हरै और गर्भकी इच्छा करने वाली स्त्री व धातुक्षय वाला पुरुषभी बरते तोभी हितहै और बायुक्षीणको व मर्म में चोटलगे को व अङ्गका भङ्ग व भिन्न इन्होंमें हितहै। इसको राजा धनाढ्यसुखी सुकुमार आदि सब बरतैं॥ आक्षेपकभेदअपतंत्रक॥ वायलबस्तु के

सेवनसे कोपको प्राप्तभयो जो वात सो अपने स्थानको छोड़ि हियामें जाय प्राप्त होय शिर और कनपटी में पीड़ा करै कमान धनुष की भांति शरीरको नवायदे और वह मोह को प्राप्त हो और बड़े कष्टसे ऊंचे प्रकार श्वासले और वाको नेत्र फटजाय व मिटजाय और उसका कण्ठ कबूतरकीसीनाईं बोले संज्ञाजातीरहै ये अपतंत्र के लक्षण हैं ॥ चिकित्सा ॥ इसमें रेचन निरूह वस्ति बमन ये लेवे नहीं और तेज नस्य लेनेसे कफवातसे रुके श्वासको बाहिरकरावै इससे संज्ञा प्राप्त हो ॥ हरीतक्यादि लेह ॥ हड़ वच रास्ना सेंधा आम्लवेतस घृत अदरखरस इन्होंका लेह बनाय चाटनेसेअपतंत्र कोहरै और आम्लवेतस न मिले तो अमली व चूकादेवै ॥ मरीचादिचूर्ण ॥ मिरच सहोंजनाके बीज बायविड़ंग फणस इन्होंके चूर्णसे शिर का रेचन करने से अपतंत्र जावै ॥ दण्डापतानक ॥ कफसे युक्त वायु धमनी नाड़ियोंमेंजाइ दण्डकी नाईं स्तंभनकरै यह दंडापतानकहै यह कष्ट साध्य है ॥ अपतानक ॥ नेत्र फटेसे होजाइ संज्ञाजाती रहै कंठमें कफबोलै संज्ञा आवै तब चैन पड़ै और हियां से बायुहटै तब सुखहो और हियामें आवै तब मोहहो इस अपतान वायुसे संयुक्त असाध्य है और यह स्त्री के गर्भपात से व पुरुष के बहुतलोहू निकलनेसे होयहै व बहुत चोट लगनेसे होयहै ॥ चिकित्सा ॥ इसअपतानकमें जो नेत्र फटेनहों व कंपनहीं हो और खट्वा पै पड़ने हारा नहो तो इलाजकरै। इसमें दशमूल का काढ़ा पिपली चूर्ण से युत पीवै और जीर्ण काढ़ा हुआ बाद मांसरस संयुक्त भातको खावै ॥ चिकित्सा प्रक्रिया ॥ पहिले तेलकी मालिश कराय पहसीना देवै पीछे तेज नस्यदेइ फस्त खुलाइ घृतकापान करावै और भोजनसे पहिले दहीमें मिरचोंका चूर्ण मिलाय पीनेसे व स्नेहबस्ति करनेसे अपतानक जावै ॥ धनुर्वात लक्षण ॥ धनुष कमानकी समान शरीर होजाय और शरीरको वर्ण और से और होजाय और मुंहमुचजाइ देहशिथिलहोजाइ चेत जाता रहै पसीना आवै यह धनुर्वात है इस रोग वाला १० दिनजीवै ॥ दूसराप्रकार ॥ कंठरुकै कमानकी नाईं बांका होजाय हृदय में पीड़ाहो और दंत बँधजाईँ मुंहमें शोषहो ठंढीवस्तु

की इच्छा बनीरहै ये धनुर्बातके लक्षण हैं ॥ कुब्ज लक्षण ॥ कोप को प्राप्त हुआ जो बायुसो हिया ऊंचोकरदे और हियामें पीड़ाघनीहो तिसे कुब्ज कहते हैं । नये कुबड़ेको बातनाशक औषधों से व स्नेहों से व मांसके रससे इलाज करै और ज्यादह कुबड़ाहो तो असाध्य है ॥ अंतरायामल ॥ पैरकी अंगुली टंकुना पेट हिया गला इन्होंमेंरहता जो बायु सो बड़ी नसों के समूह शरीरके माहिं पकावै पीछे उस के नेत्र फटि निश्चलता होजाइ डाढ़ी मुड़े नहीं और पसवाड़ो टूटोसो होजाइ कफ पड़े शरीर कमानकी नाईं भीतरको होजाइतिसे अंतरायामकहते हैं ॥ बाह्यायाम लक्षण ॥ बहुत बायल बस्तुके खानेसे कुपितहुआ जोबायु सो शरीरकी सगरीनसों व कांधा पीठको सुखाइ मनुष्यके शरीरको बाहरलीतरफ कमानकी नाईं बांकाकरि और उसके हियाको जंघाको तोड़डाले इसे बाह्यायाम कहते हैं ॥ सामान्य ॥ इन दोनुओं में अर्दितमें कहे औषध करै ॥ दूसराप्रकार ॥ बाह्यायाम अंतरायाम पशलीशूल कटिशूल खल्लीबात दंडापतानक इन्होंको स्नेह व स्वेदकर्म करि नाशै ॥ चिकित्सा ॥ बाह्यायाम अंतरायाम धनुर्बात कुब्जबात इन्हों को प्रसारणी तेलका मालिश करि शांत करै और बात ब्याधि नाशक कर्मोंसेभी इन्होंको शांतकरै ॥ सर्जतेल ॥ शलके तेलकी मालिशसे व दशमूलके काढ़ाके पान व नस्यलेनेसे धनुर्बात दूरहोइ ॥ एरण्डादि काढ़ा ॥ एरंडजड़ बालाजड़ दोनोंकटेली कालानोन शुंठि मिरच पीपल हींग बिजोराकी जड़ सेंधा इन्होंके काढ़ासे धनुर्बात नाशै ॥ पक्षबधकहें अधरंग ॥ किसी कारणसे कुपित जो वायु सो मनुष्य के आधे शरीरको पकड़ि सब शरीर की नसोंको सुखाइ को ईसा आधाअङ्गको नाशै और उसी आधेअंगकी नसों को निपटढीली और निकम्मी करदे और उन्हों को शून्यकरदेइ तिसे पक्षाघात कहेहैं और कोई एकांगरोग कहतेहैं ॥ सर्बांगरोग लक्षण ॥ सम्पूर्ण शरीरमें बायुकुपित हो स्थित होवै याने नाड़ी व नसों को शोषि शरीरमें निरुपयुत हो इस वास्ते सर्बांग रोग कहते हैं और पक्षाघात बायुपित्तसे हो तो दाह मूर्च्छासंताप उपजै और पक्षाघात बायु कफसेहो तो शीत सोजा भारीपना ये उपजतेहैं और केवल बायु

का पक्षाघात कष्टसाध्य होय है और पित्त कफ युत वायु से उपजा पक्षाघातसाध्यहोयहै और गर्भिणीस्त्रीके व प्रसूतास्त्रीके व क्षयीवाले के व रक्त झरनेवाले के पीड़ा रहित पक्षाघात उपजे तो असाध्यहै माषादिकाढ़ा ॥ उड़द कोंच एरंडजड़ लघुवलिया इन्हों के काढ़ा में हिंग व सेंधानोन मिलाइ पीने से पक्षाघातकोहरै और इसमें हिंग १ मासा सेंधा १ माशा जीरा३ माशामिलावै ॥ ग्रंथिकादितेल ॥ पिपलामूल चीता पिपली शुंठि रास्ना सेंधानोन इन्होंकाकाढ़ा व माषादि काढ़ा इन्हों में तेल को पकाइ मालिश करनेसे पक्षाघात दूरहोवै ॥ माषादितेल ॥ उड़द कोंच अतीस एरंड जड़ रास्ना शतावरी सेंधा इन्होंकाकल्क और उरद वला इन्होंके चतुर्थांश काढ़ामें तेलकोमिलाइ पकाइ मालिश करने से पक्षाघात जावै ॥ माषादिसप्तक ॥ उरद वला कोंच सुगंध तृण रास्ना असगंध एरंडजड़ इन्हों के काढ़ा में हिंग सेंधा मिलाइ प्रभात में कछुक गरम गरम पीनेसे यह पक्षाघात को व मन्यास्तंभको व कर्णनादको व अर्दितको नाशकरै ॥ माषतैल ॥ पिपलामूल चीता पिपली रास्ना कूट नागरमोथा सेंधा उरद इन्हों के काढ़ा में तेलको सिद्ध करि मालिश करने से पक्षाघात जावै ॥ कपिकच्छ्वादिकाढ़ा ॥ कोंचकेबीज वलिया एरंडजड़ उरद शुंठि इन्हों के काढ़ा में सेंधानोन मिलाइ नाकसे पीनेमें पक्षाघातको व शिरोग्रह को व हनुग्रह को व अर्दित को व संधिवात को व मन्यास्तंभ को हरै ॥ गुग्गुलपक्षाघातपर ॥ पिपलामूल शुंठि चाव चीता पाढ़ा वायविड़ंग इंद्रयव हिंग वच भारंगी पित्तपापड़ा गजपिपली अतीस सिरस जीरा स्याहजीरा अजमोद ये समानभाग लेइ इन्हों से दुगना त्रिफला और इन्होंके बराबर गुग्गुल मिलाइ खानेसे पक्षाघातको हरै ॥ रालतेल ॥ रालका चूर्णकरि नलीके यंत्रसे तेलकाढ़ि मालिश करने से पक्षाघात को हरै। व कडुवी तुम्बी के बीजों में सिद्धकिया तेल व निंबोलियों में सिद्धकिया तेल की मालिश से व गीदड़ कबूतर मुरगा इन्हों के पीता के लेप करने से पक्षाघात शांतहो ॥ शुंठीचूर्ण ॥ शुंठि का चूर्ण २८ तोला गौका दूध २८ तोले में बराबर का घृत मिलाइ भूने पीछे लहसुन २८ तोले लेइ

पीसि मिलाइ खानेसे पक्षाघात को व हनुस्तंभ को व कटिभंग को व बाहुपीड़ाको व बातरोग को नाशकरै ॥ अर्दितकहेलकवाललक्षण ॥ ऊंचेस्वर से बोलने से व कठिन पदार्थों के खाने से और बहुतहँसै और बहुत जँभाई लेनेसे और शिरपै बहुत बोझा उठानेसे और बिषम सोना और बिषम भोजनसे मनुष्यके शिरमें नाकमें ओंठ में ठोढ़ीमें मस्तकमें नेत्र की संधिमें रहै जो बायु सो मनुष्यके मुख में अर्दितरोग को पैदाकरैहै सो उस पुरुष का मुख आधा बांको हो-जाय और उस का कांधा मुड़ेनहीं देखा जावै नहीं और उस के कांधा में और दाढ़ी में और दांतोंमें पीड़ारहै औ शिर हालबोकरै अच्छी तरह बोला जावैनहीं तिसे अर्दित कहते हैं सो बायुका १ पित्तका २ कफका ३ ऐसे ३ प्रकार का है ॥ वातार्दित ॥ लाल घनी पड़ै शरीर में पीड़ा घनी हो शरीर कांपै घनो फरकै होड़ी मुड़ै नहीं बोला जावै नहीं ये बातार्दित के लक्षण हैं ॥ पित्तका अर्दित लक्षण ॥ मुंह पीलाहो ज्वरहोय आवै प्यासलगे मोहहोतो पित्तका अर्दित जानिये ॥ कफका अर्दित लक्षण ॥ कपोल शिर कांधा इन्होंमें सोजाहोतो कफार्दित जानिये ॥ चिकित्सा ॥ स्नेहपान नस्य बातना-शक भक्ष्यपदार्थ की पिंडी बांधना स्वेदनकर्म ये अर्दित में हित हैं। व दशमूल के काढ़ा में व बिजौरा के रस में व बला के काढ़ा में व पंचमूलके काढ़ा इन्होंके संग दूधपीनेसे बातार्दित जावै। व उड़दकी पीठीको नोनी घृतके संग खाइ व मांस रसमें दूधमिलाय पीनेसे व दशमूल के रसको पीनेसे अर्दित जावै॥ पित्तार्दित ॥ चि-कने पदार्थोंको खानेसे व शीतल इलाजसे व घृतवस्ति व घृतकी सेकसे व फस्त करानेसे पित्तार्दित जावै। व वाका मुंहवाला दाह संयुक्त हो तो बात पित्त नाश करनेवाली क्रियाकरै ॥ कफार्दित ॥ अर्दित रोगीको कफक्षय हुये पीछे पुष्टऔषधदेवै और अर्दितरोग में सोजा होय तो बमन करावै व लहसुनका कल्क तिलोंके तेल में मिलाय खानेसे अर्दितरोगजावै जैसे वायुसे मेघ व त्रिफलानिंबो-लीकारस बांसा परवल इन्होंके काढ़ामें गुग्गुल मिलाय प्रभातमें पीनेसे अर्दित बायुजावै ॥ अर्दित साध्याऽसाध्य ॥ क्षीणपुरुषके और

जिसके नेत्रनहींमिचे निरुके अस्फुटभाषण करनेवालाके ३ वर्ष से उपरांत कांपनेवालेके अर्दितरोग महाअसाध्य होयहै औरइनसब आक्षेपकादिक वायुरोगोंमेंरोग वेगगयेपीछेसुखहोय॥ दूसराप्रकार॥ उड़दके बड़े नूणीके घीकेसाथ सात ७ रात्रितक खाने से ॥ असाध्य लहसुनविधि॥ लहसुनकारस ४ तोले वा २ तोले हींग १माशा जीरा १ माशा सेंधानोन १ माशा कालानोन १माशा शुंठि १माशामिरच १ माशा पीपल १ माशा इन्होंको पिलायअग्निबलदेख खावे ऊप-रअरंडकी जड़का काढ़ा पीवै इसयोगको एकमहीना तक सेवने से सर्वांगवात उरुस्तंभगृध्रसीशूल हृद्दरोग कृमिरोग कटिरोग पीठरोग पेटकावायु इन्हों को दूरकरै॥ हनुग्रहलक्षण॥ दांतनकोपाड के जीभ में घनी घसने से सूखा चबेना आदिके चबाने से चोटके लगने से ठोढ़ी जड़में रहती जो वायु कुपित होयके मुखमें फटोही राखदे व बंदही राखदे तब पुरुष कष्टसे बोलै और कष्टसे चबेनाको चाबै॥ चिकित्सा॥ दशमूल पीपली इन्होंके काढ़ासे व पीपल वृक्षके रस में पीपलीका चूर्ण मिलाय पीनेसे हनुग्रह अरु हनुस्तंभ मन्यास्तंभ व अर्दित इन्होंको दूरकरै व बंदहुआमुख व ठोढ़ीको चिकणे पदार्थों का बफारा देके खोलै और फटेहुये मुखको वैद्य अच्छी रेती से यथार्थ प्राप्तकरै व पीपली अदरख इन्होंको वारंवार चाबै गरमपानी के संग प्यूनासे मुंहको भीतरसे शुद्धकरै व लहसनको छील तिलों के तेलमें पीस सेंधालवण मिलाय खानेसे हनुग्रह जावै॥ रसोन्वटक॥ लहसुनका गोलाकरि उड़दकी दालकी पीठीमें मिलाय सेंधा-नोन अदरख हींग मिलाय बड़े बनाय तिलके तेलमें पकाय सहज२ अग्निबल देख खाने से हनुग्रह जावै॥ अभ्यंजन॥ मीठे तेल को पकाय मालिशकरि कोमल पसीनालेइ और तेलकी बस्ति शिरमें धारणकरने से हनुग्रह जावै प्रसारणी कहै याने खींपका तेल खींप ४०० तोले एक द्रोण भर पानी में पकाय चतुर्थांश काढ़ा रक्खे और काढ़ाके समान दही व कांजी तेल मिलावै और तेलसे चौगुना दूधमिलावै तेलसे आठवां हींसा औषधों का कल्क मिलावै वे औषध ये हैं मुलहठी पिपलामूल चीता सैंधव बच खींप देवदारु

रासना गजपीपल भिलावां सौंफ जटामासी इन्होंका कल्क मिलाय तेलको पकाय मालिश करनेसे बात कफ रोगको कुब्जवायुको खंज-बायु को पंगुबायु को गृध्रसी को अर्दित को हनुग्रह को पीठ शिर नाड़ इन्होंके स्तम्भको बिषम बायुको नाशकरै॥ मन्यास्तंभ॥ दिन के सोनेसे बिकृत अन्न खाने से बिगड़े जल में न्हाने से बुरीतरह ऊपर को देखने से बायु जो है कफसे मिल कांधा को मुड़नेदे नहीं तिसको मन्यास्तंभ कहिये॥ चिकित्सा॥ दशमूलके काढ़ासे व पंच-मूलके काढ़ा से व रूखे पदार्थ कासीना से व नस्यसे मन्यास्तम्भ जावे व मीठातेल व घृत को गला पे मलि आक के पत्ते बांधै व अरंड के पत्ते बांध ज्यादह स्वेदनकरै व मुर्गा के अंडे के पानीको सेंधानोन मिलाय गलापै मलनेसे मन्यास्तंभ जावै॥ जिह्वास्तंभ॥ बाणी में बहनेवाली जो नस तामें रहता जो बायु सो कुपितहोय जीभमें स्तंभकरै है सो वह जीभ जल अन्न के खानेमें व बोलने में समर्थ न होवैहै इसको जिह्वास्तंभ कहैहैं॥ चिकित्सा॥ इसमें दोषका बलदेख बातब्याधि नाश करनेवाली चिकित्सा करै व अर्दितबायु की कही चिकित्सा करै॥ कल्याणका अवलेह॥ हल्दी बच कूट पीप-ली शुंठि जीरा अजमोद मुलहठी इन्होंको पीस शहद घृत मिलाय इक्कीस राततक चाटने से अच्छीतरह बोलै व मेघ व नक्कारा व कोयल इन्होंके समान गम्भीर शब्द बोलै और इसके सेवनसे बहरा व गूंगा अच्छा हो॥ शिरोग्रह॥ बायुलहू से मिल मस्तक की नसोंको रूखीकरै उन्होंमें पीड़ाकरै नसोंको कालीकरै यह शिरोग्रह असाध्यहोहै॥ चिकित्सा॥ इसमें नाड़ीगत बायुकी चिकित्सा करै व दशमूलके काढ़ामें पकाया तेलकी मालिश व शिरोवस्तिकर्मकरै॥ गृध्रसीलक्षण॥ पहिले कूलामें पीड़ाहोय पीछे गुदा जंघा कटि पीठ गोड़ा पैर इन्हों को क्रमसे स्तंभन करै और पीड़ा करै बारंबार ग्रहण करै और पग बहुत सहज उठै तिसे गृध्रसी कहिये सो दो दो प्रकार की होहै बायु की १ बात कफ की २॥ बातगृध्रसीलक्षण॥ पीड़ा बहुत हो देहबांका होजाय गोड़ा जांघ और संधि इन्होंमें शूलचले और ज्यादहस्तंभनकरै तो बायुकी गृध्रसी जानिये॥ बातकफगृध्रसीलक्षण॥

शरीर भारी रहै मंदाग्नि होय तन्द्रा होय मुखसे लारगिरै अन्न से वैर हो तिसे वात कफकी गृध्रसी जानिये ॥ गृध्रसीचिकित्सा ॥ इस में जुलाब व वमन कराय आम रहित दीप्ताग्निवाले को वस्तिकर्म करावे व आदि में वस्तिकर्म न करै वमन रेचन कराये विना नहीं तो स्नेहवस्ति व्यर्थजाय जैसे राखमें घीकोहोमैं तैसे ॥ एरंडतैलयोग ॥ प्रभात में गोमूत्र में अरंडीका तेल मिलाय एक महीनातक पीनेसे गृध्रसी व उरुग्रह को नाशकरै तेल व घृत को अदरख व बिजौरा इन्होंके रसमें व आम्लवेतस के गुड़में मिलाय पीनेसे कटि और जांघ और पीठ शिर गला इन्होंकाशूल व गुल्मको व गृध्रसीको व उदावर्त्त को हरै एरंड के बीजोंको छोल दूध में खीरबनाय खाने से गृध्रसी कटिशूलको हरै ॥ गृध्रसीहरतैल ॥ सेंधा ८ तोला शुंठि २० तोला पिपलामूल २० तोला चीता मिलावां गीरी ८ तोला कांजी ८८ तोला तेल ६४ तोला मिलाइ पकाइ तेलकी मालिश करने से गृध्रसी को व उरुग्रह को व बवासीर को व सब बातविकारों को नाशकरै ॥ शिरोवेधगृध्रसीपर ॥ लिंग वस्ति के नीचे चार अंगुल नाड़ीको वेधनकरै और इससे शांत न हो तौ पैरकी चिटनीअंगुली को जलावै ॥ निम्बकल्क ॥ बकायनकी जड़के कल्क को वर्त्तने से गृध्रसी जावै व पिपली पिपलामूल भिलावां इन्हों के कल्क में शहद मिलाइ उरुस्तम्भ को हरै व पंचमूल के काढ़ा में निशोथ का चूर्ण मिलाइ पीने से गृध्रसी को व गुल्म को नाशै ॥ गृध्रसीचिकित्सा ॥ एरंडजड़ बेलजड़ दोनों कटैली इन्हों के काढ़ा में कालानोन मिलाइ पीनेसे अंडशूल को व वस्तिशूल को व बहुतकालकी गृध्रसी शूल को हरै। व गोमूत्रमें एरंडका तेल पिपलीचूर्णमिलाय पीने से बहुत कालकी बात कफ सम्बन्धी गृध्रसी जावै। व बासा जमालगोटा जड़कटैली अमलतास इन्हों के काढ़ा में एरंड तेल मिलाइ पीनेसे गृध्रसी दूरहोय। व बकायन के सतको पानी में पीस पीनेसे असाध्य गृध्रसी जावै। व निर्गुण्डी के पत्तों के रस को कोमल अग्निपर पकाइ पीनेसे असाध्य गृध्रसी को नाशै ॥ रास्नागुग्गुल ॥ रासना ४ तोला गुग्गुल ५ तोला घृतमें पीस गोली बनाइ खाने से

गृध्रसी दूर होवै ॥ रास्नाकाढ़ा ॥ रास्ना गिलोय अमलतास देव-
दारु गोखुरू अरंडजड़ सांठी इन्होंके काढ़ामें शुंठिका चूर्णमिलाइ
पीनेसे जंघा पीठ शिर गला बांस पशुली इन्हों का शूल दूरहो ॥
पथ्यागुग्गुल ॥ हड़ १०० । बहेड़ा २०० । आंवले ४०० । ऐसे फल
लेइ गुग्गुल ६४तोलाले इन्होंको एकद्रोणभर पानी में भिगोय प्र-
भातमें पकाय आधारक्खै पीछे लोहा के पात्र में पकाय बायबिड़ंग
२तोला जमालगोटाकीजड़ २ तोला त्रिफला २ तोला निशोथ २
तोला शुंठि २तोला मिरिच २तोला मिलाय तैयारकरै पीछे इसको
यथेष्ट भोजन करनेवाला और ठंढापानी पीनेवाला खावैतो गृध्रसी
को नयाखंजवाय को तिल्ली को पेटरोग को पंगलाय को पांडु को
खाज को छर्दि को बातरक्त को हरै यह पथ्यादिक गुग्गुल पृथिवी
में प्रकट है यह नाग याने हाथी समान मनुष्य में बल घोड़ासमान
बेग पैदाकरै और उमर व नेत्रों की दृष्टिको बढ़ावै पुष्टिकरै बिष को
हरै छाती फटीहुई को जोड़ै यह वैद्यों ने सब रोगों में हित कहा है
व असगन्ध में मिश्री मिलाय घृतके संग खाने से कमर के शूल
को हरै ॥ एरंडतैलयोग ॥ असगन्ध बला शुंठि दशमूल इन्होंकेकल्क
में एरंड तेल को पकाय पीनेसे व वस्तिकर्म में बर्त्तने से गृध्रसी को
हरै ॥ बिश्वाचीलक्षण ॥ हाथकी अंगुलीनीचे जो कंग्रानाड़ीहै तिसमें
रहता जो बायु सो कुपितहोय भुजा के पीछे खाजकरि हाथको निक-
म्माकरदे तिसे बिश्वाची कहिये ॥ चिकित्सा ॥ दशमूल बला उड़द
इन्होंके काढ़ामें तेल व घृत मिलाय शामके वक्त भोजनकरि इसका
नस्यललेनेसे बिश्वाची व अपबाहुकदूरहोइ ॥ माषतैल ॥ उड़द सेंधा
बलियार रास्ना दशमूल हींग बच शतावरि इन्होंके काढ़ामें तेलको
पकाइ शुंठिके चूर्णकेसंग खानेसे बाहुशोक अपबाहुक बिश्वाची प-
क्षाघात व अर्दित इन्होंकोहरै और इसको भोजनकरकेसेवै ॥ क्रोष्टु
शीर्षलक्षण ॥ बातलहूसे जोगोड़ामें सोजा व पीड़ाहो तिसेक्रोष्टुशीर्षक-
हैहैं और गोड़मोटाहोजाय तो क्रोष्टुशीर्षवत् कहैहैं ॥ चिकित्सा ॥ गि-
लोय गूगल त्रिफला इन्होंके काढ़ाको पीनेसे व दूधमें अरंडीकातेल
मिलायपीनेसे व धाराकाचूर्ण खानेसे क्रोष्टुशीर्षजाय ॥ सामान्यचिकि-

त्सा ॥ तीतरके मांसकेरसमें गूगलमिलाय पीनेसे व वातरक्तनाशक क्रियासे क्रोष्टुशीर्षदूरहोइ ॥ खंज व पंगुलक्षण ॥ कटि में रहता जो बायु सो जांघ की नसों को पकड़ स्तंभित करदे तिसे खोड़ा बायु कहिये और कटि में रहता जो बायु सो जांघ की नसों को ग्रहण कर दोनों जांघों का नाश करै चलने दे नहीं तिसे पंगुल बायु कहिये ॥ चिकित्सा ॥ इन नये रोगवाले को जुलाबसे व स्थापन वस्ति से व पसीनासे गूगल सेवनसे स्नेहपीनेसे वस्तिसेशुद्धकरै ॥ कलापखंजलक्षण ॥ जिससमय चलै तब शरीरकांपै और लंगड़ासा दीखै और नसोंने अपना ठिकाना छोड़दियाहो तो कलापखंज कहिये ॥ चिकित्सा ॥ इसमें खंज पंगुबायु के कहेहुये कर्मकरै और बिशेष करके स्नेहन कर्म करै ॥ चिकित्सा ॥ कर्म जो कलापखंज के निदान पूरे न मिलें तो लहसन खाय रोगको नाशकरै ॥ वातकंटकनिदान ॥ ऊंची तिरछी जगह में पैर धरते पीड़ाहोय पीछे टंकनों में पीड़ा आयरहै तिसे वातकंटक कहिये ॥ चिकित्सा ॥ इसमें बारम्बार फस्त करावै व अरंडी का तेल पीवै व सुइयों को गरमकर दागदेवै ॥ पाददाहलक्षण ॥ वात पित्त लहू ये तीनों मिल पैर के तलुवामें खाज चलाय दाहको पैदाकरैं तिसे पाददाहकहिये ॥ चिकित्सा ॥ इसमें विशेषकरि बातरक्तकी कहीहुई क्रियाकरै व मसूरकी दालको पीस गरमकर शीतल पानीमें तिसका पैरके तलवोंमें लेप करनेसे पाददाहजावै व नूड़ी घीसे पैरोंको चुपड़ि अग्निपै तपानेसे जल्दी पाददाह शांत होवै ॥ लेप ॥ गिलोय अरंडके बीज इन्होंको दहीमें पीस पैरोंमें लेपकरनेसे व बकायनका फल व निंबोलीको पीस लेपकरनेसे पाददाहजावै॥ पादहर्षलक्षण ॥ जाके दोनोंपैर झंझनाहटकर सोजाय तिसे पादहर्षकहिये। यह कफ बातसे होवेहै ॥ चिकित्सा॥ इसमेंकफबातनाशक औषध करै॥ बाहुशोषनिदान॥ कांधामें रहता जो बायु सोकुपितहो भुजाको सुखायदे और स्तंभिकरदे और पीड़ाकरै तिसे बाहुशोष कहिये॥ चिकित्सा॥ इसमें भोजन करि वृहत् कल्याण घृत को खावै व बलियार की जड़के काढ़ा में सेंधालवंण मिलाय पीने से बाहुशोष को व मन्यास्तंभ को हरै॥ रसोन्कल्क ॥ दूध व तेल घृत

मांस इन्होंके संग अलग २ खानेसे व सांठी चावल के संग लहसन को दोदो तोले प्रतिदिन वृद्धि से खावै ७ दिन तक तो बातव्याधिको व बिषमज्वर को व शूलको गुल्म को मंदाग्निको प्लीहा को हाथ पशुली माथा इन्हों के शूलको व शुक्रदोष को हरै॥ बाहुशोषचिकित्सा॥ बलियार के काढ़ा में सेंधा लवण मिलाय पीने से वउड़दके रसकी नस्यलेनेसे बाहुशोषदूरहोवै॥ अवबाहुकलक्षण॥ कंधामें रहता जो बायु सो कुपितहोय कफ को सुखाय नसोंमें संकोच करि अवबाहुक रोगको पैदाकरैहै॥ चिकित्सा॥ ठंढेपानी में मंजीठ व गूगल को पीस नस्य लेने से अवबाहुक व मन्यास्तम्भ व कन्धेके समीपके रोग दूरहोवैं व बलियार नींबकी जड़ इन्होंके काढ़ामें कोंचका रस मिलाय पीनेसे व उड़दके काढ़ाकी नस्य लेनेसे अवबाहुकमिट बज्रके समान अच्छी बाहु होजावै। माष तैल॥ उड़द अलसी यव पियाबांसा कटैली गोखुरू सहोंजना जटामांसी कोंच के बीज बाला बिदौला कुपाशका शणका बीज कुलथी बेरबड़बेरी का इन्होंकेकाढ़ामें बकराकेमांसका रस और शुंठि पीपली सौंफ एरंड जड़ सांठी हरड़ बेल रासना बलियार गिलोय कुटकी इन्होंका चूर्ण मिलाय तेलको सिद्धकरि मालिशकरने से अवबाहुकनाशहोयअलसी देवदारु शुंठि इन्होंके चूर्णको गुड़मेंमिलाय गोलीबनायखाने से अवबाहुकजावै संशयनहीं॥ माषतैलादि मर्दन॥ माषतेलसे व लहसन के रससे व बाहुके मालिशकरनेसे व दशमूल उड़द इन्हों के काढ़ासे अवबाहुकजावै॥ मूक मिम्मिण व गद्गदनिदान॥ कफसेसंयुक्त वायु व धमनी नाड़ी शब्दको बहनेवाली तिन्हें आच्छादनकर मनुष्यों को गूंगा व नाकही में बोलना व गद्गदरोगों को पैदा करै है॥ सारस्वत घृत॥ घृत ६४ तोला सहोंजना ४ तोला बच ४ तोला सेंधानोन ४ तोला धवकेफूल ४ तोला लोध ४ तोला इन्होंको बकरीके दूधमें पकाय घृतको सिद्धकरि बिधि पूर्बक सेवने से यह सारस्वत घृत गूंगापन को व मिम्मिण व गद्गद रोग को हरै और बुद्धि को व स्मृतिको बढ़ावै व वाणीकेदोषकोहरैहै व दशमूलके काढ़ा में हींग पोष्करमूल का चूर्णमिलाय पीने से मिम्मिणवाणी को हरै है॥ तूनी

लक्षण ॥ मलमूत्र के स्थानमें रहे जो वायुसो गुदा लिंगमें पीड़ाकरे तिसे तूनीकहिये ॥ प्रतूनीलक्षण ॥ गुदा लिंगमें रहैजो पवन सो वाने पीड़ाकरि पेडूमें जायपीड़ाकरै तिसेप्रतूनी कहतेहैं ॥ चिकित्सा ॥ इन्हों मेंस्नेहवस्तिकरावै व नोन घृतमें मिलाय खावै व पिप्पलादि चूर्ण पानीकेसंगखावै व हींग सेंधानोन गरमपानीमें मिलायपीवै व घृतमें हींग सेंधामिलाय पीवै ॥ आध्मानलक्षण ॥ सबपेटमें अफारा घनाहो और पीड़ा बहुतहोजाय और अधोबायुरुकजाय तिसे आध्मानकहिये ॥ चिकित्सा ॥ इसमेंपहिले लंघनकराय अग्निको दीपन कराय पाचन देवै पीछेफलबर्त्ति वस्तिकर्मकरावै ॥ नाराचचूर्ण ॥ पिपली १ तोला निशोत ४ तोला मिश्री ४ तोला इन्होंका चूर्णबनाय खानेसें आध्मान जावै ॥ दारुषटूकलेप ॥ देवदारु बच कूट शतावरीहींग इन्हों को निंबु रसमें पीस गरमकरि पेटके ऊपर लेपकरनेसे अफारा दूर हो। व शूलजावै ॥ महानाराच रस॥ हड़४ तोला अमलतास४ तोला आमला ४ तोला जैपाल ४ तोला कटुकी ४ तोला थोहरदूध ४ तोला निशोत४ तोला नागरमोथा ४ तोला इन्हों को ५१२ तोले पानीमेंपकायअष्टमांश काढ़ाकरै पीछे छिलेहुये जमालगोटाके बीज ४ तोला महीनकपड़ा में बांधि काढ़ामें पोटली को छोड़ि सहज २ पकाय पीछे जमालगोटा के बीज ८ भागशुंठि ३ भाग मिरच २ भाग पारा २ भाग गन्धक २ भाग इन्हों को १ पहर तक खरल करै पीछे इस नाराच रसको १ रत्ती प्रमाणखावै ठंढे पानीके संग ये रोग दूर होवें अफारा शूल वायु का रोध प्रत्याध्मान उदावर्त्त गुल्म पेट केरोग ये सब नाश होवैं और जुलाब का वेग शांत हुये पीछे दहीभात मिश्रीखावै अथवा दहीभात सेंधानोनखावै ॥ प्रत्याध्माननिदान ॥ पसली और हियामें अफारो होवेनहीं और नाभिसे लेय पेट तक अफाराहो तिसेप्रत्याध्मानकहिये ॥ चिकित्सा ॥ इसमें वमन लंघन दीपन बस्तिकर्म्म ये करवावै ॥ बाताष्ठीला निदान ॥ नाभि के नीचे पवनकी गांठ पत्थर सी बँधजाय वह गांठ मलमूत्र कोरोकदे ताको बाताष्ठीलाकहिये ॥ प्रत्यष्ठीलालक्षण ॥ नाभिकेनीचे पवनकी गांठ पाषाण सरीखी और तिरछी उठके मलमूत्रको रोकदे

और पीड़ा घनीकरै तिसे प्रत्यष्ठीला कहिये ॥ हिंग्वादिचूर्ण ॥ सूनी हींग पीपलामूल धनियां जीरा वच चाव चीता पाडल कचूर अमली सेंधानोन मणयारीनोन कालानोन शुंठि मिरच पिप्पल जवाखार सुहागाखार अनार हड़ पोखरमूल आम्लवेतस सफ़ेदजीरा हपुषा इन्हों के चूर्णको अदरख के रसमें और बिजौराके रसमें भावनादेय खानेसे दोनोंतरह के आष्ठीले दूरहों। और इस चूर्णसे वाताष्ठीला प्रत्यष्ठीला गुल्म अंतर विद्रधी ये रोग शांत होवैं ॥ दूसराप्रकार ॥ हींग आम्लबेतस वच शुंठि मिरच पीपल चावचीता पीपलामूल कचूर अमली अजमोद कंकोल पाडला जीरा असगन्ध पोखरमूल मोटी शेरणी जवाखार सुहागाखार चिरौंजी हड़ ये समभागलेय चूर्णकरि खानेसे हिचकीको व अफाराको व मलबद्धताको व अंडवृद्धिको व खांसीको व श्वासको व मंदाग्निको व अरुचिको व प्लीहाको व बवासीरको व शूलको व गुल्मको व हृद्रोगको व अश्मरीको व पांडु को हरै ॥ हिंग्वादियोग ॥ हींग बच मणयारी नोन शुंठि जीरा हड़ चीता कूट ये सब एकोत्तरभाग वृद्धिसे लेय चूर्णबनाय खानेसे गुल्मको व पेटरोगको व अष्ठीलाको व हैजाको नाशै ॥ नादेयादिकाढ़ा ॥ नादेयी कूड़ाकीछाल, आक, सहोंजना, बड़ीकटैली, थोहर, बेलफल, भिलावां पलाश, नींब, पित्तपापड़ा, ऊंगा, कदम्ब, चीता, बासा, नागरमोथा, पाडल इन्होंके काढ़ामें सेंधानोन हींगमिलाय पीनेसे गुल्मको व पेटके रोगको व अष्ठीलाकोहरै ॥ बिडंगासव ॥ वायबिड़ंग २० तोला पीपलामूल २० तोला पाडल २० तोला आमला २० तोला बाला २०। तोला कूड़ाकीछाल २० तोला इन्द्रयव २० तोला रासना २० तोला भारंगी २० तोला लेय १४मन १३ सेर पानीमें पकाय आठवांहिस्सा रक्खै ठंढा हुये बाद ३०० तोला शहद मिलाय धवके फूल ८० तोला शुंठि मिरच पीपल ३२०० तोला दालचीनी तमालपत्र इलायची ८ तोला प्रत्येकलेय राल ४ तोला धतूराबीज ४ तोला बाला ४ तोला लोध ४ तोला इन्होंकोमिलाय घीसेचिकने बरतनमें घालि १ महीना तकधरै पीछे इसको खानेसे प्रत्यष्ठीलाको व भगंदरको व उरुस्तंभ को व अश्मरीको व प्रमेहको व गंडमालाको व विद्रधिको व आढ्य-

वातको व हनुस्तम्भको नाशकरै ॥ वस्तिवातलक्षण ॥ पेडूकी वायु कुपितहो मूत्रअच्छीतरह उतरताहो ताकोरोंकदे और मूत्रकृच्छ्रादि अनेक विकारोंको पैदाकरै तिसे वातवस्ति कहतेहैं ॥ चिकित्सा ॥ वलियारकीछालके चूर्णको मिश्रीमें मिलाय १ तोलाखावै दूध १६ तोला के संग वस्तिवात दूरहोवै ॥ हरीतक्यादिचूर्ण ॥ हड़ बहेड़ा आमला इन्होंकेचूर्ण में लोहाकाभस्म मिलाय शहदमें मिलाय चाटनेसे वस्तिवात जावै ॥ यवक्षारचूर्ण ॥ जवाखारके चूर्णको खांड़में मिलाय खानेसे मूत्रनिग्रह जावै ॥ कूष्मांडबीजयोग ॥ कोहलाके बीज ककड़ी केबीज इन्होंकोपीसि वस्तिपर लेपकरने से मूत्रनिग्रह शान्त होवै ॥ आमलक्यादियोग ॥ आमलाको पीसि वस्तिभाग पर लेपकरने से मूत्रनिग्रह दूरहोवै ॥ चन्दनादिवर्त्ति ॥ कपड़ाकीवत्तीको चन्दन सफ़ेद मेंभिगोय लिंगमें व योनिके मुखमेंदेनेसे व कपूरकीवत्ती इन्हीं स्थानों में देनेसे मूत्रनिग्रह दूरहोवै ॥ वस्तिवायुकुपितचिकित्सा ॥ इसवायु से वस्तिको शुद्धकरै ॥ कंपवायु ॥ सम्पूर्ण अंगोंको कँपाय शिरको ज्यादे कँपावै तिसे कंपवायु कहतेहैं ॥ खल्लिलक्षण ॥ जोवात पैर जंघा गोड़े हाथ इन्होंकीजड़कोढीला व शूलकरदे तिसेखल्लीकहे हैं ॥ चिकित्सा ॥ कूट सेंधानोन इन्हों का कल्क चूका के तैल में मिलाय गरम कर मालिशकरनेसे खल्ली वात को व शूलको हरै ॥ स्थान नामलक्षणवातव्याधिनिदान ॥ बाक़ीरहे वायों को स्थान के अनुरूप नामधरै और इन्हों में पित्तादिकों का संसर्ग जानो वे वातभेद कहतेहैं अल्पकेश वाचालपना गुड़गुड़शब्दपेटमें पशुलीशूल मलकागाढ़ापना मलकी अप्रवृत्ति स्तंभ रूखापना माड़ापना शरीरका कालापना शीत रोमहर्ष शरीर दूखना अंगशूल हड़फूटनी नाड़ियोंका फुरणा अंगमर्द अंगसूखना अंगसंकोच अंगभ्रंश मोह चित्तकाचंचलपना निद्रानाश स्वेदनाश बलहानि डरना शुक्रक्षय स्त्री धर्मका नाश परिश्रम ऐसे प्रकारके रूपोंको कुपितहुआ वायुपैदाकरै है और हेतु व स्थान के योगसे नानाप्रकारके रोगोंको पैदाकरैहै ॥ चिकित्सा ॥ इन्होंकी चिकित्साबातव्याधि सरीखीकरै ॥ लशुनसेवन ॥ अन्नोंके पदार्थोंकेसंग व मांसके पदार्थकेसंग व गेहूंके पदार्थकेसंग व यवके सत्तू के संग

व दूधकेसंग व तेलकेसंग व घृतकेसंग शीतनाशवास्ते लहसनों को खावे ॥ शुंठ्यादिकाढ़ा ॥ शुंठि एरंडजड़ देवदारु गिलोय कुरंट इन्हों का काढ़ा पीने से संधिकीबायु जावे ॥ दशमूलादिकाढ़ा ॥ दशमूल के काढ़ामें व शुंठिकेकाढ़ामें एरंडका तेलमिलायपीनेसे बातरोग जावै ॥ कटिबातपरलाडू ॥ आलिंब खसखस खजूर मेथी तिल दोनों सौंफ भिलावांकीगीरी बादाम गोंदबब्बूलका चिरोली येप्रत्येक ४ तोलालेइ गुड़ ३२ तोला घृत ३२ तोलामिलाय लाडूबांधखानेसे कटिबात को नाशै और वीर्यको कठिनकरि बढ़ावै इसके लाडू २ तोलाकेबनावे ॥ चिकित्साउरुस्तंभपर ॥ रूखेपदार्थके पसीनासे व मालिशसे व गूगुल के सेवन से व पीपली पीपलामूल भिलावां इन्होंके कल्कमें शहदमिलाय खानेसे उरुस्तंभदूरहोवै ॥ सामान्यसंज्ञा ॥ मर्दनसे व वस्तिकर्मसे व काढ़ासे व रुक्ष स्वेदसे कुब्जको व अंगसंकोच को व अंगटूटनाको अंगग्रह को व शरीरशूलको दूरकरै व स्नेहपीने से अपतानको जीतै और घाव के इलाजसे ब्रणायामको जीतै व चावलों में मांसरसमिलायखानेसे अंगकी रुक्षताको व अंगस्तंभको व कंपको व कृशताकोहरै व शरीरके माड़ापनाको व शरीरकेफुरणाको व शरीर के भ्रन्शको स्नेह का मालिश कराइ जीतै और धातुक्षीण धातुनाश धातुज्यादै निकसनामें बिड्ग्रहमें वद्धविट् में स्नेहका पान हितहै ॥ ऊर्ध्वबातलक्षण ॥ कुपथ्यके सेवनेसे अधोवायु कुपितहो मुख के कफ सों मिल बारम्बार डकार ज्यादैलेवै इसको ऊर्ध्वबात कहते हैं ॥ शुंठ्यादिचूर्ण ॥ शुंठि १० भाग भिदारा १० भाग हड़ ५ भाग भूनी हींग ४ भाग सेंधानोन १ भाग चीता १ भाग इन्होंका चूर्णकरि खानेसे दारुण ऊर्ध्वबातको नाशकरै व पीपलामूलको दूधमें पीसि बसाकेरसमें मिलायपीनेसे ऊर्ध्वबातको नाशकरै ॥ त्रिकशूललक्षण ॥ कटिके तीनोंहाड़ोंमें और पीठके तीनोंहाड़ोंमें और पाशुके हाड़ों में पीड़ा होवै तिसे त्रिकशूल कहतेहैं ॥ चिकित्सा ॥ बालुकास्वेद से व खाटपैपौढ़ नीचे गोबरके आरनोंकी अग्निजलाइ सेंक से त्रिकशूल दूरहोवै ॥ आभादित्रयोदशांगगूगल ॥ ककरोलीके बीज असगंध शेरणी गिलोय शतावरि गोखुरू रासना पिपली सौंफ कचूर अज-

मान शुंठि ये समभागलेइ चूर्णकरि इन सबोंके बराबर शोधाहुआ गूगललेय और गूगलसे आधाघृतलेइ मिलाय १ तोलाभरप्रभात में मदिराकेसंग व गरमपानीकेसंग व दूधकेसंग वमांसकेरसकेसंग खावै यह त्रिकग्रह को व जानुग्रहको व हाथकेवायु व पैरोंके बायुको व नसोंकेवायुको व कोष्ठ के वायुको व मज्जाके वायुको व सन्धि के वायुको व हाड़केवायुको व बातकफके रोगोंको व वायुसे उपजेरोगों को व हीयाके शूलको व योनिदोषको व टूटेहाड़को व हड़फूटनीको व खंजबातको व गृध्रसीको व पक्षाघातकोहरै यहउत्तम औषधिपुराने वैद्योंनेकही है ॥रसोनाष्टक ॥ पकेलहसुनकोछीलि गूलिकाढ़िबीचसे फाड़ि रातिको दहीमें मिलाय बरतनमें घालिरक्खै पीछेपानीमें प्रभात धोइ पोंछि शिलापर पीसि कल्ककरि इसकल्कसे ५ भाग इन्हों के चूर्ण को मिलावै कालानोन अजवाइन भुनी हींग सेंधानोनशुंठि मिरच पीपली जीरा ये समभागले चूर्णकरिमिलावै और मीठातेल कल्कसे चौथाहिस्सा मिलाइ प्रभात में १ तोला भक्षणकरै दोष बलाबल देखिखावै और एरंड की जड़ के काढ़ा के संग खावै यह सर्वांगबातको व एकांग बातको व अर्दितको व अपतंत्रको व अपस्मारको व उन्मादको व उरुस्तंभ को व गृध्रसी को व छाती पीठ कमर पसली कूष इन्होंकी पीड़ाको व कृमिरोगको हरै। और इस पर मदिरा मांस खट्टारस इन्हों को नेमसे सेवन करै और कसरत घाम क्रोध घना पानी गुड़ स्त्री संग इन्हों को लहसन खानेवाला त्यागै। और अतिसारी प्रमेही पांडुरोगी राजरोगी छर्दिरोगी अरोचकी गर्भिणी मूर्च्छावाला बवासीरवाला रक्तपित्ती क्षयी शोषी इन्हों को भी यह लहसन औषधदेवै नहीं और पित्तरोगमें देवैतो प्रयोग के अंत में छोटी हड़ों को खाइ जुलाब देवै और जुलाब देवै नहीं तो कुष्ठ व पांडुरोग उपजै और स्त्री का दूध पीनेवाले बालक को भी यह रसोनाष्टक देवै इससे बहुत सुख होवै ॥ व्रणायाम ॥ सब शरीर गत बायु मर्म्मके घाव को प्राप्तहोइ अपने बेग से देहको नवायदेवै तिसे व्रणायामकहिये यह महाअसाध्यहोयहै ॥ कुब्जलक्षण॥ कोपको प्राप्तहुआ जो बायु सो हियाको ऊंचाकरदे और हियामेंपी-

डाघनीकरदे तिसे कुब्जककहिये ॥ कष्टसाध्यलक्षण ॥ हनुस्तंभ अर्दित आक्षेपक पक्षाघात अपतानक ये बहुतकालमें सिद्धहोवें वा न होवें। और ये रोग बलवान्‌रोगीके उपद्रवों रहितउपजें तो चिकित्साकरे ॥ बातरोगअसाध्य ॥ विसर्प दाह मूत्र मल अधोबायु इन्हों का रोध मूर्च्छा अरुचि मन्दाग्नि इत्यादि उपद्रवों को उपजाय मांस बलको क्षीणकरि पक्षबधआदि रोग पीड़ादेहै और सूजन सुप्तखाल भग्न कंप अफारा इन्हों से युत मनुष्यको बातब्याधि नाश करै है और जिसके बायुअव्याहतगतिहो वह १०० बर्षतकजीवै ॥ बत्तिसीकाढ़ा ॥ रायशण गिलोय एरंडजड़ देवदारु हड़कचूर वलियार वच पाढ़ा सौंफ सांठी पंचमूल अतीस मुण्डी भिलावां धमासा अजमान पोहकरमूल असगन्ध लज्जावंती गोखुरू बासा खिरणी भिदारा शतावरी ब्राह्मी खींप क्षीर कंचुकी ये समभाग लेय काढ़ाबनाय पीपली चूर्ण के संग व योगराज गूगलके संग व अजमोदादि चूर्णके संग व अरण्डी के तेलके संगपीनेसे बातरोगको व कफरोगको व प्रतानक को व मन्यास्तंभको व शोषको व पक्षाघातको व अर्दितको व आक्षेपकको व कुब्जकको व हनुग्रहको व स्वरभंग को व आढ्यबातको व मूकबातको व खंजबातको व अवबाहुकको व गृध्रसीरोगको व जानुभेदको व गुल्मशूलको व कटिग्रहको व आमबातको व निरामबात को व सातधातुगत बातको व बातको व आवृतको व अनावृतको व बातरक्तको यहि ३२ औषधों का काढ़ा हरे यह अत्रि गोत्र में उत्पन्न कृष्ण वैद्यने कहा है ॥ लघुरास्नादि काढ़ा ॥ रायशण गिलोय एरंडजड़ देवदारु शुंठि इन्होंकाकाढ़ा पीनेसे सर्वांगबातको व मज्जा बातको व हाड़गत बातको व मांसगत बातकोहरै ॥ लघुरास्नादिकाढ़ा ॥ दूसरारायशण एरंडजड़ देवदारु बच शुंठि धमासा हड़ अतीस शुंठि नागरमोथा शतावरि बासा इन्होंका काढ़ापीनेसे खांसी को वआम बातको व कफबातको व संधिबातको व मज्जाबातको व हाड़ों की बातको व नसकीबातको व सर्वांग बातको निश्चयहरै ॥ रास्नादिचूर्ण ॥ रायशणकूट तगरशुंठि मिरच पीपल चवक चीता पिपलामूल कचूर पाढ़ा बच सारिवा चिरायता त्रिफला बलिया दशमूल निरगुंडी एरंड

जड़ हींग आम्लवेतस अदरख रानतुलसी ककरोली जवाखार सुहागाखार सेंधानोन मणयारीनोन कालानोन इन्होंका चूर्णकरि पोहकरमूलके काढ़ामें सिद्धकिया तेलकेसंग खानेसे ८० प्रकारके बातोंको हरै ॥ आभादिचूर्ण ॥ किकरोलीबीज गिलोय रास्ना शतावरी महाशतावरी शुंठि सौंफ आसगन्ध शेरणी भिदारा अजमाण अजमोद ये समभाग लेय चूर्णकरि २ तोलाखावै अनुपान मदिरा व मांसरस व तक्र व गरम जल व घृत व दही मंड येहैं यह हाड़ के वायु को व संधिके वायुको व नसके वायुको व मज्जाके वायुको व कमर के वायु को व गृध्रसी को मन्यास्तंभ को व हनुग्रह को व कोष्ठगत रोगों को नाशकरै यह आभादिचूर्ण सब वातरोगोंकोहरै है॥ रास्नादिचूर्ण ॥ रास्ना शतावरी देवदारु कंकोल कलहारी पिपली रक्तचंदन मजीठ वृद्धि सेंधानोन पद्माख आसगंध गिलोय पाढ़ा नागरमोथा इलायची शालपर्णी सौंफ अजमोद शुंठि कूट ये समभागलेय चूर्ण करि गरम पानीके संग खाने से खाल हाड़ नसें इन्हों में बातरोग के बेगको हरै॥ शिग्रुमूलादिचूर्ण ॥ सहोंजनाजड़ पीपली रास्ना शुंठि गोखुरू सेंधानोन चीता एरंडजड़ इन्होंका चूर्णकरि गोली बनाय १ गोली रोज खानेसे सर्वांग वायुको नाश करै ॥ अजमोदादिचूर्ण ॥ अजमोद पीपली रास्ना गिलोय शुंठि सौंफ आसगंध शतावरी ये समभागलेय चूर्णकरि घृतके संग खानेसे हिया कोठा कंठ इन्हों में कुपित वायुको हरै ॥ कुष्ठादिचूर्ण ॥ कूट इंद्रयव पाढ़ा चीता अतीस हल्दी इन्होंके चूर्णको गरम पानीकेसंग खानेसे अनेकतरहके वायुको हरै॥ शुंठ्यादिचूर्ण ॥ शुंठि मिरच देवदारु इन्होंका चूर्ण इन्होंहींकेकाढ़ा के संग खानेसे देहके उपद्रव करनेवाले बायोंकोहरै ॥ रास्नादिचूर्ण ॥ रास्ना सांठी शुंठि गिलोय एरंडजड़ इन्होंका काढ़ा पीनेसे सप्तधातु बातको व आमबात को हरै ॥ द्वात्रिंशकगुग्गुल ॥ शुंठि मिरच पीपल त्रिफला नागरमोथा बायबिडंग चबक चीता दालचीनी इलायची पिपलामूल शेरणी देवदारु त्रिफला पोहकरमूल कूट अतीस दारुहल्दी हल्दी किकरोली जीरा शुंठि शतपत्री धमासा कालानोन बायबिडंग जवाखार सुहागाखार गजपीपली सेंधानोन ये सब

बराबर भागलेय और इन सबोंके बराबर गूगुल लेय पीछे रीतिसे बेरकी प्रमाण गोली बनाय घृतके संग व शहद के संग खाने से प्रभातमें यह आमबातको व उदावर्त्तको व अंत्रवृद्धिको व गुदक्रमि को हरै और महाज्वर से पीड़ितको व भूतबाधा ग्रसितको अच्छा करै और अफारा को व उन्माद को व कुष्ठको व पसली शूलको व हृद्रोग व गृध्रसीको व हनुस्तंभको व पक्षाघातको व अपतानकको व सोजाको व तिल्लीको व कामला को व अपचीको हरै यह द्वात्रिं-शक गूगुलहै धन्वंतरीने कहाहै सब रोगोंको हरैहै॥ योगराजगूगुल॥ शुंठि ४ माशे पीपल ४ माशे चाव ४ माशे पिपलामूल ४ माशे चीता ४ माशे भुनीहींग ४ माशे अजमोद ४ माशे सिरसम ४ माशे जीरा ४ माशे स्याहजीरा ४ माशे रेणुकबीज ४ माशे इन्द्रयव ४ माशे पाढ़ा ४ माशे बायबिड़ंग ४ माशे गजपिपली ४ माशे कुटकी ४ माशे अतीस ४ माशे भारंगी ४ माशे बच४माशे मूर्वा४ माशेइन्होंका चूर्ण करि इनसबोंसे त्रिगुणा त्रिफलालेवै पीछे सबोंकेतुल्य शोधा गूगुल लेय औररांगाभस्म ४ तोला चांदीभस्म ४ तोला शीशाभस्म ४ तो-ला लोहभस्म ४ तोला अभ्रक भस्म ४ तोला मंडूर भस्म ४ तोला रससिंदूर ४ तोला इन्होंको मिलाय गुड़ के पाकसरीखा पकाय एक गोलाबनाय घृत से चीकने बरतनमें घालिरक्खै पीछे रोज ४ माशे की गोली बनाय खावै यह योगराजगूगुल त्रिदोष को हरै और रसायनहै और इसमें मैथुन व खाने व पीनेका त्याग नहीं है यह सब बातरोगोंको व कुष्ठको व बवासीरको व संग्रहणी को व प्रमेह को व बातरक्त को व नाभिशूलको व भगंदरको व उदावर्त्त को व क्षयको व गुल्मको व अपस्मारको व उरुग्रहको व मन्दाग्नि को व श्वासको व खांसी को व अरुचि को व बीर्यदोषको व स्त्री के रज-दोषको हरै और पुरुष खाय तो बीर्यबधि संतानपैदाकरै और स्त्री खावे तो गर्भरहै और इसको रास्नादि काढ़ाके संग खानेसे अनेक प्रकारका बायु रोग दूर होवै और यह काकोल्यादि काढ़ा के संग खानेसे पित्तको हरै और अमलतास के काढ़ा के संग खानेसे कफको हरै और दारुहल्दीके काढ़ा के संग खानेसे प्रमेहको हरै

और गोमूत्रकेसंग खानेसे पांडुरोगकोहरै और शहदकेसंग खाने से मेदोवृद्धि को हरै और नींबकी छालके काढ़ा के संग खाने से कुष्ठ को हरै और गिलोयके काढ़ाके संग खानेसे वात रक्तको हरै और पीपलीके काढ़ाके संग खानेसे शोथ व शूलको हरैहै और पाटला के काढ़ाके संग खानेसे मूषाके विषको हरैहै और त्रिफलाके काढ़ा के संग खानेसे नेत्र रोगको हरै और सांठीके काढ़ाके संग खानेसे सब तरहके पेटके रोगोंको हरै ॥ षडशीतिगूगुल ॥ सपेदकुरंट धमासा अतीस देवदारु दोनों कटैली चाव बासा पीपली नागरमोथा बच धनियां शतावरी छोटी बलिया बड़ीसौंफ देवदारु हड़ शुंठिगिलोयं कचूर अमलतास गोखुरू सांठी मोगरी कुटकी पीपलामूल भारंगी बिदारी मुण्डीका सालु अजमोदा काकड़ाशिंगी आमला मुसली रेणुकबीज काकोली अजमान खुरासानी अजमान निशोत जमाल-गोटा चीता काकड़ाशिंगी तालमखाना लालधमासा बड़ा पंचमूल वेलतरु कूट काला अगर जावित्री जायफल इलायची नागकेशरि दालचीनी चिरायता केशरि लौंग कडूंभा हलदी सेंधानोन मांदार जड़ बायबिड़ंग पिसोला सूर्य्यमुखी गजपीपल ऊंगा कोंचकेबीज करंजकी जड़ ये सम भागलेय और इन सबोंके तुल्य रास्ना कि-करोलीके बीज इन्होंसे दुगुनी और इन सबों के सम भाग सोधा गूगुल और पारा गन्धक सिंगरफ सुहागाखार लोह भस्म अभ्रक भस्म तांबा भस्म बंगरस सिंदूर शीशा भस्म सोनामाखी मंडूर भस्म ये सब गूगुलके चतुर्थांश लेवै और पहिले षटकुढ़ाकेकाढ़ामें गूगुलको सोधकरि गेरै पीछे इन्होंको मन्द २ आगसे पकाय जब तक कड़ानहो तबतक पीछे गोलीबनाय १६ माशाकी घृत शहदमें मिलाय खानेसे सात धातुगतबायुको व नाड़ी नस संधिगतबायुको व आमवातको व निरामवात को व कफवातको व केवलवात को व राजरोग को व मन्दाग्निको व ज्वरको व धातुगतज्वरको व गुल्म कों व जानु जंघा हीया पेट कूषि इन्हों के वात को व प्रमेह को व कांधा ठोड़ी कान भृकुटी माथा नेत्र शंखस्थान इन्होंके बायु को व मूत्रकृच्छ्रको व शूलको व अफाराको व अश्मरीकोहरैऔरयह भेदक

वातोंको निश्चयहरै यह षड्शीतिगूगुल भोजवैद्यनेकहाहै क्षीयमाण शिष्यकेअर्थ और इस राजयोगको ऐसातैसासेगुप्तकरै और इसको १ वर्षतक सेवन करनेसे नपुंसक भी प्रमदाकोभोगै और इससे परे बाजीकरण नहीं है और इसके सेवनसे बहुत ज्यादे गुणहोय हैं ॥ विश्वादिगूगुल ॥ शुंठि एरंड जड़ दारुहलदी कूट सेंधानोन रास्ना गिलोय येसमभागलेइ और इन्होंसे दुगुना गूगुललेइ गोलीबांधि १ गोली रोज खाने से आमवात को हरै और इसपै पथ्य से रहै ॥ दूसराप्रकार ॥ शुंठि पिपलामूल बायबिड़ंग देवदारु सेंधानोन रास्ना चीता अजमान मिरच कूट हड़ ये समभागलेइ और दुगुणागूगुल मिलाइ घृतमें गोली बनाइ खानेसे बायुको व हैजाको व गुल्म को व शूलको व कम्पको व गृध्रसीकोनाशकरै ॥ रास्नादिगूगुल ॥ रास्ना गिलोय सत एरंडजड़ देवदारु शुंठि ये समभागलेइ और सबोंके तुल्य गूगुलमिलाय पीसिखानेसे बायुको व शिरके रोगको व नाड़ी व्रणको व भगन्दरको नाशकरै ॥ दूसरीयोगराजकीबटी ॥ शुंठि पीपला मूल चाव मिरच चीता भुनीहींग अजमोद सिरसम जीरा स्याहजीरा रेणुकबीज इन्द्रयव पाढ़ा बायबिड़ंग गजपीपली कुटकी अतीस भारंगी बच मूर्वा तमालपत्र देवदारु पीपली कूट रास्ना नागरमोथा सेंधा इलायची गोखुरू हड़ बहेड़ा धनियां आमला दालचीनी बाला जवाखार तिल ये समभागलेइ और इनसबों के समान गूगुललेइ घृतमें मलि एक गोला बनाइ घृतके चीकने बरतनमें धरै पीछे ४ माशा की गोली बनाइ रोज खाने से यह योगराज गूगुल विशेष करि बुढ़ापाको व वातव्याधिको हरै और इसपै मैथुन भोजन पान का त्यागनहीं है और यह वातरोगको व आमवातको व अपस्मार को व वातरक्तको व कुष्ठको व दुष्टव्रणको व बवासीरको व प्लीहाको व गुल्मको व पेटके रोगको व आनाहको व मन्दाग्निको व श्वास को व खांसीको व अरुचिको व प्रमेहको व नाभिशूल को व कृमि को व क्षयको व हृद्रोगको व शुक्रदोष को व उदावर्त्तको व भगंदर को नाशकरै और इसको तीनमाशेसे लेइ १ तोलातक ७ दिनतक खानेमें बढ़ै और रास्नादिकाढ़ाके सङ्ग पीनेसे वातरोगको नाशकरै

और दारुहलदीके काढ़ाकेसङ्ग प्रमेहकोहरै और काकोल्यादि काढ़ा के सङ्ग पित्तकोहरै और अमलतास के काढ़ा के सङ्ग कफको हरै और शहद के सङ्गमें येवृद्धि को हरै और नींबके काढ़ाकेसङ्ग कुष्ठ को हरै और गिलोयके काढ़ा के सङ्ग वातरक्तको हरै और पीपला मूलके काढ़ाके सङ्ग शूलकोहरै और पाटलाके काढ़ाके सङ्ग मूषा के विषको हरै और त्रिफलाकेकाढ़ा के सङ्ग भयंकर नेत्रकी पीड़ाकोहरै और सांठीके काढ़ाकेसङ्ग सबप्रकारके पेटके रोगोंकोहरै॥ रसोनसंधान॥ लहसनकोछोलि कूटिलेइ इससे आधाभाग स्वच्छकिये तिल और लहसनसे चतुर्थांश गौका तक्रमिलाइ तिसमें शुंठि ४ तोला मिरच ४ तोला पीपल ४तोला धनियां ४ तोला चाव ४तोला चीता ४ तोला गजपीपली ४तोला दालचीनी ४ तोला इलायची४तोला पीपलामूल ४ तोला तमालपत्र ४ तोला तालीसपत्र ४ तोला खांड़ ३२ तोला जीरा २० तोला स्याहजीरा २० तोला मुलहठी १६ तोला गुड़ १६ तोला अदरक १६तोला घृत ३२तोला मीठातेल२ तोला कांजी ८० तोला सिरसम १६ तोला राई १६ तोला हींग १ तोला पांचोनोन ५ तोला इन्होंको मिलाइ दृढ़बरतनमें घालिअन्न सेभरे कोठामें गाड़ै पीछे १२ दिन उपरान्त काढ़ि अग्नि बल बिचारखावै और मदिरा कांजी मीठारस इन्होंका अनुपान करै और औषध जीर्णहुये बादै मनोबाञ्छित दहीपीठी बर्जित भोजनकरैइस को १ महीनातक सेवनसे सबप्रकार के वातरोग नाश होवैं और ८० वातोंको व ४० पित्तके रोगोंको व २० कफके रोगोंको व २० प्रमेहोंको व सोजाको व योनिशूलको हरै और त्रुटि संधिको व टूटे हाड़को जोड़ै और बलवर्ण इन्होंको बधावै और हीया में आनन्द करै और पुष्टाईकरै और बीरजको बधावै॥ भुजंगीगुटिका॥ अजमान का फूल १६ तोला शुंठि ८ तोला तेजबल ८ तोला इन्होंकोपीसि पुरानेगुड़में गोली बांधि १० माशाकी रोज़ खानेसे वात समुदाय को हरै और इसपै पथ्यसेरहै और इसकानाम भुजंगीबटीहै॥ दूसरा प्रकार॥ तेजबल ६४ तोला दूध ५१२ तोला इन्होंको पकाइ खोहा बनाइ इसमें शुंठि ४ तोला मिरच ४ तोला पीपल ४ तोला हड़

४ तोला शतावरी ४ तोला बायबिड़ंग ४ तोला चीता ४ तोला पीपलामूल ४ तोला अजमोद ४ तोला बच ४ तोला कूट ४ तोला असगंध ४ तोला देवदारु ४ तोला घृत ४ तोला इन्होंकोमिलाइ गोलीबांधि शहद घृतके सङ्ग खाने से सब वातके रोगोंको नाशैहै॥ निर्गुंड्यादिबटी॥ पीपलामूल पीपली देवदारु बायबिड़ंग चीता सेंधानोन अजमोद के फूल अजमोद मिरच ये समभागलेइ गुड़में गोलीबनाइ २१ दिनतक एक रोज खानेसे वायुरोग को नाशकरै॥ अमरसुन्दरीबटी॥ शुंठि मिरच पीपल हड़ वहेड़ा आमला पीपलामूल पित्तपापड़ा चीता लोहभस्म दालचीनी तमालपत्र इलायची नागकेशर पारा गन्धक मीठा तेलिया बायबिड़ङ्ग करकरा नागरमोथा ये समभागलेइ दुगुने गुड़में गोलीबनाय चनासमान खानेसे अपस्मार को व सन्निपात को व श्वास को व खांसी को व बवासीर को व ८० प्रकार के बायुकेरोगों को व उन्माद को दूरकरै॥ अजमोदादिबटी॥ अजमोद १ भाग पीपली १ भाग बायबिड़ंग १ भाग सौंफ १ भाग नागरमोथा १ भाग मिरच १ भाग सेंधानोन १ भाग हड़ ५ भाग शुंठि १० भाग भिदारा १० भाग गुड़ ३६ भाग पहिले गुड़ पाकसरीखापकाइ चूर्णमिलाइ गोली १तोला की बनाइ खाने से संधिवात को व आमवातको नाशकरै और गोलीको गरम पानी के संगलेनेसे सबवात को व आढ्यवात को हनुस्तम्भको व शिरोग्रह को व अपतान को व भृकुटी शंख कान नाक नेत्र जीभ इन्हों के स्तम्भ को व कलाप खंज पंगला सर्वांग एकांग इन्होंमें गतबायु को व अर्दितको व पादहर्षको व पक्षाघातकोहरै॥ लघुराजमृगांक॥ मिरचका चूर्ण घृत तुलसी का रस इन्होंको मिलाइ खाने से सब वातरोग शांतहोवैं जैसे भगवान् अपने भक्तों के दुःखको हरैं इसे लघुमृगांक कहतेहैं व चूर्ण काढ़े गोली घृत तेल इन्होंकीयोजनासे व कामीपुरुषों को सुन्दर स्त्रियों के आलिंगन से वातब्याधि शांत होवै॥ दूसराएरंडपाक॥ एरंडके बीजोंकातुष दूरकरि आठगुणादूध में पकाइ सुखाइ बारीकपीसे पीछे घृतमें मन्दअग्नि से पकाइ खोहा करै पीछे शुंठि मिरच पीपल लौंग इलायची दालचीनी तमालपत्र

नागकेशर असगंध रास्ना षड्गंधा पित्तपापड़ा शतावरी लोहभस्म सांठी हड़ बाला जावित्री जायफल अभ्रकभस्म ये समभागलेइ खोहामें मिलाइ खांड़युतकरि पाकसरीखा तैयारकरै यहएरंडपाक प्रभातमें खानेसे ८० प्रकारके बायुरोगोंको व ४० प्रकारके पित्तरोगों को व ८ प्रकारके उदररोगोंको व २० प्रकारके प्रमेहरोगोंको व ६० प्रकारके नाड़ीव्रणोंको व १८ प्रकारके कुष्ठोंको व ७ प्रकारके क्षयरोगों को व ५ प्रकारके पांडुरोगों को व ५ प्रकारके श्वासको व ४ प्रकार के संग्रहणी को व नेत्ररोग को व गलग्रहको व अनेकप्रकारके वात रोगको हरै है इसको शुक्ठपाक कहते हैं॥ एरंडपाक॥ एरंडबीज गोला ६४ तोला दूध ५१२ तोले में पकाइ मंद आगसे पीछे घृत ३२ तोला खांड़ १३२ तोला शुंठि१ तोला मिरच १ तोला पीपल १ तोला दालचीनी १ तोला इलायची १ तोला तमालपत्र १ तोला नागकेशर १ तोला पीपलामूल १ तोला चीता १ तोला चाव १ तोला सौंफ १ तोला लघुसौंफ १ तोला कचूर १ तोला बेल १ तोला अजमोद १ तोला जीरा १ तोला स्याहजीरा १ तोला दारुहल्दी १ तोला हलदी १ तोला असगंध १ तोला बलियार १ तोला पाढ़ा १ तोला शेरणी १ तोला बायविड़ंग १ तोला पुष्करमूल १ तोला गोखुरू १ तोला कूट १ तोला त्रिफला १ तोला देवदारु १ तोला भिदारा १ तोला ककरोलीबीज १ तोला अरलु १ तोला शतावरी १ तोला इन्हों का चूर्णमिलाइ तय्यारकरि खाने से वात व्याधिको व शूलको व सोजा को व पेटरोगको व अफाराको व वस्तिवातको व गुल्मको व आमवातको व कटिग्रहको व उरुस्तंभको व हनुस्तंभ को नाशकरै॥ रसोनपाक॥ लहसन ६४ तोला लेइ और इन्होंका तुषदूरकरि तेजगन्धनाशके वास्ते रातिकोतक्रमें भिगोइ प्रभात में काढ़ा पीसि दूध में पकाइतय्यारकरै. पीछेघृत १६ तोला मिलाइ शीतल होनेपर रासना १ तोला शतावरी १ तोला बासा १ तोला गिलोय १ तोला कचूर १ तोला शुंठि १ तोला देवदारु १ तोला भिदारा १ तोला अजमोद १ तोला चीता १ तोला सौंफ १ तोला सांठी १ तोला हड़ १ तोला बहेड़ा १ तोला आमला १ तोला पीपली १ तोला बायबिड़ंग

१ तोला शहद १६ तोला इन्होंको मिलाय खानेसे आढ्यवातको व हनुग्रह को व आक्षेपकको व भग्नवातको व कटिवातको व उरुस्तंभ को व हृद्रोगको व सर्वांग वातको व संधिगत वातको व ८० प्रकारके वातरोगोंको नाशकरै ॥ कुबेरपाक ॥ तुणिको ६४ तोला पानीमें रात्रि कोभिगोइ चौगुणे दूधमें पकाइ सुखाइ प्रभात को घृत में मन्द २ अग्निसे पकावै पीछे ठंढे होनेपर शहदमें डालै पीछे दालचीनी २ तोला तमालपत्र २ तोला नागकेशर २ तोला इलायची २ तोला शुंठि २ तोला मिरच २तोला पीपल २ तोला जावित्री २ तोला जायफल २ तोला लौंग २ तोला बायबिड़ंग २ तोला सौंफ २ तोला जीरा २तोला नागरमोथा २तोला बलियाजड़ २तोला हलदी २तोला दारुहलदी २ तोला लोहभस्म २ तोला तांबाभस्म २ तोला इन्हों को डालै पीछेइसे ४ तोला रोज़खावै यह सबतरहके वातरोगोंको व मंदाग्निको व बलक्षयको व प्रमेहको व मूत्रकृच्छ्रको व अश्मरीको व गुल्मको व पांडुकोहरै व पीनसको व संग्रहणीको व अतीसारको व अरोचक को हरै और कामको और कांति पुष्टि इन्होंको बधावै इसको कुबेरपाककहते हैं ॥ लशुनपाक ॥ लहसनोंका तुषदूरकरि द्रोण भर दूधमें पकाइ पीछे १६ तोले घृतमें मन्द२ अग्निसे पकाइ मधुवर्णहो तब खांड़ १२८ तोले शुंठि १ तोला मिरच १ तोला पीपल १ तोला दालचीनी १ तोला तमालपत्र १ तोला इलायची १तोला नागकेशर १तोला पीपलामूल १तोला चवक १तोला चीता १तोला बायबिड़ंग १ तोला हल्दी १ तोला दारुहल्दी १ तोला शेरणी १ तोला भिदारा १ तोला पुष्करमूल १ तोला अजमोद १तोला लौंग १ तोला देवदारु १ तोला सांठी १ तोला गोखुरू १ तोला नींब १ तोला रास्ना १ तोला सौंफ १तोला शतावरी १तोला कचूर १ तोला असगन्ध १ तोला कोंचकेबीज १ तोला इन्होंका चूर्णमिलाइ पीछे अग्निबल देखि खानेसे यह लहसनपाक सब वातरोगोंको व शूल को व अपस्मारको व छाती फटनेको व गुल्म को व पेटरोग को व छर्दिको व प्लीहाको व अण्डवृद्धिको व कृमिको व मलवद्धको व अफाराको व सोजाको व मंदाग्निको व बलक्षयको व हिचकीको व

श्वासको व खांसीको व अपतंत्रको व धनुर्वातको व अन्तरायामको व पक्षाघातको व अपतानकको व अर्दितको व आक्षेपकको व कुब्जक को व हनुग्रहको व शिरोग्रहको व विश्वाचीको व गृध्रसीको व खल्ली वातको व पंगुवातको व संधिवातको व बधिरपनाको व सब शूलोंको जल्दी नाशै और वातव्याधि हाथी को यह सिंहरूप होइ भगावै और कफ व्याधिकोहरै और बलपुष्टिकोपैदाकरै ॥ लेप ॥ वातरोगी का जौनसा अंगपीड़ितहो उसकोंशस्त्रसे छीलि तिसपर चिरमटियों के कल्ककी पींड़ीबांधे इससे अवबाहुक विश्वाची गृध्रसी अन्यवात सम्बंधी पीड़ानाशहोवैं ॥ मर्दनवनस्य ॥ अदरककेरसमें अजमानका चूर्णमिलाइ अंगके मालिश करनेसे व नस्य लेनेसे वातकोप शांत होवै ॥ स्वेदविधि ॥ कपासका बिंदौला कुलथी तिल यव एरंड उड़द अलसी सांठी शणकेबीज इन्होंको अलग २ कांजीमें युतकरि पोटली के सेंकसे कर्पूर अङ्गरोग को व दाहको व पेटके रोगको व ठोढ़ी नितंब हाथ पैर अंगुली टंकण इन्होंके स्तम्भको व कटिशूल को व आमसहित वातरोगोंकोहरै ॥ पींड़ीबांधना ॥ रास्ना शतावरी देवदारु कूट उड़द तेल बच कुलथी दशमूल इन्हों की पिंडीबनाइ बांधनेसे वातरोगोंको यहहरै॥ स्वेद व लेप ॥ गरम २ मक्षिकामांसके वेसवारसे सेंककरि पसीनालेने से वातनाशहो व फांगलीके रससे वात युक्त अंगको लेपन करनेसे आरामहोवै॥ लेप व स्वेद ॥ नसदर सेंधानोन कालाबोल मीठातेल कूट समुद्रफल जमालगोटाकी गिरी अफीम खरैटी बलिया इन्होंके चूर्णको नींबूकेरसमें खरलकर पीछे गरमकर लेपन करनेसे सङ्ग उपजे ८० प्रकारके वायुरोगों को हरै॥ शतपुष्पादिलेप ॥ सौंफ देवदारु कूट सेंधानोन हींग इन्होंको आकके दूधमें खरलकरि लेपकरनेसे हाड़की बातको व संधीकी बातको व कटिबातको ३ दिनमेंहरै॥ लेप ॥ देवदारु हींग शुंठि सौंफ सेंधानोन बच इन्होंको आक के दूधमें खरलकरि लेपकरनेसे १ दिनमें हाड़ के बायुको यहहरै॥ वातहापोटली ॥ पुवाड़केबीज अरण्डकेबीज निंबोली धवकेफूल अशोकवृक्षकीछाल गोला करंजुवाकेबीज बिंदौला सहोंजनाकी छाल दोलाफल सिरसों अकोलफल रास्ना कुलथी

तिल लहसन बच हींग राई शुंठि इन सबों का चूर्णकरि चूर्ण मिलाय घृतमें व तेल में मलि पोटली बांधि अग्नि पर सेंक शरीरपै लगानेसे बायुकोहरै ॥ महासाल्वणयोग ॥ कुलथी उड़द गेहूं अलसी तिल सिरसों सौंफ देवदारु निर्गुंडी कलौंजी जीरा एरंड की जड़ बेलपत्रकीजड़ रास्ना सहोंजना जटामांसी पीपली नादुरकी सेंधा लवण मणियारीलवण कालानोन साँभर खारीलवण अमलवेतस खीप असगन्ध गंगेरन लघुबलियां दशमूल गिलोय कौंचबीज ये औषध पूरीपूरी या कममिलैं तो कमलेवै कूटासिजाय कपड़ामेंघालि पोटली बनाय सेंककरने से यह महासाल्वणयोग सम्पूर्ण वात पीड़ाकोहरै ॥ कढ़ी ॥ मालकांगनी पीपलामूल लालचन्दन चाव चीता लौंग चमेली कूट मजीठ सौंफ सिरसों निर्गुण्डी अजमोद नींबू हल्दी शुंठि तक्र कांजी इन्होंका चूर्णकरि कढ़ी बनाय खानेसे वात रोगको हरै जठराग्निको बढ़ावै ॥ स्वेदलेपविधि ॥ एरंडजड़ आकजड़ करंजुवाकीजड़ मूर्वा बलिया अरणी लालचन्दन थोहर निर्गुण्डी ताड़ देवनल सहोंजना चूका गोकरणी असगन्ध इन्होंके पत्तेलेइ कांजी गोमूत्र आम्लवेतस इन्होंको मिलाय बरतनमें घालि गरम कर पसीना लेनेसे तत्काल वात रोगी को सुख होइ ॥ लेप ॥ निर्गुण्डी करंजुवा पित्तवाली औषध इन्होंको पीसि लेप करने से व पानी गरम में मिलाय सेचन करने से व पिंडी बनाय बांधने से वात रोग शांतहोवै ॥ रसोनकल्क ॥अच्छेपकेहुये लहसनोंका तुष दूरकरि बीच से फाड़ि अंकुरदूर करि दुर्गंध नाशकरनेके वास्ते रातसे तक्रमें भिगोय रक्खै पीछे प्रभातमें काढ़के पीसि कल्कबनावै कालानोन भुनी हींग अजमाण सेंधानोन शुंठि मिरच पीपल जीरा इन्होंको समभागलेइ चूर्णकर कल्कसे पांचवां हिस्सा मिलावै पीछे अग्निबल ऋतुदोषको विचार १ तोला हमेशाखावै ऊपर एरंडका काढ़ा पीवै यह सर्वांग वायुको व एकांगवायुको व अर्दितको अपतंत्रको व अपस्मार को उन्मादको उरुस्तंभको गृध्रसीको व छातीपीठ पशली कूख इन्होंकी पीड़ाको हरै और इसपै अजीर्ण धूप क्रोध ज्यादै पानीपीना दूध गुड़ इन्हों को रसोन कल्क खाने वाला त्याग देवै और मदिरा मांस

खट्टारस इन्होंको निरंतर सेवै३ रसोनकल्क शुद्ध लहसन के कल्क में तिलोंकातेल मिलाय खानेसे दारुण बातरोगको व बिषमज्वरको नाशकरै ॥ लक्षण ॥ लहसनको घृतमें पीसि खानेसे व इन्द्रयव चीता शुंठि इन्होंको घृतके संग खाने से संपूर्ण बात बिकार दूर होवै ॥ स्वच्छन्दभैरवरस ॥ शोधापारा लोहभस्म सोनामाखी भस्म गंधक हरताल छोटीहड़ एरंड निर्गुण्डी शुंठि मिरच पीपल सुहागाखार शोधा मीठा तेलिया ये सब सम भाग लेवै इन्हों को निर्गुण्डी के रस में एक दिन खरलकरै पीछे १ दिन मुण्डीके रस में खरल करि दो रत्ती की गोली बांधि खावै ऊपर गिलोय देवदारु शुंठि एरंडजड़ इन्हों के काढ़ा में गूगल मिलाय पीवै यह रस वायुरोग को नाश करै ॥ समीरपन्नग ॥ अभ्रक भस्म गन्धक मीठातेलिया शुंठि मिरच पीपल पारा सुहागाखार ये समभाग लेवै पीछे भंगरा के रस में सात भावना देइ पीछे अदरख के रस के संग व मिश्री त्रिकुटा के चूर्ण के संग तीन रत्ती खाने से महाबात रोगों को हरै और इस की नस्य लेने से मूर्च्छा जावै ॥ वातविध्वंसनपारा ॥ गन्धक शीशा रांग लोह तांबा अभ्रक इन्होंकी भस्म पीपल सुहागा शुंठि मिरच पीपल इस क्रम से सम भाग लेवै एक पहर तक महीन पीस पीछे साढ़े चार भाग मीठा तेलिया मिलाय ज्यादा खरल करै पीछे शुंठि मिरच पीपल त्रिफला चीता भंगरा कूट इन्होंके रसमें तीन तीन भावना देवै पीछे निर्गुण्डीरस आककारस बड़ाआमला अदरख नींबू इन्हों के रसमें अलग २ भावना देइ खाने से २ रत्तीभर वायु को शूलको कफरोगको संग्रहणीको सन्निपातको अढ्यवातको प्रसूतिवातको हरै ॥ वात राक्षस ॥ पाराभस्म गन्धकभस्म लोहाभस्म अभ्रकभस्म तांबा भस्म ये सब सम भाग लेइ खरल करै पीछे सांठी गिलोय चीता तुलसी त्रिकुटा इन्होंके रसोंमें अलग २ तीन २ दिन भावना देवै लघु पुट में पकाय शीतल होनेपर काढ़ि २ रत्तीभर खाने से यथा रोगोक्त अनुपानों के संग उरुस्तंभ को वातरक्तको गात्र ग को आमवात को हनुर्वात को वेदनावातको पक्षघात को कंपवातको सर्व संधिगतवातको सुप्तवातको वातशूलको उन्मादको हरै और

यह अनुपानों के संग ८० प्रकार के वातोंकोहरै ॥ वातारिरस ॥ पारा एकभाग गन्धक दोभाग त्रिफला तीनभाग तीता ४ भाग गूगल ५ भाग इन्हों का चूर्णकरि अरंडी के तेल में खरल करि १ तोला भरकी गोली बनाय प्रभात में खावै ऊपर शुंठि अरंडकी जड़ इन्हों का काढ़ापीवै और अरण्डी के तेलकी मालिश पीठके करि पसीना लेवै और दस्तावर सचिक्कण गरम भोजन खवावै औ निर्वात स्थान में बसै यह रस १ महीनातक सेवने से वायुरोगोंको नाश करै और इसमें स्त्री संगको त्याग करना उचितहै ॥ समीरगजकेशरी ॥ नईअ-फीम कुचला के बीज नई मिरच ये समभाग लेइ चूर्णकरि १ रत्ती खावै ऊपर नागरपान खाने से कुब्जकवातको व खंजवातको व सर्वजवातको व गृध्रसीको व अवबाहुकको व सूजन को व कंपको व प्रतानक को व हैजाको व अरोचको व अपस्मार को नाशकरै॥ मृतसंजीवनीरस ॥ सिंगरफ ३ भाग मीठातेलिया २ भाग सुहागा खार १ भाग जमालगोटा १ भाग इन्होंको अदरखकेरसमें खरलकरि २ प्रहरतक पीछे आक के दूध में खरल करै पीछेशतावरी के रसमें खरलकरि २ रत्तीभरखानेसे वातरोग व उरुस्तंभकोव आमवातको व संग्रहणीको व बवासीरको व आठ प्रकारके ज्वररोगोंको यहनाश करै जैसेसूर्य अंधेरा को तैसे ॥ वातारिरस ॥ पारा सोना हीरा तांबा लोह सोनामाखी हरताल सुरमा तूतिया अफीम ये समभाग लेइ औरपांचोनोन१भागलेइ थोहरकेदूधमें १दिनखरलकरिपीछेसंपुटमें घालि कपड़माटीदेइ भूधर यंत्रमें पकाइपीछे १ माशा रसको अद-रख के रसमें मिलाइ चाटने से वातकोनाशै और इसपै पिपला मूलके काढ़ामें पीपल का चूर्णबुरकाइ पीवै यह सब आक्षेपकादि बिकारों को हरै यह रस वातारी जगत् में विख्यातहै ॥ वातगजां-कुश ॥ पाराभस्म लोहभस्म गन्धक हरताल सोनामाखीभस्म हड़ काकड़ाशिंगी मीठातेलिया शुंठि मिरच पीपल अरणी सुहागा-खार ये समभाग लेइ इन्होंको मुण्डी के रसमें १ दिन खरल करि पीछे निर्गुण्डीके रसमें खरलकरि २ रत्तीकीगोलीबनाइ खानेसेसब प्रकारके वातरोगदूरहोवैं और यह वातगजांकुश साध्यअसाध्यवात

रोगको हरै व्याधि गजकेशरी पारा गन्धक हरताल मीठातेलिया शुंठि मिरच पीपल हड़ वहेड़ा आमला सुहागाखार जमालगोटा के बीज ये अलग २ माशे ४ लेइ बारीक चूर्णकरि भंगरा केरसमें ७ दिनतक खरलकरि पीछे निर्गुण्डीरसमें ७ भावना देइ पीछेकाकसाचीके रसमें ७ भावना देइ मिरचके समान गोली बनाइ दोषों को विचारिदेवै दूधकेसाथ यहआठप्रकारके ज्वरोंकोहरै व ८० प्रकार के वातरोगोंको निर्गुण्डीरस व नागरमोथा के काढ़ाके संगहरै और गुरके संग खाने से ४० प्रकार के पित्तरोगों को हरै और रोगोक्त अनुपानोंके संग खाने से रोगमात्र को हरै ॥ सूर्यप्रभागुटी ॥ चीता४ तोला हड़ ४ तोला बहेड़ा ४ तोला आमला ४ तोला नींब ४तोला परवल ४तोला मुलहठी४तोला दालचीनी४तोला नागकेशर ४तोला अजमान४तोला अम्लवेतस४ तोला चिरायता४तोला दारुहल्दी ४ तोला इलायची ४ तोला नागरमोथा ४ तोला पित्तपापड़ा ४ तोला रसोत४ तोला कुटकी ४ तोला भारंगी४तोला चाव ४ तोला पद्माख ४ तोला खुरासानी अजमाण ४ तोला पिपली ४ तोला मिरच ४ तोला जमालगोटा ४ तोला कचूर ४ तोला शुंठि४तोला पोहकरमूल ४तोला वायबिड़ंग ४तोला पिपलामूल ४ तोला जीरा ४ तोला देवदारु तमालपत्र कुड़ाकी छाल रास्ना धमासा गिलोय निसोत कौंच के वीज तालीसपत्र अम्लवेतस सेंधानोन मणियारीनोन कालानोन धनियां अजमोद सौंफ सोनामाखी जायफल वंशलोचन असगन्ध अनारकी छाल कंकोल बाला जवाखार सज्जीखार मिरच ये सब चार ४ तोलेलेवै शिलाजीत ३२ तोले गूगल ८ तोले लोहभस्म ३२ तोले सोनामाखी भस्म ८ तोले इन सबों का चूर्ण करि घीके चीकणे बर्तनमें घालि धरै पीछे अग्निबल देख खाने से बातव्याधिको व उरुस्तम्भको व अर्दित गृध्रसी बिद्रधी श्लीपद गुल्म पांडु हलीमक पांचप्रकारकी खांसी मूत्रकृच्छ्र गलरोग अफारा अस्मरी अंडवृद्धि संग्रहणीअपबाहुक अरुचि पसलीशूल पेटकारोग भगन्दर हृदरोग शूलऊर्द्धकंप बिषमज्वर छातीकाफटना मुखरोग प्रमेह रक्तपित्त कामला बातो-

त्पन्न कफोत्पन्न द्वन्दज इन्हों को हरै और इसकी गोली १६ माशे की बनाकेखावे इसपर अन्न मनोवांछित खावै यह भास्करीगोली महादेवजीनेकहीहै औरअग्निकोदीपनकरैहै ॥ लघुवातविध्वंसमात्रा॥ पारा सुहागाखार गन्धक पाषाणभेद मीठातेलिया कौड़ीकी भस्म हरताल शुंठि मिरच पीपली ये समभाग लेइ धतूराकेरसमें खरल करि एकरत्ती की गोली बनाय खाने से सन्निपात को व बायु को कफको शीतको व मंदाग्निको श्वासको व शूलको व खांसीको हरै ॥ वह्निकुमार रस ॥ सुहागाखार पारा गन्धक शंखभस्म कौड़ी भस्म ये समभागलेइ मीठातेलिया ३ भाग मिरच ८ भाग इन्होंको भंगरा के रसमें खरलकरि इस वह्निकुमार रसके खानेसे सम्पूर्णबातरोग व श्वास मंदाग्नि कफ तिल्ली ये जावें ॥ वातविध्वंस ॥ पारा एकभाग गन्धक तांबाभस्म लोहभस्म सोनामाखीभस्म जमालगोटा हरताल शुंठि मिरच पीपल ये समभागलेवै मीठातेलिया २ भागलेवै पीछे निर्गुण्डी जमीकंद आक अरणी भंगरा धतूरा इन्होंके रसमें सात २ भावना देवै पीछे प्रभातमें २रत्ती द्रब्य मिरचों के चूर्णके संगखाने से गोड़ा जांघ कमर समीप पैरका टांकना होठ शिर कांधा इन्होंके स्तंभको व हनुस्तंभको त्रिकस्तंभ शुष्कबात जिह्वास्तंभ बाहुस्तंभ पादस्तंभ अधोवायु सर्वाङ्गबात को जल्दीहरै जैसे नारायण अपने भक्तोंकी दीनताको दूरकरैहैं तैसे॥ समीरपन्नग ॥ पारा हरताल सोना-माखीभस्म लोहभस्म गन्धक हड़ शुंठि मिरच पीपल अरणी रास्ना काकड़ाशिंगी मीठातेलिया सुहागा ये समभाग लेवै तुलसी के रस में खरलकरि मुंडीके रसमें खरलकरि तीन २ रत्तीकी गोली बनाय सेंधानोन शुंठि चीताकारस इन्होंकेसंग खानेसे बायुकोहरै ॥ वाता-रिरस ॥ पारा १भाग गन्धक २ भाग मीठातेलिया ३ भाग पीपल ४ भाग रेणुकबीज ३ भाग इन्होंको मिलाय १ रत्ती प्रमाण गोली बनाय खानेसे सब बातरोगों को नाशकरै ॥ दूसराप्रकार ॥ मीठाते-लिया १ भाग सुहागा २ भाग मिरच ४ भाग इन्होंको पीसि अ-दरख के रसमें मिलाय मिरचों के चूर्णके संग ३ रत्तीखाने से सब बातरोगों को नाशकरै ॥ रसेन्द्रचिन्तामणि ॥ पारा ५ भाग तांबा १

भाग गन्धक ५ भाग इन्होंकी कज्जली बनाय नागरपान की बेल केरसमें मिलाय तांबाके पात्रकी पीठपर लेपि संपुटमेंदेइ गजपुटमें पकाय काढ़ि २रत्तीभरको शुंठि मिरच पीपल इन्हों के चूर्ण के संग खानेसे अर्द्धांगवातको व कंपवातको व दाहको व संतापको व मूर्च्छा को व पित्तको दूरकरै ॥ कालकंटकरस ॥ हीरा १ भाग पारा २ भाग अभ्रक ३ भाग सोना ४ भाग तांबा ५ भाग पोलाद ६ भाग मंडूर ७ भाग इन्होंकी भस्म लेइ खट्टारसमें ३ दिन भिगोय पीछे द्रव्य के समान तीनोंखार पांचोंनोन लेइ पीछे निर्गुण्डीके रसमें ३ दिन खरल करै पीछे सुखाय मीठातेलिया अष्टमांश सुहागा अष्टमांश मिलाय नींबूरसमें १ दिनतक खरलकरै ऐसे कालकंटकरस तय्यार होहै इससे सबरोग शांतहोवैं और २ रत्तीभर को अदरखके रसके संग देनेसे सन्निपात को हरै और घृतके संग खानेसे बातरोगोंको हरै और निर्गुण्डीकी जड़काचूर्ण और भैंसागूगुललेइ घृतमेंमिला-य १६ माशेकी गोलीबनाय खावै ऊपर घृत गरमभोजन देवै यह १५ दिन सेवनकरने से वातरोगोंको नाशै संशय नहीं और सन्नि-पातमें इसको खाय ऊपर आककी जड़का काढ़ा पीवै ॥ त्रिगुणाख्य रस ॥ गन्धक ८भाग और शोधापारा अग्निपै पकाया १भाग हड़ चूर्ण १भाग इन्होंको मिलाय सातरत्ती पहिलेदिनखावै पीछे १रत्ती रोजबढ़ावै इक्कीसरत्तीतक ऊपर दूध घी खांड़ चावल इन्होंकापथ्य ले यह कफवातको हरै १५ दिन सेवन करने में इसका खानेवाला निर्बातस्थानमेंरहै ॥ अर्केश्वर ॥ पारा १भाग गन्धक २ भाग इसको तांबा गरमपात्रमें घालि दूसरा तांबाके पात्रसेढँकि अग्निमें पकाय ऊपरवाले पात्रमें लगाहुआ को खुरचि आकके दूधमें १२ भावना देवै पीछे त्रिफला के जलमें १२ भावना देवै २ रत्तीखावै त्रिफला के संग यह सुप्तिवायुको हरै इसमें पथ्यकी बस्तुकोखावै और खार तीक्ष्णबस्तु दही मांस उड़द बैंगन शहद इन्होंकोबर्जै ॥ एकांगवीर॥ शोधागन्धक पाराभस्म लोहभस्म रांगभस्म शीशाभस्म तांबाभस्म अभ्रकभस्म पोहलादभस्म शुंठि मिरच पीपल इन्हों को पीसि त्रि-फला त्रिकुटा निर्गुण्डी अदरख चीता सहिंजना कूट आमला कुचिला

आक कांगडूंभा बेल अदरख इन्होंकेरसमें तीन २ भावनादेवै ऐसे एकांगबीर रसोंकाराजा सिद्धहोहै यह खानेसे पक्षघात अर्दित धनुर्वात अधरंग गृध्रसी विश्वाची अपबाहुक इन्होंको व सबबातरोगों कोहरैहै इसमें संदेहनहीं ॥ बातरक्तपैरस ॥ पारा शुद्धगन्धक ये सम भागले इनदोनोंकेबराबर अभ्रकभस्म इनतीनोंकेबराबर गूगल चारोंकेबराबर गिलोयसत इन्होंको मिलाय निर्गुण्डी गोखुरू गिलोय इन्होंके काढ़ोंमें सात२भावनादेवै पीछे ३रत्तीप्रमाण खानेसेबातरक्त कोहरै इसपर काकोलीकीजड़का काढ़ाका अनुपान है तालकभस्म हरतालभस्म २भाग पारा १ भाग तुरठी ५ भाग इन्हों को घटुली रसमें खरलकरि गोलाबनाय सिकोराके संपुटमें देय कपड़माटीकरि गजपुटमें पकाइ सुंदररूप देखि बिचारि १ चावलपरिमाण मात्रा लेने से बात बिकार दूर होवै ॥ गंधकरसायन ॥ शोधा गंधकको गौ के दूध में भिगोय पीछे दालचीनी इलायची तमालपत्र नागकेशर गिलोय हड़ बहेड़ा आमला शुंठि भंगरा अदरख इन्होंके काढ़ोंमें आठआठ भावनादेइ पीछे बराबरकी मिश्रीमिलानेसे गंधकरसायन तैयार हो है इसको १ तोला रोज सेवने से बीर्य अग्नि पुष्टि देह दृढ़ता इन्होंको बढ़ावै और कुष्ठ कंडुबिष दोष घोर अतीसार संग्रहणीबातरक्त शूलजीर्णज्वर सबप्रमेह तीव्रबातव्याधि अंडवृद्धि सोमरोग संपूर्णरोग इन्होंकोनाशै और बुद्धि उमर केशोंका कालारंग करै और देवोंसमान कांति को पैदाकरै ॥ लघुबिषगर्भतेल ॥ तेल २५६ तोला तुषका पानी २५६ तोला और कनेर धतूरा निर्गुण्डी आककी जड़ इन्हों के काढ़ा में तेल को सिद्धकरि पीछे धतूराके बीज ४ तोला कूट ४ तोला कलहारी ४ तोला मीठा तेलिया ४ तोला गूलर ४ तोला रास्ना४तोला कनेर ४ तोला मालकांगनी ४ तोला वृहदन्ती ४ तोला मिरच ४ तोला जटामांसी ४ तोला बच ४ तोला चीता४ तोला शिरसम४ तोला देवदारु४तोला दारुहल्दी४तोला हल्दी ४ तोला एरण्डजड़ ४ तोला लाख ४ तोला त्रिफला ४ तोला मंजीठ ४ तोला इन्होंका चूर्णकरि मिलाय तेलको सिद्धकरि मालिशकरनेसे यह विषगर्भतेल बातके रोगोंको हरैहै ॥ दूसराप्रकार ॥ ध-

तूरारस ८० तोला मीठातेल ८० तोला कांजी ६४ तोला कूट १ तोलाबच १ तोला चीता १ तोला बड़ाआमला ६ तोला मिरच ६ तोला मीठा तेलिया ६ तोला धतूराकेबीज २७ तोला सेंधानोन २७ तोला इन्होंको मिलाय तेलको सिद्धकरि मालिशकरने से वायुको पक्षाघातको हनुस्तंभको कांधास्तंभको कटिग्रहको पीठ त्रिक शिरइन्हों के कंपको सर्वांगग्रह बातको दूरकरै ॥ महाबिष गर्भतैल ॥ धतूरानिर्गुण्डी तूंबी सांठि एरण्ड असगन्ध पुआड़बीज चीता सहोंजना कावली कालिहारी नींब बांझककोड़ी दशमूल शतावरी लघुकरेला सारिवा मुण्डी बिदारीकंद थोहर आक मेढ़ाशिंगी लालकनेर सपेदकनेर बच काकमाची ऊंगा बलिया गंगेरणी बड़ीबलिया कटैली महाबला बासा सोमवेल चांदवेल ये प्रत्येक चार चार तोला लेइ १०२४ तोले पानीमें मिलाय चतुर्थांश काढ़ारक्खै पीछे शुंठि मिरच पीपल कुचिला रास्ना कूट अतीस नागरमोथा देवदारु मीठातेलिया जवाखार सुहागाखार सेंधानोन मणियारीनोन कालानोन खारीनोन सांभरनोन तूतिया कायफल पाठा नसदर मेंदी बनफसा धमासा जीरा गंडूभा इन्होंका चूर्ण १६ तोले मिलाय मीठातेल ६४ तोले मिलाय मंदाग्नि से पकाइ मालिशकरनेसे छाती पीठ कमर जांघ संधि टकना इन्होंकी पीड़ा व वायुको आढ़यवायु को गृध्रसी को महावातको सर्वांगवात को दंडापतानकको कर्णनादको सून्यवात को नाशकरै जैसेबनमें सिंहसेमृगादिक डरभाजतेहैं तैसे औरघोड़ा हाथी पशु इन्होंका विषयक चोटको भी यह महाविष गर्भतेलहरै नरकीभी व पशुकीभी संशयनहींहै॥प्रसारिणीतेल ॥ ४००तोला खीप कापंचागलेइ इसका सतकाढ़ितिसमें दही २५६ तोला खाटीकांजी ५१२ तोला शुंठि २० तोला रासना ८तोला खीप ८ तोला इन्होंका चूर्णमिलायसहज २ कोमलअग्निसे पकाइ और कोइककेमतमें मीठा तेलकोमिलावै व नहीं मिलावै पीछे इसकोमालिशमें व नस्यकर्म में बरतनेसे एकांगवात सर्वांगवात अपस्मार उन्माद विद्रधि मंदाग्नि त्वचागत बायु नाड़ी संधिगत बायु हाड़की संधिकेवायु बीर्यरजगतवायु सबबात इन्होंको नाशकरै और इसकी मालिश घोड़ा हाथी

मनुष्यइन्होंके वायुकोभी हरै इसमें संशयनहीं। और इन्द्रियोंकोजगावे और बंध्याकेसंतानको उपजावे और बूढ़ाबालकस्त्री राजाइन्हों को हितकरै और इसतेलकोपीनेसे पांगुला व कुबड़ा अच्छाहोवै॥ नारायणतेल॥ बेलपत्र अरणी सहोंजना पाडल नींबकीछालखीप असगन्ध दोनों कटेली बलिया बड़ाबलिया सांठीये प्रत्येक ४० तोलेलेइ इन्होंको ४०९६तोले पानी में सिझाइ चतुर्थांशकाढ़ारक्खै पीछेतैल भरा पात्रमेंगेरै पीछे सौंफ देवदारु जटामांसी शिलाजीत बच चंदन तगर कूट इलायचीशालपर्णी पृष्ठिपर्णी रानमूंगरानउड़द दालचीनी तमालपत्रनागकेशर रास्नाअसगन्धसेंधानोन सपेदसांठी येप्रत्येक आठआठ तोलेलेइ चूर्णकरिडालै पीछे शतावरीरस तैलके समान डालै पीछे गौकादूध अथवा बकरीका दूधचौगुना मिलाय तैलको तय्यारकरि इसको पीनेमें व वस्तिकर्ममें व मालिशमेंव भोजनके संग वनस्यकर्ममें बरतनेसे घोड़ा हाथी पांगला नरबातभग्न हाथ टूटापैर टूटा इन्होंको अच्छाकरै और गुदाके बायोंको व नीचरला अंगके बायोंको व नाड़ीके बायोंको व दंतशूलको व हनुस्तम्भकोव कंधास्तम्भ को व अपतंत्रको व एकांगग्रहणको व सर्बांगग्रहणको व इन्द्रिय के क्षीणताको व बीर्य नष्टको व ज्वरक्षीणको व लालजिह्वको व स्वरभंगको व अल्पबुद्धिको व अल्पसंतानको व बंध्या स्त्री को व अंडबातको व अंत्रवृद्धिको यह नारायणतेल सुखदेवै॥ दूसराप्रकार॥ असगंध वलिया बेलपत्र जड़ पाढ़ाजड़ दोनोंकटैली गोखरू गंगेरण नींब सहोंजना सांठी खीप अरणी ये सबचालीस चालीसतोलेलेइइन्होंको चारद्रोणपानीमेंपकाइ चतुर्थांशकाढ़ारक्खै इसमेंमीठातेल २५६ तोलेशतावरीरस २५६ तोलेगौकादूध १०२४ तोले कूट इलायची लालचन्दन मूर्वाबच जटामांसीसेंधानोनअसगंध वलिया रास्ना सौंफ देवदारु शालपर्णी पृष्ठपर्णी रानमूंग रान उड़दतगरयेसबआठआठतोले लेइकल्कबनाइपात्रमें डालैइन्हों में तेलको सिद्धकरि नस्यमें वमालिशमें वपीनेमेंव वस्तिकर्ममें वर्त्तनेसे पक्षघातका व हनुस्तंभकोव मन्यास्तंभको व गलग्रहको व खल्लीबात को व बधिरपनाकोव गतिभंगको व गात्र इन्द्रियइन्होंका शोष व नाश

को व लोहूवीर्यज्वर इन्होंके क्षीणताको व अंडवृद्धिको व कुरंडको व दंत रोगको व शिरोग्रहको व पसली शूलको व पंगुलापनको व बुद्धिहानि को गृध्रसीको व अनेक प्रकारके बातरोगोंको व सर्वांग बातोंको हरै और इसके प्रभावसे बंध्याके पुत्रहोवै और इसकी मालिशसे मनुष्य घोड़ा हाथी इन्होंको सुखउपजै जैसेनारायण दुष्टदैत्योंका नाशकरैं तैसे यह नारायणतेल बात ब्याधिसंबंध रोगमात्रोंको नाशकरै और यह बहुत उत्तमहै ॥ शतावरीतैल ॥ शतावरी बलियाजड़ मोटीबलिया जड़ शालपर्णी पृष्ठिपर्णी एरंडजड़ असगंध गोखुरू बेलजड़ कास कुरंठा येसब छहछहतोले लेइ द्रव्यसे चौगुणापानीमें पकाइ चतुर्थांश बाकीरक्खै पीछेतेल ६४तोलेगौकादूध६४तोलेशतावरीरस६४तोले पानी ६४ तोले शतावरी देवदारु जटामांसी तगर सपेदचंदन सौंफ बलियाजड़ कूट इलायची शिलाजीत कमल ऋद्धि व बाराहीकंद मेदा व मुलहठी मौहाकीछाल काकोली व असगंध जीवक ये सबतोला तोला भरलेइ कल्ककरिडालै और अरंडीतेल चौगुणा मिलाइ तेलको सिद्धकरै गौके गोसोंकी अग्निसे पीछे इसको वर्त्तने से स्त्रीसंगमें बल बढ़ै और नारीपुत्रको उपजावै और योनिशूल अंगशूल शिरशूल का-मला पांडु बिष दोष गृध्रसी तिल्लीका शोष प्रमेह दंडापतानक दाह वातरक्त पित्तबात प्रदर आध्मान रक्तपित्त इन्होंकोहरै यह अत्रिगो-त्रक कृष्णवैद्यकोकहाहै॥ माषतैल ॥ उड़द ६४ तोले पानी २५६तोला मेंपकाइ चतुर्थांश रक्खै तिसमें चौगुणा दूधमिलाइ ६४ तोले मीठा तेल जीवनीय गणोक्त औषधोंका कल्क सौंफ सेंधानोन रास्ना कौंच-बीज मुलहठी बलिया शुंठि मिरच पीपल गोखुरू येसब तोलातोला भरलेइ कल्ककरि मिलाइ तेलको सिद्धकरि वर्त्तनेसे पक्षाघात अर्दित बायु कर्णशूल बधिरपन तिमिररोग सन्निपातज रोग हस्तकंप शिरः कंप बाहुशोष अवबाहुक कलापखंजको हरै इसतेलको पान मालिश बस्तिकर्म इन्होंमें वर्त्तै॥ चौथाविषगर्भतैल ॥ कालेतिलोंकातेल सिरसंम तेल अरंडीतेल ये १ द्रोण भरलेइ लोहाके पात्र में घालै पीछे धतूरा कनेर आक कलहारी कूट थोहर बकायन निशोत जैपाल देवडांगरी खींप मालकांगनी सहोंजना केतकी सांठी कुलथी उड़द कपास

काबिंदोला येसब आठआठ तोलेलेइ डालै पीछेभंगरारस १२८तोले लाखरस १२८ तोले बकरामांस १२८ तोला शणकेबीज १२८ तोला व्याघ्रचरबी १२८ तोले बराहकीचरबी १२८ तोले गीदड़की चरबी १२८ तोले मीठातेलिया ३२ तोले मंजीठ १२८ तोले शुंठि मिरच पीपल हड़ बहेड़ा आमला कूट रास्ना जटामांसी कचूर बच चीता देवदारु बकुची इन्द्रयव गिलोय बायबिड़ंग पित्तपापड़ा नागर मोथा पीपली पिपलामूल चाब चीता शुंठि आजमान अमलतास खैरसार महुआछाल मुलहठी अजमोद तगर सेंधानोन लालचंदन हल्दी दारुहल्दी मोम दालचीनी इलायची तमालपत्र नागकेशर सपेदचंदन येसब आठआठ तोलेलेइ पूर्वोक्तमेंडालि तेलकोसिद्धकरै पीछे लोहभस्म अभ्रकभस्म शंगभस्म सेंधा हीराकसीस मैनशिल शिंगरफ कालाअगर जवादा शिलाजीत गेहूं केशर कस्तूरी येसब सिद्धतेलमें सुगन्ध वास्तेडालि इसको बर्त्तने से ८० प्रकारके बायु आमबात कफबातबिकार कटि गोड़ा जांघ पिंडी इन्होंमें गतबायु गृध्रसी हनुस्तंभ मन्यास्तंभ कंप पक्षाघात पंगुबायु अवबाहुक इन्होंको नाशकरै॥ लघुनारायणतैल ॥ इलायची बलिया तगर लालचन्दन दारुहल्दी कडूंभा दगड़फूल कूट मूर्वा बायबर्णा इन्हों का काढ़ा मीठातेल दूध मिलाय सिद्धकरि पीछे शतावरीरस मिलाय मालिश करने से बायुकोहरै॥ शतावरी नारायणतेल ॥ शतावरी शालपर्णीपृष्ठ पर्णी कचूर बलिया एरंडजड़ दोनोंकटैली करंजुवा कासकीजड़ कुरंट जड़ येसब चालीस चालीस तोलेलेवै इन्होंको १०२४ एकहजार चौबीसतोले पानीमेंपकाय चतुर्थांश बाकीरक्खै पीछेसांठीबच दारुहल्दी शतावरी चन्दन कालाअगर शिलाजीत तगर कूट छोटी इलायची जटामांसी तुलसी बलिया असगंध सेंधानोन रास्ना मंजीठ नागरमोथा गठोना पित्तपापड़ाये दो२तोलेलेय पीछे गौकादूध१२८ तोले बकरीकादूध १२८ तोले शतावरीरस६४तोले तिलकातेल६४ तोले सांरीमेंमिलाय तेलको सिद्धकरि पीछे कछुकशीतलहोनेपरलौंग नख राकोल बायबिड़ंग जीरा दालचीनी कुटकी कपूर मैनशिल करंडु केसो कस्तूरी इन्होंकाचूर्ण तेलमें बुरकाय वर्त्ते इसको मालिश करने

से वायुसे पीड़ित घोड़े मनुष्य हाथी अच्छेहोवें और सबवात विकारों कोहरै और इसके पीनेसे शरीर दृढ़होय और इसके प्रातपसे खिकच भी गर्भकोधारणकरै और स्त्रीका तो क्या कहनाहै और इससे हिय-शूल पसलीशूल आधाशीशी अपची गंडमाला वातरक्त हनुग्रह का-मला असमरी पांडुउन्माद इन्होंको नाशकरै यह जगत्पर कृपाकरि नारायणने कहाहै इसवास्ते इसका नाम नारायणहै॥ दूसरा॥ शता-वरी तेल कूट दारुहल्दी इलायची राल तगर दालचीनी तमालपत्र पित्तपापड़ा नख जटामांसी मालकांगनी वाला चन्दन वच शिला-जीत मंजीठ देवदारु रोहिषतृण अगर नागवला रास्ना असगन्ध शतावरी सांठी सौंफ सेंधानोन इन्हों का कल्क वनाय गौका दूध शतावरीरस तिलोंका तेल इन्होंको मिलाय तेलकोसिद्धकरि वर्त्तनेसे वातरोग शांतहो यहतेल वैद्यों का मान्याहुआ है॥ दशमूलादि तेल॥ दशमूलके काढ़ा में बराबर का दूधमिलाय पीछे वलिया नागरमो-था तालीसपत्र इलायची चन्दन दारुहल्दी कांगनी वाला मंजीठ लाख कूट वच तगर इन्हों के कल्कमें मीठातेल मिलाय तेलकोसिद्ध करि वर्त्तनेसे वलधातु कांति रुचि अग्नि इन्होंको बढ़ावै और वायु रोगको हरै और राजा वूढ़ा बालक स्त्री इन्होंको सुखदेय॥ तीसरा प्रसारिणीतेल॥ खींपका पंचांग ३०० तोले व लज्जावन्तीका पंचां-ग १२०० तोले शतावरी ४०० तोले असगन्ध ४०० तोले केतकी ४०० तोले दशमूल ४०० वलियाजड़ ४०० पीयावासा ४०० तोले औ पानी १०२४०० तोलेमें पकाय १०२४ तोले काढ़ाबाकीरक्खे पीछे २०४८ तोले कांजी मिलावै दहीका पानी १०२४ दूध १०२४ तोले सफेद ईखका रस १०२४ बकराका मांस १०२४ तिलोंका तेल १०२४ तोले मिलावां तगर शुंठि पीपल चीता कचूर वच ल-ज्जावंती मूर्वा पीपलामूल देवदारु शतावरी इलायची दालचीनी बाला केशर कस्तूरी मंजीठ भिलावां नख अगर कुंदरू हल्दी लौंग रोहिषतृण चन्दन कंकोल नीली नागरमोथा दारुहल्दी कूट तमा-लपत्र कचूर पित्तपापड़ा सरल कालाअगर पद्मकेशर मालकांगनी बाला जीवक ऋषभकमेदा महामेदा काकोली शीर्षकाकोली रानमूंग

रानउड़द सफेदमूसली कालीमूसली बोल नागकेशर रसोत कुटकी
जावित्री पुत्राड़ शाल्लकीरस ये सब बारा२ तोले लेय पीछे इन्होंका
कल्क बनाय पूर्वोक्तमें मिलाय तेलमें सिद्धकरि मंदाग्निपर दृढ़पात्र
में सिद्धकरके इसको छःप्रकार वर्त्तनेसे रोगियों को अच्छा है यह
मालिश त्वचागत वायुको हरै पीनेसे कोष्ठगत वायुको हरै भोजन के
संगलेनेसे सूक्ष्मनाड़ीगत वायुको हरै और नस्यलेनेसे ऊर्ध्वगत
वायुको हरै बस्तिलेने से पक्षाश्रित वायुको हरै निरूह लेनेसे सर्व
शरीरकी वायुको हरै यह बालकों को किशोर मनुष्यों के हाथियों
को घोड़ोंको गौवोंको अमृत समानहै और इसतेलके सींचनेसे सूखे
हुये वृक्ष फिर हरेहोके शाखा व फल लगैं और इसको पीनेसे बूढ़ा
जवानहोय और बंध्या सन्तानको उत्पन्नकरै बिना पुत्रवाला पुरुष
पीवै तो पुत्रको पैदाकरै और ८० प्रकार के वायुरोग ४० प्रकार के
पित्तरोग और २० प्रकारके कफरोगों को व सन्निपातों को जल्दी
नाशकरै और इसी तेल के प्रतापसे अन्धक वृष्णिकुलमें यादवों के
पुत्रउत्पन्नभये हैं और इसके प्रारम्भमें विष्णुभगवान्के अर्थ बलि-
दानकरै॥ चौथाप्रसारणीतेल॥ खींप व लज्जावन्तीके काढ़ा में गौका
दूध तक्र दहीका पानी दही कांजी मीठातेल इन्हों को मिलाय पीछे
शुंठि नागरमोथा बालाकूट जटामांसी शतावरी देवदारु कालाबाला
शिलाजीत रास्ना गुड़ सारिवा सेंधानोन बेलफल एरंडजड़ रानमूंग
सांठी रुद्राक्ष मोचरस अमलतास मुलहठी सहँजना गिलोय दारु-
हलदी हड़ करंजुवा मेदा हलदी त्रिफला चीता अरंडबीज इन्होंका
कल्क मिलाय तेलको सिद्धकरि वर्तनेसे बातरोग पक्षाघात बातसम्ब-
न्धी व्याधि अफारा हनुग्रह गृध्रसी बिश्वाची अपबाहुक शोष हीया
व मस्तक रोग शुष्कबाल अंगभंग प्रबल बातरोग इन्होंको हरै॥ पंच-
म प्रसारणीतेल ॥ खींप व लज्जावंती २५६ तोले १०२४ तोले पानी
में काढ़ाकरि २५६ तोले बाकीरक्खै तेल २५६ तोले दही २५६ तोले
कांजी २५६ तोले दूध ५१२ तोले और चीता पीपलामूल मुलहठी
सेंधानोन बच सौंफ देवदारु रास्ना गजपीपली लज्जावंती की जड़
भिलावां जटामांसी इन्होंका कल्क मिलाय तेलको सिद्धकरि वर्तने

से वात कफरोग जावें और स्त्री पुरुष के ८० प्रकारके वायु जावें और कुब्ज स्तिमित पंगलापन गृध्रसी अर्दित ठोड़ी मंगर शिरगल इन्होंके स्तंभको हरे ॥ पंचमविषगर्भतैल ॥ मीठातेलिया पुष्करमूल कूट वच भारंगी शतावरि लहसुन शुंठि वायविडंग देवदारु असगन्ध अजमोद मिरच पीपलामूल रास्ना लज्जावन्ती सहँजना की छाल गिलोय हंसपदी हड़ दशमूल निर्गुण्डी सौंफ पाढ़ा कौंच के बीज कडुंभा बड़ीसौंफ ये चार तोले लेय चौगुने पानी में पकाय चतुर्थांश बाकीरक्खे पीछे मीठातेलिया ४ तोले बारीक पीसि मीठे तेलको सिद्धकरि मालिशकरने से सब वातरोग संधिवात सन्निपात त्रिकग्रह पृष्ठग्रह कटिग्रह पक्षाघात अर्द्धाङ्ग गात्रकम्प कुब्जक धनुर्वात गृध्रसी अपतानक इन्होंकोहरे ॥ छठा विषगर्भतैल ॥ निर्गुण्डी रस ६४ तोले भङ्गरारस ६४ तोले धतूरारस ६४ तोले गोमूत्र ६४ तोले वच कूट धतूराके बीज कांगनी कायफल ये दो २ तोले और इन सबों के बराबर मीठा तेलिया इन्हों में ६४ तोले मीठा तेल मिलाय सिद्धकरि मालिश करने से वातरोगों को हरे जैसे हेमन्तऋतुमें मृगाक्षी स्त्रीका आलिंगन जाड़ाकोहरे ॥ दार्व्यादितैल ॥ देवदारु १ भाग कूट २ भाग पीपली ३ भाग रास्ना ४ भाग शुंठि ५ भाग चीता ६ भाग कटेली ७ भाग गूगल ८ भाग इन्हों के काढ़ा में केलाकारस दूध मिलाय तेलको सिद्धकरि मालिशकरनेसे सब अङ्गोंको पीड़ा देनेवाले वातरोगोंको दूरकरे ॥ दशमूलतैल ॥ खंभारी अरणी बेलपत्रकी जड़ सहँजना पाढ़ा गोखुरू शालपर्णी दोनोंकटेली पृष्ठिपर्णी इन्हों के काढ़े व कल्क में तेलको सिद्धकरि मालिश करनेसे अनेकप्रकारके वायुरोग शांतहोवैं व अरंडजड़ निर्गुण्डीरस मुंडी सहँजनाकी जड़ शतावरि गडौंभा दोनोंकटैली लालअरंडकी जड़ ये दश २ तोले लेय काढ़ेमें तिलोंका तेल सिद्धकरि मालिश करने से हाड़ नसखाल व सब अङ्गोंके वायुको नाशकरै व मालकांगनी रानमेथी स्याहजीरा अजमान तिल इन्होंको बराबरले यन्त्र द्वारा तेलकढ़ाय तेलको शरीरमें मालिश करने से सब बातव्याधि शांतहोवैं ॥ लघुमाषादितैल ॥ उड़द सेंधानोन बलिया जड़ दशमूल

हींग बच शतावरी शुंठि इन्होंमें तेलको सिद्धकरि मालिश करनेसे सब बायु शांतहोवे ॥ विजयभैरवतैल ॥ पारा गन्धक मनशिल हरताल ये समान भागलेय कांजी में खरल करै कल्क बनाय सूक्ष्मबस्त्र पै लेपकरि तिसकी बत्ती बनाय तेलमें भिगोय ऊपरला भागमें प्रास्त करै और बत्तीके नीचे पात्ररख तिसमें जो तेलपड़ै तिसकीमालिश से व खानेसे बातरोगों को व बाहुकम्प को व शिरकम्प जंघाकम्प एकांग बात को हरै इसमें द्रव्यसे चौगुने मीठे तेलमें बातीको भिगोवै ॥ प्रसारणीतैल ॥ शरदृऋतुमें खींप व लज्जावंतीका पंचांग ४०० तोलेलेवे महाबला ४०० तोले शतावरि ८०० तोले बलियाजड ४०० तोले असगन्ध ४०० तोले कौंचकेबीज ४०० तोले केतकी ४०० तोले इन्होंको चारद्रोण भर पानीमें पकाय काढ़ाकरै पीछे तिलोंकातेल २५६ तोला मांसकारस २५६ तोला दही २५६ तोला दूध २५६ तोला और तगर कूट मैनफल नागकेशर नागरमोथा बच रास्ना सेंधानोन पीपली जटामांसी मंजीठ मुलहठी जीवक ऋषभक मेदा महामेदा सौंफ थोहर शुंठि देवदारु काकोली क्षीरकाकोली बलिया भिलावां ये सब दो २ तोले इन्होंका कल्क करि मिलाय मध्यम प्रकारसे तेलको सिद्धकरि पीनेमें व बस्तिकर्म म व मालिशमें व भोजनकेसङ्ग वर्त्तनेसे बायुके बिकारोंको हरै और कुब्ज बायुको पंगुबायुको शुष्कबायुको टूटीसन्धि हाड़को धनुर्बात को अच्छा करै और बातरक्त रोगीको व बायु करके नष्टचित्तवाले को स्त्री सङ्गसे नष्टबीर्य वाले को यह बाजीकरण उत्तम है ॥ व्याघ्र तैल ॥ भगेरा या सिंह का मस्तक व शिरकोलेइ कूटिकरि पानी में बहुत पकाय चौथाहिस्सा रक्खे पीछे पानी से आधातेल और गौ का दूध बकरीकादूध मदिरा कांजी मस्तु ये तैलके समान भागलेइ मिलाय पकाइ देवदारु बच कूट तगर चन्दन नागरमोथा मंजीठ पोहकरमूल रास्ना दालचीनी इलायची तमालपत्र नागकेशर सेंधा नोन पीपल मिरच शुंठि जटामांसी पियावासा बाला असगन्ध कौंचकेबीज चीता बंशलोचन शतावरि गोखुरू केतकी मूर्वा मुलहठी गेरू जायफल लौंग जावित्री कुटकी पीपलामूल सफेद अतीस सौंफ

सांठी जीवनीयगणोक्त औषध रालेबोल नागकेशर अगर काला नख मीठातेलिया इन्होंका कल्कबनाइ तैलसे चतुर्थांशघाले पीछेमन्दाग्निपर पकाइ मालिश करने व वर्त्तनेसे ८० प्रकारके बायु रोगोंको व बुढ़ापाको व घोड़ोंकी वायुको व हाथियोंके शोषको नाशकरै और बलवीर्य तुष्टि पुष्टि मेधा अग्नि इन्होंको बढ़ावै और श्रुतिभ्रंशको व खंजवातको व क्रोष्टुशीर्षको व कटिग्रहको व मन्यास्तंभको व हनुस्तंभको व मेदबातको हरै और बंध्यास्त्रीके पुत्रको उपजावै और नपुंसकोंके कामदेव पैदाकरै यह अश्विनीकुमारों ने कहा है और इसीतरह मृत्ताक्षका तैलभी सिद्धकरै॥ महाबलातैल ॥ बलियाकी जड़काकाढ़ा दशमूलका काढ़ा यव गेहूँ कुलथी इन्होंका काढ़ा दूध ये सब आठ आठ भागलेइ पीछे तैल मधुरगणोक्त औषध सेंधानोन ये मिलाइ तगर राल सरलवृक्ष देवदारु मंजीठ चन्दन कूट इलायची बेर कालासहोंजना हड़ आमला जटामांसी शिलाजीत तमालपत्र तगर सारिवा बच शतावरि असगन्ध सौंफ सांठी इन्होंका कल्क मिलाइ तैलको पकाइ उतार ठण्ढा होनेपर सोनाके व चांदी के व माटीके बरतन में घालि बरतनको ढकि एकान्त स्थानमें रखदेवै यह बला तैल विख्यातहै बातके सब बिकारोंकोहरैहै और बलबिचारि इस तैलकी मात्रासूतिकाके वास्ते देनेसे सुखउपजै और गर्भचाहनेवालीस्त्री व क्षीणबीर्य्य पुरुष क्षयी छर्दिवाला मर्मदुखनेवाला मर्महतवाला टूटाहाड़वाला टूटीसन्धिवाला इसको सेवनेसे सुखपावै और सब आक्षेपकादि बायुरोगोंको हरै और इससे धातुपुष्टहोवै व फिर जवानी आवै यह तैल राजा व राजमन्त्रीके वास्तेहै हमेशेको॥ दूसराशतावरितैल ॥ शतावरिरस ६४ तोला मीठातैल ६४ तोला दूध ६४ तोला बरणा ४ तोला सहोंजना ४ तोला देवदारु ४ तोला शिलाजीत ४ तोला जटामांसी ४ तोला इन्होंका कल्कमिलाइ तैलको सिद्धकरि वर्त्तै इसको नारायणतैल कहते हैं इसकी मालिशसे अनेक प्रकारकी बात व्याधि शान्त होवै॥ तीसराप्रकार ॥ दूध १२८ तोला मीठा तैल ६४ तोला शतावरि रस ६४ तोला बच कूट चन्दन देवदारु कावली घण्टोली रास्ना मंजीठ इलायची रुदंती शि-

लाजीत असगन्ध जटामांसी बलिया ये दोदोतोलेलेय कल्ककरि मि-
लाय तैलको सिद्धकरि वर्तनेसे एकांग बात सर्बांगबात टूटेहाड़ टूटी-
संधि तृषा कुब्जबात बामनाबात पंगलाबात इन्हों को व सबबातों
को यह शतावरितैल मालिशसे दूरकरै ॥ चौथाप्रकार ॥ शतावरिकी
जड़का यन्त्रसे काढ़ारसलेय तिसमें तिलोंकातैल २५६ तोला दही
२५६ तोला दूध २५६ तोला सौंफ बच कूट जटामांसी शिलाजीत
चन्दन मालकांगनी पदमाख नागरमोथा बाला कालाबाला काय-
फल सेंधानोन मुलहठी लोध कलहारी लालचन्दन मूषाकर्णी इला-
यची मुरा लज्जावंती कमलकी नाल पद्मकेशर बिशेषधूप राल जीव-
कऋषभक कचूर पतङ्ग पित्तपापड़ा दारुहल्दीकचूर सारिवा मंजीठ
मुलहठी ये सब चार चार तोले लेइ कल्कबनाय मिलाय तैलको
सिद्धकरि मध्यम प्रकारसे पीछे इसको मालिशमें व नस्यमें व पान
में व भोजनमें व वस्तिमें बर्त्तनेसे बायुकीपीड़ा पक्षाघात अधिमंथ
अर्दित कर्णशूल ऊरुस्तंभ कटिग्रह कम्पबायुसूतिकारोग मन्यास्तं-
भ धनुर्बात कंपबायु अस्थिभङ्ग सर्बांगबात धातुशुष्क कारक बायु
धातुशोष स्त्रीकेकपड़ेबन्ध में बीर्य क्षीणबन्ध्या गर्भिणी इन्होंकोसुख
उपजै और बीर्य्यबल आरोग्य इन्होंको बढ़ावै यहशतावरी तैलसब
बातबिकारोंको दूरकरै ॥ चन्दनादितैल ॥ चन्दन पदमाख कूट बाला दे-
वदारु नागकेशर तमालपत्र इलायची दालचीनी जटामांसी तगर
बाला जायफल घंटाफल केशर जावित्री नख गूगल कस्तूरी अज-
मान दगड़फूल अदरख रङ्ग पतङ्ग पोहकरमूल नागरमोथा लाल
चन्दन सारिवा कचूर कपूर मंजीठ लाख मुलहठी कुटकी सौंफ शता-
वरी मूर्वा असगन्ध शुंठि कमलकेशर बिशेषधूप पाठाजड़ कालाअ-
गर पित्तपापड़ा सफ़ेदलज्जावंती लौंग कंकोल येसबदोदो तोलेलेय
दशमूलकाकाढ़ा६ भागलेयदूध६भागयवबेरकुलथी बलियाजड़एक
एकभाग लेय चौदाभागमीठातेल इन्होंको मिलायतेलको सिद्धकरि
पके तब जल्दीउतार पहिले सुगन्धितधूपसे अच्छे बर्तनमें धूपदेय
पीछे तेल कोरक्खैयहचन्दनादि तेलकुमार अवस्थावालेको धनवान्
को सुखीको स्त्रियोंको गर्भ की इच्छाकरनेवाली स्त्रियोंको सुखदेवै है

और८० प्रकारके वायरोग वातरक्त सूतिकारोग बालकोंके रोग मर्म रोग हाड़टूटना धातुक्षयइन्होंको हरै और जीर्णज्वर दाहज्वर शीत ज्वर विषमज्वर शोक अपस्मार कुष्ठरोग वंध्यारोग वातब्याधिमात्र कंडुरोगखाजरोग इन्होंको हरै और रूखीदेहवालेको व श्वित्री कुष्ठ वालेको वहुतदिन मालिश करनेसेकांति लावण्यपुष्टि इन्होंकोबढ़ावै है और इसकेसेवनसे कन्धा कण्ठके बीचमें रोग न उपजै और बुढ़ापा नहीं आवै और ये चन्दनादि तेल संसारके कल्याणके वास्ते बड़ेमुनि आत्रेयजी महाराजने कहाहै॥ माषादितैल॥ उड़द १२८ तोले दशमूल २०० तोले बकराकामांस १२० तोले इन्होंको एक द्रोणभर पानीमें पकाय चतुर्थांश बाकी रक्खै पीछे तिलों का तेल १२८ तोले दूध २५६ तोले जीवनीय गणोक्त औषधें मंजीठ चाब चीता कायफल शुंठि मिरच पिपली पीपलामूल रास्ना आमला गोखुरू कौंच अरंडजड़ शतावरि सेंधा खारीनोन कालानोन देवदारु गिलोय कूट असगन्ध वच कचूर येसब एकएक तोलालेय कल्ककरि पूर्वोक्तमें मिलाय मंदाग्निसे तैयारकरै इसकी मालिशसे पक्षाघात अर्दित हनुस्तंभ कर्णशूल मस्तकशूल त्रिदोषका तिमिररोगहाथ पैर मस्तक कंधाकान इन्होंका वहरापनाकलापखंज पंगुवात गृध्रसीअपबाहुक वा सबप्रकारके बायुबिकारइन्होंको नाशकरै इसकोपीनेमें वस्तिकर्ममें मालिशमें नस्यकर्ममें व कर्णादिकोंकेघालनेमें वर्तै यहमाषादितैल पुराने मुनियोंनेकहाहै॥ महानारायणतैल॥ तिलोंकातेल १०२४तोलेलेइ बड़ पीपल आंब जामन पिलखन इन्होंके पत्तोंके कल्कसे तेलको शुद्धकरै पीछे गौकादूध व बकरीकादूध१०२४तोले शतावरीरस१०२४ तोले दशमूल बलिया रास्ना सहौंजना कमल सांठी निर्गुंडी बड़ाबलिया छोटाबलिया खींप व लज्जावंतीअसगन्ध पीयाबांसाडाभकीजड़ करंजवा चन्दन लोध बच आसाणा पलसअर्जुन अरंडजड़ वरणा छोटारालवृक्ष बड़ारालवृक्ष सिरस ऊँगा बांसा जटामांसी बहेड़ा कचनार कैथा नींब चिरौंजी आलकी लकड़ी पाषाणभेद अम्लतासदूधी अनार गूलर सप्तला कुआरैकापट्टादालचीनी मालती माधवी यवकासत्तू बेरकीगुठली कुलथी कौंच आक

बिदौला गिलोय थोहर केतकीकीजड़ धतूराकेबीज कलहारी पारसी पीपल चीता बकाण नींब पीपलवृक्ष बड़ पिलखन नांदरूखि जामन गोरख मुंडी टंकारी मूसली लाललज्जावंती बहेकलये सबचालीस२ तोले लेइ इन्होंसे आठ गुणे पानीमें काढ़ाकरि चतुर्थांश बाकीरक्खे तिसमें तिलोंका तेल मिलाय पकावे फिर तिसमें बकरा मेढ़ा हिरण अरुसुन्दर नेत्रवाला मृग सावर शूसा सेह गादड़ी गोह सिंह भगेश रीछ बरहड़ा शूर गैंड़ा भैंसा घोड़ा बानर मोटानकुल बिलाव मूषा बड़ाभींडक यानेभदि बलक तीतर लाव खंजरीट चकोर उरलू मोर बनकामुरगा गीध नीलटांच चकुवा कारंडव याने बड़ाकाक कबूतर सारस बन कुंजि परेवा और रोहित मद्गुर शिलिंद्र शृंगक इल्लिश गर्गर वर्म्मी कथिका कबिका इन्हीं प्रकारों की मछली बड़ीमछली शिशुमारमच्छ शांकुचीमच्छ मगरमच्छ घंटिकाकार इनके अभाव में जलगिंडोवा इन्हों में से जितने मिलें उतनों का मांस लेवे १०२४ तोले काढ़ाकरि तेल में मिलावे पीछे रास्ना आसगन्ध सौंफ दारुहल्दी कूट शालिपर्णी पृष्ठिपर्णी मुद्गपर्णी माषपर्णी कालाअगर केशर सेंधानोन जटामासी हल्दी दारुहल्दी शिलाजीत पोहकरमूल चन्दन इलायची मुलहठी तगर नागरमोथा तमाल-पत्र भंगरा जीवक ऋषभक मेदा महामेदा ऋद्धि वृद्धि काकोली क्षीरकाकोली बच कचूर सांठी मूर्वा दालचीनी कायफल गठौना पद्माख कमल की नाल जायफल केतकी नागदमनी एकांगी मुरा शरल वृक्ष गिलोय बाला धमासा कौंचके बीज नख बकायन नागरमोथा अर्जुन चिरायता बादाम खजूर चिरफल धव के फूल पीपलामूल पित्तपापड़ा परवल कल्हारकमल अरणी बनप्सा लज्जा-वंती इन्द्रयव रसौंत किकरौली के बीज बरणा दाख पीपली द्रोणी सांठी पित्तपापड़ा बायबिड़ंग कनेर निशोथ नीलाकमल पद्माख मेथी केलाकंद चीता गोखुरू तालमखाना कंकोल दारुहल्दी क-सुंभा के फूल अगर शिलाजीत मोम लौंग कपूर कस्तूरी बालाअं-बर ये सब दोदो तोले लेइ कल्क बनाय तेलको सिद्धकरे और शुभ नक्षत्र शुभलग्न शुभमुहूर्त्तमें ब्राह्मणों को और वैद्यराजोंको प्रसन्न

करि श्रीनारायण का और महादेवजीका पूजन कर सोना के व चांदी के व तांबा के व लोहाके पात्र में घालि रक्खै पीछे इस को मालिशमें अंजनमें नस्यमें निरूहवस्ति में स्नानमें पीनेमें खाने में जैसारोग देखै तैसे बरतै बहुत कहना करके क्याहै इस तेलकी योजना करनेसे ८० प्रकार की वातव्याधि दूरहोवै और बुढ़ापाजावै और शरीर में वल न पड़ै सफेद बाल कालेहोजायँ नेत्रोंका तेज गरुड़की तुल्य होजाय और ऊंचा सुनने को बहिरापनेको कर्णनादको हाथकम्पको शिर कम्पको प्रलापको बुद्धिभ्रंशको नाशकरै और इस के सेवनसे मनुष्यके शरीर में धातुबढ़े जैसे जलके सेवनसे वृक्षके डाली पत्तेबढ़ैं तैसे और जिस स्त्री का कच्चागर्भ गिरपड़े व प्रसूतवालीको व पैरावाली को व घनीसंतान होने से क्षीण होगई हो तिस को यह तेल सेवन अच्छाहै और इसके सेवनसे वंध्याके पुत्रहो और गर्भपात होवे नहीं और योनिरोग प्रदररोग शांतहोवै और इसतेल से उत्तम संसारमें औषधनहीं है वलवीर्यको बढ़ावैहै और पुष्टकरै है और यह बड़ा रसायन है पहिले देवता और राक्षसोंके युद्धमेंबलवान् दैत्योंने देवताओंकी हाड़संधि शरीर तोड़दिये मोड़ बांधदिये ऐसे दुःखित देवतोंको देखकर देवोंके और मनुष्योंके सुखके वास्ते महानारायण तेलकहाहै ॥ दूसराप्रकार ॥ बलियाजड़ असगन्ध बड़ी कटैली गोखुरू सहिंजना नींब बड़ाबलियार कटैली कांटिला गंगेरन अरणी रास्ना कौंचकेबीज निर्गुण्डी अरंडजड़ पियाबासा स्याह जीरा लज्जावंती पाढ़ा इन्होंकीजड़को कूटि८१९२तोलेपानीमेंपकाय चतुर्थांशकाढ़ारक्खै मीठातेल ५१२ तोले गौकादूध व बकरीकादूध ५१२ तोलेशतावरीरस ५१२ तोले इन्होंकोमिलाय कपड़ासेछानि पीछे रास्ना असगन्ध सौंफ दारुहल्दी कूट शालिपर्णी शिलाजीत कालाअगर नागकेशर सेंधानोन जटामासी हल्दी दारुहल्दीदगड़फूल पुष्करमूल चन्दन इलायची मुलहठी तगर बाला तमालपत्र भँगरा जीवक ऋषभक मेदा महामेदा ऋद्धि २ वृद्धि काकोली क्षीर काकोली जांटी ढांक सांठी एलवालुक कचूर मूर्वा दालचीनी कमल की नाल पद्माख कमलकन्द जायफल केतका नागदमणी देवदारु

शरलवृक्ष मदिरा जीवंतीशाक चन्दन पीतबाला धमासा कौंचके बीज नख बकाएा ताड़केमस्तकका गाभा चिरायता खजूर नागरमोथा ये सब छह छहतोले लेइ तगर ८ तोले मजीठ ८ तोले इन्हों का कल्क करि मिलावै फेर हिरए कुरङ्ग सुन्दर नेत्रवालामृग मोर गोह सूसा शाका चकुवा बतक लावा सारस क्रौंच बगुला टिटाटबली कंबुबर्ण अनपदेशके कछुवे सोटेरोहित शवनेत्र कसआढ्य मुद्गर शृङ्गिकापाठीन कालियक तोड़िक इत्यादिक जलकीमछली व ऊषर जमीन की मछली और शिशुमार कुरुदादिकमच्छ जलचरजीव बिलमेंरहनेवाले सर्पादिक आकाशके फिरनेवालेपक्षीइन्होंमेंसेयथा योग्यलेइ मांसकारस पूर्वोक्तमें मिलाय तेलको सिद्धकरि सुन्दर मुहूर्त्त सुन्दर नक्षत्र सुन्दरलग्नमें ब्राह्मण व बैद्योंको प्रसन्नकरि तांबे के पात्रमें पहले कपूर कस्तूरी केसर इन्होंकी धूपदेइ ग्लानि व दुर्गन्धि दूरकरनेके वास्तेसुन्दरभोजनके सङ्ग यज्ञघृतकेसमान पीनेमें नस्यमें निरूहणवास्तिमें भोजनमें मालिशमेंबर्तनेसे उन्माद शोक क्षत रक्तपित्त श्वास भ्रम मूर्च्छा खांसी अग्निबात ठोड़ीकीजड़ में दांत की जड़में कृमि शरीरकीपीड़ा दाह तालुशूल नेत्रशूल कर्णशूल बहिरापना ज्वरकी पीड़ा इन्द्रियोंकी मन्दता मन्दाग्नि धातुक्षय खाज कटिग्रह अपस्मार गृध्रसी अर्द्धांगबायु हस्ताभिघात पादाभिघात मस्तकशूल माड़ापना प्रमेह नाककानके बिकार सबबातब्याधिभूतोन्माद कृत्योन्माद ग्रंथिबिकार सद्योब्रण अस्थिभंग नाड़ीब्रणइन्हों कोनाशै और शरीरका बर्ण सोनाकेसमान उपजावै और बन्ध्यपुरुष व बन्ध्यानारी इसकी मालिशसे अच्छापुत्रको उपजावै और ग्रीष्म ऋतुके घामसेजला वकठा वृक्ष सींचनेसे फिर हराहोय और ऐसा कोई रोग नहीं है कि इसकी मालिश से नहीं जावै यह नारायण तेल श्रीनारायण ने अपनी जबान से कहा है॥ जम्बुकादि तैल॥

बूढ़ेगीदड़को लेइ पैर पेट मध्यभागकी आंतोंको त्यागे काटि अन्य अङ्गोंकोकूटि चौगुनेपानीमें काढ़ाकरि चतुर्थांशपानीरक्खै औरइसी के समान मीठातेल मिलावै और पीछे बकराके रोम मूँड़ि सींग शिरको बर्जिके अन्य शरीरकोलेइ और मुरगाके मांसकीआंतोंको

दो द्रोणभर पानीमें पकाय चतुर्थांश बाकीरक्खै इनदोनों जीवों के मांसोंके काढ़े अलग २ बनवावै और तेलके समान शतावरीरस व दूध बकरीदूध मस्तु उत्तमसदिरा येसब तेलके समानलेइ और शालिपर्णी पृष्ठिपर्णी बलिया लघुशतावरी एरंडजड़ बड़ीकटैलीजड़ काश जड़ पियाबासाजड़ करंजवाजड़ खीप व लज्जावंती असगन्धताड़ जड़ सांठी रास्ना गोखुरू पाढ़ा पाटला नींब आक इन्होंकीजड़ बड़ी दंती कटभी कचनार नागकेशर ऊंगा अक्रोड बेलजड़ सहोंजना नागरमोथा करंज बासा धमासा परवल निर्गुण्डी मुंडी तूंबी कलिहारी सहोंजना पील खजूर कटैली चिरमठीकीजड़ भिदारा गिलोय शङ्खपुष्पी भङ्गरा कुद बड़ कूड़ावाला मैनफल कोंच थोहर बकाण गडूंभा शिरस मैनशिल येसब चारचार तोलेलेय काढ़ाचतुर्थांश बनाइ तेल समान मिलावै पीछेचन्दन देवदारु कूट जटामासी सांठी करंजवा रास्ना निशोथ पित्तपापड़ा सहोंजना गूगल दालचीनी इलायची तमालपत्र नागकेशर मजीठ हल्दी दारुहल्दी नागरमोथा धौंकेफूल पतङ्ग जवाखार सुहागाखार बच इलायची शिलाजीत शुंठि मिरचपीपलपांचोनोन येसब दोदोतोलेले कल्कबनाइमिलाइ तेलकोसिद्धकरि मंदअग्निसेपीछे सुगन्धवास्तेलौंग जायफल कस्तूरी कपूर शिलाजीत नख बाला काला अगर तगर तमालपत्र जावित्रीइन्होंकोपीसि तेल में मिलावै पीछेइसको बर्तनेसे ८० प्रकारके बातरोगजावैं और सूजन शूल कटिशूल कुब्जबात खंजबात अधोभागगत वाय मस्तकशूल मन्यास्तम्भ हनुस्तंभ गलग्रह बातरोग एकांगबात अस्थिभङ्ग संधिभङ्ग पक्षाघात अर्दित हनुग्रह बहिराबात गुङ्गाबात मिम्मिणबात कामला पांडु खल्लीबात शूल कटिग्रह हस्तकम्प शिरकम्प गात्रकम्प मस्तकशूल कलापखंज बातगृध्रसी अवबाहुक कर्णनाद दण्डापतानक सूतिकाबात इन्होंको नाशकरै और बालक का मांस बढ़ै और ज़वानको बल बीर्य अग्निको बढ़ावै और अंत्रवृद्धि को व अण्डवृद्धि को व अपचीको नाशै और योनिदोषको व शूलको व लोहूके बिकार को व अफाराको व बातरक्तको हरै और बातग्रस्त घोड़ोंको व बात भग्न हाथियोंको व बातग्रस्त मनुष्योंको यहतेल रोगसे छुटावै और

सब बातबिकारोंको व हाड़के बायको व संधिबायको व बातक्षीण-
ताको व बवासीरको व भगन्दरको व भूतपीड़ा को व ग्रहपीड़ा को
व पिशाच पीड़ाको व दुष्टग्रह पीड़ाको व दादरोगको व विचर्चिका
को व पामको व कुष्ठको व खाजको व घावको नाशकरै यहशृगाला-
दि तैल बहुतसी पीड़ाकोहरैहै इसतेलसे सबरोग नाशहोवैं॥ तीसरा
माषादितैल॥ उड़दका काढ़ा६४ तोला बलियाका काढ़ा ६४ तोला
रास्नाकाकाढ़ा६४ तोला दशमूलकाकाढ़ा६४ तोलायवकाकाढ़ा६४
तोला बेरकीगुठलीका काढ़ा ६४ तोला कुलथीका काढ़ा ६४ तोला
बकराके मांस का रस ६४ तोला मीठातेल ६४ तोला दूध २५६
तोला रास्ना १ कौंच सेंधानोन शतावरी एरण्डजड़ नागरमोथा
जीवनीय गणोक्त औषध बलियार शुंठि मिरच पीपल ये सब एक १
तोलालेइ मिलाय तैलको सिद्धकरि बर्त्तनेसे हस्तकम्प शिर कम्प
बाहुकम्प अवबाहुक इन्होंको दूरकरै और इस तैलको बस्तिमें व
मालिशमें व नस्यकर्ममें बरतै यह माषादितैल कांधाके ऊपरवाले
भागके रोगोंको दूरकरै॥ रास्नापूतिकतैल॥ दशमूल बलिया दारु-
हल्दी असगन्ध शतावरी अरण्ड निर्गुणी अरणी ईषकी जड़ पिया-
बासा चीता करंजवा अङ्कोल मूली सांठी पीलु अर्कपुष्पी धमासा
जटामासी कुचला लाल अरण्ड लाल आक यवकेसत्तू बेरकी गु-
ठली कुलथी ये सब भागले और इन सबों के तुल्य रास्ना और
सबों के तुल्य करञ्जवा इन्होंका काढ़ा अष्टमांश बाकी रक्खै और
काढ़ा से चौथा हिस्सा मीठा तेल इतनाहीं बकरी का दूध गूगल
तगर जटामासी त्रिकुटा त्रिफला दालचीनी इलायची तमालपत्र
नागकेशर कचूर बायबिड़ंग देवदारु हींग रास्ना बच कुटकी पाढ़ा
मुलहठी चीता गहुला पिपलामूल चन्दन चाब अजमाइन लौंग
चमेली कूट मजीठ सौंफ शिरसम जायफल रोहिषतृण पाढ़ा बाला
इन्होंका चूर्ण तेलसे छठाहिस्सा लेइ कल्कबनाइ पूर्वोक्तमें मिलाय
सुन्दर मुहूर्त्त सुन्दर नक्षत्रमें तेलको छान पीछे पीनेमें व मालिश
में व शिरोवस्तिमें बर्त्तने से धनुर्बात अन्तरायाम गृध्रसी अपबा-
हुक आक्षेपक ब्रणायाम विश्वाची अपतन्त्रक आढ्यबात हनु-

स्तम्भ नाड़ीवात अपतानक और भृकुटी शङ्खस्थान कान नाक नेत्र जीभ इन्होंका स्तम्भ दारुक कलापखञ्जता पंगुवात सर्वांग वात अर्दित पक्षाघात पादहर्ष सुप्तवात इन्होंको नाशकरै इसमें संशय नहीं है यह रास्ना पूतिकतेल आत्रेयजी महाराज ने रचा है ॥ बला तेल ॥ बलिया जड़ आठ प्रस्थ लेइ तिसमें ३२ प्रस्थ पानी मिलाय पकाय चतुर्थांश बाकी रहै ऐसा काढ़ा लेय और दशमूल कुलथी यव बेरकीगिरी इन्होंके काढ़े भी बलिया के काढ़ेके समान जुदे २ लेवै और ये काढ़े सब आठ २ भागलेवै और तेल १ भाग गौकादूध ८ भाग जीवनीयगण में कही औषधें शतावरि मजीठ देवदारु कूट शिलाजीत तगर अगर सेंधानोन बच सांठी जटामासी सफ़ेदसारिवा कालीसारिवा तमालपत्र सौंफ असगन्ध इलायची इन्होंका चूर्ण तेलसे चौथा हिस्सा मिलाय तेलको सिद्ध करि वर्त्तनेसे गर्भ की इच्छा करने वाली स्त्रियों को व क्षीण वीर्य्य वाले पुरुषोंको व कसरतसे क्षीण अङ्गवाले पुरुषोंको व सूतिका स्त्रियों को यह तेल सुखउपजावै है और राजाको व सुखी पुरुष को यह तेल विशेष करके सुख उपजावै है ॥ माषादि तैल ॥ उड़द यव अलसी कटैली केवांचकेबीज पियाबासा गोखुरू सहोंजना ये सब सत्ताईस २ तोले लेय इन्हों को चौगुने पानी में पकाय चतुर्थांश काढ़ा बाकी रक्खै बिंदौला बेर की गुठली शण के बीज कुलथी ये चौवन चौवनतोले लेय चौगुने पानीमें पकाय चतुर्थांश काढ़ा बाकी रक्खै पूर्वोक्त में मिलावै पीछे ६४ तोलेबकराके मांस को २५६ तोले पानीमें पकाय चतुर्थांश बाकीरक्खै पूर्वोक्तमें मिलावै और गिलोय कूट शुंठिरास्ना अरंड सांठी पिपली सौंफ बलियारखीप जटामासी कुटकी येसब दोदो तोलेलेय पूर्वोक्तमेंमिलाय तिलोंका तेल ६४ तोले मिलाय कोमलअग्निसे पकाय बर्तनेसे ग्रीवास्तम्भ अपबाहुक अर्द्धांगबायु आक्षेपकबायुउरुस्तम्भ अपतानक अंगुलियोंका कांपना शिरकाकांपना बिछवाचीलकवाइन्होंको व सबबातविकारोंको यह माषादितेलहरै है ॥ सुगन्ध तेल ॥ तगर अगर केतकी केशर कुन्दरू पालक शाकभेद लौंग दालचीनी कस्तूरी शरलबृक्ष

देवदारु इलायची नख नागकेशर कमलिनी बाला शिलाजीत रेणुका बरियार इन्होंके काढ़ामें तेल दूध मिलाय तेलको पकाय वर्तने से राजा स्त्री बूढ़ा बालक इन्होंको सुखदेवै और बात विकारों को नाशकरै॥ एलादि तेल॥ इलायची तालीसपत्र शरलवृक्ष शिलाजीत देवदारु रेणुका खुरासानी अजमान चमेली नड़कुकरोंदा हेमपुष्प बोल पीतलोद कमलकीदण्डी शरलद्रव पालक नख बाला लौंग कूट नागरमोथा कर्कट चन्दन बेलफल जायफल लाल सांठी केशर मूर्बा शिलाजीत पीलावाला इन्होंके चूर्णमें बलियार का काढ़ा दूध दही मिलाय तेलको मन्दाग्नि से पकाय वर्तने से वातरोग जावै और बल वर्ण अग्नि इन्होंको बढ़ावै॥ महालक्ष्मीनारायणतेल॥ शतावरी बेरकी गुठली मोगरा बड़ा बलियार अरण्ड हींगपत्री धतूरा कलिहारी रानमोगरा कूड़ा हेंदी पाढ़ा गर्दभशींगी मुलहठी बिजौरा चमेली जावित्री थोहर बलिया बायविड़ंग पुआड़ सौंफ असगन्ध बाराहीकन्द वासनी लालअरण्ड धानियां नांदरुषी पतंग पीपली गंगेरन घंटालि अनार ऊंगा शालमली शम्भल निर्गुण्डी कडुवीतरोई कास पांगली कौंच भारंगी निशोथ जमालगोटा की जड़ अरणी कुसरी गूंदनी करन्दा कटैली काला कूड़ा जवासा रूखी अलसी बेत शाल मोटाशाल सफेद चिरमटी घोंटी गडुंभा मूर्बा पीपली कमलिनी रुदंती दशमूल इनसबोंकीजड़ लेइ अगस्त वृक्ष चन्दन ऊंगा भिलावां करंजवा सिंघाड़ा पुआड़ करेली गूलर इन्होंके बीजलेय आमला सहोंजना कीकर महुवावृक्ष हींगन नेपती कदम्ब अमलतास रक्तसार बड़बेरी टेभुरणी कचनार गूलर तापसी सफेद तापसी अंकोल बड़ा अंकोल सल्लीकीखैर भेंडी बहेड़ासफेद खैर पीपल वृक्ष हड़ इनवृक्षों के पंचांग लेय और भिलावां पलस मेढ़ासींगी किंहिनी नकछिकनी गेली कोकम्ब अर्जुन नींब थोहर कुआरकापट्ठा द्रोणपुष्पी कुम्भी लालअर्जुनवृक्ष बरण बावला अरंड मोखा इन्होंकी छाललेय और केला विदारीकन्द शतावरी आलुक्षीर कन्द असगन्ध मुञ्जसबेल बांझककोडी बाराहीकंद खजूर मूसलीकंद अमरकंद जमींकंद इन्होंके कन्दलेय और गिलोय बासा बेल रान

उड़द कांगनी मालकांगनी पित्तपापड़ा मेढ़ाबेल वासनवेली चिरमटी भँगरा मुण्डी निर्गुण्डी छोटीनिर्गुंडी परवलकडूपरवल उतरणी सूर्य्यमुखी इन्होंका पंचांग लेय चिरायता दवणीकाली गोकर्णी सफ़ेद गोकर्णी लज्जावंती खैर भांग कुआरकापट्ठा छोटीगंगावती बड़ी गंगावती भिदारा विष्णुक्रांता सुगन्धा लंबा गरुड़बेल सहदेई गोपी छोटी बड़ीगोपी मोटीवलिया सारिवा मोटीहिरणखुरी हिरणबेल मालकांगनी मूर्वा नागदमनी महुआ इन्होंके पंचांग औरजड़लेय नागरमोथा भद्रमोथा आमकीगुठली औरअंकुर बड़काअंकुर शकरकंदीधवकेफूल मोरशिखा पीलीकेतकी इन्होंकेअंकुरलेइ अनारकौंचकौंटी लोखण्डी मूल कैथ ये सबचार २ तोलेलेय ३ द्रोणभरपानीमें पकाय चतुर्थांशकाढ़ारक्खे तिलांका १९२ तोला जटामासी मजीठ कालावाला देवदारु हल्दी दारुहल्दी दालचीनी चन्दन लौंग नागकेशर गूगल कायफल पतंग तगर बच कालाअगर असगंध कालानोन नख गोरोचन लालचन्दन तुरटीकूट बायविड़ंग मुलहठी सेंधानोन देवदारु तालीसपत्र जायफल धनियां मलयागिरि चन्दन मीठा तेलिया कमलाक्ष जावित्री बाला कमल अजमान निंबोलीकीगिरी पद्मकेशर चीतारेणुका चाव बावची मुलहठी जवाखार सौंफ चिरफल पीपली कुटकीकचूर बाफली जीयापोता भिलावां धतूराकेबीज भंगरा निशोथ अमली गूगल जीरा राल रास्ना करकरा अनारकीछाल मुनक्का दाख कुरंड नींब धनियां धमासा ब्राह्मी शुंठि चिरायता तालमखाना गजपीपली अजमान अजमोद इन्द्रायण कौंचकी जड़ लोध छोटाकरेला मेथी काकड़ाशींगी येसब एक एक तोलालेय बहुत बारीकपीसिसुन्दरपात्रमें घालि काढ़ाकरि गौका अथवा बकरीका दूध ३८४ तोले मिलाय शतावरी का रस ३८४ तोला लाखका काढ़ा ३८४ तोले इन्होंको मिलाय तांबा के पात्रमें तेलको पकाय सुगंधि करनेके वास्ते कपूर केशर गहुला कपूर कचरी जावित्री मोगरा गन्धकचूर चमेली इन्होंको मिलाय पीछे कांचकेपात्रको लोबानसे धूपितकर तिसमें तेलकोघालि राजाके मकानमें बैद्य धरावे इसको पीनेमें बस्तिकर्म में भोजनमें नस्यमें मालिशमें वर्ते इससे हाथी व

मनुष्यका बातरोगजावे और वाताष्ठीला गलग्रह हनुग्रह शिरोग्रह गृध्रसी पादशूल पक्षाघात कान नाक भृकुटी माथा इन्होंकेशूल उरुस्तंभअर्दित बधिरता एकांगरोग अपतानक मन्यास्तंभ त्रिकशूलहृदयशूल गूंगाबात आक्षेपकबात जिह्वास्तंभ गातिभंग कुब्जबातदंतशूल चूंचियोंकारोग गुल्म गुदा कमर पैर इन्होंकाभ्रंस खल्लीबात सुप्तीबात बिश्वाची वृषणबात धातुबातकंपबात व सबबातरोगोंकोहरै और बीर्य्यकोबढ़ावे औरजवानपनाकोप्राप्तकरै नपुंसकपनाकोनाशै और बुद्धि पुष्टि प्राण आयु इन्होंकोबढ़ावे और वंध्याकेपुत्रपैदाकरै और ज्वर क्षय दुर्भाग्यता इन्होंकोहरै यहतेलराजाजनोंके योग्यहै इसका नाम महालक्ष्मीनारायणतेलहै ॥ रास्नादिघृत ॥ रास्ना पुष्करमूल सहोंजनाकी जड़ चीता सेंधानोन गोखुरू पीपली इन्हों का कल्क बनाय इन्होंसे चौगुना दूधमें घृतको पकाय असगंधके चूर्ण केसंग खानेसे असाध्यबायुको व तीव्रधातुक्षयकोनाशकरै॥ पंचतिक्त घृत ॥ नींब गिलोय बासा परवल कटेलीये ४० चालीस२तोलेलेय इन्होंको १०२४ तोले पानीसें पकाय अष्टमांश बाकी रक्खै पीछे तिसमें घृत ६४ तोले और रास्ना बायबिड़ंग देवदारु गजपीपली जवाखार सुहागाखार सौंफ चाव कूट मालकांगणी मिरच कूड़ाकी छाल चीता अजमान कुटकी पुष्करमूल बच पीपलामूल मजीठ अतीश निशोत अजमोद ये सब एकएकतोलालेय इन्होंकाकल्क शोधा गूगल ५ तोले इन्होंको मिलाय घृतको सिद्धकरि खाने से जियादै बढ़ा बाय संधि हाड़ मज्जा इन्होंके बायु कुष्ठ नाड़ीब्रण अर्बुद भगन्दर गंडमाला कांधा व कंठके समीपका बायु गुल्म बवासीर प्रमेह क्षय श्वास खांसी पीनस सूजन पांडुबिद्रधी बातरक्त इन्होंकोनाशकरै ॥ बातरोगमें पथ्य ॥ कुलथी उड़द गेहूं लालचावल परवल सहोंजना बैंगन अनार फालसा राब घृत दूधकी लाट दूध की खुरचन बेर लहसन दाख नागरपान लवण चिड़ाकामांस व मुरगा व मोर व तीतर इन्होंके मांस औ जांगल देशके पशुवों का मांस और सिलिंध्र पर्वत नक्र गर्गर खुड्डीश भख इनभेदोंकीमछली जैसी आवश्यकता श्रमआचरणहो तैसेही पदार्थ बातव्याधिमेंपथ्य

है ॥ अपथ्य ॥ चिन्ता जागना मलमूत्रके वेगधारण छर्दिकी औषध परिश्रम उपवास चना मोठ त्रासककी पीठी मोटेचावल वनकेअन्न कांगणी नागरमोथा तलाव व नदीका जल बांसका अंकुर शहद कडुवा व खट्टारस मैथुन हाथी घोड़ाकी सवारी घणाफिरना खाटका सोवना ये सामान्य वातव्याधिमें अपथ्यहैं और आध्मान व आर्दित वात रोगमें विशेष करि दुष्ट पानी से स्नान व दांतों को घिसना इन्हों को वर्जदेवै यह अपथ्यवर्ग सबग्रंथों का मत देख के कहा है वातरोगोंमें इन्होंके सेवन मनुष्योंको सुख न देवैहै और वातरोग असाध्य हो है परन्तु दैवयोगसे सुसाध्य होजावै इसमें अच्छे वैद्य चिकित्सा उन्मानसे करैहै और प्रतिज्ञा से नहीं औरपथ्या ऽपथ्य अन्य ग्रंथ के मत से कहते हें नवीन प्रकार का ऐसे जानो ॥ अथ वातव्याधि में पथ्य ॥ तेल लगाना मलना वस्तिकर्म स्नेह गोतामार के न्हाना दाबना संशमन पूर्वदिशा की पवन का बचाना दागना प्रलेप पृथ्वीमें सोना न्हाना बैठना तेल द्रोणी अर्थात् काष्ठ आदि के बनेहुये किसी पात्रमें तेलभरके गलेतकडूबिके खड़ाहोना व बैठना शिरकावस्ति सोना नासलेना घामसंतर्पण बृंहण की लाट अर्थात् फटेदूधकाखोवा दधिकुर्चिका अर्थात् दही दूध मिलाय औटि कर बनीहुई खुरचन घी तेल बसा मज्जा मीठे खट्टे और खारीरस नये तिल तथा गेहूं एक वर्षके पुराने सांठीधान कुलथीका रस मदिरा गांवके गौ खिच्चर ऊंट गधा बकरा आदिले अनूपदेश के सुअर भैं- सा बारहसिंगा गैंड़ा हाथी आदि जलकेहंस बतक चकवा मद्‌गुर आदि बिलके बासियों में मेढक गोह नौला श्वाविद आदि जंग- लियों में चिरोठा मुरगा मोर तीतर आदि मछलियों में शिलिंद पर्वत नक्र गर्गर कवैया इल्लिश एरंड चुली की कछवा सूस तिमिं- गिल रोही मद्गुर सिंगवार्मि खुड्डीश झष परवर सहिंजना बैंगनल- हसन दोनोंप्रकार के अनारपका ताड़फल पका आम नींबू दाख नारंगी महुवा पसरनि गोखुरू शुक्लाक्षी देवदारु दूध तथा दूध कापेड़ा अरंडीका तेल गोमूत्र रात्र मगण पान जौकी कांजी अ- मिलीकी कोंप चीकने गरम लेप आमाशयमें प्राप्त होनेपर शेष

करि बमनपक्वाशय तथा मांस में स्थित होनेपर चिकना विरेचन प्रत्याध्मान तथा आध्मान होनेपर वर्त्तिलंघन उचित है॥ अष्ठीलामें गुल्मकी बिधि॥ वीर्य्यसें स्थित होनेपर क्षयकी दूर करनेवाली क्रिया करनी चाहिये त्वचा मांस रुधिर तथा शिरोमें प्राप्तहोनेपर रुधिर निकलवाना योग्यहै बातव्याधि के उत्पन्न होनेपर श्रमदंश तथा आचरण के अनुसार मनुष्योंको पथ्यहोताहै॥ अथ वात रोग में अपथ्य॥ चिन्ता वहुत जागना वेगरोकना वमन श्रम लंघन चना मटरतृणधान्य कंगनी जव वांसके फल कोदो सावांकाचून कुरबिन्दनाम अन्नबिशेष व घुघुरीसाधारण तृण धान्य रमास मूंग तलाब तथा नदी का जल करील जामनी कसेरु तलक सुपारी कमलकी जड़ भटवांस ताड़फलकी मींगी शालूक तेंदु करेला कोमल लाड़का फल सेमी पत्र शाक गूलर शीतल जल गधी का दूध बिरुद्ध अन्न खार सूखा मांस रुधिर निकालना शहद कसायले कडुवे तथा चर्परेरस स्त्री संग हाथी घोड़ाकी सवारी भ्रमण करना खाट आध्मान और अर्दित रोगवालेको बिशेषकरके न्हाना बुराजल दांतोंकाघिसना कहाहुआ यहगणसंपूर्ण बातरोगों में मनुष्योंको आनन्द देनेवाला नहीं होता॥

इतिश्रीबेरीनिवासकरविदत्तकृतनिघण्टरत्नाकरभाषायां
बातव्याधिप्रकरणम्॥

बातरक्त कर्मबिपाकसे ज्योतिःशास्त्राभिप्राय॥ जन्म काल में दशमस्थान में मंगलहो और शनि की दृष्टि हो तो बातरक्तरोग उपजै॥ शमन॥ पूर्वोक्तग्रहदोष शांतिके अर्थ जपादिक करानाउचितहैं॥ बातरक्तनिदान॥ नोन खट्टारस कडुआ रस खार चिकना गरम ऐसे पदार्थोंको सेवन से और अजीर्णमें भोजन करनेसे और छिन्न सूखाजलमें उपजे शाक मछली अनूप देशके जीवोंका मांस कुलथी पिण्याक उड़द मोठ शाकादिक ईषरस दही कांजी सूक्त तक्र मदिरा आसव बिरुद्ध भोजन बुरा भोजन क्रोध दिनकासोना

रात्रिकाजागना इन्होंकेसेवनमें विशेषकरके सुकुमारके तथा मिथ्या भोजनादिक करनेवाले के व सुखी व मोटापुरुषके वातरक्त कुपित होहै ॥ वात रक्तप्राप्ति ॥ हाथी घोड़ा ऊंट इन्हों की सवारी पर चढ़ भजाने से और बहुत गरम अन्नखानेसे व भूखारहनेसे कोपहुआ रक्त दग्ध होके व रुधिर दुष्ट होके दोनों पैरों में इकट्ठा होहै और वायुसे मिलदुःखदेहै इसवास्ते इसेवातरक्तकहैहैं ॥ वातरक्त का और दोषसम्बन्धी लक्षण ॥ तैसेही दूषित वायुकेसंग पित्त व कफ दुष्टरक्त से मिल वात पित्त रक्तको वातकफ रक्तको पैदाकरैहै और पैरोंको स्पर्श सुहावै नहीं और पीड़ा व शोषहो और सूतेरहै और पित्तमें उग्रदाह हो और जियादे गरम स्पर्श हो लाल सोजा हो कोमलहो कफसे दुष्ट रक्तमें पैरोंमें खाजचलै पसीना आवै सोजाहो मोटेहोवै और स्तब्धहो और सब दोषोंका दूषित रक्तमें सबकेरूप दीखतेहैं पूर्वरूप ॥ पसीना बहुतआवै अथवा आवैनहीं शरीर कालापड़जाय और स्पर्श का ज्ञान रहै नहीं थोड़ीसी चोटमें पीड़ा घनी हो संधि शिथिल होजावै आलस्य आवै शरीर गीलासा रहै और शरीरमें फुनसीहोजावै और गोड़ा जांघ पींडी कटि कांधा हाथ पैर इन्होंकी संधिमें पीड़ाहो अथवा इन्होंमें स्फुरण होवै इन्हों में हड़फूटनी हो और शरीरभारीहो और शरीर शून्यहो और संधियों में खाज हो शूलहो वारम्वारदाहहो होके कभी नाशको प्राप्तहो और शरीरका वर्णबदलजाय और शरीरमें लालमण्डलहोजाय यहवातरक्तकापूर्व रूपहै वातरक्त अन्य संसर्ग उपद्रव वाताधिक वातरक्तमें शूलचलै अंगफुरै अंगमें हड़फूटनीहो सोजाहोजाय रूखा और काला शरीर होजायक्षणक्षणमें बढ़ै घटै और नाड़ी संधि अंगुली इन्होंका शंका हो और अंगग्रहहो हो ज्यादे पीड़ाहो शीत पदार्थको सेवनेसे दुःख हो कंप स्तंभ शून्यताहो ऐसेजानो ॥ रक्ताधिक तथा पित्ताधिक वातरक्त लक्षण ॥ रक्ताधिक वातरक्त में सोजा हो घनी पीड़ा हो अंग गीला रहै और चाम तांबासमानहो निरंतर चिमचिमकरै चीकना व रूखा पदार्थ खाने से रोग शांत नहीं हो सर्बकाल खाज व ग्लानिबनीरहै ऐसेजानो और पित्ताधिक वातरक्तमें दाहरहै मोह व पसीनाआवै

मूर्च्छाहो मदचढ़ारहै प्यासलगै स्पर्श नहीं सहाजाय अंगढीला रहै सोजाहो और पकजा और शरीर जियादे गरमहो ऐसेजानो ॥ कफरक्त निदान ॥ कफाधिक बातरक्तमें अंगजड़रहै व शून्यता व भारीरहै और ठंढापना चीकनापना शरीर में पैदाहो और थोड़ीपीड़ाहो ऐसे जानो और द्वंद्वज में दो दोषोंके लक्षणजानो सन्निपातके बातरक्तमें सब दोषोंके लक्षण होतेहैं अंगनियम बातरक्त रोग पहलेपैरोंमें होय अथवाहाथोंमें होय पीछे कोपहोय सबअंगोंमें फैलजायहै जैसेजहरीला मूसाका जहरफैलै तैसे॥ वातरक्तका असाध्य लक्षण ॥ पैरके तलुआसे गोड़ातक फुनसियां होवैं और रुधिरझिरै और अनेकतरहकेउपद्रवभी होवैं और बल मांस जठराग्नि ये सबनष्ट होजायँ वह बातरक्त असाध्य होहै और यही १ वर्षतक जाप्यहै पीछे महाअसाध्य है॥ बातरक्त के उपद्रव ॥ नींदआवे नहीं रुचि जातीरहै श्वासहो मांस गलजाय और माथामें पीड़ा हो मूर्च्छा हो थोरी पीड़ाहो तृषालगै ज्वररहै औरमोहहोवै हिचकीचलै शरीरकांपै पांगलाहोजाय अंगुली गलजावै विसर्प्परोग उपजै फुन्सी पकजावै पीड़ा हो घूमनी आवै औरग्लानिहो अंगुली टेढ़ीहोजाय फोड़ामें दाहहो और मर्मस्थानों में शूलचलै और अर्बुदरोग उपजै इन उपद्रवोंसेयुक्त बातरक्त असाध्यहै अथवा अकेलामोहयुक्तभी बातरक्त असाध्यहोहै॥साध्यासाध्य॥ अल्प उपद्रववाला बातरक्त जाप्यहै और उपद्रवोंसे रहित वातरक्त साध्यहै और एकदोषका बातरक्त साध्यहै और दो २ दोषोंका नवीन वातरक्तजाप्यहै और सन्निपातका बातरक्त असाध्य और सबउपद्रवों करकेयुक्त बातरक्त असाध्यहोहै॥ सामान्यचिकित्सा ॥ इसरोग वालेको पहले स्निग्धकरि पीछे बारंबार लोहू कढ़ायडालै परन्तु ऐसा अनुमानमाफिक लोहूकढ़ावै अकवायबढ़ैनहीं और बलको और दोषोंको विचारिवायुकीरक्षाकरै और बातरक्तमें उग्रदाह और हड़फूट नहोतो जोकलगवाय लोहूकढ़ावै और बातरक्तमें चिमचिमाहट खाजशूलपीड़ा होतो शींगीतुम्बीलगाय लोहूकढ़वावै अथवा फस्तखुलावै अथवा अन्यदेश में जायवासकरै और बातरक्तरोगीकाशरीर रूखाहो व क्षययुक्तहो व वायुकी प्रकृतिवालाहो तो लोहूकढ़ावैनहीं

औरवायु की रक्षा न करे तोगम्भीर सोजा स्तंभ कम्प ग्लानि मस्तक में रोग वायुके रोग इन्होंके समूह पैदाहोवै और लालवोलका पिण्डसे सिद्धकिया तेलकी मालिशकरै और कुटकी आदि घृतमें मिलायपीवै और पानी की सेकलेप फस्त जुलाव वमन येभी करावे तव वातरक्त शांतहोवै इसरोगमें स्निग्धकरा विना लोहूकढ़ावै तो अनेकतरहके वातरोग उपजें और मृत्यु भी होजावै तो आश्चर्य्यनहीं इसवास्ते अनुमान माफिक लोहू कढ़ाय डाले ज्यादे नहीं और पित्ताधिक वात-रक्त में स्नेहयुक्त औषधदे जुलावकरावै और बाहिर प्रकट वातरक्त में मालिश लेप पानी सेचन पिंडी वंधन ये उपचार करि शांतकरै और गम्भीर वातरक्तमें जुलाव निरूहवस्ति स्नेहपान इन्होंसेआरा-म करावै ॥ भोजन व रस ॥ पुराना यव गेहूं चावल सांठी चावलइन्हों का भोजन और लवा तीतर बटेर इन्हों के मांसके रसका पान इससे वातरक्तशांतहोवै॥यूप॥तुरी धान चना मूंग मसूर कुलथी इन्होंकायूष में घृत मिलाइपीनेसे वातरक्त शांतहोवै॥ भाजी ॥ कुरडू वेतका अंकुर काकमाची शतावरी वथुआ पोइशाक कालानोन इन्होंकोमांसके रस में और घृतमेंभूनि वरतनेसे वातरक्तशांतहोवै। और पहले वमन रे-चन आदि पंचकर्म्म कराइ पीछे गिलोयके काढ़ामें सिद्धकिया शिला-जीतकोखानेसेवातरक्तशांतहोवै॥वासादिकाढ़ा॥ वासा गिलोयअमल-तास इन्होंके काढ़ामें अरण्डीके तेलको मिलाय पीनेसे सवअंग में उपजा वातरक्त शांतहोवै ॥ मंजिष्ठादिकाढ़ा ॥ मजीठ कूड़ा गिलोय नागरमोथा वच शुंठि हलदी दारुहलदी वासा पित्तपापड़ा सारिवा अतीश धमासा गडूंभा वाला कटेली नींव परवल कूट कटुकी भारंगी वायविडंग चीता मूर्वा देवदारु इन्द्रयव भंगरा पिपली वनफ्सा पाढ़ा शतावरी खैर हड़ बहेड़ा आमला चिरायता वकाण आसना अमल-तास कालानिशोत वावची चंदन वरण करंजवा कोटक ये समान भागलेय काढ़ावनाय रोज पीनेसे जल्दी त्वचाके दोष को व अठा-रहप्रकार के कुष्ठ रोगोंको शांतकरै और वातरक्तको व शुन्नवहरी को व विसर्पको व विद्रधीको व सबरक्तदोषोंको हरै ॥ लघुमंजि-ष्ठादिकाढ़ा ॥ मजीठ हड़ बहेड़ा आमला कुटकी वच दारुहल्दी

गिलोय नींब इन्होंकाकाढ़ा बातरक्तको व पामको व कापालिक कुष्ठ को व रक्तमंडलको दूरकरै ॥ पटोलादिकाढ़ा॥ परवल हड़ बहेड़ा आमला कुटकी गिलोय शतावरी इन्होंका काढ़ा बनाय पीनेसे दाहसंयुक्त बातरक्तको दूरकरै ॥ बासादिकाढ़ा॥ वासा गिलोय कुटकी इन्हों का काढ़ा बातरक्तकोहरै॥ एरंडतैलयोग ॥ गिलोयके काढ़ामें अरण्डी का तेलमिलाय पीने से अथवा वर्धमान पीपलीके सेवनेसे अथवा गुड़में मिलाय हड़के चूर्णको खानेसे बातरक्त को शांतकरै और इस पर पथ्यसेरहै ॥ दार्व्यादिकाढ़ा ॥ दारुहल्दी गिलोय कुटकी वच मजीठ नींब हड़ बहेड़ा आमलाइन्होंको नवकर्षलेइ काढ़ाबनायपीनेसे बातरक्तको व कुष्ठरोगको शांतकरै ॥ वत्सादिन्यादिकाढ़ा ॥ गिलोयके काढ़ामें गूगुल मिलाय पीनेसे बातरक्तको शांतकरै॥ पित्ताधिकवातरक्तपर ॥ काश्मरीकी छाल दाख अमलतास लालचन्दन काकोली क्षीर काकोली इन्होंका काढ़ा शीतलमें खांड़ शहद मिलाय पीनेसे बातरक्त शांतहोवै ॥ काकोल्यादिकाढ़ा ॥ काकोली गिलोय इन्हों का काढ़ा कछुक गरम बलबिचारिपीनेसे २१दिनतक बातरक्तशांतहोवै और इसपर पथ्यसेरहै व मोम मजीठ राल इन्होंके तेलकी मालिश से व रक्ताबोल से सिद्ध तेलकी मालिश करने से बातरक्तकी पीड़ा शांतहोवै॥ गुडूचीयोग ॥गिलोयका स्वरस व कल्क व चूर्ण व काढ़ा इन्हों के सेवने से बातरक्त शांत होवै॥ गुडूच्यादिकाढ़ा ॥ गिलोय बावची टाकली नींब हड़ हल्दी आमला वासा शतावरी बाला खरैटी मुलहठी महुआ तालमखाना परवल कालाबाला मजीठ लाल चन्दन इन्होंका काढ़ाबनाय पीनेसे बातरक्तको व खाजको व कुष्ठको व रक्तमण्डलको व बातबिकारोंको व रक्तविकारोंको नाशकरै यहकाढ़ा मुनियोंने दयाकरि प्रकाशकियाहै॥ वृषादिकाढ़ा ॥ बासा अमलतास गिलोय इन्होंके काढ़ामें अरंडीकातेलामिलाय पीनेसे बातरक्तबिकारको व सबअंगोंको सोजाको व दाहसंयुक्त बातरक्तकोनाशै ॥ त्रिवृतादिकाढ़ा ॥ निशोत विदारीकंद ईष इन्होंकाकाढ़ा व गिलोयका स्वरस पीनेसे बातरक्त शांतहोवै॥ पथ्यायोगवगुडूचीकाथ ॥ तीन व पांचहड़ोंके चूर्णको गुड़में मिलाय खावै ऊपर गिलोयका काढ़ापीने से बातरक्त

शांतहोवै ॥ वातरक्तपरकाढ़ा ॥ गिलोयके काढ़ामें अरण्डीका तेल मिलाय पीनेसे व अरण्डकी जड़ वाला गिलोय इन्होंके काढ़ापीनेसे वातरक्त शांतहोवै ॥ वातरक्तपर पिंडादिकाढ़ा ॥ सोम मजीठ काली उपलसरी राल इन्होंके काढ़ामें तेल मिलाय तय्यार करि वरत-ने से वातरक्त नाश होवै अथवा अरण्ड जड़ गिलोय इन्होंके काढ़ा में अरंडी तेल मिलाय पीनेसे वातरक्त शांतहोवै ॥ मं-जिष्ठादिकाढ़ा ॥ मजीठ वच हड़ बहेडा आमला कुटकी हल्दी नींब गिलोय देवदारु निसोत खैर इन्होंका काढ़ा पीने से वातरक्त व कुष्ठ शांत होवै ॥ दूसरामंजिष्ठादिकाढ़ा ॥ मजीठ नींब वासा हड़ ब-हेड़ा आमला चीता हल्दी दारुहल्दी गिलोय चिरायता लालचंदन कुटकी कैथ बकुची अमलतास मूर्वा गडूंभा धमासा वायविडंग वनफ्सा पाढ़ा इन्होंके काढ़ापीनेसे वातरक्तके विकारोंको शांत करै॥ खदिरक्वाथ ॥ खैरकाकाढ़ावनाय दोनोंकालोंमें देवै और निर्वातस्थानमें वसै और घृत चावलोंकापथ्यसेवै यह सबप्रकारके कुष्ठोंको व आमवा-तको व वातरक्तकोशांतकरै ॥मंजिष्ठादिकाढ़ा॥ मजीठ नागरमोथा कूड़ा की छाल गिलोय कूट शुंठि भारंगी कटैली वच नींब हल्दी दारुहल्दी त्रिफला कुटकी परवल मूर्वा वायविडंग आसाणा चीता शतावरी वनफ्सा पीपल इंद्रयव वासा भंगरा देवदारु पाढ़ा खैरकीछाल निसोत लालचन्दन वरणा चिरायता बावची अमलतास अकोट वकायण करंजवा अतीस वाला गडूंभा धमासा सारिवा पित्तपापड़ा इन्होंका काढ़ा वनाय पीपल गूगल मिलाय पीनेसे अठारह प्रकार के कुष्ठ रोगोंको व वातरक्तको व लकुआको व आतशकको व श्लीपदको व शुनवहरी को व पक्षाघात को व मेद के रोगको व नेत्ररोग को शांत करै ॥ अमृतादिकल्क ॥ गिलोय कुटकी शुंठि मुलहठी इन्होंके कल्क वनाय शहद में मिलाय गोमूत्रके संग खानेसे कफसहित वातरक्त को शांतकरै ॥ लांगल्यादिचूर्ण ॥ कलहारीकाकन्द शुंठि मिरच पीपल नोन इन्होंके चूर्ण वनाय शहद और गों के घृतमें मिलाय १० माशे भर रोज खानेसे अनेकप्रकारका रक्तविकार को व पाददोष व पैरोंमें हड़ फूटनको व मर्मगत दुःखको व असाध्य वातको रक्त व

भयंकर कुष्ठको दूरकरै ॥ मुंड्यादिचूर्ण ॥ मुण्डी कुट की इन्हों के चूर्ण में शहद घृतमिलायखानेसेबातरक्तशांतहोवै ॥ पद्मकादितैल॥ पद्माख बाला मुलहठी हलदी इन्होंकेकाढ़ामें राल मजीठ घीकुवार काकोली सफेदचन्दन इन्होंकाकल्कमिलाय तेलकोसिद्धकरिबरतनेसे वातरक्त संबंधीदाहको यहशांतकरे ॥ गुडूच्यादितैल ॥ गिलोयकाकाढ़ा व कल्क और लाखकारस व मुलहठी काश्मरीकेरसमेंतेलको सिद्धकरिबरतने सेबातरक्तशांतहोवै ॥मिरचादितैल ॥मिरच हरताल नारियल आकका दूध कलहारीकुचला हलदीनदीवड़ नींब नागरमोथा कूड़ा इन्होंके काढ़ामें चौगुणा गोमूत्रमिलाय तेलको सिद्धकरिबरतने से वातरक्त शांतहोवै॥ बृहन्मरिचादितैल ॥ मिरच निसोतजमालगोटाकीजड़ आक का दूध गोबरकापानी देवदारु हल्दी दारुहल्दी जटामासी कूट चन्दनगडूंभा कनेरकीजड़ हरताल मनशिल चीताकलहारी वायविडंग कौंचकेबीज शिरस कूड़ानींब सप्तपर्णी गिलोय थोहर अमलतास करंजवा खैर पीपल बचकांगणी येप्रत्येक ४ तोले मीठातेलिया ८ तोलाकडुआतेल २५६ तोला गोमूत्र १०२४ तोलालेइ पीछे इन्हों को माटीके व लोहाकेपात्र में कोमल अग्निसेपकायपीछे मालिश करनेसे कुष्ठके घाओंको व बातरक्तके बिकारोंको व पामको व बिस्फोटकको व विचर्चिकाको शांतकरै ॥ पिण्डतैल ॥ मजीठ सारिवा राल मुलहठी मोम दूध उड़द इन्होंका तेलकाढ़ि मालिशकरने से बातरक्तजावे ॥ गुडूच्यादितैल॥४०० तोले गिलोयको ४०९६ तोले पानीमेंपकाय चतुर्थांशबाकीरक्खे पीछे गौकादूधएकद्रोणभरमिलाय पीछे तिलोंकातेल २५६तोला मिलाय मन्द २ अग्नि से पकाय पीछे मजीठ मुलहठी कूट जीवनीयगणोक्त औषध इलायची बिजौरा दाख जटामासी थोहर नखरेणुकबीज मुंडी त्रिकुटा शालिपर्णी भूमिआमला काकड़ासिंगी पीपल शतावरी विष्णुक्रांता तमालपत्र नागकेशर बाला दालचीनी पद्माख कमल चन्दन इन्होंका कल्क मिलाय तेलको सिद्धकरि पीनेमें व मालिशमें व अनुबासन बस्ति में बरतनेसे बातरक्तको और बातरक्तके बिकारोंको व उपद्रवोंकोहरै और धनपुत्रकोबढ़ावे और स्त्रियोंकोगर्भदेहै और बातपित्तपसीना

खाज शूल पाम शिरःकंप अर्दित व्रणदोष इन्होंको यह गुडूचीतैल हरैहै ॥ पद्मकादितैल ॥ पद्मकाष्ठ बाला मुलहठीहल्दी इन्होंकेकाढ़ा में राल मजीठ शतावरी काकोली चन्दन इन्होंका चूर्ण और तेल मिलाय तेल को सिद्धकरि बरतनेसे वातरक्तका नाशहोवै ॥ गुडूच्यादितैल ॥ गिलोय काढ़ा में लाख का रस मिलाय तेलको सिद्ध करि वरतने से व मुलहठी काश्मरी के रस में सिद्धकिया तेल को वरतने से वातरक्त शान्तहोवै ॥ शताह्वादितैल ॥ शतावरी कूट नई मुलहठी इन्हों में अलग २ तेलको सिद्धकरि वरतने से वातरक्त शान्तहोवै ॥ वातरक्ततैल ॥ सारिवा राल मुलहठी इन्हों के काढ़ा में अरंडीका तेल मिलाय वर्त्तने से वातरक्तको दूर करै ॥ पिण्डतैल ॥ सारिवा राल मुलहठी मोमपानी एरंडतेल इन्हों को मिलाय तेल को सिद्धकरि वर्त्तनेसे वातरक्तशांतहोवै ॥ दशपाकवालातैल ॥ बलिया का काढ़ा व चूर्ण व कल्कमें तेल और चौगुना दूधमें तेलको सिद्ध करि यह दशपाक तैल वातरक्तहरै और धन और वीर्य्यको बढ़ावै और वीर्य्य विकार को व योनि विकारों को व वातरक्त विकारों को शांतकरै ॥ वलातैल ॥ बलियारकाकाढ़ा व कल्कमेंदूध तेल सम भाग मिलाय तेलको सिद्धकरि वरतने से वातरक्त को हरै और इस को शतपाक व सहस्रपाक बनाय तैयार करै और यहरसायनहै और इन्द्रियोंको प्रसन्न करैहै और जीवन है और बृंहणहै और स्वरको बढ़ावैहै और वीर्य्य दोषको व लोहू दोषको हरै है ॥ नागवलातैल ॥ मोटीबलिया४००तोलापानी १०२४ तोले मिलाय पकायचतुर्थांश रक्खै पीछे बालाका काढ़ा ४०० तोला बकरीकादूध ४०० तोला लेय और मुलहठी महुआ इन्होंका अलग २ कल्क २० तोले लेय तेलको पकाय पिचकारीद्वारा बरतनेसे ७ रात्रितक वातरक्तको शान्तकरै और इस तेलको दशदिनतक खावैतो बातरक्तआदि रोग जल्दी शांतहोवै यहतैल अश्विनीकुमारोंने कहाहै ॥ अरनारतैल ॥ कांजी २५६ तोलातेल ६४ तोला रालकाकाढ़ा ६४ तोला इन्होंको पकायतेलको सिद्धकरि बरतने से बातरक्त ज्वरदाह इन्हों को हरै ॥ बलादिघृत ॥ बालिया मोटीबलिया बनफ्साकौंच शतावरी काकोली

क्षीरकाकोली रास्ना मुनक्कादाख इन्होंका कल्क बनाय घृत और चौगुना दूध मिलाय घृतकोसिद्धकरि बरतनेसे बातरक्त शांतहोवै॥ गूडूच्यादिघृत॥ गिलोय का काढ़ा व कल्क और घृत दूध ये बराबर लेय घृत को सिद्धकरि वरतनेसे बातरक्त शांत होवै॥ गुडूच्यादिघृत॥ गिलोय के काढ़ा व कल्कमें शुंठिमिलाय घृतको मन्द २ अग्निसे पकाय वरतनेसे बातरक्तको व आमबात को व आढ्यवात को व कृमि रोग को व कुष्ठको व घावको व बवासीरको व गुल्मको जल्दी शान्त करै॥ शतावरीघृत॥ शतावरी का कल्क घृत दूध ये बराबर लेय और घृत से चौगुना शतावरी का रस मिलाय घृत को सिद्धकरि वरतनेसे बातरक्त शान्त होवै व गिलोय का स्वरस और कल्क इन्होंमें घृतको सिद्ध करि पीनेसे भयंकर बातरक्तभी जावै॥ अमृतादिघृत॥ गिलोय४०० तोला पानी एक द्रोणभर में पकाय घृत ६४ तोला गिलोय का कल्क३२तोला और चौगुना दूधमिलाय मन्द २अग्नि ऊपर पकाय खानेसे बातरक्तको व कुष्ठको व कामलाको व तिल्लीको व खांसीको व ज्वरकोहरै॥ अमृतादिघृत॥ गिलोयमुलहठी दाखत्रिफलाशुंठि बलिया बासा अमलतास सांठी देवदारु गोखुरू कुटकी पीपल काश्मरी फल रास्ना तालमखाना एरंड दारुहल्दी कमल ये समभाग लेय कल्क बनाय घृत ६४ तोला आमलारस ६४ तोला दूध १९२ तोला मिलाय घृतको सिद्धकरि बरतनेसे भोजनमें व पानीमें यह बहुत दोषों से उपजा बातरक्त को व मूर्च्छा को व उत्तान व गंभीर बात रक्तको व त्रिक् जंघा उरु गोड़ा इन्होंके बायुको व क्रोष्टुशीर्षबायुको व महाशूलको व आमबातको व महारोगकीपीड़ाको व मूत्रकृच्छ्रको उदावर्त को व प्रमेहको व बिषम ज्वरको व बात पित्त कफके बिकारों को हरै और वर्ण बल उमर इन्हों को बढ़ावै यह घृत अश्विनी कुमारों ने कहा है॥ अश्वगंधपाक॥ पहले ४० तोले असगंध का चूर्ण करि पीछे शुंठिका चूर्ण २० तोले लेय पीछे पीपल १० तोला लेय मिरच ४ तोला इन्हों को बारीक पीसि पीछे दालचीनी ४ तोला इलायची ४ तोला तमालपत्र ४ तोला ४ लौंग ४ तोला भैंसकादूध २०० तोला शहद १०० तोला गौ का घृत ५० तोला खांड़ १२०

तोला और पहलेदूध खांड़ घृत शहद ये एकत्र मिलाय पीछे पूर्वोक्त चूर्ण मिलाय पकाय और जब कछड़ीके चिपकनेलगै तब चातुर्ज्जात मिलाय और जब चावलों का आकार होजावे तब सिद्ध जानै जब दूधसे घृत अलग दीखै तबउतारि पीछे पीपलामूल जीरा गिलोय लौंग तगर जायफल बाला काला चन्दन खिरणी कमल धनियां धौके फूल वंशलोचन आमला कैथ कपूर सांठी असगन्ध चीता शतावरी इन्होंका चूर्ण आधा आधा तोला लेय पूर्वोक्त में मिलाय ठंढाकरि चीकने बरतन में घालि पीछे रोज़ २ तोले भर भोजन करै और मनोबांछित भोजन खावै यह खांसीको व इवासको व अजीर्ण को व बातरक्तको व तिल्लीको व मदको व मेदरोगको व आमबात को व सूजन को व शूलको व बात की ववासीर को व पाण्डु को व कामला को व संग्रहणी को व गुल्म रोग को व बात कफ जनित रोगोंको नाशकरै दृष्टान्त जैसे सूर्य्योदय में अंधेरा नाश होवै तैसे और इसको १महीनातक सेवनेसेबूढ़ाजवानहोवै और मंदाग्निवालों कोहितहै औरबलकोउपजावैहै और बालकोंकेअंगोंकोबढ़ावैहै और स्त्रियोंकोपुष्टकरैहै और प्रसवसमयमें स्त्रियोंकेचूचियोंमें दूधकोबढ़ावे है और जितने स्तनमोटे और दूधनबढ़ैं तितने इसघृतको दूधकेसंग खावै और क्षीणनरोंको और अल्पवीर्य्यवालोंकोहितहै और कामदेव को और जठराग्निको दीपनकरै है और सबप्रकार की व्याधियों को शान्तकरैहै यहसर्वोत्तमघृतहै ॥ प्रपौंडरीकादिलेप ॥ पुण्डरीकवृक्ष मजीठ दारुहल्दी मुलहठी चन्दन मिश्री इलायची सत्तू मसूर बाला पद्माख इन्होंके लेपकरने से शूलको व दाहको व विसर्पको व सूजन को शान्तकरै ॥ लेपवअभ्यंग ॥ तिलोंको बारीकपीसि भूनि पीछे दूध में मिलाय लेपकरनेसे व एरंडकेफलोंको बारीकपीसि और भूनिदूध में मिलाय सिझाय लेपकरनेसे व शतावरी की जड़का लेपकरने से बाताधिक शूलशांतहोवै और गोमूत्र दूध मदिरा इन्होंके संग सिद्ध किये घृतकी मालिश करने से पूर्वोक्त रोग जावै और मधुसूक्त को सिद्धकरि सेवनेसे व मालिशसे सन्निपाताधिक बातरक्त में हित है और घरका धुआं बच कूट शतावरी हलदी दारुहलदी इन्हों के

लेपसे कफाधिक वातरक्तका शूलजावै और इसीलेपको बहुतकाल तक सेवनेसे वातरक्त शांतहोवै॥ शताह्वादिलेप॥ दोनोंशतावरी मुलंहठी गडूंभा बलिया चिरौंजी कचूर मोथा घृत बिदारीकन्द मिश्री इन्हों के लेप से वातरक्त शांत होवै॥ सहस्रधौतघृत व रालयोग॥ हज़ारबार धोये घृतकी मालिश से व घृतमें रालमिलाय गरमकरि ठंढालेपकरनेसे वातरक्तशांतहोवै॥लोरयाचेउद्वर्त्तन॥ भैंसकानोनीघृत गोमूत्र दूध सेंधानोन इन्हों को खरलमें एकत्र मिलाय गरम करि देहके ऊपर मालिश करनेसे देहकी हड़फूटनी मिटै॥ सर्षपादिलेप॥ सफ़ेद सिरसमको बारीक़ पीसि लेपकरने से व व्रण सहोंजना इन्होंको कांजीमें पीसि लेपकरनेसे वातरक्तशांतहोवै॥ कनकादिलेप॥ धतूरा नागबेल मालतीके पत्ते मूर्वा मनाशिल इन्हों को तेलमेंपीसि लेप करने से कुष्ठको व खाजको व विसर्प्पको व पैरोंकी हड़फूटनको व मुहँपरके कालेदागों को हरै॥ पंचामृतरस॥ पारा १ भाग गंधक १ भाग अभ्रकभस्म २ भाग गूगल ४ भाग गिलोयकासत ८ भागलेइ पीछे इन्होंको निर्गुण्डी गोखुरू गिलोय कोकिला इन्होंके रसोंमें अलग२ सात भावना देइ पीछे ६ रत्तीतक देनेसे बातरक्तको शांत करै और इसपर अनुपान कोलिस्ता का काढ़ा पीवै॥ हरतालरस॥ हरताल २ भाग पारा १ भाग तुरटी ५ भाग लेइ पीछे इन्हों को बसूचाकी जड़के रसमें भावना देइ गोलाबनाय सकोरा में घालि संपुट में देइ कपड़माटीलगाय सुखाय गजपुटमें फूंकदेवै पीछे आकृति देखि बारम्बार बिचारि १ चावलभरदेनेसे रुधिरबिकार शांत होवै यह ग्रंथकारको यतिलोगों से प्राप्तहुआहै॥ कैशोरगूगल॥ नया भैंसा गूगल ६४ तोला गिलोय ६४ तोला त्रिफला ६४ तोला इन्होंका पानी में कांढ़ा बनाताजावै और कड़छी से चलाता जावै जब आधा बाक़ीरहै तब अग्निसे उतारि कपड़ासे छानि फिर अग्नि पर चढ़ाय सिद्धकरि कछुक कड़ारूप होनेपर उतारि ठंढाकरि हड़ का चूर्ण ८ तोला त्रिकुटाचूर्ण ६ तोला बायबिड़ंग २ तोला निसोत १६ माशे जमालगोटाकी जड़ १६ माशे गिलोय ४ तोला इन्हों को बारीक़ पीसि गौके घृतसे चीकने बर्तनमें घालि गुप्तरक्खै पीछे

देवता और अतिथिआदिकी पूजाकरि और अग्निबलाबलविचारि मात्रालेवै और मनोवांछित भोजनकरै और औषधलेनेका काल नियम नहीं है यह एकदोष के बातरक्तको व दोदोषोंके बातरक्तको व तीनदोषों के बातरक्तको व पुराने बातरक्तको व भग्नसूतिको व सूखे बातरक्तको व स्फुटित बातरक्त को व घावको व खांसी को व कुष्ठको व गुल्मको व सोजाको व पेटके रोगको व मेदरोग पांडु-रोग मंदाग्नि दस्तबंध प्रमेह दोषों को हरै और निरंतर इस के सेवने से समय में रोग समूह शांतहों और यह बुढ़ापाको दूरकरि किशोर अवस्था को प्राप्तकरै है॥ माहिषगूगल॥ गिलोय ६४ तोला हड़ ६४ तोला बहेड़ा ६४ तोला आमला ६४ तोला गूगल ९२ तोला इन्होंका पानीमें काढ़ा बनाय चतुर्थांशबाक़ीरक्खै पीछे कपड़ा से छानि फिर कड़ाहोय तबतक पकावै पीछे जमालगोटा की जड़ शुंठि मिरच पीपल बायबिडंग गिलोय त्रिफला दालचीनी येप्रत्ये-क दो २तोलेलेय और निसोत १ तोला इन्होंकाचूर्ण करि पूर्वोक्त काढ़ामें मिलाय सिद्ध करि कछुक गरमरहै तबपात्रमेंरक्खै पीछेअ-ग्नि बल जानि मात्रालेनेसे बातरक्त कुष्ठ बबासीर मंदाग्नि दुष्ट घाव प्रमेह आमवात भगन्दर नाड़ीवात सूजन संपूर्ण बातरोग इन्होंको यह हरै यह माहिषगूगल अश्विनीकुमारों ने कहाहै॥ तालकेश्वररस॥ हरताल के अभ्रकसरीखे पत्रेबनाय पीछे इन्हों को सांठीकेरसमें १ दिनतक खरलकरि करड़ा होनेपर टिकियाब-नाय धूप में सुखावै पीछे सांठीके पंचाङ्गकी राखबनाय वह राख हांड़ीमें घालि तिसमें टिकरी धर ऊपर राख घालि दाबिकर सि-कोरासे ढंकि खामि कै सुखाय रक्खै पीछे हांड़ीको चुल्हीपै चढ़ाय निरंतर ५ दिन राततक तीव्र अग्निसे पकावै पीछे स्वांग शीतल होने पर १ रत्तीभर खावै ऊपर गिलोय का काढ़ा पीवै यह उपद्रव सहित बातरक्त को अठारह प्रकार के कुष्ठोंको फिरंगरोग आतश-क बिसर्प मंडल पाम खाज बिस्फोटक बातरक्त बिकारों को हरै और इसका सेवने वाला नोन खटाई कडुवारस अग्नि धूप इन्हों को बर्जि देवै और नोन त्यागनेकी सामर्थ्य न हो तो सेंधानोन

खाय और मीठे रसको सेवै ॥ अमृतभल्लातकावलेह ॥ जलमें गेरेहुये डूबजावैं वे भिलावे श्रेष्ठ होयहैं और उन्हों के मुखका नाकू दूर करै ऐसे भिलावे १२८ तोले लेय फांककरि बीच का द्रव्य दूरकरि एकद्रोण पानी में चढ़ाय और गिलोय १२८ तोले लेय पूर्वोक्त पानीमें मिलाय काढ़ा बनाय चतुर्थांश बाकीरक्खै पीछे कपड़ा से छान शुंठि गिलोय बावची कौंचकेबीज नींब हड़ आंवला हलदी लालनिसोत मजीठ मिरच शुंठि पीपल अजमान सेंधानोन नागरमोथा दालचीनी इलायची नागकेसर पित्तपापड़ा तालीसपत्र बाला कालाबाला चन्दन गोखुरूकेबीज कचूर लाल चन्दन ये सब दो२ तोले लेय चूर्णकरि पूर्वोक्त में मिलावै पीछे इसको मट्टी के नये बरतनमें घालि रक्खै प्रभातके भोजन जीर्ण हुये पीछे यह अमृत भल्लातकावलेह ४तोले पानीके संगखावै और जिसकी प्रकृतिको सुहावै तिसको देवै अन्य को नहीं यह बातरक्त व बातरक्त बिकारोंको संपूर्ण कुष्ठों को बवासीर को बिसर्प मंडल खाज बायु के बिकार लोहूके विकार इन्होंकोहरै और इसका खानेवाला कसरत धूप अग्नि खटाई मांस दही स्त्री संग तेल की मालिश व मार्गगमन इन्होंको त्यागदेवै ॥ योगसारामृत ॥ शतावरि बालिया चिरमठी की जड़ भिदारा सांठी गिलोय पीपल असगंध गोखुरू येसब चालीस चालीस तोले लेय इन्होंकाचूर्ण वारीक्करि चूर्णसे आधीमिश्री मिलाय शहद१२८तोले घृत ६४ तोले इन्होंकोमिलाय पीछे इलायची दालचीनी नागकेशर इन्होंकाचूर्ण ४तोले मिलाय पीछे अग्निबल देखिखानेसे नष्टेंद्रिय विकेंद्रिय बातरक्त क्षय कुष्ठ पित्त बातरक्तविकार और बातपित्तकफरोग इन्होंकोहरै और शरीरमें बलीपड़ैनहीं सफ़ेद बालहोवैंनहीं और यह योगसारामृत लक्ष्मी व कांतीको बढ़ावैहै ॥ सर्वेश्वररस ॥ पारा १तोले सिंगरफ १तोले तांबाभस्म८तोला गंधक ८तोले इन्होंको बिजौरेकेरसमें खरलकरै पीछे कुचला आक धतूरा थोहर कनेर इन्होंकेरसोंमें सात२भावनादेय पीछे गोलाबनाय अग्नि से पसीनादेय बालुकायंत्रमेंरख दोदिनतकपकाय शीतलहोनेपै आधातोला मीठातेलियामिलाय पीपली १ तोले १रत्तीभर अथवा २

रत्तीभर खानेसे वातरक्तकोहरै और इसपै रक्तकोपकरनेवाले व पित्तलपदार्थोंको वर्जिदेवे ॥ अर्केश्वररस॥पारा १६तोले गंधक ४८तोले तांबाकीटिकड़ी १ तोले पीछे पारा गंधककी कज्लीकरि वर्तन में घालि राखसे वर्तनको पूरणकरि पीछे वर्तनके मुखकोबंदकरि कपड़माटीदेय चुल्हीपरचढ़ाय २पहरतक तीव्रअग्निदेवे पीछे ठंढाहोने पर चूर्णकरि पीछे आकके दूधमें १२ पुटदेय पीछे त्रिफला चीता का कड़ासिंगी इन्होंकेरसोंमें तीन२पुटदेय पीछे २ रत्तीभरदेनेसे वातरक्त मंडल शून्य बहरीकोहरै इसपै नोन खटाईको बर्जिदेवे वातरक्तमेंपथ्य ऊपरहोके जायतो तेललगाना सींचना उपनाहसहितमें प्रलेपन गम्भीरमें स्नेहपान आस्थापन और विरेचन सबप्रकारकेमेंसुई जोंक सींगीवातुम्बीसे रुधिरका निकाल नासौवीरके धोयेहुये घीका लगाना भेड़के दूधका सीचना जौ सांठी नीवार धान्य कमललाल धान्य गेहूँ चना मूंग मटर भेंड़ बकरी भैंस तथा गौका दूध लवा तीतर बटेर मुरगा आदि विष्कर अर्थात् पंजा से पृथ्वीको खोदकर खानेवाले पक्षी तोता पपीहा कबूतर चिड़ाआदि प्रतुद अर्थात् चोंचसे दाने को फोड़कर खानेवाले पक्षी पोईशाक केवैया बेतकी कोंपल पुनर्नवाका शाक बथुआ करेला चोराई पसरनि धतूरा पुराना कुम्हड़ा घीसंपाक पल्लव परवल अरण्डीका तेल दाखसफ़ेद शक्कर मक्खन सोमलता कस्तूरी सफ़ेद चन्दन शीशम अगर देवदारु सरलवृक्ष इनके तेलका मलना चर्फरी बस्तु ये सब वातरक्त रोगमें मनुष्यों को पथ्य है॥ अथ अपथ्य॥ दिनमें सोना आगकातापना कसरत घाम स्त्रीसङ्ग उड़द कुलथी रयास मटर खारका सेवन अण्डाके उत्पन्न और अनूपदेशके जीवोंका मांस विरुद्ध बस्तु दही ईख मूली मद्य कांजी कड़ुई बस्तु गर्म भारी तथा अभिष्यन्दी पदार्थ नोन सत्तू इनको वातरक्त रोगमें वैद्य न देवे॥

इतिवेरीनिवासकरविदत्तविरचितनिघण्टरत्नाकरभाषायांवातरक्तप्रकरणम्॥

ऊरुस्तम्भनिदान॥ शीतल बस्तुको खानेसे गरम और पित्तलानी बस्तुके खानेसे सूखी भारी चिकनी बस्तुके खाने से दिन के सोने

से राति के जागने से घनी भूख से अथवा थोड़े अजीर्ण में पीछे कहीं बस्तुओंके खानेसे कफमेदसे मिली बायु सो कुपित्तहोय पित्त को बिगाड़ि पुरुषके दोनों जङ्घाओंको स्तम्भित करदे और सूनी करदे याने यह जङ्घा और की है हालने चालने देवै नहीं और पीड़ा चिंता आलस्य छर्दि अरुचि ज्वर ये भी होवैं पैरोंके उठाने में कष्ट होवे तिसे ऊरुस्तम्भ व आढयबात कहते हैं ॥ पूर्वरूप ॥ नींद बहुत आवे ध्यान लगिजाय कुछ ज्वरांश हो रोमांच होवे छर्दि होवे दोनों जांघोंमें पीड़ाहो ये लक्षण हों तो जानिये कि ऊरुस्तंभ रोग होवैगा ॥ ऊरुस्तम्भ लक्षण ॥ बात शंकावालोंको बिनाजाने सचिक्कीन इलाज करनेसे दोनोंपैर सोजावैं और उन्होंमें पीड़ाहोय बड़ेकष्टसे दोनों पगउठैं दोनों जंघामें पीड़ाहो धरतीमें पगधरते पीड़ाहो शीतस्पर्शकोजानैंनहीं काठकीसी जांघहोवे दूरी सी दीखे अन्य के से जांघ व पैर और जांघ दूसरे सरीखे मानै ये लक्षण ऊरुस्तंभकेहैं असाध्यलक्षण ॥ जिस ऊरुस्तंभवाले रोगीके दाह और पीड़ाहोवैं और शरीर कांपे वह मरजावे और नया ऊरुस्तम्भका इलाज करै ऊरुस्तम्भसामान्यचिकित्सा ॥ जो कफ को शमन करै और बायु को कुपित्त नकरै यह सब ऊरुस्तम्भमें औषधकरै। इसमें स्नेह फस्तबमन वस्तिकर्म जुलाब इन्होंको बर्ज्जि देवै जो इन्होंको सेवन करै तो कष्ट उपजे इस वास्ते सम्पूर्णकालमें स्वेदन लंघन रूक्षणइन्हों कोसेवै और आममेद कफ इन्हों की अधिकता होनेसे बायुको सम करै और ऊरुस्तम्भके आदिमें रूखा कफ नाशक इलाजकरै पीछे बातके नाशवास्ते चिकित्साकरै ॥ अन्न ॥ पुराने श्यामाकपुरानाकोद्रुपुरानेरानहरीक पुराने चावल जांगल देश के मांस शाक ये सब ऊरुस्तंभमें हितहैं और घृत नोन इन्हों को बर्ज्जि देवै और नोन इर्ज्जित बथुआके शाक की भाजी और पुराने चावल रूखा पदार्थ इन्होंके सेवनसे ऊरुस्तंभ शांतहोवे और रूखेपदार्थके सेवनसेबात का कोप और नींदका नाशहोवे तो स्नेह स्वेद कराय बातादि को शांतकरै और इस रोगीको झरनामें व शीतल जलवाली नदीमें व सुन्दर तालाब में बारम्बार तिरावै ॥ भल्लातकादि काढ़ा ॥ भिलावां

पीपल पिपलामूल इन्होंका काढ़ा बनाय शहद संयुत करि पीने से भयंकर ऊरुग्रहको हरै व पिपलीका चूर्ण गोमूत्र में मिलाय पीने से ऊरुग्रह शांतहोवे ॥ ग्रंथिकादिकाढ़ा ॥ पिपलामूल धामणा पीपल इन्होंका काढ़ा शहद संयुतकरि पीनेसे यह ऊरुस्तंभको हरै ॥ भल्लातकादिकाढ़ा ॥ भिलावां गिलोय शुंठि देवदारु सांठी दशमूल इन्हों का काढ़ा ऊरुस्तंभको हरै ॥ पुनर्नवादि काढ़ा॥ सांठी शुंठि देवदारु हड़ भिलावां गिलोय दशमूल इन्होंका काढ़ा पीने से अथवा गोमूत्रयुत पीनेसे ऊरुस्तंभ शांतहोवे ॥ शेफालिकादिकाढ़ा ॥ निर्गुण्डी के पत्तोंके रसमें पीपलका चूर्ण मिलाय पीनेसे व कफनाशक औषधोंको सेवने से ऊरुस्तंभ शांतहोवे ॥ वचादिकाढ़ा॥ वच अतीस कूट चीता देवदारु पाढ़ा मालकांगनी नागरमोथा स्वर्णक्षीरी कटैली इंद्रयव अमलतास मूर्वा कुटकी एरंड अरणी अक्रोड़ नींब चिकना असाणा सांखिणी हड़ बहेड़ा आमला सातला मिरच ये समभागलेय काढ़ा बनाय शहद संयुतकरि पीनेसेऊरुस्तंभ को हरै जैसेवृक्षको इन्द्रका वज्र तैसे और इन्होंके चूर्ण को शहद में मिलायखानेसे ऊरुस्तम्भ को हरै और इस काढ़ाके संगासिद्धमोदकको खानेसे ऊरुस्तंभ शांत होवै ॥ त्रिफलादिचूर्ण ॥ त्रिफला चाव कुटकी इन्होंके चूर्ण में शहद मिलाय चाटनेसे व गोमूत्रमें गूगल मिलाय पीनेसे ऊरुस्तंभ जावै वृद्ध्यादितैल ॥ वृद्धि शुंठि देवदारु इन्होंको समभाग लेय चूर्ण करि गरमपानीके संग खाने से जल्दी ऊरुस्तंभ को नाशकरै ॥ त्रिफला चूर्ण ॥ त्रिफला कुटकी इन्होंका चूर्ण शहद में मिलाय चाटनेसे व कलुक गरमपानीके संग षट्चरण चूर्णको खानेसे ऊरुस्तम्भजावै॥ शिलाजीतयोग॥ शिलाजीत गूगल पीपल शुंठि इन्होंको गोमूत्र के संग व दशमूलके काढ़ाके संग खानेसे ऊरुस्तम्भ जावै ॥ ग्रन्थिकादिकल्क ॥ चाव हड़ चीता देवदारु इन्होंके कल्कमें शहद मिलाय खाने से ऊरुस्तम्भ जावै ॥ पिप्पल्यादि कल्क ॥ पीपली पीपलामूल भिलावां इन्होंके कल्कमें शहद मिलाय पीनेसे ऊरुस्तम्भ जावै॥ पीपलीयोग ॥ बर्द्धमान पीपलीको शहद व गुड़के संग खानेसे व जमींकंदकी मदिराको पीने से ऊरुस्तम्भ जावै गोमूत्रमें खार मि-

लाय पसीनालेनेसे रूखा अन्नखानेसे व सिरसम करंजुवा इन्होंको गोमूत्र में पीसि शरीर पै लेप करनेसे ऊरुस्तम्भ जावे ॥ ऊरुस्तम्भयोग ॥ असगंध आक इन्होंकी जड़ व नींबकी जड़ देवदारु शहद सिरसम बंबई की मिट्टी इन्हों को मिलाय गरम करि पिंडा बनाय बांधने से ऊरुस्तम्भ जावे ॥ ऊरुस्तम्भपैलेप ॥ शहद सिरसम बंबई की मिट्टी इन्हों को मिलाय लेपकरने से ऊरुस्तम्भ जावे ॥ कुष्ठादितैल ॥ कूट उत्तम धूप बाला सरल वृक्ष देवदारु नागकेशर शनतुलसी असगंध इन्हों के काढ़ा व कल्कमें सिरसमके तेल को पकाय शहद युक्त करि पीनेसे ऊरुस्तम्भ जावे ॥ सैंधवादितैल ॥ सेंधानोन ८ तोले शुंठि ८ तोले पीपलामूल ८ तोले चीताजड़ ८ तोले भिलावां ८८ तोले कांजी २५६ तोले तिलोंका तेल ६४ तोले मिलाय पकाय पीनेसे गृध्रसी ऊरुस्तम्भ संपूर्ण वातविकार इन्होंको शांत करै ॥ कटुतिक्ततैल ॥ बलिया नागबलिया पीपलामूल शुंठि ये सब आठ २ तोले ऊंटकटारा ३२ तोले इन्होंका कल्क बनाय करुआ तेल ६४ तोले दही ६४ तोले मिलाय तेलको सिद्धकरि बर्त्तनेसे ऊरुस्तम्भ जावे त्रिफलादिगूगल॥ हड़ बहेड़ा आंमला निसोत जमालगोटा लघुनीली अमलतास ये सो २ तोले लेय कूट चारद्रोण पानी में काढ़ा बनाय चतुर्थांश बाक़ी रक्खे पीछे तिसमें २०० तोले गूगल मिलाय फेर पकावे जितनेमें करड़ाहो उतने बार पकावै पीछे इसमें दालचीनी इलायची नागकेशर शुंठि मिरच पीपल त्रिफला तमालपत्र अजमान जीरा गजपीपली चीता सेरणी कालाजीरा कलौंजी अजमोद अमली आम्लवेतस कालानोन इन्हों को चार २ तोले मिलाय चूर्णकरै पीछे १० माशे की गोली बनाय १ हमेशा खानेसे ऊरुस्तम्भ ऊरुग्रंथी गंडमाला उदररोग ये शांत होवैं और इसी विधिसे शिलाजीत को भी युक्तकरै ॥ गुंजागर्भरसायन ॥ पारा १ तोले गंधक ४ तोले चिरमठी मीठा तेलिया निंबोली अरणीचार २ माशे जमालगोटा १ माशे इन्होंको जावित्री बिजौरा धतूरा काकमासी इन्होंके रसोंमें एक दिन तक खरलकरि गोलीबनाय २ रत्ती प्रमाण घृतके सङ्गखावे और हींग संधानोनके सङ्गखावै तो जल्दी

ऊरुस्तम्भको हरै इसमें मण्डमार चावलका पथ्यदेवै ॥ लहसुनयोग॥ सुन्दर कुटाहुआ लहसुन ४ तोले अथवा २ तोले हींग जीरा सेंधानोन कालानोन शुंठि मिरच पीपल इन्हों का चूर्ण ४ तोले व २ तोले चूर्णके समान अरंडी का तेल मिलाय अग्नि बल विचारि खानेसे १ महीना तक सम्पूर्ण बातरोगोंकोहरै और एकांगवात सर्वांगवात ऊरुस्तंभ गृध्रसी कमर पीठ हाड़ इन्होंके वायुको व अर्दित वायुको अपतंत्रकको धातुगतज्वर जीर्णज्वर हाथपैरके शीतको हरै॥ ऊरुस्तंभ में पथ्य ॥ रूखी सब विधिस्वेदन कोदों लालधानयव कुलथी समावनकोदों प्राचीन सांहिजना करेला परवल लहसुनसुनिपशाक शाककेवैया वेतकीकोंपल नींबकेपत्ते शालिंच शाकबथुवा हड़ बैंगन गरमजल शम्याकशाक तिलकी खली मठा आसव मीठी कड़ुई चर्फरी और कसायली वस्तु दूधकासेवन गोमूत्र शक्तिकेअनुसार कसरत मोटीवस्तुका दबाना निर्मल कुण्डमें तिरना नदियों के धारके सन्मुख तिरना कफकाघटाना वातकारोकना यहऊरुस्तंभरोगमें पथ्यहै भारीशीतल चीकनाविरुद्ध अहित भोजन जुलाब स्नेहन वमनफस्त वस्तिकर्म ये सब ऊरुस्तंभके रोगोंमें अपथ्यहैं ॥

इतिश्रीबेरीनिवासकरविदत्तकृतनिघण्टरत्नाकरभाषायांऊरुस्तंभप्रकरणम् ॥

आमवातकर्मविपाक ॥ जो अग्निहोत्रका नियमलेके त्यागदेवै सो आमवात रोगीहो तिसके दोष शांतिके वास्ते १०००० गायत्री जप करावै वैदिक उपचार पूर्वोक्त दोषशांतिके वास्तेतिलोंमें घृत मिलाय अग्निमें हवनकरै सोना व अन्नकादानकरै आप को गरीब मानै गायत्री का जप करावै विष्णुका स्मरण करै ज्योतिःशास्त्राभिप्राय जिसके जन्मपत्रीमें आठवें स्थान में बृहस्पतिहो वह आमवातरोगीहो तिस बृहस्पतिके दोषशांतिके वास्ते पूर्वोक्त जपदानादिकरावै॥ आमवातनिदान ॥ विरुद्ध अन्नादिक खानेसे मंदाग्नि वालेपुरुष के कुपथ्य से और चिकने अन्नके खानेसे और विरुद्धचेष्टाकरने से और मार्ग में कभीभी गमन नहीं करनेसे कसरत करनेसे वायु करके प्रेराहुआ आमकफ स्थानमें जाय ज्यादा विदग्धहुआ धमनी नाड़ि-

यों को प्राप्तहो फिर बातपित्तकफसे दूषित अन्नकारस नानावर्ण और पिच्छलरूपनाड़ी के स्रोतोंसे झिरै और बातकफ दोनों एक बार कोपको प्राप्तहों त्रिकसंधिमें प्रवेश होय शरीर को स्तब्धकरै तिसे आमबातकहिये ॥ आमबातकासामा० ॥ अंगटूटै अरुचि होय तृषालगै शरीरभारीहो आलस्य आवै ज्वरहो अन्नपकै नहीं अंगोंमें सूजनहो येलक्षण आमबात के जानिये ॥ आमबातकालक्षण ॥ कोप को प्राप्त हुआ जो आमबात वह सबरोगोंमें कष्टसाध्य होय है और इसका दोषलिखतेहैं हाथपैर शिर टकना त्रिकस्थान और जांघोंकी संधियोंमें प्राप्तहोकर पीड़ाहो और इन्हीं स्थानोंमें सोजाहो और बिच्छूके डंकके समान पीड़ाहो और अग्निमंद होजावे उत्साह जातारहै अरुचिहो शरीरभारीरहै मुखका स्वाद जातारहै मूत्र बहुत उतरै कुक्षिमें कठिनता होके शूलहो नींद आवै नहीं वमनहो तृषा अधिक लगै भ्रम और मूर्च्छाहो मल उतरै नहीं शरीर जड़ होजाय आंतबोलाकरै अफाराहो और बातव्याधिके कहेहुये और भी उपद्रवहों और जिस्में पित्तअधिकहो ऐसा आमबात में दाहहो और पीलापन हो और बाताधिक आमबात में शूलहो कफाधिक में जड़ताहो शरीरभारीरहै खाजचलै ॥ साध्यासाध्य विचार ॥ एक दोषका आमबात साध्य दो दोषका जाप्य और तीनदोषका संपूर्ण देहमें बिचरनेवाला सोजाकष्ट साध्यहोयहै ॥ सामान्यचिकित्सा ॥ लङ्घन पसीनालेना कडुवेदीपन पदार्थ जुलाब स्नेह पान वस्तिकर्म रुक्ष पसीना बालूरेतकी पोटलीकासेंक और स्नेह रहित पींडी का बांधना येसब आमबातमें श्रेष्ठहैं ॥ रास्नादि काढ़ा ॥ रास्ना देवदारु अमलतास शुंठि मिरच पीपल अरण्डजड़ सांठी गिलोय इन्होंके काढ़ामें शुंठिका कल्क मिलाय पीनेसे आमबात जावै ॥ दूसराकाढ़ा ॥ रास्ना गिलोय शुंठि एरण्ड जड़ दारुहल्दी इन्हों का काढ़ा बनाय एरण्ड का तेल मिलाय पीनेसे आमबात जावै ॥ तीसरा काढ़ा ॥ रास्ना गिलोय अमलतास देवदारु दशमूल इन्द्रयव इन्होंके काढ़ा में अरण्डीतेल मिलाय पीनेसे आमबात शांतहोवै ॥ महौषधादिकाढ़ा ॥ शुंठि गिलोय इन्होंके काढ़ासेवनेसे पुराना आमबात जावै ॥ महा-

रास्नादिकाढ़ा॥ रास्ना २ भाग अरण्डी जड़ वासा धमासा कचूर दारुहल्दी बलियार नागरमोथा शुंठि अतीस हड़ गोखुरू अमलतास सौंफ धनियां सांठी असगन्ध गिलोय पीपल बिदारा शतावरी बच कुरंटा चाव दोनों कटेली ये एक एक भागलेइ इन्हों का काढ़ा बनाय अष्टमांश बाक़ीरक्खे पीछे इसमें शुंठिका चूर्ण मिलाय अग्नि बलदेखि पीनेसे सम्पूर्ण वातरोग आमवात पक्षाघात लकुआ कम्पवायु कुब्जकवायु संधिगतवायु गोड़ा जांघों को पीड़ा गृध्रसी हनुग्रह ऊरुस्तम्भ वातरक्त विश्वाची क्रोष्टुशीर्षवायु हृद्रोग बवासीर योनिरोग वीर्य्यरोग मेढ्रगतवायु वंध्यारोग इन्होंको शांत करै औ स्त्रियोंको गर्भदेवै इससे उपरांत अन्य औषध नहीं है यह महारास्नादिकाढ़ा ब्रह्माजीने कहाहै॥ रास्नादिकाढ़ा॥ रास्ना अमलतास देव दारु घंटोली गिलोय गोखुरू अरण्डकी जड़ इन्होंके काढ़ामें शुंठि काचूर्ण मिलाय पीनेसे अति भयंकर आमवात जावै जैसे प्रकाशमान दीपक से अन्धकार तैसे॥ रास्नाद्वादशकाढ़ा॥ रास्ना गिलोय शतावरी वासा अतीस हड़ शुंठि धमासा एरण्डजड़ देवदारु बच नागरमोथा इन्होंका काढ़ा पीनेसे आमवात कटि गोड़ा त्रिक जांघ पैर टांकना इनअङ्गोंके वायोंको हरे॥ रास्नासप्तकाकाढ़ा॥ रास्ना गिलोय अमलतास देवदारु गोखुरू एरण्डजड़ सांठी इन्होंके काढ़ा में शुंठिकाचूर्ण मिलाय पीनेसे जांघ गोड़ा पीठ त्रिक पसली इन्हों का शूलजावै॥ शुंठ्यादिकाढ़ा॥ शुंठि गोखुरू इन्होंका काढ़ा प्रभात में सेवनकरनेसे आमवात व कटिशूल को हरै और पाचकहै और पीड़ाको नाशैहै॥ सांठ्यादिकाढ़ा॥ कचूर शुंठि हड़ बच देवदारु अतीस गिलोय इन्होंकाकाढ़ा पाचनरूप आमवातको नाशै इसपैरूखा भोजनकरावै॥ पिप्पल्यादिकाढ़ा॥ पीपल पीपलामूल चाव चीता शुंठि इन्होंका काढ़ा पीनेसे भयङ्कर बातजावै॥ दशमूलादिकाढ़ा॥ दशमूल के काढ़ामें व शुंठिके काढ़ामें अरण्डी का तेल मिलाय पीनेसे कटि कूखि बस्ति इन्होंका शूल जावै॥ अजमोदादिचूर्ण॥ अजमोद बायबिड़ंग सेंधानोन देवदारु चीता अजमोद पीपलामूल सौंफ पीपल मिरच ये प्रत्येक दश२माशे लेय छोटीहरड़ैं ४॥तोले शुंठि ८॥ तोले

भिदारा८॥तोले इन्होंका चूर्णकरि गरमपानीके सङ्ग लेनेसे सोजादूर हो और पीड़ा सहित आमबातको नाशै संधिपीड़ा गृध्रसी कटि पीठ गुदाजांघ इन्होंकी पीड़ाकोहरै तूनीबायु मतूनीबायु विश्वाचीबायु कफ बातके रोग इन्होंको दूरकरै अथवा इसचूर्णके बराबर गुड़ मिलाय गोलीबांधि बरतै ॥ पंचसमचूर्ण ॥ शुंठि हरड़ैं पीपल कालानोन निसोत ये सम भाग लेय बारीक चूर्णकरि खानेसे शूल अफारा उदर रोग आमबात बवासीर ये जावैं ॥ पंचकोलचूर्ण ॥ शुंठि मिरच पीपल चाव चीता इन्होंके चूर्णको गरमपानीके संग खानेसे मंदाग्नि शूल गुल्म आम कफ अरुचि इन्हों को हरै ॥ त्रिफलादिचूर्ण ॥ त्रिफला शुंठि इन्हों का बारीक चूर्णकरि मस्तु कांची तक्र पेयामांस रस इन्हों में एकको ऐसेकी सङ्ग लेनेसे आमबातको व संधिगत सोजाको हरै ॥ आरग्बधपत्रचूर्ण ॥ अमलतासके पत्तोंको सिरसमके तेलमेंभूनि चावलों में खानेसे आमबात जावै ॥ पुनर्नवादिचूर्ण ॥ सांठी गिलोय शतावरि मुंडी कचूर देवदारु शुंठि इन्होंके चूर्णको कांजीकेसङ्ग लेनेसे दुष्टआमबात व गृध्रसी शांतहोवै॥ त्रुटयादिचूर्ण ॥ छोटीइलायची लौंग शुंठि बच पीपल बायबिड़ंग नागरमोथा हरड़ैं तमालपत्र गूगल ये सम भागलेय और निसोत ३ भागलेय और सबोंके बराबर मिश्री मिलाय चूर्ण तैयारकर खाने से बिगड़ेहुये आम पड़ि रोग शांत होवै॥ अलंबूषादिचूर्ण ॥ गोरख मुण्डि १ भाग गोखुरू २ भाग हरड़ैं ३ भाग बहेड़ा ४ भाग आमला ५ भाग शुंठि ६ भाग गिलोय ७ भाग इन सबों के बराबर निसोत मिलाय चूर्ण करि मदिरा मस्तु तक्र कांजी गरमपानी इन्होंमें एकको एसाके संग खानेसे आमबात सोजा बात रक्त ये शांत होवैं ॥ भल्लातादिचूर्ण ॥ भिलावां तिल हरड़ैं इन्हों के चूर्ण को गुड़में मिलाय खाने से व शुंठि का चूर्ण गुड़में मिलाय खाने से आमबात व कटिशूल शांत होवै ॥ वैश्वानरचूर्ण ॥ संधानोन २ भाग जवाखार २ भाग अजमोद २ भाग शुंठि ५ भाग हरड़ैं १० भाग इन्होंका बारीक चूर्ण करि मस्तुकांजी गोमूत्र मदिरा गरम पानी इन्हों में एकको एसासंगलेने से आमबात गुल्म हृद्रोग वस्तिरोग जानुरोग प्लीहा शूल अफारा बवासीर इन्होंको शांतकरै

है और यह वैश्वानरचूर्ण वायुको अनुलोमन करैहै ॥ हिंग्वादिचूर्ण ॥
हींग चाव मनियारीनोन शुंठि मिरच जीरा पुष्करमूल ये भाग वृद्धि
सेलेय खानेसे आमवातको हरै ॥ चित्रकादिचूर्ण ॥ चीता कुटकी
पाढ़ा इंद्रयव अतीस गिलोय देवदारु वच नागरमोथा शुंठि अति
विष हरड़ैं इन्होंका चूर्णकरि गरमपानीके संग खानेसे आमवातको
हरै ॥ नागरचूर्ण ॥ शुंठिका चूर्ण १० माशे भर कांजीके सङ्गखाने से
आमवातको व कफवातको शांतकरै ॥ अजमोदादि मोदक व चूर्ण ॥
अजमोद मिरच पीपल वायविड़ंग देवदारु चीता शतावरि सेंधा-
नोन पीपलामूल ये प्रत्येक चार २ तोलालेय शुंठि ४० तोला भि-
दारा४०तोला हरड़ैं २०तोला इन्होंका बारीक चूर्णकरि बराबरके गुड़
में मिलाय गोलीबनाय व चूर्णबनाय गरमपानी के सङ्ग बरतने से
यह आमवातके विकारोंको जल्दी शांतकरैहै और अफाराशूल तूनी
प्रतितूनी गृध्रसी गुल्म कटि पीठ इन्होंका फुरना हाड़वायु जांघवायु
सोजा संधिवायु आमवात विकार इन्होंको हरै जैसे सूर्य्य अँधेरेको
तैसे ॥ सिंहनादगूगल ॥ सोनामाखी १२ तोला त्रिफला ४ तोला
गन्धक ४ तोला गूगल ४ तोला अरण्डीतेल १६ तोला इन्होंको
लोहाकेपात्रमें वैद्यजन पकाय इसको घृत तेल मांसरस इन्होंमें एक
कोई के सङ्ग शक्तिअनुमान खाने से वातपित्त कफ लंगड़ापना
पांगला दुर्जयश्वास पांचप्रकार की खांसी कुष्ठ वातरक्त गुल्मशूल
उदररोग दुःसाध्य आमवात इन्होंको नाशकरै इसके नित्यसेवने से
बुढ़ापाजावै और वलीपड़ै नहीं और सफेद वाल होवैंनहीं इसमें
सांठीचावलोंको खावै यह सिंहनाद रोगरूपी हाथीको नाशकरै॥ हरी-
तकीगूगल ॥ हरड़ैं शुंठि भिदारा ये समभागलेय और गूगलदोगुना
लेय पीछे इन्होंको अरण्डीके तेलमें खरल करि १ दिन तक खाने
से आमवातको हरै ॥ योगराजगूगल ॥ चीता पिपलामूल अजमान
सौंफ वायबिड़ंग अजमोद जीरा देवदारु चावल इलायची सेंधा-
नोन कूट रास्ना गोखुरू धानियां त्रिफला नागरमोथा शुंठि मिरच पी-
पल दालचीनी वाला जवाखार तालीसपत्र तमालपत्र ये समभाग
लेय चूर्णबनाय और बराबर का गूगल मिलाय घृतमें खरल करि

चिकने बरतनमें घालि रक्खै पीछे अनुमानके माफिक खावै ऊपर मनोबांछित भोजनकरै यह प्लीहा गुल्म उदर रोग अफारा व बवासीर इन्होंको हरै और अग्निको दीपनकरै और तेजबल इन्होंको बढ़ावै यह आमबातको हरै और इसको १ दिनतक खरलकरि वरते॥ सिंहनादगूगल ॥ बारीक़ किया गूगल ६४ तोला सिरंसम का तेल ४ तोला घृत ४ तोला हरड़ें ६४ तोला बहेड़ा ६४ तोला आमला ६४ तोला इन्होंको १५४८ तोले पानी में पकाय चतुर्थांश काढ़ा रक्खै पीछे फिर अग्निपर पकाय शुंठि मिरच पीपल हरंड़ें बहेड़ा आमला नागरमोथा बायबिड़ंग देवदारु गिलोय चीता निसोत जमालगोटाकी जड़ चाव ज़मींकन्द येसमान भागलेय पारागन्धक दो दो भाग इन्होंकी कजलीकरि पीछे जमालगोटा १००० कांअंकुर दूर करि और भीतरकी जीभको दूरकरि शोधके पूर्वोक्तमें मिलाय चूर्णतय्यारकरि २ माशे खावै ऊपर गरम पानीको पीवै यह अग्नि को दीपनकरै यह बड़वानलके समानहै धातुओंकोबढ़ावै बुद्धिबलको बढ़ावै और आमबात शिरोबात ग्रंथिबात भगन्दर गोड़ा जांघ हाड़ कटि इन्होंका बात पथरी रोग मूत्रकृच्छ्र भग्नवस्ति बात पेटबात आम्लपित्त कुष्ठ प्रस्वेद पसीना आना पांचप्रकारकी खांसी श्वास क्षय विषमज्वर श्लीपद पक्तिशूल पांडुरोग कामला सूजन अन्त्रबृद्धि शूल बवासीर इन्होंको हरै यह सिंहनाद गूगल अमृत के समानहै ॥ अभयादिगुटी ॥ हरड़ें सेंधानोन अमलतास गड़म्भी की जड़ शुंठि गडुम्भाकी मज्जा इन्होंको खरलकरि लोहाके पात्रमें घालि चूल्हेपै चढ़ाय मन्द मन्द अग्निसे पकाय बेरकी गुठलीके समान गोली बनाय गरमपानीके सङ्ग खानेसे आमबातका नाशहो इसपै दही चावलका पथ्य ले और इन गोलियोंको दोष बिचार के देवै ॥ एरंडादिगुटी ॥ एरंडका बीज व मज्जा शुंठि मिश्रीये सम भाग लेय गोली बनाय खानेसे प्रभातके समय आमबात जावै ॥ हारीगुटी ॥ पारा गन्धक लोहभस्म तांबाभस्म तूतिया सुहागाखार सेंधानोन ये समभागलेय चूर्णकरै और इन्होंसे दुगना गूगल लेय गूगलसे चौथा हिस्सा त्रिफलाका चूर्णलेय और इसीके समान चीताकाचूर्ण

लेय इन्होंको घृतमें खरलकरि दोमाशाकी गोलीबनाय खावै ऊपर त्रिफलाका जलपीवै यह गोली आमबात को हरै यह गोली पाचनीय और भेदिनी है और आमवात विकार गुल्मशूल पेटरोग यकृत प्लीहा आष्ठीला कामला पांडु हलीमक आम्लपित्त सोजा श्लीपद अर्बुद ग्रंथी शूल शिरशूल गृध्रसी बातरोग जलगंड गंडमाला कृमिकुष्ठ इन्होंको हरै ॥ एरंडयोग ॥ एरण्डके बीजों को शोधि पीसि दूधसें खीरबनाय खानेसे आमबात कटिशूल गृध्रसी इन्होंको हरै ॥ एरण्डयोग ॥ गजेन्द्ररूप आमबातको शरीररूपी बनमें बिचरनेवाले को अरण्डीका तेलरूपी सिंह हरै है ॥ हरीतकीयोग ॥ अरण्डी के तेलमें हरड़ोंका चूर्ण मिलाय खावै तो आमबात अन्त्रबृद्धि गृध्रसी ये जावें ॥ अहिंस्रादिपिंडी ॥ अहिंस्राकोबीकीजड़ सहोंजनाकीजड़ सांपकी बंबईकी माटी इन्होंको गोमूत्र में पीसि पिंडा बनाय बांधनेसे आमबातशांतहोवै ॥ पानी ॥ आमबातमें प्यास उपजै तो पञ्चकोलोंकाकाढ़ा देनाहितहै ॥ एरण्डमूलयोग ॥ एरण्डकीजड़ त्रिफला गोमूत्र चीताकी जड़ मीठा तेलिया इन्होंका चूर्णकरि घृतके सङ्ग खानेसे आमबात दूरहो ॥ रसोनयोग ॥ लहसन ४ तोले हींग शुंठि मिरच पीपल सेंधानोन चीरा कालानोन बायबिड़ंग इन्होंको तेलमें मिलाय प्रभात में एकतोलाभर खानेसे आमबात शांतहोवै ॥ पारदभस्मयोग ॥ पारा एक भाग रांग २ भाग इन्हों को सिकोरा में घालि १२ पहर तक अग्नि में पकाय भस्म करि पीछे नींब के सोंटा से बारम्बार रगड़ि तैयार करै ऐसे पीले रङ्गकी भस्म होवै इसको रोगोक्त अनुपानोंके सङ्ग खावै यह उत्तम वैद्यसे ग्रंथकारको नुसखा मिलाहै इसको वैद्य लोग गुप्तरक्खैं ॥ आमबातबिध्वंसरस ॥ पारा ४ भाग गन्धक १ भाग इन्होंसे षोड़शांश मीठातेलिया इन्होंको चीताके काढ़ामें खरलकरि १ बल्लप्रमाणदेनेसे बातरोग शांतहोवै और अपस्मार उन्माद सर्वांगपीड़ा एकांगबात आमबात हनुस्तम्भ शीत इन्होंको हरै ॥ वातारिरस ॥ पारा गन्धक त्रिफला चीता गूगल ये क्रमबृद्धि से लेय इन्होंको अरण्डके पत्तोंकेरसमें खरलकरि इसको १ तोला अरण्डी के तेलके सङ्गलेवै ऊपर गरमपानीपीवै यह आमबातको हरै इसपर

दूध मूंगको बर्ज्जि देवै ॥ उदयभास्कररस॥ पारा गन्धक शुंठि मिरच पीपल दोनोंखार पांचोंनोन सुहागाखार ये समभागलेय इनसबोंके तुल्य जमालगोटा लेय बिजौराके रसकी भावनादेय सुखाय महीन चूर्णकरि २ रत्ती प्रमाण देनेसे आमबातको नाशै इसपै गौकादूध पथ्यहै व मूंग दूधदेय और अन्नको बर्ज्जै जबतक आमकासोजारहे॥ शतपुष्पादिलेप ॥ सौंफ बच शुंठि गोखुरू बरणाकी छाल सांठी देवदारु कचूर मुंडी खीप अरणी मैनफल इन्हों को सूक्त व कांजी में पीसि गरम २ लेप करनेसे आमबात शांतहोयहै ॥ रसोनादितैल ॥ दही मस्तु गुड़ दूध उड़दकी पीठी थोरसगाल लहसुन ये ४०० चार से २ तोलेलेय इन्होंका एकद्रोणभरपानीमें काढ़ा बनाय चतुर्थांश बाक़ी राखि कपड़ासे छानि तांबा के पात्रमें घालि अग्निपै पकाय तिसमें २५६ तोले अरंडीकातेलमिलाय और हड़ बहेड़ा आमलाशुंठि मिरच पीपल हींग इलायची चीताकी जड़ मनियारी नोन कालानोन बायबिड़ंग अजमान पिपलामूल इन्हों का चूर्णकरि मिलाय तेलको सिद्धकरि बर्त्तनेसे आमबात शांतहोवै ॥ रसोनासव ॥ लहसन ४०० तोले तिल १६ तोले हींग शुंठि मिरच पीपल जवाखार साजीखार पांचोनोन सौंफ कूट पिपलामूल चीता अजमोद अजमान जीरा ये चार चार तोले लेय इन्होंका बारीक चूर्णकरि पीछे इन सबोंको घीके चीकने बर्त्तन में घालि मुख बंदकरि अन्नके भरे हुये कोठेमें १६ दिन तक दाबदेवै और कोई के मतमें इस आसव में ३२ तोले अरंडी का तेल ३२ तोले कांजी भी मिलावै पीछे बरतनको काढ़ि १ तोलाभर आसवको खावै ऊपर पानी व मदिरा पीवै यह आमबातको व सर्बांग बातको व मृगीरोगको व मंदाग्नि खांसी श्वास ज्वर इन्हों को नाशै ॥ लहसुनरस ॥ लहसुन का रस १ तोला गौका घृत १ तोला इन्होंको मिलाय पीने से आमबात शांत होवै जैसे अग्निसे रूई ॥ दूसरारसोनासव ॥ लहसन का कल्क ४०० तोले तिलोंका कल्क २०० तोले इन्होंको गौके तक्रके पात्रमें घालि और तक्रभी घालि रक्खै पीछे शुंठि मिरच पीपल धनियां चाव चीता गजपिपली अजमोद दालचीनी इलायची पिपलामूल ये चार २ तोले

खांड़ ३२ तोले जीरा २० तोले स्याहजीरा १६ तोले राई १६ तोले हींग ४ तोले पांचोनोन २० तोले अदरखका रस १६ तोले घृत ३२ तोले तिलोंका तेल ३२ तोले कांजी ८० तोले श्वेतशिरसम १६ तोले मुलहठी ३२ तोले इन्होंका चूर्णकरि पूर्वोक्त वर्त्तनमें घालि मुंहबंद करि अन्नके भरेहुये कोठा में दाबि १२ दिन पीछे काढ़ि प्रभातमें अग्निबल विचार खावै ऊपर मदिरा व कांजीका अनुपान करै और जीर्णहोनेपर मनोवांछित भोजनकरै दही पीठी बर्ज्जित इसको १ महीनातक सेवनसे सर्व्वव्याधि जावै और इसके सेवनसे ८० प्रकार के वायुरोग ४० प्रकार के पित्तरोग २० प्रकार के कफ रोग नाशहोवैं और योनि शूल कुष्ठ भगंदर प्रमेह उदररोग ववासीर गुल्म क्षयी इन्होंको हरै और रुचि बल को बढ़ावै॥ बृहत्सैंधवादि तैल॥ सेंधानोन हरड़े रास्ना सौंफ अजमान साजीखार मिरच कूट शुंठि कालानोन मनियारीनोन वच अजमोद जीरा पुष्करमूल मुलहठी पीपली ये दो २ तोले लेय बारीक चूर्णकरि पीछे ६४ तोले अरंडीका तेल सौंफका काढ़ा ६४ तोले कांजी १२८ तोले दही का मस्तु १२८ तोले इन्होंको मिलायमंदअग्नि से पकाय तेलको सिद्ध करि पीनेसे व मालिशसे वर्त्तनेसे आमवात जावै और इसको बस्ति कर्म में भी वर्तै और यह जठराग्नि को बढ़ावै और वातरोग वंक्षण स्थान का शूल कटि गोड़ा जांघ संधि इन्होंके शूल हृदयशूल पसली शूल कफरोग अन्यबातरोग इन्होंको नाशकरै॥ एरंडतेल॥ अरंडीके फलोंके तेलको पीनेसे कटिशूल शांतहोवै॥ शुंठिघृत॥ शुंठिका चूर्ण दूध इन्होंमें सिद्धकिया घृत पुष्टिकरैहै और दही शुंठि इन्होंमें सिद्ध किये घृतको खानेसे विण्मूत्रप्रतिबंध नाशहोवै और दहीका मस्तु शुंठि में सिद्धकिये घृतको खानेसे अग्नि दीपन होवै और कांजी शुंठि में सिद्धकिया घृतको खानेसे अग्निबढ़ै और आमवात नाश होवै॥ शुंठिखण्ड॥ शुंठि ३२ तोले घृत १६ तोले दूध २५६ तोले मिश्री २०० तोले त्रिकुटा दालचीनी इलायची तमालपत्र ये चार २ तोले इन्हों का चूर्ण करि अग्निबल विचारि खानेसे आमवात जावै और धातु बढ़ै बल उमरकी वृद्धिहोवै और बली पड़ैनहीं बाल सफ़ेद होवैं

नहीं॥ दूसराप्रकार॥ शुंठि ४००तोले घृत ८० तोले दूध ८१९२ तोले मिश्री २०० तोले शुंठि मिरच पीपल दालचीनी इलायची तमालपत्र नागकेसर पीपलामूल कालाअगर जावित्री जायफल कचूर पाषाणभेद तांबाभस्म शंगाभस्म सोनामाखीभस्म मंडूर लोहकांत ये चार २ तोले लेय मिलाय मन्द २ अग्निपर पकाय लेहबनाय खानेसे बलबर्ण उमर इन्होंको बढ़ावै और बली पड़ैनहीं बालसफ़ेद होवैंनहीं और आमबातको हरै और सौभाग्य को बढ़ावै॥ मेथीपाक॥ मेथी ३२ तोले शुंठि ३२ तोले इन्होंका चूर्णकरि कपड़ासे छानि व दूध २५६ तोलाभरमें घृत ३२ तोले मिलाय जब तक करड़ा होवै तबतक पकाय हौले २ तय्यार करै पीछे इसमें मिश्री २५६ तोले मिलाय अग्निपर से उतारै पीछे मिरच पीपल शुंठि पीपलामूल चीता अजमान जीरा धनियां कलौंजी सौंफ जायफल कचूर दालचीनी तमालपत्र नागरमोथा ये सब चार २ तोले लेय शुण्ठि ६ तोले मिरच ६ तोले इन्होंका चूर्णकरि मिलाय तय्यारकरैयहमेथी पाक ४ तोले खावै और अग्निबलको बिचारै यह आमबातको व सब बातरोगोंको शांतकरै और त्रिषमज्वरको व पांडुरोगको व कामलाको व उन्मादको व अपस्मारको व प्रमेहको व वातरक्तको व आम्लपित्तको व शिरकी पीड़ाको व नासिकाके रोगको व नेत्ररोग को व प्रदरके सूतिकारोगको हरै संशयनहीं यह शरीरको पुष्ट करै है और बलबीर्यको बढ़ावै है॥ सौभाग्यशुंठिपाक॥ शुण्ठि ३२ तोले घृत ८० तोले गौकादूध १२८ तोले खांड़ २००तोले शुंठिमिरच पीपल दालचीनी इलायची तमालपत्र ये चार २ तोले मिलाय स्नेह विधिसे पाकबनाय तय्यारकरै यह शुंठि रसायन व सौभाग्य शुंठि आमबातको हरै और कांतिको बढ़ावै और धातुको बढ़ावै और उमरको बढ़ावै और बली पड़नेदेवै नहीं और बालोंकोसफ़ेद होने देवै नहीं और बन्ध्यापन को हरै॥ शुंठ्यादिपुटपाक॥ शुंठिको अरंडके पत्तोंके रसमें पीसि पुटपाककी विधिसे पकाय रसनिचोड़ि शहदमिलाय चाटनेसे आमबातकी पीड़ाशांतहोवै॥ आमबातपथ्य॥ रूखा स्वेदन लंघन स्नेहपान वस्तिकर्म लेप विरेचन गुदाकी वर्ती

एकसालके उत्पन्न धान तथा कुलथी पुराना मद्य जंगली जीवोंका मांस वात तथा कफकीनाशक सबवस्तु मठा पुनर्नवा अरंडीकातेल लहसुन परवल शालिंचशाक करेला बैंगन सहोंजना गरमजल आक गोखुरू भिधारा भिलावां गोमूत्र अदरख कडुये तीखे तथा दीपन पदार्थ ये सब आमवातके रोगीके लिये हितहैं॥ इतिपथ्यम्॥ अथअपथ्यम्॥ दही मछली दूध पोईशाक उड़दकाचून बुराजल पूर्वका पवन विरुद्ध भोजनअहित वस्तु वेगका रोकनाजागना विषमभोजन भारी तथा अभिष्पंदी वस्तुओंको आमवातका रोगीत्याग देवे॥

इतिश्रीवेरीनिवासकरविदत्तकृतनिघण्टरत्नाकरभाषायां
आमवातप्रकरणम्समाप्तम्॥

अजीर्णशूलकर्मविपाक॥ जो ब्राह्मण होके शूद्रके व दुर्वृत्त ब्राह्मणोंके अन्नको भोजन करै वह अजीर्णी व शूल रोगी होवे॥ प्लीहशूल॥ जो अपने विश्वास करनेवालेको विषदेवै वह प्लीहारोगीहोवै॥ पेटशूल॥ जो वेदपाठी ब्राह्मण कछु याचनादि करै दमादि युत हो ऐसे ब्राह्मणको बुलाय दानदेवै नहीं वह पेटशूली व आध्मानरोगी होवे॥ शमन॥॥ रोगकी शांतिवास्ते कृच्छ्रातिकृच्छ्र चांद्रायणव्रतको करै॥ अरुचिशूल॥ जो द्रव्यपात्र होके श्रद्धाहीन हो और दानदेवै नहीं व तमोगुणसे दान करै वह अरुचि रोगी व शूलरोगी होवे॥ शमन॥ रोगको विचारिचांद्रायण व कृच्छ्रचांद्रायण व्रत व प्राजापत्यव्रत व हवन आदि कर्म ये सब करानेसे रोग शांतहोवै व जो गौ ब्राह्मण इत्यादिको मारै वह दूसरे जन्ममें शिरो रोगी व कर्ण रोगी व शूलरोगी व अरुचिरोगी होवै॥ शमन॥ इस रोगकी निवृत्ति वास्ते १ बर्षतक व २ बर्षतक व ३ बर्षतक घृतव्रतकरिअंतमें गौ सोनाका दानकरै॥ कटिशूलकर्मविपाक॥ जो गौ बैल पै सवारी करै वह कटिशूल रोगीहोवे इसकी शांति वास्ते चांद्रायण व कृच्छ्र चांद्रायण व कृच्छ्रातिकृच्छ्र चांद्रायण ब्रतकरै और सूर्यके मंत्र को जपकरै॥ कर्णशूल॥ जो पिता माताके मैथुन को सुनै वह कर्ण शूलीहोवे व बहरा होवै व उसके कपाल में असह्य शब्द उत्पन्न

होवैं ॥ शमन ॥ शूलकी शांतिकेअर्थ २० तोला सोना कुटुंबीब्राह्मण कोदेवै और विष्णुदेवताके मंत्रोंका जापकरै ॥ हस्तशूल ॥ जोपूर्वजन्म में द्विजहोके नास्तिक होजावै और सन्ध्या कर्म को त्याग देवै वह हस्तशूली होवै इसकी शांति वास्ते सोना १२ तोले भर दानदेवै॥ शमन ॥ हस्त शूलकी शांतिवास्ते अपनी शक्तिके अनुसारब्राह्मणों को भोजनदेय सोना दक्षिणादेवै पीछे सूर्यमंत्रका जापकरै॥ नयन-शूल ॥ जो स्त्रियोंको नंगी देखै व सूर्य्य को उदयहोते व अस्तहोते देखै वह नेत्ररोगी होवै वह दिशाओंको देखनेमें समर्थ होवैनहीं ॥ शमन ॥ वर्चोमेदेहि इस मंत्रकोजापकरै १०००८ अथवा वय सु-पर्णा इस मंत्रको पढ़िकरि अभिषेककरै ॥ शूलेकर्मविपाक॥ जोदूसरे को दुःखदेनेकी इच्छाकरै वह शरीर से माड़ाहो व शूलरोगी होवै इसकी शांतिवास्ते अन्नकादान रुद्रमन्त्रका जापकरै ॥ शूलनिदान ॥ बायुपित्त कफ सन्निपात आम इन भेदोंसे पांचप्रकारके और द्वंद्वज भेदोंसे तीन प्रकारके ऐसे शूल आठ प्रकारके होहैं इन सब शूलों में प्रायताकरि बायु प्रधानहै ॥ बातशूललक्षण ॥ खेदसे घोड़े आदिके दौड़ानेसे अति मैथुनकरनेसे बहुत जागनेसे जलादिक के अत्यन्त पीने से मटर मूंग अड़हर कोदो और सूखीबस्तु इन्हों को ज्यादा खानेसे अजीर्णमें भोजन करनेसे चोटलगनेसे कषैली तीखी कड़वी औषध भीजाअन्न विरुद्धबस्तु सूखामांस इन्होंके खानेसे सूखेशाक के खाने से और मलमूत्र मैथुन इन्हों के बेग को रोकने से और अधोबायुके रोकनेसे शोकलङ्घनके करनेसे बहुत हँसनेसे बायु बढ़ करि हृदय दोनोंपसली मुखसंधि इन स्थानों में शूल चलावै और अजीर्णमें प्रदोष में संध्या समयमें बादलों के होनेमें शीतकाल में बहुत शूलहोवै बारम्बार थँभजावै और फिर चलनेलगै मलमूत्र रुकजावै शूलचलै पीड़ा बहुतहोवै ये लक्षण बातशूलकेहैं यह प-सीना मालिश मर्दन इन्होंसे और चीकने गरम भोजनसे शांतहोवै है ॥ बातशूलचिकित्सा ॥ बातशूल को जानकरि स्नेह स्वेदनसे शांत करै और खीर खिचड़ी चीकना भोजन मांसका भोजन इन्हों से बायुका उपचार करै और बायु शीघ्रकारीहै इसवास्ते इसको जल्दी

जीतै और बहुत करके वायु शूलमें पसीनादेय शांतकरै ॥ वातशूलमें यूष ॥ अरंडीका तेल संयुक्त कुलथीका यूष बनाय तिसमें शुंठि मिरच पीपल लावा तीतरका मांस हींग कालानोन अनार की छाल इन्होंका चूर्ण मिलाय पीनेसे वायुशूल शांतहोवै ॥ दशमूलादिकाढा ॥ दशमूलके काढ़ामें अरंडीका तेल हींग कालानोन मिलाय पीने से पेटका अफारा सहित बातशूल जावै ॥ विश्वादिकाढा ॥ शुंठि अरंडकी जड़ इन्होंके काढ़ामें हींग कालानोन घालि पीनेसे शूलशांत होवै ॥ बलादिकाढा ॥ बलियार सांठी अरण्डकी जड़ दोनों कटेली गोखुरू इन्होंके काढ़ामें हींग नोन मिलाय पीवै तो बातशूलजावै ॥ वातशूलेकल्क ॥ चावलों के तुष के पानी में तिलों का कल्क बनाय पोटलीमें घालि वारंबार पेटऊपर फेरनेसे शूलशांतहोवै ॥ बीजपूरा स्वरस ॥ पकाहुआ बिजौराके रसमें सेंधानोनमिलाय पीनेसे दारुण हृदयशूल मिटै इसपै पथ्यअन्नको भोजनकरै ॥ तुंबरादिचूर्ण ॥ त्रिफल हरड़ै हींग पुष्करमूल सेंधानोन मनियारी नोन काला नोन इन्होंको यवोंके काढ़ा में मिलाय पीनेसे वातशूलजावै ॥ हरीतक्यादि चूर्ण ॥ हरड़ै अतीश हींग कालानोन बच इन्द्रयव इन्होंकाचूर्ण एक तोलाखावै ऊपर गरमपानीपीनेसे वातशूलजावै ॥ सौवर्चलादिचूर्ण ॥ कालानोन आम्लवेतस मनियारीनोन सेंधानोन अतीश त्रिकुटा इन्होंके चूर्णको बिजौराके रसमें मिलायखानेसे गुल्म व शूलजावै ॥ उशीरादिचूर्ण ॥ बाला सेंधानोन हींग अरंडकी जड़ ये समभाग लेय चूर्णकरि गरमपानीके संग खानेसे बातशूल जावै ॥ अरण्डादि चूर्ण ॥ सफ़ेद अरंड कीजड़ हींग सेंधानोन ये समभाग लेय गरम पानीकेसंग खानेसे बातशूल जावै ॥ मन्दारमूलिकादिचूर्ण ॥ आक की जड़का चूर्ण दूधमें मिलाय खानेसे व सहदेईकी जड़का चूर्ण व गोकर्णीकी जड़का चूर्ण खानेसे दूधके संग बातशूलजावै ॥ यवान्यादिचूर्ण ॥ अजमान सेंधानोन हींग यवाखार कालानोन हरड़ै इन्होंको गरम पानी के संग लेनेसे बातशूल शांत होवै ॥ करंजादि चूर्ण ॥ करंजवा कालानोन शुंठि हींग ये समभाग लेय थोड़े गरम पानीकेसंग लेनेसे तत्काल बातशूलजावै ॥ गुडूच्यादिचूर्ण ॥ गिलोय

मिरच इन्होंका चूर्णकरि गरम पानीके संग खानेसे हृदय शूल बातशूल जावे इसपे पथ्यरूप भोजन करै ॥ दूसराप्रकार ॥ गिलोय मिरच इन्होंके चूर्णमें बिजौरा का रसमिलाय शीतल पानीके संग खानेसे हृदयशूल शांत होवे ॥ उशीरादिचूर्ण ॥ वाला पिपलामूल ये समभागलेय चूर्णकरि गौके घृतके संग खानेसे भयंकर हृदयशूल शांतहोवे ॥ सुवर्चलादिचूर्ण ॥ कालानोन हरड़े हींग अजमोद साजी खार यवाखार इन्होंका चूर्णकरि दूध व कांजी के संग खानेसे शूल रोगकोहरै ॥ दूसराप्रकार ॥ कालानोन जीरा आम्लवेतस ये समभाग लेय मिरचका चूर्ण १० भाग इन्होंको बिजौराके रसमें भिगोय पीछे जलकेसंग खानेसे बायुशूल जावे ॥ एरंडमूलादिचूर्ण ॥ अरंडकी जड़ धनियांसणथारीनोन हरड़े हींग इन्होंका चूर्णकरि पानीके संग खानेसे शूल व गुल्म को हरै ॥ सौवर्चलादिगुटी ॥ कालानोन १ तोला अमली २ तोला जीरा ४ तोला मिरच ८ तोला इन्होंको बिजौरा के रसमें पीसि गोलीबनाय खानेसे बात शूल जावै ॥ बिल्वादिगुटी ॥ बेलअरंडकी जड़ तिल इन्होंको नींबूकेरसमें घोटि गोलीबनाय मेंढ़ासींगीके रसकेसंग खानेसे बातशूलजावै ॥ सोमाग्निमुखरसगुटी ॥ पांचोंनोंन समभाग लेय अदरक के रसमें १५ दिनतक पकावे पीछे चना समान गोली बनाय खानेसे बातशूल जावे ॥ मृगशृंगोद्भवभस्म ॥ बहुत जिसमें शोरुवा ऐसा मृगका सींगलेय अग्निमें भस्मकरि एक तोला भर घृतमेंमिलाय चाटनेसे व अरणीको गुड़ में मिलाय खानेसे बातशूल जावे ॥ अग्निमुखरस ॥ पारा गंधक अभ्रक तांबा आम्लबेतस मीठातेलिया हरड़े बहेड़ा आमला पांचोंनोन ये समभागलेय इन्हों को धतूरा नागबेली कटैली भांग पलसी जांटी बांसा ऋद्धि रास्ना लाल ऊंगा कपूर अदरक इन्हों के रसोंमें एक एक दिन भावना देने से अग्नि मुखरसहोहै पीछे इसको ३ रत्तीभर हमेशाखानेसे बातशूल व बातबिकार जावे और हरड़े बच हींग कूड़ाकीछाल नोन ये समभागलेय चूर्णकरि १ तोला हमेशै इसपैगरम खाना यह अनुपान है ॥ उदयभास्कररस ॥ पाराभस्म अभ्रकभस्म मैनशिल गंधक हरताल हींग मुरदाशंख

नागरमोथा ये समभाग लेय पीछे थोहर आकधतूरा निर्गुण्डी रास्ना इन्हों के रसों में एक एक दिन खरलकरि सुखाय गोला बनाय वस्त्रमें लपेट मिट्टीलगाय सुखाय गजपुटमें पकाय फेर बकरा के मूत्रमें पीसि पहिलेकी तरह पुटमें पकावै ऐसे ४ वारपकावै पीछे २ रत्ती भरलेय घृत शुण्ठि में मिलाय खाने से बातशूल जावै अथवा तिलोंका खार कूट शहद इन्होंमें मिलाय खानेसे बातशूल जावें अथवा कावलीके चूर्ण के संगखावै ॥ नाभिशूललेप ॥ मैनफल को कांजीमें पीसि नाभिमें लेपकरने से अथवा बेलफल अरंडी तिल इन्होंको बिजौरा के रस में पीसि पोटली बनाय सेंकने से बात शूल जावै ॥ बातशूललेप ॥ राई सहँजना की छाल इन्होंको गौके तक्र में पीसि लेपकरने से बातशूल शांतहोवै ॥ मृत्तिकासेंक ॥ माटीको जल में पकाय कड़ी होने पर वस्त्र में घालि अग्निद्वारा सेंककर पसीना लेने से बातशूल शांत होवै ॥ नाभिलेप ॥ हींग तेल सेंधानोन इन्हों को गोमूत्रमेंपकाय नाभिस्थानपै लेपकरनेसे पीड़ासंयुक्त शूल शांत होवै ॥ पित्तकेशूलकालक्षण ॥ खारी और मिरच आदि बहुत तीक्ष्ण वस्तु गरमवस्तु तिलखल कुलथी खटाई इन्होंके खानेसे क्रोध और खेल मैथुनके करने से मदिरा और कांजी के पीनेसे धूपके सेवनेसे और अग्नि सम्बन्धी आयाससे भुने अन्नके भक्षणसे पित्त कुपित हो शूल को प्रकट करै है तब तृषादाह नाभिमें पसीना मूर्च्छा भ्रम क्रोध ये होवैं और दुपहरा अर्द्धरात्रि ग्रीष्मऋतु शरदऋतु इतने समय में अधिक शूल चलै तो जानिये पित्तका शूलहै इसको शीतल पदार्थों के सेवने से व स्वादुपदार्थों के सेवने से शांत करै ॥ सामान्यचिकित्सा ॥ पित्तशूली को परवल ईख का रस पिवाय वमन करावै पीछे पित्त के गुल्म में कहाजुलाब देवै और पित्तशूली को पानीमें गोता दिवावै और कांसी के बरतन को जल में भरि शूल की जगह ऊपर रखनेसे आराम होवै व गुड़ चावल यवाखार घृत दूध व जुलाब जांगल देश के मांस ये औषध पित्तशूल में श्रेष्ठहैं ॥ नाभीभांड़धारण ॥ स्फटिक के पात्र व तांबा व चांदीके पात्रमें पानी भर शूल की जगह ऊपर रखने से पित्तशूल शांत होवै व पित्तना-

शक जुलाब व सूसा लावापक्षीके मांसकारस ये पित्तशूलकोनाशै॥ शतावर्यादिकाढ़ा॥ शतावरि मुलहठी बलियारडाभ की जड़ गोखुरू इन्हों का काढ़ा बनाय ठंढा करि गुड़ शहद खांड़ मिलाय पीने से पित्तरक्त दाह शूल इन्हों को शांत करै और दाह तत्काल जावै॥ बृहत्यादिकाढ़ा॥ कटैली गोखुरू एरंड जड़ कुशा कांस कसई इन्हों का काढ़ा तत्काल शूलको हरै॥ त्रिफलादिकाढ़ा॥ हरड़ै १ भाग बहेड़ा २ भाग आमला ३ भाग अमलतास ४ भाग इन्हों का काढ़ाबनाय खांड़ शहद मिलाय पीने से रक्तपित्त को व पित्तलको हरै॥ त्रिफलादिकाढ़ा॥ त्रिफला नींब व मुलहठी कुटकी अमलतास इन्होंके काढ़ामें शहदमिलाय पीने से पित्तशूल जावै॥ त्रायमाणादि काढ़ा॥ वनपसा पीपलामूल निशोत मुलहठी हरै है अमलतास आमला दाख कोरंटा इन्होंका काढ़ापित्त शूलको हरै॥ शतावर्यादि रस॥ शतावरीके काढ़ामें दूध व शहदमिलाय प्रभातमें पीने से दाह पित्तशूल पित्तरोग ये जावैं॥ धात्र्यादिचूर्ण॥ आँवलाके चूर्णमें शहद मिलाय खानेसे व हरड़ोंके चूर्णमें घृत गुड़ मिलायखानेसे पित्तशूल जावै॥ धान्यादिस्वरस॥ आमलाके व विदारीकंदके व त्रायमाण के व मुनक्का दाखोंके रसमें खांड़ मिलायपीनेसे पित्तशूलशांत होवै॥ कफजशूललक्षण॥ अनूप देशके मांसमछली पेड़ाआदि दूधकीबस्तुमैदा की बस्तुइनबस्तुओंके खानेसेऔर गंडेके चूसनेसे मधुररसके पीने से कफकारी बस्तुओंकेखानेसे कफकोपकोप्राप्तहो शूलको पैदाकरैहै तबहृदय दूखै बमनसी आवैखांसी और पीड़ा भोजनमें अरुचि पेट में पीड़ा माथा में बायुशरीर भारी भोजन करने में पीड़ा मल उतरै नहीं और बसंतऋतुमें प्रभातसमय में अधिक शूलचलै यह कफके शूलका लक्षणहै॥ सामान्य चिकित्सा॥ चावलजांगलदेश का मांस लहसुन परवल मांसका रस मदिरा पुरानेगेहूं ये कफशूल में हित हैं॥ एरंड मूलादि काढ़ा॥ एरंडकी जड़ ८ तोले लेय ६४ तोले पानी में काढ़ाबनाय यवाखार मिलाय पीनेसे पशली शूल व कफशूलदूरहोय॥ बीजपूररस॥ बिजौरा के रसमें गुड़मिलाय खानेसे हृदरोग बातशूल गुल्म ये जावैं॥ कफशूलचूर्ण॥ कायफल पुष्करमूल का-

काड़ाशिंगी नागरमोथा शुंठि मिरच पीपल कचूरइन्होंको अलग२ व इकट्ठी कूट चूर्ण करि अदरक शहद में मिलाय चाटने से कफ शूल वायु शूल अरुचि छर्दि खांसी श्वास क्षयी इन्होंको दूर करै॥ वृहत्कटफलादिचूर्ण॥ कायफल पुष्करमूल काकड़ाशिंगी पीपली इन्होंको शहदमें मिलाय चाटनेसे श्वास खांसी कफशूल ज्वर ये शांतहोवैं॥ पथ्यादिचूर्ण॥ हरड़ै वच चीता कुटकी इन्हों का चूर्ण गोमूत्रमें मिलाय खानेसे जल्दी कफ शूलको हरै॥ मुस्तादिचूर्ण॥ नागरमोथा वच कुटकी हरड़ै भिलावा ये सम भाग लेय चूर्ण करि गोमूत्र के संग खाने से कफशूल कोहरै और आमकोपकावै॥लवणादिचूर्ण॥ कफ शूल वाले को पहिले लंघन करावै पीछे सेंधानोन मनियारीनोन कालानोन हींग पीपल पिपलामूल चाव चीता शुंठि इन्होंका चूर्णकरि थोड़े गरम पानी के संग खानेसे कफशूलकोहरै॥ सर्वांगसुंदररस॥ पाराभस्म तांबाभस्म मैनशिल सोना माखी हरतालनोन कालानोन मनियारीनोन खारीनोन सेंधानोन ये सम भाग लेय पारासे दशवां हिस्सा सोना की भस्म लेय और पारा के बरावर मीठातेलियालेय इन्होंकोमिलाय पीछे कुचला अरणी बासा भांग लालसाकिनी रान तुलसीजल पिपली धतूरा इन्होंके रसोंमें भावना देय टिकियाबनाय शिकोरामेंघालि संपुटितकरि तुषाग्निपुटमें पकाय शीतलहोनेपर काढ़ि घृत शुंठिकेसंग चाररत्तीभरखानेसे गुल्मको व कफशूलको शांतकरै॥ आमशूललक्षण॥ अफारा और पेटमेंगुड़गुड़ाशब्दहो हृदयकटाजाय वमनआवै शरीरभारीहो मंदपनाहो कफके सबलक्षणमिलैं मुखसे कफपड़ैये आमशूलके लक्षणहैं॥ आमशूलसामान्यचिकित्सा॥ आमशूलमें कफशूलनाशकरनेवाली क्रिया करै और आमनाशक औरअग्निकोबढ़ानेवाले अन्नोंकोसेवै॥ चित्रकादिकाढ़ा॥ चीता पीपलामूल अरंडकी जड़ शुंठि धनियां इन्होंके काढ़ामें हींग सेंधानोन मनियारीनोन मिलाय पीनेसे आमरोग शांत होवै॥ त्रिफलादिचूर्ण॥ त्रिफला राई इन्होंकेचूर्णमें शहद घृतमिलाय खानेसे सबशूलजावैं॥ दीप्यादिचूर्ण॥ अजमान सेंधानोन हरड़ै शुंठि ये चार२ तोलेलेय चूर्णकरि खानेसे शूल व मंदाग्निदूरहोवै॥ बिल्व

मूलादिचूर्ण॥ बेलजड़ अरंडजड़ चीताजड़ शुंठि हाग सेंधानोन इ-
न्होंका चूर्णकरिखानेसे तत्कालशूलजावै॥ दार्व्यादिलेप॥ दारुहल्दी
हरड़े अट शतावरी हींग सेंधानोन इन्होंको तक्रमेंपीसि थोड़ागरमक-
रि पेटकेऊपर लेपकरनेसे शूलजावै व अरंडीकातेल ६ भाग लहसुन
८भाग केग १भाग सेंधानोन३ भाग इन्होंकोमिलाय १तोलाभरखाने
से आमशूलशांतहोवै॥ हिंग्वादियोग॥ हींग १भाग सेंधानोन ३भाग
अरंडीकातेल९भाग लहसुनकारस २७ भाग इन्हों को मिलाय पीने
से गुल्म उदावर्त आमशूल ये जावैं॥ कूष्मांडक्षार॥ कोहलाको छीलि
टुकड़े करि धूप में सुखाय बर्तनमें घालि बर्तन को खांमिचुल्ही परच-
ढ़ाय अग्निसे पकावै ऐसा करै कि भस्म नहीं सके अंगारही बनारहै
पीछे शीतल होनेपर काढ़ि चूर्ण करि दोमासे भरमें शुंठिचूर्ण मिलाय
गरमपानीकेसंग खानेसे यह महाशूल व असाध्यशूलकोहरै॥ द्वंद्वज
शूलकालक्षण॥ पेडूहृदय कंठदोनों पशलियोंमें शूलहोतोकफबातका
जानिये और कूषि हिया नाभि इन्होंमें शूलहो तो कफपित्तकाजानिये
और दाहज्वर संयुक्तहोय तो बातपित्तका जानिये॥ सामान्यचिकि-
त्सा॥ द्वंद्वजशूलमें स्नेहादिक दो योगोंको योजनाकरै सन्निपात में
३ योगोंकी योजनाकरै॥ द्वंद्वजशूलकाढ़ा॥ दोनों कटैलीडाभकी जड़
कांस इक्षुबालिका गोखुरू अरंडकीजड़ इन्होंके काढ़ामें शहद खांड़
मिलाय पीनेसे बात पित्तका शूलजावै॥ पटोलादिकाढ़ा॥ परवलत्रि-
फला नींब इन्होंके काढ़ामें शहदमिलाय पीनेसे पित्तकफज्वर छर्दि
दाहशूल इन्होंको शांत करै॥ द्राक्षादिकाढ़ा॥ दाखबांसाइन्हों का
काढ़ा कफपित्तकी पीड़ाकोहरै और कफपित्तशूलको जुलाबबमन से
भी शांतकरै॥ एरंडमूलादिकाढ़ा॥ एरंडकाफल एरंडकीजड़दोनों कटै-
ली गोखुरू शालपर्णी पृष्ठिपर्णी सहदेई पृष्णिपर्णी क्षुरालिका सिंह
पुच्छी येसमभागलेय यवाखार मिलाय काढ़ा बनाय पीने से द्वंद्वज
शूलको व सर्व शूलकोहरै॥ लहसुनकल्क॥ लहसुनका कल्क बनाय
प्रभातमें मदिराके संगपीनेसे बातकफ शूलजावै व खारीपानी में
पीपल सेंधानोन मिलाय पीनेसे दुर्ज्जयशूलको हरै॥ सन्निपातशूल
लक्षण॥ जो पीछे कहेहुये सब लक्षण मिलैं तो सन्निपात काशूल

जानिये यह विषवज्र के समान दुःसाध्यहै ॥ त्रिदोषशूलचिकित्सा ॥ शंख की भस्म सेंधानोन हींग त्रिकुटा इन्होंका चूर्ण करिगरम पानी के संगखानेसे सन्निपात शूलजावै ॥ विदारी रस योग ॥ विदारीकारस अनारकारस शुंठि मिरच पीपल लहसुन इन्हों के चूर्णमें शहद मिलाय खाने से सन्निपात का शूल जावै ॥ अक्षादिस्वरस ॥ बहेड़ा आमला हरड़े इन्हों के रस में लोह भस्म गुड़ मिलायपीनेसे सन्निपात का शूलशांतहोवै ॥ वैश्वानरयोग ॥ तांबा मिरच मीठातेलिया पीपली पीपलामूल ये समभागलेय इन्होंको अदरकके रसमें और बिजौराके रसमें घोटकरि १ दिनपीछे २ रत्तीभरखावै व भुना हींग करंजवाकेबीज शुंठि लहसुन इन्होंको अरंडी के तेलमेंपीसि १ तोलाभर खानेसे सन्निपात शूलकोहरै ॥ सर्वजाशूलमेंशास्त्रार्थ ॥ वमन लंघन पसीना पाचन फलवर्ती खार चूर्णगोली येशूलकोनाशैंहैं और वातशूल में निरूह वस्तिदेवै और पित्तशूलमें दूधकाजुलाव और कफ सूलमें कडुआकसैलारसदेवै ॥ शूलमेंस्वरस ॥ शतावरी केस्वरस में शहद मिलाय पीनेसे शूल शांतहोवै ॥ बीजपूरादिस्वरस ॥ बिजौरा के रसमें शहद दूध मिलाय पीनेसे हृदयशूल वस्ति शूल पशलीशूलकोठा की वायुकोहरै ॥ मातुलिंगस्वरस ॥ बिजौरा कारस घृत हींग सेंधानोन इन्होंको थोड़ा गरमकरि पीनेसे यहमलोंको अनुलोमन करै और कूषि हिया पशली इन्होंकी पीड़ाको हरै ॥ बृहत्यादिकाढ़ा ॥ कटैली तिर्फलबेल बिजौरा इन्होंकी जड़का काढ़ामें पाषाणभेद मिलाय गौ कादूध मिलाय ठंढाकरि पीनेसे शूलशांत होवै ॥ एलादिकाढ़ा ॥ इलायची हींग यवाखार सेंधानोन इन्हों के काढ़ा में अरंडीका तेलमिलाय पीनेसे कमरशूल हृदयशूल पेटशूल नाभिशूल पीठशूल कूषि शूल शिरकाशूल कानशूल नेत्रशूल इन्होंको शांतकरै ॥ मातुलिंगादि काढ़ा ॥ बिजौरा कारस व सहोंजनाके काढ़ामें यवाखार शहद मिलाय पीनेसे पशलीशूल हृदयशूल वस्तिशूल ये शांतहोवैं ॥ अजमोदादि काढ़ा ॥ अजमोद बचहींग मनियारीनोन कालानोन शुंठि पीपली दुलारी कटैली बिजौराकेबीज धनियां ये समभागलेय काढ़ा बनाय पीने से अनेक प्रकारके शूल नाशहोवैं ॥ एरंडादिकाढ़ा ॥ एरंडजड़

बेलजड़ दोनों कटेली बिजौरा इन्होंकी जड़ पाषाणभेद त्रिकुटा इन्होंके काढ़ामें यवाखार हींगनोन अरण्डी तेल इन्हों को मिलाय पीनेसे श्रोणी कटि जांघ इन्हों के शूलोंको हरै ॥ त्रिफलादिकाढ़ा ॥ त्रिफला के काढ़ा में गोमूत्रशहद दूधलकड़ पाषाणभेद इन्हों का चूर्ण और अरण्डीका तेलमिलाय पीनेसे शूलशांतहोवै ॥ पथ्यादि काढ़ा ॥ हरड़े इन्द्रयव पुष्करमूल हींग जटामासी अतीश इन्हों को काढ़ा थोड़ा गरम पीवे तो आमशूल कफशूल शान्त होवै ॥ सर्वशूलमेंयवागू ॥ भुनेमूंगों की दाल धान की खील सेंधानोन धनियां जीरा इन्होंको पानीमें पकावनेसे यवागू होता है यह पाचनी है और भूखको बढ़ावे है शूलको हरैहै त्रिदोष को नाशै है गर्भवाली स्त्री को बालकको बूढ़ेकोहितहै और पीपली पीपलामूल चाव चीता शुंठि इन्होंके चूर्णके संग यवागू को खावै तो अग्निदीपनहो और खायापचै ॥ रेचनार्थवर्ति ॥ घरकाधूमा मनियारीनोन हींग जमालगोटाकी जड़ पीपली मुरदाशंख सेंधानोन गुड़ त्रिफला इन्हों की वर्त्ति बनाय गोमूत्रमें भिगोय गुदामें चढ़ानेसे पीड़ा सहित मलकी गांठ जल्दी पड़े ॥ तुरंगपुरीषरसयोग ॥ घोड़ी की लीदको मलि रस काढ़ि हींगमिलाय पीनेसे व कुल्थीके काढ़ामें हींग शुंठि मनियारीनोन इन्होंका चूर्णमिलाय पीनेसे भयंकर शूलजावै ॥ विश्वजलादिकाढ़ा ॥ शुण्ठि के काढ़ामें अरण्डी का तेल हींग कालानोन इन्हों का चूर्ण मिलाय पीनेसे शूल शांत होवै यह अनुभव से कहा है॥ कुबेरादिचूर्ण ॥ बहेड़ा १ शुण्ठि १ हींग १ हरड़े सागर गोटा की गिरी ३ भाग इन्होंका चूर्णकरि अरंडीके तेलमें मिलाय पकाय पीने से अनेक तरहके शूल शांत होवैं यह ब्रह्मास्त्र के समान चूर्ण है यह नृसिंह का पुत्र जयदेव वैद्यने कहा है ॥ हिंग्वादिचूर्ण ॥ हींग बिजौरा सेंधानोन कालानोन खारीनोन बच शुंठि मिरच पीपल पिपलामूल चाव चीता कचूर अमली अजमान कंकोल पाढ़ा रान तुलसी मूली शेरणी यवाखार सुहागा खार अनार हरड़ें इन्हों का चूर्ण खानेसे बिबंध हुचकी आध्मान बध्मखांसी श्वासमंदाग्नि अरुचि प्लीहा बवासीर सर्बशूल गुल्म गलरोग हृद्रोग पांडुरोग इन्हों को

हरै॥ नाराचचूर्ण ॥ पिपली १ तोला निसोत ४ तोला मनियारी नोन ४ तोला इन्होंका चूर्णकरि शहदकेसंग १ तोलाभर खानेसे आध्मान मलबंध पेटरोग कफ पित्त शूल इन्होंको शांतकरै ॥ क्षारयोग ॥ केशू मूला अर्जुन धत्र ऊंगा केला इन्होंकी जड़ लेय और तिल जीवंती धतूरा हलदी कोहलाकीवेल बांसा जमींकंद इन्होंको तेज अग्निमें भस्मकरि इस राखको पानीमें घालि रक्खे पीछे पानीको नितारि पीनेसे शूल अफारा मलबंध गुल्म कफसंबंधी रोग कामला विद्रधी हृदयशूल पांडु संग्रहणी सोजा ववासीर पीनस मंदाग्नि भारीतिल्ली प्रमेह इन्होंको शांतकरै और पेटमें पाषाण समान रोगोंको भी जल्दी भस्म करे ॥ हिंग्वादिचूर्ण ॥ हींग १ तोला बहेड़ा २ शुंठि ३ सागरगोटा ४ ऐसे प्रमाण लेय चूर्णकरि गरमपानीके संग खानेसे व गुड़ हरड़ै घृत लहसुन २ येदोनोंयोग वरतनेसे शूलकोनाशै ॥ तुंवरुयवादिचूर्ण ॥ धनियां व चिरफल सेंधानोन कालानोन खारीनोन अजमोद पुष्करमूल जवाखार छोटी हरड़ै भुनी हींग वायविड़ंग ये सम भाग लेय महीन चूर्णकरि गरम पानीके संग खानेसे व यवोंके काढ़ा के संग खानेसे सबतरहके शूलरोग गुल्म आध्मान पेट रोग इन्हों को शांतकरै॥ पंचसमचूर्ण ॥ शुंठि छोटीहरड़ै पिपली निसोत कालानोन ये समभागलेय महीन चूर्णकरि खानेसे शूल अफारा पेटरोग ववासीर आमवात इन्होंको हरै॥ विश्वादिचूर्ण ॥ शुंठि साजीखार हींग पाढ़ा ये सम भाग लेय चूर्णकरि गरमपानीके संग खानेसे सबशूल शांतहोवैं॥ वचादिचूर्ण॥ वच साजीखार हींग कूट इंद्रयव ये सम भाग लेय गरमपानीके संग खानेसे संपूर्ण शूल जावें ॥ अजमोदादिचूर्ण॥ अजमोद वच कूट आम्लवेतस सेंधानोन सोजीखार हरड़ै त्रिकुटा ब्रह्मदंडी नागरमोथा कालानोन शुंठि नोन खारीनोन इन्होंके चूर्णको तक्रके संग खानेसे सबशूल शांतहोवैं ॥ वचादिचूर्ण ॥ वच २ भाग मनियारीनोन ३ भाग हरड़ै ६ भाग शुंठि ४ भाग हींग ८ भाग कूट ७ भाग चीता ५ भाग अजमान ५ भाग इन्होंकाचूर्ण बनाय शहदके संग पीनेसे सबतरहके शूलरोग शांतहोवैं और अफारा पेटरोग गुल्म ववासीर श्वास खांसी संग्रहणी पांडु इन्होंको शांत

करै ॥ यवान्यादिचूर्ण ॥ अजमान सेंधानोन देवदारु जवाखार काला-
नोन शुंठि अरंडकीजड़ हींग खारीनोन ये समभाग लेय चूर्णकरि
गिलोय के काढ़ाके संग खाने से सब शूल शांत होवैं ॥ अजमोदादि
चूर्ण ॥ अजमोद हरड़ै पाढ़ा शुंठि मिरच पीपल ये सम भाग लेय
चूर्णकरि गरमपानीके संगखानेसे अजीर्ण शूल शांतहोवै ॥ रुचकादि
चूर्ण॥ कालानोन हींग शुंठि ये समभाग लेय चूर्णकरि गरमपानीके
संग खानेसे कफबात पीड़ा और हृदय पीठ पेट इन्हों के शूल हैजा
ये शांतहोवें और इसको यवोंके रस के संग लेवै तो मल बँध जावै ॥
हिंग्वादिचूर्ण ॥ हींग पिपलामूल धनियां चीता बच चाव अरणी
पाढ़ा कचूर अमली सेंधानोन कालानोन मनियारीनोन शुंठि मिरच
पीपल साजीखार जवाखार अनारकीछाल हरड़ै पुष्करमूल आ-
म्लबेतस शेरणी जीरा रानतुलसी इन्होंका चूर्णकरि अदरख के
रसमें व बिजौराके रसमें भावनादेय खानेसे आध्मान संग्रहणी ब-
वासीर गुल्म उदावर्त्त बाताध्मान विष पेटरोग मूत्रकृच्छ्र तूनि प्रति-
तूनि अरुचि उरुस्तंभ मतिभ्रम अंतःकरणका भ्रम बधिरपना अ-
ष्ठीला प्रत्यष्ठीला श्वास खांसी हृदय कूषि वंक्षण कटि पेट आंत ब-
स्थि चूंची कांधा इन्होंका शूल पसलीशूल बायुशूल कफशूल इन्हों
को हरै यह अश्विनीकुमारोंने कहाहै ॥ शंखवटी ॥ अमलीका खार
२१तोला नोन४ तोला सेंधानोन ४ तोला कालानोन ४ तोला मनि-
यारीनोन ४ तोला खारीनोन ४ तोला सुहागाखार ४ तोला इन्हों
का चूर्ण करि १२८ तोले नींबूके रसमें तपाये शंख के टुकड़े ४०
तोले बुझावै बारसात पीछे सुखाय चूर्ण करि हींग ४ तोला शुंठि
४ तोला मिरच ४ तोला पिपली ४ तोला गन्धक ४ तोला पारा२
तोला मीठातेलिया २ तोला पीछे इन सबोंको नींबूके रसमें खरल
करि तीनदिन पीछे बेर की गुठली प्रमाण गोली बनाय गरम पानी
के संग खावै तो सब शूल गुल्म अजीर्ण परिणाम शूल अतीसार
संग्रहणी इन्होंको नाशै ॥ गोमूत्रमंडूर ॥ मंडूरको गोमूत्र में सिद्धकरि
त्रिफला चूर्ण मिलाय और शहद घृतमें मिलाय खानेसे सन्निपात
का शूल शांत होवै ॥ सूर्यप्रभावटी ॥ त्रिकुटा पिपलामूल बच हींग

जीरा स्याहजीरा मीठा तेलिया ये समभाग लेय नींबूके रसमें और अदरख के रस में खरलकरि मिरच के समान गोली बनाय प्रभात में गरमपानीके संग खानेसे आठ प्रकार के शूलको हरै ॥ शंखादि चूर्ण ॥ शंखभस्म करंजवाके बीज हींग शुंठि मिरच पीपल सेंधानोन ये सम भाग लेय चूर्णकरि गरमपानीके संग खानेसे सब तरह के शूलोंको हरै ॥ क्षारयोग ॥ आम्लवेतसकी गिरी सेंधानोन शुंठि हींग तिफल अजमान देवदारु ये समभाग लेय बरतनमें घालि चुल्ही ऊपर चढ़ाय अग्नि जलानेसे खार होवै तिसे ईंटसे बारीक पीसि खानेसे तीव्र शूल जावै ॥ चित्रकादिवटक ॥ चीताजड़ नोन पाढ़ा शुंठि मिरच पीपल सेंधानोन कालानोन खारीनोन मनियारी नोन सांभरनोन जीरा धनियां जटामासी अजमान पिपलामूल ये सम भागलेय जंबीरी नींबुओंके रसमें गोली बनाय खानेसे हृदय शूल पसलीशूल आमशूल अरुचि ८० प्रकारके वातरोग इन्होंको यह नाशै ॥ हरीतक्यादिवटी ॥ हरड़ै शुंठि मिरच पीपल कुचला के बीज गन्धक हींग सेंधानोन ये समभाग लेय गोलीबनाय आधेतोलाकी प्रभातमें खानेसे १ गोली रोज जन्मसे उपजाशूलको नाशै और संग्रहणी अतीसार अजीर्ण मंदाग्नि इन्होंको गरम पानी के संग खानेसे दूरकरै ॥ कुबेराक्षवटी ॥ सागरगोटा १ तोला शुंठि १ तोला कालानोन आधातोला भूनीहींग आधातोला इन्होंको सहोंजनाकी जड़का व लहसुन के रसमें घोटि स्वच्छ अंगारों से पकाय खानेसे आठप्रकारके शूल शांतहोवैं ॥ अगस्तिवटी ॥ हरड़ै ४० तोलालेय तुषों के काढ़ामें सिझाय पीछे मीठातेलिया कुचलाके बीजों के संग सिझाय पीछे हरड़ोंको काढ़ि शुंठि मिरच पीपल जवाखार सुहागा-खार अजमान अजमोद खुरासानी अजमान वायविडंग हींग सेंधा-नोन कालानोन मनियारीनोन ये सब बराबर तोलेलेवै चूर्णकरि नींबू के रसमें खरलकरि गोली बेरकी गुठली प्रमाण बनाय खानेसे शूल गुल्मकृमि मंदाग्नि प्लीहा आमवात इन्होंको दूरकरै ॥ गरलादिवटी ॥ अफीम चीता शुंठि जीरा बच मिरच हींग इन्होंको भंगराके रस में खरलकरि गोली बनाय खाने से शूल मूढ़वात मंदाग्नि शुनबहरी

इन्होंको यह हरै ॥ बचादिगुटी ॥ बच शुंठि जीरा मिरच मीठा तेलिया हींग चीता दालचीनी ये समभाग लेय चूर्ण करि भँगरा के रसमें चना प्रमाण गोली बनाय खानेसे शूलको नाशकरै और मंदाग्नि को व बायु को शांत करै जैसे सूर्यअंधेरेको तैसे ॥ कुबेराक्षपाक ॥ सागरगोटाको तीन दिन कांजी में भिगोय चौथा हिस्सा नोन मिलाय पकाय पीछे फोड़ि गिरी काढ़ि सेंधानोन शुंठि मिरच पीपल इन्हों के चूर्णसे पूरणकरि पीछे कांजीसे छिड़किसुखाय खाने से रुचिको पैदाकरै और शूलकोहरै ॥ सप्तविंशतिगूगल ॥ जवाखार सुहागाखार शुंठि मिरच पीपल हरड़े बहेड़ा आमला हलदी रुद्राक्ष नागरमोथा सेंधानोन मनियारीनोन कालानोन चिरफल पीपलामूल चीता छोटीइलायची चीताकीजड़ चाब्र कूट सोनामाखीकी भस्म पुष्करमूल बायविडंग अतीस गजपीपल ये समभागलेय और सबोंके समान गूगललेय इन्होंकी घृतमें गोली बनाय पीछे दूध पानी कांजी मूंगोंका यूष इन्होंमें एकको येसाकी संगगोलीको खानेसे बायुहृदय पसली पीठ कटि आंड संधि कोखि काख इन्होंका शूल कुष्ठ किलास कुष्ठ पांडु क्षयी अपस्मार उर्ध्वबात उन्माद आमबात सूजन प्रमेह इन्होंकोशांतकरै ॥ लोहभस्मयोग ॥ हरड़ों को गोमूत्रमें पकाय सुखाय लोहाकाचूर्ण युतकरि और गुड़में मिलाय खानेसे सर्वप्रकार के शूलरोग शांतहोवैं ॥ गंधकरसायन ॥ त्रिफला चूर्ण ४ तोले गंधक २ तोले लोहभस्म १ तोले इन्होंका चूर्णकरि ८ मासेभर में शहद घृतमिलाय चाटने से सबशूल शांतहोवै और बातविस्फोटक इन्होंकोहरै और तीनमहीने तक सेवने से नाशहुये बालफिरउपजैं ॥ शूलकुठाररस ॥ सुहागाखार पारा गंधक त्रिफला शुंठि मिरच पीपल हरताल मीठातेलिया तांबा जमालगोटा इन्हों को भँगराकेरसमें खरलकरि दोरत्ती की गोलीबनाय मिरचोंके चूर्णके संग व अदरखके रसकेसंग खानेसे सबशूलोंको नाशै जैसे विष्णुका सुदर्शनचक्र राक्षसोंको तैसे ॥ अग्निकुमाररस ॥ पारा गंधक सुहागाखार ये समभाग लेय मीठातेलिया ३ भाग कौड़ीकीभस्म २ भाग शंखभस्म २ भाग मिरच ८ भाग इन्होंको नींबूके रस में

खरलकरि दो रत्तीकी गोलीबनाय खानेसे शूलको हरै अनुपान के संग खानेसे सन्निपात शूलको हरै ॥ क्षारताम्ररस ॥ तांबाभस्म ४ तोला गन्धक ४ तोला अमलीकाखार ८ तोले इन्होंको मिलाय पीसि गरमपानीं के संग खानेसे सबशूल दूरहोवें ॥ सोमनाथताम्र ॥ पारा गन्धक ये सम भाग इनदोनुवोंसे आधा हरताल हरताल से आधा मैनशिल तांबाकेपत्र पाराकेसमान पीछे पारा गंधककी कज्जली करि तांबाकेपत्रोंको कई वार लेपनकरि पीछे सकोरामें नोन घालि तिसपरपत्रेधरि ऊपरनोनधरि दूसरेसिकोरासे संपुटितकर गर्भयंत्रमें तीनपहरतकपकाय शीतल होनेपर काढ़ि रोगोक्त अनुपानों के संगखानेसे रोगमात्रको हरै और विशेष करि परिणामशूल पेट शूल पांडुज्वर गुल्म प्लीहा यकृत क्षय मन्दाग्नि प्रमेह शूल संग्रहणी इन्होंकोहरै ॥ गदमददहनरस ॥ शीशा रांग पाराअभ्रक सिंगरफ मैनशिल तूतिया तांबा गन्धक सोना इन्होंकी भस्म खपरिया इन्हों को मिलाय आकके दूधमें खरल करि गोला बनाय सिकोरामें नोनघालि ऊपर गोलारखि फिर नोन धरि दूसरे सिकोरा से संपुटितकरि कपड़माटीदेय गजपुट में फूंक देवै पीछे शीतल होनेपर काढ़ि अदरख वासा निर्गुण्डी इन्होंके रसमें भावनादेय पीछे तुलसीके रस व पीपलीके चूर्णकेसंग खानेसे पसली शूल मन्दाग्नि अरुचि सन्निपात हृदरोग गुल्म मेह कफ वायु सर्व रोग ज्वर इन्होंको हरै यह रस त्रिलोकमें उत्तमहै और नागलोकमें उत्तमहै और नागोंको प्रिय है और रक्त पित्तको नाशैहै ॥ शंखादि ॥ शंख पीली कौड़ी शुंठि मिरच पीपल जवाखार सज्जीखार सुहागाखार हड़ बहेड़ा आमला लज्जावंती नोन सेंधानोन कालानोन खारीनोन मनियारीनोन गन्धक जीरा अजमान हींग ये प्रत्येक दो २ तोलेलेय इलायची लौंग चीता लोहभस्म पाराभस्म तांबाभस्म ये एक एक तोला लेय चूर्ण करि दो माशे भरखावे ऊपर ठंढा पानीपीवे यह शूल गुल्म प्लीहा अजीर्ण मन्दाग्नि अम्लपित्त इन्हों को नाशै ॥ विद्याधराभ्रलेह ॥ बायविडंग नागरमोथा हड़ बहेड़ा आमला गिलोय जमालगोटाकेबीज निसोत चीता शुंठि मिरच पीपल शंखिया ये एकएकतोलालेय औरगोमूत्रमें

सिंहकी पुरानीकीटी १६ तोला कौड़ीभस्म १६ तोला कालाअभ्रक भस्म ४ तोला पारा १ तोला इन सबोंको खरल करि अगस्त वृक्ष के पत्तोंके रसमें ७ भावनादेय पीछे १ तोला गन्धक मिलाय शहद घृतमें घोटि चीकने बरतन में घालि रक्खै पीछे अग्निबल देखि १ व २ व ३ माशेतक खावै ऊपर गौका दूध व ठंढा पानी पीवै यह मंदाग्नि व परिणामशूल अन्नजशूल क्षय आम्ल पित्त संग्रहणी जीर्णज्वर रक्तपित्त कुष्ठ इन्हों को नाशै इसकोरोगोक्त अनुपानों के संग खानेसे रोगमात्र जावै ॥पिड़ारिरस ॥ अभ्रकभस्म ३ तोला गन्धक २ तोला जमालगोटा ३ तोला सुहागाखार २ तोला इन्होंको नींबू के रसमें खरल करि बेरकी गुठली समान गोली बनाय गुड़ कांजी के संग खानेसे आमशूल कृमिशूल इन्होंको हरै इसपै तक्रचावल का पथ्य करै और दस्तबंद होनेके वास्ते शीतलक्रिया करै ॥ शुल्वसुंदररस ॥ कंटक बेधि तांबा १ तोला पारा १ तोला गन्धक२तोला पीछे पारा गन्धक की कज्जली करि तांबे के पात्र में कज्जली का लेपनकरायसुखाय सिकोरामें नोनघालि तिसपैतांबेके पत्तेरखि ऊपर नोन धरि दूसरे सिकोरासे ढकि कपड़माटी करि गजपुटमें पकाय शीतल होनेपरकाढ़िद्रव्यसे सोलहवां हिस्सा मीठातेलिया मिलाय पीछे धतूराकातेल अरंडीकातेल चीताकारस शुंठि मिरच पीपल इन्होंके काढ़ामें भावनादेय सुखाय ३ रत्तीभर पूर्वोक्त अनुपानकेसंग खानेसे बात व बातबिकार शूल कफरोग पक्तीशूलइन्हों को नाशैयह पार्बती महादेव की आज्ञा है ॥ षण्मुखरस ॥ पारा गन्धक तांब्राभस्म सज्जीखार ये समभाग लेय नींबूके रस में ७ दिन तक भावना देय तिरफल भी पारा के समान मिलावै पीछे इन्हों को दारुण घाम में खरलकरि संपुटमेंघालि ३ बार लघुपुटमेंपकावै पीछे इसमें त्रिकुटा पाराके समान मिलाय ३ रत्तीभर खानेसे सबशूलजावैं ॥ महा शूलहररस ॥ पारा गन्धक सुहागा खार सफ़ेद कांच कपूर साबर के सींगकी भस्म तांबाभस्म कौड़ी भस्म मनियारी नोन छोटे शंख कीभस्म हिरण के सींगकी भस्म शंखभस्म समानभागलेय आकके दूधमें पीछे थोहरके दूधमें एक २ दिन खरलकरि सुखाय मीठातेलि-

या शुंठि मिरच पीपल इन्होंका चूर्ण मिलाय पीछे रसको मिरच घृत के संगखानेसे महाशूल क्षयी संग्रहणी पाण्डुरोग मंदाग्नि ये जावें॥ त्रिनेत्ररस ॥ सुहागाखार हिरणके सींगकीभस्म तांबाभस्म पारा भस्म सोनाभस्म इन्होंको अदरख के रसमें एक दिन खरलकरि संपुटमें रखि आरनोंकी अग्निमे पकाय शीतल होनेपर काढ़ि एक मासाभर रसको शहद घृतमें मिलाय खावै ऊपर सेंधानोन जीरा हींग शहद घृत इन्होंकी चटनी चाटै यह पंक्तिशूलको एकमास में हरै॥ गजकेसरीरस॥ शोधापारा १ भाग गन्धक २ भाग इन्होंको १ पहर खरलकरि द्रव्यके समान शोधातांबा का थोथा गोला बनाय पूर्वोक्त द्रव्यसे भरदेवै पीछे माटीके बरतनमें नीचे ऊपर नोन बीच में गोलारखि बरतनके मुखको थामि गजपुट में पकाय शीतल होने पै काढ़ि गोला सहित बारीक़ चूर्णकरि दो रत्ती भर पानके टुकड़ाके संग खानेसे सर्वशूलजावें और हींग शुंठि जीरा वच मिरच इन्होंका चूर्ण एक तोला भर गरम पानी के संग खाने से असाध्य शूल दूरहोवे॥ शूलगजकेसरी॥ पारा गन्धक मीठातेलिया कौड़ीभस्म सेंधानोन सुहागाखार पीपल शुंठि इन्होंको नागवेल के रसमें खरल करि दो रत्तीभर खानेसे शूलजावे॥ गजकेसरी॥ कौड़ीकाखार मीठातेलिया सेंधानोन त्रिकुटा इन्होंको पानके रसमें खरलकरि १ रत्तीभरखाने से वातशूल परिणामशूल आमशूल इन्हों को नाशै॥ पथ्यादिरस॥ हरड़ै सुहागाखार शुंठि मिरच पीपल चीता मनियारीनोन गन्धक सेंधानोन ये समानभाग लेय सबोंके समान कुचलाके बीज इन्होंको खरलकरि गोलीबनाय खानेसे शूल अफारा मलबंद गुल्म खांसी कफ आम बात अजीर्ण पेटरोग अरुचि स्वरभंग शूल इन्होंकोनाशै जैसे सिंहहाथीको॥ परिणामशूलनिदान॥ भोजन पचनेके समयमेंउपजै तिसे परिणामशूलकहेहैं इसका लक्षण संक्षेपसे कहतेहैं कफ अपने स्थानसे छूटि शीतके संग बढ़ि बायुको ग्रहण करि भोजनजरे पीछे शूलको पैदाकरै है वहशूल पेट कूखि पसली नाभि वस्ति स्तनोंका बीच पीठ मंगर की जड़ इन स्थानों में अलग २ व एककाल सपूर्ण जगह प्रकट होवै और भोजन जरावादशूल शांत होहै सांठीचावल

ब्रीहि अन्न चावल इन्हों के भोजन से बढ़ै है यह परिणामशूल महा-रोगहै वैद्योंको दुर्विज्ञेयहै और अन्न रस बहनेवाले मार्गमें बिकार पैदा करैहै॥ बातिकपरिणामशूल॥ पेटमें अफाराहो गुड़ २ शब्द हो मलमूत्र बंध होजावै ग्लानिहो शरीर कांपै चिकना गरम पदार्थसे शांतहोवैं यह बातिकपरिणामशूल के लक्षणहैं॥ पैत्तिकपरिणामशूल निदान॥ तृषा दाह ग्लानि पसीना ये हों कडुआ खट्टा सलोना इन्होंसे बढ़ै शीतल पदार्थों से शांतहोवै तिसे पैत्तिकपरिणामशूल कहिये॥ कफजपरिणामशूल॥ छर्दि हौल मोह थोड़ाशूल देरतकरहै कडुवा तीखासे शांतहो तिसे कफजपरिणामशूल कहिये॥ द्वंद्वजस-न्निपातलक्षण॥ दोनों के लक्षणवाला द्वन्द्वजपरिणामशूलकहिये तीनों के लक्षणवाला सन्निपातपरिणामशूलकहिये इस में मांस बल अग्नि नष्ट होजायँ तो असाध्य जानिये॥ शूलकेउपद्रव॥ पीड़ा तृषा मूर्च्छा अफारा शरीरभारी अरुचि खांसी श्वास हिचकी ये शूलके उपद्रवहैं॥ असाध्यलक्षण॥ एकदोषकाशूलसाध्य २दोष का कष्टसाध्य ३ दोषका उपद्रवों युत असाध्यहोहै॥ सामान्यचिकित्सा॥ पहिले लंघन पीछे बमन जुलाब बस्तिकर्म इन्हों से परिणामशूलनाश होहै॥ बातादिपरसामान्यचिकित्सा॥ स्नेह कर्म से बातज जावै जुलाब से पित्तकाशूल जावै बमन से कफकाशूल जावै स्नेहसे दो दोषोंका जावै बमन रेचन स्नेह तीनों से सन्निपातकाशूल जावै॥ त्रिफलादिकाढ़ा॥ त्रिफला अमलतास इन्हों के काढ़ामें शहद खांड़ मिलाय पीनेसे पित्तशूल रक्तपित्त दाह प्रदर ये जावैं॥ बमन॥ पहिले कंठ पर्य्यंत मदिरा और ईखकारस पीवै पीछे मैनफल नींब इन्होंका काढ़ा पीनेसे बमन होय रोग शांतहोवै॥ परिणामशूलकल्क॥ बिष्णु-क्रांता की जड़के कल्कमें मिश्री शहद मिलाय ७ दिन खानेसे परि-णामशूलजावै॥ शुण्ठिकल्क॥ शुण्ठि तिल गुड़ इन्होंका कल्ककरि दूधके संग ३ दिन खानेसे परिणामशूल आमबात ये जावैं॥ बिरेचन॥ निसोत जमालगोटा व अरंडीकातेल इन्होंके जुलाब लेने से परि-णामशूल जावै॥ बमन॥ कंठपर्य्यंतदूध मैनफलके काढ़ाको पीवै व ईखके रसको पीवै व नींब के रस को पीवै कड़वी तूंबी के रस को

पीवै व कोशकार के रस को पीवै इन्हों से वमन होय शूलजावै॥ गुडादिचूर्ण॥ गुड़ तिल अदरक इन्होंका मोदक बनाय खाने से व हींग हरड़ै वच वायविड़ंग इन्होंका चूर्ण गरमपानी में खानेसे आनाहशूल हृद्रोग हेजा गुल्म वायु इन्होंको हरै॥ सामुद्रादिचूर्ण॥सांभरनोन सेंधानोन यवाखार सुहागाखार कालानोन् रुमस्यामका नोन मनियारीनोन जमालगोटा की जड़ लोहभस्म कीटभस्म निशोथ जमीकन्द दही गोमूत्र दूध इन्हों को मन्दाग्नि से पकाय शक्ति प्रमाण चूर्ण गरमपानी के संग खावै पीछे जीर्ण भोजन हुये वादि घृतमें भुनामांस दही इन्होंको खावै यह नाभिशूल हृदयशूल गुल्म तिल्ली शूल विद्रधी अष्ठीला कफवात,अन्नद्रव जरत्पित्तअजीर्ण संग्रहणी इन्हों में उपजे शूल व सव शूल इन्होंको हरै इसके समान शूल नाशक औषध नहीं है॥ इन्द्रवारुण्यादिचूर्ण॥ गड़ूभाकी जड़में शुंठि मिरच पीपल इन्होंका चूर्ण मिलाय घोड़ा के व नरके मूत्रके संग खानेसे असाध्यशूलजावै॥ एरंडादिभस्मयोग॥ एरंडकी जड़ चीता शंख सांठी गोखुरू ये समानभाग लेय संपुट में घालि पकाय गरमपानी के संग खानेसेशूलजावै॥ पिप्पल्यादियोग॥ पीपल शुंठि घृत ये चौंसठ २ तोलेदूध २५६ तोले इन्हों को पकाय घृत के खानेसे परिणामशूल जावै॥ त्रिपुरभैरवरस॥ पारा २ भाग सोना १ भाग इन्हों की कजलीकरि तांबाके पत्रे १२ भाग लेय इन पत्रोंपर कजली लेपकरि नीचे ऊपर गन्धकका चूर्णचार२ तोलेधरि वीचमें पत्रेधरि और हिरणके सींगकाचूर्ण मिलाय चारोंतरफपीछे ब्राह्मी के रससे सिंचन करि बरतनमें घालि १ दिन पकाय पीछे उड़दके समान रसको शहद घृतमें मिलाय खानेसे परिणाम शूल जावै और इसको अरंडीतेल त्रिकुटा-चूर्णके संग खावैं तो सबशूल नाश होवै॥ शूलदावानलरस॥ पारा ४ तोला गन्धक ४ तोला मीठातेलिया ४ तोला मिरच शुंठि पीपल हींग कालानोन ये आठ २ तोले सांभरनोन ३२ तोले अमलीखार ३२ तोले शंखखार ३२ तोले पहिले शंखको नींबूके रसमें ७ बार बुझाय बरते पीछे इनसबों को नींबू के रसमें १ दिन तक खरलकरि बेर समान गोली बनाय

खानेसे सबशूल अजीर्ण पेटरोग असाध्य शूलरोग इन्हों को नाश करै॥ परिणामशूलमेंमंडूर॥ लोहकीट ३२ तोले गोमूत्र २५६ तोले के बीच पकाय खाने से जल्दी परिणाशूल जावै॥ तारमंडूर॥ बाय-बिड़ंग चीता चाव त्रिफला त्रिकुटा ये समभागलेय इन सबोंके स-मान लोहकीटी की भस्म लेय और सबों से दूना गोमूत्र गोमूत्र से दूना गुड़ इनसबों को मंदाग्निपै पकाय गोलाहो तब उतार चीकने बरतनमें घालि रक्खै पीछे ८ माशे भोजनके आदि मध्य अन्त में खानेसे दारुणपरिणामशूल कामला पांडुरोग सोजा मेदरोग वात-रोग बवासीर ये जावैं यह शूल रोगियों पर कृपाकरि तारवैद्यने प्रकट किया है॥ भीममंडूर॥ यवाखार पीपली शुंठि मिरच पीपला-मूल चीता ये चार२ तोले लेय कीटी भस्म ६४ तोले लेय लोहा के पात्रमें ५९२ तोले गोमूत्र घालि पकावै जब कड़छीके चिपकनेलगै तब उतारै पीछे एक २ तोलाकी गोली बनाय ७ रात्रि भोजन के आदि मध्य अन्तमें खानेसे परिणामशूल जावै॥ लोहगूगल॥ त्रिफ-ला नागरमोथा त्रिकुटा बायबिड़ंग पुष्करमूल बच चीता मुलहठी ये चार २ तोले लेय चूर्णकरै लोहभस्म ३२ तोले गूगल ३२ तोले इन्हों को घृतमें मिलाय १ तोले की गोली बनाय खावै ऊपर गरम पानी पीवै यह परिणामशूल पुराने अन्नसे उपजा पांडु कामला हलीमक इन्होंको नाशै॥ नारिकेलक्षार॥ रस सहित नारियल को लेय तिसमें नोनभरि कपड़ा मट्टीलगाय सुखाय गोसोंकी अग्निमें जलाय पीछे बारीक चूर्णकरि पीपलीके चूर्णके संग खानेसे परिणाम शूल बायुशूल पित्तशूल कफशूल इन्होंको शांतकरै॥ पथ्यादिलोह॥ हरड़ै शुंठि इन्होंका चूर्ण लोहभस्म इन्हों को शहद घृतमें मिलाय खानेसे सन्निपातका परिणामशूल शांत होवै॥ लोहादिलेह॥ लोह १ भाग त्रिफला ३ भाग गुड़ ८ भाग गोमूत्र ३२ भाग इन्हों को गुड़की पातसरीखी पांतिबनाय शक्ति माफिक खानेसे क्षय पका-हुआशूल शांतहोवै॥ कृष्णादिलोह॥ पीपली हरड़ै लोहभस्म इन्हों का चूर्ण शहद घृतमें मिलाय खानेसे परिणामशूल तत्काल जावै॥ दूसराकृष्णादिलोह॥ पीपल हरड़ै लोहभस्म ये समभागलेय गुड़के

संग खाने से परिणाम शूल मंदाग्नि पेटरोग इन्हों को नाशै ॥ शंबु-कादिगुटी ॥ शंखकी भस्म मिरच पांचोंनोन ये समभाग लेय कलं-बुक के रस में गोली बनाय प्रभात में अग्निवल देखि खाने से परिणामशूल जावे ॥ चतुस्समलोह गन्धक ॥ तांबाभस्म पाराभस्म लोहभस्म ये सब चार २ तोले लेय ४८ तोला घृत दूध ४०० तोला इन्होंको मिलाय पकाय पीछे बायविड़ंग त्रिफला चीता त्रिकुटा इन्होंका चूर्ण चार २ तोले लेय पूर्वोक्त में मिलाय सुन्दर वर्त्तन में घालि रक्खै अपने को शुभदायक मुहूर्त्त में सूर्य्य गुरु की पूजाकरि घृत शहद में मिलाय १ उड़द प्रमाण रोज बढ़ता हुआखावै ८ उड़द प्रमाण तक अन्न पान दूध व नारियलके रसके संग खावै पुराने चावल पुरानी मूंग मिश्री मांसरस अबिरुद्धमांस लहसुन इन्होंको खावै यह हृदयशूल पशलीशूल आमवात कटिग्रह गुल्म शूल यकृत तिल्ली मन्दाग्नि क्षय कुष्ठ श्वास खांसी बिचर्चिका पथरी मूत्रकृच्छ्र इन्होंको शांतकरै॥ विडंगादिमोदक॥ बायविड़ंग चा-वल त्रिकुटा निशोथ जमालगोटा की जड़ चीता इन्हों के चूर्ण में गुड़ मिलाय गोली बनाय प्रभात में गरम पानी के संग खाने से यह सन्निपातशूल परिणामशूल को नाशै और जठराग्निको बढ़ावै॥ तिलादिबटी ॥ तिल शुंठि हरड़ै शंखभस्म ये समभाग लेय २ भाग गुड़में मिलाय १ तोला की गोली बनाय प्रभातमें ठंढेपानी के संग खावै तो शूल शांतहोवै इसपै दूध चावल भोजन करै और इसको सायंकाल में खानेसे पुरानापरिणामशूल शांत होवै ॥ खंडामलकरस॥ कोहलाको बारीक कतरि बस्त्रमें घालि निचोड़ि २०० तोला भर लेय घृतमें पकावै पीछे इसमें आमका रस ३२ तोले खांड़३२तोले कोहलाकारस ६४ तोले इन्हों को मिलाय पकावै जब कड़छी के चिपने लगै तब उतारै पीछे पीपल ८ तोले जीरा ८ तोले शुंठि ८ तोले मिरच ४ तोले तालीसपत्र धनियां दालचीनी तमालपत्र इलायची नागकेसर नागरमोथा ये सब एक २ तोला लेय शहद ३२ तोले इनसबों को मिलाय बर्त्तनमें घालिरक्खै पीछे इस को खाने से सन्निपात का परिणाम शूल छर्दि आम्ल पित्त मूर्च्छा

खांसी श्वासअरुचि हृदय शूल रक्त पित्त ये शांतहोवैं ॥ जीर्णशूलपै गुड़ ॥ ऊंटकटारि सहोंजनाकी जड़ सफेदऊंगा सेंधानोन थे सम भाग लेय दुगुने गुड़में मिलाय खानेसे अजीर्ण शूल दूर होवे ॥ शंबूकभस्मयोग ॥ क्षुद्रशंख की भस्म गरम पानी के संग लेने से परिणाम शूल नाश होवै जैसे विष्णु से राक्षसादि ॥ शूलमें योग ॥ भूमिबड़की जड़ थोड़े गरमपानी के सङ्ग खाने से व कांजी में नोन मिलाय पीने से व घृतमें सेंधानोन मिलायपीनेसे व काला नोन गरम पानीकेसङ्ग खानेसे नयाशूल शांतहोवै ॥ मदनादिलेप ॥ मैनफल कुटकी इन्होंको पानीमें पीसि थोड़ा गरमकरि नाभि ऊपर लेप करनेसे शूल शांत होवै ॥ रसादिलेप ॥ पारागंधक मीठातेलिया तांबाभस्म सेंधानोन सुहागा खार फटकरी मिरच शीशा भस्म हरताल मैनशिल जमालगोटा गूगल तूतिया नौसादर ये समभाग लेय कांजीमें खरलकरि पेट ऊपरलेप करने से जल्दी शूलदूरहोवै॥ शतपुष्पादिलेप ॥ सौंफ देवदारु आकदूध कूट हींग सेंधानोन इन्हों को पानी में पीसि पेट ऊपर लेप करने से पेटशूल कटिशूल संधि शूल इन्हों को तीन दिन में नाश करै ॥ कुबेराक्षयोग ॥ अकेलासागरगोटा ३०० शूलोंको नाशै और इसमें लहसुन हींग सेंधानोन इन्होंको मिलाय वरते तो अनन्तशूलोंकोनाशै ॥क्षारयोग ॥ बांझककोड़ी कलहारी ये समभागलेय सौंफ २ भागलेय इन्होंकाचूर्णकरि तीन दिनतक नींबूके रसमें भावना देय संपुटमें धरि गजपुट में पकाय काढ़ि इसखारको मिरच घृतके सङ्ग खाने से १ तोला रोज यहजल्दी शूलकोशांतकरै ॥ खण्डपिप्पली॥ पीपलीकाचूर्ण १६ तोला घृत २४ तोला मिश्री ६४ तोला शतावरि ३२ तोला दूध १६० तोला इन्होंको पकाय लेह बनाय ठण्ढा होने पर दालचीनी इलायची तमालपत्र नागरमोथा धनियांशुंठि जटामासी स्याहजीराजीरा हरड़ै आमला ये बारह तोले लेय पीछे मिरच ६ तोले खैरसार ६ तोले शहद ६ तोले हरड़े ६ तोले बहेड़ा ६ तोले आमला ६ तोले इन्होंका चूर्ण मिलाय अग्निबल बिचारि खानेसे शूल अरुचि हत्रास छर्दि आम्लपित्त इन्हों को दूरकरै और अग्नि को बढ़ावै॥

मातुलुंगादिघृत ॥ घृत १ भाग बिजोंगा कारस ४ भाग दही १ भाग शूकामूला बेरीकी छाल बिजोराकीछाल इन्होंका काढ़ा १ भाग अनारकारस १ भाग बायविडंग सेंधानोन सुहागाखार शुंठि मिरच पिपली चाव चीता अजमान पाढ़ा मूला इन्होंका चूर्ण १ तोला पीछे इनसबोंके कल्कमें घृतको सिद्धकरि वर्त्तनेसे हृदयशूल पशलीशूल कूखिशूल श्वास खांसी हिचकी वर्ध्म गुल्म प्रमेह ववासीर वातव्याधि सामान्य शूल इन्हों को दूरकरै ॥ तैल ॥ नारायण तेलका बस्तिकर्म करनेसे सबशूल शांतहोवे ॥ अन्नद्रवजशूललक्षण ॥ भोजन जीर्णहुये व नहीं हुये जो शूल उपजे और भोजन करने से और लङ्घन से शांतहोवे नहीं तिसे अन्न द्रवज शूल कहिये ॥ अन्नद्रवशूललक्षण ॥ इसमें जबतक कडुआ पीला खट्टे अन्न की छर्दि न आवे तब तक स्वस्थतो होवे नहीं ॥ वमनविरेचन ॥ जरत् पित्तशूलमें पित्तपड़े तो वमन करावे और कफ पड़े तो जुलाबदेवै ॥ सामान्यचिकित्सा ॥ जरत् पित्तका और अन्नद्रवजशूलका समान इलाज है और समानही पथ्यहै और जब आमपकाशय शुद्धहोवै तब अन्नद्रवज शूल शांतहोवे ॥ माषंडरी ॥ नोन सहित उड़दके बड़े बनाय तेलमें पकाय पीछे घृतके संग खानेसे अन्नद्रवज शूलजावे ॥ धात्रीलोह ॥ आवँलाके चूर्णको बराबर मुलहठीके चूर्णके संगलोहाकी भस्मको खानेसे व शहद के संग खानेसे अन्नद्रवज शूल दूरहोवे ॥ पायस ॥ सांवा अथवा कोदू अथवा कांगणी व चावल इन्होंमें दूधकी खीर बनाय खानेसे अन्नद्रवज शूल शांत होवे ॥ अन्नईप ॥ जमीकंद कोहला मटर सत्तू व पीठी के पदार्थ इन्हों के सेवनसे अन्नद्रवजशूल शांतहोवै ॥ अन्न ॥ कुलथीकी पीठी व वचका चूर्ण व चनोंकी पीठी व कोदू व सत्तू इन्होंको व चावलको दही के सङ्ग खानेसे अन्नद्रवज शूल शांत होवै ॥ अन्न ॥ गेहूंका चून घृत गुड़ इन्हों को पकाय पीछे मिश्री मिलाय ठंढेदूधके सङ्ग ४८ दिन खाने से अन्नद्रवज शूल जावै ॥ सामान्य ॥ यह अन्नद्रवज शूल महा रोग है इसकी चिकित्सा मुश्किलसे होवै है इस वास्ते इलाजमें ज्यादह यत्नकरि आरामकरावै ॥ सामान्यचिकित्सा ॥ अन्नद्रवजमें और जरत् पित्तमें जठराग्नि

मन्द होताहै इसवास्ते अन्नपान स्वल्प करावै ॥ भक्षण ॥ मटर यवों का सत्तू गेहूँ सांवा हरीक चोला राजउड़द उड़द कुलथी कांगणी चावल दही लत्तरस दूध गौका घृत भैंसका घृत बथुआ करेला बांझककोड़ीफल मोर हिरण रोहित मच्छ कपिंजल इन्हों के मांस ये इन दोनों रोगोंको हरै है ॥ गुड़मण्डूर ॥ गुड़ आमला हरड़े ये चार २ तोले लेय लोहकीटी १२ तोले इन्हों को शहद घृतमें मिलाय १ तोलाभर रोज खानेसे भोजनकी आदि मध्य अन्त में यह अन्नद्रवजशूल जरत् पित्तशूल आम्ल पित्त इन्होंको हरैहै और परिणामशूल १ बर्षसे उपजे को हरै है ॥ शतावरीमण्डूर ॥ लोह कीटी भस्म३२तोला शतावरिरस ३२तोलादही ३२तोला दूध ३२ तोला गौकाघृत १६ तोला इन्हों को पकाय जब पिंड सरीखा हो तब उतारि भोजनके आदि में व मध्यमें खानेसे बायुशूल पित्तशूल परिणाम शूल इन्होंको यह हरै संशय नहीं ॥ शूलरोगमेंपथ्य ॥ वमनस्वेदन लङ्घन गुदाकी बर्त्ति वस्तिनींद जुलाब पाचन एकबर्षके उत्पन्न धान बाट्यमण्ड गरमदूध जङ्गली जीवोंके मांसकारस परवर सहोंजना करेला बैंगन पकाहुआ आम दाख कैथ बिजौरा चिरौंजी शालिंच शाक बथुआ समुद्रकानोन कालानोन हींग शुंठि मनियारीनोन शतावरी लहसुन लौंग अरंडीका तेल गोमूत्र गरम पानी बिजौरा कारस कूट हल्दी खारोंका चूर्ण येसब शूल रोगमें पथ्यहै॥ अपथ्य॥ बिरुद्ध अन्नपान जागना बिषम भोजन रूखी चर्परी कसायली शीतल तथा भारी बस्तु कसरत स्त्री भोग मदिरा दाल होनेवालेअन्न नोन कड़ुवी बस्तु बेग के रोग का शोक क्रोध ये सब शूल रोग में अपथ्य हैं ॥

इतिश्रीबेरीनिवासकराबिदत्तकृतनिघण्टरत्नाकरभाषायांशूलप्रकरणम्समाप्तम्॥

आनाहउदावर्त्तकर्मविपाक ॥ जो देवता ब्राह्मणों के मकानों को और तालाब कूप धर्मशाला जीवोंकीबँबई इन्होंको तोड़ फोड़डालै तिसको बायस नाम ग्रह ग्रहण करै तिसका लक्षण पेट फूल जावै उदावर्त्तज्वर अरुचि पैरोंमेंदाह ये सबहोवैं ऐसेजानो ॥ ज्योतिश्शा-

स्वाभिप्राय ॥ जिसकी जन्मपत्रीमें पापग्रहोंकेमध्यमें चन्द्रमाहो और ७ सातवें स्थानमें शनैश्चरहोवे तब श्वास क्षय बिद्रधिगुल्मतिल्ली ये सब उपजें ॥ उदावर्त्तनिदान ॥ अधोवात विष्ठा मूत्र जंभाईअश्रुपात छींक डकार वमन मैथुन भूख प्यास श्वास नींद इन तेरहों के बेग को रोके तो उदावर्त्त रोग उपजै ॥ वातनिरोधजन्यउदावर्त्त ॥ अधोवायु मूत्र मल इन्होंको रोधहोवै और पेट फूल जावै ग्लानि होवै शूल चले और पेटमें वायु के रोग उपजैं ये अधोवायु के रोकनेसे उपजे उदावर्त्त के लक्षण हैं ॥ मलनिरोधजन्यउदावर्त्त ॥ पेट में गुड़गुड़ा शब्दरहै शूल होवे पेडूमें पीड़ाहो मलउतरै नहीं डकार बहुत आवै मल मुखमें निकल आवै ये लक्षण मल रोकने के उदावर्त्तके हैं ॥ मूत्ररोकनेकेउदावर्त्तकेलक्षण ॥ पेडू और लिंगमें शूलहो मूत्रकष्ट से उतरै मस्तकमें पीड़ा होय पीड़ाही से शरीर सीधा नहीं होय पेटमें अफ़ाराहो तौ मूत्र रोकनेका उदावर्त्त जानिये ॥ जँभाई रोकने के उदावर्त्तके लक्षण ॥ जिसकाकांधा गलारुकजाय मस्तक के बिकार होयँ जंभाई बहुतहोय बायुके बिकार होय नेत्र नासिका कानपीड़ा बहुतहोय ये लक्षण होयँ तो जंभाई रोकनेके उदावर्त्त रोगजानिये॥ अथअश्रुपातरोकनेकाउदावर्त्त ॥ आनंद अथवा शोकके अश्रुपातों को रोकै तो उसका माथाभारीरहै नेत्रके रोगहोयँ पीनसहो ॥ छींकरोकनेकेउदावर्त्तकेलक्षण ॥ कंधा मुड़ैनहीं माथेमें शूलहो आधाशीशीहो सब इंद्रियां दुर्बलहोजायँ ॥ डकाररोकनेके उदावर्त्तके लक्षण ॥ कंठऔरमुख भोजनसे भरादीखे अधिकमोहशरीर में व्यथा और बायु के बहुत विकारहों पवन निकले नहीं ॥ छर्दि रोकने के उदावर्त्त के लक्षण ॥ शरीरमें खुजली और चिकदेपड़जायँ अरुचि होय मुखऊपरझाईं पड़जायँ सूजन पांडुरोग ज्वरकोढ़होयहृदय दूखे विसर्परोग होय॥ शुक्र रोकनेके उदावर्त्त के लक्षण ॥ पेडूगुदा पोतोंइंद्री इन्हों में पीड़ा और सूजनहोय मूत्ररुकजाय वीर्य्य और रुधिरइन्द्रीमेंसेगिरनेलगै पथरीका आजारहोय नेत्रका विकारहोय ॥ क्षुधारोकने के उदावर्त्त के लक्षण ॥ तंद्रा हाड़ों में फूटन बिनाश्रम के श्रमीहोय शरीर क्षीण पड़जाय दृष्टिमंद होजाय ॥ तृषारोकने के उदावर्त्त के लक्षण ॥ कंठ

मुखसूखे थोड़ा सुनेहृदयमें पीड़ाहोय व ॥ श्वास रोकने के उदावर्त्त के लक्षण ॥ दौड़नेमेंश्वासहोआवैउसको रोकनेके जिसकेयहलक्षणहोय उसके हृदादूखे मोह बहुत होय पेटमें गोलेकारोगहोय ॥ निद्रारोकनेके उदावर्त्त के लक्षण ॥ जंभाई बहुत आवै अंग में हड़ फूटन बहुत होय नेत्र और माथा बहुतभारीरहै तन्द्राहोय ॥ रुक्षादि कुपितबातज उदावर्त्त० ॥ कोष्ठमें रहै जो बायु वहरूखे कसैले कडुये भोजनसेकुपितहो जल्दी उदावर्त्तको पैदाकरैहै और मेदको ले चलनेवालीजो नसें वे अधोबायु और मलमूत्रकोउलांघिजाकरिमलको सुखादेयहै और हृदयपेडूमें शूलचलावै शरीर भारीरहै अधोबायु औरमलमूत्र अत्यन्त कष्टसे उतरै श्वासखांसी दाह पीनस मोह तृषा ज्वर बमन हिचकी मस्तकका रोगहौलदिली शुनबहरी और बातके बहुत से रोग उपजैं और तृषाकरके पीड़ित होवै शरीरक्षीण पड़जावै शूल बहुतचलै मलकी बमनकरै और अनेक प्रकारके बहुतसेरोगउपजैं और बातके कोपसे उपजे विकार पैदाहोवैं ऐसा उदावर्त्त महाअसाध्यहै इस उदावर्त्तवालारोगी निश्चयमरजावै इसमेंसंशयनहींहै॥ अधोबातज उदावर्त्त चिकित्सा ॥ इसउदावर्त्तमें स्नेह पान स्वेदन बस्तिकर्म अनुलोमन औषध ये हितहैं ॥ मलनिरोधज उदावर्त्त चिकित्सा ॥ इसमें जुलाबरूपअन्नऔषध अभ्यंगस्नान स्वेदबस्ति ये हित हैं ॥ मूत्रनिरोध उदावर्त्त चिकित्सा ॥ इस में दूधपानी मिलाय पीवै व कटैलीका स्वरस व अर्ज्जुन वृक्षकेकाढ़ा को पीनेसे यह उदावर्त्त शांतहोवै ककड़ीके बीजोंको पानीमें पीसि सेंधानोन मिलाय पीनेसे व खांड़ व ईषका रस व दूध व दाखकारसइन्होंको पीनेसेमूत्रकृच्छ्र व पथरी रोगशांतहोवै ॥ जृंभानिरोधज उदावर्त्त चिकित्सा ॥ इसमें स्नेह पान व स्वेदन करै ॥ आंशूनिरोधज व छींक निरोधजउदावर्त्तचिकित्सा ॥ बातनाशकरनेवाली क्रियाकरनेसे और नेत्रोंके पानीको ज्यादाबाहिरकाढ़नेसे और शयनकरनेसे और सुन्दर कथादिके सुननेसे आंशू निरोधका उदावर्त्तजावै और छींकरोकनेके उदावर्त्तमें तीक्ष्णपदार्थ की सुगन्ध व नस्यसूर्य्य साम्हने देखना और छींकोंका लेना स्नेहपान पसीना येसबहितहैं ॥ जृम्भाजनित्तउदावर्त्तचिकित्सा ॥ स्नेहादि

पान और स्वेदन जृम्भाके उदावर्त्तको शांत करैं और अंसमोक्षज उदावर्त्तको शयन मदिरा सुन्दरकथा इन्हींसे शांतकरै ॥ दूसराछींकजनितउदावर्त्तचिकित्सा ॥ इसमेंनासिकामें ईखकापत्तादेय छींकलेवै और कंधा ऊपरभाग मोक्षउदावर्त्त में अभ्यंग स्वेदन धूमपान ये सब करावै ॥ उद्गारछर्दि निरोधजउदावर्त्तचिकित्सा ॥ डकार रोकने के उदावर्त्त में चिकने पदार्थ को चिलमसें धरि धूमा पीवै और छर्दि जनित उदावर्त्त में वमन लङ्घन जुलाब तेलकी मालिश वास्ति की शुद्धि करनेवाले औषधों के काढ़ा में चौगुनापानी और एक गुना दूधमिलाय पीवे ॥ डकारकेउदावर्त्तपर ॥ इसमें वातनाशक घृत देवै और चिकने पदार्थोंका धूमापीवै ॥ छर्दिरोधज उदावर्त्तपर ॥ इसमें स्नेह पानकरै और भोजनकरि वमनलेवै और धूमा लङ्घन फस्त इन्हों को सेवै ॥ भूखप्यासरोकनेकेउदावर्त्तचिकित्सा ॥ भूखजनित उदावर्त्त में चिकना गरम हलका रुचिकारक थोड़ा भोजन सुगंधित फूलोंका सूँघना ये सब हितहैं और तृषाके उदावर्त्तमें शीतल क्रियाकरै और कपूरसे सुगन्धित ठण्ढापानीको थोरा २ हलवे २ पीवै ॥ श्रमनींदकाउदावर्त्तचिकित्सा ॥ श्रमश्वास के उदावर्त्तमें विश्राम और मांसरसादि सहित चावलों का भोजनकरै और नींदके उदावर्त्त में दूध मिश्री मिलाय पीवे पीछे सुन्दरशय्यापर पौढ़ि पैरोंको अच्छीतरह दबावै और रमणीक कथाको सुनै और सुखपूर्वक शयनकरै ॥ सामान्य ॥ उदावर्त्त रोगमें रूखा अन्न व पान कसरत जुलाब वस्ति शुद्धकारक औषध चौगुणापानी में दूधको पकाय पीना ये सब इलाजकरै ॥ विधारादिलेप ॥ भिदारा गोपीचन्दन करंजवा सारिवा इन्हों को गोमूत्रमें पीसिलेप करनेसे उदावर्त्त नाशहोवै ॥ रसोनादिप्राशन ॥ लहसुन मदिरा इन्हों को मिलाय प्रभातमें इच्छासे पीवै तो गुल्म उदावर्त्त शूल इन्होंको नाशकरै और दीपनहै और बल को बढ़ावैहै ॥ कदलीफलयोग ॥ धमासा के स्वरसमें केशर के काढ़ा को मिलाय पीनेसे व काकड़ीके बीजोंको पानीमेंपीसि केलाकीघड़ मिलाय खानेसे उदावर्त्त जावै ॥ पंचमूलक्षीर ॥ पंचमूलमें सिद्धदूध को व दाखके रसको पीनेसे मूत्रकृच्छ्र पथरी इन्होंको शांतकरै ॥ सुवर्चलादि

पेय॥ तिर्फलके चूर्णको मदिरामें मिलाय व गोमूत्रमें मिलाय व इलायचीके चूर्णको मदिरा व दूध में मिलाय पीने से पूर्वोक्त रोग जावै॥ धात्रीस्वरस॥ आमलाका स्वरस व काढ़ा तीनदिन पीनेसे व घोड़ाकी व गधाकीलीदकेरसको पीनेसे उदावर्त्त जावै॥ वट्यादियूप॥ पीपलीकायूष व पीपलामूल के रसमें घृत मिलाय पीनेसे उदावर्त्त व बातगुल्म शांत होवै॥ शामादिकाढ़ा॥ हल्दी जमालगोटाकी जड़ रुदती थोहर काला भिदारा गिलोय निसोत सातवीण शांखबेल कुटैली अमलतास बेलफल कपिला करंजवा गूलर इन्हों के काढ़ा व कल्कमें घृत व तेलमिलाय खानेसे उदावर्त्त पेटरोग अफारा जहरगुल्म इन्होंकोनाशै॥ नाराचचूर्ण॥ मिश्री ४ तोला निसोत १ तोला पीपली २ तोला इन्होंके चूर्ण में शहद मिलाय भोजनसे पहले १ तोला भर खानेसे दारुणमलबंधको व उदावर्त्तको हरै यह सुन्दरहै और राजाओंके योग्यहै॥ दंत्यावर्ति॥ जमालगोटाकी जड़ मैनफल पीपली मनियारीनोन कूट घरकाधूमा इन्होंको पीसि बत्तीबनाय घृत से भिगोय गुदामें चढ़ानेसे गुदाकी पीड़ा अफारा उदावर्त्त को हरै॥ हिंग्वादिचूर्ण॥ हींग १ भाग बच २ मनियारीनोन ३ शुंठि ४ जीरा ५ हरड़ें ६ पुष्करमूल ७ कूट ८ ऐसे भाग लेय चूर्ण बनाय खाने से गुल्म उदररोग अफारा हैजा इन्हों को नाशै॥ भद्रदार्वादिचूर्ण॥ देवदारु नागरमोथा मूर्वा हल्दी मुलहठी इन्होंका चूर्ण १ तोला भर खावै ऊपर तालाब के पानी को पीवै यह उदावर्त्तको नाशै॥ हरीतक्यादिचूर्ण॥ हरड़ें पीलू निसोत इन्हों का चूर्ण घृतके सङ्ग खानेसे उदावर्त्त को नाशै॥ गुड़ाष्टक॥ त्रिकुटा पीपलामूल निसोत जमालगोटाकी जड़ चीता इन्हों के चूर्णको गुड़ में मिलाय प्रभात में खाने से बल वर्ण अग्नि इन्होंको बढ़ावै और उदावर्त्त तिल्ली गुल्म सोजापांडु इन्हों को नाशै॥ शुष्कमूलादि घृत॥ सूखामूला अदरख सांठी पंचमूल अमलतास इन्होंके काढ़ामें घृतको सिद्धकरि पीनेसे जल्दी उदावर्त्त शांत होवै॥ त्रिकुटादिबर्त्ति॥ त्रिकुटा सेंधानोन सिरसम घरकाधूमा कूट मैनफल इन्होंके चूर्णको शहदमें व गुड़में पकाय अँगूठा समान बत्तीबनाय घृतमें भिगोय गुदामें चढ़ानेसे

अफारा उदावर्त्त पेटरोग गुल्म इन्होंको शांतकरे ॥ मदनफलादिवर्ति ॥ मैनफल पीपली कूट बच सफेद सिरसम इन्होंको गुड़ दूधमें पीसि वत्ती बनाय गुदामें चढ़ानेसे उदावर्त्त नाशहोवे ॥ हिंग्वादिवर्ति ॥ हींग शहद सेंधानोन इन्होंकी वत्तीबनाय घृतमें भिगोय गुदामें चढ़ानेसे उदावर्त्त नाशहोवे ॥ उदावर्त्तमें पथ्य ॥ हलका भोजन और पाचन ये उदावर्त्तमेंहितहैं ॥ अपथ्य ॥ विष्टम्भकारक और भारी विरुद्ध कषायला इन्हों को उदावर्त्तमें निरंतर वर्जिदेवे ॥ आनाहनिदान ॥ पेट में आमके व मलके बढ़नेसे अथवा अधोवायुके रोकनेसे अथवा शरीर में दुष्ट पवनके रोकनेसे व पेटमें संचित आमवमल कुपित वायुसे वारंवार बंधकरि चलता हुआ अपने स्थान में नहीं आयसकै तिसको आनाहनाम अफारा रोग कहिये ॥ आमजन्य आनाह ॥ इसमें तृषा पीनस शिरके संपूर्ण विकार दाह होवै और आमाशयमें शूलहोवै और शरीर भारी और हृदयका स्तंभहो और डकारआवै नहीं और कटि पीठ मलमूत्र इन्होंका स्तंभहो और शूल मूर्च्छाहो मलयुक्त छर्दिआवै ॥पक्वाशयजअफारा॥ पक्वाशयमें अफाराहोतो श्वास और अलसोक्त लक्षण उपजैं ॥ उदावर्त्त असाध्यलक्षण ॥ तृषासे पीड़ित और क्लेशपावना क्षीण शूलयुक्त और मलकी छर्दि करनेवाला ऐसे उदावर्त्त रोगीको वैद्य त्याग देवे ॥ शास्त्रार्थ ॥ वायुसे उपजे अफारामें स्नेहन स्वेदन निरूहण वस्ति ये हितहैं और मलसे उपजे अफारामें अफारा की नाशक क्रिया करै और अफारामें यथायोग्य पथ्यापथ्य को सेवै ॥ चिकित्सापरिभाषा ॥ उदावर्त्त व अफारामें कार्य कारण समान होनेसे समानही चिकित्साकरै ॥ आनाहअभ्यंग ॥पानीमें स्नानमदिरा मुरगाका मांस चावलोंका पेय निरूहवस्ति मैथुन इन्होंकोसेवै और भूखबढ़ानेवाला हितचिकना बकराकामांसयुत भोजन ये अफारामें हितहैं और अफारामें प्यासबढ़े तो मन्थ व ठएढी यवागूको पीवे ॥ हिंग्वादिचूर्ण ॥ हींग १ बच २ कूट ५ साजीखार ७ बायबिड़ंग ६ ऐसे प्रमाणसे इन्होंको लेय चूर्णकरि गरमपानी के सङ्ग खानेसे अफारा हैजा हृद्रोग गुल्म अर्धांगबायु इन्होंको नाशकरै ॥ फलचूर्ण ॥ रेचन करनेवालेफल व जड़ हींग आककीजड़ दशमूल त्रिफला थोहरजड़

चीता सांठी ये समभागलेय और पांचोंनोन सबोंके बराबर मिलाय और बराबरका घृत मिलाय धानकी खीलोंका चूर्ण और नोन मिलाय शङ्खमें भरि संधियोंको खामि लिपि गजपुटमें पकाय शीतल होनेपर काढ़ि अन्नकेसङ्ग व पानीके सङ्ग खाने से अफाराकी पीड़ा को हरै ॥ तुंबरुचूर्ण ॥ धनियां हरड़ैं हींग पुष्करमूल सेंधानोन मनियारीनोन कालानोन अजमान जवाखार बायबिड़ंग ये समभागलेय और निसोत तीनभाग लेय इन्होंका चूर्णकरि गरमपानीकेसङ्ग खाने से अफारा आठतरहके पेटरोग बिड्बंध इन्होंको नाशै॥ बचादिचूर्ण ॥ बच हरड़ै चीता जवाखार पिपली अतीस कूट इन्होंका चूर्णकरि गरमपानीके सङ्ग खानेसे व जलयुत उत्तमभोजनके खानेसे अफारा मूढ़बात इन्होंको नाशै ॥ त्रिवृतादिगुटी ॥ निसोत पिपली हरड़ैं ये क्रम से २।४।५ भागलेय चूर्णकरि गुड़में मिलाय गोली बनाय खानेसे दारुण अफारा शांतहोवै ॥ स्नुह्यादिवटी ॥ निसोत हरड़ैं पिपली इन्हों को थोहरके दूधमें भिगोय पीछे गोली बनाय गोमूत्रके सङ्ग खानेसे अफाराको नाश करै ॥ दारुषट्कादिलेप ॥ देवदारु आदि छः औषधों को कांजी में पीसि लेप करने से अफारा नाश होवै यह पूर्व वैद्यों ने कहाहै ॥ दारुषट्कादियोग ॥ देवदारु बच कूट शतावरी हींग सेंधानोन इन्होंको कांजीमें पीसि लेप करनेसे अफाराको नाशै ॥ स्थिरादिघृत ॥ शालपर्ण्यादिगण सांठी अमलतास चिरायता करंजवा इन्होंका काढ़ा ८ तोले लेय और केलाका रस ६४ तोला घृत ६४ इन्होंको मिलाय घृतको सिद्धकरि बरतनेसे कुपित बायु शांतहोवै ॥ उदावर्त्त और अफारामें पथ्य ॥ स्नेहन स्वेदन विरेचन वस्तिकर्म फलवर्तितेल लगाना जो जिनसे बिष्ठा मूत्र और बात उत्पन्न होताहै ऐसी सब वस्तु ग्राम्यजल अनूप देशके रस अरण्डीका तेल बारुणी मदिरा कोमल मूली अमलतास निसोत थोहरकेपत्ते अदरख बिजौरा जवाखार हरड़ैं लौंग हींग दाख गोमूत्र नोन अधोबात के रोकनेसे उत्पन्नमें स्नेहन स्वेदनवर्ति वस्तिकर्म बातहरनेवाले अन्न पान और बिष्ठाके रोकनेसे उत्पन्नमें वस्तिकर्म स्वेदन तेललगाना गोतामारके न्हाना फलवर्ति विष्ठाके फोड़नेवाले अन्नपान और मूत्र

वेगके उत्पन्न में तीनप्रकारका वस्तिकर्म स्वेदन तेललगाना गोता मारके न्हाना घीका निचोड़ना और डकार के रोकने के उत्पन्न में हिचकीके दूरकरनेवाली विधिकरे और खांसी के रोकने से उत्पन्न में खांसीकी नाशक विधिकरनी चाहिये छींकके रोकनेसे उत्पन्न में स्वेदन धूमपान भोजनके पीछे घृतका पीना और छींकका प्रवृत्त करना नासलेना तेललगाना प्यासके रोकनेसे उत्पन्नमें शीतलअन्न पान जँभाईके रोकनेसे उत्पन्नमें वातनाशक विधिकरिये नींदकेरोकनेसे उत्पन्नमें दूध सोना शरीरका दावना भूखके रोकनेसे उत्पन्न में चिकना थोड़ा हलका भोजन आंशूके रोकनेसे उत्पन्न में आंशूका निकालना सोना मदिरा प्यारी कहानी श्रमके श्वाससे उत्पन्न में विश्राम और वातकी नाशक वस्तुवीर्यके रोकनेसे उत्पन्नमें वस्तिकर्म तेललगाना गोतामारके न्हाना मुरगा सांठीचावल मदिरा दूध और जवानीसे गर्वित स्त्री वमनसे उत्पन्नमें लङ्घन धूमाखाये हुये का वमन श्रमसूखे अन्नपान विरेचन फस्त खुलाना ये पथ्य महर्षियोंने उदावर्त्त में कहेहैं ॥ अपथ्य ॥ वमन वेगका रोकना फली से उत्पन्नअन्न कोदो नारीशाक कमलकीजड़ जामुनिकाफल ककड़ी तिलकी खल सबप्रकारके आंब करेला टींट चूनकीबनीवस्तु विष्टंभी विरुद्ध कषायली तथा भारीवस्तु इनसबोंको उदावर्त्तमें त्यागै और सबपाचनवस्तु और लङ्घन उदावर्त्त में हित है इन्हींको अफारामें भी यथा योग्य बुद्धिमान योजितकरे जो अपथ्य पहले उदावर्त्तवाले को कहे हैं उन सबोंको अफाराका रोगीत्यागदेवै ॥

इतिश्रीबेरीनिवासकवैद्यरविदत्तकृतनिघण्टरत्नाकरभाषायां उदावर्त्तआनाहप्रकरणम् ॥

गुल्मरोग कर्म विपाक ॥ जो गुरुसे जांचज्ञानवृत्ति रक्खै वह गुल्म रोगीहोवै इसकी शांतिवास्ते १ महीनातक पयोवृत्तकोसेवै ॥ गुल्म निदान ॥ मिथ्या आहार और मिथ्याविहार करने से बात पित्त कफ दुष्टहो पुरुष या स्त्रीके पेटसेलेकै पेडूतक गोलेकेसदृशएकगांठको उत्पन्नकरैहै वह बात १ पित्त २ कफ ३ सन्निपात ४ रुधिर ५ इनभेदोंसे

पांच प्रकारकाहै कोष्टकेविषे जिसस्थानमें गुल्म होताहै वह स्थान लिखतेहैं दोनों पसलीमें हृदयमें नाभिमेंपेडूमें ॥ गुल्मकारूप॥ हृदय और पेडूके बीचमें गांठहो और फिरै वा न फिरै गोलाहोय बढ़जावै उसको गुल्म कहतेहैं ॥ संप्राप्ति ॥ यहस्त्री पुरुषोंके पांचप्रकारकाही होहै ॥ पूर्वरूप ॥ डकार बहुतआवै मलवद्धताहो और अन्नमेंबासना रहैनहीं और बचनको सहैनहीं आंतबोलै पेट में गुड़गुड़ा शब्दहो और अफाराहोवे पेट मोटा लम्बाहोजावे गुल्मका पूर्वरूपके लक्षण है ॥ गुल्मका साधारणरूप ॥ अरुचिहो और मलमूत्र दुहरा उतरै बायुसे आंतबोलै पेटमें अफाराहो बायुकी ऊर्ध्वगतिहो यह लक्षण सब गुल्मरोगोंमें होहै ॥ निदान पूर्वबातगुल्म ॥ रूखे अन्नों को खाने से विषमाशन से मूत्र रोकने से शोच करनेसे चोट लगनेसे मलके क्षीण होने से लंघन करने से विरुद्ध चेष्टासे बलवानके साथ युद्ध करनेसे बायुका गोला उत्पन्न होहै और जो गोलेके स्थानमें पीड़ा घटै बढ़ै और अधोबायुकी प्रवृत्ति अच्छी तरहसे होवे नहीं और मल उतरै नहीं मुख और गला सूखै शरीरकी कांति कालीहोजाय शीत ज्वर होवै हृदय कुक्षि पसली शिर इन सबों में पीड़ाहो और हृदयमें भोजन पचे पीछे पीड़ा अधिक हो और भोजन करे पीछे थोड़ी हो और कसैले कडुये रससे पीड़ा बढ़ै ये लक्षणहों तो बात का गुल्म जानिये ॥ बातगुल्मशास्त्रार्थ ॥ इस रोग वाले को पहले घृत पानादि से स्निग्ध करि पीछे स्वेदन कराय पीछे स्निग्ध औ-षधोंसे रेचन कराय पीछे निरूह वस्ति अनुवासन वस्ति को वैद्य देवै पीछे औषधोंकोसेवै ॥ सामान्य चिकित्सा ॥ स्नेहन स्वेदन जुलाब इत्यादि क्रियासे गुल्मको शिथिल करै ऐसे गुल्मका इलाज करै ॥ सामान्यउपचार ॥ बात गोला की नाशक चिकित्सा करै जो कफ कुपितहो तो लेखन औषध और चूर्णादिक कफनाशक औषधकरै और जो पित्त प्रकुपित हो तो जुलाबदेवै और जो दोषनाशक औ षधोंसे आराम न हो तो गुल्म में शिरामोक्ष करावे ॥ मातुलिंगादि योग ॥ बिजोराकारस हींग अनारकीछाल मनियारीनोन सेंधानोन इन्होंका चूर्णकरि मदिराके संग पीनेसे बायुका गोलाजावै ॥ शून्या-

योग ॥ शुंठि २ तोला बिजौरा ८ तोला तिल ४तोला गुड़ ४तोला इन्होंका चूर्णकरि गरम दूधके संग खानेसे वातगुल्म उदावर्त्त योनि शूल इन्होंको नाशै ॥ केतकीक्षार योग ॥ सार्जाखार कूट केतकीखार ये समभाग लेय चूर्णकरि मीठातेल के संग खानेसे दारुण बात गुल्मकोहरै ॥ वारुणीमंडयोग ॥ एरंडतेल को वारुणीमदिरा के संग पीनेसे व अरंडीतेलको दूधकेसंग पीनेसे बातगुल्म शांतहोवै॥ वात गुल्महपुष्पादिघृत ॥ शेरणी जीरा स्याहजीरा पीपलामूल चीता बिदारीकंद बड़बेरीछाल इन्होंके रसमें घृतको पकाय खाने से बात गुल्म अरुचि श्वास शूल पेटका अफारा ज्वर बवासीर संग्रहणी योनिदोष इन्होंको शांतकरै॥ चित्रकादिघृत॥ चीता शुंठि मिरच पीपल सेंधानोन विदारीकंद चाव अनारकीछाल अजमाण पीपलामूल जीरा शेरणी धनियां ये समभाग लेय काढ़ाकरि पीछे घृत दही कांजी बेरी मूला इन्होंके रस मिलाय पीछे इन्हों में घृतको सिद्धकरिखाने से वातगुल्म दुर्बलपनापेटकागुड़ २ शब्द इन्होंको नाशै ॥ हिंग्वादि घृत ॥ हींग कालानोन शुंठि मिरच पीपल सेंधानोन अनारकीछाल पोखरमूल जीरा धनियां आम्लवेतस चीता असगंध वच निर्गुडी कचूर ये प्रत्येक तोले २ भरलेय इन्होंकाकाढ़ा ६४ तोलेभरमेंघृतको पकाय ठंढा होनेपर खानेसे २ तोलेभर यह वातगुल्म शूल अफारा इन्होंकोनाशै॥ त्र्यूपणादिघृत ॥शुंठि मिरच पीपलहरड़ बहेड़ा आमला धनियां वायविड़ंग चाव चीता इन्होंके कल्कमें घृत दूध मिलाय घृतको सिद्धकरि वरतनेसे बातगुल्म नाशहोवै ॥ तेलअमलतासका ॥ तेल आधातोलाभर पीने से गुल्मकोहरै ॥ कुष्ठादितेल ॥ सपेदकूट १भाग हींग१ भाग जवाखार १ तोले त्रिफलाचूर्ण १० भाग इन्हों का गो मूत्रमें कल्क बनाय तिसमें अमलतासका तेल और थोहर का दूध मिलाय पकायतेलको सिद्धकरि १ तोले रोजखानेसे दस्त लगै पीछे तक्र चावलोंका पथ्यकरै और इसतेलको चारदिनके अंत में देवै हमेशा नहीं यह गुल्म जलोदर तिल्ली शूल सोजा इन्हों को नाशकरैहै ॥ विडंगादिकल्क ॥ वायबिड़ंग अनारकीछाल हींग सेंधा-नोन इलायची कालानोन इन्होंको बिजौराके रसमें पीसि कल्ककरि

१ तोले मदिराके सङ्गखानेसे बातगुल्म नाशहोवै अथवा प्राणनाथ रसको देनेसे बात गुल्म जावै॥ गुग्गुलयोग॥ गूगुलको गोमूत्रके सङ्ग पीनेसे बातगुल्म व शूलनाशहोवै॥ कुलित्थादिक्काथ॥ कुलथी कपूर कचरी चावल दूध तक्र मस्तु अरणी हरड़ै धनियां बाला इन्होंके काढ़ाके पीनेसे पूर्वोक्तरोग नाशहोवै॥ हिंग्वादिचूर्ण॥ हींग सेंधानोन अमिली राई शुंठि ये समभागलेय चूर्णकरि इसहिंगुपंचकको खाने से बातगुल्म नाशहोवै॥ बातगुल्ममेंबिरेचन॥ अरंडी के तेलमें दूध और छोटी हरड़ैका चूर्ण मिलाय पानकरि जुलाबलेवै और तैला-दिक चिकना पदार्थ से पसीना लेवै यह बात गुल्मको नाश करै॥ शिखिबाड़वरस॥ पाराभस्म तांबाभस्म अभ्रक भस्म गन्धक सोना-माखी जवाखार इन्होंको चीताके रसमें १ दिन खरलकरि ३ रत्ती प्रमाण खावै नागरपानके रसकेसङ्ग यह बात गुल्मकोहरै॥ पथ्य॥ तीतर मोर मुरगा क्रौंच बतक इन्होंके मांसका रस घृत चावल म-दिरा सुरामण्ड ये सब बात गुल्ममें हित हैं॥ पित्तगुल्मलक्षण॥ क-डुआ तीखा खट्टा गरम इनरसोंके सेवनेसे क्रोधके करने और मद्य के पीनेसे अग्नि और धूपके सेवनेसे आमके बढ़नेसे चोटके लगने से रुधिरके बिगड़नेसे इनबस्तुओंसे पित्तका कोप होताहै तब ज्वर होवै तृषालगे शरीरमें पीड़ा शूल दाह ब्रण गोलेके हाथ लगनेमें अधिक पीड़ा और भोजनके पचनेके समयमें बहुत पसीना आवै ये लक्षण पित्तका गोलाके हैं॥ द्राक्षादिचूर्ण॥ पित्त गुल्ममें दाखोंके रसमें छोटी हरड़ों का चूर्ण और गुड़मिलाय खावै व खांड़ सहित त्रिफलाके चूर्णको खावै॥ पित्तगुल्ममेंबिरेचन॥ त्रिफला के काढ़ा में निसोत काचूर्ण मिलाय खानेसे अथवा कपिलाको मिश्रीमें व शहद में मिलाय खानेसे व छोटी हरड़ोंको मुनक्का दाखोंके सङ्ग खानेसे व गुड़के सङ्ग खानेसे पित्तगुल्म जावै॥ गुल्ममेंपथ्य॥ चावल गौ व बकरीकादूध परवल घृत दाख फालसा आमला खजूर अनार खांड़ बलियार का काढ़ा ये पित्तके गुल्ममें पथ्य हैं॥ द्राक्षादिघृत॥ दाख मुलहठी खजूर बिदारीकंद शतावरी फालसा त्रिफला ये चार २ तोले लेय पानी २५६ तोले में काढ़ा बनाय चतुर्थांश बाकी रक्खै

पीछे आमलाकारस घृत [illegible] हरड़ोंका कल्क ये अलग २ काढ़ामें चतुर्थांश मिलावै पीछे इन्होंमें घृतको सिद्धकरि खांड़ शहद चतुर्थांश मिलाय खाने से पित्तगुल्म व सर्वगुल्म शांत होवै ॥ [illegible] ॥ आमला के रसमें चतुर्थांश घृतको पकाय खाने से व हरड़ोंके काढ़ा में घृत को पकाय खाने से पित्त गुल्म जावै ॥ त्रायमाणघृत ॥ बनफसा १६ तोलेका पानी १६० तोलेमें काढ़ा बनाय चतुर्थांश बाकीरहै तब कपड़ामेंछानि पीछे छोटीहरड़ें कुटकी नागरमोथा बनफसा धमासा दाख चिरायता कोरफड़ गिलोय चंदन कमल ये सब एक एक तोला लेय और आमलाका रस ३२ तोला दूध ३२ तोला घृत ३२ तोला इन्हों के काढ़ामें मिलाय घृतको सिद्ध करि खाने से पित्तगुल्म रक्तगुल्म विसर्प पित्तज्वर हृद्रोग कामला कुष्ठ इन्होंको नाशै ॥ कफगुल्म निदान व लक्षण ॥ ठंढी भारी चिकनी वस्तुओं के खाने से और बैठे रहनेसे दिनमें सोनेसे कफका गोला उत्पन्न होहै और सब दोष कुपित्त हो गोला उत्पन्न हो तिसे सन्निपात का गोला जानिये। और जिसमें अल्प शीतज्वरहो अंगोंमें पीड़ाहो लालपड़ै खांसी अरुचिहो औरशरीर भारीहो ठंढकलगै अल्प पीड़ा होवै और गोला कठिन हो ये लक्षण कफके गोला के हैं ॥ सामान्य चिकित्सा ॥ कफगोलाका और बातगोलाका समान इलाजहै और कफनाशक औषधोंसे भी कफगोलाको नाशै ॥ यवानीचूर्ण ॥ अजमान मनियारीनोन इन्होंको तक्रमें मिलाय पीनेसे कफगुल्म जावै और मलमूत्रको अनुलोम न होय मलमूत्र साफहोवै ॥ हिंग्वादिचूर्ण॥ हींग पिपलामूल धनियां जीरा वच चाव चीता पाढ़ा कचूर अमली मनियारीनोन कालानोन सेंधानोन जवाखार सुहागाखार अनार छोटी हरड़ै पुष्करमूल आम्लवेतस शेरणी स्याहजीरा ये समभाग लेय चूर्णकरि अदरखके रस में व बिजौराके रस में भिगोय गरम पानी के संग खाने से गुल्म आध्मान बवासीर संग्रहणी उदावर्त प्रत्याध्मान पेटरोग पथरीतूनी प्रतितूनी अरुचि ऊरुस्तंभ मतिभ्रंश वधिरपना अष्ठीला प्रत्यष्ठीला हृदय कूखि आंडसंधि कमर पेट वस्ति स्तन कांधा पसली इन्हों का शूल बात कफ संबंधी शूल इन्हों को

नाशै यहअश्विनीकुमारोंने कहाहै ॥ पिप्पल्यादिघृत ॥ पिपली पिपला-
मूल चाव चीता शुंठि ये चार२ तोले लेय इन्हों के काढ़ा में जवा-
खार ४तोला घृत ६४तोला दूध १सेर मिलाय घृत को सिद्ध करि
बरतनेसे कफका गुल्म संग्रहणी पांडुरोग तिल्ली खांसी ज्वर इन्हों
को नाशै ॥ कफगुल्मपथ्य ॥ कुलथी सांठी चावल यव बन के पशुओं
का मांस रस मदिरा तेल घृत बतक ये पदार्थ कफगुल्ममें हितहैं ॥
तिलादिलेप व सेंक ॥ तिल एरंडजड़ अलसीकेबीज सिरसम इन्होंको
पानीमें पीसि पेट ऊपर लेपकरने से और आकके पत्तोंसे सेंकनेसे
कफ गोला शांतहो ॥ सेंक ॥ अरंडकेपत्तोंको व आककेपत्तों को गरम
करि बारंबार सेंक करनेसे कफ गोला शांत होवै ॥ दशमूलादितैल ॥
दशमूल पिपली दाख हरड़े आमला ये चार२ तोले लेय काढ़ा ब-
नाय एरंडतेल ६४तोले मिलाय गौ का दूध ३८४तोले मिलाय प-
काय तेलको बरतनेसे कफका गोलाजावै ॥ त्रिवृतादिसर्पिः ॥ निसोत
हरड़े बहेड़ा आमला जमालगोटाकीजड़ दशमूल येचार२तोलेलेय
चौगुने पानी में काढ़ा बनाय चतुर्थांश रहै तब घृत अरंडी तेल दूध
ये मिलाय घृत को सिद्ध करि शहद युत बरतनेसे कफ के गोला को
नाशै ॥ विद्याधररस ॥ गंधक हरताल सोनामाखी अभ्रकभस्म
मनशिल शोधापारा ये समभाग ले इन्हों को पिपली के काढ़ा में
और थोहर के दूध में १ दिन भावना देय पीछे शहद मिलाय
आधा तोलाभर खाने से गोला व तिल्लीको नाशै इस पै गोमूत्रका
अनुपान है ॥ नाराचरस ॥ शोधापारा शोधागंधक जैपाल हरड़े बहे-
ड़ा आमला शुंठि मिरच पीपल इन्हों का चूर्णकरि शहद में मिलाय
आधातोला खाने से गुल्म पेटरोग इन्होंको नाशकरै ॥ द्वंद्वज गुल्म
निदान व लक्षण ॥ दो दोषोंसे उत्पन्न गोलामें बलाबल देखि औषध
देवै ऐसे द्वंद्वजभी तीन प्रकारके गुल्म होय हैं ॥ द्राक्षादिकल्क ॥ दाख
चंदन मुलहठी पद्माख बिदारीकंद इन्होंको चावलोंके पानीमें पीसि
कल्क बनाय शहद संयुक्त करि खाने से कफबातका गुल्म जावै ॥
सैंधवादितैल ॥ सेंधानोन चीता जमालगोटाकीजड़ इंद्रयव ये चार २
तोले लेय इन्होंको १२८ तोले गोमूत्र में अष्टमांश काढ़ाबनाय

बराबरकातेल मिलाय पूर्वोक्तोंके कल्कमें मिलाय तेलको सिद्धकरि बरतनेसे अनुपानके संग यह द्वंद्वज गोलाको नाशै ॥ नाराचरस ॥ पित्तकफके गोलामें नाराचरसको देनेसे सुखउपजे ॥करंजादिपुटपाक॥ चाव चीता शुंठि मिरच पीपली गडूंभा सेंधानोन इन्हींको बारीक पीसि करंजवा व बड़के पत्तोंसे पुटपाककरि विधिसे पकाय पीछे रस निचोड़ि २ तोलेभर शहद में खावै यहगुल्म पेटरोग द्वंद्वजरोग इन्हीं को हरै सन्निपातगुल्म महाशूल दाहयुतहो और पाषाण समान कठिनऊंचागोलाहोवे और घनीदाहसे भयंकररूपहो वहगोलारूप गांठ मनकोविगाड़ि शरीरकोदुर्बलकरै और अग्निकेबलको नष्टकर-देवै तिसके सन्निपातकागोलाजानो यहअसाध्यहै सामान्यबुद्धिमान् वैद्य सन्निपातके गोलाको त्यागि अन्यगोलाका इलाजकरै और जो सन्निपातके गोलामें चिकित्साकरै तो त्रिदोषनाशक चिकित्साकरै ॥ वरुणादिकषाय ॥ वरुणादिकाढ़ा सन्निपात के शूलकोहरैहै और हृदय शूल पसलीशूल कांधाशूल इन्होंको उपद्रव सहितोंकोनाशैहै ॥ वरु-णादिकाढ़ा ॥ वरुणादि गणोक्त औषधोंकेकाढ़ामें रूखकादि गणोक्त औषधोंका चूर्ण मिलाय पीनेसे जो नहीं पकताहो ऐसा विद्रधीरोग शांत होवै ॥ वायवर्णादिकाढ़ा ॥ वरणा शिवलिंगी बेलफल ऊंगा चीता अरणी बड़ीअरणी दोनों सहिंजने दोनोंकटैली तीनोंकोलिरुता मूर्वा काकड़ासिंगी चिरायता मेढ़ासिंगी करूतोरईकीजड़ अथवा पत्तेकरं-जवा शतावरी इन्होंकाकाढ़ा बनाय पीनेसे कफमेद रोगको हरै और गुल्म मस्तकशूल अंतर्विद्रधि इन्होंको नाशकरै ॥ काढ़ा ॥ अरणीके काढ़ामें गुड़ मिलाय गरम २ पीनेसे सन्निपातका गोलाजावै व आ-नंदभैरवरस से जावै ॥ राजवृक्षादि पुटपाक ॥ अमलतास थोहर आक करंजवा जामन पाडल हल्दी अमली पीपली सांठी ऊंगाजड़ येसमभागलेय पुटपाक विधिसे पकाय रस निचोड़ि १ तोलाभर को ४ तोला गोमूत्र के संगखाने से सन्निपातका गुल्मरोग जावै ॥ अभयादियोग ॥ हरड़ै सेंधानोन इन्होंके चूर्णको तक्र में मिलाय भो-जनकेअंतमेंपीनेसे व त्रिफला कालानोन इन्होंकाचूर्ण १ रत्ती प्रमा-ण खानेसे व दूधमें त्रिफला मिलाय पीनेसे व मुंडीकी जड़के रसको

तक्रके संग व गरम पानी के संग पीने से सन्निपातगुल्म जावे ॥ संप्राप्तिपूर्वकरक्तगुल्म ॥ नवीन प्रसूता स्त्री अहित भोजनकरै व स्त्रीका कच्चागर्भ गिरपड़े इन्होंसे ऋतुसमय अथवा ऋतुबिना भी उसस्त्री के बायु रुधिरको ग्रहणकरि गोलेको उत्पन्न करैहै उसगोलेमें अति पीड़ा और दाहहोवै और पित्त के गोलाके संपूर्ण लक्षण मिलैं और अंग बिनाही सब पेटमें पिंड सरीखा फिरै और शूलचलै और गोलेमें गर्भके संपूर्ण लक्षण मिलैं तिसे रुधिर का गोलाजानिये परंतु उस स्त्री का दशवां महीना ब्यतीत होचुकै तब वैद्य उस गोले का उपाय करै ॥दन्त्यादिगुटी ॥ जमालगोटा की जड़ हींग जवाखार तूंबीबीज पीपली गुड़ इन्हों को थोहरके दूधमें गोली १ तोला प्रमाण की बनाय खाने से रक्तगुल्मको नाशै और रक्तका स्राव करै ॥ पलाशघृत ॥ पलाशके खार में सिद्धघृत को पीनेसे स्त्रीकायह गोला नाशहोवै ॥ शताह्वादिकल्क ॥शतावरि करंजवाकीछाल दारुहल्दी भारंगी पीपल इन्हों के कल्क को तिलोंके काढ़ाके संगखाने से रक्तगुल्म शांतहोवै ॥ तिलोंकाकाढ़ा ॥ तिलोंके काढ़ामें गुड़ घृत शुंठि मिरच पीपल भारंगी इन्होंका चूर्णमिलाय पीनेसे स्त्री के रक्त गोलाको व वीर्यनाशकोहरै ॥ भारंग्यादिचूर्ण ॥भारंगी पीपली करंजवा की छाल पीपलामूल देवदारु इन्होंके चूर्णको तिलोंके काढ़ामें मिलाय पीनेसे रक्तगुल्मकी पीड़ानाशहोवै ॥ तिलमूलादिचूर्ण ॥ तिलकी जड़ सहिंजनाकीजड़ ब्रह्मदण्डीकीजड़ मुलहठी शुंठि मिरच पीपल इन्होंके चूर्णकोसेवनेसे नष्टपुष्प बातगुल्म इन्होंकोदूरकरि स्त्रियोंको सुखदेवै ॥ मुंड्यादिचूर्णरेचन ॥ मुण्डी बंशलोचन इन्होंकाचूर्ण मिश्री शहदमें मिलाय देनेसे रक्तका गोलाजावै जुलाब लगिकरि और गरम औषधों से गोलाका इलाजकरै व गोलामें से लोहू कढ़वावै और ज्यादा लोहू निकसै तो बंदकरावै ॥ गुल्मकाअसाध्यलक्षण ॥ जो गोला क्रमसे उत्पन्न होय संपूर्ण पेटमें व्याप्तहोय शूलको उत्पन्नकरै और सर्व नाड़ियोंसे बँधा कछुवाकी समान कठोरहोवै शरीरदुर्बल होजाय भोजन में रुचि जातीरहै लारपड़ै खांसी छर्दि अरतिज्वर तृषा तन्द्रा पीनस इन्हों से भी युतहो तो असाध्य जानो अथवा

ज्वर श्वास छर्दि अतीसार इन्होंसे पीड़ितहो और हृदय नाभि वस्ति पैर इन्हों में सूजनहो और अन्नद्वेष अकस्मात् गुल्म की ग्रंथिका नाशहो और दुर्बलपना हो ऐसा गुल्म रोगी अवश्य मरै ॥ दूसरा प्रकार ॥ जिन कारणों से गुल्महो तिनकारणों से विद्रधी होवै नहीं विद्रधी मांस व रक्तको दूषितकरि उपजे है और गुल्म दोषों को कुपितकरि उपजे है विद्रधी पकै है और गोला पकै नहींहै ॥ तीसराप्रकार ॥ गोला की गांठका नाशहो और श्वास शूल तृषा अन्न द्वेष दुर्बलपना इन्हों से संयुक्त गोला अवश्य मारदेवै और नाड़ियों से बँधाहुआहो कठोरहो ऊंचाहो सब पेट में ब्याप्त होवे और लार पड़े खांसी अरुचि तृषा छर्दि ज्वर इन्हों से संयुक्त हो और ज्वर श्वास खांसी पीनस तन्द्रा छर्दि भ्रान्ति इन्हों से भी युक्त हो और गुदा नाभि हृदय नाभि वस्ति पैर इन्हों में सूजन हो और शरीर माड़ा होवै अतीसार शूलभीचलै ऐसा गुल्मरोगी असाध्यहोयहै ॥ पुनर्नवादिकल्क ॥ सफ़ेद सांठीकीजड़ सेंधानोन ये समभाग लेय घृत में व शहदमें मिलाय खानेसे गुल्म जलोदर इन्होंकोनाशै॥ चित्रकादिकाढ़ा ॥ चीता पिपलामूल अरण्ड की जड़ शुंठि इन्होंके काढ़ामें हींग मनियारीनोन सेंधा नोन मिलाय पीने से शूल अफारा विड्बंध इन्होंको नाशै ॥ नादेयादिकाढ़ा ॥ नादेयी इन्द्रयव आक सहँजना कटैली शुण्ठि थोहर मिरच भिलावां बड़ीकटैली केशू नींब ऊंगा चीता बांसा कदंब पाढ़ा नोन इन्होंके काढ़ा में हींग मिलाय पीनेसे गुल्म उदररोग अष्ठीला इन्हों को नाशकरै ॥ पारदादिगुटी ॥ पारा गन्धक तूतिया जमालगोटा पीपली अमलतासयेसमभागलेय इन्हों को थोहर के दूधमें खरल करि उड़द प्रमाण गोली बनाय खानेसे स्त्रियोंकागुल्म व उदररोगजावै ॥ मूलिकादिधारण ॥ कलहारी ऊंगा व गड़ूभा की जड़ इन्होंके चूर्णको खाने से स्त्रियों का योनिशूल व पुष्पबन्धइन्होंकोनाशै ॥ निम्बादिगुटी ॥ नींब अरंडबीज इन्होंकोनींब कीछालके रसमें पीसि गोलीबनाय इसका योनिमें लेपकरनेसे योनि शूल जावै ॥ सठ्यादिकांकायनगुटी ॥ कचूर पुष्करमूल जमालगोटा चीता ये २५६ तोले लेय शुंठि बच ये चार २ तोले लेवै निसोथ

३ तोले शिंगरफ ३ तोले यवाखार ८ तोले आम्लवेतस ८ तोले अजमाए १ तोले जीरा १ तोले धनियां १ तोले पीपल ३२ तोले अजमोद ३२ तोले इन्होंका चूर्ण करि विजौरा के रसमें गोली बनाय रक्खै पीछे गोली १ व २ व ३ थोड़ेगरम पानीके संग खाने से व खट्टा रस मदिरा यूष घृत दूध इन्हों में एकको येसाके संग खाने से गुल्म को नाशै यह कांकायन गोली है ॥ यवान्यादिगोली ॥ अजमान जीरा धनियां मरिच शीतला अजमोद कलौंजी ये सोलह२ माशे लेय और हींग २ तोले पांचो नोन २० माशे निसोथ ३ तोले ८ माशे जमालगोटा कचूर पुष्करमूल वायबिड़ंग अनार की छाल आमला पीपली आम्लवेतस शुंठि ये चार २ तोले लेवै पीछे बिजौरा के रसमें गोली बनाय घृत दूध नींबूरस गरम पानी इन्हों में एककोयेसाके संग खाने से यह कांकायन गोली गुल्म को नाशै और मदिरा के संग बायुगोलाकोहरै और गोखुरूके काढ़ा के संग पित्तगोला को हरै और गोमूत्र के संग कफ के गोला को हरै और दशमूल के काढ़ाके संग सान्निपात गोलाको हरै और ऊंटनीका दूध व स्त्रियों के दूधके संग रक्तकेगोलाको नाशै और रोगोक्तअनुपानों के संग हृद्रोग संग्रहणी शूल कृमि ववासीर इन्होंको नाशै ॥ स्वर्जिकावटी ॥ साजीखार ४ माशे गुड़ ४माशे इन्होंकी गोलीबनाय खाने से गुल्म रोग जावै ॥ प्रबालपंचामृत ॥ मूंगा मोती शंख मोतीवाली सीपी कौड़ी इन्होंमें सब समभाग और मूंगा २ भागले और इन सबोंके बराबर आकका दूध मिलावै पीछे इनसबों को बरतन में घालि मुखऊपरमा लिसादेय खामि गजपुटमें पकाय शीतल होने पर करंडमें भरिरक्खै पीछे ३ रत्ती रोज़ सेवने से गुल्म को नाशै और अफारा गुल्मोदर तिल्ली खांसी मूत्ररोग श्वास मंदाग्नि कफ बात की व्याधि अजीर्ण हृद्रोग संग्रहणी अतीसार मेहरोग पथरी इन्होंको नाशै इसमें संदेह नहीं है जैसे गुरुका बचन सत्य है तैसे और इसपै पथ्य सुन्दरलेवै चित्तवृत्तिके अनुसार यह प्रबालपंचामृत सब रोगोंको हरै है ॥ हिंग्वादिघृत ॥ हींग पुष्करमूल धनियां हरड़े पीपली सेंधानोन यवाखार शुंठि ये समभागलेय चूर्णकरि

पीछे यवाखारका पानी मिलाय १ सेर घृत मिलाय पकाय खाने से पीड़ासहित गुल्म जावे ॥ धात्रीघृत ॥ आमला के रस में बायबिड़ंग का कल्क मिलाय घृतको पकाय पीछे मिश्री सेंधानोन मिलाय खानेसे सबगुल्म शांत होवैं ॥ षट्पलाख्यघृत ॥ पीपली पीपलामूल चाव शुण्ठि चीता यवाखार ये २४ तोले लेय कल्ककरि घृत २४ तोले और दशमूल एरण्डमूल भारंगी इन्हों का काढ़ा दूध दही चौबीस २ तोले मिलाय घृत को पकाय खाने से गुल्म पेटरोग अरुचि भगंदर मंदाग्नि खांसी ज्वर क्षय मस्तकशूल कफ बातोत्पन्न व्याधि इन्होंको नाशै ॥ दधिकयोग ॥ बिड़नोन अनार सेंधानोन चीता शुंठि मिरच पीपल जीरा हींग कालानोन चूक अमली आम्लवेतस विजौराका रस ये एक२ तोला और घृत दही चार२ तोले लेय इन्होंको मिलाय घृतको सिद्धकरि वरतने से गुल्म को व तिल्ली को हरै ॥ स्नुहिक्षीरादिघृत ॥ थोहर का दूध ८ तोले घृत ३२ तोले कपिला ४ तोले सेंधानोन २ तोले निसोथ ४ तोले आमला १६ तोले पानी ६४ तोलेमें मंदाग्नी से पकाय पीछे १ तोला रोज़ खाने से पेटरोग प्लीहा कच्छपरोग गुल्म बातगुल्म पांच प्रकार का गुल्म इन्होंको हरै जैसे पवन बादलोंको तैसे और यह गुल्मविकारों को नाशकारक रचा है जैसे राक्षसों के नाश वास्ते ब्रह्माजीने वज्र ॥ अग्निमुखचूर्ण ॥ हींग १ भाग वच २ भाग पीपली ३ भाग शुंठि ४ भाग अजमान ५ भाग हरड़े ६ भाग चीता ७ भाग कूट ८ भाग इन्होंका चूर्णकरि मदिरा दही मस्तु सुरा गरम पानी इन्होंमें एककोयेसाके संग लेनेसे उदावर्त्त अजीर्ण तिल्ली पेट रोग अंगपाक विष खाना बवासीर इन्हों को नाशै और दीपन है शूल गुल्म खांसी श्वास क्षयी इन्होंको भी नाशै और यहचूर्णकहीं भी निष्फलजावे नहीं ॥ पिप्पल्यादिचूर्ण ॥ पीपली पीपलामूल चीता जीरा सेंधानोन इन्होंका चूर्णकरि मदिरा के संग खानेसे भयंकर गुल्म को जल्दी हरै ॥ हिंग्वादिचूर्ण ॥ हींग बच मनियारीनोन शुंठि जीरा हरड़े पुष्करमूल कूट ये भाग वृद्धिसे लेय चूर्णकरि खाने से गुल्म पेटरोग अजीर्ण हैजा इन्हों को नाशै ॥ चित्रकादिचूर्ण ॥ चीता

शुंठि हींग पीपली पीपलामूल चाव अजमोद मिरच ये एक एक तोला लेय और साजीखार यवाखार सेंधानोन कालानोन खारीनोन मनियारीनोन रूमस्यामकानोन ये आठ २ माशेलेय मिलाय चूर्णकरि विजोरा के रस में भिगोय पीछे अनार के रससें भिगोय घाममें सुखाय खाने से यहचूर्ण गुल्म संग्रहणी आमविकार इन्हों को नाशै और अग्निको दीपनकरै रुचिको उपजावै कफ को नाशै त्रिफलादिचूर्ण ॥ त्रिफला धतूरा सप्तला नीलिनी बच बनपूसा हपुषा कुटकी निसोथ सेंधानोन पीपली इन्हों का चूर्णकरि गरम पानी के संग व मांसके रसकेसंग खानेसे सर्वगुल्म पेटरोग तिल्ली कुष्ठ बवासीर सोजा इन्होंको नाशै ॥ कुमारीयोग ॥ कुवारकापट्ठाका गिर ६ माशे भरमें गौ का घृत मिलाय और शुंठि मिरच पीपल हरड़े सेंधानोन इन्होंका चूर्णमिलाय खानेसे गुल्म शांत होवै ॥ नाराचचूर्ण ॥ सौंफ बच कूट छोटीसौंफ जीरा धनियां सुहागाखार यवाखार पीपलामूल कचूर अजमान कलौंजी सनाह असगन्ध गड़ूभा चीता ये समभाग लेय निसोथ २ भाग जमालगोटा ३ भाग शंभल ३ भाग इन्होंका चूर्णखानेसे दस्तलगनेसे गुल्म आनाह बिष अजीर्ण श्वास खांसी गलग्रह सूजन बवासीर संग्रहणी पांचप्रकारका गुल्म इन्होंको नाशै ॥ पूतिकादिचूर्ण ॥ करंजवाके पत्ते चिवूड़ चाव चीता शुंठि मिरच पीपल नोन इन्हों का चूर्णकरि दही में पीसि पीछे मस्तु के संग खानेसे गुल्म पेटरोग सोजा पांडु इन्हों को नाशै ॥ हस्तिकर्णादिचूर्ण ॥ हस्तिकर्णी १ तोला भर का काढ़ा जलोदरको नाशै और तिलोंकी जड़का काढ़ा बनाय तिसमें ब्रह्मदंडीजड़ मुलहठी शुंठि मिरच पीपली इन्होंका चूर्ण मिलाय पीनेसे गुल्मजावै ॥ हिंग्वादिचूर्ण ॥ हींग शुंठि मिरच पीपली पाढ़ा हंसपादी हरड़े कचूर रान तुलसी अजमान अमली आम्लवेतस सारिवा पुष्करमूल धनियां जीरा चीता बच अभ्रकभस्म लोहाभस्म सोनामाखी भस्म लौंग धनियां यवाखार सुहागाखार नोन सेंधानोन चाव ये समभाग लेय चूर्णकरि प्रभात में अन्नके संग व मदिराके संग व गरम पानीके संग खाने से पशली हृदय वस्ति इन्हों के शूल गुल्म बात कफ

आनाह मूत्रकृच्छ्र गुदा योनिशूल संग्रहणी बवासीर तिल्ली पांडुरोग अरुचि छातिका बंध हिचकी खांसी श्वास गलग्रह इन्होंको नाशै इस चूर्णको बिजौराके रसमें व अनारके रसमें व अदरखके रसमें खरलकरि गोली बनाय बरतै॥ विद्याधररस॥ पारा गंधक हरताल तांबाभस्म सोनामाखी भस्म तूतिया इन्होंको खरलमें पीसि पीछे पीपली के काढ़ा में और थोहरके दूधमें और बकराके मूत्रमें भावना देनेसे विद्याधर रस तैयार होयहै इसको ३ रत्तीभर खाने से कफका गोला नाश होवै इसमें रोगोक्त पथ्य करै और रक्तगुल्ममें पहले रक्तमोक्ष कराय पीछे सन्निपात गुल्मका इलाजकरै॥ वड़वानलरस॥ कडुआ काढ़ामें घृत शुंठि मिरच पीपल गुड़ ये मिलाय पीनेसे पुष्परोध रक्तगुल्म ये जावैं व विद्याधर रससे रक्तगुल्म व पुष्परोध शांत होवै॥ गुल्मोदरगजारातिरस॥ पारा गंधक पिपली हरड़ें तूतिया अमलतास ये समभाग लेय चूर्ण करि थोहर के दूध में खरल करि ४ रत्ती रोज़खानेसे स्त्रियोंके जलोदरको नाशै इसपर पथ्य चावल दही काहै। और अमलीके रसको पानकरै यह भैरव जीने कहाहै॥ उद्दामाख्यरस॥ १ तोला पारा को शंखपुष्पीके रसमें व सर्पाक्षीके रसमें एकदिन खरलकरि शोधा जमालगोटा का कल्क मिलाय पांचपुट देय तैयार करै पीछे २ रत्तीभर घृत के संग खाने से गुल्मको नाशै और मुनक्का दाख हरड़ें इन्होंके काढ़ाके संग खाने से पित्तके गुल्मको नाशै और पित्तकारक और दाहकारक पदार्थों को बर्ज्जिदेवै॥ गुल्मभैरस॥ शोधापारा गन्धक जमालगोटा त्रिफला शुंठि मिरच पीपल ये समभाग लेय चूर्णकरि शहद में मिलाय चाटनेसे और ऊपर गरम पानी पीने से गुल्म को नाशै॥ नागादिगुटी॥ शीशाभस्म रांगभस्म अभ्रकभस्म लोहाभस्म ये समभाग लेय और सबों के समान तांबाभस्म लेय इन्हों को बिजौरा के रसमें खरलकरि १ रत्ती की गोली बनाय शहदके संग व अदरखके रसके संग व जवाखार सुहागाखार इन्हों में एककोयेसाके संग सेवने से अजीर्ण आम्लपित्त हृदयशूल पेटशूल पसलीशूल इन्हों को और सबतरहके गुल्मोंको नाशै इसको गुल्मकुठार रस कहतेहैं॥ गुल्मरस॥

पारा गंधक कौड़ी तांबा शंख बंग अभ्रक कांतलोह तीक्ष्णलोह मंडूरलोह शीशाभस्म शिंगरफ सुहागाखार ये समभाग लेय इन्हों से त्रिगुणी पुरानीकीटी लेय गोमूत्रमें शोधि पीछे इन्होंको त्रिफला भंगरा अदरख इन्होंके रसोंमें भावनादेय पृथक् २ पीछे बांसा त्रिफला गिलोय कमलकन्द सांठी इन्हों के आठगुणे रसों में भावना देय अग्नि ऊपर पकाय घनरूप होनेपर १ रत्ती प्रमाण गोली बनाय रोगोक्त अनुपानोंके संग खानेसे ज्वर पांडु तृषा रक्तपित्त गुल्म क्षय खांसी स्वरभंग मंदाग्नि मूर्च्छा बातरोग आठप्रकारका प्रमेह रोग उपद्रवयुत पित्तरोग इन्होंको नाशै ज्यादा कहनेसे क्याहै यह सब व्याधियोंको नाशैहै ॥ बज्रक्षार ॥ नोन सेंधानोन बांगड़खार जवाखार कालानोन साजीखार ये समभाग लेय चूर्णकरि आक थोहर इन्होंके दूधमें भावनादेय इससे आकके पत्तोंको लेपनकरि बरतन में घालि मुखबंदकरि गजपुटमें पकाय शीतल होनेपर काढ़ि चूर्ण करि इससे आधाभाग शुंठि मिरच पीपल हरड़ें बहेड़ा आमला जीरा हलदी चीता इन्होंका चूर्ण मिलाय तैयार करने से बज्रक्षार होताहै यह महादेवजीने कहाहै पेटरोग गुल्मशूल सोजा मन्दाग्नि अजीर्ण इन्हों में ८ माशे खावै और बाताधिक पूर्वोक्त रोगों में गरम पानी के संग खावै और पित्ताधिक पूर्वोक्त रोगों में घृतके संग खावै और कफाधिक पूर्वोक्त रोगोंमें गोमूत्रके संगखावै और सन्निपात युत पूर्वोक्त रोगोंमें कांजी के संगखावै ॥ क्षारगुल्मादिपर ॥ साजीखार जवाखार ये दोनोंखार अग्नि समानहैं और भी खार गुल्म बवासीर संग्रहणी इन्होंको हरैंहैं वे कहतेहैं आकखार १ अमलीखार २ थोहरखार ३ केलाखार ४ सहोंजनाखार ५ ये सब दीपन पाचन हैं और कृमिको व पुरुषत्वको व शर्कराको व पथरीको नाशैंहैं॥वर्ति॥ अधोबायु व मल इन्हों के अवरोध में नोन आकदूध सिरसम मिरच इन्होंकी बत्तीबनाय गुदामें चढ़ावनी श्रेष्ठहै॥ चविकासव॥ चाव २०० तोला चीता १०० तोला रुदंती पुष्करमूल बच हंसपादी कचूर पटोलपत्र त्रिफला अजमान कूड़ाकीछाल इंद्रबारुणी धनियां रास्ना जमालगोटा ये सब चालीस२ तोले लेय बायबिड़ंग नागर-

मोथा मजीठ देवदारु शुंठि मिरच पिपली ये बीस बीस तोले लेय इन्होंको ११४मन २५ सेर पानीमें मिलाय पकाय अष्टमांश बाकी रहनेपर गुड़ १२०० तोले धवकेफूल ८०तोले चातुर्जात३२तोले लौंग ८ तोले शुंठि मिरच पीपल ८ तोले कंकोल ८ तोले इन सबों को घीके चिकने बरतनमें १ महीनातक घालि रक्खै पीछे प्रभात में ४ तोला खाने से सब गुल्मविकार २० प्रकार का प्रमेह पीनस क्षयी खांसी अष्ठीला बातरक्त पेटरोग अंत्रवृद्धि इन्होंको नाशकरै॥ कुमारीआसव ॥ कुवारपट्ठा का रस २०४८ तोला गुड़ ४०० तोला भांग १०० तोला पानी १०२४ तोलेमें मिलाय काढ़ा बनाइ चतुर्थांश बाक़ी रहनेपर शहद २५६ तोला धवकेफूल ६४ तोला इन्हों को घीके चिकने बरतनमें घालि पीछे जायफल लौंग कंकोल कवाबचीनी जटामांसी चाव चीता जावित्री काकड़ासिंगी बहेड़ा पुष्करमूल इन्होंका कल्क प्रत्येक ४ तोले मिलावै पीछे तांबाभस्म २ तोला लोहभस्म २ तोला मिलाय मुखको बंदकरि बरतनको धरती में व अन्नके कोठा में २१ दिन गाड़ि देवै पीछे काढ़ि अग्निबल बिचार रोज़ प्रभात में पीनेसे पांचप्रकारकी खांसी श्वास क्षयीरोग आठप्रकारके पेटके रोग ६ प्रकारका बवासीर बातव्याधि अपस्मार अन्य असाध्य रोग आठप्रकार का गुल्म रोग नष्टपुष्प इन्हों को नाशै और जठराग्नि को दीपन करै और कोठाके शूल को नाशै यह आसव बृहस्पतिजीने कहाहै॥ दन्तीहरीतकीतैल ॥ हरड़ें १०० तोला जमालगोटा १०० तोला चीताजड़ १०० तोला इन्होंकाकाढ़ा बनाय अष्टमांश बाक़ीरहनेपर गुड़ १०० तोला निसोतका चूर्ण १६तोला तेल १६ तोला शुंठि ४ तोला पिपली ४ तोला इन्हों को मिलाय लेह सरीखा बनाय शीतल होनेपर शहद १६ तोला दालचीनी ४ तोला नागकेशर ४ तोला इलायची ४ तोला तमालपत्र ४ तोला इन्हों का चूर्ण मिलाय पीछे इसलेह को ४ तोले एक हरड़ के संग खावै इससे चिकना कोठाहोय सुख से दस्त लगे यह प्लीहा सोजा गुल्म बवासीर हृद्रोग पांडुरोग संग्रहणी बिषमज्वर कुष्ठ अरोचक इन्हों को नाशै ॥ चिंचाशंखवटी ॥ अमलीखार ४ तोला थोहरखार४

तोला आकखार ४ तोला शंखभस्म ४८ तोला हींग २ तोला सेंधानोन ४ तोला कालानोन ४ तोला मनियारी नोन ४ तोला खारीनोन ४ तोला सांभरनोन ४ तोला मृत्तिकानोन ४८ तोला साजीखार २ तोला जवाखार २ तोला इन्होंको बिजौरा नींबूके रसमें खरलकरि पीछे चीताके रस में ३ दिन खरलकरि पीछे भंगरा निर्गुण्डी गोरखमुंडी अदरख इन्होंके रसोंमें खरलकरि एक एक दिन पीछे बेरकी गुठली समान गोली बनाय प्रभात में एकरोज खानेसे सबगुल्म सबशूल अजीर्ण हैजा मंदाग्नि इन्होंको जल्दी नाशै इसपै पथ्य खटाई तेल रहितहै यह गोली बिशेषकरि संग्रहणी को नाशै है ॥ क्षारादिचूर्ण ॥ सुहागाखार जवाखार चीता शुंठि मिरच पीपल नीली पांचोंनोन इन्होंका चूर्णकरि घृतके संग खाने से सबगुल्म पेटरोग इन्होंको नाशै ॥ सूर्यपुटीशंखद्राव ॥ जंबीरीनींबूकारस १ सेर लाल काकमाची की जड़ ४ तोला साजीखार ६ माशे त्रिफला ४ तोला नसदर २ तोला इन्होंको कांचकी शीशीमें भरि सूर्यकी धूपमें १४ दिन रखने से शंखद्राव होताहै यह दारुण गुल्म पेटरोग मलबद्धता इन्होंको हरै है ॥ द्वितीयशंखद्राव ॥ फटकड़ी ४ तोला सेंधानोन ४ तोला जवाखार ८ तोला नसदर ८ तोला सोरा १६ तोला हीराकसीस २ तोला इन्होंको डमरूयंत्र में घालि चुह्लीऊपर राखि बड़बेरी की लकड़ियों से अग्नि जलाय चतुराई से द्रवको काढ़े यह शंखद्राव गुल्मादि सब रोगों को नाशै है ॥ तीसराप्रकार ॥ सेंधानोन ८ तोला जवाखार ८ तोला नसदर ८ तोला सोरा १६ तोला फटकड़ी ४ तोला हीराकसीस २ तोला इन्हों को डमरुयंत्र में घालि चुह्ली ऊपर चढ़ाय खैरकी लकड़ियों की अग्नि जलाय द्रव रूप अग्नि समान पानी सरीखा लेवै यह सब धातुओं को व कौड़ियों को गलादेवै गुल्म आदिक को जल्दी नाशकरै ॥ क्षाराष्टक ॥ पलाश थोहर ऊंगा अमली आक तिल इन्होंके खार साजीखार जवाखार ये गुल्म शूल इन्होंको हरैहैं और अजीर्ण को पकावैहैं ॥ शरपुंखक्षार ॥ शरपुंखीका खार हरड़ोंकाचूर्ण ये दोनों चार २ माशे खानेसे गुल्मको नाशैं ॥ गुल्ममेंपथ्य ॥ स्नेहन स्वेदन विरेचन वस्तिकर्म बांहकीनसका

बेधना लंघन लेपन तेल लगाना स्नेह पकेहुये का फोड़ना एकवर्ष के पुराने कलम धान लालधान खांड़ कुलथी यूष मरुदेश के मांस का रस मदिरा गौ तथा बकरी का दूध दाख फालसे छुहारा अनार आस भारंगी आम्लवेतस मठा अरंडीतेल लहसन कोमल मूली शालिंच शाक बथुआ सहँजना जवाखार हरडैं हींग बिजौरा शुंठि मिरच पीपल गोमूत्र चिकने गरम धातुओं के बढ़ानेवाले हलके तथा दीपन अन्न बातकाघटाना ये सब गुल्मरोगमें पथ्य हैं॥ अपथ्य॥ उड़द आदि फली के अन्न जौआदि शूकधान्य सब बातके बढ़ाने वाली बस्तु बिरुद्ध भोजन सूखामांस मूली मछली मीठेफल सूखा शाक फली का अन्न विष्टंभी तथा भारीबस्तु अधोबायु विष्ठा मूत्र श्रमका श्वास आंशू इनसबोंका रोकना वमन जलपीना ये सब गुल्ममें अपथ्यहैं॥

इतिवेरीनिवासकवैद्यरविदत्तकृतनिघण्टरत्नाकर
भाषायां गुल्मप्रकरणम्॥

हृद्रोगकर्मविपाक॥ कपड़े आई स्त्री आदिका देखाहुआ अन्न के खानेसे उदरमें कृमिपड़ै॥ प्रायश्चित्त॥ गोमूत्र यवोंकाभोजन इन्हों को ७ रात्रि सेवने से शुद्धहोहै और अभक्ष्यको खाने से हृदय में कृमि उपजें हैं इसकी शांति वास्ते भीष्मपंचकों का ब्रत करावै जो घोड़ा को व हाथी को मारै तिसकी कुक्षि में कृमिपड़ें और जिस स्त्री का पति मरजावै वह नीले बस्त्रोंको धारण करनेसे नरकमें मरिके बसैहै और जन्मान्तरमें कुक्षिमें कृमिपड़ैं॥ ज्योतिःशास्त्राभिप्राय॥ जिसके जन्म कालमें चौथेस्थानमें पापग्रहहों तिसके छातीफटना बंधु पीड़ा बालकपनामें व्याधि होवै और नख केशों को धारणकरै और शूरबीरहो॥ हृद्रोगनिदान॥ बहुत गरम और भारी बहुत खट्टी कसैली बहुत तीखी इन बस्तुओं के खानेसे बहुत श्रमके करनेसें भारी चोट के लगनेसे बहुत पिटने और चिन्ता करनेसे मलमूत्र के रोकनेसे हृदयका रोग उत्पन्न होहै सो पांचप्रकार का है॥ संप्राप्ति॥ अन्न

खानेका रस जो प्रथम हृदय में जाय उस रसको वात पित्त कफ बि-
गाड़ कर हृदय में पीड़ा करै उसको वैद्य लोग हृद्रोग कहते हैं ॥ वात-
जहृद्रोग ॥ हियामें पीड़ा फैलजाय और सुई कैसा चभकाचलै और
हियामें भेरणोसो फिरै और हियामें पत्थर और कुहाड़ाकीसी चोट
लगै फटासा दीखै यह वातका हृद्रोग जानिये ॥ पंचमूलकाढ़ा ॥ इसमें
स्नेहका पानकराय वमनकरावै अथवा दशमूलकेकाढ़ामें स्नेह सेंधा-
नोन मिलाय पीनेसे बातजहृद्रोगजावै ॥ पिप्पल्यादिचूर्ण॥ पिपली इला-
यची बच हींग जवाखार सेंधानोन कालानोन शुंठि अजमान इन्हों
का चूर्ण ४ तोला खावै ऊपर कांजी कुलथी का पानी दही मदिरा
मांस स्नेह इन्हों में से एकको येसा को पीवै इसमें वमन व रेचन
लगिकरि बातजहृद्रोग नाशहोवै ॥ पुष्करादिकल्क ॥ पोहकरमूल बि-
जौरा मूल शुंठि कचूर हरड़ै इन्होंके कल्कको दूध व कांजी व घृत
व सेंधाके पानीके संग खानेसे बातजहृद्रोग जावै ॥ पुनर्नवादितैल ॥
सांठी दारुहल्दी पंचमूल रास्ना यव बेरीकी छाल कैथ बेलफल
इन्हों के काढ़ामें तेलको पकाय मालिश व खाने से बातजहृद्रोग
शांतहोवै ॥ पित्तजहृद्रोगनिदान ॥ तृषा बहुतलगै दाहलगै हृदय
दूखै कंठसे धूमा निकलै मूर्च्छाहो शरीर शीतल होजावै पसीना
आवै मुखसूखजाय ये लक्षण पित्तके हृद्रोगकेहैं ॥ सामान्यचिकित्सा ॥
शीतललेप पानीका सेचना जुलाब ये पित्त के हृद्रोग में हित हैं ॥
द्राक्षादिचूर्ण ॥ पित्तके हृद्रोग में रेचन से शुद्धकरि पीछे दाख मिश्री
शहद फालसा इन्होंसे युक्त ऐसे अन्नपान हित हैं ॥ श्रीपर्ण्यादिरेच-
न व वमन ॥ कायफल मुलहठी शहद खांड़ गुड़ इन्हों के पानी से
वमन व जुलाब लेनेसे पित्तका हृद्रोग नाश होवै ॥ हारहूरादिचूर्ण ॥
कालीदाख हरड़ै इन्हों के चूर्ण में बराबरकी खांड़ मिलाय ठंढेपानी
के संग खानेसे पित्तका हृद्रोग शांतहोवै ॥ अर्ज्जुनादिक्षीर ॥ अर्ज्जुन
वृक्षकी छालके काढ़ामें दूधको सिद्धकरि पीनेसे व मिश्रीके संग व
पंचमूली के काढ़ा के संग दूधको पीनेसे व बाला के काढ़ा में सिद्ध
दूधको पीने से व मुलहठी में सिद्ध दूधको पीने से पित्त का हृद्रोग
नाशहोवै ॥ कसेरुकादिकाढ़ा ॥ कचूर शेवाल शुंठि पुण्डरीकवृक्ष मुल-

हठी कमलकीदंडी बेलकीगांठ इन्हों के चूर्णमें घृत शहद मिलाय खाने से पित्त के हृद्रोग को नाशै॥ कफजहृद्रोगनिदान॥ हृदय भारी रहै मुखमेंसे कफ बहुतनिकसै भोजनमें रुचिजातीरहै शरीरजकड़ होजाय मुखमीठारहै मन्दाग्निहो हृदयमें कफ जमजाय ये लक्षणहों तो कफका हृद्रोगजानिये॥ सामान्यचिकित्सा॥ कफके हृद्रोगमें पहले पसीना देय वमन कराय लंघन कराय कफनाशक औषधों से चिकित्सा करै दोषका बलाबल विचार करि॥ त्रिवृत्तादिचूर्ण॥ निसोत कचूर खरैटी रास्ना शुंठि हरड़ै पोहकरमूल इन्हों के काढ़ा व चूर्ण को गोमूत्र के संग खाने से कफका हृद्रोग जावै॥ सूक्ष्मैलादिचूर्ण॥ छोटी इलायची पिपलामूल इन्हों को घृतमें मिलाय चाटने से उपद्रव सहित कफके हृद्रोग को नाशै॥ सन्निपातजहृद्रोगनिदान॥ ये तीनों के सब लक्षण मिले होयँ तो सन्निपातका हृद्रोगजानिये॥ चिकित्सा॥ इसहृद्रोग में पहले लंघन कराय पीछे सर्व हृद्रोग नाशक अन्नको खावै और घृत व चूर्ण कहैंगे उन्हों से सन्निपातज हृद्रोग को शांत करै॥ कृमिजहृद्रोगनिदान॥ आंतों में कृमिहों पीछे कुपथ्य का करने वाला मनुष्य तिल दूध गुड़ आदिले मीठी बस्तु खावै तब उसके मर्मस्थानों में पीड़ाहोय हृदय दूखै और सड़जाय तब उसकी आत्मा बहुत दुःखपावै और मन में क्लेशहो बहुत थूकै हृदयमेंशूलचलै भोजनमें अरुचिहो नेत्र कालेपड़जायँ शरीरसूखजावै ये कृमि के हृद्रोगके लक्षणहैं॥ हृद्रोगकेउपद्रव॥ पिपासास्थान में ग्लानिहो भ्रमहो शोषहो ये हृद्रोग उपद्रव हैं और कृमिजहृद्रोग में पूर्वोक्त कफका कृमिरोग के उपद्रवहोवैं स्तंभ घोरज्वर हृदयरूखा व भारी और स्पर्शको सहैनहीं और आध्मान कुक्षि हृदय अधोवायु विष्ठा मूत्र इन्हों का निरोध तंद्रा अरोचक शूल ये लक्षण होवैं॥ सामान्यचिकित्सा॥ कृमिज हृद्रोगमें पहले लंघन रेचन कराय पीछे कृमिरोगोक्त उपचारकरावै॥ गोमूत्रपान॥ गोमूत्र में वायविडंग कूट इन्होंका चूर्ण मिलाय पीने से हृदय के जमे हुये कीड़े असाध्य भी गिरपड़ैं॥ दुग्धपान॥ गौका दूध ९६ तोला अग्नि ऊपर पकाय ४८ तोले बाकी रहनेपर उतारि ठंढाकरि मिश्री २ तोले शहद २ तोले

घृत२ तोले पीपली चूर्ण १ तोले इन्हों को मिलाय दूधको पीनेसे सन्निपात का हृद्रोग ज्वर खांसी क्षयी इन्हों को नाशकरै ॥ पुष्करादिकाढ़ा ॥ पुष्करमूल बिजौरा पलाश अजमान कचूर देवदारु शुंठि ज़ीरा बच इन्होंके काढ़ामें जवाखार साजीखार सेंधानोन कालानोन ये मिलाय गरम२ पीनेसे हृद्रोग नाशहोवै ॥ दशमूलादिकाढ़ा ॥ दशमूल के काढ़ा में जवाखार सेंधानोन मिलाय पीने से हृद्रोग गुल्म शूल खांसी श्वास इन्होंकोनाशै ॥एरण्डादिकाढ़ा॥ एरण्डजड़ ८ तोला आठगुणा पानीमें काढ़ा बनाय जवाखार मिलाय पीनेसे हृदय कुक्षि कमर इन्हों के शूलको नाशकरनेवास्ते सिंह के नखके समान है॥ बाह्लीकादिकाढ़ा॥ हींग शुंठि चीताजड़ जवाखार हरड़ै कूट मनियारी नोन पीपली कालानोन पोहकरमूल इन्हों को काढ़ा बनाय पीनेसे हृद्रोग मन्दाग्नि मलवृद्धता इन्होंकोनाशै ॥ नागरादिकाढ़ा ॥ शुंठिका काढ़ा गरम२पीनेसे अग्निबढ़ै और श्वासखांसी बायुशूलहृद्रोगइन्हों कोनाशकरै ॥ नागबलादिदुग्धपान ॥ गंगेरणकी जड़ को गौके दूधमें पकायपीनेसे हृद्रोग श्वास खांसी इन्होंकोनाशै व शम्भलकीछालको दूधमें सिझाय पीनेसे १ महीनातक रसायन है और बलको बढ़ावै है और इस को १ बर्ष सेवन करै तो १०० बर्ष जीवै ॥ हिंगुपंचकचूर्ण ॥ शुंठि कालानोन अनार की छाल आम्लबेतस भूनीहींग ये समभाग लेय चूर्णकरि खानेसे हृद्रोगको नाशै यहभेड़ नामक मुनिने कहाहै ॥ पुष्करचूर्ण ॥ पुष्करमूलके चूर्णको शहदमें मिलाय चाटनेसे हृद्रोग श्वास खांसी हिचकी इन्होंको नाशै ॥ हरिणशृंगभस्म॥ शराव संपुटमें हरिणके सींगकी भस्मकरि गौके घृतमें मिलाय पीनेसे हृदयशूलको नाशै ॥ हिंग्वादिचूर्ण ॥ हींग बच मनियारीनोन शुंठि पिपली कूट हरड़ै चीता जवाखार कालानोन पुष्करमूल इन्हों के चूर्णको यवोंके काढ़ाकेसङ्ग पीनेसे हृद्रोगको नाशै ॥ ककुभत्वक्चूर्ण ॥ अर्ज्जुन वृक्षकी छालके चूर्णको घृत व दूध व गुड़के शर्बत के संग खानेसे हृद्रोग जीर्णज्वर रक्तपित्त इन्होंकोनाशै इसके सेवनसे चिरंजीविहोवै ॥ कुटक्यादिचूर्ण ॥ कुटकी मुलहठी इन्होंके चूर्णको गरमपानी के संग खानेसे जीर्णज्वर रक्तपित्त हृद्रोग इन्होंको नाशै ॥

हरीतक्यादिचूर्ण ॥ हरड़ै बच रास्ना पिपली शुंठि नागरमोथा पुष्कर-मूल इन्होंका चूर्ण हृद्रोगको नाशै ॥ पाढ़ादिचूर्ण ॥ पाढ़ा बच जवा-खार हरड़ै आम्लबेतस धमासा चीता शुंठि मिरच पीपल हरड़ै बहेड़ा आमला शुंठि पुष्करमूल अमली अनारछाल बिजौराकीजड़ ये समभाग ले बारीक चूर्णकरि गरमपानी व मदिराकेसंग खानेसे हृद्रोग बवासीर शूल गुल्म इन्होंको नाशै॥ गोधूमादिचूर्ण ॥ गेहूं अर्जुन वृक्षछाल इन्होंका चूर्णकरि बकरीके दूध व घृतमें पकाय शहद खांड़ मिलाय पीनेसे दारुण हृद्रोग शांतहोय ॥ वल्लभकघृत ॥ हरड़ै ५० लेय कालानोन ८ तोला चूर्णकरि घृत ६४ तोला और घृतसे चौगुने दूधमें घृतको सिद्धकरि बरतनेसे हृद्रोगको नाशकरै ॥ यष्ट्यादिघृत ॥ मुलहठी मोटीखरैटी बाला अर्जुन इन्होंमें घृतको सिद्धकरि बरतने से हृद्रोग क्षयी रक्तपित्त श्वास खांसी ज्वर इन्होंको नाशकरै ॥ बला-दिघृत ॥ खरैटी मोटीखरैटी अर्जुन इन्होंके काढ़ामें मुलहठीकाचूर्ण मिलाय घृतको सिद्धकरि बरतनेसे हृद्रोग बातरक्त क्षयी रक्तपित्त इन्होंको नाशै ॥ हृदयार्णव ॥ पारा गन्धक तांबाभस्म इन्होंको त्रिफ-लाके काढ़ामें १ दिन खरलकरि पीछे काकमाचीके रसमें खरलकरि गोली बनाय खानेसे हृद्रोगको नाशै ॥ रसायन ॥ पारा गन्धक अभ्रक इन्होंकीभस्म समभागलेय अर्जुनवृक्षकीछालके रसमें २१ भावना देय घाममें सुखाय पीछे उड़द प्रमाण शहदके संग खानेसे बातज-हृद्रोग पित्तजहृद्रोग कफजहृद्रोग सन्निपातज हृद्रोग कृमिजहृद्रोग इन्होंको नाशै ॥ हृद्रोगमेंपथ्य ॥ स्वेदन विरेचन बमन लङ्घन वस्ति कर्म यवागू लालधान जङ्गली मृग तथा पक्षियोंके मांसकायूष मूंग तथा कुलथीका रस राग कांवलिक खांड़ व गजपिपली परवर के-लेका फल पुरानाकोहला आंब अनार अमलतासका शाक नवीन मूली अरंडीका तेल आकाशकाजल सेंधानोन दाख मठापुराना गुड़ शुंठि अजमान लहसुन हरड़ै कूट धनियां कालाअगर अदरख बेर कांजी शहद बारुणीरस कस्तूरी चन्दन पन्ना नागरपान ये सब हृद्रोगमें पथ्यहैं ॥ अपथ्य ॥ तृषा बमन मूत्र अधो बायु बीर्य खांसी डकार श्रमका श्वास मल आंशू इन्होंके बेगोंका रोकना सह्याचल

और विंध्याचलसे निकलीहुई नदियोंका जल भेड़कादूध बुराजल कसायली बस्तु बिरुद्ध भारी गरम चर्परा तथा खट्टा भोजन पुराने पत्तोंका शाक खार महुआ दतून फस्तखुलाना ये हृद्रोगमें अपथ्यहैं॥

इतिबेरीनिवासकराबिदत्तविरचितानिघण्टरत्नाकरभाषायांहृद्रोगप्रकरणम्॥

मूत्रकृच्छ्रकर्मविपाक॥ गुरुकी पत्नी के संग भोगकरने से मूत्र-कृच्छ्र उपजैहै इसका प्रायश्चित शास्त्र विधिसे करावे व पशुयोनि के संग भोगकरनेसे मूत्रकृच्छ्र उपजे है इसमें शुद्धि वास्ते ३ तिल पात्र दानकरावे व तिलों से पात्रको भरि सोना घालि ब्राह्मण को प्रभातमें देनेसे दुःस्वप्न नाशहोवे॥ ज्योतिःशास्त्राभिप्राय॥ जन्मकाल में सातवें स्थान शनिहो और राहुकी दृष्टिहो तो मूत्रकृच्छ्र रोग उ-त्पन्न होवै॥ मूत्रकृच्छ्रनिदान॥ खेदके करने से तीक्ष्ण वस्तु और रूखी बस्तुके खानेसे और मदिराके पीनेसे नाचने से दुष्ट घोड़ेपर चढ़नेसे नदीके जीवोंका मांस खाने से अजीर्णसे मूत्रकृच्छ्र रोग आठप्रकारका उत्पन्न होयहै॥ संप्राप्ति॥ कोपको प्राप्त हुआ जो बात पित्त कफ वह आप अपनेही कारणोंसे पेटमें प्राप्तहो मूत्र के मार्ग में बहुत पीड़ाकरिकै बड़े कष्टसे कीनछकरि मूत्र उतारैहै और मूत्र बन्द होनेमें कम और मूत्रकरने में अधिक पीड़ा होवे उसकोमूत्र-कृच्छ्र कहते हैं॥ बातजमूत्रकृच्छ्रनिदान॥ जांघों और पेडूकी संधि में और वस्ति लिंग इन्होंमेंपीड़ा अधिकहो और थोड़ा२बारंबारमूत्र उतरै यह बातका मूत्रकृच्छ्र जानिये॥ चिकित्सा॥ स्नेह अभ्यंजन नि-रूह वस्ति पसीना एंड़ीबंधन उत्तरवस्ति पानीकीसेंक स्थिरादि औ-षधोंकेरस ये बातके मूत्रकृच्छ्रमेंहितहैं॥ काढ़ा॥ गिलोय शुंठि आमला असगन्ध गोखुरू इन्होंका काढ़ा पीनेसे बातके मूत्रकृच्छ्रको नाशै॥ एलादिचूर्ण॥ इलायची पाषाणभेद शिलाजीत गोखुरू काकड़ीबीज सेंधानोन केशर इन्होंके चूर्णको चावलोंके धोवनके संग पीने से असाध्य मूत्रकृच्छ्र शांतहोवे॥ पित्तमूत्रकृच्छ्र निदान॥ पीला लाल और गरममूत्र बहुतकष्टसे चीसचलकरि उतरै दाहयुक्त बारम्बार तिसेपित्तका मूत्रकृच्छ्र जानिये॥ कुशकासादि काढ़ा॥ कुशा कास डाभ

शरईष इन्होंका काढ़ा पित्त मूत्रकृच्छ्रको नाशै वास्ति को शुद्ध करै और इनपांचोंमें दूधको सिद्धकरि पीने से लिंगका दुष्ट लोहू नाश होवै ॥ शतावरिकाढ़ा ॥ शतावरि कास कुश गोखुरू विदारीकंद चावल ईषकारस पीलाबांसा इन्हों का काढ़ा बनाय शीतल होने पर शहद मिश्री मिलाय पीनेसे पित्तका मूत्रकृच्छ्र जावै॥ एर्वारुवीजपान ॥ काकड़ीकेबीज मुलहठी दारुहल्दी इन्होंकाचूर्ण चावलों के धोवन संग खानेसे व आमलाके रस में दारुहल्दीका चूर्ण शहद मिलाय पीनेसे पित्तका मूत्रकृच्छ्र नाशै ॥ द्राक्षादिकल्क॥ दाख मिश्री इन्होंके कल्कको मस्तुके संग खाने से व गरमदूध में गुड़ मिलाय पीनेसे पित्तका मूत्रकृच्छ्रजावै ॥ नारिकेलजलपान॥ नारियल के रस में गुड़ धनियां मिलाय पीनेसे दाहसहितमूत्रकृच्छ्र रक्तपित्त इन्हों कोनाशकरै ॥ रक्तनारिकेलजलपान ॥ लालनारियल के रसमें निंबोलीकेबीज मिश्री इलायची बीज मिलाय पीनेसे मूत्रकृच्छ्रको नाश करै ॥ कफजमूत्रकृच्छ्र निदान ॥ पेड़ू और लिंग दोनों भारीहों और दोनोंमें सूजनहो मूत्रमें झागआवै और मूत्र कष्टसे उतरै यहकफज मूत्रकृच्छ्र है ॥ सामान्य चिकित्सा ॥ खारी तीक्ष्ण गरम औषध अन्न पान स्वेदन लंघन बमन निरूहणवस्ति और तक्र कडु तिक्त औषधों में सिद्धकिया तेल वास्तिकर्म ये कफके मूत्रकृच्छ्र में हित हैं ॥ एलाचूर्ण ॥ इलायचीको गोमूत्र व मदिरा व केलाके रस के संग पीनेसे कफका मूत्रकृच्छ्रजावै ॥ सितवारुणकादि चूर्ण ॥ कुरडूकेबीजों को तक्रके संगपीनेसे व मूंगाकी भस्मको चावलों के धोवन के संग खानेसे कफका मूत्रकृच्छ्रजावै॥ सन्निपातमूत्रकृच्छ्र निदान ॥ तीनों के लक्षण मिलैं तो सान्निपातका मूत्रकृच्छ्र जानिये यह अति कष्ट साध्यहै इस में बिचारकरि चिकित्साकरै जो कफाधिक सन्निपात मूत्रकृच्छ्रहो तो बमन हितहै और पित्ताधिक सन्निपात मूत्रकृच्छ्र हो तो जुलाब हितहै और बाताधिक सन्निपात मूत्रकृच्छ्र हो तो वस्तिकर्म हितहै ॥ काथ ॥ दोनोंकटैली पाढ़ा मुलहठी इन्द्रयव इन्हों का काढ़ा सन्निपात के मूत्रकृच्छ्र को नाशै ॥ काथ ॥ शतावरि की जड़के काढ़ामें खांड़ शहद मिलाय पीनेसे त्रिदोषका मूत्रकृच्छ्रजावै॥

दुग्धयोग ॥ दूधमें गुड़को मिलाय थोड़ा गरम करि पीने से सब मूत्रकृच्छ्र शर्करा बातरोग इन्हों को दूर करै ॥ यवक्षार ॥ जवाखार ५ माशा मिश्री में मिलाय खानेसे मूत्रकृच्छ्र नाशहोवै संशय नहीं ॥ गोकंटकादि लेह ॥ पंचांग सहित गोखुरू को बारीक पीसि ४०० तोले लेय काढ़ा बनाय चतुर्थांश बाकी रहने पर मिश्री २०० तोला मिलाय पकाय घृत सरीखा होजाय तब उतारि तिसमें शुंठि पीपली छोटीइलायची जवाखार नागकेशर जावित्री अर्जुन वृक्ष की छाल कांकड़ी बंशलोचन ये बत्तीस तोले ले मिलाय चटनी बनाय रोज चाटने से मूत्रकृच्छ्र दाह मूत्रबन्ध पथरीमूत्रकृच्छ्र रक्तप्रमेह इन्हों को नाशकरै ॥ शल्यजमूत्रकृच्छ्रलक्षण ॥ मूत्रके ले चलनेवाली नसों में किसीप्रकारकी चोट लगने से मूत्र रुकजावै व भयंकर मूत्रकृच्छ्र हो इसके लक्षण बातजमूत्रकृच्छ्र के समान हैं ॥ सामान्यचिकित्सा ॥ इस में बातज मूत्रकृच्छ्र का इलाजकरै व बड़ पीपल पापरी आंब जामन इन्होंकी छालको पीसि थोड़ा गरमकरि लेपकरनेसे अभिघातका मूत्रकृच्छ्र जावै ॥ लोहभस्मयोग ॥ लोहकीभस्म को बारीक पीसि शहद में मिलाय तीनबार चाटनेसे मूत्रकृच्छ्र को नाशै इसमें संशय नहीं ॥ रसपान ॥ पारा २ रत्ती में जवाखार मिश्री मिलाय तक्रके संग पीनेसे सब प्रकारके मूत्रकृच्छ्र वेग शांत होवैं ॥ पुरीषज मूत्रकृच्छ्र ॥ जो पुरुष मलकीबाधा को रोकै उसके वायु कुपित होके पेडू और पेटमें अफारा करै और लिंगमें पीड़ा अधिक करै और मूत्रकष्टसे उतरै ये लक्षण मलके मूत्रकृच्छ्रके हैं ॥ सामान्य चिकित्सा ॥ इस मूत्रकृच्छ्र में स्वेदचूर्ण मालिश वस्ति ये उपचार हित हैं और वीर्य को बंध करनेवाली बिधि करावै ॥ क्वाथ ॥ गोखुरू के काढ़ा में जवाखार मिलाय पीने से निश्चय बहुत दिनका मूत्रकृच्छ्र दूर होवै ॥ आमलक्यादि क्वाथ ॥ आमलाके काढ़ा में गुड़ घालि पीनेसे श्रमपित्त रक्त दाह शूल मूत्रकृच्छ्र इन्हों को नाशै और तृप्तिकरै ॥ एलाचूर्ण ॥ मदिरा व आमलाके रसके संग छोटी इलायची को पीनेसे व कुरडू के बीजोंको तक्रके संग पीनेसे मूत्रकृच्छ्र जावै ॥ खर्जूरादिचूर्ण ॥ खजूर आमला पीपली शिलाजीत इलायची मुलहठी पाषाणभेद चन्दन

काकड़ीबीज धनियां इन्हों के चूर्ण में मिश्री मिलाय मुलहठी के काढ़ाके संगखाने से अंगदाह लिंगदाह गुदादाह वंक्षणदाह वीर्य्य दाह शर्करा पथरीशूल इन्होंको नाशै और बल वीर्यको बढ़ावै॥ त्रिफलादिकल्क॥ त्रिफलाको बारीक पीसि बरणा कंकोल सेंधानोन ये मिलाय खानेसे मूत्रकृच्छ्र पीड़ा नाशहोवै॥ अश्मरी जन्य मूत्रकृच्छ्र॥ पथरी और शर्करानाम रेत ये दोनों अंडमें रहै हैं इन्हों से मूत्रकृच्छ्र होयहै वह पथरी पित्तकरिकै पची वायुकरिकै रूखी कफसेरहित पथरी का रूप होय निकलते मूत्रको रोकैहै इसमें पसीना आदि वातनाशक क्रियाकरै॥ क्वाथ॥ पाषाणभेदका काढ़ा पथरीकेमूत्रकृच्छ्र को नाशै॥ एलादिक्वाथ॥ इलायची पीपली मुलहठी पाषाणभेद रेणुकाबीज गोखुरू बांसा अरण्डकीजड़ इन्हों के काढ़ामें पाषाणभेद व खांड़ मिलाय पीने से पथरीका मूत्रकृच्छ्र जावै॥ शुक्रजमूत्रकृच्छ्र॥ वीर्य्य के रोकनेसे मूत्रका मार्ग रुकजाय तो पुरुषके पेडू और लिंगमें शूल चलै और वीर्य सहित बहुत कष्टसे मूत्र उतरै तिसे वीर्य रोकनेकामूत्रकृच्छ्र जानिये॥ शास्त्रार्थ॥ इस मूत्रकृच्छ्र में शिलाजीत शहद मिलाय चाटना हितहै व दूध में मिश्री घृत मिलाय प्रभात में पीना हितहै व वीर्यदोषकी शुद्धिवास्ते मदवाली स्त्रीसे भोगकरना हितहै॥ तृणपंचमूलघृत॥ पांचोंतृणों की जड़ में घृतको सिद्धकरि पीनेसेभी पूर्वोक्तरोग शांतहो॥ बलादिक्षीर॥ खरैटी हींग दूध इन्हों में घृत को सिद्धकरि वरतनेसे मूत्रदोष वीर्यदोषको नाशै॥ पथरीशर्करानिदान॥ अश्मरी शर्करा ये तुल्यरूप उत्पत्तिहै परन्तु शर्कराके विशेषलक्षण कहते हैं सुनो पथरी पित्तसे पचतीहुई वायुसे सूखतीहुई कफसे छुटीहुई भिरती तिसे शर्कराकहतेहैं हृदयमें पीड़ा शरीरकांपै कुक्षिमेंशूल चलै मन्दाग्नि होजाय मूर्च्छा आवै दारुणमूत्रकृच्छ्रहो॥ मूलपंचक योग॥ कुश कास ईष शर कसई इन्हों की जड़को पीनेसे मूत्राघात मूत्रपथरी मूत्रकृच्छ्र इन्होंको नाशै व शिलाजीत पाषाणभेद पीपली इलायची इन्हों का चूर्ण पानी के संग खानेसे मूत्रकृच्छ्रको हरै व हल्दी मुलहठी मूर्वा नागरमोथा देवदारु इन्होंका चूर्ण १ तोला ले कल्क बनाय दूधकेसंग पीनेसे मूत्रकृच्छ्र नाशहोवै व इलायची

पाषाणभेद शिलाजीत पीपली इन्होंका चूर्ण चावलोंके धोवनकेसंग खानेसे व गुड़के सङ्गखाने से असाध्य मूत्रकृच्छ्र रोगी भी अच्छा होवै व अङ्कोल तिलकाखार इन्होंमेंशहद मिलाय दहीके सङ्गखाने से मूत्रकृच्छ्र जावै॥ दाडिमादिरस पान॥ अनारकारस इलायची सफेदजीरा इन्होंके चूर्णको खाइ ऊपर लोनयुत मदिराको पीनेसे मूत्रकृच्छ्रनाशहोवै॥ निदिग्धिकारसपान॥ जवाखारमें मिश्रीमिलाय खाने से मूत्रकृच्छ्र जावै व कटैली के रसमें शहद मिलाय पीनेसे मूत्रकृच्छ्रनाशहोवै॥ यवक्षारपान॥ तक्रमें जवाखार मिलाय पीने से मूत्रकृच्छ्र अश्मरी इन्होंको नाशै॥ यवक्षारपान॥ जवाखार १ माशा कोहलाकारस ४ तोला खांड़ १ तोला इन्होंको मिलाय पीनेसे मूत्रकृच्छ्र नाशहोवै॥ पाषाणभेद क्वाथ॥ पाषाणभेद निसोत हरड़ै धमासा पुष्करमूल गोखुरू पलाश सिंगाड़ा काकड़ी बीज इन्होंका काढ़ापीने से मूत्रकृच्छ्रको नाशकरै॥ हरीतक्यादिक्वाथ॥ हरड़ै गोखुरू अमलतास पाषाणभेद धमासा इन्हों के काढ़ा में शहद मिलाय पीनें से मूत्रकृच्छ्र दाह पीड़ा इन्होंको नाशकरै॥ पाषाणभेदादिकाढ़ा॥ पाषाणभेद अमलतास धमासा छोटीहरड़ै गोखुरू ये समभागलेय काढ़ा बनाय शहद संयुक्तकरि पीनेसे पीड़ा दाहयुक्त मूत्रकृच्छ्र को नाश करै॥ गोक्षुरादिकाढ़ा॥ जड़ सहित गोखुरूके काढ़ामें मिश्री शहद मिलाय पीनेसे मूत्रकृच्छ्र गरमबायु ये दूरहोवैं॥ हरीतक्यादिकाढ़ा॥ छोटीहरड़ै धमासा अमलतास गोखुरू पाषाणभेद इन्होंके काढ़ामें शहद मिलाय पीनेसे बायुरोध दाहपीड़ासहित मूत्रकृच्छ्र इन्हों को नाशकरै॥ यवादिकाढ़ा॥ यवकेसत्तू अरण्डकी जड़ पांचोंतृण पाषाणभेद शतावरि हरड़ै इन्होंके काढ़ामें गुड़ मिलाय पीनेसे मूत्रकृच्छ्र गुल्म इन्होंको नाशै॥ कण्टकादिघृत॥ गोखुरू अरण्डजड़ कुश कास दर्भ शर महाशतावरि काकड़ी ईष इन्होंके रसमें घृतको सिद्ध करि आधागुड़ मिलाय पीनेसे मूत्रकृच्छ्र अश्मरी मूत्राघात इन्हों को नाशै॥ शतावर्यादिघृत॥ घृत ६४ तोला शतावरिरस १२८ तोला इन्हों को बकरीके दूध २५६ तोले में पकाय पीछे गोखुरू लघुगोखुरू गिलोय धमासा कास कटैली इन्होंके काढ़े निराले निराले

८ तोले बनाय मिलाय पीछे मुलहठी त्रिकुटा गोखुरू त्रायमाण दूधी शिलाजीत पाषाणभेद दालचीनी इलायची तमालपत्र इन्हों के चूर्ण प्रत्येक ३ तोलेलेय मिश्री ८ तोला शहद २ तोला इन्हों को मिलाय फिर पकाय खानेसे मूत्रकृच्छ्र मूत्रदोष शर्करा इन्होंको नाशे यह शतावरि घृत पुराने वैद्यों ने कहा है ॥ त्रिकंटकादिगूगल ॥ आठगुणा गोखुरूके काढ़ामें विधिसे गूगल को पकाय पीछे त्रिफला त्रिकुटा नागरमोथा इन्होंकाचूर्ण गूगलके प्रमाण मिलाय गोली बनाय खानेसे प्रमेह मूत्राघात वातकृच्छ्र पथरी शुक्रदोष सर्ववात इन्हों को नाशकरे जैसे मेघोंको वायु तैसे ॥ श्वदंष्ट्रादिलेप ॥ गोखुरू की जड़ काकड़ीके बीज इन्हों को कांजी में पीसि वस्ति ऊपर लेप करने से तत्काल मूत्रकृच्छ्र नाश होवे ॥ किंशुकस्वेद ॥ एरण्ड तेल से पहले वस्तिको स्निग्धकरि पीछे केशूके फूलोंको पानीमें सिझाय वस्ति ऊपर बांधनेसे मूत्रकृच्छ्र शांत होवे ॥ आखुविट्कल्क ॥ मूषा की मींगनीको पानीमें पीसि थोड़ा गरमकरि वस्तिऊपर लेप करने से मूत्रकृच्छ्र जावे ॥ त्रपूसादि ॥ काकड़ी के बीजों के लेपसे व केशू के फूलों में पकाये पानीकी धारासे व कपूरके लेपसे व चिड़ियाकी बीटके लेपसे व शिलाजीत के लेपसे व काकड़ीके पानीसे पसीना लेनेसे व कडुक गरमतेलकी धारासे व गरम पानी की धारासे मूत्रकृच्छ्र नाश होवे ॥ मंन्थादियोगत्रय ॥ मन्थमें मिश्री मिलाय पीने से व गरम दूधमें मिश्री घृतको मिलाय पीनेसे व आमला के रस में ईषके रसको मिलाय पीने से व आमला के रसमें शहद घालि पीनेसे मूत्रकृच्छ्र नाशहोवै व काकड़ीबीज मुलहठी दारुहल्दी इन्होंको चावलों के धोवनमें पीसि पीने से व मुनक्का दाखोंको रात्रि को पानीमें भिगोय प्रभात पीनेसे व छोटीइलायची को मदिरा के सङ्ग व आमलाके रसके सङ्ग पीनेसे मूत्रकृच्छ्र नाशहोवै ॥ हरिद्रादियोग ॥ हल्दी गुड़ १ तोला खाइ ऊपर कांजी पीनेसे व बांझककोड़ी कन्द १ तोला लेय शहद मिश्रीके संग खानेसे पथरीकोनाशै यह महादेवजी ने कहा है ॥ भ्रष्टेक्षुरसपान ॥ ईषको गरम करि रस निचोड़ि तिसमें मूषाकी बीट मिलाय पीने से मूत्रकृच्छ्र नाश होवे

संशय नहीं॥ कुटजयोग ॥ कुड़ाकी छालको गौके दूधमें पीसिपीनेसे भयंकर मूत्रकृच्छ्र भी शांतहोवे॥ लघुलोकेश्वर॥ पाराभस्म १ भाग गन्धक ४ भाग इन्होंकी कजलीकरि कौड़ीमें भरि पारा से चौथाई सुहागा को दूधमें पीसि तिससे कौड़ी के मुखकोबंदकरि बरतन में घालि गजपुटमें पकाय शीतल होनेपर काढ़ि चूर्णकरि ४ रत्तीघृतमें खावै पीछे २१ मिरचोंका चूर्णकरिजावित्री की जड़ ४ तोले इन्हों को बकरीकेदूधमें पकाय मिश्री मिलाय पीना यह अनुपान है यह मूत्रकृच्छ्रको नाशकरै॥ चन्द्रकलारस॥ पाराभस्म तांबाभस्म अभ्रक-भस्म ये प्रत्येक १ तोलालेय गन्धक २ तोला इन्होंकी कजलीकरि इसको नागरमोथा अनार दूब केतकीकाअंकुर सहदेयी घीकुवारप-ट्ठा पित्तपापड़ा रामशीतला शतावरि इन्हों के रसोंमें एक एकदिन भावनादेय पीछे कुटकी गिलोयसत पित्तपापड़ा बाला मधुमालती बेलफल चन्दन सारिवा इन्हों के चूर्ण को मिलाय पीछे दाखों के काढ़ामें ७ भावना देय चिकने बरतनमें घालि रक्खै पीछे चना स-मान गोली बनाय खानेसे सब पित्तरोग बातपित्तरोग अंतर्बाह्यदाह इन्होंको नाशै यहचन्द्रकलारस रसोंका राजाहै इसको विशेष करि ग्रीष्मकाल और शरत्कालमेंसेवै और मन्दाग्निको दूरकरै महादाह ज्वरको नाशै भ्रम को मूर्च्छा को जल्दी नाशकरै छींके पड़ता लोहू को बन्दकरै और ऊर्ध्वगत रक्तपित्तको व अधोगत रक्तपित्तकोनाशै और लोहूकी छर्दिको व सबप्रकारके मूत्रकृच्छ्र रोगों को नाश करै इसमें संशय नहीं। व पाराभस्म सोनाभस्म बैक्रांतभस्म ये समभाग ले इन्होंको शिवलिंगी मोर मांसी इन्हों के रसों में २ पहर खरल करि गोला बनाय सुखाय गजपुट में पकाय पीछे अरनों की अ-ग्नि से महापुटमें पकाय अनुपान के संग खाने से मूत्रकृच्छ्र नाश होवै॥ वृहद्गोक्षुराद्यवलेह॥ गोखुरू ४०० तोला डाभकी जड़ ४०० तोला पाषाणभेद ३२ तोला गिलोय २० तोला अरंड जड़ ३२तोला शतावरि ४० तोला पद्मकन्द ८० तोला असगन्ध ८० तोला इन्होंको कूटि १०२४ तोले पानीमें काढ़ा बनाय चतुर्थांश रहनेपर कपड़ा से छानि तिसमें गौकाघृत ६४ तोला शिलाजीत ६४ तोला

मिलाय पकाय तिसमें काली मुसली शतावरि शुंठि मिरच पीपली हरडै बहेड़ा आमला छोटी इलायची जटामांसी वाला नागकेशर पत्राख जावित्री दालचीनी मुलहठी वंशलोचन जायफल काला-वाला निसोत लालचन्दन धनियां कुटकी जवाखार सुहागा नाग-वेल काकड़ासिंगी पुष्करमूल कचूर दारुहल्दी शीशाभस्म लोह भस्म वंगभस्म ये सब चार २ तोले लेय चूर्णकरि मिलाय अग्नि वलविचारि खानेसे सुख उपजे इसको चिकने वरतनमें घालि धरै पीछे ४ तोला रोजखाने से पथरी मूत्रकृच्छ्र मूत्राघात मूत्रवंध २० प्रकारका प्रमेह शुक्रदोष नष्टशुक्र अम्लपित्त धातुक्षय उष्ण वात वातकुण्डली इन्होंको नाशै जैसे सूर्य अंधेरेको तैसे इससे पर और औषध नहीं है इसपै पथ्यसे रहै यह कृष्णात्रेयजीने कहाहै ॥

मूत्रकृच्छ्र पथ्य ॥ वातसे उत्पन्न मूत्रकृच्छ्रमें तेललगाना निरूहवस्ति स्नेहन गोतामार के नहाना शीतललेप ग्रीष्मऋतुकी विधि वस्ति विधि विरेचन और कफसे उत्पन्नमें स्वेदन विरेचन वस्ति कर्म्म खार यव और तेज तथा गरम उपचार करै त्रिदोष से प्रथम तेल लगाके पीछे तीनों दोषोंकी शांति करनेवाली क्रिया करनी चाहिये मूत्राघातके विकारसे उत्पन्न वातके मूत्रकृच्छ्रकी क्रिया करनी चाहिये वीर्य रुकने से उत्पन्नमें शहदके साथ शिलाजीतको चाटना चाहिये विष्ठाके रोकनेसे उत्पन्नमें स्वेदन चूर्ण तेल लगाना वस्तिकर्म करना उचितहै इस पीछे दोषोंके अनुसार यहगुणकहते हैं पुराने लालधान गौका दूध दही तथा माठा मरुदेशका मांस मूंगका रस मिश्री पुराना कोहला परवल अदरख गोखुरू घीकुवार पट्ठा खजूर नारियल ताड़ इनसबों के शिर हरड़ै ताड़फलकी मींगी खीरा छोटी इलायची शीतल जल तथा भोजन नदीके तटका जल कपूर ये सब मूत्रकृच्छ्रमें पथ्यहैं ॥

अपथ्य ॥ मदिरा श्रम स्त्रीसंग हाथीघोड़ेकी सवारी सबप्रकारका विरुद्ध भोजन विषमभोजन पान मछली नोन अदरखतेलकी भुनीबस्तु तिल कीखली हींग तिल सिरसम मूत्रके वेगका रोकना उड़द करील बहुत तेजतथा विदाहीवस्तु रूखी और खट्टी बस्तु ये मूत्रकृच्छ्रमें अपथ्यहैं॥

इतिबेरीनिवासकरविदत्तवैद्यविरचितनिघण्टरत्नाकरभाषायांमूत्रकृच्छ्रप्रकरणम्॥

मूत्राघातनिदान॥ मूत्र पुरीषादि वेगों के बिघातसे वातादि दोष कुपितहो १३ प्रकारके बात कुण्डलिकादि मूत्राघातउपजैहैं॥ मूत्राघातकेद्वादशभेद॥ बातकुण्डलिका १ अष्ठीला २ बातवस्ति ३ मूत्रातीत ४ मूत्रजठर ५ मूत्रोत्संग ६ मूत्रक्षय ७ मूत्रग्रन्थि ८ मूत्रशुक्र ९ उष्णबात १० मूत्रसाद ११ बिड्बिघात १२ ऐसे १२ प्रकारके हैं॥ बातकुण्डलिकालक्षण॥ रूखी बस्तु के खाने से और मलमूत्र शुक्रके धारणसे बात वस्तिमें जाय पीड़ाकरे और मूत्रकी नसों में जाय बिचरै और कुपितहो तब कफमूत्रके छिद्रको रोकै और लिंग के मुखमें कुण्डलीके आकार होरहे तब पुरुष थोड़ामूते और मूतने में ज्यादा पीड़ा हो यह बातकुण्डलिका होय है यह मरण तुल्य दुःख देयहै कष्टसाध्यहै॥ अष्ठीलालक्षण॥ पेडू में पीड़ाहो गुदा की पवन चलै नहीं गुदामें पवनकी गांठ पत्थरसी होजाय उस स्थान में पीड़ा बहुत हो और वह पवन मल मूत्रको रोकदे यह अष्ठीला होयहै॥ बातवस्तिकालक्षण॥ जो पुरुष मूत्रके वेगको रोकै उसके पवन पेडूमें जाके मूत्रकी नसोंके मुखको रोकदे मूत्र उतरने दे नहीं पेडू और कुक्षिमें पीड़ाकरे उसको बातवस्ति कहिये यह कष्टसाध्य है॥ मूत्रातीतलक्षण॥ मूत्रको बहुत बार रोकै देर तक करै नहीं तब पुरुषके मूत्र मंद उतरै उसको मूत्रातीत कहिये॥ मूत्रजठरलक्षण॥ जो पुरुष मूत्रके बेगको रोकै तिसके गुदा की अपानबायु उदर को पवन से भरके नाभिके नीचे अफारा रोग करिकै बहुत पीड़ा करै उसे मूत्रजठर रोग कहिये॥ मूत्रोत्संगकालक्षण॥ पेडू अथवा लिंग की नसोंमें जो मूत्र उसको करैनहीं तब उस पुरुषके मूत्रके द्वारा पीड़ा सहित अथवा बिन पीड़ा थोड़ा रुधिर उतरै तिसे मूत्रोत्संग कहिये॥ मूत्रक्षयकालक्षण॥ जिस पुरुषका शरीर खेद करके रूखा पड़जाय उसके पेडूमें रहते जो बातपित्त कफ वह पीड़ा और दाह सहित मूत्रको नाशकरै है उसको मूत्रक्षय कहिये॥ मूत्रग्रंथिकालक्षण॥ पेडूके बीचमें गोल और स्थिर और छोटे आमला के समान गांठ अकस्मात् उपज आवै तिसे मूत्रग्रंथि कहिये॥ मूत्रशुक्रलक्षण॥ मूत्र का वेग लग रहाहो और मैथुन करनेको स्त्रीके पास जावै तब उस

की वायु शुक्रके स्थानसे प्रकटकरै है मूत्रके पहले अथवा मूत्रके पीछे अरने उपले की राखके पानी सदृश होके गिरै तिसे मूत्र शुक्र कहिये॥ उष्णवातका लक्षण॥ स्त्रीके संगसे खेदसे धूप में रहनेसे पुरुषके पेडूमें रहते जो वातपित्त वह पेडू लिंग गुदाको दग्ध करै तब हल्दीके सदृश मूत्र उतरै अथवा रुधिर लिये बड़े कष्टसे मूत्र उतरै तिसे उष्णवात कहिये॥ मूत्रसादका लक्षण॥ पुरुषके कुपथ्य करिके पेडूमें रहता जो वायु सो पित्त और कफ को बिगाड़े है तब उसके मूत्र बहुत कष्टसे उतरै पीला अथवा लाल सफेद बहुत गाढ़ा गरम गोरोचन सदृश चूनेकी राख सदृश थोड़ा उतरै शरीर सूख जावै तिसे मूत्रसाद कहिये॥ विड्विघातका लक्षण॥ जो पुरुष बहुत रूखो अन्नखाय सो दुबलाहो मल सहित मूतै और उसके मूत्र में मल कैसी दुर्गंध आवै और बहुत कष्टसे मूत्र उतरै तिसे विड्विघात कहिये॥ असाध्यलक्षण॥ कफसे उपजा मूत्राघात असाध्य होयहै व शोष गौरव युत चिकना सफेद घनरूप मूतै सो भी असाध्य जानो वस्तिकुंडलिका लक्षण॥ बहुत जल्दी दौड़नेसे लंघन करने से बहुत खेदसे पेडूमें किसी प्रकारकी चोट लगने से पेडू में गांठ पड़जाय तब उठते पीड़ाहो और गांठ बैठी हुई हलै नहीं गर्भ कैसी भांति रहै शूलहो फड़कै दाह अधिकहो उस गांठको हाथसे दाबै तो मूत्र की बूंद उतरै और बहुत पीड़ाहो तब मूत्रकी धार निकलै और शस्त्र के चोट लगने कैसी पीड़ाहो तिसे वस्तिकुंडलिका कहिये यह घोर रोग शस्त्र विषके समान है इसका इलाज कुशल वैद्य करै इसमें पित्ताधिक हो तो वस्तिमें दाह शूल मूत्रका वर्ण बदल जावै इसमें कफ अधिक हो तो शरीर भारी रहै सोजाहो चिकना कठिन सफेद मूत्र उतरै॥ साध्यासाध्य लक्षण॥ कफसे रुका गलवस्तिहो पित्ताधिकहो तो असाध्य जानों जिसमें नेत्रादिक भ्रांतिनहींहो वह साध्य होयहै जो कुंडलीके आकार नहींहो वहभी साध्यहै और वस्ति कुंडली के आकार होजाय तो तृषा मोह श्वास ये उपजैं॥ मूत्राघातसामान्य चिकित्सा॥ पीड़ा सहित मूत्राघातमें स्नेह स्वेद देइ पीछे स्नेह को जुलाब देवै पीछे उत्तरवस्ति कर्म करै और जो मूत्रकृच्छ्रमें व पथरी

रोगमें औषध कहाहै वह सब मूत्राघात में श्रेष्ठ है॥ गोक्षुरादिवटी॥ शुंठि मिरच पीपल हरड़े बहेड़ा आमला ये सम भाग लेय सबके समभाग गूगुल लेय गोखुरूके काढ़ामें गोली बनाय दोषकाल बल विचारि १ गोली रोज खावे इसपै कोई तरहका परहेज नहीं मनोवांछित कर्म करे यह २० प्रकारका प्रमेह बातरोग बातरक्त मूत्राघात मूत्रदोष प्रदर इन्होंका नाश करै पेयादि पकायके शीतल किया दूध जटामांसी चन्दन चावलोंका धोवन मिश्री इन्होंको मिलाय पीनेसे रक्त सहित उष्णवात शांतहोवे॥ एर्वारुवीजादि कल्क॥ काकड़ीके बीज १ तोले लेय कल्क बनाय सेंधानोन मिलाय कांजीके संग खानेसे मूत्राघात शांतहोवे॥ सामान्य चिकित्सा॥ पीड़ा सहित मूत्राघात में उत्तर वस्ति देवे अति मैथुन रक्तस्रावपर ज्यादह मैथुन करनेसे जिसके लिंगसे रक्तपड़े तिसे मैथुन का उपराम चाहिये और पुष्टिकारक औषधोंका सेवन करै व अनुपानोंके संग पाषाणभेदको देनेसे मूत्रकृच्छ्र शांतहोवे और लिंगमें रोग होतो शीतल उपचार करै व बीर तर्वादि गणोंके काढ़ामें शिलाजीत मिलाय पीनेसे व धमासाके काढ़ा को पीनेसे व बासाके काढ़ा को पीनेसे पूर्वोक्त रोग जावे व गोखुरू अरंड शतावरि इन्हों के काढ़ा को पीनेसे शूलसहित मूत्राघात जावे व गुड़ घृत दूध इन्होंको मिलाय पीनेसे मूत्रकृच्छ्र नाशै॥ वीरतर्वादि काढ़ा॥ अर्जुनवृक्षकी छाल १ वाँदा २ कास ३ तीनों वाँसे ६ दोनोंडाभ ८ देवनल ९ गुंद्रातृण १० शिवलिंगी ११ अरणीजड़ १२ मूर्वा १३ पाषाणभेद १४ सहिंजना १५ गोखुरू १६ ऊंगा १७ कमल १८ ब्राह्मी १९ ये वीरतर्वादि गणहैं इन्होंके काढ़ा पीनेसे शर्करा पथरी मूत्रकृच्छ्र मूत्राघात बायुरोग इन सबों को नाश करै सशूल मूत्राघात पर देवनल कुश कास ईष इन्हों की जड़ों का काढ़ा बनाय शीतल करि मिश्री मिलाय पीनेसे पीड़ा सहित मूत्राघात नाश होवै॥ त्रिफलादि काढ़ा॥ त्रिफलाके काढ़ा में नोन पारा मिलाय पीने से १३ प्रकारके मूत्राघात नाश होवैं॥ गोधावन्यादिकाढ़ा॥ ऋषभक पृष्ठिपर्णी इन्होंकी जड़ोंके काढ़ामें घृत तेल गौका दूध ये मिलाय पीनेसे जल्दी मूत्राघातको नाशकरै॥ दशमूलादिकाढ़ा॥

दशमूलके काढ़ामें शिलाजीत मिश्रीमिलाय पीनेसे वात कुंडलिका अष्ठीला वात वस्ति इन्होंको नाशकरे ॥ गोक्षुरादिकाढ़ा ॥ गोखुरूके काढ़ामें शिलाजीत गूगुल मिलाय पीनेसे मूत्रक्षय मूत्रशुक्र मूत्रोत्संग इन्होंको नाशकरे ॥ दूसरा प्रकार ॥ पञ्चांग सहित गोखुरू का काढ़ा बनाय मिश्री शहद संयुक्तकरि पीने से मूत्रकृच्छ्र शूल जावे वरुणादिकाढ़ा ॥ वरणा गोखुरू शुंठि इन्होंके काढ़ामें गुड़ जवाखार मिलाय पीनेसे मूत्रकृच्छ्र मूत्राघात पथरीज मूत्रनिग्रह मूत्रशर्करा इन्होंको दूरकरै ॥ शतावर्य्यादिस्वरस ॥ शतावरी गोखुरू भूमिआमला इन्होंकी जड़ोंके काढ़ामें १ माशा जवाखार २ माशा सोरा २ रत्ती सुहागा मिलाय पीनेसे भयंकर मूत्राघात नाशहोवै ॥ तिलक्षारयोग ॥ तिलके खारको दूधमें मिलाय शहद संयुक्तकरि पीनेसे मूत्राघात की पीड़ा दाहवालाकेभीरहे नहीं व ताड़की जड़को चावलोंके धोवन में पीसि मिश्री मिलायपीनेसे मूत्रकी उष्णवातको नाशै ॥ कर्पूरवर्ति ॥ कपूरकी रजसेयुत महीन कपड़ाकी वत्तीबनाय हलवे२ लिंगमें चढ़ाने से मूत्राघातको नाशै ॥ निर्दग्धिकास्वरस ॥ कटैलीके स्वरसमें तक्रमिलाय पीनेसे अथवा रात्रि को पानी में केशर को भिगोय प्रभातमें कल्क बनाय शहद संयुक्तकरि खानेसे मूत्राघात नाशहोवै ॥ शिलाजतुयोग ॥ शोधेशिलाजीतमें मिश्री कपूर मिलाय खानेसे मूत्रजठर मूत्रातीत इन्होंको नाशै ॥ कर्कटविजादिचूर्ण ॥ काकड़ीके बीज सेंधा नोन हरड़ै बहेड़ा आमला ये समभाग ले चूर्णकरि गरम पानी के संगखानेसे मूत्ररोध नाश होवै ॥ भद्रादिचूर्ण ॥ लाल शिवणी पाषाणभेद शतावरि चीता कुटकी काकोली कमलाक्ष गोखुरू इन्होंका बारीक चूर्णकरि मदिरा के संग पीनेसे मूत्राघातको नाशै ॥ स्वगुप्तादि चूर्ण ॥ सफेद लज्जावंती मुनक्का दाख काला ईष नीली ये समभाग लेय और दूध घृत शहद ये आधा २ भागलेय खरलकरि मिलाय पीनेसे १ तोलाभर ऊपरसे दूधको पीवे यह बीर्यक्षयके विकारों को नाशै और वन्ध्या को पुत्र देवे ॥ उसीरादिचूर्ण ॥ कालाबाला वाला तमालपत्र कूट आमला सफेद मूसली इलायची रेणुकाबीज दाख केशर नागकेशर कमलकेशर कपूर चन्दन लालचन्दन त्रिकुटा मु-

लहठी धानकीखील असगन्ध शतावरि गोखुरू काकड़ासिंगी जा-
वित्री कंकोल खुरासानी अजवायन ये समभाग लेय चूर्णकरि एक
भाग चूर्ण २ भाग घृत खांड़में मिलाय खावै अथवा दो गुना श-
हद राबमें मिलाय प्रभातमें खावै यह क्षयी रक्तपित्त पाददाह प्रदर
मूत्राघात मूत्रकृच्छ्र रक्तस्राव ८० प्रकारके बायुरोग इन्होंको नाशै
विशेषकरि प्रमेहको नाशकरै ॥ क्षौद्रादिघृत ॥ शहद आधाभाग दूध
१ भाग घृत १ भाग मिश्री १ भाग दाख १ भाग सफ़ेद लज्जा-
वन्ती ईषरस पीपली चूर्ण तालमखाना ये समभाग लेय इन्हों को
मिलाय मथकरि पीछे १ तोला भरखाय ऊपर दूधको पीनेसे शुक्रदोष
रक्तदोष इन्होंको नाशै इसको सेवनेसे वंध्या स्त्री गर्भको प्राप्त होवै
गोक्षुरादिघृत ॥ धनियां गोखुरू इन्होंका काढ़ा व कल्कमें घृतको सि-
द्धकरि खानेसे मूत्राघात मूत्रकृच्छ्र दारुण शुक्रदोष इन्होंको दूरकरै
चित्रकादिघृत ॥ चीता सारिवा खरैटी लघुनीली अनन्तमूल दाख
गिलोय पीपली त्रिफला मुलहठी आमला इन्हों को प्रत्येक तोला
तोलाभर कल्क लेय घृत २५६ तोला पानी १०२४ तोला दूध
१०२४ तोला इन्हों को मिलाय पकाय घृत को सिद्धकरि शीतल
होने पर मिश्री ६४ तोला बंशलोचन ६४ तोला मिलाय पीछे
दोषका बलाबलदेखि पीनेसे मूत्रग्रंथि मूत्रसाद उष्णबात रक्तप्रदर
मूत्राघात वस्तिकुंडली इन्हों को नाशै इसको सेवने से स्त्रीगर्भ को
प्राप्तहोवै और रक्तदोष योनिदोष मूत्रदोष शुक्रदोष इन्हों को नाश
करै ॥ मूत्राघातमेंपथ्य ॥ तेललगानास्नेहन विरेचन वस्तिकर्म स्वेदन
गोतामारके न्हाना उत्तर वस्ति अर्थात् पिचकारी पुराने लालधान
मरुदेशका मांस मदिरा माठा दूध दही उड़दकायूष पुरानाकोहला
परवर अदरख तालफलकी मींगी हरड़ै कोमल नारियल सुपारी
खजूर नारियल ताड़इन्होंके मस्तक ये सब दोषके अनुसार मूत्रा-
घात में पथ्यहैं ॥ अपथ्य ॥ सब बिरुद्ध अन्न कशरत मार्ग में चलना
रूखी बिदाही तथा बिष्टंभीवस्तु स्त्री संग वेगका रोकना बांसका
अंकुर बमन ये सब मूत्राघात में अपथ्य हैं ॥
इतिश्रीबेरीनिवासकरविदत्तविरचितनिघण्टरत्नाकरभाषायांमूत्राघातप्रकरणम्॥

अश्मरी नाम पथरीरोग कर्मविपाक ॥ जो परस्त्री गामीहो उसके मृगीरोग व पथरी रोग उपजै ॥ शमन ॥ सोनाकादान करनेसे शांति होवै यहदान सब रोगोंमें श्रेष्ठहै ॥ ज्योतिश्शास्त्राभिप्राय ॥ जन्म पत्रमें वृहस्पति के गृह में बुधहो और सूर्य्यकी दृष्टिहो तो शूल प्रमेह पथरी रोग ये उत्पन्नहोवैं बुधकी शांतिवास्ते पूर्वोक्त जपादि हितहै ॥ अश्मरी निदान ॥ वातकी १ पित्तकी २ कफकी ३ बीर्यकी ४ ये चारोंकफसे विशेषकरि मिलीहोयहै यमरूप होतीहै ॥ संप्राप्ति ॥ पेडूमें रहता जो वायु सोपेडूमें वीर्यमूत्र पित्त कफ इन्होंको सुखाय पथरीको उत्पन्नकरै है ॥ दृष्टांत ॥ जैसे गौके पित्तेमें गोरोचन बढ़जाय तैसे मनुष्यके पथरी पड़जावै ॥ पथरीकापूर्वरूप ॥ पथरी रोग सन्निपातसे उत्पन्न होताहै पथरीवाले पुरुष के मूत्रमें मस्तवकरे कैसी गंधआवै पेडूमें अफारा हो पीड़ाहो मूत्र बहुत कष्टसे उतरै ज्वर और भोजनमें अरुचिहोय सब पथरीका पूर्वरूपका लक्षणहै ॥ सामान्यलक्षण ॥ नाभि में मूत्रकी नसोंमें पेडू में पीड़ा बहुतहो मूत्रकी धार बँधी गिरैनहीं और मूत्रका मार्ग रुकजावै जब यह पथरी मूत्र के मार्ग से सरक जाय तब उस पुरुष को सुखहो तब बहुत पीड़ा सहित रुधिर मिला मूत्र उतरै वातकीपथरीका लक्षण ॥ जिसमें मूत्रके समय अधिक पीड़ाहो दांतों को चाबै मूत्रकरते समय कांपै लिंग और नाभिमें पीड़ाहो मूतते पुकार उठे और मल करदेवै मूत्र बूंद २ उतरै पथरीका रंग कालाहो पथरीमें कांटेसे होवैं ये लक्षण बातकी पथरीके हैं ॥ सामान्य चिकित्सा ॥ बाताश्मरीका पूर्बरूपमें स्नेहपान श्रेष्ठहै ॥ शुंठ्यादि चूर्ण ॥ शुंठि अरणी पाषाणभेद कूट वरणा गोखुरू हरड़ै अमलतास इन्हों के काढ़ा में हींग जवाखार सेंधानोन मिलाय पीने से बाताश्मरी मूत्रकृच्छ्र मन्दाग्नि कटि उरु गुदा लिंग अंड इन्होंका बात इन सबोंको नाशकरै यवादिघृत ॥ यव बेर कुलथी कतक फल इन्होंके चतुर्थांश काढ़ामें घृतको पकाय खानेसे बातकी पथरी नाश होवै ॥ वीरतर्वादि काढा ॥ वीरतर्वादि काढ़ा में गुड़ जवाखार मिलाय पीनेसे बात की पथरी नाशहोवै अन्न खार कांजी पेया काढ़ा दूध ये बातकी पथरीमें खानेसे हितहैं ॥ वरुणमूलकाथ ॥ बरणा की जड़ के काढ़ामें बरणाका कल्क

मिलाय पीने से व सहिंजना की जड़का काढ़ा थोड़ा गरमकरि पीने से बातपथरीको नाशकरै ॥ पित्तकीपथरकिलक्षण ॥ पेडूअग्निकेसमान ऐसा जलै मानों पकगयाहै पथरी बदाम के छिलके के समान और पीली लाल सफेदाई लिये हो और भिलावां की गीरीसरीखी हो ये पित्तकी पथरी के लक्षण हैं ॥ पाषाणभेद काथ ॥ पाषाणभेद के काढ़ामें शिलाजीत मिश्री मिलाय पीनेसे पित्तकी पथरीको नाशै जैसे वृक्षको इन्द्रका बज्र तैसे ॥ कफाश्मरीनिदान ॥ पेडूमें पीड़ा बहुत हो और पेडू शीतल भारीहो और उसकी पथरीचिकनी और गीली मधुवर्णहो व सफेद कुक्कुटके अंडेकी बराबरहो तिसे कफकी पथरी कहिये ये त्रिदोषज पथरी विशेषकरि बालकोंके उपजैहै क्यों कि बालक डंडेबासी धूलि सहित बुरे पदार्थों को सेवतेहैं सो पथरी का काढ़ना बहुत मुश्किल है ॥ बालकोंकीशिग्रुकाथ ॥ सहिंजनाकी छाल व बरणाकी छालके काढ़ामें जवाखार मिलाय पीनेसे कफकी पथरी नाशहोवै जैसेवृक्षवज्रसे ॥ शुक्राश्मरीलक्षण ॥ जिसपुरुषको मैथुनकरने की इच्छाहो वह वीर्यको रोके किसी प्रकार जाने नदे उसके शुक्र-की पथरी उपजै और लिंग पोतोंके बीचमें वह पवन वीर्यकोसुखाय पथरीकरै फिर वह पथरी पेडूमें पीड़ाकरै तिसे शुक्रकी पथरी कहते हैं ॥ इसकेउपद्रव ॥ पेडूमें शूलचलै मूत्रकृच्छ्रहो अंडकोषमें सोजाहो वीर्यका नाशहोवै ॥ सामान्यचिकित्सा ॥ इसमें पथरी नाशक क्रिया करै ॥ यवक्षारयोग ॥ जवाखार गुड़ इन्होंको रोगोक्तपथ्यरूप वृक्ष का पुष्प व फलकेरसमें मिलाय पीनेसे मूत्राघात शुक्राश्मरी इन्होंको नाशकरै ॥ कुटकयोग ॥ कुड़ाकी छालको दही में मिलाय खाने से और पथ्यअन्नको सेवनेसे पथरी गिरपड़ै ॥ शर्कराश्मरीनिदान ॥ बस्ति का छिद्र बंदहोनेपर पथरी सरीखी जो शर्करा है वह बायु से रेत सरीखी हो अनुलोमरूपहो मूत्रके संग बाहर निकसैहै और प्रति-लोम होनेमें बंधहोयहै मूत्रके स्रोतों में प्रवृत्तहो उपद्रवोंको पैदाकरैहै दुर्बलपना ग्लानि माड़ापना कुक्षिशूल अरुचि पांडुवर्ण गरमबायु तृषा हृद्रोग छर्दि इन्होंको उपजावै ॥ शर्कराश्मरीकाअसाध्यलक्षण ॥ जिसके नाभि पोतोंमें सूजनहो और मूत्रबंधहो शूलचलै ऐसीशर्करा

पथरी मारदेवै॥ पाषाणभेदरस॥ शोधापारा १ भाग गन्धक २ भाग इन्होंको सफेद सांठीके रसमें १ दिन खरलकरि भूधरयंत्रमें पकाय पीछे पाषाणभेदमें मिलाय चूर्णकरि खाने से पथरी को नाश करै॥ त्रिविक्रमरस ॥ तांबाकी भस्मको बकरी के दूध घृत में पकाय लेवै पीछे पारा गन्धक समभाग मिलाय निर्गुंडीके रसमें १ दिनखरल करि गोलाबनाय १ पहर बालुकायंत्रमें पकाय २ रत्तीभरदेनेसे शर्करा पथरीको नाशै इसपै बिजौराकी जड़का काढ़ा पीना अनुपानहै ॥ रसभस्मयोग ॥ बिदारीकन्द गोखुरू मुलहठी नागकेशर ये सम भाग लेय काढ़ाबनाय शहद पाराकीभस्म मिलाय खाने से साध्य व असाध्य मूत्रकृच्छ्रनाशहोवै ॥ लघुलोकेश्वररस ॥ पाराभस्म १भाग शोधा गन्धक ४भाग इन्होंकी कजलीबनाय कौड़ीमेंभरै पीछे पारासे चुशारी सोहागाको बकरीके दूधमें पीसि कौड़ीके मुखकोबंद करि पीछे कौड़ीको बरतनमें घालि कपड़माटीदेय गजपुटमें पकाय शीतलहोनेपर काढ़ि चूर्णकरि मिश्री के संग खाने से मूत्रकृच्छ्र को नाशकरै ॥ गन्धर्वादिकल्क ॥ सफेद अरंड दोनों कटैली गोखुरू कालाईष इन्होंकी जड़ोंको दहीमें पीसि कल्क बनाय मधुर रसके संग खानेसे पथरीको हरै ॥ तिलादिक्षार ॥ तिल ऊंगा केला केशू यव इन्होंके खारोंको भेड़के मूत्रके संग पीनेसे मूत्राश्मरी व मूत्र शर्करा नाशहोवै ॥ शिलाजीतयोग ॥ शिलाजीत में शहद मिलाय खानेसे व जवाखार गोखुरूको खानेसे अश्मरी रोग व पथरीजन्य मूत्रकृच्छ्र नाश होवै ॥ हिंग्वादियोग ॥ हींग इलायची दूध घृत इन्हों को मिलाय पीनेसे मूत्ररोग शुक्ररोग इन्होंको नाशै ॥ शृंगबेरादिकल्क ॥ अदरख जवाखार हरड़े दारुहल्दी काला सहिंजना इन्होंको बकरी के दहीमें पीसि खानेसे भयंकर पथरी भी गिरपड़ै तिलक्षारादियोग ॥ तिल ऊंगा करेला यव केशू इन्हों के खार सम भागलेय गजपुट में पकाय पीछे ४ माशे राखको बकरीके दूधके संग खानेसे व आनन्द भैरवी गोलीको खानेसे ७ दिनमें पथरीको नाशकरै इसमें संशय नहीं॥ मंजिष्ठादिचूर्ण ॥ मजीठ काकड़ीके बीज जीरा सौंफ आमला बेर गंधक मनशिल ये समभाग लेय चूर्ण करि

१ तोला भर हमेशह शहदके संग खानेसे पथरी निश्चय नाशहोवै॥ त्रिकंटकादिचूर्ण॥ गोखुरूके चूर्णको शहदमें मिलाय भेड़के दूधके संग ७ दिन पीनेसे पथरी नाशहोवै॥ केशरयोग॥ केशर को पुराने घृतमें खरल करि ३ दिन खानेसे लिंगकी शर्करा गिरपड़ै॥ पाषाणभेदीरस॥ जिसके आदिमें कटि कुक्षिदेशमें पीड़ाहो तिसके निरोधसे गरम मूत्रहो ऐसे लक्षणोंवाली पथरी में पाषाणभेदीरस योग्य है॥ तिलपुष्पक्षारयोग॥ तिलों के फूलोंके खारमें शहद दूध मिलाय तीन दिन पीनेसे व बिजौराके रसमें सेंधानोन मिलाय पीनेसे पथरी नाश होवै॥ गोपालकर्कटीमूलकल्क॥ गोपाल काकड़ी को पानी में पीसि ३ रात्रि पीने से पथरी को जल्दी नाशै॥ अर्कपुष्पी का कल्क॥ सूर्यमुखी को गौके दूधमें पीसि प्रभात में ३ दिन खाने से दाहयुत दारुण पथरी को नाशै॥ शतावरीमुलरस॥ शतावरि की जड़ के रस में गौके दूधको मिलाय पीनेसे पुरानी पथरी भी गिर पड़ै॥ बरुणादि काढ़ा॥ बरणाकीछाल शुंठि गोखुरू जवाखार गुड़ इन्होंके काढ़ाको ठंढाकरि पीनेसे मूत्राश्मरी शर्करा मूत्रकृच्छ्रमूत्राघात इन्होंको नाश करै व इलायची मुलहठी गोखुरू रेणुकबीज अरंडकी जड़ बासा पिपली पाषाणभेद इन्होंके काढ़ामें शिलाजीत मिश्री मिलाय पीनेसे शर्करा पथरी मूत्रकृच्छ्र इन्होंको नाशकरै॥ काढ़ा॥ बरणाके काढ़ामें गुड़ मिलाय पीनेसे पथरी वस्ति शूल ये सब शांतहोवैं॥ शिग्रुमूलकाढ़ा॥ सहिंजनाकी जड़के काढ़ाको कछुक गरमकरि पीनेसे पथरी नाशहोवै व मोरशिखाकी जड़कोचावलोंके धोवनके संग पीसि खानेसे पथरी नाशहोवै इसपै दूध चावल का भोजन करै॥ शुंठिकषाय॥ शुंठि के काढ़ा में हल्दी गुड़ मिलाय पीनेसे पुरानी शर्करा भी लिंगद्वारसे झर पड़ै॥ शुंठ्यादिकाढ़ा॥ शुंठि अरणी ऊंगा सहिंजना वरणा गोखुरू हरड़ै अमलतास इन्होंके काढ़ामें हींग जवाखार सेंधानोन मिलाय पीने से पथरी मूत्रकृच्छ्रको हरै और दीपन पाचनहै॥ आकल्लादिकाढ़ा॥ करकरा गोखुरूकीजड़ तुलसीरस पाषाणभेद अरंड की जड़ पिपली मुलहठी तक्राजड़ निर्गुंडी लौंग शुंठि इन्होंका काढ़ा बनाय इलायची का चूर्णमिलाय ७ दिन पीनेसे पीड़ा

सहित शर्करा पथरी इन्होंको नाशकरै व भेड़का दूध शहद मिलाय पीनेसे पथरीजावै व निसोतके चूर्णमें इंद्रयवका चूर्णमिलाय दूधके संग व चावलोंके धोवनके संग खाने से पथरी नाशहोवै॥ कुलथिकाथ॥ कुलथी का काढ़ा ८ तोले शरपुंखी सेंधानोन २ माशे मिलाय पीनेसे पथरी मूत्रके संग गिर पड़े और शर्करा भी शांतहोवै यह अनेकवार देखाहै॥ कूष्मांडस्वरस॥ कोहला के रसमेंहींग जवाखार मिलाच पीनेसे वस्तिशिस्नका शूल पथरी शर्करा इन्होंको नाशकरै वरुणादिघृत॥ वरणा ४०० तोले कूटि १ द्रोणभर पानी में काढ़ा चतुर्थांश बाकीरहनेपर घृत ६४ तोले मिलाय पकाय पीछे वारुणी १ तोला केला १ तोला बेल १ तोला तृणपंचक १ तोला गिलोय १ तोला शिलाजीत १ तोला काकड़ीबीज १ तोला दूध १ तोला तिलका खार १ तोला केशूकाखार १ तोला जुइ १ तोला इन्होंको मिलाय घृतकोसिद्धकरि देशकाल बिचारि पीनेसे शर्करा पथरी मूत्रकृच्छ्र इन्होंकोनाशै और अजीर्णसें दही मस्तुके संगलेवै॥ पाषाणभेदपाक॥ पाषाणभेद ६४तोले लेय चूर्णकरि कपड़ासे छानि २५६ तोला गौकेदूधमें मंदाग्निसेपकाय पलटासेचलाताजावै जब ज्यादह कड़ाहो तब इलायची लौंग पिपली मुलहठी गिलोयहरड़े रेणुकाबीज गोखुरू बांसा शरपुंखी सांठी जवाखार बहेड़ा जटामांसी सप्तलाकमल वंगभस्म लोहभस्म अभ्रकभस्म कपूर कचूर तमालपत्र नागकेशर दालचीनी शिलाजीत ये दो दो तोलेलेय चूर्णकरि मिश्री ९६ तोला इनसबोंको पूर्वोक्तमें मिलाय शीतल होनेपर शहद ६४ तोला मिलाय चीकना बरतन में घालिधरै पीछे प्रभात में आधा तोला रोज खावै और तीक्ष्ण तैलादिक को बर्जै यह ४ प्रकार की पथरी को व मूत्रकृच्छ्र खुड़ बात मूत्राघात प्रमेह मधुप्रमेह अधोरक्त वस्तिगत कुक्षिगत पित्त इन्होंको नाशै और तीव्रपथरी वालेको बिशेष कर सुखदेवै यह ब्रह्माजीने रचिकर च्यवन मुनिको बतायाहै॥ बरुणादिगुड़॥ जो कीड़ोंको नहीं खायाहो और नयाहो चिकना पवित्र स्थानमें उपजाहो ऐसासुंदर वरणा ४०० तोले लेवै अच्छे मुहूर्त में पीछे चौगुना पानी में काढ़ा बनाय चतुर्थांश बाकीरहनेपर बरा-

बरका गुड़मिलाय दृढ़बर्त्तन में पकाय शीतल होनेपर शुंठि काकड़ीकेबीज गोखुरू पीपली पाषाणभेद पद्माख कोहला बहेड़ा मनशिल बथुआ सहिंजना दाख इलायची लघुपाषाणभेद हरड़े बायबिड़ंग ये चार २ तोले लेय चूर्णकरि पूर्वोक्तमें मिलाय पीछे शक्ति मुवाफ़िक खानेसे सब दोषों की पथरी जल्दी गिरै ॥ अश्मरीपथ्य ॥ वस्तिकर्म बिरेचन बमन लंघन स्वेदन गोतामारके न्हाना जलका छिड़कना यव कुलथी दोबर्षके पुराने धान मदिरा मरुदेश के जीवों का मांस रस पुराना कोहला कसेरू गोखुरू बरणा शाक अदरख पाषाणभेद जवाखार पित्तपापड़ा गिलोय पथरीका निकालना ये सब पथरी रोगमें पथ्यहैं ॥ अपथ्य ॥ मूत्र तथा बीर्यके वेगको रोकना खट्टा बिष्टंभी रूखा तथा भारी अन्नपान बिरुद्धपान तथा भोजन ये पथरी में अपथ्य हैं ॥

इतिश्रीबेरीनिवासकरीवदत्तवैद्यविरचितनिघण्टरत्नाकर भाषायांपथरीप्रकरणम् ॥

प्रमेहकर्मविपाक ॥ चांडाली स्त्री के संग भोग करने से प्रमेह रोग उत्पन्न होवै अथवा भूख तिससे पीड़ित होवै ॥ प्रायश्चित्त ॥ यव मध्य तीन चांद्रायण ब्रतकरै पीछे इदमापः प्रवहत इत्यादि मन्त्रका मेधातिथि ऋषिहै ऐसा ध्यानकरि और इसका जापकरि पीछे घृतका अग्निमें होमकरै ॥ सशूलमेहकर्मविपाक ॥ गौ आदिसे अभिगमन कहे भोग करनेसे शूलसहित प्रमेह उत्पन्नहोवै ॥ प्रायश्चित्त ॥ इसमें शांतपन ब्रतादिकरै ॥ बातमेहकर्मविपाक ॥ अमावास्या पूर्णिमा आदि पर्ब तिथिमें स्त्रीसंग करनेसे व कुमारी कन्याके साथ भोग करने से बातप्रमेह रोग उत्पन्न होवै इसकी शांति वास्ते चांद्रायण ब्रतकरै ॥ मधुमेहकर्मविपाक ॥ जो पुरुष मातृगामी हो निरन्तर वह मधुमेह रोगीहोवै जो पितृबधू कहे मौसी आदि से भोगकरै वह जलमेह रोगीहोवै जो भगिनीसे नित्यभोगकरै वह इक्षु मेहरोगी होवै ॥ प्रायश्चित्त ॥ इन पापोंकी शांतिके वास्ते ६ वर्ष

व ५ वर्ष व ३ वर्ष कृच्छ्र चांद्रायणादि व्रतकरै॥ प्रमेहनिदान॥ अधिक बैठनेसे और सोवनेसे और नवीन पानी पिवनेसे बकरा भेड़ कामांस और गुड़ आदि बहुत मिठाई और बहुत दही और कफकारी वस्तु इन्होंके खानेसे श्रम और बहुत मैथुन करने से धूपके रहनेसे विरुद्ध और गरम भोजनके करनेसे बहुत मदिराके पीनेसे कडुआरसके खानेसे पुरुषके प्रमेहरोग उत्पन्न होता है॥ कफादि प्रमेहसंप्राप्ति॥ पेडूमें प्राप्त जो मेदमांस कफका जल तिन्होंको कफ दूषितकरके कफप्रमेहको उत्पन्नकरैहै ऐसी वायुभी अपनी अपेक्षा आपसों क्षीण जो कफपित्त तिन्होंको पेडूमें प्राप्तकरि और शुद्धजो मांसका स्नेह उसकी और शरीरके जल पेडूकी नसोंके मुख में प्राप्तकरि वायुके प्रमेहको पैदाकरैहै॥ कफादिजन्यप्रमेहसाध्यासाध्य॥ कफके १० प्रमेह साध्य हैं याने सामान्य यत्नसे जावै हैं और पित्त के ६ प्रमेह जाप्यहैं अर्थात् यत्नसे दबेरहैं पित्तका विषमयत्नहै क्योंकि दोष दूष्यके विषमपनेसे ऐसे दोष दूषितहैं और वायुके ४ प्रमेह असाध्य हैं पित्त ये नहीं क्योंकि मज्जाकोले आदि गम्भीर धातुहैं और सर्वशरीर व्यापीहैं और शरीरके विनाशकारी हैं इस कारण वायुका प्रमेह असाध्यहै॥ प्रमेहमेंदोषदूष्यसंख्या॥ कफ पित्त वायु ये दोषहं और मेद शुक्र क्लेद मांस आलस मज्जा रस बल सब धातुओंके सार मांस ये दूष्यहैं इन्होंके योगसे २० प्रकारके प्रमेह उपजैहैं॥ पूर्वरूप॥ दांत तालु जीभ इन्होंमें मैल अधिकहो हाथ पैर में दाह और देह चीकनीहो तृषा बहुतलगै मुख मीठारहै येलक्षण हों तो जानिये प्रमेह होगा॥ प्रमेहकासामान्यलक्षण व कारण॥ बहुत ठंढा और पतला और मैला मूत्रहो और दोष दूष्यको विचारि प्रमेहका निश्चयकरि चिकित्साका आरम्भकरै॥ प्रमेहके विंशतिभेद॥ उदकप्रमेह १ इक्षुप्रमेह २ सांद्रप्रमेह ३ सुराप्रमेह ४ पिष्टप्रमेह ५ शुक्रप्रमेह ६ सिकताप्रमेह ७ शीतप्रमेह ८ शनैःप्रमेह ९ लालाप्रमेह १० क्षारप्रमेह ११ नीलप्रमेह १२ कालाप्रमेह १३ हारिद्रप्रमेह १४ मांजिष्ठप्रमेह १५ रक्तप्रमेह १६ वसाप्रमेह १७ मज्जा प्रमेह १८ क्षौद्रप्रमेह १९ हस्तिप्रमेह २० ये क्रमसेजान लेने॥

कफके १० प्रमेहोंके निदान ॥ निर्मल सफेद और बहुत शीतल गंध रहित जलके सदृश कछुक मदरंग और चिकना मूतै तिसे उदक प्रमेह कहतेहैं ईषके रसके समान मीठाहो तिसे इक्षुप्रमेह कहते हैं और जैसे बासीपानी बासनमें धराहुआ ठंढा होताहै वैसा ठंढामूतै तिसे सांद्रप्रमेह कहते हैं और जिस के मूत्र में मदिराकैसी दुर्गंधि आवे और उसकामूत्र ऊपर तो निर्मल हो नीचे मदरंगा हो तिसे सुराप्रमेह कहते हैं चावल आदि के चूनके पानी सदृश सफेद कष्ट से मूतै और मूततेहुये रोमांचहो तिसे पिष्टप्रमेह कहतेहैं वीर्यसहित मूतै तिसे शुक्रप्रमेह कहते हैं जिसके मूत्र में बालू की कणी कैसी कफकी फुटक आवे तिसे सिकताप्रमेहकहते हैं जो बारम्बार बहुत शीतल मूतै तिसे शीतप्रमेहकहतेहैं जो हलवे २ निपटकममूतै तिसे शनैःप्रमेह कहते हैं लारकी ताती समान मूतै तिसे लालाप्रमेह कहते हैं ॥ पित्तप्रमेहके ६ प्रकार ॥ क्षारमेह १ नीलमेह २ कालमेह ३ हारिद्रमेह ४ मांजिष्ठमेह ५ रक्तमेह ६ ये पित्तके हैं ॥ क्षारादिप्रमेह लक्षण ॥ जिसके मूत्रमें खारकैसी गंध और वर्णहो और खारके पानी के सदृशमूतै तिसे क्षारप्रमेह कहतेहैं जिसका मूत्र नीलके रंगके समान उतरै तिसे नीलप्रमेह कहते हैं स्याही के समान कालामूतै तिसे कालप्रमेह कहतेहैं हल्दीकेरंगके समान कडुआ दाहकोलिये मूतै तिसे हारिद्रप्रमेह कहतेहैं जो मजीठ के पानीकेरंगके सदृश मूतै और दुर्गंध बहुत आवे तिसे मांजिष्ठ प्रमेह कहते हैं जो रक्त के समान दुर्गंध युक्त मूतै तिसे रक्तप्रमेह कहते हैं ॥ बायुके प्रमेह ४ ॥ वसामेह १ मज्जामेह २ हस्तिमेह ३ मधुमेह ४ ये बायुकेहैं ॥ वसादिमेहोंके लक्षण ॥ शुद्धमांसका जो घृतको और उसके रंगके सदृश मूतै तिसे वसाप्रमेह कहतेहैं हाड़ोंकी मज्जाको लिये और उसके रंगके सदृश मूतै बारबार तिसे मज्जाप्रमेह कहते हैं कषैला और शहदके सदृश मीठा और रूखामूतै तिसे क्षौद्रप्रमेह कहतेहैं मस्त हाथी जैसे हलवे २ जल को छोड़ै और मूत्र बेग होवै नहीं और निरन्तर लिंगसे झिरता रहै तिसे हस्तिप्रमेह कहते हैं ॥ कफ के प्रमेहोंका उपद्रव ॥ अन्न पचैनहीं भोजनमें अरुचि और छर्दि आवे

नींद खांसी बहुत उपजे पीनस हो ये कफके प्रमेहों के उपद्रव हैं॥ पित्तके प्रमेहों का उपद्रव॥ पेडू और लिंगमें पीड़ाहो अंडकोशफटने लगे ज्वर दाह तृषा मूर्च्छा अतिसारहो खट्टी२ डकार आवै ये पित्तके प्रमेहों के उपद्रव हैं॥ वायुके प्रमेहों के उपद्रव॥ जिस में उदावर्त रोगहो शरीर कांपे हृदयदूखे सब रसोंके खाने की इच्छा रहै पेटमें शूलहो नींद आवैनहीं शरीर सूखजावै श्वास खांसी हो ये वायुके प्रमेहोंके उपद्रवहैं॥ असाध्यलक्षण॥ वातपित्त कफोंकेउपद्रव संयुक्तहो और प्रमेहकी पिटिका संयुक्त हो तिसे असाध्य जानिये वह मरे॥ स्त्रीके प्रमेह नहीं होता तिसका कारण॥ हरमहीना स्त्रीको कपड़े आते हैं तिसकरि सब शरीरके दोष शुद्धहोजातेहैं इसवास्ते स्त्री के प्रमेह रोग नहीं उपजता॥ असाध्यलक्षण॥ जो मनुष्य प्रमेह व मधुप्रमेह युक्त उत्पन्न हो तिसका इलाज नहीं और कुलसंबंधी रोग योनि पितृ पितामहादिक के उपजे तो उनकाभी इलाज नहीं असाध्य जानो॥ मधुमेहोत्पत्तिकारण॥ सब प्रमेहोंका इलाज न हो तो मधुप्रमेह होजाय इसवास्ते मधुप्रमेह असाध्य है॥ दोप्रकार मधुप्रमेहकाकारण॥ मधुप्रमेह में शहद सरीखा मूत्र उतरै १ दूसरा धातुओं का क्षयहोनेसें वायु क्रुद्धहो दोषोंके मार्गको रोकदेवै॥ आवरणलक्षण॥ दोष चिह्नों से आवृत्त जो मेह सो दोष युक्त वायुके लक्षणों को अकस्मात् दिखावै सो क्षणमें क्षीणदीखै और क्षणमें पुष्टदीखै यह कष्टसाध्य है॥ मधुमेहप्रवृत्तिनिमित्त॥ संपूर्ण प्रमेहोंमें विशेषकरि मधुरमूतै तिसका सब शरीर मीठाहो इसवास्ते सब प्रमेहोंकी मधुप्रमेह संज्ञाजानों॥ लोध्रादिकाढ़ा॥ लोध हरड़ै कायफल नागरमोथा बायबिड़ंग पाढ़ा अर्जुन धमासा कदंबकीडाली अजमान बायबिड़ंग दारुहल्दी नागरमोथा संभलू ये चारों काढ़े शहद संयुतकरि पीनेसे कफ प्रमेहोंको नाशकरे॥ कफप्रमेह पर१० काढ़े॥ हरड़ै कायफल नागरमोथा लोध इन्हों का काढ़ा १ पाढ़ा बायबिड़ंग अर्जुन धमासा इन्होंका काढ़ा२ दारुहल्दी हल्दी तगर बायबिड़ंग इन्होंका काढ़ा ३ कदंब शाल अर्जुन अजमान इन्होंका काढ़ा ४ दारुहल्दी बायबिड़ंग खैर धौंके फूल इन्हों का

काढ़ा ५ देवदारु कूट चन्दन अर्जुन इन्होंका काढ़ा ६ दारुहल्दी अरणी त्रिफला पाढ़ा इन्होंका काढ़ा ७ पाढ़ा मूर्वा गोखुरू इन्हों का काढ़ा ८ अजमान बाला गिलोय हरड़ै इन्होंका काढ़ा ९ जामुन आमला चीता सप्तपर्णी इन्होंका काढ़ा १० ये दश काढ़े शहद संयुत पीनेसे जल प्रमेह इक्षुप्रमेह सांद्र प्रमेह सुरा प्रमेह पिष्टप्रमेह शुक्रप्रमेह सिकताप्रमेह शीतप्रमेह शनैःप्रमेह लालाप्रमेह इन्होंको नाशकरे ॥ शनैर्मेहपर ॥ त्रिफला गिलोय का काढ़ा शनैःप्रमेह को नाशै ॥ पिष्टमेह ॥ हल्दी दारुहल्दी इन्हों का काढ़ा पिष्टप्रमेह को नाशै ॥ सिकतामेह ॥ नींबका काढ़ा सिकता प्रमेहको नाशै ॥ उदकप्रमेह ॥ पारिजातका काढ़ा उदकप्रमेह को नाशै ॥ सांद्रमेह ॥ सप्तपर्णी का काढ़ा सांद्रमेहको नाशै ॥ लालाप्रमेह ॥ त्रिफला अमलतास मुनक्का दाख इन्होंका काढ़ा लालाप्रमेहको नाशै ॥ शुक्रप्रमेह ॥ दूब शेवाल क्षुद्रमोथा करंजवा कसेरू इन्हों का काढ़ा व अर्जुन चन्दन का काढ़ा पीनेसे शुक्रप्रमेहको नाशै ॥ शीतप्रमेह ॥ पाढ़ा गोखुरूका काढ़ा शीतप्रमेह को नाशै ॥ इक्षुप्रमेह ॥ नींब का काढ़ा इक्षुप्रमेहको नाशै ॥ सुराप्रमेह ॥ शंभलका काढ़ा सुराप्रमेह को नाशै ॥ पित्तमेहपरचारकाढे ॥ लोध अर्ज्जुन बाला पतंग इन्हों का काढ़ा १ नींब बाला हरड़ै आमला इन्होंकाकाढ़ा २ आमला अर्ज्जुन नींब कूड़ा इन्होंका काढ़ा ३ काला कमल जीरा हल्दी अर्ज्जुन इन्होंका काढ़ा ४ इन चारों काढ़ों में शहद मिलाय पीनेसे पित्तके ६ प्रमेह नाश होवैं ॥ पित्तप्रमेहपर ६ काढ़े ॥ बाला लोध अमरकंद चन्दन इन्होंका काढ़ा १ बाला नागरमोथा आमला हरड़ै इन्हों का काढ़ा २ परवल नींब आमला गिलोय इन्होंका काढ़ा ३ नागरमोथा हरड़ै पुष्करमूल इन्होंका काढ़ा ४ लोध बाला दारुहल्दी धौकेफूल इन्होंका काढ़ा ५ शुंठि कमल अर्ज्जुन सौंफ इन्होंका काढ़ा ६ ये छहों काढ़े मांजिष्ठप्रमेह १ हारिद्रप्रमेह २ नीलप्रमेह ३ क्षारप्रमेह ४ कालप्रमेह ५ रक्तप्रमेह ६ इन्होंको नाशै ॥ क्षारमेह ॥ त्रिफला के काढ़ा को पीने से क्षारप्रमेह जावै ॥ हारिद्रमेह ॥ अमलतास का काढ़ा हारिद्रप्रमेह को नाशै ॥ मांजिष्ठमेह ॥ मजीठ चन्दनका काढ़ा

मांजिष्ठप्रमेह को नाशै ॥ शोणितमेह ॥ गिलोय कुचला के बीज का-
श्मरी खजूर इन्हों के काढ़ा में शहद मिलाय पीनेसे शोणितप्रमेह
जावे ॥ दुष्टरक्तजप्रमेह ॥ खजूर काश्मरी फल कुचला के बीज गि-
लोय इन्हों का काढ़ा ठंडाकरि शहद मिलाय पीनेसे रक्तप्रमेहको
नाशै ॥ नीलमेह ॥ सालसादि काढ़ा व पीपलकी छाल का काढ़ा
नीलप्रमेहको नाशै ॥ सर्पिमेह ॥ कूट पाढ़ा हींग कुटकी इन्हों का
चूर्ण व गिलोय चीता इन्होंका काढ़ा वसाप्रमेह को नाशै ॥ छिन्ना-
दिकाढ़ा ॥ गिलोय चीता इन्होंका काढ़ा व पाढ़ा कूड़ा हींग कुटकी
कूट इन्होंका काढ़ा वसाप्रमेहको नाशै ॥ हस्तिमेह ॥ कुचलाबीज कैथ
सिरसम केशू पाढ़ा मूर्वा धमासा इन्होंके काढ़ामें शहद मिलाय
पीनेसे हस्तिप्रमेह जावे ॥ हस्तिप्रमेह ॥ हाथी घोड़ा बड़ैलासुअर गधा
ऊंट इन्होंके हाड़ों का खार हस्तिप्रमेहको नाशकरै ॥ वसामेह व ह-
स्तिमेह ॥ अरणी का काढ़ा वसाप्रमेहको नाशै और पाढ़ा सिरसम
धमासा मूर्वा केशू कुचलाके बीज कैंथ इन्हों का काढ़ा हस्तिप्रमेह
को नाशकरै॥ क्षौद्रमेह व वसामेह ॥ सुपारी खैर इन्होंके काढ़ामें शहद
मिलाय पीने से क्षौद्रप्रमेह नाशहोवै। और गिलोय चीता इन्होंका
काढ़ा व पाढ़ा कूड़ा हींग कुटकी कूट इन्होंका चूर्ण खानेसे वसा-
प्रमेह नाशहोवै ॥ द्वितीययोग ॥ चुका मेदा इन्हों के काढ़ा में शहद
मिलाय पीनेसे वसाप्रमेह जावै वा अरणी का काढ़ा वा काला-
शीशमका काढ़ा वसाप्रमेहको नाशै ॥ कफपित्तजप्रमेहपर ॥ कपिला
सप्तपर्णी अर्ज्जुन बहेड़ा रोहित कूड़ा इन्होंके फूलोंको दहीमें पीसि
शहद मिलाय पीने से कफपित्तप्रमेह नाशहोवै ॥ कफवातजप्रमेह
पर ॥ हरड़ें कायफल नागरमोथा लोध लालचन्दन वाला इन्हों के
काढ़ामें शहद व हलदीका चूर्ण मिलाय पीनेसे कफबातजप्रमेह
नाशहोवै ॥ पित्तबातजप्रमेहपर ॥ बायबिड़ंग दारुहल्दी हल्दी खैर
वाला सुपारी इन्होंका काढ़ा प्रभात में पीनेसे पित्तबातका प्रमेह
नाशहोवै ॥ त्रिफलादिक्काथ॥ त्रिफला देवदारु दारुहल्दी नागरमो-
था इन्हों का काढ़ा शहद सहित व गिलोय का स्वरस शहद सहि-
त पीनेसे सबप्रमेहों को नाश करै ॥ त्रिफलादि काढ़ा ॥ त्रिफला

देवदारु दारुहल्दी गड़ूभा नागरमोथा इन्हों के काढ़ा में हल्दी शहद मिलाय पीने से सब प्रमेह नाश होवें॥ पलाशपुष्पकाढ़ा॥ केशूके फूलों के काढ़ामें मिश्री मिलायपीने से २० प्रकारके प्रमेह नाशहोवें॥ प्रमेह चिकित्सा॥ आमलाकेकाढ़ामें हल्दी शहद मिलाय पीनेसे व बड़के अंकुरोंके काढ़ामें शहदमिलायपीनेसे व पाषाणभेदके कादा में शहद मिलाय पीने से प्रमेह नाशहोवे॥ विड़ंगादिकाढ़ा॥ बायबिड़ंग हल्दी मुलहठी शुंठि गोखुरू इन्होंके काढ़ा में शहदमिलाय पीनेसे भयंकर प्रमेहभी नाशहोवे॥ अन्यप्रकार॥ कूड़ाकी छाल आसनाकी छाल नागरमोथा त्रिफला इन्होंकाकाढ़ा सब प्रमेहोंको नाश करै॥ प्रमेहमें चणकयोग॥ हल्दी दारुहल्दी त्रिफला इन्होंके कल्कको ३ दिनघाममेंधरै पीछे कल्क को माटी के बरतन में घालि दोलिका यंत्रमें एक मुष्टिभर चणेघालि ६० घड़ी राखि पीछे हमेशा वर्द्धमान खानेसे असाध्य प्रमेहभी नाशहोवे॥ प्रमेहमें ४ योग॥ त्रिफला चूर्ण शहदमें मिलाय चाटनेसे व शिलाजीत व लोहभस्म व कीटी इन्होंको अलग अलग खानेसे प्रमेह रोग नाश होवे॥ शालादिकल्क॥ अर्ज्जुन नागरमोथा कपिला इन्होंका कल्क १ तोला आमला का रस शहदमें मिलाय खानेसे सबप्रमेह नाश होवें॥ बंग व नागभस्मयोग॥ गिलोय रसमें शहद बंगभस्म मिलाय खानेसे प्रमेहको नाशै व शीशाकी भस्म खाने से प्रमेह को नाश करै॥ द्विनिशादिहिम॥ दारुहल्दी हल्दी त्रिफला इन्होंको कूटि रात्रि को पानीमें भिगोय प्रभातमें शहद मिलाय पीनेसे प्रमेह का शूल नाशहोवे॥ गुडूची व धात्रीरसयोग॥ गिलोयके रस में शहद मिलाय पीनेसे व आमलाके रसमें शहद हल्दी चूर्ण मिलाय पीने से प्रमेह शांत होवै॥ अंकोल्यादियोग॥ अंकोलीकी कली आमला हल्दी शहद इन्हों को मिलाय चाटने से २० प्रकार को प्रमेह शांत होवै सत्यहै इसमें संशय नहीं॥ भूधात्र्यादियोग॥ भूमिआमला दालचीनी इलायची तमालपत्र बीस मिरच इन्होंको पीसि खाने से असाध्यप्रमेहभी ७ रात्रि में नाशहोवे संशयनहीं॥ कतकबीजयोग॥ कतकबीज १ तोला लेय तक्रमें पीसि खानेसे प्रमेहगण को हरै

जैसे राम रावणको जैसे ॥ शाल्मली स्वरस ॥ शंभलकी छालकास्व-रस में हल्दीका चूर्ण शहद वंगभस्म मिलाय पीनेसे प्रमेहों को नाशै जैसे सिंह हाथियोंको ॥ एलादिचूर्ण ॥ इलायची शिलाजीत पिपली पाषाणभेद इन्होंकेचूर्णको चावलों के धोवनके संग खाने से प्रमेह नाशहोवै ॥ कर्कट्यादि चूर्ण ॥ काकड़ीबीज त्रिफला सेंधा-नोन ये समभागले चूर्णबनाय गरमपानी के संग पीने से मूत्ररोध को नाशकरै ॥ त्रिफलाचूर्ण ॥ १ हरड़ै १ बहेड़ा २ आमले ४ भाग व ३ भाग इसे त्रिफला कहते हैं यह सोजा प्रमेह विषमज्वर कफ पित्त कुष्ठ इन्होंको नाशै और दीपनी है और त्रिफला शहद घृत में मिलाय खाने से नेत्ररोगों को नाश करै ॥ गूगल ॥ त्रिकुटा त्रिफला नागरमोथा गूगल ये समभाग लेय गोखुरू के काढ़ा में गोलीबनाय देशकालको विचारि खावै ये गोली अनुलोमन करैहै इसपै परहेज नहींहै मनोवांछित भोजनकरै यहप्रमेह बातरोग बात-रक्त मूत्राघात मूत्रदोष प्रदर इन्होंको नाशै ॥ गोक्षुरादिगूगल ॥ गो-खुरू ११२ तोलेका छःगुना पानी में काढ़ाबनाय आधा रहने पर उतारडालै पीछे शोधागूगल २८ तोले मिलाय फिर पकावै गुड़के पाकसमान होनेपर त्रिकुटा त्रिफला नागरमोथा इन्होंका चूर्ण २८ तोले मिलावै पीछे गोलीबनाय खानेसे प्रमेह मूत्रकृच्छ्र प्रदर मूत्रा-घात वातरक्त वातरोग शुक्रदोष पथरी इन्होंको नाशकरै ॥ चंद्रक-लावटी ॥ इलायची कपूर शिलाजीत आमला जायफल गोखुरू शम्भल पारा वंग लोहभस्म ये समानभाग लेय गिलोय शम्भल इन्होंके काढ़ामें भावनादेय २ माशेरोज शहदमें मिलाय चाटने से सब प्रमेहको नाशै ॥ चंद्रप्रभावटी ॥ मिरच त्रिकुटा त्रिफला जवाखार साजीखार सुहागाखार चाव चीता सारिवा पिपलामूल नागरमोथा कचूर सोनामाखी दालचीनी बच देवदारु गजपिपली चिरायता जमालगोटा बीज हल्दी तमालपत्र इलायची अतीस ये एक एक तोलालेय लोहभस्म ८ तोला बंशलोचन ४ तोला गूगल ४०तोला शिलाजीत ३२ तोला इन्होंको मिलाय १० माशेकी गोली बनाय पीछे शहद घृत में मिलायखावै ऊपर तक्र मस्तु गोघृत मीठारस

इन्होंमें से एककोयेसाका अनुपानकरै यह ववासीर प्रदर ज्वर विषमज्वर नाड़ीव्रण पथरी मूत्रकृच्छ्र विद्रधी मन्दाग्नि उदररोग पांडु कामला क्षयी भगन्दर पिटिका गुल्म प्रमेह अरुचि शुक्रदोष उरःक्षत कफ बात पित्त इन रोगोंको नाशकरै। और बूढ़ाको जवानकरै बल पराक्रमको बढ़ावै इसपै अन्न मार्ग गमन मैथुन मनोवांछित करै यह चंद्रप्रभा गोली संसारमें विख्यातहै आनन्द देवैहै चंद्रमा समान कांतिको शरीर में बढ़ावै है॥ सिंह्यामृतघृत॥ कटैली १०० तोला गिलोय १०० तोला इन्हों को कूटि ऊखलमें ४ चार द्रोण पानीमें पकाय चतुर्थांश काढ़ा बाकी रहनेपर घृत ६४तोला मिलाय पकाय पीछे त्रिकुटा त्रिफला रास्ना बायबिड़ंग चीता काश्मरीजड़ करंजवाजड़ इन्हों का बारीक चूर्ण बनाय पूर्वोक्त में मिलाय दूध चावल के संग शक्ति प्रमाण खानेसे प्रमेह मधुप्रमेह मूत्रकृच्छ्र भगन्दर आलस्य अंत्रवृद्धि कुष्ठ क्षयी इन्हों को नाशै॥ हरिद्रातैल॥ हल्दी काढ़ा २५६ तोला दूध १२८ तोला कूट असगंध लहसुन हल्दी पिपली इन्हों का कल्क तिलों का तेल ६४ तोला इन्हों को मिलाय तेलको सिद्धकरि और कपास के बिंदोलाकी गीरी आंकोलीजड़की छाल और फूल केतकबीज हरड़ैं इन्होंको चौगुणा पानी में पकाय चतुर्थांश काढ़ाबनाय पूर्वोक्तमें मिलाय और केतकी रस मिलाय फिर पकाय पीछे १तोला रोजखानेसे २० प्रमेहोंको नाशै॥ पूगपाक॥ नागकेशर नागरमोथा चन्दन त्रिकुटा आमला चिरोंजी कोकिलाक्ष लज्जावंती दालचीनी इलायची तमालपत्र जीरास्याहजीरा शिंगाड़ा बंशलोचन जावित्री लौंग धनियां बहुला ये प्रत्येक तोला तोला भरले सुपारी ३२ तोला इन्होंका चूर्णकरि ९६ तोला दूधमें पकाय पीछे गौकाघृत १६तोला मिश्री२००तोला आमला १६तोला शतावरि १६तोला इन्होंका चूर्ण मिलाय मन्द अग्निसे पकाय शुभ दिनमें पीछे चिकने बरतनमें घालि धरै पीछे अग्निबल बिचारि प्रभातमें खानेसे यहप्रमेह जीर्णज्वर आम्लपित्त रक्तस्राव बवासीर मन्दाग्नि इन्होंको नाशै और पुष्टि बीर्य को बढ़ावै और स्त्रियोंको गर्भदेवै और प्रदर नाश होवै और मेदआम इन्हों

को नाशकरै ॥ अश्वगंधादिपाक ॥ असगंध ३२ तोला गौकादूध ६सेर दालचीनी इलायची तमालपत्र नागकेशर ये प्रत्येक तोला तोला जायफल केशर वंशलोचन मोचरस जटामांसी चन्दन लालचन्दन जावित्री पिपली पिपलामूल लौंग कंकोल मेढ़ासिंगी अखरोट की मज्जा भिलावांबीज शिंगाड़ा गोखुरू रससिंदूर अभ्रकभस्म शीशाभस्म वंगभस्म लोहभस्म ये सब तीन तीन माशे मिलाय मन्दाग्निसे पकाय पीछे शक्तिमाफिक खानेसे सर्व प्रमेह जीर्णज्वर शोष गुल्म पित्तरोग वातरोग इन्होंको नाशै वीर्य को वढ़ावै और पुष्टि अग्नि कांति इन्होंको वढ़ावै और मनुष्यों के चित्तको प्रसन्न करै ॥ शाल्मपाक ॥ एक द्रोण दूध में शंभल की छाल का चूर्ण १६ तोले पकाय मन्दाग्निसे पीछे गुड़ ६४ तोला मिलाय पाक वनावै पीछे दालचीनी इलायची तमालपत्र नागकेशर लौंग जायफल नागरमोथा वंशलोचन धानियां शुंठि पिपली मिरच असगन्ध हरड़ें लोहभस्म इन्होंका चूर्णमिलाय पीछेसेवनेसे हृद्रोग क्षयी शोष वातरोग हिचकी असृक्शोष २० प्रकार का प्रमेह शिरोविकार इनरोगोंको नाशकरै ॥ द्राक्षापाक ॥ दाख ६४तोला दूध ६४ तोला मिश्री ६४ तोला इन्होंको मिलायपकाय पीछे दालचीनी इलायची तमालपत्र नागकेशर त्रिकुटा कस्तूरी लोहभस्म अभ्रकभस्म केशर जावित्री जायफल कपूर चांदीभस्म कुस्तुंवरी चन्दन येसव दो२ तोलेलेय चूर्णकरि पूर्वोक्त में मिलाय पीछे प्रभात में रोज़ २ तोले सेवनेसे शरीर को चिकनाकरै और बीर्यकोवढ़ावै और प्रमेह पित्त रोग मूत्राघात बिड्बंध मूत्रकृच्छ्र रक्तपीड़ा नेत्रपीड़ा हृदय पैर हाथ तलवा इन्हों के दाह येसब नाशहोवैं और मनुष्यों को सुख देवै ॥ अभ्रकयोग ॥ चन्द्रिकारहित अभ्रकभस्म त्रिफला हल्दी इन्हों के चूर्ण में शहदमिलाय चाटनेसे जल्दी सब प्रमेहनाशहोवैं ॥ नागभस्मयोग ॥ शोधाशीशा भस्म २ रत्तीभरमें आमलाचूर्ण हल्दी शहद मिलाय खाने से सब प्रमेह नाशहोवैं ॥ गंधकयोग ॥ गंधक को गुड़के संग १ तोलाभर खाय ऊपर दूधको पीने से २० प्रकार के प्रमेह और पिटिका नाशहोवै ॥ शिलाजीतयोग ॥ शिलाजीत को

दूध मिश्री में मिलाय प्रभात में पीने से सब प्रमेह २१ दिन में नाशहोवैं ॥ स्वर्णमाक्षिकभस्मयोग ॥ सोनामाखी का भस्म शहद में मिलाय चाटनेसे सब प्रमेहोंको नाशै और सोनामाखी की भस्मको गिलोयसतमें मिलाय खाने से पित्तप्रमेह नाशहोवै ॥ बहुमूत्रमेहनिदान ॥ शरीरमाड़ाहोजाय पसीनाआवै अंगमेंगंधआवै और हाथपैर जीभ नेत्र कान इन्होंमेंदाहरहै अंग शिथिलरहै अरुचिहोय पिटिका उपजै कंठ तालु ओष्ठ इन्हों में शोषहो और दाहरहै और शीतल पदार्थोंकी इच्छाबनीरहै शरीरकारंग सफ़ेदहोय और ज्यादा माड़ा होताजावै परिश्रम युतरहै पीलामूत्र उतरै और मूत्र ऊपर माखी आदि देरतकबसैं ये बहुमूत्रप्रमेहके लक्षणहैं ॥ दूसराप्रकार ॥ पसीना आवै अंगमें गंधउपजै शरीर शिथिलहोजावै और शय्या आसन शयन इन्होंकी इच्छाबनीरहै हृदय नेत्र जीभ कान इन्होंमें दाहरहै अंग घनरहै केश नख बढ़जावैं शीतलपदार्थकी इच्छाबनीरहै कंठ तालुमें शोषरहै मुख मीठारहै हाथ पैरों में दाहरहै और मूत्र ऊपर कीड़ी आयबसैं और तृषा प्रमेह नानाप्रकारके बिकारउपजें और सबप्रमेहउपजैं व कफप्रमेहउपजै वायुकरि दोषक्षयहोतसंते व कफ पित्तप्रमेह उपजै व बातप्रमेह उपजै बातकेप्रमेह असाध्य पित्तप्रमेह जाप्य कफकेसाध्य जो प्रमेह दुष्टनहो वहसाध्य ॥ त्रिफलादियोग ॥ त्रिफला बांस पान नागरमोथा पाढ़ा इन्होंकाकाढ़ामें शहदमिलाय खानेसे बहुमूत्रप्रमेहको नाशकरै जैसे अगस्त्यमुनिसमुद्रोंकोतैसे॥ देवदार्व्यारिष्ट ॥ देवदारु २००तोला बांसा ८० तोला मजीठ इन्द्रयव जमालगोटाकीजड़ तगर हल्दी दारुहल्दी रास्ना बायबिड़ंग नागरमोथा सिरस खैर शंभल ये चालिस २ तोले लेय और अजमोद कूड़ाकी छाल सफ़ेद चन्दन गिलोय कुटकी चीता ये ३२ बत्तीस २ तोलेलेय इन्होंको आठ८ द्रोण पानीमें पकाय अष्टमांश बाक़ी रहने पर शीतलकरि धवकेफूल ६४तोला शहद१२००तोला शुंठि मिरच पीपल ८तोला दालचीनी इलायची तमालपत्र ये१६तोला माल कांगनी १६तोला नागकेशर ८तोला इन्होंका चूर्णकरि पूर्वोक्तकाढ़ा में मिलाय चिकने बरतन में १ एकमहीना तकघालि धरै पीछे इस-

को पीनेसे दारुण प्रमेह वातरोग बवासीर संग्रहणी मूत्रकृच्छ्र खाज कुष्ठ इन्होंको नाशकरे॥ लोध्रासव॥ लोध कचूर पुष्करमूल इलायची मूर्वा वायविडंग त्रिफला अजमान चाव कांगनी सुपारी गडूंभा चिंरायता कुटकी निसोत तगर चीता पीपलामूल कूट अतीस पाढ़ा काकड़ासिंगी नागकेशर इन्द्रयव नख तमालपत्र मिरच भद्रमोथा ये प्रत्येक तोला तोलाभरलेय इन्हों को एकद्रोणपानीमें पकाय चतुर्थांशरहनेपर बराबरका शहद मिलाय चिकने बरतनमें घालि धरै १५ दिनपीछे ६ तोले रोज़ पीनेसे कफ पित्त प्रमेह पांडु बवासीर संग्रहणी अरुचि किलासकुष्ठ दूसराकष्ट इन्होंको जल्दी नाशकरै॥ तालकेश्वररस॥ पाराभस्म वंगभस्म लोहभस्म अभ्रकभस्म इन्होंको शहदके संग खरलकरि पीछे उड़दसमान शहदके संगखानेसे बहु मूत्रप्रमेह जावै॥ वंगेश्वररस॥ शोधापारा १ भाग गंधक १ भाग वंगभस्म २ भाग इन्होंको खरलकरि २ रत्तीभर मिश्री शहदकेसंग खावै और खारारसवर्ज्जित पथ्य को सेवै यह सब प्रमेहोंको नाश करे॥ आनन्दभैरवरस॥ मीठातेलिया मिरच पीपल सुहागा शिंगरफ ये समभागलेय चूर्णकरि खानेसे १ रत्ती सब प्रमेहों को नाशै॥ प्रमेहबद्धरस॥ पाराभस्म लोहाभस्म कांतभस्म शोधाशिलाजीत सोनामाखीभस्म मनशिल शुंठि मिरच पीपल हरड़ैं बहेड़ा आमला कंकोलबीज कैथ हल्दी इन्होंको भंगरा के रसमें भिगोय २० बार पीछे सुखाय शहद में मिलाय ४ माशे रोज़ खाने से प्रमेहको नाशै इसपै अनुपानकहतेहैं बकायणकेबीज ६ चावलोंकाधोवन ४ तोलाघृत ८ माशे इन्होंको मिलायपीना॥ हरिशंकररस॥ पाराभस्म अभ्रकभस्म इन्होंको आमलाकेरसमें ७ बार खरलकरि खानेसे सबप्रमेहनाशहोवें॥ मेघनादरस॥ पाराभस्म लोहकांतभस्म गंधक पोलाद सोनामाखी भस्म त्रिकुटा त्रिफला शिलाजीत मनशिल अंकोलबीज हल्दी कैथ येऔषध समभागलेय भंगराकेरसमें २१ भावनादेय ४ माशेशहदके संगखावे सबप्रमेह नाशहोवें॥ नींबबीजकल्क॥ बकायण के बीजोंको चावलोंके धोवनमें पीसि घृतकेसंगखानेसे पुरानाप्रमेह शांतहोवै॥ मेहारीरस॥ वंगभस्म पाराभस्म समभागलेय शहदमेंमिलाय २ रत्ती

खानेसे पुरानाप्रमेहनाशहोवै ॥चन्द्रोदयरस॥ अभ्रकभस्म गंधक पारा बंगभस्म इलायची शिलाजीत येसमभागलेय कपूरकेसंगखरलकरि खानेसे २० प्रमेह कामलापित्त इन्होंको नाशकरै ॥ बंगेश्वररस ॥ पारा एकभाग बंग ३ भाग गंधक ३ भाग इन्होंको कुवारपट्ठा के रसमें १ दिन खरलकरै पीछे गोलीबनाय बरतनमें घालि मुखको बंधकरि बालुकायंत्रमें १दिनतीव्रअग्निसेपकाय शीतलहोनेपर ब्राह्मण और देवताओंकोपूजि रसकोपीपलीचूर्ण शहदमेंमिलायखानेसे सब्बप्रमेह नाशहोवैं ऊपर दूधचावलोंका पथ्यकरै खाटा खारारसको बर्जिदेवै॥ मेहकुंजरकेसरी॥ पारा गंधक लोहभस्म अभ्रकभस्म शीशाभस्म बंग भस्म सोनाभस्म बज्रभस्म मोतीभस्म इन्हों को मिलाय चूर्ण करि शतावरिरसमें खरलकरि घाममें सुखाय गोलाकरि शराव सम्पुट में धरि ऊपर माटी गारा लेपि गोबर की अग्नि से गजपुट में पकाय शीतल होनेपर काढ़ि खरल में बारीक पीसि देवता और ब्राह्मणों का पूजनकरि शीशी में घालिधरै पीछे ४ रत्तीखाय ऊपर ठंढापानी पीवे यह १८ प्रकार के प्रमेहोंको १ महीनामें नाशै और तुष्टि तेज बल वर्ण बीर्य अग्नि इन्हों को बढ़ावे यह दिव्य रसायन है संशय नहीं ॥ पंचलोहरसायन ॥ अभ्रकभस्म लोहकांतभस्म शीशाभस्म बंगभस्म इन्होंको भाग वृद्धिसेलेय खरलमें घालि ताड़नड़ बाराही कंद शतावरि लालचंदन इन्हों के काढ़ा में अलग २ भिगोवे एक एकपहर पीछे चना प्रमाण गोली बनाय नौनीघृतकेसंग प्रभात में खानेसे सब प्रमेहों को नाशै इसपै चावल परवल तांडुला बथुआ मत्स्याक्षी मूंगयूष कच्चाकेलाफल ये पथ्यहैं और यह बवासीर संग्रह-णी मूत्रकृच्छ्र पथरी कामला पांडु सोजा अपस्मार क्षत क्षय रक्त खां-सी इन्होंकोनाशै ॥ महावंगेश्वररस ॥ बंगभस्म कांतभस्म अभ्रकभस्म धतूराफूल ये समभाग लेय कुवारपट्ठा के रसमें ७ बार भावनादेय खानेसे २० प्रकारके प्रमेहों को नाशकरै और मूत्रकृच्छ्र सोमरोग पांडुरोग पथरी इन्होंकोनाशै यहनागार्ज्जुनने रचाहै ॥ बंगभस्मरस ॥ बंगभस्म शिलाजीत इन्होंको मिलायखानेसे प्रमेह धातुक्षय दुर्बल-पनानष्टशुक्र इन्होंकोनाशकरै और इसीको अभ्रकभस्ममें जायफल

सूर्यमुखीफूल पद्मकंद लौंग इन्होंमें मिलाय खानेसे पुत्र पैदाहोवै ॥ वसन्तकुसुमाकर ॥ सोना भस्म २ भाग चांदीभस्म २ भाग वंगभस्म ३ भाग शीशाभस्म३ भाग कांतलोहभस्म३ भाग पाराभस्म३ भाग अभ्रकभस्म ३ भाग मूंगाभस्म ३ भाग मोतीभस्म ३ भाग इन्हों को गौकादूध ईषरस वांसारस चन्दन वाला कालावाला हल्दी केला कन्दरस इन्हों के रस व काढ़ों में सात २ भावना देय पीछे कमल मालती फूल कस्तूरी इन्होंके रसोंमें भावनादेनेसे वसन्त कुसुमाकर तय्यार होयहै ४ रत्ती रसको घृत मिश्री शहदमें मिलाय चाटनेसे पली पलित प्रमेह इन्होंको नाशै और बुद्धि उमर काम सुख पुष्टि वीर्य इन्होंको वढ़ावै और सन्तानको पैदाकरै और क्षयी खांसी तृषा उन्माद श्वास रक्तपित्त विष इन्होंको शांतकरै और मिश्री चन्दनके सङ्ग खाने से आम्लपित्तादि रोगोंको नाशै और पाण्डुशूल मूत्राघात पथरी इन्होंकोनाशै यह योगवाही है सेवने से कांति श्री बल इन्होंको बढ़ावै इसके सेवनेमें यथेष्ट भोजनकरै और १०० स्त्रियों से भोगकरै और कामदेवसे मदोन्मत्तहो अनेक स्त्रियोंको प्रसन्न व विह्वलकरदेवै इसकेसमान उत्तम मित्ररूप औषधनहींहै ॥ जलजामृतरस ॥ वंशलोचन शिलाजीत गिलोयसत वङ्गभस्म सफेदगोकर्णी बीज इन्होंको विदारीकन्द त्रायमाण इन्होंके रसोंमें तीनतीन भावनादेय मिश्रीमिलाय खानेसे प्रमेह शूलको हरै ॥ प्रमेहपिटिका ॥ प्रमेह वाले रोगियों के सब सन्धियोंविषे दशप्रकारकी पिटिकाहोय है शराविका १ कच्छपिका २ जालिनी ३ बनिता ४ अलजी ५ मसूरिका ६ सर्षपिका ७ पुत्रिणी ८ बिदारिणी ९ विद्रधि १० ये शरीर कुढंगे आदि मर्मस्थानों में उपजै हैं ॥ पिटिकाकारण ॥ जो जो दोष संयुत प्रमेह हो सो सो दोषवाली पिटिका उपजै और बिना प्रमेह भी कहीं पिटिका मेद जन्यउपजै है और जबतक गांठबन्धनहीं तब तक पिटिका लक्षण निश्चयहोवै नहीं ॥ १० दशपिटिकालक्षण॥ फुन्सी ऊपर तो ऊंची और जिसके बीचमें खड़ाहो तिसे शराविका कहिये और पीछे कहे मर्मस्थानोंमें सिरसम सरीखी फुन्सी दाहको लिये कछुआके आकारहो तिसेकच्छपिका कहिये व जिसफुन्सीमें बहुत

दाहहो और मांसके समूहमें हो तिसे जालिनी कहिये व जिस फुन्सीके भीतर पीड़ा हो और वह फुन्सी बड़ी हो और पीठ पीछे अथवा पेटमेंहो तिसे बनिताकहिये व जो फुन्सी लाल और कालीहो बहुत फटीपीड़ा अधिकहो तिसे अलजी कहिये व जो फुन्सी मसूर के प्रमाणहो और मसूरकैसे रङ्गकीहो तिसे मसूरिका कहिये व जो फुन्सी सिरसम प्रमाणहो और सिरसम कैसाही रंगहो तिसे सर्षपिकाकहिये व जो फुन्सी उठतेही बड़ी उठै तिसे पुत्रिणी कहिये व जो फुन्सी बिदारीकन्दके सदृश गोलहो और कड़ीहो और वैसाही रंगहो तिसे बिदारिका कहिये व जो फुन्सी विद्रधीके लक्षणोंसे युत हो तिसे बिद्रधी कहिये॥ असाध्यपिटिका॥ गुदा हृदय मस्तक कांधा पीठ मर्म्मस्थान इन्हों में उपद्रव सहित पिटिका मन्दाग्निवाले के उपजै तो असाध्य जानो॥ प्रमेहसाध्यलक्षण॥ जिसकाल में प्रमेह रोगीका मूत्र गाढ़ा न हो और चीकना न हो स्वच्छ हो कड़ुवा हो ऐसा रोगी साध्य जानो॥ पिटिकाकेउपद्रव॥ तृषा खांसी मांस का संकोच हिचकी मन्दज्वर बिसर्प्प मर्म का रोकना ये उपद्रव हैं॥ पिटिकाचिकित्सा॥ इसमें पहिले रक्तमोक्षकराय और पकीहुइओं का पाटन कराय पीछे कषायोंका पानहितहै व ब्रणनाशक काढ़ा वस्ति कर्म मूत्रकारक उपचार रक्तमोक्ष ब्रणकी क्रिया ये सब हितहैं॥ न्यग्रोधादिचूर्ण॥ बड़ गूलर पीपली सहोंजना अमलतास भिलावां आंब कैथा जामुन चिरौंजी अर्जुन धौकेफूल महुआ मुलहठी लोध ब्रणा नींब परवल मेढ़ासिंगी जमालगोटाकीजड़ चीता तूरी करंजुवा त्रिफला कूड़ा आसना ये सम भाग लेय चूर्ण बनाय शहद में मिलाय खानेसे २० प्रकारका प्रमेह सब प्रकारके मूत्रकृच्छ्र पिटिकारोग ये नाशहोवैं इसपै त्रिफलाके रसको पुनुमानहै॥ पिटिकालेप॥ गूलरके दूधको व बाकुचीके दूधको पिटिका ऊपरलेपकरनेसे पिटिका नाशहोवै॥ पथ्य॥ पहिले लंघन बमन बिरेचन प्रोद्वर्तन शमन दीपन इन्हों का सेवन कराय पीछे नीवार धान्य कांगनी यव बांसकाफल कोदो सामाज्वरि कुरुविंद मटर गेहूँ धान कलमधान पुरानी कुलथी मूंग अरहर चना इन्होंका यूष व रस तिल खील पुरानीमदिरा श-

हृद्य वाच्य मण्ड मठा गवाम्ला नथ्था सैंत का सूत चिरौटा कबूतर शशा तीतर लवा मोर वाघ हिरण वटेर तोता आदि जंगली जीवों का मांस सहोंजना परवर करेला ककेड़ा ताड़फल कटैलीका फल गूलर लहसन नवीनकेला शालिंच शाक गोखुरू मूषापर्णीआकके पत्ते गिलोय त्रिफला कैंथ जामुन कसेरू कमल तथा नील कमल की जड़ व बीज खर्जूरि नारियल तथा ताड़वृक्षका मस्तक त्रिफला निम्बावांकतथा इन्द्रयव चर्परे तथा कपायलेरस हाथी घोड़ाकीसवारी बहुत फिरना सूर्यकातेज कसरत ये प्रमेहमें पथ्य हैं ॥ अपथ्य ॥ मूत्र कावेग धुआं पीना स्वेदन रक्त मोक्ष सदा बैठना दिनमें सोना नवीन अन्न दही अनूप देशका मांस पीठी स्त्री संग कांजी सेंधानेका जल तेल दूध घृत गुड़ तूंबी ताड़फलकी मींगी विरुद्ध भोजन कोहला ईष बुराजल मीठे खट्टे और खारी रस अभिष्पंदी वस्तु ये सब प्रमेह में अपथ्य हैं ॥

इतिश्रीवेरीनिवासकरविदत्तवैद्यविरचितनिघण्टरत्नाकर
भाषायांप्रमेहप्रकरणम्॥

मेदोनिदान ॥ बहुत रोज आराम के करने और बैठे रहने और दिनके सोने से कफकारी वस्तु और मधुर अन्न घृतको आदि ले चीकनी वस्तुके खाने से मेदबढ़ताहै तब पुरुष कुछ कामनहीं कर सक्ता क्योंकि और जो हाड़ मज्जा वीर्य्य आदि धातु हें वे मेद के बढ़ने से पुष्ट होवैं नहीं और पुरुष निकम्मा होजावै ॥ वर्द्धमानमेद केउपद्रव ॥ जिसके मेदबढ़े तिसके क्षुद्र श्वास तृषा मोह ये होवें और कुंणाहतासोवे शरीर में पीड़ाहो छींक और पसीना आवै शरीर में दुर्गंध आवै मैथुन करनेकी सामर्थ्य होवे नहीं ये मेदवाले के लक्षण हैं ॥ मेदकास्थान ॥ प्राणीमात्रके पेटमें मेदरहताहै इसकारणमेद पेटको बढ़ावै है ॥ मेदवृद्धिमेंदीप्ताग्निकारण ॥ मेद से ढका हुआ है मार्ग जिस का ऐसा जो बायु सो कोष्ठही में बिचरकारि अग्नि को दीप्त करि भोजनही की बासना रक्खे तब मनुष्य के बहुत खानेसे अनेक भयङ्कर रोग बहुत दिनों में उत्पन्नहोतेहैं ॥ बढ़ामेदमेंनाशका-

रण ॥ मेद वृद्धिमें अनेकप्रकार के उपद्रव करने वाले जोअग्नि पवन वही देहको दग्धकरै जैसे अग्नि पवनकी सहायतासे वनदग्ध करै तैसे ॥ अतिमेदबढ़नेकापरिणाम ॥ मेदवृद्धि हुआ बादि जल्दी बातादि दोष नानाप्रकारके प्रमेह पिटिका भगन्दर विद्रधी इत्यादि बिकारों को उत्पन्नकरि मनुष्यको मारदेहै ॥ स्थूललक्षण ॥ मेदमांस जब बहुत बढ़ै तब पुरुषके चूतड़ उदर स्थान बढ़के थल २ हालैं पुरुषका बल मांस उत्साह जातारहै तिसे स्थूल कहिये ॥ हरीतक्यादि ॥ हरड़ै लोध नींबपत्ते करंजवाकीछाल अनारकीछाल जामुन इन्होंका काढ़ा स्त्रियोंको व पुरुषोंको श्रेष्ठहै ॥ सामान्ययोग ॥ गिलोय भद्रमोथा तक्र नींब इन्होंकासेवन व शहदका सेवन दुर्गंधिको नाशै चव्यादिचूर्ण ॥ चाव जीरा शुंठि मिरच पीपल हींग कालानोन चीता इन्होंका चूर्ण शहदमें मिलाय खानेसे व सत्तुओंको शहदमें पीने से मेदरोग जावै और जठराग्निको दीपनकरै ॥ फलत्रिफलादिचूर्ण ॥ त्रिफला त्रिकुटा तेल सेंधानोन इन्होंको मिलाय खानेसे कफ मेद बायु इन्हों को नाशै ॥ सामान्यचिकित्सा ॥ कमसोना मैथुन कसरत चिन्ता इन्हों को ज्यादा सेवने से मोटापना नाश होवै ॥ नवकगुग्गुल ॥ शुंठि मिरच पीपल चीता नागरमोथा त्रिफला बायबिड़ंग गूगुल ये समभाग लेय खाने से आमबात के बिकारों को नाशै और त्रिफला के काढ़ामें शहद मिलाय पीनेसे मेदरोग नाशहोवै ॥ मेद उपचार ॥ गरमपानी को ठंढाकरि शहद मिलाय पीनेसे मेदरोग नाश होवै व चावलोंका मांड़ गरम २ पीनेसे मोटा शरीर माड़ा होवै ॥ तालपत्रक्षार योग ॥ ताड़के पत्तोंका खार हींग चावलोंका मांड़ इन्होंको मिलाय पीनेसे मेदवृद्धि नाशहोवै ॥मोचरसादिलेप॥समुद्रभाग मोचरस इन्होंको मिलाय लेप करनेसे देहका दारुण दुर्गंध नाश होवै ॥ हरीतक्यादि उद्वर्त्तन॥हरड़ोंको पीसि शरीरपर उबटनामलि पीछे स्नान करनेसे देहका पसीना नाश होवै ॥ शीतलादि उद्वर्त्तन ॥ कंकोल लोध सिरस बाला केशर इन्होंका उबटना मलनेसे पसीना बंदहोवै व सिरस रोहिततृण नागकेशर लोध इन्होंके कल्कको शरीरपर मलनेसे पसीना नाशहोवै व कांगणी लोध बाला चन्दन इन्होंके कल्क को

शरीरपर मलनेसे त्वचादोष पसीना दुर्गंध इन्होंको नाशै ॥ क्वाथ ॥ त्रिफलाके काढामें शहद मिलाय बहुत दिन पीनेसे मेदरोग नाश होवै ॥ त्र्यूषणादिलोह ॥ त्रिकुटा त्रिफला चाव चीता मनियारीनोन सोरा बावची सेंधानोन कालानोन इन्होंके उड़द प्रमाण चूर्णमें शहद घृत मिलाय चाटनेसे मोटापा नाशै और जठराग्नि को दीपन करै और मेदप्रमेह कुष्ठ कफव्याधि इन्होंको नाशै इसमें कोई तरहका परहेज नहींहै यह चूर्ण उत्तम रसायन है ॥ उबटना ॥ कांगणी लोध हरड़े चन्दन इन्होंका उबटना दुर्गंधको नाश करै ॥ बब्बूलादि उद्वर्त्तन ॥ बबूलके पत्तोंको पानीमें पीसि शरीर पर उबटना मलि पीछे हरड़ोंके चूर्णको मलि स्नान करनेसे पसीना नाश होवै व जामुनकी छाल अर्जुन के पत्ते कूट इन्होंके चूर्ण को पानी में पीसि रोज शरीर ऊपर मलनेसे पसीना दुर्गंध ये नाशहोवें ॥ बांसादिलेप ॥ बाँसाके रसमें शंखका चूर्ण मिलाय लेप करनेसे व बेलपत्तों का लेप करनेसे शरीर की दुर्गंध नाश होवै ॥ त्रिफलादितैल ॥ त्रिफला अतीस मूर्वा निसोत चीता बांसा नींब अमलतास वच सप्तपर्णी हल्दी गिलोय इन्द्रयव पीपली कूट सिरस शुंठि निर्गुंडीरस तेल इन्हों को पकाय तेलको सिद्धकरि पान नस्य कुरला बस्ति इन्होंमें बरतनेसे स्थूलता आलस्य खाज कफरोग इन्होंको नाश करै ॥ महासुगन्धतैल ॥ चन्दन केशर वाला कांगणी कचूर गोरोचन शिलाजीत अगर कस्तूरी कपूर जावित्री जायफल कंकोल सुपारी लौंग निलीनड़ कूट रेणुकाबजि तगर क्षुद्रमोथा वघेराका नख थोहर पाच पीला वाला दमना पुंडरीकवृक्ष कपूर कचरी ये सब चार २ माशेले मीठातेल ६४ तोला इन्होंको पकाय तेलको सिद्धकरि बरतनेसे पसीना दुर्गंध खाज कुष्ठ इन्होंको नाशै और इसकी मालिशसे सत्तर ७० वर्षका बूढ़ा जवान होवै और वीर्य बढ़ाय स्त्रियों को सुखदेवै कांति बढ़ै रूपबढ़ै १०० स्त्रियोंके संग भोगकरै और बंध्यापुत्रको पैदा करै नपुंसक पुरुषहोवै बिना पुत्र वालेके पुत्र उपजै इसका सेवनेवाला १०० वर्षतक जीवै बड़वाग्निरस ॥ शोधापारा गंधक तांबाभस्म हरताल बोल ये समभाग लेय आकके दूधमें १ दिन खरलकरि पीछे २ रत्ती रसको शहदमें

मिलाय चाटनेसे अतिमोटापा नाशै इसपर ४ तोले दूधमें ४तोले पानी मिलाय पीना अनुपान है॥ रसभस्मयोग॥ पाराकी भस्म २ रत्तीभर लेय शहदमें मिलाय चाटनेसे मेदका मोटापा नाशै इसपै कछुक गरमपानीका पीना अनुपान है॥ त्रिमूर्तिरस॥ पारा गन्धक लोहभस्म ये समभाग ले इन्होंको निर्गुंडीके पत्तोंके रसमें भावना देय पीछे मुसली कन्दके रसमें भावनादेय पीछे उड़दसमान रसमें लोधका चूर्ण शहद मिलायखावै ऊपर शुंठि मिरच पीपल पीपलामूल चाव चीता त्रिफला पांचोंनोन बावची इन्होंका चूर्णखाना यह अनुपान है यह मेदरोग सोजा मन्दाग्नि आमवात कफरोग इन्हों को नाश करै॥ मेदपरसामान्य उपचार॥ श्रम चिन्ता मैथुन मार्ग्गगमनजागरण स्त्रीसङ्ग यवभोजन सांवांभोजन ये मोटापाकोनाशैंहैं॥ मेदरोगमेंपथ्य॥ चिंता श्रम जागना स्त्रीसङ्ग उबटना लंघन घाम हाथी घोड़ेकी सवारी भ्रमण करना बिरेचन बमन धातुओं का घटाना पुराने बांसके फल कोदौं सांवां कांगणी ज्वार यव कुलथी चना मसूर मूंग मटर शहद खील कडुये चर्परे कसायलेरस मठा मदिरा भांगा मछली जल बैंगन त्रिफला गूगुल लोह सिरसके बीज लोध हरड़े इन्होंका देहमेंलेप त्रिकुटा सिरसमका तेल इलायची सबरूखीवस्तु मुख्यतेल पत्रशाक अगरकालेप तपाजल शिलाजीत ये सब मेद रोगमें पथ्यहैं॥ अपथ्य॥ नहाना रसायनधान गेहूं सुखसे रहनादूध ईषका बिकार गुड़ उड़द अधाना स्वेदन मछली मांस दिनमें सोना माला सुगन्ध मीठी वस्तु सब भोजनके पीछे जलपीना अत्यंत तामें बिशेषकरि बमन ये सब मेदरोगमें अपथ्य हैं॥

इतिवेरीनिवासकरबिदत्तवैद्याविरचितायांनिघण्ट रत्नाकरभाषायांगुल्मप्रकरणम्॥

उदरकर्मविपाक॥ जो ब्रह्मा बिष्णु शिव इन्होंमें एकको बड़ामानि दूसरेका निरादरकरै वह उदररोगसे पीड़ितहोवै॥ प्रायश्चित्त॥ कृच्छ्र व अतिकृच्छ्र चान्द्रायण ब्रतकोकरि पीछे महादेवजीको सहस्रधारा कलशसे स्नानकरावै॥ जलोदरकर्मविपाक॥ राजाने अथवा अन्यने

धर्मनिश्चय में नियुक्तकिया पुरोहित व मन्त्री अन्यथा कर्मकोकर देवै वह जलोदरसे पीड़ित होवै तिसका प्रायश्चित्त कहते हैं॥ शमन॥ वह तीनमहीने तक पयोव्रतकरै याने दूधपानके आश्रयरहै पीछे सहस्र १००० धाराके कलशसे महादेवजी को स्नान करावै पीछे १०० ब्राह्मणोंको भोजनकरावै तब पाप नाशहोवै॥ उदरकर्मविपाक॥ गर्भपातन कराने से यकृत तिल्ली जलोदर ये रोग उपजै हैं इन्होंकी शान्ति वास्ते प्रायश्चित्त कहते हैं॥ शमन॥ सोना चांदी तांबा ये चार २ तोले सहित जल धेनुकादान ब्राह्मणों को देने से शान्तिहोवै॥ प्लीहोदरकर्मविपाक॥ जो तनख्वाहले पढ़ावै और नौकर चाकरोंको पढ़ावै व कन्याको दोषलगावै वह प्लीहरोगीहोवै इसकी शान्तिके वास्ते लक्ष्मीसूक्तका जाप ब्राह्मणोंके मुखसेकरावै॥ उदररोगनिदान॥ उदररोग ८ प्रकारकाहै सो मन्दाग्निवाले पुरुषके निश्चयहोयहै और अजीर्णसे अनन्तरोग उपजैहैं ऐसी २ बस्तुके खानेसे उदररोग होताहै और दोषोंका समूह और मैल और आम का संचय कोष्ठमेंहोय तो पुरुषके उदररोगहोताहै॥ उदरकीसंप्राप्ति॥ कुपथ्यके संचयको प्राप्तहुआ जो वात पित्त कफ सो जलके लेचलने वाली नसोंको रोकैहै और हृदयकी पवन और अग्नि गुदाकी पवन इन्होंको बहुत दूषित करि उदररोगको पैदा करै॥ उदररोगका सामान्य लक्षण॥ पेटमें अफाराहो चलने फिरनेकी सामर्थ्य जातीरहै शरीर दुर्बल और मन्दाग्निहो शरीरमें सूजन और हाड़ोंमेंहड़फूटन हो मलमूत्र अच्छीतरह उतरै नहीं शरीरमें दाह और तन्द्रा हो येलक्षण उदररोगके हैं॥ उदररोगकीसंख्या॥ वातका १ पित्तका २ कफका ३ सन्निपात का ४ प्लीहाका ५ मलबन्ध होनेका ६ चोट लगनेका ७ जलोदरका ८ ऐसे आठ प्रकारके हैं इन्हों के लक्षण अलग अलग सुनो॥ वातोदरलक्षण॥ जिस पुरुष के पैर हाथ नाभिमें सूजनहो कुक्षि पशली कटि पीठि संधि इन्हों में पीड़ा हो और रूखा खांसै शरीर भारीरहै मल उतरैनहीं शरीरकीखाल नख नेत्र काले पड़जावैं पेटमें पीड़ा और अफाराहो पेट बोला करै ये लक्षण वातोदर के हैं वातोदर बलकालको बिचारि इसमें स्थिरादि

घृतका पानकरै और स्नेह स्वेदन विरेचन करावै और औषध से ग्लानि उपजै तो कपड़ासे वेष्टन करावै और शाल्वण पींड़ीबन्धन करावै पेयायूषरस अन्न इन्होंका सेवनकरावै॥ तक्रपान॥ तक्रमेंपीपली चूर्ण सेंधानोन मिलाय पीनेसे बातोदर नाशहोवै और तक्रमें मिश्री मिरचोंका चूर्ण मिलाय पीनेसे पित्तोदर नाशहोवै और तक्र में अजमान जीरा सेंधानोन ये मिलाय पीने से कफोदर नाशहोवै और तक्रमें त्रिकुटा जवाखार सेंधानोन मिलाय खाने से सन्निपात का उदर रोग नाशहोवै॥ चूर्णकषाय॥ दशमूलके काढ़ामें अरंडीकातेल मिलाय पीने से व गोमूत्रमें त्रिफलाका चूर्णमिलाय पीनेसे गोमूत्र में दशमूलका काढ़ा मिलाय पीनेसे बातोदर सूजन शूल इन्हों को नाशकरै॥ शिलाजतुचूर्ण॥ दशमूलके काढ़ामें दूध शिलाजीतमिलाय पीनेसे व ऊंटके दूध को पीनेसे व बकरी के दूधको पीने से जल्दी बातोदर नाशहोवै॥ कुष्ठादिचूर्ण॥ कूट जैपाल जवाखार शुंठि मिरच पीपल सेंधानोन मनियारीनोन कालानोन बच ज़ीरा अजमान हींग सज्जीखार चाव चीता शुंठि इन्होंका चूर्णकरि गरमपानी के संग खाने से बातोदर पीड़ानाशै॥ समुद्रादिचूर्ण॥ खारीनोन सेंधा नोन कालानोन जवाखार अजमान पीपली चीता शुंठि हींग बायबिड़ंग ये समभाग लेय चूर्णकरि घृतमें मिलाय खानेसे बातोदर गुल्म अजीर्ण बायु विकार संग्रहणी बवासीर पाण्डु भगन्दर इन्हों को नाशै॥ बातोदरघृत॥ दशमूल रास्ना शुंठि देवदारु लालसांठी सफ़ेदसांठी इन्होंके काढ़ामें घृतको सिद्धकरि खानेसे बातोदर नाश होवै॥ पित्तोदरलक्षण॥ जिसमें ज्वर मूर्च्छा दाह तृषा येहोवैं मुखकडुवा घुमेर अतीसार ये सबरोगहों और शरीर की खाल पीली हरी होवै शरीरमें पसीना आवै और दाहहो धूमाको लिये डकारआवै त्वचाका स्पर्श कोमलहो और त्वचा पकीसी दीखै ये लक्षण पित्तोदर के हैं॥ चिकित्सा॥ इस रोगमें बलवान्को पहिले दूधमें निसोत का कल्क मिलाय व अरंडीका काढ़ा पिवाय जुलाब दिवावै॥ सातलादिघृत॥ त्रायमाण अमलतास इन्होंके काढ़ामें मधुर औषध मिलाय घृतको सिद्धकरि खानेसे पित्तोदर नाश होवै॥ पित्तादिघृत॥

निसोत त्रिफला इन्होंके काढ़ामें घृतको सिद्धकरि पीनेसे व पृश्नि-पर्णी खरैटी कटेली लाख शुंठि इन्हों के काढ़ा में घृतको सिद्धकरि खानेसे पित्तोदर नाशहोवै ॥ कफोदरलक्षण ॥ जिसके शरीरमें पीड़ाहो सोवै बहुत सूजनहो शरीर भारीरहे हियादूखै भोजनमें अरुचिहो देरसेंपचै शरीर ठंढारहे और पेट बोलाकरै ये लक्षण कफोदरके हैं ॥ चिकित्सा ॥ कफोदरीको पहिले पीपली के कल्क से सिद्धघृतका पान कराय पीछे थोहरकेदूधसे जुलाबदेवै पीछे शुंठि मिरच पीपल गोमूत्र अरंडीतेल नागरमोथा इन्होंके काढ़ासे आस्थापन वस्ति व अनुवासन वस्ति दिवाय पीछे लोहकीटी सिरसम आमलाकेबीज इन्हों को पीसि पेट ऊपर लेपकरावे पीछे कुलथीके काढ़ामें त्रिकुटाचूर्ण घालि भोजनकरावे पीछे गरमपानी से वारम्वार पेटको सिकावे व कुलथीके काढ़ामें त्रिकुटा दूध मिलाय भोजनकरानाभी हित है पीछे गोमूत्र पान अरिष्टपान लोहचूर्ण दूधमें अरंडीतेल इन्होंके सेवनसे कफोदरको शांतकरै ॥ सन्निपातोदरनिदान ॥ दुष्ट स्त्री जिसको नख रोम मूत्र मल आर्त्तव इन्हों से युत अन्नपानको खवावे अथवा जिसको वैरी विष आदि खवावे और दुष्टपानी और दूषित विषको सेवनेसे रक्त और वातादि दोष कुपितहो सन्निपातके उदररोगको पैदाकरैं ॥ चिकित्सा ॥ हरड़े निर्गुण्डी इन्होंका गोमूत्रमें कल्क बनाय खाने से सम्पूर्ण उदररोग तिल्ली प्रमेह बवासीर कृमि गुल्म इन्होंको नाशै ॥ नागरादितेल ॥ शुंठि त्रिफला ये चौंसठ २ तोले लेय घृत २५६ तोले अथवा तेल २५६ तोले इन्हों को दहीके मस्तुके सङ्ग पकाय खानेसे सम्पूर्ण उदररोग कफगोला वायुगोला ये शांतहोवैं ॥ सन्निपातोदरदूष्योदरसंज्ञकलक्षण ॥ वह पूर्वोक्त सन्निपात लक्षण वाला दूष्योदर बात घाम दुर्दिन इन्हों के सम्बन्ध से कोपको प्राप्तहो दाह को पैदाकरे और मूर्च्छा मोह पांडु कार्श्य शोष तृषा इन रोगोंको उपजावै तिसे दूष्योदर कहते हैं ॥ शंखिनीघृत ॥ जड़सहित शङ्ख बेलीके रसमें सिद्धघृत को पीने से व जमालगोटाकी जड़ रुदंती इन्हों के काढ़ामें तेल को सिद्धकरि पीनेसे जुलाबलगि दूष्योदर नाशहोवै ॥ प्लीहोदर का लक्षण कहतेहैंसुनो ॥ गरम बस्तुके खाने और गरम बस्तु

के पीनेसे दुष्टहुआ जो रुधिर और कफ सो प्लीह को बढ़ावैहै पीछे बढ़ाप्लीहा बाईं पसलीमें उदर का रोग याने तिल्लीको उत्पन्न करैहै इससे पीड़ित मनुष्य के मन्दाग्नि जीर्णज्वर कफ पित्तके लक्षणोंसे उपजें और बल जाता रहै पाण्डु वर्ण होजाय ये लक्षण प्लीहोदरके हैं ॥ प्लीहोदरचिकित्सा ॥ स्नेह स्वेद जुलाब ये तिल्ली में हितहैं और बायें हाथ की कोहनी के अभ्यंतर वर्त्ती जो नाड़ी है तिसके फस्त खुलानेसे तिल्ली रोगजावै और दाहने हाथकी इसी नाड़ी के फस्त खुलानेसे यकृत्रोग नाश होवै व मणिबंध में समुत्पन्न बामांगुष्ठ है तिसकी नाड़ी को गरम शरसे दग्ध करने से प्लीह रोग शांत होवै अंगूठा ऊपर जगहको मणिबंध कहते हैं ॥ शरपुंखामूलकल्क ॥ शरपुंखीकी जड़के कल्कको तक्रमें मिलाय पीने से बहुत दिनोंका बढ़ा प्लीहरोग नाश होवै ॥ तक्र ॥ तक्रमें पीपली शहद मिलाय पीने से प्लीहा नाश होवै ॥ रोहितादिकल्क ॥ रोहिततृण हरड़ै इन्हों के कल्क को गोमूत्र के सङ्ग पीनेसे प्रमेह बवासीर कृमि गुल्म इन्होंको नाश करै ॥ पिप्पल्यादिकाढ़ा ॥ पीपली मिरच आम्लवेतस इन्हों के काढ़ा में सेंधानोन मिलाय पीने से सोजा प्लीहा इन्हों को नाशै ॥ शाल्मलिपुष्पपाक ॥ शम्भल के फूलोंको रातिके वक्त गरम पानी में भिगोय प्रभातमें राईचूर्ण मिलाय पीनेसे प्लीहारोगनाशहोवै ॥ लवणादितक्र ॥ सेंधानोन २० तोला हल्दी २० तोला राई २० तोला इन्हों का चूर्ण करि बरतन में घालिधरै पीछे तक्र ४०० तोले घालि मुखबंध करि ३ दिन धरै पीछे २० तोला रोज़ पीनेसे २१ दिन तक प्लीह रोगको नाशै ॥ शुक्तिक्षारयोग ॥ समुद्रकी सीपीके खारको दूधके सङ्ग पीने से व पीपली चूर्ण दूधके सङ्ग पीने से प्लीह को नाशै ॥ एरण्ड भस्म योग ॥ पंचांग सहित अरण्डको बरतनमें घालि मुख बंधकरि गजपुटसें पकाय १ तोला राखको गोमूत्र ४ तोलेमें मिलाय पीनेसे प्लीहरोगको नाशकरै ॥ भल्लातकादिमोदक ॥ भिलावां हरड़ै जीरा गुड़ इन्होंका लड्डूकरि ७ रात्रि तक खानेसे प्लीहाको नाशै ॥ लशुनादि ॥ लहसुन पीपलामूल हरड़ै इन्होंका चूर्णकरि गोमूत्रमें मिलाय कुरले करने से तिल्लीरोग नाशहोवै ॥ सौभांजनकयोग ॥ सहँजनाके रसमें

सेंधानोन चीताकीजड़ पीपली जवाखार इन्होंका चूर्ण मिलाय पीने से तिल्लीरोग नाशहोवे ॥ रक्तस्रावदाग ॥ रक्तस्रावकराय आकके दूध में सेंधानोन मिलाय लेपकरनेसे व अग्निद्वारे दागदेनेसे प्लीहरोग जावे ॥ शंखनाभिचूर्ण ॥ जंबीरी नींबूके रसमें शङ्खकी नाभिकाभस्म १० माशे मिलाय पीनेसे कछुआ सरीखा प्लीहरोग नाशहोवे ॥ कुष्ठादिचूर्ण ॥ कूट वच शुंठि चीता अजमान पाढ़ा अजमोद पीपली ये समभाग लेय चूर्ण करि १० माशे गरम पानी के सङ्ग खाने से प्लीहोदर उदावर्त्त इन्हों को नाशै ॥ लघुहिंग्वादिचूर्ण ॥ भुनीहींग शुंठि मिरच पीपली कूट जवाखार सेंधानोन इन्होंका चूर्ण बिजौराके रस के संग खानेसे प्लीह शूल व वायु को नाशै ॥ सिंध्वादिचूर्ण ॥ सेंधानोन पीपली चीता शिलाजीत जीरा इन्होंका चूर्ण सहँजना रसके संग खाने से उग्र तिल्ली रोग नाशहोवे ॥ नागवटी ॥ तिलोंकी दंडी अरंडजड़ इन्हों का खार मिलावां पीपली ये समभागलेय सबों के बराबर गुड़ मिलाय अग्निबल देखि खानेसे प्लीहको व यकृत्को व गुल्मको नाशै और जठराग्निको बढ़ावे ॥ विडंगादिचूर्ण ॥ वायबिड़ंग अजमान चीता ये समभाग देवदारु २ भाग शुंठि सांठी त्रिसोत ये चार २ भाग इन्होंका चूर्णकरि गरमदूधके संग पीनेसे व गोमूत्रके संग पीने से भयंकर प्लीह रोग नाश होवे ॥ यवासादिचूर्ण ॥ अजमान चीता जवाखार बच जैपालबीज पीपली इन्होंका चूर्णकरि गरम पानी के संग व मदिराके संग पीने से प्लीहरोग नाशहोवे ॥ वज्रक्षार ॥ कालानोन जवाखारनोन सांभरनोन सेंधानोन सुहागाखार साजीखार ये समभाग लेय चूर्णकरि पीछे माटीके बरतनमें आकके पत्ते बिछाय ऊपर चूर्णघालि ऊपर आकके पत्तोंसे ढकि मुख बंधकरि गारालपेटि गजपुटमें पकायदेवे शीतल होनेपर चूर्ण करि त्रिकुटा बायबिड़ंग राई त्रिफला चाब भुनीहींग ये मिलाय चूर्ण करि अग्नि बलदेखि तक्र के संग खानेसे सब पेटरोग सूजन गुल्म अष्ठीला मंदाग्नि अरुचि प्लीहा यकृत् इन्होंको नाशकरै ॥ क्षारादि योग ॥ करंजवाका खार मनियारीनोन पीपली इन्होंका चूर्ण अग्नि बल बिचार प्रभात में खानेसे यकृत् प्लीहको नाशै ॥ क्षारभावनापी-

पली॥ केशूके खारमें पीपलीको भिगोय खानेसे गुल्म प्लीहा इन्हों को नाशै और अग्निको दीपन करै॥ अर्कपत्रक्षार॥ आकके पत्ते सेंधानोन इन्होंको मटकना में घालि गजपुटमें पकाय खार करि दहीके मस्तुके संग पीनेसे प्लीहोदरको नाशै॥ अग्निमुख लवण॥ चीता निसोत जैपालबीज त्रिफला कालानोन ये सम भाग लेय सबोंके समान सेंधानोन लेय इन्हों को थूहरके दूध में भिगोय थों-हर का बरतन में घालि गारा लपेट अग्नि में पकाय सुंदरदग्ध होने पर काढ़ि पीछे तक्र के संग पीनेसे यकृत् प्लीह इन्होंको नाशै यह अग्निमुख लवण अग्नि को बढ़ावे है॥ रोहित घृत॥ रोहित ४०० तोला बेर २५६ तोला इन्हों को द्रोणभर पानी में पकाय चतुर्थांश काढ़ा बाक़ी रहने पर घृत ६४ तोला बकरीका दूध २५६ तोला शुंठि मिरच पीपल त्रिफला हींग अजमान धनियां मनिया-रीनोन बायबिड़ंग चीता हपुषाबच जीरा सांवरनोन अनार देव-दारु सांठी गडूंभा जवाखार पुष्करमूल ये प्रत्येक तोला २ भर लेय कल्क बनाय मिलाय घृत को सिद्ध करि दृढ़ बरतनमें घालि धरै पीछे ४ तोलेभर रस खावै॥ यूष॥ दूध गोमूत्र इन्होंमें एकको येसाकी संग यह यकृत् प्लीह शूल मंदाग्नि कुक्षिशूल पसलीशूल कटिशूल अरुचि बिड्बंधशूल पांडु कामला छर्दि अतीसार तंद्रा ज्वर इन्होंको नाशै विशेषकरि तिल्लीको नाश करै॥ चित्रकादिघृत॥ चीताकी जड़ ४०० तोले लेय काढ़ाबनाय घृत ६४ तोले लेय कांजी १२८ तोले दहीका मस्तु २५६ तोले पीपली पीपलामूल चा-व चीता शुंठि तालीसपत्र जवाखार नोन सेंधानोन मनियारीनोन कालानोन अजमान अजमोद जीरा स्याह जीरा मिरच ये प्रत्येक तोला तोला भर लेय इन्होंमें घृतको सिद्धकरि प्रभातमें पीनेसे प्लीह सोजा पेटरोग बवासीर इन्होंको नाशै बिशेषकरि अग्निको बढ़ावै॥ रक्तस्राव॥ पीठका रक्तकढ़ानेसे प्लीहरोग नाशहोवै॥ शिराबेध॥ प्लीह रोगमें बायें हाथकी शिरा खुलाना मुख्यहै॥ यकृतोदर॥ दहिना पासु के नीचे और नाभीके ऊपर मांसका पिंडसरीखा बिकार उपजै तिसे यकृत् रोग कहते हैं॥ दोषसम्बन्ध॥ इसमें उदावर्त्त शूल अफारा मोह

तृषा दाह ज्वर भारीपना अरुचि कठिनपना ऐसेहोयहै यकृत् पर सेंधानोन राई ये समभाग लेय पीसि गोमूत्रके संग एक तोला रोज खानेसे प्लीहा यकृत् इन्होंको नाशै॥ पिप्पलिकल्क॥ पीपलीके कल्क में घृत चौगुना दूध मिलाय पकाय अग्निबल विचारि खानेसे यकृत् नाशहोवे॥ सामान्य चिकित्सा॥ जोइलाज प्लीहोदरमें कहाहै वह सब यकृत्‌रोग मेंभी करै और इसमें दहिने तरफकी फस्त खुलावे॥ बद्धगुदोदर॥ जो मनुष्य विनाशोधा अन्नखाय उसमें बाल कांकर रेत धूल मिलेहों उसके दोषोंको लिये मलका संचयहो उसमनुष्यके कष्टसे थोड़ा २ गुदा द्वारा मलउतरै और उसका हृदय नाभि बढ़जावै तिसे बद्धगुदोदर कहतेहैं॥ हपुषादि चूर्ण॥ हपुषा जीरा अजमान सेंधानोन इन्होंके चूर्णको खानेसे बद्धगुदोदर नाश होवे॥ वस्तिप्रकार॥ पहिले स्वेद कराय पीछे तेज औषधों से व तैल नोन इन्हांसे निरूहण व अनुवासन वस्तिदेवे॥ उत्तरवस्ति॥ इसमें उदावर्त्तमें कही चिकित्सा करै और अनेकप्रकारकी वत्ती बनाय गुदामें चढ़ावे व तीक्ष्ण औषधोंसे जुलावदेय वातनाशक विधि करावे॥ क्षतोदर॥ जो मनुष्य पाषाणको आदिले रेतसे मिला अन्न खावै उसमनुष्य के आंतों को काढ़ि अन्न जल सदृशहोकर गुदाके द्वारा निकलै और उसकी गुदा रात्रिदिन बहाकरै और उसका पेड़ू बढ़ै और पेड़ूमें पीड़ाहो तिसे क्षतोदर कहते हैं॥ वेधक्रिया व पानक्रिया॥ क्षतोदर में व बद्धोदरमें पाटन क्रिया व वेधन क्रियाकरै और पेटमें जलहो तो वैद्य रोगीके मित्र जाति दारा राजा इन्होंकी आज्ञालेय शस्त्रक्रियाकरे॥ वेधस्थान॥ वैद्य सबोंकी आज्ञा लेय रोगीको सुवेष्टित करि नाभिके नीचे ४ अंगुल जगह पर वेधकरावे॥ वेधकरणाका प्रकार॥ जव सरीखा शस्त्रसे अंगुली मध्यवेधकरि दोमुख की नलीलगाय जलको काढ़ि डालै॥ जलकाढ़न विषय नियम॥ एक दिनमें सब दोषों को न काढ़ै क्योंकि खांसी श्वास ज्वर तृषा गात्रभंग कम्प अतिसार ये विकार उपजै नहीं ऐसा विचार करि तीसरे दिन व पांचवें दिन थोड़ा २ वारम्वार काढ़ता जावै॥ पानीकाढ़ने का घावपरलेप॥ घाव में दोष प्रवेश होने से पहिले स्रावकराय तैल नोन से पीछे रेशमी कपड़ा

से व चाम से बांधि देवै ॥ जलोदर लक्षण ॥ घृत को खाय बस्तिकर्म कराय जुलाब लेय बमन करके शीतल जलको मनुष्य पीवै उसको जलकी बहनेवाली जो नसें सो दूषितहो और स्नेह करिके लिपी जो वही नसें तिन्हों में जलोदरको उत्पन्न करैहै और उस शीतल जलसे उत्पन्न हुआ जलोदर सो नाभि के और पास गोल और चीकना होय पानीकी भरी मसकसमान बहुत बढ़ै तब मनुष्य उसमें बहुतदुःखीहो और उसका शरीर कांपै और पेट बारंबारबोलै ये लक्षण जलोदर के हैं ॥ तक्र ॥ शुंठि मिरच पीपली खारीनोन ये मिलाय तक्रको पीनेसे जलोदर नाशहोवै॥ जलोदरादिरस ॥ पीपली मिरच तांबाभस्म हल्दी ये समभागलेय और सबोंकेसमान जैपाल लेय इन्होंको थोहरके दूधमें १ दिन खरलकरि पीछे ४ माशे व ६ माशे खानेसे जुलाब लगकर जलोदरशांतहोवै ॥ जलोदरपर ॥ इसमें बारम्बार जुलाबदेय पानीको काढ़ता जावै व पानी निकास पीछे पेट फूलारहै तो स्नेह बस्तिकर्म कराय सुखदेवै और लंघनकराय घृत नोन रहित पेयाका पानकरावै ॥ षण्मासनियम ॥ इससे उपरांत ६ महीनातक दूधका सेवन न करै तीन महीनेतक केवल दूध को पीवै पीछे तीनमहीने अन्न में दूधमिलाय पीवै अन्न कोदों श्यामाक दूध हलका अन्न इन्होंके १ वर्ष सेवनसे जलोदर नाशहोवै ॥ साध्यासाध्यबिचार ॥ सब उदर बिकार आदिसे कष्टसाध्य होय है बलवान् के जलोदर नयाहो तो यत्न साध्य है पुराना तो असाध्य होय है व बद्धगुदोदर १५ दिन उपरांत असाध्यहोयहै और जलोदरसदाही असाध्यहोयहै और क्षतोदरभी असाध्यहोयहै॥ असाध्यलक्षण ॥पसलियोंमें शूलचलै नेत्रोंऊपरसोजाहो और लिंग बांकाहोजाय और शरीरकीखाल गलजावै शरीरका रुधिर मांस सब जातारहैमंदाग्नि हो ऐसा जलोदरी असाध्यहोयहै ॥ दूसरालक्षण ॥ पसलियोंमें शूल चलै और पसली टूटीसी होजावै अन्न से रुचिजातीरहै शरीर में सूजन और अतीसारहो उदरखालीहो भरासादीखै ऐसाजलोदरी असाध्यहोयहै ॥ असाध्यलक्षण ॥ जिसकी खालगीलीहो नेत्र छोटे होजायँ औ भृकुटी कुटिल होजावै बल मांस अग्नि रक्त ये क्षीण

होवैं और कोठामें रोगहोवे सोजाहो अतीसार हो पसली में शूल अन्न द्वेष दस्त लगतेरहैं ऐसा जलोदरी असाध्यहोयहै ॥ शास्त्रार्थ॥ रेचन वमन पाचन ये कराने से जलोदर शांतहोवै ॥ रेचन ॥ पेट रोग पेटमें मलके संचयसे उपजैहै तासे जुलाव देनीहितहै सो दूध में अरंडीका तेल मिलाय व गोमूत्रमें मिलाय बारंबार पीनाहितहै॥ ज्योतिष्मती तैल ॥ मालकांगणी के तेल को दूध में मिलाय रोज़ पीनेसे जलोदर नाशहोवै ॥ गोमूत्रयोग ॥ गोमूत्रको सेवने व पीने व वरतने से जलोदर शांतहोवै ॥ उदरपर ॥ १००० हरीतकियों को गोमूत्रके संग खाने से व १००० पीपलियों को थोहरके दूध में भिगोय खानेसे अथवा वर्द्धमान पीपलीको खानेसे व दूधकेसंगशि-लाजीतखानेसे व गूगलको दूध व अदरखरसके संगखानेसे व चीता देवदारु इन्होंका कल्क बनाय दूधकेसंग खानेसे जलोदरादि रोग नाशहोवै ॥ वर्द्धमान पीपली ॥ तीन पांच सात दश इतनी रोज़ वृद्धि से पीपली को खाने से श्वास खांसी ज्वर पेटरोग ववासीर बात क्षय क्षयी इन्होंको नाशै व आठप्रकारके गोमूत्रादि को पीने से व बफारालेने से व वर्द्धमान पीपलको दूधके सङ्गखाने से उदर रोग नाशहोवै व ऊंटनीके दूध को पीवै जीर्ण होतसंते और अन्नादिक को त्यागै १ मासतक व १ ऋतुतक व १५ दिनतक दूधको पीवै पानीको भी वर्जै यह पेटके रोगोंको नाशकरै व समुद्र की सीपी का खार जवाखार सेंधानोन इन्हों को गौके दहीके सङ्ग खाने से सब पेटरोग नाश होवै व गडूंभा शंखिनी जैपाल जड़ निसोत त्रि-फला हल्दी वायविड़ंग कापिला इन्होंके चूर्णको गोमूत्रके सङ्ग पीने से पेटके रोग नाश होवैं ॥ जलोदरपरयोग ॥ चाव जैपाल चीता वा-यविड़ङ्ग शुंठि मिरच पीपल इन्होंके कल्कको दूधकेसङ्ग व अदरख के रस के सङ्ग खानेसे व देवदारु चीता इन्हों का काढ़ा व चाव शुंठि इन्होंका काढ़ा पीनेसे पेटके रोगोंको नाशकरै ॥ देवदार्व्यादिलेप॥ देवदारु केशूकेफूल आककीजड़ पीपली सहोंजना असगन्ध इन्हों को गोमूत्रमें पीसि पेटऊपर हलवे २ लेपकरनेसे पेटरोगनाशहोवै॥ कषाय ॥ अदरख के रसको पानीके सङ्ग पीने से व देवदारु चीता

इन्होंका काढ़ा व चाव नागरमोथा इन्होंका काढ़ा पीनेसे पेटके रोगों को नाशकरै ॥ चव्यादिकाढ़ा ॥ चाव चीता शुंठि देवदारु इन्होंके काढ़ा में निसोतका चूर्ण मिलाय पीने से उदरके रोग नाशहोवैं व थोहरके दूधमें पीपली का चूर्ण मिलाय खरलकरि चाटै ऊपर मीठे पदार्थको खावे यह पेटके रोगोंको नाशकरै सात रात्रिमें ॥ देवद्रुमादि ॥ देवदारु सहोंजना मसूर असगन्ध इन्हों को गोमूत्र में पीसि खाने से पेटके रोग कृमि सोजा दूष्योदर इन्हों को नाशकरै ॥ नारायणचूर्ण ॥ चीता त्रिफला त्रिकुटा वच अजमोद पीपलामूल हपुषा सौंफ रानतुलसी अजमाण कचूर धनियां कालाजीरा चोख पुष्करमूल साजीखार जवाखार सेंधानोन कालानोन मनियारीनोन साँभरनोन खारीनोन कूट ये समभाग लेय गडूंभा २ भाग निसोत ३ भाग जैपालजड़ ३ भाग सातला ४ भाग इन्हों का चूर्ण करै पीछे पाचन स्नेहन देय चीकनाकोठा वाला रोगी को चूर्णदेय जुलाब लगकरि सबरोग नाशहोवै और विशेषकरि हृद्रोग पांडुरोग खांसी श्वास भगंदर मन्दाग्नि ज्वर कुष्ठ संग्रहणी गलग्रह इन्हों को रोगोक्त अनुपान के संग नाशकरै और मदिरा के संग खाने से अफाराजावै और बड़ बेरी के काढ़ा के संग खानेसे गुल्म जावै और दहीके मस्तु के संग खानेसे विड्बद्ध नाश होवै और गरम पानी के संग खाने से अजीर्ण नाश होवै और अमलियों के काढ़ा के संग खानेसे परिकर्त्तिका रोग जावै और ऊंटनी के दूधके संग खानेसे पेटका रोग जावै तथा गौके तक्रके संग खानेसे पेट के रोग जावैं और प्रसन्ना नाम मदिरा के संग खानेसे बातरोग नाश होवै और अनारके रसके संगलेनेसे बवासीर नाशहोवै और घृतके संग खानेसे दोनों प्रकार का विष नाशहोवै ॥ हपुषादिचूर्ण ॥ झाड़की जड़ त्रिफला त्रायमाण पीपली चोख निसोत थोहर कुटकी बच नीली सेंधानोन कालानोन इन्होंका चूर्णकरि गरम पानीके संग व गोमूत्र के संग व अनार के रसके संग व त्रिफला के काढ़ा के संग व मांसके रसके संग पीनेसे अजीर्ण तिल्ली गुल्म सूजन बवासीर मन्दाग्नि हलीमक कामला पांडु कुष्ठ अफारा पेटरोग इन्होंको नाश

करे ॥ उदररोगपर ॥ जवाखार सुहागाखार त्रिकुटा नीली पांचौनोन इन्होंका चूर्णकरि घृतके संग खाने से सब गुल्म पेटरोग इन्हों को नाश करें ॥ पटोलादिचूर्ण ॥ परवल हल्दी बायबिड़ंग त्रिफला ये एक २ तोला दालचीनी २ तोला सहोंजना ३ तोला नीली ४ तोला निसोत ५ तोला इन्होंका चूर्ण करि ४ तोले गोमूत्र के संग खावै जुलाब लगै पीछे हलका भोजन जांगलदेश के मांसका रस मांड पेया इन्हों का पानकरि ऊपर त्रिकुटा चूर्ण गरम दूध में मिलाय पीवै छः दिनतक ऐसे बारम्बार चूर्णकोखानेसे सब पेटरोग जलोदर कामला पांडु सोजा इन्होंको नाशकरै ॥ उदररोगपरघृत ॥ आकदूध ८ तोला थोहर का दूध २४ तोला हरड़ै सफेद निसोत शंपाक अमलतास गोकर्णजड़ नीली निसोत जैपालबीज शंखबेल चीता की जड़ ये चार २ तोले लेय काढ़ा व कल्क बनाय घृत ६४ तोला मिलाय घृतको सिद्धकरै पीछे इसघृत के जितने बूंद पीवै तितनेहीं दस्त लगैं यह कुष्ठ गुल्म उदावर्त्त सोजा भगन्दर आठप्रकार का ज्वर आठप्रकार के उदररोग इन्हों को नाशकरै जैसे वृक्षको इन्द्र का वज्र यह बिन्दुघृतहै इसकी नाभिऊपर मालिश करनेसे जुलाब लगै ॥ दशमूलघृत ॥ दशमूल निसोत कुंभी त्रायमाण चीता सहोंजना कुरंटबीज त्रिफला गिलोय अरंड की जड़ मोगरी फूल पाढ़ा भारंगी पीपली काला भँगरा रोहिततृण धमासा ये सब चार २ तोलेलेय एकद्रोण पानी में पकाय चतुर्थांशकाढ़ा रहनेपर ६४ तोला घृत मिलाय पकाय पीनेसे सब पेटके रोग नाशहोवें ॥ नाराचघृत ॥ त्रिफला चीताकी जड़ जैपाल कटैली थोहरदूध आकदूध बायबिड़ंग इन्होंके काढ़ा में घृत १६ तोले पकाय कोमल अग्निसे सिद्ध करि ६माशे रोजखानेसे सूजन गुल्म उदररोग अफारा तिल्ली जलोदर इन्होंकोनाशकरै ॥ बिन्दुघृत ॥ चीता शंखपुष्पी कापिला सफेद निसोत हरड़ै काला निसोत भिदारा अमलतास जमालगोटा की जड़ जमालगोटा कडुई तुरई देवदाली नीली गोकर्णी त्रायमाण पीपलामूल बायबिड़ंग कुटकी चोख ये एक २ तोला लेय घृत ६४ तोला थोहरका दूध २४ तोला आकका दूध ८ तोला ये मिलाय

घृतको सिद्धकरि खाने से गुल्म कुष्ठ शूल उदावर्त्त सोजा अफारा भगन्दर आठ प्रकार के उदररोग इन्हों को नाशै इस को गौ के दूधमें व कुलथी के काढ़ामें व ऊंटकेदूधमें व गरम पानीमें मिलाय जितने बूंदोंको पीवै तितनेहीं दस्तलगि सुखउपजै और इसको नाभिऊपर लेपकरनेसे जुलाबलगै॥ त्रिवृत्यादिघृत॥ घृत ६४ तोला दूध ५१२ तोला थोहर का दूध ४ तोला निसोत ४ तोला इन्हों को मिलाय घृतको सिद्धकरि वर्त्तने से पेटकेरोग व गुल्मनाशहोवै हिंग्वादिघृत॥ हींग लहसन अदरख सहोंजनाकी छाल हरड़ें पीपलामूल जैपाल की जड़ दशमूल इन्हों के काढ़ा में सुहागाखार जवाखार पांचो ऊषण इन्हों का चतुर्थांश कल्क मिलाय घृत को सिद्धकरि वर्त्तने से पेट के रोग शांत होवैं॥ उदरपर॥ पाराभस्म ४ तोला बंगभस्म४तोला तांब्रासस्म ४तोला गन्धक ४ तोला इन्होंको आकके दूधमें खरलकरि गोलाबनाय बासनमें घालि सुखबंदकरि भूधरयंत्र में पकाय खाने से प्लीह गुल्म इन्हों को नाशै यह २ रत्ती रसलेय ऊपर सफेदसांठी ४माशे घृतमेंमिलायखावै॥त्रैलोक्यडंबर॥ पारा गंधक तांब्राभस्म लोहभस्म अभ्रकभस्म मीठातेलिया सुहागाखार सज्जीखार शिंगरफ कौड़ीकी भस्म ये समभागलेय आक का दूध थोहरदूध निर्गुंडी भंगरारस अदरखरस इन्हों में भावनादे खानेसे गुल्म जलोदर सोजा पांडु क्षयी शूल हैजा इन्हों को अनुपानोंके संग नाशकरै इसको २ रत्ती प्रमाण २१ दिन देनेसे रोगका नाशहोवै यह अत्रिगोत्र में उत्पन्न मार्तण्डमुनि ने कहाहै॥ उदरपर रेचन॥ भूनासुहागा मिरच पारा ये समभागले गंधक पीपली शुंठि ये दो दो भागलेय सबोंके समान जमालगोटा के बीज मिलाय खरलकरि २ रत्ती खानेसे जुलाबलागि पेटकेरोग नाशहोवैं॥ इच्छाभेदीरस॥ शुंठि मिरच पारा गंधक सुहागा ये समभाग लेय और जमालगोटा ३ भाग लेय इन्होंको खरलकरि २ रत्ती भरमें मिश्री मिलाय खावै और जितने चुल्लूपानी ऊपरपीवै तितनेहीं दस्तलगैं इसपै पथ्य तक्र चावलका है॥ शोफोदर॥ सांठी नींब परवल शुंठि चिरायता गिलोय दारुहल्दी हरड़ें इन्होंका काढ़ा पीने से सर्वांग

सोजा उदररोग खांसी शूल श्वास पांडु इन्होंकोनाशकरै ॥ हरीतक्यादिकाढ़ा ॥ हरड़े शुंठि देवदारु सांठी गिलोय इन्होंके काढ़ामें गूगुल गोमूत्र मिलाय पीने से पेटका सोजा नाश होवै ॥ पुनर्नवादियोग ॥ सांठी दारुहल्दी हरड़े गिलोय इन्होंके काढ़ामें गोमूत्र और गूगुल मिलाय खानेसे खालकादोष सूजन उदररोग पांडु स्थूलता लालास्राव ऊर्ध्वकफरोग इन्होंको नाशकरै ॥ पुनर्नवादिकाढ़ा ॥ सांठी गिलोय देवदारु छोटी हरड़े शुंठि इन्हों के काढ़ा में गूगुल और गोमूत्र मिलाय पीनेसे पेटका सोजानाश होवै ॥ शोफोदरचिकित्सा ॥ सांठी देवदारुशुंठि गोमूत्र इन्होंका काढ़ा सोजाकोनाशै व पीपली शुंठि इन्होंके चूर्णमें गुड़मिलाय खानेसे सोजा आमशूल अजीर्ण इन्होंको नाशे व गौके दूधमें त्रिफला मिलाय पीनेसे पेटका सोजानाशहोवै व भैंस के मूत्रको व दूधको गोमूत्रमें मिलाय पीने से पेटका सोजा नाशहोवै व गोमूत्र में भैंसकामूत्र मिलाय पीने से व गौके दूध में त्रिफला के चूर्ण को मिलाय खाने से व गोमूत्र को पीने से पेटका सोजादूरहोवै इसपै दूध चावलकापथ्य है ॥ माहिषमूत्रपान ॥ भैंस के मूत्रको गौके दूध में मिलाय पीनेसे व ऊंटनीके दूधमें पानीमिलाय पीनेसे सोजा पेटरोग इन्हों को नाशकरै इसपै खालिस जलको न पीवै ॥ बिल्वादि काढ़ा ॥ बेलमूल खरैटीमूल अदरख शुंठि इन्हों के काढ़ा व कल्कमें घृतको सिद्धकरि बकरी के दूध में मिलाय खानेसे संग्रहणी विकार सोजा मंदाग्नि अरुचि इन्होंको नाशकरै ॥ उपर में पथ्य ॥ विरेचन लंघन एकवर्षकी पुरानी कुलथी मूंग लालधान जंगलीमृग तथा पक्षी मिश्री मदिरा शहद ईषके रसकामद्य महुवा के फलकारसमठा लहसन अरण्डीतेल अदरख शालिंचशाक परवर करेला सांठी सहिंजनाकी फली हरड़ै पान इलायची जवाखार लोहकीटि बकरी गौ ऊंटनी और भैंस इन्होंका दूध तथा मूतहलकी तथा दीपनवस्तु कपड़े से बांधना आग से दागना बिषका साधन विशेषकर प्लीह से उत्पन्न उदररोग में बायें हाथ की नस में फस्त खोलना औरक्षतसेउत्पन्नमें और बद्धोदरमें नाभिकेनीचे बिधिपूर्वक शस्त्रलगावना बात से उत्पन्न उदररोग में पाहिले घृतपिलाना पीछे

तेललगाना स्नेहवस्ति देना उदररोग में दोष के अनुसार यहपथ्य गणाहै ॥ अपथ्य ॥ संस्नेहन धूमपान जलकापीना फस्तखुलाना बमन सवारी दिन में सोना कसरत पिसे अन्नकी वस्तु जल के तथा अनूपदेश का मांस पत्तोंका शाक तिल गरम बिदाही तथा निमकीन बस्तु महेन्द्रपर्बतसे निकलीहुई नदियोंका जल फलीसे उत्पन्नअन्न बिरुद्धअन्न बुराजल भारी तथा बिष्टंभीबस्तु बिष्टंभसेउत्पन्नमें बिशेष करि स्वेदन जो वैद्य अपने यश को रक्खाचाहै तो इन्होंका त्याग करावे॥पथ्य॥ कुक्षिमें सब्बदोषहोते मंदाग्निहोयहै इसवास्ते इनरोगों में दीपन और हलके पदार्थोंकापथ्यहै ॥ अपथ्य ॥ जलका पीना दिन का सोना भारी अभिष्पंदी भोजन ये पदार्थ अपथ्य हैं ॥ पथ्य ॥सांठी चावल गेहूं यव देवभात इन्होंका भोजन जुलाब आस्थापनवस्ति ये पेटके रोगों में पथ्यहैं ॥ पथ्य ॥ कपड़ाका बांधना दागदेना विषसेवन और विशेषकरि प्लीहके रोगसे उत्पन्न विकार में बायेंहाथकी धमनी नाड़ीका बेधहितहै बद्धोदरमें क्षतोदरमें नाभिके नीचे शस्त्रकी क्रिया उचितहै बातोदर में पाहिले घृतपान मालिश अनुबासन वस्ति ये दोषोंके अनुसार पेटके रोगमें पथ्य हैं ॥

इतिश्रीबेरीनिवासकरविदत्तवैद्यविरचितायांनिघण्ट
रत्नाकरभाषायांउदररोगप्रकरणम् ॥

निघण्टरत्नाकर भाषा प्रथम खण्ड समाप्तः ॥

भाषा में इसभांति से अर्थ कियाहै कि जिसमें बालकों को सहजही में ज्ञान होकर पूर्ण बोध होजावे इसभांति संज्ञाप्रक्रिया, स्वरसंधि, प्रकृतिभाव, व्यंजनसंधि, विसर्गसन्धि, स्वरान्तपुँल्लिंग, स्वरान्तस्त्रीलिंग, स्वरान्तनपुंसकलिंग, हलान्तपुँल्लिंग, हलान्तस्त्रीलिंग, हलान्तनपुंसकलिंग, युष्मद् अस्मद् शब्द, अव्यय, स्त्रीप्रत्यय, कारक, समास और तद्धित को पढ़ाकर तिस पीछे सिद्धान्तचन्द्रिका और रघुवंश और कुमारसंभवादि काव्यों को पढ़ावें इस भांति के पढ़ाने से बहुतशीघ्र विद्वान् होसक्ते हैं यही शोचकर श्रीभार्गववंशावतंस मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) ने बहुतसा द्रव्य व्ययकर उक्त परिडतोंसे टीका रचवाई है आशाहै कि जो विद्यार्थी इस पुस्तक को क्रमसे पढ़ेंगे वे शीघ्रही पूर्ण बोधहोकर विद्वान् होजावेंगे अन्यथा पढ़ानेसे बहुतसमय लगकर बोध नहीं होता है—क्योंकि बहुधा यही परिडतों की रीति है कि वे स्वर व्यंजन नाममात्र को बालकों को पढ़ाकर व्याकरणका प्रारम्भ करादेते थे और बालकों को तोतेकी तरहसे कण्ठही करातेथे जब उन बालकों को अच्छीभांति अक्षर के पहिचानका ज्ञान नहीं है तो वे कैसे पूर्ण विद्वान् रट २ के पढ़नेसे होसक्ते हैं—आशाहै कि जो लोग इस पुस्तक के क्रमसे व्याकरण का अध्ययन करेंगे वे थोड़ेही समय में स्वल्प परिश्रम से विद्वान् होजावेंगे—जब व्याकरणमें विद्वान् होजावेंगे तो उनको ज्योतिष वैद्यक अठारहोपुराण काव्यादिकों कुछ भी परिश्रम न करनापड़ेगा थोड़ेही परिश्रम करतेमें महान् विद्वान् होजावेंगे—

केनिंगकालेजके संस्कृताध्यापक श्रीपरिडत गंगाधरशास्त्रीने भी इस पुस्तक को अवलोकनकर सार्टीफिकटके तौरपर अपनी सम्मति प्रकटकी है कि निश्चय यह पुस्तक उत्तम और बालकोंको हितैषी है ॥

मिताक्षरा भाषाटीका सहित ॥

यह पुस्तक सम्पूर्ण धर्मशास्त्रों का शिरोमणि है जिसमें आचारकाण्ड व्यवहारकाण्ड और प्रायश्चित्तकाण्ड नामक तीनकाण्डहैं जिनसे गृहस्थादि चारोंआश्रम और ब्राह्मणादि चारोंवर्णों के सम्पूर्ण कर्म धर्मादि और राजसम्बन्धी कार्यों में दायभागादि व्यवहारों में वादी प्रतिवादियों के धर्मशास्त्र सम्बन्धी मामिले और मुक़द्दमों की व्यवस्था वर्णितहै ॥